

जेन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

आगम-सुत्त ग्रन्थमाला

ग्रन्थ-१



निर्गम्य पावयणं
DAS-N

मूल मुत्ताणि

दसवेआलियं DUSVEAALIYAM TEI

तह

UTTARJHAYANANI

उत्तरज्जयणाणि

श्री बसुगील साहिबुं भवेदी,
बसुगील साहिबुं श्री ओर ले

वाचना प्रमुत्त

आचार्य तुलसी

With Best Compliments of

SHRI JAIN SANGH BOMBAY

C/o R M JHAVERI

157, Sheikh Memon St; BOMBAY-2.

सम्पादक

मुनि नथमल

(निकाय-सचिव)

8240

प्रकाशक

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी मरुपसभा

(आगम-साहित्य प्रकाशन समिति)

३, पोर्तुगीज चर्च स्ट्रीट

कलकत्ता-१

प्रकाश-व्यवस्थापक :

श्रीवल्लभ रामपुरिया, बी०कॉम०, बी०एल०

संयोजक,

भागम-साहित्य प्रकाशन समिति

धारक :

आदर्श साहित्य संघ

चूरू (राजस्थान)

अर्थ-सहायक :

सरावगी चेरिटेबल फण्ड

७, लोअर राऊडन स्ट्रीट,

कलकत्ता

प्रकाशन-तिथि :

मर्यादा-महोत्सव

भाष सुदी सप्तमी, नं० २०२३

प्रति-संख्या .

१,१००

पृष्ठ-संख्या :

१२

मूल्य :

₹७.०० रु०

मुद्रक :

न्यू रोशन प्रिन्टिंग वर्क्स

३१११ रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता-१

ग्रन्थानुक्रम

समर्पण

अन्तस्तोष

प्रकाशकीय

सम्पादकीय

भूमिका

हिन्दी

अंग्रेजी

विषयानुक्रम

वसुदेवालिपि : विषय-सूची

उत्तराध्ययन : विषय-सूची

दशवैकालिक

१-८४

उत्तराध्ययन

८५-३४९

परिशिष्ट :

१-३४०

(१) शब्दानुक्रम : दशवैकालिक : पृ० १

(२) शब्दानुक्रम : उत्तराध्ययन : पृ० ९१

(३) नामानुक्रम : उत्तराध्ययन : पृ० ३३१

शुद्धि और आपूरक पत्र-१ (मूलपाठ)

३४१

शुद्धि और आपूरक पत्र-२ (पाठान्तर)

३४४

शुद्धि और आपूरक पत्र-३ (उत्तराध्ययन शब्द-सूची)

३४९

समर्पण

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्ये मम माणसे वि ।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाण पुव्वं ॥

जिसने श्रुत की धार बहार्ई,
सकळ संघ मे मेरे मन मे ।
हेतुभूत श्रुत-सम्पादन मे,
काकुगणी को विमल भाव से ॥

•

विनयावन्त
आचार्य तुलसी

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है, उस माली का जो अपने हाथों से उस और सिंचित द्रुम-निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन-आगमों का गोघ-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। सकल्प फलवान् बना और बैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूँ, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। सक्षेप में वह सविभाग इस प्रकार है :—

| | | |
|-------------|---|---------------------------|
| सम्पादक | : | मुनि नथमल (निकाय-सचिव) |
| सहयोगी | : | मुनि दुलहराज |
| पाठ-संगोष्ण | ” | मुनि सुदर्शन |
| | ” | मुनि मधुकर |
| | ” | मुनि हीरालाल |
| शब्दानुक्रम | ” | मुनि श्रीचन्द्र |
| | ” | मुनि हनुमानमल (सरदारशहर) |
| विषयानुक्रम | ” | मुनि रूपचन्द्र |

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिन ने इस गुस्तर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना सविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

—आचार्य तुलसी

प्रकाशकीय

परम श्रद्धास्पद पूज्य आचार्य श्री तुलसी की प्रकल्पित आगम-सम्पादन की रूपरेखा में छः ग्रन्थ-मालाओं की योजना है। योजना का रूप सम्पादकीय में दिया हुआ है। “आगम-सुक्त ग्रन्थ-माला” इन ग्रन्थ-मालाओं में से एक है। इस ग्रन्थ-माला में आगमों के संशोधित मूलपाठ पाठान्तर सहित प्रस्तुत किये जायेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक उक्त ग्रन्थ-माला का प्रथम ग्रन्थ है। इसमें दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—इन दोनों मूल-सूत्रों के संशोधित पाठ-मात्र प्रकाशित हो रहे हैं। संशोधित पाठों के साथ-साथ नीचे पाद-टिप्पणों में पाठान्तर दिये गये हैं।

प्रथम परिशिष्ट में दशवैकालिक शब्द-सूची एवं दूसरे परिशिष्ट में उत्तराध्ययन शब्द-सूची विस्तृत रूप में दी गई है।

उत्तराध्ययन में प्रमंगवश उल्लिखित व्यक्ति, देश, नगर, पर्वत, मसुद्र, नदी, उद्यान, मिक्का, आवाग, शन्त्र, धातु, रत्न, वनस्पति, प्राणी आदि के नामों की सूची तीसरे परिशिष्ट के अन्तर्गत दी गई है।

अन्त में तीन शुद्धि और आपूरक पत्र हैं, जिनमें मूलपाठ, पाठान्तर और शब्द-सूची विषयक सुट्टण की भूलों का संशोधन उपस्थित करते हुए तद्विषयक जो नई मामूली प्राप्त हुई, वह दे दी गई है।

दोनों आगमों की पद-विभक्त विस्तृत विषय-सूची ग्रन्थों के महत्त्वपूर्ण विषयों को निकालने में सहायक होगी।

भूमिका और सम्पादकीय संक्षेप में दोनों सूत्रों का सुन्दर परिचय दे देते हैं। -

इस आगम-सुक्त ग्रन्थ-माला का मूल उद्देश्य विद्वानों के सम्मुख मूल आगमों के संशोधित पाठ भावी शोध-खोज के लिए प्रस्तुत करना है। इसी दृष्टि से प्रस्तुत ग्रन्थ-माला का यह प्रथम ग्रन्थ आपके हाथों में है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन का भार ममिति की ओर से मरदारशहर-निवासी श्रीमान् मदनचन्द्रजी गोठी को सौंपा गया था। निरन्तर अस्वस्थ रहने पर भी बड़ी

श्रद्धा और प्रेम के साथ उन्होंने इस कार्य-भार को ग्रहण किया, पर आकस्मिक निधन ने उस सम्पत्ति को हमसे छीन लिया। गोठीजी आगम-कार्य की योजना के एक महान् स्तम्भ रहे।

पाण्डुलिपि की प्रतिलिपि :

इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि आदर्श साहित्य संघ, चुरू (राजस्थान) से प्राप्त हुई है, जिसके लिए हम उनके हृदय से कृतज्ञ हैं।

अर्थ-व्यवस्था

इस आगम का सुद्रण-खर्च श्री रामकुमारजी सरावगी की प्रेरणा से श्री सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता, जिसके सर्व श्री प्यारेलालजी सरावगी, गोविन्दलालजी सरावगी, सज्जनकुमारजी सरावगी एवं कमलनयनजी सरावगी ट्रस्टी हैं, ने वहन किया है।

श्री सरावगी चेरिटेबल फण्ड का यह आर्थिक अनुदान स्वर्गीय स्वनामधन्य श्रावक महादेवलालजी सरावगी एवं उनके सुयोग्य दिवंगत पुत्र पन्नालालजी सरावगी (सदस्य, भारतीय लोकसभा) की स्मृति में प्राप्त हुआ है। स्वर्गीय महादेवलालजी सरावगी तैरापंथ-सम्प्रदाय के एक अग्रगण्य श्रावक थे और कलकत्ता के प्रसिद्ध अधिष्ठान महादेव रामकुमार से सम्बन्धित थे। स्व० पन्नालालजी सरावगी, महासभा एवं साहित्य प्रकाशन समिति के बड़े उत्साही एवं प्राणवान् सदस्य रहे। आगम-प्रकाशन-योजना में उनकी आरम्भ से अत्यन्त अभिरुचि रही।

उक्त योगदान के प्रति हम उक्त फण्ड के ट्रस्टीगण के प्रति हार्दिक कृतज्ञता जापन करते हैं।

इस ग्रन्थ के सम्पादन में जिन-जिन विद्वान् अथवा प्रकाशन-संस्थाओं के ग्रन्थ तथा प्रकाशनो का उपयोग हुआ है, उन सबके प्रति हम हार्दिक कृतज्ञता प्रगट करते हैं।

आगम-साहित्य प्रकाशन समिति के सदस्य सर्व श्री मोहनलालजी वाँठिया 'चंचल', गोविन्दलालजी सरावगी एवं खेमचन्द्रजी सेठिया को भी मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिनका सहयोग मुझे हर ममय प्राप्त होता रहा है।

जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी महासभा के अन्तर्गत गठित समिति के द्वारा आगम-साहित्य प्रकाशन का कार्य ज्यो-ज्यो आगे बढ़ रहा है, त्यो-त्यो मेरे हृदय में आनन्द का पारावार नहीं है। मैं तो अपने जीवन की एक साध ही पूरी होते हुए देख रहा हूँ।

आचार्य श्री एक युग-पुरुष हैं। जहाँ एक ओर जन-मानस की आध्यात्मिक और नैतिक चेतना की जागृति के व्यापक आन्दोलनों में उनके अमूल्य जीवन-क्षण लग रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर भारतीय श्रमण-साहित्य और संस्कृति के मूल संदेश को जन-व्यापी बनाने का उनका उपक्रम भी अनन्य है। उनकी ओर से हो रही भारतीय साहित्य और संस्कृति की अमूल्य सेवाएँ हमारी कृतज्ञता को महज स्फुरित करती है।

आगम-साहित्य प्रकाशन समिति

[जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी महासभा]

३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कलकत्ता-१

दि० १ फरवरी, १९६७

श्रीचन्द्र रामपुरिया

सयोजक

सम्पादकीय

सम्पादन का कार्य सरल नहीं है—यह उन्हें सुविदित है, जिन्होंने इस दिशा में कोई प्रयत्न किया है। दो-छाई हजार वर्ष पुराने ग्रन्थों के सम्पादन का कार्य और भी जटिल है, जिनकी भाषा और भाव-धारा आज की भाषा और भाव-धारा से बहुत व्यवधान पा चुकी है। इतिहास की यह अपवाद-शून्य गति है कि जो विचार या आचार जिस आकार में आरब्ध होता है, वह उसी आकार में स्थिर नहीं रहता। या तो वह बड़ा हो जाता है या छोटा। यह ह्रास और विकास की कहानी ही परिवर्तन की कहानी है। और कोई भी आकार ऐसा नहीं है, जो कृत है और परिवर्तनशील नहीं है। परिवर्तनशील घटनाओं, तथ्यों, विचारों और आचारों के प्रति अपरिवर्तनशीलता का आग्रह मनुष्य को असत्य की ओर ले जाता है। सत्य का केन्द्र-बिन्दु यह है कि जो कृत है, वह सब परिवर्तनशील है। कृत या शाश्वत भी ऐसा क्या है, जहाँ परिवर्तन का स्पर्श न हो। इस विश्व में जो है, वह वही है जिसकी सत्ता शाश्वत और परिवर्तन की धारा से सर्वथा विभक्त नहीं है।

शब्द की परिधि में बंधने वाला कोई भी सत्य क्या ऐसा हो सकता है, जो तीनों कालों में समान रूप से प्रकाशित रह सके? शब्द के अर्थ का उत्कर्ष या अपकर्ष होता है—भाषा-शास्त्र के इस नियम को जानने वाला यह आग्रह नहीं रख सकता कि दो हजार वर्ष पुराने शब्द का आज वही अर्थ सही है, जो आज प्रचलित है। 'पाषण्ड' शब्द का जो अर्थ आगम-ग्रन्थों और अशोक के शिलालेखों में है, वह आज के श्रमण-साहित्य में नहीं है। आज उसका अपकर्ष हो चुका है। आगम-साहित्य के सैकड़ों शब्दों की यही कहानी है कि वे आज अपने मौलिक अर्थ का प्रकाश नहीं दे रहे हैं। इस स्थिति में हर चिन्तनशील

व्यक्ति अनुभव कर सकता है कि प्राचीन साहित्य के सम्पादन का काम कितना दुरूह है।

मनुष्य अपनी शक्ति में विश्वास करता है और अपने पौरुष से खेलता है, अतः वह किसी भी कार्य को इसलिए नहीं छोड़ देता कि वह दुरूह है। यदि यह पलायन की प्रवृत्ति होती तो प्राप्य की सम्भावना नष्ट ही नहीं हो जाती किन्तु आज जो प्राप्त है, वह अतीत के किसी भी क्षण में विलुप्त हो जाता। आज से हजार वर्ष पहले नवांगी टीकाकार (अभयदेव सूरि) के सामने अनेक कठिनाइयाँ थी। उन्होंने उनकी चर्चा करते हुए लिखा है :

१. सत् सम्प्रदाय (अर्थ-बोध की सम्यक् गुरु-परम्परा) प्राप्त नहीं है।
२. सत् ऊह (अर्थ की आलोचनात्मक कृति या स्थिति) प्राप्त नहीं है।
३. अनेक वाचनाएँ (आंगमिक अध्यापन की पद्धतियाँ) हैं।
४. पुस्तके अशुद्ध हैं।
५. कृतियाँ सूत्रात्मक होने के कारण बहुत गंभीर हैं।
६. अर्थ-विषयक मतभेद भी हैं।^१

इन सारी कठिनाइयों के उपरान्त भी उन्होंने अपना प्रयत्न नहीं छोड़ा और वे कुछ कर गए।

कठिनाइयाँ आज भी कम नहीं हैं। किन्तु उनके होते हुए भी आचार्य श्री तुलसी ने आगम-सम्पादन के कार्य को अपने हाथों में ले लिया। उनके शक्ति-शाली हाथों का स्पर्श पा कर निष्प्राण भी प्राणवान् बन जाता है तो भला आगम-साहित्य जो स्वयं प्राणवान् है, उसमें प्राण-संचार करना क्या बड़ी बात

१-स्थानाग वृत्ति, प्रशस्ति १,२

सत्सम्प्रदायहीनत्वात् सद्वहस्य वियोगतः ।
 सर्वस्वपरशास्त्राणा- महष्टेरस्मृतेश्च मे ॥ १ ॥
 वाचनानामनेकत्वात् पुस्तकानामशुद्धितः ।
 सूत्राणामतिगाम्भीर्याद् मतभेदाच्च कुत्रचित् ॥ २ ॥

है ? बड़ी बात यह है कि आचार्य श्री ने उसमे प्राण-संचार मेरी और मेरे सहयोगी साधु-साध्वियों की असमर्थ अगुलियों द्वारा कराने का प्रयत्न किया है । सम्पादन-कार्य मे हमे आचार्य श्री का आशीर्वाद ही प्राप्त नहीं है किन्तु मार्ग-दर्शन और सक्रिय योग भी प्राप्त है । आचार्यवर ने इस कार्य को प्राथमिकता दी है और इसकी परिपूर्णता के लिए अपना पर्याप्त समय दिया है । उनके मार्ग-दर्शन, चिन्तन और प्रोत्साहन का सबल पा हम अनेक दुस्तर धाराओ का पार पाने मे समर्थ हुए है ।

आगम-सम्पादन की रूपरेखा

आगम साहित्य के अध्येता दोनो प्रकार के लोग है—विद्वद्-जन और साधारण-जन । दोनो को दृष्टि मे रख कर हमने इस कार्य को छह ग्रन्थ-मालाओ मे ग्रथित किया है । उसका आकार यह है :—

- १ आगम-सुत्त ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि होंगे ।
- २ आगम ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ माला मे आगमो के मूलपाठ, पाठान्तर, सस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम या सूत्रानुक्रम आदि होंगे ।
- ३ आगम-अनुसन्धान ग्रन्थ-माला—इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के टिप्पण होंगे ।
- ४ आगम-अनुशीलन ग्रन्थ-माला—इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के समीक्षात्मक अध्ययन होंगे ।
- ५ आगम-कथा ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ-माला मे आगमो से सम्बन्धित कथाओ का सकलन होगा ।
६. वर्गीकृत आगम ग्रन्थ-माला — इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के वर्गीकृत और सक्षिप्त सस्करण होंगे ।

शब्दान्तर और रूपान्तर

व्याकरण और आर्ष-प्रयोग-सिद्ध शब्दान्तर एवं रूपान्तर भाषा-शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इसलिए उन्हें पाठान्तर से पृथक् रखा है।

अध्ययन-१

| स्थल | मूलपाठ | शब्दान्तर और रूपान्तर | प्रति |
|------|----------|-----------------------|--------------|
| १।१ | उक्किट्ठ | उक्कट्ठं | क, ग, घ, अचू |
| २।२ | आवियइ | आवियती | अचू, जिचू |
| ३।१ | मुत्ता | मुक्का | अचू |
| ३।२ | साहुणो | साहवो | अचू |
| ४।३ | अहागडेसु | अहागडेहि | अचू |
| ४।३ | रीयति | रीयते | घ, जिचू |
| ४।४ | पुप्फेसु | पुप्फोहि | अचू, जिचू |
| ४।४ | भमरा | भमरो | स |
| ५।१ | महु ° | मधु ° | अचू, जिचू |

अध्ययन-२

| | | | |
|------|----------|-------------------|------------------|
| २।२ | इत्थीओ | इत्थिओ | ख |
| २।४ | चाइ | चागि | अचू |
| ४।१ | पेहाए | पेहाइ | क, ख |
| ४।२ | निस्सरई | नीसरई | अचू, जिचू |
| ४।४ | विणएज्ज | विणइज्ज | क, ख, ग |
| ५।१ | आयावयाही | आयावयाहि | अचू, जिचू |
| ५।१ | सोउमल्ल | सोगमल्ल, सोगुमल्ल | क, ख, ग, जिचू, घ |
| ५।२ | कमाही | कमाहि | जिचू, अचू |
| ६।३ | वन्तयं | वंतग | अचू |
| ६।३ | भोत्तुं | भुत्तु | ग |
| ८।१ | रायस्स | राइस्स | ग |
| ९।२ | दच्छसि | दिच्छसि, दिच्छिसि | क, स, ग |
| १०।२ | संजयाए | सजयाड | ख, ग, घ |

| | | | |
|-----|---------|-------------|---------|
| १११ | करेन्ति | करति, करिति | ख,ग,क,घ |
| ११३ | भोगेसु | भोगेहि | अचू |

अध्ययन-३

| | | | |
|------|----------------------|----------------------|------------|
| ११ | सुद्विअप्पाणं | सुद्वितप्पाणं | अचू |
| २।३ | राइभत्ते | रायभत्ते | ग,जिचू |
| ४।१ | नालीय | नालीए, गालीया | ख,अचू |
| ४।३ | पाणहा | पाहणा | ख,अचू,जिचू |
| ५।३ | निसेज्जा | निसज्जा | ख |
| ६।३ | तत्तानिब्बुड-भोइत्तं | तत्तअनिब्बुड-भोतीत | ख,अचू |
| ६।१ | धूवणेत्ति | धूवणित्ति | ख |
| ६।२ | वत्थीकम्म | वत्थीकम्म, पत्थीकम्म | ख, अचू |
| ६।४ | गायाभंग | गायभंग | जिचू |
| १२।१ | गिम्हेसु | गिम्हासु | अचू |
| १२।३ | ० संलीणा | ० सल्लीणा | जिचू |
| १३।१ | ० रिऊ | ० रिवू | अचू |
| १३।२ | घुय ० | धूअ ० | ख,ग |
| १३।२ | जिइंदिया | जियंदिया | ग |
| १४।२ | दुस्सहाइ | दूसहाइ | जिचू |
| १४।३ | इत्थ | एत्थ | क |

अध्ययन-४

| | | | |
|-------|------------|----------------------|-----------|
| सू० ६ | अभिककतं | पडिककतं अभिकत पडिकतं | ख |
| „ १० | दंड | डड | अचू, जिचू |
| „ १० | समारभेज्जा | समारभेज्जा | अचू, जिचू |
| „ १० | करतं | करेतं | अचू |
| „ ११ | गरिहामि | गरहामि | अचू |
| „ १६ | राइ | रायं | क |

छह

दसवेआलियं-उत्तरजभ्यण

| | | | |
|-----------|---------------|------------------------|------------|
| सू० १८ | किर्लिचेण | किल्चिेण | ख,ग,घ,जिचू |
| ,, १८ | सलागाए व सलाग | सिलागाए व सिलाग | ख,ग |
| ,, १९ | ससिणिद्ध | ससणिद्ध ससिणद्ध | क, अचू,ख |
| ,, २१ | विहुयणेण | विहुवणेण | अचू, जिचू |
| ,, २३ | पिपीलियं | पिपीलिय | जिचू |
| ,, २३ | हृत्यसि वा | हृत्येसि वा | अचू,पा |
| १०।४ | नाहिइ | नाहीइ,नाही | ख,ग,घ |
| १२।१ | याणाइ | याणेइ,याणइ | ग,अचू |
| १२।४ | नाहिइ | नाहीइ, नाहीय | क,ख,घ,ग |
| १३।१ | वियाणाइ | वियाणेइ,वियाणाइ | ग,अचू |
| १६।३ | निर्व्विदए | निर्व्विदिय,निर्व्विदइ | क,ग,अचू |
| २५।४ | हवइ | भवइ | क,घ |
| २६।३ | पहोइस्स | पहोयस्स | ख |
| २६।२ | ० साइस्स | ० सायस्स | ख |
| २६।४,२७।४ | सुगइ | सुगइ, सोगइ | घ,अचू,जिचू |
| २७।३ | जिण | जिणिं | क,घ |

अध्ययन-५(१)

| | | | |
|------|----------|-------------------|---------------|
| ३।३ | वज्जतो | वज्जेतो | क,ग,अचू, जिचू |
| ४।१ | ओवायं | उवायं | ख |
| ४।२ | विज्जलं | विजल | हाटी, जिचू |
| ८।२ | पडंतीए | पडतिए | अचू |
| १०।१ | अणायणे | अणायणे | अचू |
| १३।३ | इंदियाणि | इंदियाइ, इंदियायं | क,ग |
| १६।२ | रहस्सा | रहसा | क,ख,ग,हाटी |
| २३।४ | अयपिरो | अयपुरो | अचू |
| २५।३ | वच्चस्स | वुच्चस्स | |

सम्पादकीय

सात

| | | | |
|-------|---------------|---------------------|-------------|
| २६।१ | दग-मट्टिय | दग-मट्टी | ग |
| २७।२ | आहारे | आहारे | क,ग,घ |
| २८।१ | आहरेती | आहरेती | अचू |
| २८।३ | देतिय | दितियं, दंतिय | क,ग,घ,ग |
| ३३।१ | ससिण्डे | ससण्डे | क |
| ३४।२ | कुक्कुस | कुक्कस | ग |
| ४०।४ | पुणट्टए | पुणट्टए | घ, अचू |
| ४२।१ | पिज्जेमाणी | पेज्जमाणी,पज्जेमाणी | जिचू,अचू |
| ४५।१ | दग-वारएण | दग-वारेण | क,हाटी |
| ४६।१ | उन्निभदिया | उन्निभदियं | क,ख,ग,घ |
| ५७।३ | उम्मीसं | उम्मिसं | क,अचू,जिचू |
| ६७।३ | मंच | मच | क,ख,ग,घ,अचू |
| ७१।३ | सक्कुलि | संकुलि | ख |
| ७३।२ | अणमिस | अणमिसं | ख,ग |
| ७३।३ | अत्थिय | अच्छिय | अचू, जिचू |
| ७३।४ | सिवाल्लि | सवाल्लि, संवल्लि | घ,ख |
| ७४।२ | घम्मिए | घम्मए | घ |
| ७७।३ | भवेज्जा | हन्विज्जा | ख |
| ७७।४ | रोयए | रोइए, रोवए | ग,ख |
| ७८।४ | तण्हं | तण्ह | ख |
| ८१।२ | अच्चित्तं | अच्चित्तं | क, अचू |
| ८५।१ | निखिवे | निखिवे | क,ख,ग |
| ९०।२ | अन्वक्खित्तेण | अवक्खित्तेण | अचू |
| ९६।२ | एक्कओ | एगओ, इक्कओ | घ,ख,ग |
| ९७।३ | एय | एयं | अचू |
| ९८।३ | उल्ल | अल्लं | घ |
| १००।४ | सोग्गइ | सोगइ, सुग्गइ | अचू,ख,ग |

अध्ययन-५(२)

| | | | |
|------|-----------|----------------------------|------------|
| ११३ | दुगंध | दुग्गंध | अचू |
| २१३ | अयावयट्टा | आयावयट्टा | क,ख,ग |
| ३१३ | ० उत्तेण | ० वुत्तेण | अचू |
| ५१२ | पडिलेहिसि | पडिलेहिसि | ख |
| ५१४ | गरिहिसि | गिरिहिसि, गिरिहिसि, गरहिसि | ग,ख,अचू |
| ७१३ | त-उज्जुयं | त-ओजुय | ख,घ |
| १०१२ | क्विण | क्विणं | ग |
| १३१२ | नियत्तिए | नियत्तए | ख,ग |
| १३१४ | व | वा | अचू |
| १४१३ | सच्चित | सच्चित | घ,अचू,जिचू |
| २११३ | नीम | नियम | ख |
| २२१३ | ० पिन्नाग | ० पन्नाग | ख |
| २४१३ | विहेलग | विभेलग, विहेलग | अचू,ख |
| २५१४ | उत्सढ | उत्सढ | अचू |
| २६११ | इत्थियं | इत्थि | अचू |
| ३२११ | अत्तट्ट | अत्तट्टा | क,ख,ग,घ |
| ३७११ | पिया | पियए | हाटी,जिचू |
| ४६११ | वय | वई | अचू |
| ४७१२ | मूययं | मूयग | ख,ग,घ |
| ५०१३ | ० हिदिए | ० हिइदिए | क,घ,जिचू |

अध्ययन-६

| | | | |
|------|-------------------|---|---------|
| १३१३ | मेत्त | मित्तं | क,ख,ग,घ |
| १८११ | लोभस्सेसो,अणुफासो | लोभस्सेसणुफासे, लोभस्सेसणफासो, लोभस्सेसणुफासो | क,घ,ग,ख |

नौ

सम्पादकीय

| | | | |
|----------|--------------|---------------------------------------|------------|
| २०१२ | नाय ° | नाइ ° | क,ग |
| २०१४ | इइ | इय | क,ख,ग,घ |
| २४३ | दिया | दिवा | अचू |
| ३७३ | विइउ ° | वीउ °, विनु ° | ग,अचू |
| ५११२ | ° घोयण | ° घावण | क,ख,अचू |
| ५११३ | छन्नंति | छिन्नति, छिप्पति | क,ख,ग,हाटी |
| ५२११ | पच्छा ° | पच्छे ° | अचू |
| ५७४ | पटिकोहो | पणिकाहो, पल्लिकोहो | अचू |
| ६०३ | वोन्नतो | वुन्नता, वक्कतो | क,ग,ख |
| ६११२ | भिल्लगामु | भिल्लगामु | क,ख,घ |
| ६११४ | ° प्पिलावए | ° पल्लावाए, ° प्पल्लावाए | ख,ग,घ,हाटी |
| ६३३ | ° व्वट्ट ° | ° वट्ट ° | क,ग |
| ६४११ | नगिणम्म | निगणम्म, नगणम्म, नगणिम्म, णिणिणस्स | क,घ,ग अचू |
| ६७४ | नवाड पावाडं | नवाणि पावाणि | अचू |
| ६८३ | उउप्पत्तन्ने | उउप्पत्तण्णे | अचू |
| अध्ययन-७ | | | |
| २३ | उणाउन्ता | अणाउण्णा | अचू |
| ५१४ | पुण | पुणो,पुण | अचू,ख |
| ८१ | कालम्मि | कालम्मि | ख |
| १२१२ | पडगे त्ति | पडग त्ति पडगु त्ति | क,ग,घ |
| १२१३ | गेगि त्ति | गेग त्ति | ग |
| १२१४ | चारे त्ति | चोण त्ति | घ |
| १३१ | वट्ठेण | अट्ठेण | क,ख,ग,घ |
| १४१२ | वसुले त्ति | वसुल त्ति | घ |
| १४१३ | दम्मए दुइए | दुम्माए, दुइए | ख |

दस

दसवेआलियं-उत्तरज्भयणं

| | | | |
|------|--------------|-----------------------------|---------------------|
| १५।२ | माउस्सिय | माउसिउ, माउसिय | क,ख,ग,घ |
| १५।४ | नत्तुणिए | नत्तुणिय, नत्तुणइ, नत्तुणिइ | घ,क,ग,ख |
| १६।१ | अन्नेत्ति | अन्नत्ति | ग |
| १८।३ | भाइणोज्जति | भायणिज्जति | ख |
| १८।४ | नत्तुणिय | नत्तुणइ, नत्तुणिइ | ग,ख |
| १९।१ | हले त्ति | हल त्ति, हरे त्ति | ग,घ,अचू |
| २१।१ | मणुस्सं | मणुस, मणस | क,ग,घ,ख |
| २२।२ | सरीसिव | सरीसव | ख,ग |
| २३।१ | परिवुड्ढे | परिवुड्ढु,परिवूढ | क,ग,ख,अचू,जिचू,हाटो |
| २४।३ | ० जोगि त्ति | ० जोगि त्ति | ख,ग, |
| २५।२ | घेणु | घेणू | ख |
| २७।२ | तोरणाण गिहाण | तोरणाणि गिहाणि | क,ग |
| ३१।४ | दरिसणि | दरिसण | ग,घ,ख |
| ३२।१ | फलाइ | फलाणि | अचू |
| ३३।२ | निवट्टिमा | निव्वड्डिमा, निव्वत्तिमा, | जिचू,अचू,ख |
| | | निवट्टिमा | |
| ३३।४ | रूव त्ति | रूवि त्ति | क,ख,ग |
| ३६।४ | सुत्तित्थ | सुत्तित्थे,सुत्तित्थि | ग,घ,ख |
| ३९।१ | ० वाहडा | ० पाहडा | अचू |
| ४१।२ | मडे | मते | अचू |
| ४२।१ | पयत्त | पयत्ति | क,घ |
| ४२।१ | पक्के त्ति | पक्क त्ति | क,ग,घ |
| ४५।१ | सुक्कीय | सुक्किय | ख |
| ४७।१ | तहेवासजय | तहेवस्सजत | अचू |
| ४८।२ | साहुणो | साघवो | अचू |
| ५१।१ | वाओ ० | वाउ ० | ख |
| ५१।१ | ० बुट्ठ | ० बुट्ठि | क,ख,ग |

ग्यारह

सम्पादकीय

| | |
|----------|------------|
| ५३१ | अतलिक्खे |
| ५६३ | धुन्न |
| अध्ययन-८ | |
| २१४ | इय |
| ५११ | निसिए |
| ६१२ | विहुवणेण |
| ६१३ | वीएज्ज |
| ६१४ | पोग्गल |
| १४११ | कयराडं |
| १६३ | अप्पमत्तो |
| १८३ | पडिलेहिता |
| १६१२ | पाणट्ठा |
| २०१४ | मरिहइ |
| २३१२ | अयपिरो |
| २५११ | सतुट्ठे |
| २५१२ | सुहरे |
| २६११ | अतित्तिणे |
| ३५११ | पीलेइ |
| ३६११ | अणिग्गहीया |
| ४०११ | राइणिए |
| ४०११ | पउजे |
| ४०१३ | कुम्मो |
| ४११३ | मिहो |
| ४२१४ | अट्ठं |
| ४६१३ | पिट्ठि |
| ४८१३ | अयपिर |

अतलिक्ख, अतलिक्ख घ,हाटी,जीचू,ख
घुत्त

| | |
|---------------|---------------|
| इय | ख |
| निसिए | घ |
| विहुवणेण | जिचू |
| वीए | अचू |
| पुग्गल | क,ख,ग,घ |
| कतमाणि | अचू |
| अप्पमत्ते | अचू |
| पडिलेहित्तु | अचू |
| पाणत्था | अचू |
| मरुहति | अचू |
| अयपुरो | अचू |
| सतुट्ठो | ख,घ |
| सुभरे | क,ग |
| अतित्तणे | ख,ग,जिचू,हाटी |
| पीडेइ | अचू |
| अणिग्गिहिया | ख,ग,हाटी |
| रायणिए | अचू |
| पयुजे | क,ख,ग,घ,अचू |
| कुम्मू,कुम्मे | अचू |
| मिधु | अचू |
| अत्थ | अचू |
| पिट्ठी | अचू |
| अयपुर | अचू |

वारह

दसवेआलियं-उत्तरज्ज्मणं

| | | | |
|------|-------------|-------------|--------------|
| ४६।३ | वइ | वाय, वय | जिचू, ख |
| ५३।२ | विग्गहिओ | विग्गहओ | ख |
| ५५।१ | पडिच्छिन्नं | पलिच्छिन्नं | घ, अचू, जिचू |
| ५८।१ | मणुन्नेसु | मणुन्नेसुं | क, ख, ग, घ |
| ५९।३ | तण्हो | तिण्हो | क |
| ५९।४ | सीई | सीत | अचू |
| ६२।३ | जसि | जसे | अचू |
| ६३।४ | चदिमा | चदिमि | क, ख, जिचू |

अध्ययन-९(१)

| | | | |
|------|---------|---------|------|
| २।२ | अप्पसुए | अप्पसुय | ख, ग |
| ६।१ | पावगं | पावक | अचू |
| १२।१ | जस्सतिए | जस्सतिय | अचू |
| १२।२ | तस्सतिए | तस्सतिय | अचू |
| १४।३ | बुद्धिए | बुद्धीए | ख |
| १५।१ | जुत्तो | जुत्ते | क, ग |
| १७।१ | मेहावी | मेहावि | ख |

अध्ययन-९(२)

| | | | |
|------|-----------|----------|------------|
| २।३ | सिग्घ | सग्घ | अचू |
| १५।३ | सक्कारेति | सक्कारति | अचू |
| २०।२ | हेउहि | हेऊहिं | ख, ग |
| २३।१ | वत्ति | वित्ति | क, ख, घ |
| २३।३ | ओह ° | ओघ ° | क, ख, हाटी |

अध्ययन-९(३)

| | | | |
|-----|-------|-------|---------|
| ३।१ | राइ ° | राय ° | ख, ग |
| ३।३ | निय ° | नीय ° | घ, जिचू |

सम्पादकीय

८१२ टुम्मणिय
१०१२ अपिमुणे
अध्ययन-६(४)
२१४ ० ग्रट्टिए
७ आरुहतेहि

अध्ययन-१०

४१० निस्सियाण
६१२ इवेज्ज
७१४ वय
८१३ होही
१२११ मसाणे
१२१२ भायाग
१८११ वाज्जसि
१८१२ जेणन्तो

चूलिका-१

मू० १२५५१२ इत्तरिया
" " ६ पडियाडयण
" " ६ वहाय
" " १८ वेयइत्ता
" " १८ अवेडयत्ता
२११ जया
५१४ वेट्टि ०
६१३ गल
६१३ गिलित्ता
१०१४ ० निग्घ
१०१४ सारिसो

टुम्मणय
अपिस्सुणे

० यत्थोए
आरुहतिहि

निसियाण

भवेज्ज
वड
होहिड
सुसाणे
भाग
वएज्जाहि
जेणन्तु, जेणन्त

तेरह

ग

क,ख,ग

अचू

अचू

क,ख,ग

अचू

क,अचू

अचू

अचू

अचू

ख

क,घ,ख,ग

ख,अचू

जिचू,ख,ग,घ

अचू

क,ख,ग,घ

क,ख,ग,घ

क

क,ख,ग,घ, हाटी

ख,घ

ख,ग

क,घ,हाटी

घ,ग

उत्तरिया
पडियायण, पडिआययण
वहाए
वेडत्ता
अवेडत्ता
जहा
मिट्टि ०
गलि
गलित्ता
० नरय
सारिसो

चौदह

इसवेआलियं-उत्तरंक्रम्यं

| | | | |
|----------|----------|------------|-------------|
| ११४ | परियाद्य | परियाड | ख |
| ११४ | मुलभा | मुल्ला | क,ख,ग,घ |
| ११२ | दुहोवणी | दुहोविणी | क,ख,ग |
| ११२ | ० वनिगो | ० वित्तिगो | क,अवृ |
| ११२ | पयलेति | पयलंति | क,ख,ग,घ |
| चूलिका-२ | | | |
| १२ | पड ० | पय ० | ख,ग,घ |
| २३ | ओमन्त | उमन्त | अवृ |
| १०३ | एक्रो | एक्रो, एगो | अवृ,क,ख,ग,घ |
| ११२ | दीर्यं | दित्तियं | अवृ |
| १३१ | पामइ | पस्मड | अवृ |
| १३३ | पासमाणो | पन्समाणो | अवृ |
| १११ | पासे | पस्मे | अवृ |
| ११४ | आइन्नाओ | आइणगो | अवृ |

ज्जवैकालिक के मन्वान्तर और स्यान्तरों की तालिका ऊपर देऽदी गई है।

उत्तराव्ययन के मन्वान्तर और स्यान्तरों की तालिका इस प्रकार है :

अव्ययन-१

| | | | |
|-----|-----------|----------|--------|
| २१८ | विगीए | विगीइ | उ,ऋ |
| ११२ | सूयरे | सूयगे | अ |
| १३३ | पकरेन्ति | पकरिन्ति | उ |
| | | पकरन्ति | ऋ |
| ११३ | कुब्जेजा | कुविज्जा | उ |
| ११४ | परन्ध | परत्त | ववविन् |
| ११२ | रहृसे | रहृसे | उ,ऋ |
| १२४ | पडिन्मुणे | पडिमुणे | उ |

सम्पादकीय

| | |
|----------|----------------|
| २५।२ | निरट्ठं |
| २६।३ | एगित्थिए |
| ३६।१ | सुकडे त्ति |
| ३६।३ | मुल्लट्ठे त्ति |
| ४०।४ | तोत्त |
| ४१।४ | पुणोत्ति |
| ४२।४ | गरह |
| ४४।३ | मुक्क्य |
| अध्ययन-२ | |
| सू० ३ | दिगिच्छा |
| ८।१ | उमिणप्पगियावेण |
| २४।२ | पट्टिमज्जले |
| अध्ययन-३ | |
| ३।४ | आहारुम्मोहि |
| २०।४ | सासए |
| अध्ययन-४ | |
| ३।२ | किच्चइ |
| ५।२ | परत्था |
| ६।२ | वीसमे |
| ६।४ | भारुण्ड |
| १३।३ | दुगुच्छमाणो |
| अध्ययन-५ | |
| ३।२ | असड |
| ८।४ | भूयगाम |
| १६।४ | वुत्ते व |
| २२।४ | कम्मई |

| |
|----------------|
| निरत्य |
| एगित्थिए |
| मुक्कडि त्ति |
| मुल्लट्ठि त्ति |
| तुत्त |
| पुप्पित्ति |
| पुर्णान्त |
| गरिह |
| मुक्कड |

| |
|----------------|
| दिगिच्छा |
| उमिणप्पगियावेण |
| पडमज्जले |

| |
|-------------|
| अहारुम्मोहि |
| सासवे |

| |
|-------------|
| किच्चई |
| परत्य |
| विस्ससे |
| भारड |
| दुगुच्छमाणो |

| |
|-----------|
| असय |
| भूयगाम |
| वुत्ते वा |
| कम्मई |

पञ्चह

क्वचित्

| |
|----------|
| उ |
| ऋ |
| उ |
| चू, ऋ |
| उ |
| ऋ |
| उ, ऋ |
| अ |
| अ, उ |
| उ, ऋ |
| उ, ऋ |
| अ, स, मु |
| उ |
| उ, क |
| चू |
| चू |
| उ, ऋ, वृ |
| ऋ |
| उ |
| उ, ऋ, वृ |
| अ, उ, ऋ |
| अ |

सोलह

दसवेधालिय-उत्तरजम्भयण

अध्ययन-७

| | | | |
|-----|----------|----------|-------|
| १८१ | सइ | सड | अ |
| | | सय | उ |
| १८३ | उम्मज्जा | उम्मग्गा | अ,उ,ऋ |

अध्ययन-८

| | | | |
|-----|------------|-------------|-----|
| ६१ | दुपरिच्चया | दुपरिच्चइया | अ,ऋ |
| १६४ | इइ | इय | अ,ऋ |
| २०१ | इइ | इय | अ,ऋ |

अध्ययन-९

| | | | |
|-----|---------|---------|-----|
| २४२ | वद्धमाण | वद्धमाण | चू |
| ५८२ | पेच्चा | पेच्छा | अ, |
| | | पिच्चा | उ,ऋ |
| | | पेच्च | स |

अध्ययन-१०

| | | | |
|-----|-----------|------------|--------|
| ११ | पण्डुयए | पडुरए | अ |
| ६१ | आउक्काय | आयक्काय | ऋ |
| ८१ | वाउक्काय | वायक्काय | ऋ |
| १४३ | इक्किक्क | एगेग | बृ |
| | | एकेक्क | अचू |
| १६२ | आरिअत्त | आयरिअत्त | अ,ऋ |
| १६२ | पुणरावि | पुणरवि | अ |
| १७१ | आरियत्तणं | आयरियत्तणं | अ,ऋ |
| २७१ | विसूइया | विसूचिया | ऋ |
| ३२३ | विसोहिया | विसोहिउ | अचू |
| ३५२ | अकलेवर | अकडेवर | चू, बृ |

अध्ययन-११

| | | | |
|-----|-----------|------------|-----|
| १०१ | पन्नरसहिं | पन्नरसेहिं | अ,ऋ |
| १०३ | नीयावत्ती | नीयावित्ती | अ |

अध्ययन-१२

| | | | |
|-----|---------|----------|-------|
| १०३ | जाणाहि | जाणाह | अ |
| १४३ | विहूणा | विहीणा | ऋ |
| १५१ | तुम्हे | तुम्हे | अ |
| २१४ | जेगम्हि | जेणाम्हि | अ,उ,ऋ |
| २६४ | पगरेह | पकरेह | अ,उ,ऋ |
| ४४३ | कम्म | कम्मे | अ,ऋ |
| ४७४ | पत्त | पत्ति | अ,उ,ऋ |

अध्ययन-१३

| | | | |
|-----|----------|----------|-----|
| ८१२ | तुमे | तुम्हे | अ |
| २६३ | पचालराया | पचालरायं | उ |
| ३११ | तूरति | तरति | उ,ऋ |

अध्ययन-१४

| | | | |
|-----|--------------|---------------|---------|
| ३३ | तहोमुयारो | तहेमुयारो | अ |
| १५२ | किच्च इमं | किच्चमिम | अ,ऋ |
| २०३ | ओरुज्जमाणा | उ(अव)रज्जमाणा | उ |
| २०४ | नेव | नेय | अ |
| २४४ | अफला | अहला | ऋ |
| २५४ | सफला | अहला | ऋ |
| २७३ | जाणे | जाणउ | उ,ऋ |
| २८१ | पडिवज्जयामो | पडिवज्जेयामो | उ |
| २६२ | भिक्खायरियाड | भिक्खायरियाए | अ |
| | | भिक्खायरियाय | ऋ |
| ३०१ | विहूणो | विहीणो | ऋ |
| ३२२ | पज्जामि | पय्जामि | ऋ |
| ४३४ | रागदोम | रागदोम | अ उ,ऋ,च |

अठारह

दसवेआलियं-उत्तरज्भयणं

अध्ययन-१५

| | | | |
|------|---------|-----------|------|
| ५।२ | कुओ | कओ - | उ, ऋ |
| ६।१ | जेण पुण | जेणं पुणो | अ |
| १२।४ | वय-काय | वइ-काय | उ |

अध्ययन-१६

| | | | |
|-------|------------|--------------|---------|
| सू० ३ | वितिगिच्छा | विचिकिच्छा | ऋ |
| १।२ | थी | इत्थी | अ |
| ३।१ | संयव थी.हे | संयवित्थीहि | अ |
| १२।१ | कुइयं रुइय | कुवियं रुदित | अ |
| १७।१ | निअए | निइए | अ, आ, इ |
| १७।४ | तहापरे | तहावरे | ऋ |

अध्ययन-१८

| | | | |
|------|--------------|-------------|---------|
| ३।१ | छुभित्ता | छुभित्ता | उ |
| १३।३ | राय | राय | स |
| १३।४ | पेच्चत्थं | पिच्चत्थं | अ, उ, ऋ |
| २०।४ | मणो | मणं | स |
| २७।२ | मिच्छादिट्ठी | मिच्छदिट्ठी | वृ |
| ३६।२ | महिद्धिओ | महिद्धिओ | स |
| ४२।२ | निसूरणो | निसूदणो | उ |
| | | निसूअणो | ऋ |
| ५३।४ | हवइ | भवइ | अ |
| ५३।४ | नीरए | नीरइ | अ |

अध्ययन-१९

| | | | |
|------|--------|-----------|---|
| ६।२ | अणिसाए | अणिसाइ | ऋ |
| १८।२ | अपाहेओ | अपाहेज्जो | अ |
| | | अपाहिओ | ऋ |
| | | अपाहिज्जो | स |

सम्पादकीय

उन्नीस

| | | | |
|------|----------|------------|------|
| १८१४ | तण्हाए | तिण्हाड | उ |
| २०१२ | सपाहेओ | मपाहेज्जो | अ |
| | | समाहिज्जो | म |
| २०१४ | तण्हा | तिण्हा | उ |
| २२१४ | अवउज्ज्ज | अवयज्ज्ज | अ |
| २३१४ | तुभेहि | तुहेहि | अ |
| २६१३ | परिच्चाओ | पग्गिन्नाओ | उ |
| ३५१२ | महाभरो | महवभरो | उ, ऋ |
| ३५१३ | गुरुओ | गरुओ | अ |
| ३८११ | अही | अहे | अ |
| ५२१२ | सिम्बलि | मावलि | अ |
| ५४१३ | फालिओ | फालिओ | अ, उ |
| ७७११ | एगभूओ | एगब्भूओ | आ |
| ८५१३ | अम्म | अम्भ | उ |

अध्ययन २०

| | | | |
|------|--------|---------|---|
| ३५११ | ततो हं | तोह | ऋ |
| ३७१२ | दुहाण | दुक्खाण | अ |

अध्ययन-२१

| | | | |
|------|--------|---------|---|
| ४१२ | पसवर्ड | पसूयर्ड | अ |
| १५१८ | गरुह | गरिह | उ |

अध्ययन-२२

| | | | |
|------|----------|---------|---------|
| १३१२ | उत्तिमाए | उत्तमाट | ऋ |
| ४४१२ | दिच्छमि | दिच्छमि | क्वचित् |
| ४८१२ | मजयाए | मंजटाए | अ |

सम्पादकीय

इक्कीस

अध्ययन-२७

| | | | |
|-----|-----------|------------|------|
| ३।२ | विहम्माणो | विहिम्माणो | उ, ऋ |
| ६।२ | एगोऽत्य | एगित्य | उ |
| - | - | एगत्य | ऋ |

अध्ययन-२८

| | | | |
|------|-----------|------------|------|
| १६।२ | आणारुई | आणरुई | उ, ऋ |
| ३४।४ | एवमन्भतरो | एमेवन्भतरो | अ |
| | | एवमन्भितरो | उ, ऋ |

अध्ययन-२९

| | | | |
|--------|----------------------------|---------------------------|---------|
| सू० १ | रोयइत्ता फासइत्ता पालइत्ता | रोइत्ता फासित्ता पालित्ता | ऋ, स |
| सू० १ | तीरइत्ता | तीरित्ता | इ |
| सू० १ | आराहइत्ता | आराहित्ता | ऋ |
| सू० १ | गरहणया | गरिहणया | उ |
| सू० ३ | सिद्धिमग्गे | सिद्धिमग्ग | अ, उ, ऋ |
| सू० ५ | विणइत्ता | विणयइत्ता | इ |
| सू० ६ | मिच्छादरिसण | मिच्छादरिसण | अ |
| सू० ८ | अपुरक्कार | अपुक्कार | अ |
| सू० १५ | थवथुइ | थयथुइ | अ, उ, ऋ |
| सू० ३३ | विणियट्टणयाए ण | विणिवट्टणयाए ण | अ, उ |
| सू० ७३ | आणापाणु | आणापाण | ऋ |
| सू० ७३ | वेयणिज्जं | वेयणिय | अ |

अध्ययन-३०

| | | | |
|------|-----------|-----------|---|
| १८।१ | रच्छासु व | रत्यासु य | अ |
| २०।१ | पोरुसीणं | पोरिसीण | अ |

अध्ययन-३१

| | | | |
|-----|---------|---------|---|
| ५।२ | तेरिच्छ | तेरिक्ख | अ |
|-----|---------|---------|---|

वाईस -

दसवेआलियं-उत्तरज्जभयण

अध्ययन-३२

| | | | |
|-------|-----------|------------|------|
| १३।१ | विराला | विडाला | वृ |
| १५।३ | जोग्गं | जोगं | अ |
| | | जुग्गं | उ |
| २५।२ | तंसि कखणे | तस्सि खणे | अ |
| | | तर्णिग खणे | उ |
| २६।१ | परिग्गहे | परिग्गहंमि | उ, ऋ |
| २६।४ | आययई | आइयई | अ |
| ३१।४ | समाययन्तो | समाइयन्तो | अ |
| ३७।२ | अकालियं | आकालियं | अ |
| ३८।२ | तंसि कखणे | तम्हि खणे | अ |
| ३८।४ | अवरज्जइ | अवरज्जई | स |
| ३९।१ | रुडरंसि | रुइयंसि | अ |
| ५१।२ | तंसि कखणे | तंसी खणे | अ |
| ६५।२ | अतालिसे | आयालिसे | अ |
| ७६।४ | गाहग्गहीए | गाहग्गहीए | अ, ऋ |
| १०३।४ | हिरिमे | हरिमे | उ, ऋ |
| १०८।३ | दंसण | दरिसण | उ, ऋ |

अध्ययन-३३

| | | | |
|------|-------------|------------|------|
| ६।२ | दंसणे | दरिसणे | उ, ऋ |
| ११।४ | अतोमुहुत्तं | अत मुहुत्त | म |

अध्ययन-३४

| | | | |
|------|---------------|-------------|------|
| ७।१ | हिगुलुय | हिगुल्ला | अ, ऋ |
| १६।२ | सिरीसकुसुमाणं | सरीसकुसमाणं | ऊ, ऋ |
| ३१।४ | गुत्तिहिं | गुत्तिमु | उ, ऋ |
| ३३।४ | हुत्ति | ह्वत्ति | उ, ऋ |

रामनादकीय

तेईस

| | | | |
|-----|---------|----------|-----|
| ३४२ | तेत्तीम | तित्तीसा | ऋ |
| ६०१ | अंत | अतो | उ,ऋ |

अ घयन-३५

| | | | |
|-----|------------------|------------------|---------|
| ४१ | चितहर | चितधर | उ,ऋ |
| ४३ | पहुल्लोय | पडल्लोय | अ |
| ८१ | कुज्जा | कुव्विज्जा | उ,ऋ |
| २११ | निम्ममो निरहकारो | निम्ममे निरहकारे | अ,आ,इ,ग |

अःघयन-३६

| | | | |
|-------|-----------------|----------------|-----|
| १११ | पुहत्तेग | पुहत्तेण | म |
| ३६१ | गुरु | गरुए | म |
| ५५३ | योन्दि | योदि | अ |
| | | वुदि | उ |
| | | वुदि | ऋ |
| ६११ | पण्डुरा | पण्डरा | अ |
| ६६३ | मुपुण्डो | मुसण्ढी | अ |
| १४६१४ | द्विकुणे कुवुणे | द्विकुणे कुकणे | उ,ऋ |
| १४७१ | सिगिरीटी | सिगिडिडि | अ |
| १४७२ | नदावत्ते | नदापत्ते | अ |
| १४७२ | विच्छिए | विच्छए | उ |
| १४७४ | विरली | विरिली | ऋ |
| २०६३ | दिमा | दिमि | ऋ |
| २२८४ | चउट्टन | चोड्डम | अ |
| २२७४ | पण्ढीमड | पण्ढीमड | उ,ऋ |
| २४०१ | अउणतीम | उगुणतीम | म |

प्रस्तुत पाठ

दशवैकालिक का जो पाठ हमने स्वीकार किया है, उसका मुख्य आधार 'ख' प्रति है। किन्तु पूर्णतः मुख्यता किसी की भी नहीं है। आदि से अन्त तक कोई भी प्रति शुद्ध नहीं मिलती। ५।२।१८ में 'कुमुदुप्पल नालिय' यह पाठ अगस्त्यचूर्णि में है। हमने वही स्वीकृत किया है। चूर्णि की भाषा में 'त' और 'ध' की बहुलता है। जैसे—इत्थितो (इत्थिओ २।२), सतणाणि (सयणाणि २।२), जति (जइ २।९)। 'त' का लोप प्रायः नहीं किया गया है।^१ ये प्रयोग प्राचीन अवश्य है पर हम लोग प्राकृत व्याकरण की सीमा में घिरे हुए हैं, इसलिए वे हमारे लिए अपरिचित से हो गए हैं। 'ध' को 'ह' भी प्रायः नहीं किया गया है।^२ जैसे—मधुकार (महुकार १।५), साधीणे (साहीणे २।३)। सप्तमी विभक्ति के स्थान में तृतीया का प्रयोग हुआ है। जैसे—अहागडेहं (अहागडेसु १।४)।

उत्तराध्ययन का पाठ भी आदि से अन्त तक किसी एक प्रति के आधार पर स्वीकृत नहीं किया गया है। पाठ-संशोधन में प्रयुक्त सभी आदर्शों में ३६।६५ का एक शब्द 'पुहत्तेण' है। अर्थ की दृष्टि से यहाँ 'पुहुत्तेण' होना चाहिए। बृहद्बृत्ति (पत्र ६८६) में इसके तीन अर्थ किए गये हैं—महत्त्व, बहुत्व और सामस्त्य। ये तीनों 'पृथु' शब्द के अर्थ हो सकते हैं, 'पृथक्' शब्द के नहीं। अभिधान चिन्तामणि कोष (६।६५) में पृथु शब्द के पर्यायवाची नामों में 'महत्' और 'बहु'—दोनों शब्द हैं। बृहद्बृत्ति (पत्र ६८६) में 'पृथक्त्वेन' मुद्रित हुआ है, वह सम्भवतः लिपि-दोष के कारण हुआ है। उसका मुद्रित मूल पाठ 'पुहत्तेण' है। उक्त अर्थ के पर्यालोचन और उपलब्ध मुद्रित-पाठ के आधार पर हमने 'पुहत्तेण' पाठ स्वीकृत किया है।

इस प्रकार और भी अनेक पाठ चूर्णि और बृहद्बृत्ति के अर्थालोचनपूर्वक स्वीकृत किए गए हैं।

१—हेमशब्दानुशासन, ८।१।१७७।

२—वही, ८।१।१८७।

चौतीसवें अध्ययन मे 'पद्मलेख्या' के लिए 'पम्हलेस्सा' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'पम्ह' शब्द संस्कृत 'पक्ष्म' का प्राकृत रूपान्तर है। 'पद्म' शब्द के दो प्राकृत रूप बनते हैं—'पउम' और 'पम्म'। किन्तु 'पम्ह' रूप नहीं बनता। गोम्मटसार के लेख्या मार्गणाधिकार मे पद्मलेख्या के लिए 'पम्म' और 'पउम'—दोनों शब्द प्रयुक्त हुए हैं।^१ हमने 'पम्ह' शब्द ही रखा है। क्योंकि पाठ-संशोधन में प्रयुक्त या अन्य किसी भी आदर्श मे 'पम्म' या 'पउम' शब्द नहीं मिला।

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन के उद्धृत पाठ

प्रारम्भ से ही दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—ये दोनों सूत्र बहुचर्चित रहे हैं। अनेक आचार्यों ने अपनी-अपनी रचनाओं में स्थान-स्थान पर इन्हें उद्धृत किया है। ये उद्धृत पाठ शब्द और भाषा की दृष्टि से कुछ परिवर्तित रूप में प्राप्त होते हैं। यह भिन्नता क्षेत्र, काल और परम्परा के भेद के कारण हुई, ऐसा प्रतीत होता है। इन भिन्नताओं के कुछ उदाहरण ये हैं :—

मूल पाठ—

वितहं पि तहामुत्ति जं गिरं भासए नरो ।

तम्हा सो पुट्टो पावेणं कि पुण जो मुसं वए ? ॥ (दशवैकालिक ७।५)

बृहत्कल भाष्य, भाग २, पृष्ठ २६० पर उद्धृत पाठ—

वितहं पि तहामुत्ति, जो तहा भासए नरो ।

सो वि ता पुट्टो पावेणं, कि पुणं जो मुसं वए ? ॥

मूल पाठ—

तिण्हमन्नयरागस्स निसिज्जा जस्स कप्पई ।

जराए अभिभूयस्स वाहियस्स तवस्सिणो ॥ (दशवैकालिक ६।५६)

बृहत्कल भाष्य, भाग २, पृष्ठ ३७८ पर उद्धृत पाठ—

तिण्हमन्नयरागस्स, निसिज्जा जस्स कप्पई ।

जराए अभिभूयस्स, वाहियस्सा तवस्सिणो ॥

मूल पाठ—

सगिरस्त वा वि हुंस्त विहरोत्तरेहंतिषो ।

सैव्या स्वयंस्त वि विह्वारु कादिं ? १ (अथर्ववेदिक १५४)

मूलपाठान्तः, अथर्ववेद ४, सूक्ते ३३३, विहरोत्तरेहंतिषो, सूक्त ३३३ में मूलपाठ—

सगिरस्त वा हुंस्त वा विहरोत्तरेहंतिषो ॥

सैव्यासो विह्वारु, वि विह्वारु करिस्तवि ? ॥

मूल पाठ—

सवेजो वा सो वयो वा सो वयो सप्ततरो ।

सैवियो बहुनाये, पाठो वा बहुना ॥

सुप्रसन्नवचनानं विवो वि वि कारां ? ॥

विो वुविहो सैव्यो । सैव्यो विह्वारु वा सो ? १ (अथर्ववेदिक १५४)

मूलपाठान्तः, अथर्ववेद ४, सूक्ते ३३३, विहरोत्तरेहंतिषो, सूक्त ३३३ में मूलपाठ—

सवेजो वा सो वयो, वा सो वयो सुप्रसन्नो ।

सैवियो बहुनाये, पाठो वा बहुना ॥

सुप्रसन्नो वचनानं वुविहो विह्वारु ।

सैव्यो वुविहो, सैव्यो वुविहो सप्ततरो ॥

पाठान्तर की लम्बी परम्परा

आज हमें दो पाठान्तर उपलब्ध हो रहे हैं- उनके अन्तर्गत चार हैं—

(१) सप्ततरो

(२) सैव्यो

(३) मूल पाठ और व्याख्या का संश्लेषण

(४) व्याख्या का मूल रूप में परिवर्तन

(१) सप्ततरो

वीरभद्राचार्य की सप्ततरो में सैव्यो की दो शरणों को मूलतः लंबी किया

उस समय जो पाठान्तर प्रचलित थे, उन्हें संकलित कर लिया गया। वे आगमों की व्याख्याओं में अब भी सुरक्षित हैं।^१

अगस्त्य चूर्ण के रचना-काल में भी परम्परागत पाठ-भेद प्रचलित थे। वहाँ अनेक स्थलों में मतान्तरों का उल्लेख हुआ है।^२ जिनदास चूर्ण की भी यही स्थिति है। टीका-सम्मत पाठ तो इनसे बहुत भिन्न पढ़ जाते हैं। दीपिकाकार टीका से भी आगे बढ़ जाते हैं। जिन श्लोकों की व्याख्या टीका में नहीं है, उन्हें दीपिकाकार मूल सूत्र मान उनकी व्याख्या करते हैं।

चूर्णकार और टीकाकार के बीच जो पाठ-भेद है, उसका कारण परम्परा-भेद है। किन्तु दीपिका में जो पाठ-भेद है, उसका कारण परम्परा-भेद नहीं जान पड़ता। वह लिपिकर्त्ता से सम्बन्धित है। आदर्शों के लेखक प्रायः मुनि रहे हैं। वे व्याख्यान भी देते थे। व्याख्यान-काल में जो प्रासंगिक श्लोक और गायार्थ कही जाती, वे उसी स्थान पर लिख ली जाती और आगे चल कर वे ही लम्बे काल में मूल में घुस जाती। दशवैकालिक और उत्तराध्ययन के आदर्शों में ऐसा हुआ है। दशवैकालिक निर्युक्ति का निम्न श्लोक मूल के साथ लिखा गया है—

वयच्छक्कं कायच्छक्कं, अकप्पो गिहिभायणं ।

पलियं कनिसेज्जा य, सिणाणं सोहवज्जणं ॥ (हाटी, पत्र १६६)

इसी प्रकार उत्तराध्ययन २४१२ के पञ्चात् एक गायार्थ मूल आदर्श में लिखी हुई प्राप्त होती है। जैसे—

संकप्पो सरंभो, परितावकरो भवे समारभो ।

आरंभो उद्धवओ, सुद्धनयाणं तु सन्वेसि ॥

ऐसे पाठान्तरों में स्मृतित्रय का भी योग रहा है। जो मुनि कण्ठस्थ-पाठ के आधार पर सूत्र-पाठ लिखते, उनके आदर्शों में स्मृति-दोष के कारण अक्षरों व

१—जिनदास चूर्ण, पृष्ठ २०४ :

नागज्जुष्णिग्या तु एवं पढंति—‘एवं तु अगुणप्पेही अगुणाणं विवज्जए’ ।

२—देवो—दशवैकालिक, भाग २ में ३।१३ ; ५।१।७; ६।५४ के टिप्पण ।

कही-कहीं श्लोको का विपर्यय हो जाता । उसके उत्तरवर्ती लेखक भी उसी का अनुसरण करते और पाठ-भेद स्थिर हो जाता ।

(२) लिपि-दोष

पाठ-भेद का सबसे प्रमुख कारण लिपि-दोष रहा है । कालक्रम से लिपि में परिवर्तन होता रहा है । पूर्ववर्ती लिपि उत्तरवर्ती लोगो से ठीक-ठीक नहीं पढ़ी जाती और प्रतिलिपि करने वाले सभी विद्वान् नहीं होते । फलस्वरूप अक्षरो का विपर्यय हो जाता है । ऐसा बहुधा हुआ है ।

(३) मूल पाठ और व्याख्या का सम्मिक्षण

जब आगमो को कण्ठस्थ रखने की परम्परा थी, तब उनकी व्याख्याएँ भी कण्ठस्थ रहती थी । कुछ सूत्र-स्पर्शि व्याख्याएँ पाठ के साथ-साथ चलती थी । वे कालक्रम से मूल के साथ जुड़ गईं । यह निष्कर्ष अगस्त्य चूर्णि से सहजतया निकल आता है । उसके अनुसार दशवैकालिक चतुर्थ अध्ययन के त्रस-प्रकरण (सूत्रां क ६) में 'जे य कीडपयगा, जा य कुन्धुपिवीलिया, सव्वे देवा'—ऐसा पाठ है । चूर्णिकार ने लिखा है कि यहाँ 'कीड' द्वीन्द्रिय जाति का प्रतीक है, इसलिए उसके द्वारा द्वीन्द्रिय जाति का ग्रहण कर लेना चाहिए । इसी प्रकार पतग और कुन्धु भी अपनी-अपनी जाति के प्रतिनिधि है । उनके द्वारा उनकी जाति का ग्रहण कर लेना चाहिए ।^१ 'सव्वे बेइदिया, सव्वे तेइदिया, सव्वे चउरिदिया, सव्वे पंचिदिया'—ये व्याख्या के शब्द आगे चल कर मूल पाठ बन गए । इसलिये टीकाकार ने उन्हे मूल मानकर उनकी व्याख्या की है ।^२

१-अगस्त्य चूर्णि :

कीडवयणेण तज्जातीय गहणमिति सव्वे बेइदिया घेप्पन्ति । पयंग गहणेण चउरिदिया । कुन्धु पिवीलियाभिहाणेण तिदिया ।

२-हारिमद्रीय टीका, पत्र १४२ :

ये च कीटपतङ्गा इत्यत्र कीटाः—कृमयः, 'एकग्रहणे तज्जातीयग्रहण'मिति द्वीन्द्रियाः शङ्खादयोऽपि गृह्यन्ते पतङ्गा.—शलमा, अत्रापि पूर्ववच्चतुरिन्द्रियाः सर्व एव गृह्यन्ते, अत एवाह—सर्वे द्वीन्द्रिया—कृम्यादयः सर्वे त्रीन्द्रियाः—कुन्धादयः, सर्वे चतुरिन्द्रियाः—पतङ्गादयः । सर्वे पञ्चेन्द्रिया. सामान्यतः ।

इसी प्रकार महाव्रतो के सूत्र-पाठ में भी कुछ सम्मिश्रण होने का उल्लेख मिलता है।^१

(४) व्याख्या का पाठ रूप में परिवर्तन

उत्तराध्ययन २२।२४ में 'पंचमुद्गीहि' ऐसा पाठ आया है। वास्तव में यह पाठ 'पंचट्टा' था। 'अट्टा' का अर्थ है 'मुष्टि'। पंच अट्टा अर्थात् पंचमुष्टि। पंचट्टा शब्द अपरिचित था। बृहद्बृत्ति (पत्र ४६२) में पंचट्टा का अर्थ पंचमुष्टि है। कालान्तर में यह व्याख्यागत अर्थ ही मूल पाठ बन गया।

अन्य आगमों में भी ऐसे अनेक उदाहरण हमें प्राप्त हुए हैं।

दशवैकालिक : प्रति परिचय

क : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति हमारे 'सवीय संग्रह' की है। इसके पृष्ठ १७ व पत्र ३४ हैं। प्रत्येक पत्र लगभग १० इंच लम्बा व ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की पंक्तियाँ १२-१३ व प्रत्येक पंक्ति में ४६ से ५३ तक अक्षर हैं। अवचूरी पाठ के चारों तरफ लिखी हुई है। प्रति काली स्याही से व गाथाओं की सख्या लाल स्याही से लिखी हुई है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्नलिखित प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

॥१० दशवैकालिक समाप्तमिति ॥वा॥ सवत् १५०३ वर्षे आपाद् मासे कृष्ण पक्षे चतुर्थी दिने शनिवारे ॥ दशवैलिखितं ॥ सुन्दरसवेगणनि योग्यं ॥

ख : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति भी हमारे 'सवीय संग्रह' की है। इसके पत्र १६ व पृष्ठ ३८ हैं। प्रत्येक पत्र लगभग १० इंच लम्बा व ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की पंक्तियाँ १३ व प्रत्येक पंक्ति में ४४ से ४६ तक अक्षर हैं। अवचूरी पाठ के चारों

१-अगस्त्य चूर्ण :

केति सुत्तमिथं पढन्ति, केति वृत्तिगलं विसेसिति, जहा से तं पाणातिवाते
चउच्चिहे तं जहा दन्वतो, खेततो, कालतो, भावतो ।

प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

॥ इति षट्त्रिंशदुत्तराध्ययना नामवचूरि समाप्ताः ॥ श्री रस्तु ॥

सं० १५३८ वर्षे विशाख सुदि १० रवि लिषितं ॥ चिर नंदतु ॥१॥१

आ : उत्तराध्ययन मूल पाठ (हस्त-लिखित)

यह प्रति छापर निवासी मोहनलाल दुघोडिया के संग्रहालय की है। इसके पत्र ८६ व पृष्ठ १७८ हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा व ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में ११ पंक्तियाँ व प्रत्येक पंक्ति में अक्षर लगभग ३२ से ४० तक हैं। अक्षर बड़े तथा पढ़ने में स्पष्ट हैं। प्रति काली स्याही से व लेखक की प्रशस्ति लाल स्याही से लिखी हुई है। प्रशस्ति निम्न प्रकार है :

॥ संवत् १५६१ वर्षे श्री पत्तनपुरवरे श्री जिनवल्लभ सूरि संताने श्री खरतर गच्छेण नभोगण दिनकर करणि सैद्धान्तिक सिरोमणि श्रीजिनभद्र सूरि श्री जिनचन्द्रसूरि तत्पट्टप्रतिष्ठित श्री जिनभद्रसूरि पट्ट पूर्वाचल सहस्रकरावतार भाग्य सौभाग्य संगी सुभग भालस्थल भट्टारक प्रभु श्री श्री श्री जिनहस सूरि पट्टे श्री श्री श्री जिनमाणिक्य सूरिभिः सार्वभोगैः वा० आणद नदन गणाय प्रसादी कृतेयं प्रति ।

इ : उत्तराध्ययन मूल (हस्तलिखित)

यह प्रति छापर निवासी मोहनलाल दुघोडिया के संग्रहालय की है। इसके पत्र ३८ व पृष्ठ ७६ हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा व ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में १७ पंक्तियाँ व प्रत्येक पंक्ति में अक्षर लगभग ५०-५१ हैं। अक्षर बड़े तथा पढ़ने में स्पष्ट हैं। प्रति काली स्याही से लिखी गई है। यह प्रति अनुमानतः १६ वीं शताब्दी में लिखी गई है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्नलिखित प्रशस्ति है :

॥ इति श्रीमदुत्तराध्ययन श्रुतस्वधः समाप्तः ॥ परमाप्त प्रणीतः ॥ छ ॥
निर्मुक्तिकार एतन्माहात्म्यमाह ॥ जे किर भवसिद्धीया परिस्त संसारियाय जे भव्वा । ते किर पढति एए छत्तीसं उत्तरज्ज्भाए तम्हा जिण पन्नत्ते । अणंतगम पज्जवेहिं संजुत्ते । अब्भाए जह जोग । गुरुप्पसाया अहिज्जिजा ॥२॥
जो ज्जागविहीइ वहित्ता एए जो लिहइ सुत्तं अच्छ व ॥ भासेइय भवियजणो

सो पालइ निज्जरा विजला ॥ ३ ॥ जस्साढती एए कह विसमप्यति विग्घर-
हियस्स । सोलक्खिज्जड भव्वो ॥ पुव्वरिसी एव भासंति ॥४ ॥छ्छ् ॥ गुभं
भवतु ॥श्रीः॥

उ : उत्तराध्ययन पाठ व अवचूरी सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सरदारगहर की है। अनुमानतः
सं० १५०० मे लिखी हुई है। इसके पत्र ५९ व पृष्ठ ११८ है। पत्र १० इंच
लम्बे और ४। इंच चौड़े है। पत्र के दोनो तरफ। इंच का मार्जिन है। पाठ
और अवचूरी काली स्याही से लिखे हुए है। श्लोकांक तथा मार्जिन की रेखाएँ
लाल स्याही में है। दोनो तरफ के मार्जिन के मध्य भाग में पाठ और
चारो तरफ अवचूरी है। प्रत्येक पृष्ठ मे पाठ की न्यूनतम ८ आर अधिकतम १५
पंक्तियाँ है। प्रति के अन्त मे निम्नलिखित प्रशस्ति है :

इति श्री उत्तराध्ययनावचूरिः समाप्ता ॥ छ्छ ॥ श्री रस्तु ॥ छ्छ ॥ ए प्रति
भ० श्री विद्यासागर सूरि पूसरीया शिष्य गुणवाय कर्मसागरे प्रति लिघी
कलकवल रहित सह ।

ग : उत्तराध्ययन पाठ व अवचूरी सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सरदारगहर की है। विक्रमाब्द
१५३५ में लिखी गई है। इसके पत्र ७९ व पृष्ठ १५८ है। प्रत्येक पत्र १०।
इंच लम्बा और ४। इंच चौड़ा है। यह प्रति काली स्याही से स्पष्ट लिखित
है। इसके श्लोकांक तथा दोनो तरफ का मार्जिन लाल स्याही में है। प्रत्येक
पृष्ठ मे पाठ की न्यूनतम ६ और अधिकतम १३ पंक्तियाँ हैं। अवचूरी मार्जिन
तथा पाठ के ऊपर और नीचे के भाग मे लिखी हुई है। अवचूरी के अक्षर से
पाठ के अक्षर लगभग ड्योढे बडे है। प्रति के अंत मे निम्नलिखित प्रशस्ति है :

लिखिता श्री उत्तराध्ययनावचूरिः स्वपरोपकृत्यैः ॥ १ गुभं भवतु ॥१॥

सं० १५३५ वर्ष आसोज सुदि ५ भोमे अद्येह श्री ।

स : उत्तराध्ययन सर्वार्थसिद्धि टीका सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति छापार निवासी मोहनलालजी दुधोड़िया के संग्रहालय की है।

इसके पत्र ३२३ और पृष्ठ ६४६ है किन्तु प्रारम्भ के १६ पत्र प्राप्त नहीं हैं। प्रति बहुत प्राचीन है। अनुमानतः १६ शताब्दी में लिखी हुई होनी चाहिए। पत्र इतने जीर्ण हैं कि कभी-कभी हाथ के स्पर्श से ही खिरने लगते हैं। प्रति प्रायः बहुत शुद्ध लिखी हुई है। प्रत्येक पत्र १०॥ इंच लम्बा व ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में १५ पंक्तियाँ व प्रत्येक पंक्ति में लगभग ५३-५४ अक्षर हैं। टीका और पाठ समान अक्षर में ही लिखा हुआ है।

सु : सुखबोधा टीका, नेमिचन्द्राचार्य कृत (मुद्रित)

प्रकाशक :- देवचन्द्र लालभाई।

वृ : बृहद्वृत्ति 'शान्त्याचार्य कृत' (मुद्रित-निर्णयसागर प्रेस, बम्बई)

प्रकाशक :- देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्वारे-ग्रन्थांक ३३।

चू : चूर्णि (गोपालिक महत्तर शिष्य कृत)

श्रेष्ठि देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्वारे, ग्रंथांक ३३।

मोहमयीपत्तने वी० सम्बत् २४४२।

कृतज्ञता-ज्ञापन

जैन-परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएँ हो चुकी हैं। देवद्विगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए हैं। उनको पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्य श्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, गवेषणापूर्ण, तटस्थ दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आचार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्य श्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का

अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन आदि-आदि । इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्य श्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है । यही हमारा इस गुस्तर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है ।

मैं आचार्य श्री के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन कर भार-मुक्त होऊँ, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-सबल पा और अधिक भारी बनूँ ।

प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादन में मुनि दुलहराजजी का अविकल योग रहा है ।

पाठ-संपादन के कार्य में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी ने श्रम और निष्ठापूर्वक योग दिया है ।

गन्दानुक्रम आदि कार्य में मुनि श्रीचन्द्रजी 'कमल' अत्यन्त दत्तचित्तता से लगे रहे हैं । मुनि हनुमानमलजी (सरदारगहर) का भी उसमें उल्लेखनीय योग रहा है ।

विषयानुक्रम मुनि रूपचन्द्रजी ने तैयार किया है ।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योग का मूल्यांकन करते हुए मैं इनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ ।

इस कार्य में स्वर्गीय श्री मदनचन्द्रजी गोठी, आगम-सम्पादन-समिति के सयोजक श्री श्रीचन्द्रजी रामपुरिया, आदर्श साहित्य संघ के संचालक व व्यवस्थापक श्री हनूतमलजी सुराणा और जयचन्दलालजी दफ्तरी का भी अविरल योग रहा है । आदर्श साहित्य संघ की सहयुक्त सामग्री ने इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है ।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योग-दान की परम्परा का उल्लेख व्यवहार-पूर्ति मात्र है । वास्तव में यह हम सबका पवित्र कर्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है ।

बीदासर (राजस्थान)

१५, अगस्त, १९६६

—मुनि नथमल

“

“

भूमिका

भूमिका का विषयानुक्रम

| | |
|---|---------|
| १. आगम सूत्रों का वर्गीकरण | पृष्ठ १ |
| २. मूल-सूत्र | २ |
| ३. मूलाचार और मूल-सूत्र | ३ |
| ४. मूल-सूत्र वर्ग की कल्पना और श्रुत-पुरुष | ४ |
| ५. अध्ययन-क्रम का परिवर्तन और मूल-सूत्र | ६ |
| ६. मूल-सूत्रों की संख्या | ६ |
| ७. मूल-सूत्रों का विभाजन-काल | ८ |
| ८. दशवैकालिक और उत्तराध्ययन का स्थान | ९ |
| ९. दशवैकालिक : आकार और विषय-वस्तु | ९ |
| १०. दशवैकालिक : निर्यूहण-कृति | ११ |
| ११. दशवैकालिक : व्याकरण-विमर्ग | १२ |
| १२. दशवैकालिक : भाषा की दृष्टि से | १३ |
| १३. दशवैकालिक के व्याख्या-ग्रन्थ | १४ |
| १४. उत्तराध्ययन | १६ |
| १५. उत्तराध्ययन : रचना-काल और कर्तृत्व | २१ |
| १६. क्या उत्तराध्ययन भगवान् महावीर को अंतिम वाणी है ? | २६ |
| १७. महावीर-वाणी का प्रतिनिधि सूत्र | ३१ |
| १८. उत्तराध्ययन : आकार और विषय-वस्तु | ३३ |
| १९. उत्तराध्ययन की कथाएँ : तुलनात्मक दृष्टिकोण | ३७ |
| २०. उत्तराध्ययन : व्याकरण-विमर्ग | ३७ |
| २१. उत्तराध्ययन : भाषा की दृष्टि से | ३९ |
| २२. उत्तराध्ययन के व्याख्या-ग्रन्थ | ४३ |
| २३. उपसंहार | ४६ |

भूमिका

१ : आगम-सूत्रों का वर्गीकरण

जैन आगमों का प्राचीनतम वर्गीकरण पूर्व और अंग के रूप में प्राप्त होता है। पूर्व सख्या में चौदह थे^१ और अंग बारह^२।

दूसरा वर्गीकरण आगम-संकलन-कालीन है। उसमें आगमों को दो वर्गों में विभक्त किया गया है—अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य।^३

तीसरा वर्गीकरण इन दोनों का मध्यवर्ती है। उसमें आगम-साहित्य के चार वर्ग किए गए हैं—(१) चरण-करणानुयोग, (२) धर्मकथानुयोग, (३) गणितानुयोग और (४) द्रव्यानुयोग।

एक वर्गीकरण सबसे उत्तरवर्ती है। उसके अनुसार आगम चार वर्गों में विभक्त होते हैं—(१) अंग, (२) उपांग, (३) मूल और (४) छेद।

नंदी के वर्गीकरण में मूल और छेद का विभाग नहीं है। उपांग शब्द भी अर्वाचीन है। नंदी के वर्गीकरण में इस अर्थ का वाचक अनंग-प्रविष्ट या अंग-बाह्य शब्द है।

आगमों का एक वर्गीकरण अध्ययन-काल की दृष्टि से भी किया गया है। दिन और रात के प्रथम एवं अन्तिम प्रहर में पढ़े जाने वाले आगम 'कालिक' तथा दिन और रात के चारों प्रहरों में पढ़े जाने वाले आगम 'उत्कालिक' कहलाते हैं।

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—ये दोनों 'मूल-सूत्र' कहे जाते हैं।

१—समवायाङ्ग, समवाय १४ .

चउवस पुव्वा ५० तं०—

उप्यायपुव्वमग्गेणियं च तइयं च वीरियं पुव्वं ।

अत्थीनत्थिपवायं तत्तो नाणप्पवायं च ॥

सच्चप्पवायपुव्वं तत्तो आथप्पवायपुव्वं च ।

कम्मप्पवायपुव्वं पच्चवत्थारणं भवे नवमं ॥

विज्जाअणुप्पवायं अवंक्कपाणाउ वारसं पुव्वं ।

तत्तो किरियविसालं पुव्वं तह विदुसारं च ॥

२—वही, समवाय १३६ :

दुवाल्लसंगे गणपिडगे ५० तं०—आयारे सूयगडे ठाणे समवाए विवाहपन्नत्ती पायाधम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ प्हावागरणाइं विवागसुए दिट्ठिवाए ।

३—नंदी, सूत्र ४३ :

अहवा तं समासओ दुविहं पण्णत्तं तंजहा—अङ्गयचिट्ठं अङ्गवाहिरं च ।

२ : मूल-सूत्र

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन गणवर-कृत नहीं हैं, इसलिए अंग-ब्राह्म है। इन्हें 'मूल' क्यों माना गया, इसका कोई प्राचीन उल्लेख उपलब्ध नहीं है। अनेक विद्वानों ने 'मूल' शब्द को अनेक आनुमानिक व्याख्याएँ की हैं। "दशवैकालिक एक समीक्षात्मक अध्ययन" में इनका उल्लेख हम कर चुके हैं।

प्रो० विन्टरनिट्ज ने 'मूल' शब्द को 'मूल ग्रन्थ' के अर्थ में नवीकृत किया है। उनका अभिप्राय यह है—इन सूत्रों पर अनेक टीकाएँ हैं। इनमें 'मूल ग्रन्थ' का भेद करने के लिए इन्हें 'मूल-सूत्र' कहा गया।^१ यह प्रामाणिक नहीं है। प्रो० विन्टरनिट्ज ने पिण्डनिर्युक्ति को भी 'मूल-वर्ग' में सम्मिलित किया है। किन्तु उसकी अनेक टीकाएँ नहीं हैं। यदि अनेक टीकाएँ होने के कारण ही 'मूल-सूत्र' की संज्ञा दी गई तो पिण्डनिर्युक्ति इस वर्ग में नहीं आ सकती।

डॉ० सरयेन्डियर^२, डॉ० ग्यारीनो^३ और प्रो० पटवर्धन^४ ने 'मूल-सूत्र' का अर्थ 'भगवान् महावीर के मूल शब्दों का संग्रह' किया है। किन्तु यह भी संगत नहीं है।

१—ए हिन्दूी ऑफ इण्डियन लिटरेचर, भाग-२, पृ० ४६६, पाद-टिप्पणी-१ :

Why these texts are called "root-Sūtras" is not quite clear Generally the word mūla is used in the sense of "fundamental text" in contradistinction to the commentary Now as there are old and important commentaries in existence precisely in the case of these texts, they were probably termed "Mūla-texts"

२—दी उत्तराध्ययन सूत्र, भूमिका, पृ० ३२ .

In the Buddhist work Mahāvīyutpatti 245. 1265 mūlagrantha seems to mean 'original text'. i.e the words of Buddha himself Consequently there can be no doubt whatsoever that the Jains too may have used mūla in the sense of 'original text', and perhaps not so much in opposition to the later abridgments and commentaries as merely to denote the actual words of Mahāvīra himself

३—ए रिलीजियन द'जैन, पृ० ७९ .

The word Mūla-Sūtra is translated as "trates originaux"

४—दी दशवैकालिक सूत्र : ए स्टडी, पृ० १६ :

We find however the word Mūla often used in the sense of "original text", and it is but reasonable to hold that the

भगवान् महावीर के मूल गद्यों के कारण ही किसी आगम को 'मूल' संज्ञा दी जाय तो वह आचाराग के प्रथम श्रुतस्कंध को ही दी जा सकती है। वह सबसे प्राचीन और महावीर के मूल गद्यों का संकलन है।

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन मुनि की जीवन-चर्या के प्रारम्भ में मूलभूत सहायक वनते हैं तथा आगमों का अध्ययन इन्हीं के पठन से प्रारम्भ होता है। इसीलिए इन्हें 'मूल-सूत्र' की मान्यता मिली, ऐसा प्रतीत होता है। डॉ० सुब्रिग का अभिमत भी यही है।^१

हमारा दूसरा अभिमत यह है कि इनमें मुनि के मूल गुणों—महाव्रत, समिति आदि का निरूपण है। इस दृष्टि से इन्हें 'मूल-सूत्र' की संज्ञा दी गई।

३ : मूलाचार और मूल-सूत्र

'मूलाचार' आचार्य वट्टकेर की रचना है।^२ उसमें भी उक्त अभिमत की पुष्टि होती है। मूलाचार में मुनि के मूल आचार का निरूपण है। उसमें उत्तराध्ययन के अनेक श्लोक संगृहीत हैं।^३

word Mūla appearing in the expression Mūlasūtra has got the same sense. Thus the term Mūlasūtra would mean "the original text, i.e., 'the text containing the original words of Mahāvīra (as received directly from his mouth)'" And as a matter of fact we find, that the style of Mūlasūtras Nos 1 and 3 (उत्तराध्ययन and दशवैकालिक) as sufficiently ancient to justify the claim made in their favour by their original title, that they represent and preserve the original words of Mahāvīra

१—दसवेयालिय सुत्त, भूमिका, पृ० ३ :

Together with the Uttarajjhāyā (commonly called Uttarajjha-yana Sutta) the Āvassaganijjuti and the Pindanijjuti it forms a small group of texts called Mūlasutta. This designation seems to mean that these four works are intended to serve the Jain monks and nuns in the beginning (मूल) of their career.

२—मुनि कल्याणविजयजी गणी ने 'श्रमण भगवान् महावीर' पृ० ३४३ पर 'मूलाचार' का रचना-काल विक्रम की सातवीं शताब्दी के आस-पास माना है।

| | |
|-----------------|----------------------------|
| ३—मूलाचार, ४१६९ | मिलाइए—उत्तराध्ययन, ३६।२५७ |
| " ४१७० | " " ३६।२५८ |
| " ४१७२ | " " ३६।२६० |
| " ४१७३ | " " ३६।२६१ |

दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, आवश्यक तथा ओषधनिर्युक्ति-पिण्डनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्र' वर्ग में स्थापित करने वाले आचार्य के मन में वही कल्पना रही है, जो कल्पना आचार्य वट्टकेर के मन में 'मूलाचार' के अधिकार-निर्माण में रही है। 'मूल-सूत्रो' की विषय-वस्तु से जो अधिकार तुलनीय है, वे ये हैं—

| | |
|-------------------------|-------------------------------|
| (१) मूल-गुणाधिकार | मिलाइए—दशवैकालिक, उत्तराध्ययन |
| (४) समाचाराधिकार | मिलाइए—ओषधनिर्युक्ति |
| (६) पिण्ड-शुद्धि अधिकार | मिलाइए—पिण्डनिर्युक्ति |
| (७) षडावश्यकधिकार | मिलाइए—आवश्यक |

इस सादृश्य के आधार पर दशवैकालिक, उत्तराध्ययन आदि को 'मूल-सूत्र' वर्ग में रखने का हेतु बुद्धिगम्य हो जाता है।

४ : मूल-सूत्र वर्ग की कल्पना और श्रुत-पुरुष

'मूल-सूत्र' वर्ग की कल्पना का एक कारण श्रुत-पुरुष (आगम-पुरुष) भी हो सकता है। नंदी-चूर्णि में श्रुत-पुरुष की कल्पना की गई है। पुरुष के शरीर में वारह अंग होते हैं—दो पैर, दो जूघाएँ, दो ऊरु, दो गात्रार्ध (उदर और पीठ), दो भुजाएँ, श्रीवा और शिर। आगम-साहित्य में जो वारह अंग हैं, वे ही श्रुत-पुरुष के वारह अंग हैं।^१ अंग-वाह्य श्रुत-पुरुष के उपांग स्थानीय है। यह परिकल्पना अंग-प्रविष्ट और अंग-वाह्य—इन दो आगमिक वर्गों के आधार पर हुई है। इसमें 'मूल' और 'छेद' की कोई चर्चा नहीं है। हरिभद्रसूरि (विक्रम की ८ वी शताब्दी) और आचार्य मलयगिरि (विक्रम की १३ वी शताब्दी) के समय तक भी श्रुत-पुरुष की कल्पना में अंग-प्रविष्ट और अंग-वाह्य—ये दो ही परिपाक्ष रहे हैं। इन दोनों आचार्यों ने चूर्णि का अनुसरण किया है। उसमें कोई नई बात नहीं जोड़ी है।^२ आचार्य मलयगिरि ने तो अंग-प्रविष्ट तथा आचारांग आदि को भी 'मूल-भूत' कहा है।^३ श्रुत-पुरुष की प्राचीन रेखा-कृतियों में अंग-प्रविष्ट श्रुत की स्थापना इस प्रकार है —

१-नंदी चूर्णि, पृ० ४७ :

इच्छेतस्स सुतपुरिसस्स जं सुतं अंगमागळितं तं अंगपविट्ठं भण्णइ ।

२-नंदी, हरिभद्रीय वृत्ति, पृ० ९० ।

३-नंदी, मलयगिरीया वृत्ति, पत्र २०३ :

यद् गणधरदेवकृतं तदंगप्रविष्टं मूलभूतमित्यर्थः, गणधरदेवा हि मूलभूतमाचारादिकं श्रुतमुपरचयन्ति ।

| | | |
|--------------|---|-------------------|
| १—दायाँ पैर | = | आचारांग |
| २—दायाँ टेर | = | सूत्रकृतांग |
| ३—दाईं जंघा | = | स्थानांग |
| ४—बाईं जंघा | = | समवायांग |
| ५—दायाँ ऊरु | = | भगवती |
| ६—दायाँ ऊरु | = | ज्ञाताधर्मकथा |
| ७—उदर | = | उपासकदशा |
| ८—पीठ | = | अन्तकृद्दशा |
| ९—दाईं भुजा | = | अनुत्तरोपपातिकदशा |
| १०—बाईं भुजा | = | प्रश्नव्याकरण |
| ११—ग्रीवा | = | विपाक |
| १२—शिर | = | दृष्टिवाद |

इस स्थापना के अनुसार भी मूल-स्थानीय (चरण-स्थानीय) आचारांग और सूत्रकृतांग है ।^१

श्रुत-पुरुष की अन्य रेखा-कृतियों में स्थापना भिन्न प्रकार से मिलती है । उनमें मूल-स्थानीय चार सूत्र हैं—आवश्यक, दशवैकालिक पिण्डनिर्मुक्ति और उत्तराध्ययन । नदी और अनुयोगद्वार को व्याख्या-ग्रन्थो (या चूलिका-सूत्रो) के रूप में 'मूल' में भी नीचे प्रदर्शित किया है ।^२

पैंतालीस आगमों को प्रदर्शित करने वाली श्रुत-पुरुष की रेखाकृति बहुत अर्वाचीन है । यदि इनकी कोई प्राचीन रेखाकृति प्राप्त हो तो प्रस्तुत विषय की प्रामाणिक जानकारी हो सकती है । जिस समय पैंतालीस आगमों की मान्यता स्थिर हुई, उसके आस-पास या उसी समय, संभव है श्रुत-पुरुष की स्थापना में भी परिवर्तन हुआ । चूर्ण-कालीन श्रुत-पुरुष के 'मूल-स्थान' (चरण-स्थान) में आचारांग और सूत्रकृतांग थे । उत्तर-कालीन श्रुत-पुरुष के 'मूल-स्थान' में दशवैकालिक और उत्तराध्ययन आ गए । इन्हें 'मूल-मूल' मानने का यह सर्वाधिक संभावित हेतु है ।

१—श्री आगम पुरुषतुं रहस्य, पृष्ठ ५० के सामने (श्री उदयपुर, मेवाड़ के हस्त-लिखित भण्डार से प्राप्त प्राचीन) श्री आगम पुरुष का चित्र ।

२—वही, पृष्ठ १४ तथा ४९ के सामने वाला चित्र ।

५ : अध्ययन-क्रम का परिवर्तन और मूल-सूत्र

आगमिक-अध्ययन के क्रम में जो परिवर्तन हुआ, उससे भी इसकी पुष्टि होती है। दशवैकालिक की रचना से पूर्व आचारांग के बाद उत्तराध्ययन पढा जाता था। दशवैकालिक की रचना होने के पश्चात् दशवैकालिक के बाद उत्तराध्ययन पढा जाने लगा।^१

प्राचीन काल में आचारांग के प्रथम अध्ययन 'शास्त्र-परिज्ञा' का अध्ययन करा कर शैक्ष की उपस्थापना की जाती थी और फिर वह दशवैकालिक के चतुर्थ अध्ययन 'पड्जीवनिका' का अध्ययन करा कर की जाने लगी।^२

प्राचीन काल में आचारांग के द्वितीय अध्ययन के पंचम उद्देशक के 'आमगन्ध' सूत्र का अध्ययन करने के बाद मुनि 'पिण्डकल्पी' होता था। फिर वह दशवैकालिक के पाँचवें अध्ययन 'पिण्डपणा' के अध्ययन के पश्चात् 'पिण्डकल्पी' होने लगा।^३

ये तीनों तथ्य इस बात के साक्षी हैं कि एक समय आचारांग का स्थान दशवैकालिक ने ले लिया। आचार की जानकारी के लिए आचारांग मूल-भूत था, वैसे ही दशवैकालिक भी आचार-ज्ञान के लिए मूल-भूत बन गया। संभव है आदि में पढ़े जाने के कारण तथा मुनि की अनेक मूल-भूत प्रवृत्तियों के उद्बोधक होने के कारण इन्हें 'मूल-सूत्र' की संज्ञा दी गई।

६ : मूल-सूत्रों की संख्या

१—उपाध्याय समयमुन्दर ने 'मामाचारी शतक' में (इसकी रचना विक्रम सं० १६७२ में हुई थी) 'मूल-सूत्र' चार माने हैं—(१) दशवैकालिक, (२) ओषधिनिर्युक्ति, (३) पिण्डनिर्युक्ति और (४) उत्तराध्ययन।

१—व्यवहार भाष्य, उद्देशक ३, गाथा १७६ :

आयारस्स उ उवरि, उत्तरज्ज्भयणा उ आसि पुब्बं तु ।
दसवेयालिय उवरि, इयाणि कि ते न होती उ ॥

२—वही, उद्देशक ३, गाथा १७४ .

पुब्बं सत्यपरिण्णा, अधीय पढियाइ होउ उवट्ठवणा ।
इण्हिं च्छज्जीवणया, कि सा उ न होउ उवट्ठवणा ॥

३—वही, उद्देशक ३, गाथा १७५ .

वितितंमि वंमच्चेरे, पंचमउद्देश आमगंधम्मि ।

सुत्तंमि पिडकल्पी, इइ पुण पिडेसणाएओ ॥

२—भावप्रभसूरि (१८ वी शताब्दी) ने भी 'मूल-सूत्र' चार माने है—(१) उत्तराध्ययन, (२) आवश्यक, (३) पिण्डनिर्युक्ति-ओषनिर्युक्ति और (४) दशवैकालिक ।^१ ये नाम उपाध्याय समयसुन्दर के नामों से भिन्न है । इसमें पिण्डनिर्युक्ति और ओषनिर्युक्ति को एक मानकर 'आवश्यक' को भी 'मूल-सूत्र' माना गया है ।

३—स्थानकवासी^२ और तेरापन्थ^३ सम्प्रदाय में उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, नदी और अनुयोगद्वार—इन चार सूत्रों को 'मूल' माना गया है ।

४—आधुनिक विद्वानों ने 'मूल सूत्रों' की संख्या और क्रम-व्यवस्था निम्न प्रकार मानी है

(क) प्रो० वेबर और प्रो० वूलर—उत्तराध्ययन, आवश्यक और दशवैकालिक को 'मूल-सूत्र' ठहराते हैं ।

(ख) डॉ० सरपेण्टियर, डॉ० विन्टरनिज और डॉ० ग्यारिनो—उत्तराध्ययन, आवश्यक, दशवैकालिक और पिण्डनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्र' मानते हैं ।

(ग) डॉ० सुक्रिंग—उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, आवश्यक, पिण्डनिर्युक्ति और ओषनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्रों' की संज्ञा देते हैं ।^४

(घ) प्रो० हीरालाल कापडिया—आवश्यक, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, दशवैकालिक चूलिकाएँ, पिण्डनिर्युक्ति और ओषनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्र' कहते हैं ।^५

उक्त सब अभिमतों को संकलित करने पर 'मूल-सूत्रों' की संख्या आठ हो जाती है—आवश्यक, दशवैकालिक, दशवैकालिक-चूलिकाएँ, उत्तराध्ययन, पिण्डनिर्युक्ति, ओषनिर्युक्ति, अनुयोगद्वार और नदी ।

आगमों के वर्गीकरण में आवश्यक का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है । अनंग-प्रविष्ट आगमों के दो विभाग किए गए हैं । उनमें पहला आवश्यक और दूसरा आवश्यक-व्यतिरिक्त है । दशवैकालिक, उत्तराध्ययन आदि आगम दूसरे विभाग के अन्तर्गत हैं, जब कि आवश्यक का अपना स्वतंत्र स्थान है । इसलिए इसे 'मूल-सूत्रों' की संख्या में सम्मिलित करने का कोई हेतु प्रस्तुत नहीं है ।

१—जैनधर्मवरस्तोत्र, श्लोक ३० की स्वोपज्ञ वृत्ति—अथ उत्तराध्ययन-आवश्यक-पिण्डनिर्युक्ति तथा ओषनिर्युक्ति-दशवैकालिक—इति चत्वारि मूलसूत्राणि ।

२—श्री रत्नमुनि स्मृति गन्ध, आगम और व्याख्या साहित्य, पृष्ठ २७ ।

३—श्रीमज्जयाचार्य कृत प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध, आगमाधिकार, पृ० ७३-७४ ।

४—ए हिस्ट्री ऑफ दी केनोनिकल लिटरेचर ऑफ दी जैन्स, पृष्ठ ४४-४५ ।

५—वही, पृ० ४८ ।

ओघनिर्युक्ति और पिण्डनिर्युक्ति—ये दोनों आगम नहीं है, किन्तु व्याख्या-ग्रन्थ है। पिण्डनिर्युक्ति दशवैकालिक के पाँचवें अव्ययन—पिण्डवगा—की व्याख्या है। ओघनिर्युक्ति ओघ-समाचारी की व्याख्या है। यह आवश्यक निर्युक्ति का एक अंश है। विस्तृत कालेवर होने के कारण इसे पृथक्-ग्रन्थ का रूप दिया गया।^१ इसलिए इन्हें 'मूल-सूत्रों' की संख्या में सम्मिलित करने की अपेक्षा दशवैकालिक और आवश्यक के सहायक ग्रन्थों के रूप में स्वीकार करना अधिक संगत लगता है।

अनुयोगद्वार और नंदी—ये दोनों चूलिका-सूत्र हैं। इन्हें 'मूल-सूत्र' वर्ग में रखने का कोई हेतु उपलब्ध नहीं है। सम्भव है बत्तीस सूत्रों की मान्यता के साथ (वि० १६ वीं शताब्दी में) इन्हें 'मूल-सूत्र' वर्ग में रखा गया। श्रीमज्जयाचार्य ने पूर्व प्रचलित परम्परा के अनुसार अनुयोगद्वार और नंदी को 'मूल-सूत्र' माना है। किन्तु इस पर उन्होंने अपनी ओर से कोई भीमासा नहीं की है।

इस प्रकार 'मूल-सूत्र' की संख्या दो रह जाती है—दशवैकालिक और उत्तराध्ययन।

७ : मूल-सूत्रों का विभाजन-काल

दशवैकालिक की निर्युक्ति, चूर्णि और हारिभदीय वृत्ति में मूल-सूत्रों की कोई चर्चा नहीं है।

इसी प्रकार उत्तराध्ययन की निर्युक्ति, चूर्णि और शान्त्याचार्य कृत वृहद् वृत्ति में भी उनकी कोई चर्चा नहीं है।

इससे यह स्पष्ट है कि विक्रम की ११ वीं शताब्दी तक 'मूल-सूत्र' वर्ग की स्थापना नहीं हुई थी।

घनपाल का अस्तित्व-काल ग्यारहवीं शताब्दी है। उन्होंने 'श्रावक-विधि' में पैंतालीस आगमों का उल्लेख किया है।^२ इससे यह अनुमान होता है कि घनपाल से पहले ही आगमों की संख्या पैंतालीस निर्धारित हो चुकी थी। प्रद्युम्नसूरि (वि० की १३ वीं शताब्दी) कृत विचारसार-प्रकरण में भी आगमों की संख्या पैंतालीस है, किन्तु इनमें 'मूल-सूत्र' विभाग नहीं है। उसमें ग्यारह अग और चौतिस ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है।^३

१-आवश्यक निर्युक्ति, गाथा ६६५, वृत्ति पत्र ३४१ :

साम्प्रतमोघनिर्युक्तिर्वक्तव्या, सा च महत्वात् पृथग्ग्रन्थान्तररूपा कृता।

२-समयसुन्दर गणी विरचित श्री गाथासहस्री में घनपाल कृत 'श्रावक विधि' का उद्धरण है। उसमें पाठ आता है—पणयालीसं आगम (श्लोक २९७, पृ० १८)।

३-विचारलेख, गाथा ३४४-३५१।

प्रभावक-चरित में अंग, उपाग, मूल और छेद—आगमो के ये चार विभाग प्राप्त हैं।^१ यह विक्रम संवत् १३३४ की रचना है।

इससे यह फलित होता है कि 'मूल-सूत्र' वर्ग की स्थापना चौदहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हो चुकी थी। फिर उपाध्याय समयसुन्दर के सामाचारी शतक में इसका उल्लेख प्राप्त होता है।^२

८ : दशवैकालिक और उत्तराध्ययन का स्थान

जैन-आगमो में दशवैकालिक और उत्तराध्ययन का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। श्वेताम्बर और दिगम्बर—दोनों परम्पराओं के आचार्यों ने इनका बार-बार उल्लेख किया है। दिगम्बर-साहित्य में अंग-वाह्य के चौदह प्रकार बतलाए गए हैं। उनमें सातवाँ दशवैकालिक और आठवाँ उत्तराध्ययन है।^३

श्वेताम्बर-साहित्य में अंग-वाह्य श्रुत के दो मुख्य विभाग हैं—(१) कालिक और (२) उत्कालिक। कालिक सूत्रों की गणना में पहला स्थान उत्तराध्ययन का और उत्कालिक सूत्रों की गणना में पहला स्थान दशवैकालिक का है।^४

९ : दशवैकालिक : आकार और विषय-वस्तु

दशवैकालिक के दस अव्ययन हैं और चूँकि वह विकाल में रचा गया, इसलिए इसका नाम दशवैकालिक रखा गया। इसके कर्त्ता श्रुतकेवली शय्यंभव हैं। अपने पुत्र—गिष्य मनक के लिए उन्होंने इसकी रचना की। वीर सम्बत् ७२ के आस-पास 'चम्पा' में इसकी रचना हुई।

१—प्रभावक चरितम्, दूसरा आर्यरक्षित प्रबन्ध :

ततश्चतुर्विध. कार्योऽनुयोगोऽतः परं मया ।

ततोऽङ्गोपाङ्ग-मूलाख्यग्रन्थच्छेदकृतागमः ॥२४१॥

२—सामाचारी शतक, पत्र ७६ ।

३—(क) कषायपाह्व (जयधवला सहित) भाग १, पृष्ठ १३।२५ :

दसवेयालियं उत्तरज्जयणं ।

(ख) गोम्मटसार (जीव-काण्ड), गाथा ३६७ :

दसवेयालं च उत्तरज्जयणं ।

४—नंदि, सूत्र ४३ :

से किं तं कालियं? कालियं अगेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—उत्तरज्जयणाइं . ।

से किं तं उक्कालियं? उक्कालियं अगेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—दसवेयालियं . ।

इसकी दो चूलिकाएँ हैं। अध्ययनो के नाम, श्लोक, सख्या और विषय इस प्रकार है —

| अध्ययन | श्लोक | सूत्र | विषय |
|------------------------------------|-------|-------|---|
| १ द्रुमपुष्पिका ^१ | ५ | | धर्म-प्रशंसा और माधुकरी वृत्ति । |
| २. श्रामण्यपूर्वक | ११ | | सयम में वृत्ति और उसकी साधना । |
| ३. क्षुल्लकाचार | १५ | | आचार और अनाचार का विवेक । |
| ४ धर्म-प्रज्ञप्ति या षड्जीवनिका | २८ | २३ | जीव-सयम तथा आत्म-संयम का विचार । |
| ५. पिण्डवैषणा | १५० | | गवैषणा, ग्रहणैषणा और भोगवैषणा की शुद्धि । |
| ६ महाचार | ६८ | | महाचार का निरूपण । |
| ७. वाक्यशुद्धि | ५७ | | भाषा-विवेक । |
| ८ आचार-प्रणिधि | ६३ | | आचार का प्रणिधान । |
| ९. विनय-समाधि | ६२ | ७ | विनय का निरूपण । |
| १०. सभिक्षु चूलिका | २१ | | भिक्षु के स्वरूप का वर्णन । |
| १ रतिवाक्या | १८ | १ | सयममे अस्थिर होने पर पुन स्थिरीकरण का उपदेश । |
| २. विविक्तचर्या | १६ | | विविक्तचर्या का उपदेश । |

निर्यक्तिकार के अनुसार दशवैकालिक का समावेश चरण-करणानुयोग में होता है । इसका फलित अर्थ यह है कि इसका प्रतिपाद्य आचार है । वह दो प्रकार का होता है— (१) चरण—त्रत आदि और (२) करण—पिण्ड-विगुद्धि आदि ।^२

धवला के अनुसार दशवैकालिक आचार और गोचर की विधि का वर्णन करने वाला सूत्र है ।^३ अंगवण्णत्ति के अनुसार इसका विषय गोचर-विधि और पिण्ड-विशुद्धि

१-तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय, में इसका नाम 'वृक्षकुसुम' दिया है—देखिए पृ० ११ पा० टि० २ ।

२-दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा ४ :

अपुहुत्तपुहुत्ताइं, निद्विसिजं एत्थ होइ अहिगारो ।

चरणकरणाणुओगेण, तत्स दारा इमे हुंति ॥

३-षड्खंडागमः, सत्प्ररूपणा (११११), पृ० ९७ :

दसवेआलियं आयार-गोयर-विहिं वण्णेइ ।

है।^१ तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय मे इसे वृक्ष-कुसुम आदि का भेद-कथक और यनियो के आचार का कथक कहा है।^२

उक्त प्रतिपादन से दशवैकालिक का स्थूलरूप हमारे सामने प्रस्तुत हो जाना है, किन्तु आचार्य शर्थभ ने आचार-गोचरकी प्ररूपणा के साथ-साथ अनेक महत्त्वपूर्ण विषयो का निरूपण किया है। जीव-विद्या, योग-विद्या आदि के अनेक सूक्ष्म-बीज इसमें विद्यमान हैं।

१० : दशवैकालिक : निर्यूहण कृति

रचना दो प्रकार की होती है—स्वतंत्र और निर्यूहण। दशवैकालिक निर्यूहण कृति है, स्वतंत्र नहीं। आचार्य शर्थभ श्रुतकेवली थे। उन्होंने विभिन्न पूर्वो से इसका निर्यूहण किया—यह एक मान्यता है।

दशवैकालिक की निर्युक्ति के अनुसार चौथा अध्ययन—आत्मप्रवाद पूर्व से, पाँचवाँ अध्ययन—कर्मप्रवाद पूर्व से, सातवाँ अध्ययन—सत्यप्रवाद पूर्व से और शेष सभी अध्ययन—प्रत्याख्यान पूर्व की तीसरी वस्तु से उद्धृत किए गए हैं।^३

दूसरी मान्यता के अनुसार इसका निर्यूहण गणिपिटक द्वादशांगी से किया गया है।^४ किस अध्ययन का किस अंग से उद्धरण किया गया, इसका कोई उल्लेख प्राप्त नहीं है। किन्तु तीसरे अध्ययन का विषय सूत्रकृतांग १।६ से प्राप्त होता है। चतुर्थ अध्ययन का विषय भी सूत्रकृतांग १।११।७,८ तथा आचारांग १।१।१ का क्वचित् संक्षेप और क्वचित् विस्तार है। पाँचवें अध्ययन का विषय आचारांग के दूसरे अध्ययन लोक-विजय

१-अंगपण्णत्ति, ३।२४ :

जदि गोचरस्स विहि, पिड्विपुड्ढि च जं पल्हेहि ।

दसवेअल्लिय सुत्तं, वहं काला जत्थ संबुत्ता ॥

२-तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय, पृष्ठ ६७ :

वृक्षकुसुमादीनां दशानां भेदकथकं यतीनामाचारकथकंच दशवैकालिकम् ।

३-दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा, १६, १७ :

आयप्पवायपुब्बा, निज्जूढा होइ धम्मपन्नत्ती ।

कम्मप्पवायपुब्बा, पिडस्स उ एसणा तिविहा ॥

सच्चप्पवायपुब्बा, निज्जूढा होइ वक्खुद्धी उ ।

अवसेसा निज्जूढा, नवमस्स उ तइयवत्थूओ ॥

४-वही, गाथा १८ .

वीओऽवि अ आएसो, गणिपिडनाओ दुवालसंगाओ ।

एअं किर भिज्जूढं, मणमस्स अणुभग्गह्हाए ॥

के पाँचवें उद्देशक और आठवें विमोह अध्ययन के दूसरे उद्देशक से प्राप्त होता है। छठा अध्ययन समवायांग समवाय १८ के “वयच्छक्कं कायच्छक्कं, अकप्पो गिहिभायणं। पलियंकं निसिज्जा य, सिणाणं सोभवज्जणं ॥” श्लोक का विस्तार है। सातवें अध्ययन के बीज आचारांग १।१।६।५ में मिलते हैं। आठवें अध्ययन का आंशिक विषय स्थानांग ८।५।६८, ६०१, ६१५ से मिलता है। आंशिक तुलना अन्यत्र भी प्राप्त होती है।^१

आचारांग के दूसरे श्रुतस्कंध की प्रथम चूला के अध्ययन १ और ४ से क्रमशः इसके पाँचवें और सातवें अध्ययन की तुलना होती है। किन्तु हमारे अभिमत में वह दशवैकालिक के बाद का निर्यूहण है। इसके दूसरे, नवें तथा दसवें अध्ययन का विषय उत्तराध्ययन के प्रथम और पन्द्रहवें अध्ययन से तुलित होता है। किन्तु वह अंग-बाह्य आगम है।

यह सूत्र श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों परम्पराओं में मान्य रहा है। इसके कर्तृत्व के विषय में भी श्वेताम्बर-साहित्य में प्रामाणिक ऊहापोह है। श्वेताम्बर आचार्यों ने इस पर निर्युक्ति, भाष्य, चूर्ण, टीका, दीपिका, अवचूरि आदि-आदि व्याख्या-ग्रन्थ लिखे हैं।

दिगम्बर-परम्परा में भी यह सूत्र प्रिय रहा है। धवला, जयधवला, तत्त्वार्थवातिक (राजवार्तिक), तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय आदि में इस विषय का उल्लेख मिलता है। परन्तु इसके निश्चित कर्तृत्व तथा स्वरूप का कहीं भी विवरण प्राप्त नहीं होता। इसके कर्तृत्व का उल्लेख करते हुए आरातीयैराचार्यैर्निर्युद्धं—इतना मात्र संकेत देते हैं। कब तक यह सूत्र उनको मान्य रहा और कब से यह अमान्य हुआ—यह प्रश्न आज भी असमाहित है।

११ : दशवैकालिक : व्याकरण-विमर्श

प्राचीन आगम अर्वाचीन प्राकृत व्याकरणों की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। उन्हें व्याकरण की कसौटी पर कसने का हमारा प्रयत्न भी सम्मान्य नहीं है। जिन व्याकरण परम्पराओं और नियमों के संदर्भ में आगम लिखे गए, वे परम्पराएँ और नियम अर्वाचीन काल में परिवर्तित हो गए। इसलिए उनमें परस्पर पूर्ण-सामंजस्य प्राप्त नहीं होता। व्याकरण-विमर्श की हमारी दृष्टि इतनी ही हो सकती है कि हम प्राचीन रचनाओं में अर्वाचीन व्याकरणों से जो अतिरिक्तता पाते हैं, वह सुलभ हो जाए।

१—(क) दशवैकालिक, ४। सूत्र ९ : मिलाइये—आचारांग, १।१।६।४९।

(ख) दशवैकालिक, ५।२।२८ : मिलाइये—आचारांग, १।१।२।४।

(ग) दशवैकालिक, ६।५३ : मिलाइये—सूत्रकृतांग, १।२।२।१८।

प्रस्तुत सूत्र में अलाक्षणिक (व्याकरण-असिद्ध) मकार के अनेक प्रयोग मिलते हैं—
वत्यन्धमलंकारं (२१२), आहारमाईणि (६१४६), निक्खम्ममाणाए (१०११) ।

विभक्ति और वचन के व्यत्यय भी मिलते हैं—पीढए (७१२८)—यहाँ चतुर्थी के अर्थ में प्रथमा विभक्ति है । बुद्धवयणे (१०१६)—यहाँ तृतीया के अर्थ में सप्तमी विभक्ति है ।

अच्छन्दा जे न भुजन्ति, न से चाड ति वुच्चड (२१२)—यहाँ 'भुजन्ति' बहुवचन है और 'से चाड' एकवचन है ।

इस प्रकार कुछेक उदाहरण हमने प्रस्तुत किए हैं । विस्तार के लिए दें—
"दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन", अध्ययन १ व्याकरण-विमर्श ।

१२ : दशवैकालिक : भाषा की दृष्टि से

इसमें अर्धमागधी और जैन-महाराष्ट्री आदि के संवलित प्रयोग हैं । 'हल्यंसि वा', 'पार्यंसि वा' (४१ सूत्र २३) में अर्धमागधी के प्रयोग हैं । प्राकृत में सप्तमी के एकवचन के दो रूप बनते हैं—'हल्ये, हल्यम्मि' ।^१ 'हल्यंसि' यह अर्धमागधी में बनता है । 'जे' (२१३), 'करेमि' (४१ सूत्र १०)—इनमें 'ओकार' के स्थान में जो 'एकार' है, वह अर्धमागधी का लक्षण है ।^२

मणसा (८१३) जोगसा (८१७)—ये अर्धमागधी के प्रयोग हैं । प्राकृत में ये नहीं मिलते ।

वह्वे (७१४८)—वहु शब्द का प्रथमा का बहुवचन, जसोकामी (२१७), दोच्चे (४१सूत्र १२), तच्चे (४१सूत्र १३), सोच्चा (४१११), लद्धूण (५१२१७), ऊसंढं (५१२१५), संबुड (५११८३), परिवुड (११११५), कड (४१ २०), कट्टु (चूलिका १११४) आदि-आदि तथा मकार के अलाक्षणिक प्रयोग—ये सब अर्धमागधी के प्रयोग हैं, जिन्हें हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में अपार्पप्रयोग कहा है । हियदुयाए (४१सूत्र १७)—यहाँ स्वार्थ में 'या' और 'य' के स्थान में 'एकार' का प्रयोग है, जो प्राकृत-सिद्ध नहीं है । तेइंदिया में 'ति' का 'ते' हुआ है । यह अर्धमागधी का प्रयोग है ।^३ कही शौरसेनी के लक्षण भी मिलते हैं जैसे—अत्तवं (आत्मवान्) (८१४८) । यहाँ 'न' को 'म' किया है, जो शौरसेनी में होता है ।^४

१-हेमशब्दानुशासन, ८३१११ : डे म्मि डे: ।

२-वही, ८१४१२७ :

अत्त एत्तसौ पुंसि मागध्याम् ।

३-प्राकृत भाषाओं का व्याकरण :

पैरा ४३८, पृष्ठ ६५१ ।

४-हेमशब्दानुशासन, ८१४१२६४ : मो वा ।

देशी या अपभ्रंश शब्दों के प्रयोग भी प्रचुर है। गावी (५।१।१२) को पतञ्जलि 'गो' शब्द का अपभ्रंश बतलाते हैं।^१ आचार्य हेमचन्द्र ने प्राकृत-भाषा-विशेष के शब्दों को 'देशी' माना है।^२

१३ : दशवैकालिक के व्याख्या-ग्रन्थ

दशवैकालिक की प्राचीनतम व्याख्या निर्युक्ति है। उसमें इसकी रचना के प्रयोजन, नामकरण, उद्धरण-स्थल, अध्ययनों के नाम, उनके विषय आदि का संक्षेप में बहुत ही सुन्दर वर्णन मिलता है। यह ग्रन्थ उत्तरवर्ती सभी व्याख्या-ग्रन्थों का आधार रहा है। यह पद्यात्मक है। इसकी गायत्रियों का परिमाण टीकाकार के अनुसार ३७१ है। इसके कर्ता द्वितीय भद्रबाहु माने जाते हैं। इनका काल-मान विक्रम की पाँचवी-छठी शताब्दी है।

इसकी दूसरी पद्यात्मक व्याख्या भाष्य है। चूर्णिकार ने भाष्य का उल्लेख नहीं किया। टीकाकार भाष्य और भाष्यकार का अनेक स्थलों में उल्लेख करते हैं।^३ टीकाकार के अनुसार भाष्य की ६३ गायत्रियाँ हैं। इसके कर्ता की जानकारी हमें नहीं है। टीकाकार ने भी भाष्यकार के नाम का उल्लेख नहीं किया है।^४ वे निर्युक्तिकार के बाद और चूर्णिकार से पहले हुए हैं।

हरिमद्र सूरि ने जिन गायत्रियों को भाष्यगत माना है, वे चूर्णिकार से हैं। इससे जान पड़ता है कि भाष्यकार चूर्णिकार के पूर्ववर्ती हैं। इसके बाद चूर्णियाँ लिखी गई हैं। अभी दो चूर्णियाँ प्राप्त हैं। एक के कर्ता अगस्त्यसिंह स्थविर हैं और दूसरी के कर्ता जिनदास महत्तर (वि० की ७ वीं शताब्दी)।

१-पातञ्जल महाभाष्य, पस्पशाह्निक :

एकस्यैव गोशब्दस्य गावी-गोणी-गोता-गोपोतलिकेत्यादयोऽनेकेऽपशब्दाः ।

२-देशीनाममाला, १।४ :

देसविसेसपसिद्धीद्, मण्णमाणा भणन्तया हुंति ।

तम्हा अणाइपाइयपयट्टभासाविसेसओ देसी ॥

३-(क) दशवैकालिक हारिमद्रीय टीका, पत्र ६४ . भाष्यकृता पुनरुपन्यस्त इति ।

(ख) वही, पत्र १२० : आह च भाष्यकारः ।

(ग) वही, पत्र १२८ : व्यासार्थस्तु भाष्यादवसेयः ।

(घ) वही, पत्र १२३, १२५, १२६, १२९, १३३, १३४, १४०, १६१, १६२, २७८ ।

४-दशवैकालिक हारिमद्रीय टीका, पत्र १३२ :

तामेव निर्युक्तिगाथां लेशतो व्याचिख्यासुराह भाष्यकारः । एतदपि

नित्यत्वादिप्रसाधकमिति निर्युक्तिगाथायामनुपन्यस्तमप्युक्तं सूक्ष्मधिया

भाष्यकारेणेति गायार्थः ।

दशवैकालिक की द्वितीय चूर्ण के अन्त में कोई प्रगति नहीं है और न ग्रन्थकार का नाम ही उपलब्ध है। पारंपरिक अनुश्रुति से यह जिनदास महत्तर कृत मानी जाती है।

उत्तराव्ययन (अ० ३०) चूर्ण पृ० २७४ में एक उल्लेख आता है—“पद्योऽपि चित्तो नानाप्रकारो प्रकीर्णतपोऽभिधीयते, तदन्वयाभिहितं, शेपं दशवैकालिकचूर्णो अभिहितम्।” इस वाक्य से दशवैकालिक और उत्तराव्ययन की चूर्णियाँ एक-कनृक प्रतीत होती हैं। दशवैकालिक चूर्ण (पृ० २१) में इत्वरिक तप का वर्णन बहुत संक्षिप्त रूप में किया गया है। शेप वर्णन विस्तृत है। उत्तराव्ययन चूर्ण (पृ० २७४) में इत्वरिक तप के पाँच प्रकारों का संक्षिप्त वर्णन किया गया है। छठे प्रकीर्ण तप के कहीं अन्यत्र वर्णन करने की सूचना दी है और शेप वर्णन दशवैकालिक चूर्ण में किया गया है—ऐसा लिखा है।

दशवैकालिक (१।१) की चूर्ण में पृ० २१ से ३३ तक तप का विस्तृत वर्णन मिलता है। इसीलिए उत्तराव्ययन में उन्होंने इसकी पुनरुक्ति नहीं की। मही अर्थ में तप का इतना विस्तृत वर्णन उत्तराव्ययन के तपोव्ययन (अ० ३०) की चूर्ण में करना चाहिए था किन्तु दशवैकालिक चूर्ण की रचना पहले की थी। वहाँ प्रथम अथयन के प्रथम श्लोक में आए ‘तप’ शब्द का विग्रह वर्णन कर डाला। इसीलिए उत्तराव्ययन में, जो दशवैकालिक की चूर्ण में नहीं था, उसी का उल्लेख कर शेप के लिए दशवैकालिक चूर्ण में अभिहित की सूचना दे दी।

मुनि श्री पुण्यविजयजी के मतानुसार अगस्त्यसिंह की चूर्ण का रचना-काल विक्रम की तीसरी गताब्दी के आस-पास है।^१

अगस्त्यसिंह स्यविर ने अपनी चूर्ण में तत्त्वार्थमूत्र, आवग्यकनिर्युक्ति, ओवनिर्युक्ति, व्यवहारभाष्य, कल्पभाष्य आदि ग्रन्थों का उल्लेख किया है। इनमें अन्तिम रचनाएँ भाष्य हैं। उनके रचना-काल के आवार पर अगस्त्यसिंह का समय पुन. अन्वेषणीय है।

अगस्त्यसिंह ने पुस्तक रखने की औत्सर्गिक और आपवादिक—दोनों विधियों की चर्चा की है। इस चर्चा का आरम्भ जब देवद्विगणी ने आगम पुस्तकास्व किए तब या उसके आस-पास हुआ होगा। अगस्त्यसिंह यदि देवद्विगणी के उत्तरवर्ती और जिनदान के पूर्ववर्ती हो तो इनका समय विक्रम की ५-६ठी गताब्दी हो जाता है।

१—बृहत्कल्प भाष्य, भाग ६, आमुल पृष्ठ ४।

२—दशवैकालिक १।१ अगस्त्य चूर्ण :

उच्चारणं संजमो—पोत्यएसु घेष्यतेसु असंजमो महाघणमोल्लेसु वा द्रुसेसु वज्जणं तु संजमो, कालं पडुच्च चरणकरणडं अन्वोच्छित्तिनिमित्तं गेहंतस्स संजमो भवति।

इन चूर्णियों के अतिरिक्त कोई प्राकृत व्याख्या और रही है पर वह अब उपलब्ध नहीं है। उसके अवशेष हरिभद्र सूत्र की टीका में मिलते हैं।^१

प्राकृत युग समाप्त हुआ और संस्कृत युग आया। आगम की व्याख्याएँ संस्कृत भाषा में लिखी जाने लगी। इस पर हरिभद्र सूत्र ने संस्कृत में टीका लिखी। इनका समय विक्रम की आठवीं शताब्दी है।

यापनीय संव के अपराजित सूत्र (या विजयाचार्य—विक्रम की आठवीं शताब्दी) ने इस पर विजयोदया नाम की टीका लिखी। इसका उल्लेख उन्होंने स्वरचित मूलाराधना की टीका में किया है।^२ परन्तु वह अभी उपलब्ध नहीं है। हरिभद्र सूत्र की टीका को आधार मान कर तिलकाचार्य (१३-१४वीं शताब्दी) ने टीका, माणिक्यशेखर (१५वीं शताब्दी) ने निर्युक्ति-दीपिका, समयसुन्दर (विक्रम सं० १६११) ने दीपिका, विनयहंस (विक्रम सं० १५७३) ने वृत्ति, रामचन्द्र सूत्र (विक्रम सं० १६७८) ने वार्तिक

१—दशवैकालिक हारिभद्रीय टीका, पत्र १६५ .

तथा च वृद्धव्याख्या—वेसादिगग्रभाचस्त मेहुणं पीडिज्जइ, अणुवओगेणं एसणाकरणे हिंसा, पडुप्पायणे अन्नपुच्छणअवलवणासच्चवयणं, अणणुण्णायवेसाइदंसणे अदत्तादाणं, ममत्तकरणे परिग्गहो, एवं सच्चवयपीडा, दच्चसामन्ने पुण संसयो उण्णिक्खमणेण त्ति ।

दशवैकालिक चूर्णि (पृ० १७१) में इस आशय की जो पंक्तियाँ हैं, वे इन पंक्तियों से भिन्न हैं

जइ उण्णिक्खमइ तो सच्चवया पीडिया भवन्ति, अहवि ण उण्णिक्खमइ तोवि तग्गयमाणसस्त भावाओ मेहुणं पीडियं भवइ, तग्गयमाणसोय एसणं न रक्खइ, तत्थ पाणाइचायपीडा भवति, जोएमाणो पुच्छिज्जइ—कि जोएसि ? ताहे अवलवइ, ताहे मुसावायपीडा भवति, ताओ य तित्थगरेहि पाणुण्णायउत्तिकाउं अदिण्णादाणपीडा भवइ, तासु य ममतं करेत्तस परिग्गहपीडा भवति ।

अगस्त्य चूर्णि की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं —

तस्त पीडा वयाण तासु गयाचतो रियं न सोहेतिति पाणातिवातो पुच्छित्तो कि जोएसिति ? अवलवति मुसावातो, अदत्तादाणमणुण्णातो तित्थकरेहि मिहुणे वि गयभावो मुच्छाए परिग्गहो वि ।

२—मूलाराधना, गा० ११९७ की वृत्ति :

दशवैकालिकटीकायां श्रीविजयोदयायां प्रपञ्चिता उद्गमाविदोषा इति नेह प्रतन्यते ।

और पायचन्द्र सूरि तथा चर्मसिंह मुनि (विक्रम की १८वीं शताब्दी) ने गुजराती-राजस्थानी-मिश्रित भाषा में टब्बा लिखा । किन्तु इनमें कोई उल्लेखनीय नया चिन्तन और स्रष्टीकरण नहीं है । ये सब सामयिक उपयोगिता की दृष्टि से रचे गए हैं । अतः इसकी महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ तीन ही हैं—(१) अगस्त्य चूर्णि, (२) जिनदास चूर्णि और (३) हारिभद्रिय वृत्ति ।

अगस्त्यसिंह स्थविर का चूर्णि इन सबमें प्राचीनतम है, इसलिए यह सर्वाधिक मूल-सर्शी है । जिनदास महत्तर अगस्त्यसिंह स्थविर के आस-पास भी चलते हैं और कही-कही इनसे दूर भी चले जाते हैं । टीकाकार तो कही-कही बहुत दूर चले जाते हैं ।^१

लगता है चूर्णि के रचना-काल में भी दशवैकालिक की परम्परा अविच्छिन्न नहीं रही थी । अगस्त्यसिंह स्थविर ने अनेक स्थलों पर अर्थ के कई विकल्प किए हैं । उन्हें देखकर सहज ही जान पड़ता है कि वे मूल अर्थ के बारे में असंदिग्ध नहीं हैं ।

आर्य मुहूर्ती ने एक वार जो आचार-शैथिल्य की परम्परा का सूत्रपात किया वह आगे चल कर उग्र बन गया । ज्यो-ज्यो जैन आचार्य लोक-संग्रह की ओर अधिक भुके, त्यो-त्यो अपवादों की बाढ-सी आ गई । वीर-निर्वाण की नवीं शताब्दी (८५०) में चैत्यवास का प्रारम्भ हुआ । इसके बाद शिथिलाचार की परम्परा बहुत ही उग्र हो गई । देवद्विगणी क्षमाश्रमण (वीर-निर्वाण की दसवीं शताब्दी) के बाद चैत्यवास का प्रभुत्व बढ़ा और वह जैन परम्परा पर छा गया । अभयदेव सूरि ने इस स्थिति का चित्रण इन शब्दों में किया है—“देवद्विगणी क्षमाश्रमण तक की परम्परा को मैं भाव-परम्परा मानता हूँ । इसके बाद शिथिलाचारियों ने अनेक द्रव्य-परम्पराओं का प्रवर्तन कर दिया ।”^२ आचार-शैथिल्य की परम्परा में जो ग्रन्थ लिखे गए, उनमें ऐसे अपवाद भी हैं जो आगम में प्राप्त नहीं हैं । प्रस्तुत आगम की चूर्णि और टीका तात्कालिक वातावरण से मुक्त नहीं हैं । इन्हें पढ़ते समय इस तथ्य को नहीं भूल जाना चाहिए ।

उत्सर्ग की भाँति अपवाद भी मान्य होते हैं । पर उनकी भी एक निश्चित सीमा है । जिनका बनाया हुआ आगम प्रमाण होता है, उन्हीं के किए अपवाद मान्य हो सकते हैं । वर्तमान में जो व्याख्याएँ उपलब्ध हैं, वे चौदहपूर्वी या दसपूर्वी की नहीं हैं, इसलिए उन्हें आगम (अर्थागम) की क्रीटि में नहीं रखा जा सकता ।

१—उदाहरण के लिए देखें दशवैकालिक, भाग २, पृष्ठ २६६, टिप्पण १७७ ।

२—आगम अट्टुत्तरी, गाथा १४ :

देवद्विद्वलमासमणजा, परंपरं भावओ वियाणेमि ।

सिद्धिलायारे ठविया, दव्वेण परंपरा बहुहा ॥

दोनो चूर्णियो में पाठ और अर्थ का भेद है। टीकाकार का मार्ग तो उनसे बहुत ही भिन्न है।

चैत्यवासी और संविमन-पक्ष के आपसी खिचाव के कारण संभव है उन्हें (टीकाकार को) अगस्त्य चूर्ण उपलब्ध न हुई हो। उसके उपलब्ध होने पर भी यदि इतने बड़े पाठ और अर्थ के भेदों का उल्लेख न किया हो तो यह बहुत बड़े आश्चर्य की बात है। पर लगता यही है कि टीका-काल में टीकाकार के सामने अगस्त्य चूर्ण नहीं रही। यदि वह उनके सम्मुख होती तो टीका और चूर्ण में इतना अर्थ-भेद नहीं होता। टीकाकार ने 'अन्ये तु', 'तथा च वृद्धसम्प्रदाय', 'तथा च वृद्धव्याख्या'—आदि के द्वारा जिनदास महत्तर का उल्लेख किया है।^१ पर उनके नाम और चूर्ण का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया।

हरिभद्र संविमन-पाक्षिक थे। इनका समय चैत्यवास के उत्कर्ष का समय है। पुस्तको का संग्रह अधिकांगतया चैत्यवासियों के पास था। संविमन-पक्ष एक प्रकार से नया था। चैत्यवासी इसे मिटा देना चाहते थे। इस परिस्थिति में टीकाकार को पुस्तक-प्राप्ति की दुर्लभता रही हो, यह भी आश्चर्य की बात नहीं है।

आगमो की माथुरी और वल्लभी—ये दो वाचनाएँ हुईं। देवद्विगणी ने आगमो को पुस्तकाख्द करते हुए उन दोनों का समन्वय किया। माथुरी में उससे भिन्न पाठ थे। उन्हें पाठ-भेद मान शेष अंश को वल्लभी में समन्वित कर दिया। यह पाठ-भेद की

१—(क) दशवैकालिक, हारिभद्रीय टीका पत्र ७ :

अन्यस्त्वनादिष्टो दशकालिकाख्य आदिष्टस्तु तदध्ययनविशेषो
द्रुममुष्पिकादिरिति व्याचष्टे ।

मिलाइए—दशवैकालिक चूर्ण, पृष्ठ ४ :

तस्य अणादिदुं जहा दसगालियं आदिदुं द्रुममुष्पिचंसामण्णुज्ज्वयं एवमादि ।

(ख) वही, हारिभद्रीय टीका, पत्र १७२ .

अत्रायं वृद्धसम्प्रदायः—गच्छवासी जइ थणजीवी .. मज्जारादि वा
अवहरेज्ज त्ति ।

मिलाइए—दशवैकालिक चूर्ण, पृष्ठ-१८०-१८१ :

तस्य गच्छवासी जति थणजीवी' ... मज्जाराइ वा अवधरेज्जा ।

(ग) वही, हारिभद्रीय टीका, पत्र १४२-४२ :

तथा च वृद्धव्याख्या—एसो खलु छट्ठो ... आगासत्थिकाओ
अवगाहलक्खणो ।

मिलाइए—दशवैकालिक चूर्ण, पृष्ठ १४१-४२ :

.. छट्ठो जीवनिकायो ... आगासत्थिकाओ अवगाहलक्खणो ।

परम्परा मिटी नहीं। कुछ आगमो के पाठ-भेद केवल आगमो की व्याख्याओं में उपलब्ध है। व्याख्याकार—‘नागार्जुनीयास्तु एवं पठन्ति’ लिखकर उसका निर्देग करते रहे हैं और कुछ आगमो के पाठ-भेद मूल से ही सम्बद्ध रहे, इस कारण से उनका परम्परा-भेद चलता ही रहा। दशवैकालिक सम्भवत इसी दूसरी कोटि का आगम है। इसकी उपलब्ध व्याख्याओं में सबसे प्राचीन व्याख्या अगम्य चूर्णि है। उसमें अनेक स्थलो पर परम्परा-भेद का उल्लेख है।^१ इस सारी वस्तु-सामग्री को देखते हुए लगता है कि चूर्णिकार और टीकाकार के सामने भिन्न-भिन्न परम्परा के आदर्श रहे हैं और टीकाकार ने अपनी परम्परा के आदर्श और व्याख्या-पद्धति को महत्त्व दिया हो तथा सम्भव है कि परम्परा-भेद के कारण चूर्णियों की उपेक्षा की हो। कल्पना की इस भूमिका पर पहुँचने के बाद चूर्णि एव टीका के पाठ और अर्थ के भेद की पहली सुलभ जाती है।

दशवैकालिक के रचना-काल, रचना-शैली, व्याकरण-विमर्श, छन्द-विमर्ग आदि विषयों की विस्तृत चर्चा हम ‘दशवैकालिक एक समीक्षात्मक अध्ययन’ में कर चुके हैं। यहाँ हम उत्तराध्ययन के बारे में कुछ विस्तार से विचार करेंगे।

१४ : उत्तराध्ययन

आलोच्यमान आगम का नाम ‘उत्तराध्ययन’ है। इसमें दो शब्द हैं—‘उत्तर’ और ‘अध्ययन’। समवायाग के—‘छत्तीस उत्तरज्झयणा’^२—इस वाक्य में उत्तराध्ययन के ‘छत्तीस अध्ययन’ प्रतिपादित नहीं हुए हैं, किन्तु ‘छत्तीस उत्तर अध्ययन’ प्रतिपादित हुए हैं। नदी में भी ‘उत्तरज्झयणाणि’ यह बहुवचनात्मक नाम मिलता है।^३ उत्तराध्ययन के अन्तिम श्लोक में भी—‘छत्तीस उत्तरज्झाए’—ऐसा बहुवचनात्मक नाम मिलता है।^४ निर्युक्तिकार ने ‘उत्तराध्ययन’ का बहुवचन में प्रयोग किया है।^५ चूर्णिकार ने छत्तीस

१—देखिए—दशवैकालिक, भाग २, पृष्ठ २२१, टिप्पण २९ तथा पृष्ठ ३५२, टिप्पण ७८।

२—समवायाग, समवाय ३६।

३—नदी, सूत्र ४३।

४—उत्तराध्ययन ३६।२६८।

५—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ४।

देखिये पृ० २१, पा० टि० ४।

उत्तराध्ययनो का एक श्रुतस्कन्व (एक ग्रन्थ रूप) स्वीकार किया है । फिर भी उन्होने इसका नाम बहुवचनात्मक माना है ।^१

इस बहुवचनात्मक नाम से यह फलित होता है कि उत्तराध्ययन अध्ययनो का गेग मात्र है, एक-कर्तृक एक ग्रन्थ नहीं ।

'उत्तर' शब्द 'पूर्व' सापेक्ष है । चूर्णिकार ने प्रस्तुत अध्ययनो की तीन प्रकार ने योजना की है—

| | |
|----------------------|---------------------|
| (१) स-उत्तर | —पहला अध्ययन |
| (२) निरुत्तर | —छत्तीसवाँ अध्ययन |
| (३) स-उत्तर-निरुत्तर | —बीच के सारे अध्ययन |

किन्तु 'उत्तर' शब्द की यह अर्थ-योजना चूर्णिकार की दृष्टि में अधिकृत नहीं है । उनकी दृष्टि में अधिकृत अर्थ वही है जो निर्युक्तिकार के द्वारा प्रस्तुत है । निर्युक्तिकार के अनुसार प्रस्तुत अध्ययन आचारांग के उत्तरकाल में पड़े जाते थे, इसलिए इन्हें 'उत्तर अध्ययन' कहा गया ।^३ श्रुतकेवली शब्दभ्रम (वीर-निर्वाण सं० ६८) के पश्चात् ये अध्ययन दशवैकालिक के उत्तरकाल में पड़े जाने लगे ।^४ इसलिए ये 'उत्तर अध्ययन' ही बने रहे । यह 'उत्तर' शब्द की संगत व्याख्या प्रतीत होती है ।

दिगम्बर-आचार्यों ने भी 'उत्तर' शब्द की अनेक दृष्टिकोणों से व्याख्या की है ।

१—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ८ :

ऐतेसि चैव छत्तीसाए उत्तरज्जयणाणं समुदयसमितिसमागमेणं उत्तरज्जयणभाव-
सुतक्खधेति लब्भइ, ताणि पुण छत्तीसं उत्तरज्जयणाणि इमेहि नामेहि
अणुगंतत्त्वाणि ।

२—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ६ :

विणयसुयंसउत्तरं जीवाजीवाभिगमो णिरुत्तरो, सर्वोत्तर इत्यर्थः, तेसज्जयणाणि
सउत्तराणि णिरुत्तराणि य, कंहं? परीसहा विणयसुयत्स उत्तरा चउरंरिउजःस
तु पुव्वा इतिकारं णिरुत्तरा ।

३—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ३ :

कमउत्तरेण पगयं आयारस्तेव उवरिमाइं तु ।
तम्हाउ उत्तरा खलु अज्जयणा हुंति णायव्वा ॥

४—उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ५ :

विशेषश्चायं यथा—शब्दम्भवं यावदेष क्रमः, तदाऽऽरतस्तु दशवैकालिकोत्तरकालं
पठ्यन्त इति ।

धवलाकार (वि० ९ वी गताब्दी) के मतानुसार 'उत्तराध्ययन' उत्तर-पदों का वर्णन करता है। यह 'उत्तर' शब्द समाधान-सूचक है।^१

अंगपण्णत्ति (वि० १६ वी गताब्दी) से 'उत्तर' शब्द के दो अर्थ फलित होते हैं—

(१) उत्तरकाल—किसी ग्रन्थ के पश्चात् पढ़े जाने वाले अध्ययन।

(२) उत्तर—प्रश्नों का उत्तर देने वाले अध्ययन।^२

ये अर्थ भी 'उत्तर' और 'अध्ययनो' के सम्बन्ध की वास्तविकता पर प्रकाश डालते हैं।

उत्तराध्ययन में प्रश्नोत्तर-शैली से लिखित पाँच अध्ययन हैं—६, १६, २३, २५ और २६। आंशिक रूप में कुछ प्रश्नोत्तर अन्य अध्ययनों में भी है। इस दृष्टि से 'उत्तर' का समाधान-सूचक अर्थ संगत होते हुए भी पूर्णतः व्याप्त नहीं है।

'उत्तरकाल' वाची अर्थ संगत होने के साथ-साथ पूर्णतः व्याप्त भी है, इसलिए इस 'उत्तर' का मुख्य अर्थ यही प्रतीत होता है।

१५ : उत्तराध्ययन : रचना-काल और कर्तृत्व

उत्तराध्ययन एक कृति है। कोई भी कृति शाश्वत नहीं होती, इसलिए यह प्रश्न भी स्वाभाविक है कि इसका कर्ता कौन है? इस प्रश्न पर सर्व प्रथम निर्युक्तिकार ने विचार किया है। चूर्णिकार ने भी इस प्रश्न को स्पष्ट शब्दों में उठाया है।^३ निर्युक्तिकार की दृष्टि में उत्तराध्ययन एक-कर्तृक नहीं है। उनके मतानुसार उत्तराध्ययन के अध्ययन, कर्तृत्व की दृष्टि से, चार वर्गों में विभक्त होते हैं—

(१) अंगप्रभव

(२) जिन-भाषित

(३) प्रत्येकमुद्ध-भाषित

(४) संवाद-समुत्थित^४

१—धवला, पृष्ठ ९७ (सहायनपुर प्रति, लिखित) :

उत्तरज्जयणं उत्तरपदाणि वण्णेइ ।

२—अंगपण्णत्ति ३।२५, २६ :

उत्तराणि अहिज्जंति, उत्तरज्जयणं पदं जिणिदेहिं ।

३—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ६ :

एयाणि पुण उत्तरज्जयणाणि कओ केण वा भासियाणित्ति ?

४—उत्तराध्ययन निर्युत्तित्त, गाथा ४ :

अंगप्पभवा जिणभासिया य पत्तेयवुद्धसंवाया ।

वंधे मुखे य कया छत्तीनं उत्तरज्जयणा ॥

दूसरा अध्ययन अंगप्रभव माना गया है। निर्युक्तिकार के अनुसार वह कर्मप्रवाद पूर्व के सत्तरहवें प्राभृत से उद्धृत है।^१ दसवाँ अध्ययन जिन-भाषित है।^२ आठवाँ अध्ययन प्रत्येकबुद्ध-भाषित है।^३ नवाँ और तेईसवाँ अध्ययन संवाद-समुत्थित है।^४ ये चूर्णि और बृहद्बृत्तिकार द्वारा उदाहृत है।

उत्तराध्ययन की मूल रचना पर ध्यान देने से उसके कर्तृत्व पर कुछ प्रकाश पड़ता है। प्रस्तुत सूत्र में गद्यात्मक अध्ययन तीन है—दूसरा, सोलहवाँ और उनतीसवाँ।

दूसरे अध्ययन का प्रारम्भिक वाक्य है—“सुयं मे, आउसं। तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु वावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया।”

सोलहवें अध्ययन का प्रारम्भिक वाक्य है—“सुयं मे, आउसं। तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु थेरेहिं भगवन्तेहिं दस वम्भचेरसमाहिठाणा पन्तता।”

उनतीसवें अध्ययन का प्रारम्भिक वाक्य है—“सुयं मे, आउसं। तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु सम्मत्तरक्कमे नाम अज्मयणे समणेणं भगवया महावीरेण कासवेणं पवेइए।”

इन प्रारम्भिक वाक्यों से फलित होता है कि दूसरा और उनतीसवाँ अध्ययन महावीर द्वारा निरूपित है अर्थात् जिन-भाषित है और सोलहवाँ अध्ययन स्थविर-विचरित है।

१-उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाया ६९ :

कम्मप्पवायगुब्बे सत्तरसे पाहुडंमि जं सुत्तं ।

सणयं सोदाहरणं तं चेव इहंमि णायव्वं ॥

२-(क) उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ७ :

जिणभासिया जहा दुमपत्तगादि ।

(ख) उत्तराध्ययन बृहद्बृत्ति, पत्र ५ :

जिनभाषितानि यथा द्रुमगुत्पिकाऽध्ययनम् ।

३-(क) उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ७ :

पत्तेयबुद्धभासियाणि जहा काविलिज्जादि ।

(ख) उत्तराध्ययन बृहद्बृत्ति, पत्र ५ :

प्रत्येकबुद्धा—कपिलादयः तेभ्य उत्पन्नानि यथा कापिलीयाध्ययनम् ।

४-(क) उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ७ :

संवादो जहा णमिपव्वज्जा केसिगोयमेज्जं व ।

(ख) उत्तराध्ययन बृहद्बृत्ति, पत्र ५ :

संवाद—सङ्गतप्रश्नोत्तरवचनरूपस्तत् उत्पन्नानि, यथा—केशिगौतमीयम् ।

निर्युक्ति में दूसरे अध्ययन को कर्मप्रवाद-पूर्व से निर्यूढ माना गया है और इसके प्रारम्भिक वाक्य से यह फलित होता है कि वह जिन-भाषित है ।

निर्युक्तिकार के चार वर्गों से कर्तृत्व पर कोई प्रकाश नहीं पडता, किन्तु विषय-वस्तु पर प्रकाश पडता है । दसवें अध्ययन की विषय-वस्तु भगवान् महावीर द्वारा कथित है । किन्तु उस अध्ययन के कर्त्ता भगवान् महावीर नहीं है—यह उस अध्ययन के अंतिम वाक्य—‘बुद्धस्स निसम्म भासियं’—से स्पष्ट है । इसी प्रकार दूसरे और उनतीसवें अध्ययन के प्रारम्भिक वाक्यों से भी यही तथ्य प्रकट होता है । छठे अध्ययन के अंतिम श्लोक से भी यही सूचित होता है—

एवं से उदाहु अगुत्तरत्ताणी अगुत्तरदंसी अगुत्तरत्ताणवंसणधरे ।

अरहा नायपुत्ते भगवं वेसालिए वियाहिए ॥ (६।१७)

प्रत्येकबुद्ध-भाषित अध्ययन प्रत्येकबुद्ध-विरचित नहीं है । आठवें अध्ययन के अंतिम श्लोक से इस अभिमत की पुष्टि होती है—

इइ एस धम्मे अक्खाए कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं ।

तरिहिनति जे उ काहिनति बेहि आराहिया बुवे लोणे ॥ (८।२०)

संवाद-समुत्थित अध्ययन, नवों और तेईसवाँ भी नमि तथा केशि-गौतम द्वारा विरचित नहीं है । इसका समर्थन भी उनके अंतिम श्लोको से होता है—

एवं करेन्ति संबुद्धा पंडिया पविक्खणा ।

विणियट्टन्ति भोगेसु जहा से नमी रायरिसि ॥ (९।६२)

तोसिया परिसा सव्वा सम्मगां समुवट्ठिया ।

संयुया ते पसीयन्तु भयवं केसिगोयमे ॥ (२३।८९)

इस प्रकार हम देखते हैं कि निर्युक्तिकार के चार वर्गों से इतना ही फलित होता कि भगवान् महावीर, कपिल, नमि और केशि-गौतम—इनके उपदेशों, उपदेश-भाषाओं या संवादों को आधार बनाकर ये अध्ययन रचे गए हैं । वे कव और किसके द्वारा रचे गए—इस प्रश्न का निर्युक्ति में कोई उत्तर प्राप्त नहीं है । चूर्णि और बृहद्बृत्ति में भी नहीं है । अन्य किसी साधन से भी प्रस्तुत सूत्र के कर्त्ता का नाम ज्ञात नहीं हो सका है । इसके रचना-काल की भीमासा से हम इतना जान सकते हैं कि ये अध्ययन विभिन्न युगों में हुए अनेक ऋषियों द्वारा उद्गीत हैं ।

साख्य, न्याय, वैशेषिक आदि दर्शन ई० पू० ५ वीं शताब्दी से लेकर ई० पू० पहली शताब्दी तक व्यवस्थित रूप धारण कर चुके थे । भगवद्गीता और उत्तरवर्ती उपनिषदों का निर्माण ई० पू० ५०० के लगभग हुआ था । आत्मा, पुनर्जन्म, मोक्ष, कर्म, संसार की क्षणभंगुरता, वैराग्य व संन्यास की चर्चा इस युग में विशेष विकसित हुई थी ।

उत्तराध्ययन में हम ई० पू० ६०० से ई० सन् ४०० तक की धार्मिक व दार्शनिक धारा का प्रतिनिधित्व या विकास पाते हैं। हो सकता है कि इनका कुछ अंग महावीर से पहले का भी हो। चूर्ण में ऐसा संकेत भी मिलता है कि उत्तराध्ययन का छठा अध्ययन भगवान् पार्श्व द्वारा उपदिष्ट है।^१

'दशवैकालिक' वीर निर्वाण की पहली शताब्दी की रचना है।^२ उत्तराध्ययन एक ग्रन्थ के रूप में उससे पूर्व संकलित हो चुका था। उस समय उसके अध्ययन कितने थे, यह निश्चय-पूर्वक नहीं कहा जा सकता।

वीर-निर्वाण की दसवीं शताब्दी (६८०-६६३) में देवद्विगणी ने आगमो का संकलन किया था। उन्होंने उत्तराध्ययन के आकार-प्रकार व विषय-वस्तु में कोई अभिवृद्धि की या नहीं की, इसका प्रत्यक्ष उल्लेख प्राप्त नहीं है, किन्तु नहीं की, ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है। अतः उत्तराध्ययन को हम एक सहस्राब्दी की, विचारधारा का प्रतिनिधि सूत्र कह सकते हैं। इसमें जहाँ वेद और ब्राह्मण-साहित्य-कालीन यज्ञ और जातिवाद की चर्चा है, वहाँ द्रव्य, गुण और पर्याय की परिभाषाएँ भी हैं। उन परिभाषाओं को दर्शनकालीन (ई०पू० ५ वीं से ई०पू० पहली शताब्दी) माना जाए तो यह निष्पन्न होता है कि उत्तराध्ययन के अध्ययन विभिन्न कालों में निर्मित हुए और अंतिम वाचना के समय देवद्विगणी ने उनका छत्तीस अध्ययनात्मक एक ग्रन्थ के रूप में संकलन किया। इसीलिए समवायांग में छत्तीस उत्तर-अध्ययनों के नाम उल्लिखित हुए। अन्यथा अंग-साहित्य में इनका उल्लेख सम्भव नहीं होता। वर्तमान संकलन को सामने रखकर हम चिन्तन करें तो उत्तराध्ययन के संकलयिता देवद्विगणी है। इसके प्रारम्भिक संकलन और देवद्विगणी कालीन संकलन में अध्ययनों की संख्या और विषय-वस्तु में पर्याप्त अन्तर आया है।

विषय-वस्तु की दृष्टि से उत्तराध्ययन के अध्ययन चार भागों में विभक्त होते हैं—

- (१) धर्मकथात्मक—७, ८, ९, १२, १३, १४, १६, १९, २०, २१, २२, २३, २५ और २७।
- (२) उपदेशात्मक—१, ३, ४, ५, ६ और १०।
- (३) आचारात्मक—२, ११, १५, १६, १७, २४, २६, ३२ और ३५।
- (४) सैद्धान्तिक—२८, २९, ३०, ३१, ३३, ३४ और ३६।

१-उत्तराध्ययन चूर्ण, पृष्ठ १५७ :

केचिदन्यथा पठन्ति—एवं से उदाहृ, अरहा पासे पुरिसादाणीए ।

भगवंते वेसालीए, बुद्धे परिणिवुडे ॥

२-दशवैकालिक भाग २, भूमिका पृष्ठ १५ ।

आर्य रक्षित सूरि (वि० शती प्रथम) ने आगमो के चार वर्ग किए—

- | | |
|-------------------|------------------|
| (१) चरण-करणानुयोग | (३) गणितानुयोग |
| (२) धर्मकथानुयोग | (४) द्रव्यानुयोग |

इस वर्गीकरण में उत्तराव्ययन धर्मकथानुयोग के अन्तर्गत ग्रहीत है।^१ पर आचारात्मकअव्ययन चरण-करणानुयोग में तथा सैद्धान्तिक अव्ययन द्रव्यानुयोग में समाते हैं। इस प्रकार उत्तराव्ययन का वर्तमान स्वरूप अनेक अनुयोगों का सम्मिश्रण है। यह सम्मिश्रण देवर्द्धिगणी के संकलन-काल में हुआ, यह बहुत संभव है।

कुछ विद्वानों का अभिमत है कि उत्तराव्ययन के पहले अठारह अव्ययन प्राचीन हैं और उत्तरवर्ती अठारह अव्ययन अर्वाचीन। किन्तु इस अभिमत की पुष्टि के लिए उन्होंने कोई निश्चित हेतु प्रस्तुत नहीं किया है। यह हो सकता है कि कुछ उत्तरवर्ती अव्ययन अर्वाचीन हों, किन्तु सारे उत्तरवर्ती अव्ययन अर्वाचीन हैं, ऐसा मानने के लिए कोई कारण प्राप्त नहीं है। इकतीसवें अव्ययन में आचारांग, सूत्रकृतांग आदि प्राचीन आगमो के साथ-साथ दशाश्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प, व्यवहार और निवीथ जैसे अर्वाचीन आगमो के नाम भी उपलब्ध होते हैं।^२ ये श्रुतकेवली भद्रबाहु (वीर-निर्वाण दूसरी गती) द्वारा निर्युद्ध या कृत है।^३ इसलिए प्रस्तुत अव्ययन भद्रबाहु के वाद की रचना है।

१-उत्तराव्ययन चूर्णि, पृष्ठ १ :

अत्र धम्माणुयोगेनाधिकारः ।

२-उत्तराव्ययन, ३१।१६-१८ :

तेवीसइ सयगडे, ख्वाहिएसु सुरेसु अ ।

जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥

पणवीसभावणाहि, उहेसेसु दसाइणं ।

जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥

अणगारगुणेहिं च, पकप्पम्मि तहेव य ।

जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥

३-(क) दशाश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति, गाथा १ :

वंदासि भद्दबाहुं, पाईणं चरिमसयलसुयणाणि ।

सुत्तस्स कारगमिसि, दसासु कप्पे य ववहारे ॥

(ख) पंचकल्प भाष्य, गाथा २३, चूर्णि :

तेण भगवता आयारपकप्प दसाकप्प ववहारा य नवमपुव्वनीसंबसूता
निज्जूढा ।

अठाइसवें अध्ययन मे अंग और अंग-बाह्य—इन दो आगमिक विभागो के अति-रिक्त ग्यारह अंग, प्रकीर्णक औरें दृष्टिवाद का उल्लेख भी मिलता है।^१ प्राचीन आगमो के चौदह पूर्वो, ग्यारह अंगो या बारह अंगो के अध्ययन का वर्णन मिलता है। किन्तु अंग-बाह्य या प्रकीर्णक श्रुत के अध्ययन का वर्णन नहीं मिलता, इसलिए यह अध्ययन भी उत्तरकालीन आगम-व्यवस्था के आस-पास की रचना प्रतीत होती है।

इस अध्ययन मे द्रव्य, गुण तथा पर्याय की परिभाषाएँ भी है। इनकी तुलना क्रमशः वैशेषिक दर्शन के द्रव्य, गुण और कर्म से की जा सकती है—

उत्तराध्ययन^२

वैशेषिक दर्शन^३

- | | |
|--|---|
| (१) द्रव्य— गुणाणमासओ दब्बं | (१) द्रव्य— क्रियागुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम् । |
| (२) गुण— एगद्वस्सिया गुणा | (२) गुण— द्रव्याश्रय्यगुणवान् संयोगविभागेष्वकारणमनपेक्ष इति गुणलक्षणम् । |
| (३) पर्याय— लक्खणं पज्जवाणं तु उभओ अस्सिया भवे । | (३) कर्म— एकद्रव्यमगुणं संयोगविभागेष्वनपेक्षकारणमिति कर्म-लक्षणम् । |

आगम साहित्य में द्रव्य, गुण और पर्याय की परिभाषा प्रथम बार उत्तराध्ययन मे प्राप्त होती है। आगमो मे विवरणात्मक अर्थ ही अधिक मिलते हैं, संक्षिप्त परिभाषाएँ प्रायः नहीं मिलती। इसकी पूर्ति व्याख्या-ग्रन्थो से होती है। उत्तराध्ययन मे ये परिभाषाएँ विशेष अर्थ-सूचक है। प्रस्तुत अध्ययन के कर्ता वैशेषिक दर्शन की उक्त परिभाषाओ से परिचित रहे हैं, ऐसा प्रतीत होता है। इसलिए यह अध्ययन भी अर्वाचीन संकलन में संकलित हुआ—ऐसा अनुमान होता है। उत्तराध्ययन के प्राचीन संस्करण में कितने अध्ययन संकलित थे और अर्वाचीन संस्करण मे कितने अध्ययन संकलित किए गये, यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता। किन्तु स्थूल रूप मे इतना कहा जा सकता है कि प्राचीन संस्करण का मुख्य भाग कथा-भाग था और अर्वाचीन परिवर्द्धन का मुख्य भाग सैद्धान्तिक है।

१—(क) उत्तराध्ययन २८।२१ :

अंगेण वाहिरेण व' ।

(ख) वही, २८।२३ :

एकारस अंगाइं पइण्णं दिट्ठिवाओ य ॥

२—वही, २८।६ ।

३—वैशेषिक दर्शन, प्रथम अध्याय, प्रथम आत्मिक, सूत्र १५-१७ ।

उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का उल्लेख ज्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों परम्पराओं में मिलता है ।

‘जैन सिद्धान्त भवन’, आरा (विहार) में प्राप्त धवला की प्रति (पत्र ५४५) में मिलता है—“उत्तराध्ययन में उद्गम, उत्पादन और एपणा से सम्बन्धित दोषो के प्रायश्चित्तो का विधान है ।”^१

अंगपण्णत्ति में लिखा है—“वाईस परीषहो और चार प्रकार के उपसर्गो के सहन का विधान, उसका फल तथा इस प्रश्न का यह उत्तर है—यह उत्तराध्ययन का प्रतिपाद्य विषय है ।”^२

धवला ने यह भी लिखा है कि उत्तराध्ययन उत्तरपदो का वर्णन करता है ।^३

हरिवंश पुराण (वि० सं० ८४०) में लिखा है कि उत्तराध्ययन में वीर-निर्वाणगमन का वर्णन है ।^४

इस प्रकार दिगम्बर-साहित्य में उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का जो वर्णन मिलता है, उसकी संगति उत्तराध्ययन के वर्तमान स्वरूप से नहीं होती । अंगपण्णत्ति का विषय-वर्णन आंगिक रूप से संगत होता है । जैसे—

(१) वाईस परीषहो के सहन का विधान, देखिए—दूसरा अध्ययन ।

(२) प्रश्नो के उत्तर, देखिए—उत्तीसवाँ अध्ययन ।

प्रायश्चित्त विधि के वर्णन तथा महावीर के निर्वाण-प्राप्ति के वर्णन की वर्तमान उत्तराध्ययन के साथ कोई संगति नहीं । संभव है इन लेखको के सामने उत्तराध्ययन का कोई दूसरा संस्करण रहा है या भ्रान्त अनुश्रुति के आधार पर ऐसा लिखा है ।

दिगम्बर-साहित्य में एक बात निश्चित रूप से फलित होती है कि उत्तराध्ययन

१-उत्तरज्जयणं उगममुप्यायेत्सगदोसगययायच्छित्तविहाणं कालादि वित्सेसिदं वणोदि ।

२-अंगपण्णत्ति, ३।२५, २६ ।

उत्तराणि अहिज्जंति, उत्तरज्जयणं मदं जिणिदेहि ।

वावीसपरीसहाणं, उवसग्गाणं च सहणविहि ॥

वणोदि तप्फलमवि, एवं पण्हे च उत्तरं एवं ।

कहदि गुह्सीसयाण, पडण्णिय अट्ठमं तं खु ॥

३-धवला, पृष्ठ ९७ (सहारनपुर प्रति) :

उत्तरज्जयणं उत्तरपदाणि वणोइ ।

४-हरिवंश पुराण, १०।१३४ :

उत्तराध्ययनं वीर-निर्वाणगमनं तथा ।

अंग-बाह्य प्रकीर्णक है। इसका अर्थ यह हुआ कि वह आरातीय आचार्यों (गणधरो के उत्तर-कालीन आचार्यों) की रचना है।^१

श्वेताम्बर-साहित्य में उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का वर्णन वही मिलता है, जो वर्तमान उत्तराध्ययन में प्राप्त है।^२

वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी की पूर्ति के साथ-साथ दशवैकालिक की रचना हो चुकी थी। उत्तराध्ययन उससे पूर्ववर्ती रचना है। वह आचारांग के बाद पढा जाने लगा था। उसे अपनी विशेषता के कारण थोड़े समय में ही महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो चुका था। इस स्थिति के संदर्भ में यह अनुमान किया जा सकता है कि उत्तराध्ययन के प्रारम्भिक संस्करण की संकलना वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ही हो चुकी थी।

उत्तराध्ययन के प्रारम्भिक संस्करण की प्राचीनता असंदिग्ध है। उसकी प्राचीनता जानने के दो साधन हैं—

(१) भाषा-प्रयोग और

(२) सिद्धान्त।

भाषा-प्रयोग तीसरे अध्ययन (श्लोक १४) में 'जक्ख' (सं० यक्ष) शब्द का 'अर्चनीय देव' के अर्थ में प्रयोग हुआ है। यह प्रयोग इसकी प्राचीनता का सूचक है। यज्ञ के उत्कर्ष काल में ही 'यक्ष' शब्द उत्कर्षवाची था। दोनों की निष्पत्ति एक ही धातु (यज्) से है। यज्ञ के अपकर्ष के साथ-साथ 'यक्ष' शब्द के अर्थ का भी अपकर्ष हो गया। उत्तरकालीन साहित्य में वह देवों की एक हीन जाति का वाचक मात्र रह गया।

इसी प्रकार 'पाढव' (३।१३), 'वुसिभओ' (५।१८), 'मिलेक्खुया' (१०।१६), 'अज्ज्मत्थ' (६।६), 'समिय' (६।४) आदि अनेक शब्द हैं, जो आचारांग और सूत्रकृतांग जैसे प्राचीन आगमों में ही मिलते हैं।

सिद्धान्त : जातिवाद (अध्ययन १२ और १३), यज्ञ एवं तीर्थस्थान (अध्ययन १२), ब्राह्मणों के लक्षणों का प्रतिपादन (अध्ययन २५)—ये इन अध्ययनों की प्राचीनता के सूचक हैं। ये सम्बन्धित चर्चाओं के उत्कर्ष काल में लिखे गए हैं, अन्यथा शान्त चर्चा का

१-तत्त्वार्थवार्तिक, १।२०, पृष्ठ ७८ :

यद् गणधरशिष्यप्रशिष्यैरारातीयैरधिगतश्रुतार्थतत्त्वैः कालदोषादल्पमेघाद्युर्बलानां प्राणिनामनुग्रहार्थमुपनिबद्धं संक्षिप्ताङ्गवचनविन्यासं तदङ्गबाह्यम्।

तद्भेदा उत्तराध्ययनादयोऽनेकविधाः।

२-उत्तराध्ययन निर्युक्ति, १८-२६।

इतनी सप्रणता के साथ प्रतिपादन नहीं हो सकता। इसी तथ्य के आधार पर कहा जा सकता है कि ये अध्ययन महावीर-कालीन अथवा उनके परिपार्श्व-कालीन है। संभव है कुछ अध्ययन पूर्ववर्ती भी हो।

चिकित्सा का वर्जन (२।३२, ३३), परिकर्म का वर्जन (अध्ययन १६), अचेलकता का प्रतिपादन (२।३४, ३५, २३।२६) तथा अचेलकता और सचेलकता की सामंजस्यपूर्ण स्थिति का स्वीकार (२।१२, १३)—ये सभी जैन आचार की प्राचीनतम परम्परा के अवशेष हैं जो उत्तरवर्ती साहित्य में नवीन परम्पराओं की पृष्ठभूमि में प्रस्न-चित्त बने हुए हैं।

उत्तराध्ययन अपने मूल रूप में धर्मकथानुयोग है। इसके कथा-भाग में भगवान् महावीर के उत्तरकालीन किसी भी राजा, मुनि या व्यक्ति का नाम नहीं है। इससे भी यह ज्ञात होता है कि इसका प्रारम्भिक संस्करण भगवान् महावीर के निर्वाण-काल के आस-पास ही संकलित हो गया था।

१६ : क्या उत्तराध्ययन भगवान् महावीर की अंतिम वाणी है ?

कल्पसूत्र में बताया गया है कि भगवान् महावीर कल्याणफल-विपाक वाले ५५ अध्ययनो, पाप-फल वाले ५५ अध्ययनो तथा ३६ अपृष्ट-व्याकरणों का व्याकरण कर 'प्रधान' नामक अध्ययन का निरूपण करते-करते सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो गए।^१

उपर्युक्त उद्धरण के आधार पर यह माना जाना है कि छत्तीस अपृष्ट-व्याकरण वस्तुतः उत्तराध्ययन के छत्तीस अध्ययन ही हैं। उत्तराध्ययन के अंतिम श्लोक (३६।२६८) से इसकी पुष्टि की जाती है—

इह पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्वुए।

छत्तीसं उत्तरज्जाए, भवसिद्धीयसंभए ॥

चूर्णिकार ने इसका अर्थ निम्न प्रकार किया है—ज्ञातकुल में उत्पन्न वर्द्धमान स्वामी छत्तीस उत्तराध्ययनो का प्रकाशन या प्रज्ञापन कर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए।^२

१-कल्पसूत्र, सूत्र १४६ :

पच्चूसकालसमयंसि संपत्तियकनिसन्ने पणपन्नं अज्झयणाइं कल्लाण-फलविवागाइं पणपन्नं अज्झयणाइं पावफलविवागाइं छत्तीसं च अपृट्ठवागरणाइं वागरित्ता पघाणं नाम अज्झयणं विभावमाणे २ कालगए वित्तिक्कत्ते समुज्जाए छिन्नजाइजरामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतकडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खपहीणे।

२-उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ २८३ :

इति परिसमाप्तौ उपप्रदर्शने च, प्रादुः प्रकाशे, प्रकाशीकृत्य—प्रज्ञापयित्वा बुद्धः—अवगतार्थः ज्ञातकः—ज्ञातकुलसमुद्भवः वर्द्धमानस्वामी, ततः परिनिर्वाणं गतः, किं प्रज्ञापयित्वा ?, षट्त्रिंशदुत्तराध्ययनात् ।

शान्त्याचार्य ने चूर्णिकार का अनुमरण करने हुए भी हममें अपनी ओर से दो बातें और जोड़ी हैं। पहली यह है कि भगवान् महावीर ने उत्तराध्ययन के कुछ अध्ययनों का अर्थ-रूप में और कुछ अध्ययनों का सूत्र-रूप में प्रज्ञान किया। दूसरी यह कि उन्होंने 'परिनिर्वृत' का वैकल्पिक अर्थ 'स्वस्थीभूत' किया है।^२

निर्युक्तिकार ने इन अध्ययनों को जिन-प्रज्ञत बनवाया है।^३ शान्त्याचार्य ने 'जिन' शब्द का अर्थ 'शून-जिन' अर्थात् श्रुतकेवली किया है।^४

निर्युक्तिकार के अभिमनानुसार ये छत्तीस अध्ययन श्रुतकेवली आदि मयविरों द्वारा प्रदर्शित हैं। उन्होंने हमका भी कोई चर्चा नहीं की कि भगवान् ने अन्तिम देशना में इन छत्तीस अध्ययनों का प्रदर्शन किया। बृहद्बृत्तिकार शान्त्याचार्य भी परिनिर्वाण के विषय में अर्धमन्दित्र नहीं है। केवल चूर्णिकार ने अपना अर्धमन्दित्र मत प्रगट किया है।

उत्तराध्ययन के अध्ययनों की संख्या ३६ होने के कारण महज ही उस ओर ध्यान जाता है कि कल्पसूत्र में उल्लिखित ३६ अपृष्ट-व्याकरण ये ही होने चाहिए। यहाँ यह स्मरणाय है कि नमवायांग में छत्तीस अपृष्ट-व्याकरणों का उल्लेख नहीं है। वहाँ केवल इतना ही बनवाया गया है कि भगवान् महावीर ने अंतिम रात्रि के समय ५५ कल्याण-

१-उत्तराध्ययन बृहद्बृत्ति, पत्र ७१२ :

इति इयनन्तरमुपवर्णितान् 'पाउकरे'त्ति सूत्रत्वान् 'प्रादुञ्जत्य' कांश्चिदर्थतः काञ्चन सूत्रतोऽपि प्रकाशय, कोऽर्थः ? प्रज्ञाप्य, किमित्याह—'परिनिर्वृत.' निर्वाणं गत इति सम्भवनीयम्, कीदृशः मन् क इत्याह—'बुद्ध.' केवलज्ञानादवगतमकलवस्तुतत्त्व. 'ज्ञातको' 'ज्ञातजो' वा—ज्ञातकुलसमुद्भवः, म चेह भगवान् वर्तमानस्वामी 'षट्त्रिंशद्' इति षट्त्रिंशत्संख्या उत्तराः—प्रधाना अधीयन्त इत्यध्याया—अध्ययनानि तत उत्तराश्च तेऽध्यायाश्चोत्तराध्यायास्तान्—विनयश्रुतादीन्... .. ।

२-वही, पत्र ७१२ :

अथवा 'पाउकरे'त्ति प्रादुरकार्यानि प्रकाशितवान्, श्रेयं पूर्ववन नवरं 'परिनिर्वृतः' श्रोत्रादिबहूतोपशमतः समन्तास्त्वस्थीभूतः ।

३-उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ५.५९ :

तम्हा जिणपन्नत्ते, अणंतगमपज्जवेहि संजुत्ते ।
अज्जाए जहाजोगं, गुह्यसाया अहिज्जिक्खा ॥

४-उत्तराध्ययन बृहद्बृत्ति, पत्र ७१३ :

तस्साज्जिनैः - श्रुतजिनादिभिः प्ररूपिताः ।

फल-विपाक वाले अध्ययनो तथा ५५ पाप-फल-विपाक वाले अध्ययनो का व्याकरण कर परिनिर्वृत हुए ।^१ समवायाग के छत्तीसवें समवाय में भी इसकी कोई चर्चा नहीं है ।

उत्तराध्ययन की रचना तथा 'इह एस धम्मे अन्नाए, कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं' जैसे उल्लेखो से यह प्रमाणित नहीं होता कि ये सब अध्ययन महावीर के द्वारा निरूपित है । निर्युक्ति के साक्ष्य से इसकी चर्चा हम पहले कर चुके हैं । अठारहवें अध्ययन के चौबीसवें श्लोक के प्रथम दो चरण वे ही हैं, जो छत्तीसवें अध्ययन के अंतिम श्लोक के हैं—

| | |
|---------------------|--------------------|
| १८।२४ | ३६।२६८ |
| इह पाउकरे बुद्धे | इह पाउकरे बुद्धे |
| नायए परिनिव्वुडे । | नायए परिनिव्वुए । |
| विज्जाचरणसंपन्ने | छत्तीसं उत्तरज्भाए |
| सच्चे सच्चपरक्कमे ॥ | भवसिद्धीयसंमए ॥ |

अठारहवें अध्ययन के चौबीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध का जो अर्थ वृत्तिकार ने किया है, वही अर्थ छत्तीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध का होना चाहिए । वृत्तिकार ने चौबीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध की व्याख्या इस प्रकार की है—बुद्ध (अवगत तत्त्व), परिनिर्वृत (शीतीभूत), ज्ञातपुत्र महावीर ने इस तत्त्व का प्रज्ञापन किया है ।^२ इस अर्थ के संदर्भ में जब हम छत्तीसवें अध्ययन के अंतिम श्लोक को पढ़ते हैं, तब उससे यह फलित नहीं होता कि ज्ञातपुत्र महावीर छत्तीस अध्ययनो का प्रज्ञापन कर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए ।

महावीर की परम्परा में जो अर्थ-प्रतिपादन होता है, वह उनकी धर्मदेशना के आधार पर होता है । इसी पारंपरिक सत्य का उल्लेख उत्तराध्ययन के संकलनकर्त्ता ने अन्तिम श्लोक में किया है ।

१७ : महावीर-वाणी का प्रतिनिधि सूत्र

अविकल उत्तराध्ययन भगवान् महावीर की प्रत्यक्ष वाणी भले न हो, किन्तु उससे भगवान् महावीर की वाणी का जिस समीचीन पद्धति से संगुम्फन हुआ है, उसे देख कर सहज ही यह कहने को मन ललचा उठता है कि यह महावीर-वाणी का प्रतिनिधि सूत्र है ।

अहिंसा, अपरिग्रह आदि तत्त्व नवीन नहीं हैं और भगवान् महावीर के समय में भी नवीन नहीं थे । उनसे पहले अनेक तीर्थङ्कर और धर्माचार्य उनका प्रयोग कर चुके थे ।

१-समवायांग, समवाय ५५ ।

२-उत्तराध्ययन बृहद्बृत्ति, पत्र ४४४ ।

इत्येवंह्यं 'पाउकरे'ति प्रादुरकार्षीत्—प्रकटितवान् 'बुद्धः' अवगततत्त्वः सन् ज्ञात एव ज्ञातकः—जगत्प्रतीतः क्षत्रियो वा, स चेह प्रस्तावान्महावीर एव, 'परिनिर्वृतः' कषायान्त्वविध्यापनात्समन्ताच्छीतीभूतः ।

किन्तु भगवान् महावीर ने तात्कालिक परिस्थितियों के संदर्भ में उनकी जो अभिव्यक्ति दी, वह उनका नवीन रूप है। भगवान् महावीर के समय की सामाजिक परिस्थिति में अहिंसा और अपरिग्रह के मुख्य बाधक-तत्त्व ये थे—

- | | |
|---------------|-----------------------------|
| (१) दास-प्रथा | (४) अमित संग्रह |
| (२) जातिवाद | (५) दण्ड का उच्छृंखल प्रयोग |
| (३) पशुबलि | (६) अनियंत्रित भोग |

इन बाधक-तत्त्वों के निरसन के लिए भगवान् महावीर ने जिस विचारधारा का प्रतिपादन किया उसका हृदयग्राही संकलन उत्तराध्ययन में हुआ है।

पार्श्वनाथ के समय में चार महाव्रत थे और सामायिक चारित्र था। भगवान् महावीर ने महाव्रत पाँच किए और छेदोपस्थापनीय चारित्र की व्यवस्था की। छेदोपस्थापनीय का अर्थ है—विभाग-युक्त चारित्र।

पूज्यपाद (वि० ५-६ शताब्दी) ने लिखा है “भगवान् महावीर ने चारित्र-धर्म के तेरह विभाग किए—पाँच महाव्रत, पाँच समितियाँ और तीन गुप्तियाँ। ये विभाग पार्श्वनाथ के समय में नहीं थे।”^१

उत्तराध्ययन में इनका सुव्यवस्थित प्रतिपादन हुआ है। षड्जीवनिकायवाद महावीर के तत्त्ववाद का प्रधान अंग है। जीव विषयक इतना व्यवस्थित और विस्तृत प्रतिपादन अन्य किसी धर्म-परम्परा में नहीं था। आचार्य सिद्धसेन ने इसे भगवान् महावीर की सर्वज्ञता की कसौटी के रूप में प्रस्तुत किया है।^२

उत्तराध्ययन में जीव-विभक्ति का भी एक सुन्दर प्रकरण है। अजीव-विभक्ति, कर्मवाद, षड्द्रव्य, नव तत्त्व आदि-आदि भी समुचित रूपेण प्रतिपादित हुए हैं।

यद्यपि उत्तराध्ययन को धर्मकथानुयोग के अन्तर्गत रखा गया है, किन्तु अपने वर्तमान आकार में वह चारों अनुयोगों का संगम है। इस दृष्टि से इसे महावीर-वाणी (आगमो) का प्रतिनिधि सूत्र कहा जा सकता है।

१—चारित्र भक्ति, ७ :

तिल. सत्तमगुप्तयस्तनुमनोभाषानिभित्तोदयाः
पंचेर्यादिसमाश्रयाः समितयः पंचव्रतानीत्यपि ।
चारित्रोपहितं त्रयोदशतयं पूर्वं न दिष्टं परै-
राचारं परमेष्ठिनो जिनमतेर्वीरान् नमामो वयम् ॥

२—प्रथम द्वात्रिंशिका, श्लोक १३ :

य एव षड्जीवनिकायविस्तर परैरनालीढपथस्त्वयोदितः ।
अनेन सर्वज्ञपरीक्षणक्षमा—स्त्वयि प्रसादोदयसोत्सवाः स्थिताः ॥

१८ : उत्तराध्ययन : आकार और विषय-वस्तु

उत्तराध्ययन के छत्तीस अध्यायन है। यह संकलित सूत्र है। इसका प्रारम्भिक संकलन वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ। उत्तरकालीन संस्करण देवद्विगणी के समय में सम्पन्न हुआ। वर्तमान अध्यायनों के नाम समवायांग तथा उत्तराध्ययन निर्युक्ति में मिलते हैं। उनमें क्वचित् थोड़ा अन्तर भी है—

| समवायांग ^१ | उत्तराध्ययन निर्युक्ति ^२ |
|-----------------------|-------------------------------------|
| १ विणयसुयं | विणयसुयं |
| २. परीसह | परीसह |
| ३. चाउरंगिज्जं | चउरंगिज्जं |
| ४. असंखयं | असंखयं |
| ५ अकाममरणिज्जं | अकाममरणं |
| ६. पुरिसविज्जा | नियंठ (खुड्डागनियंठ ^३) |
| ७ उरद्विभज्जं | ओरद्वभं |
| ८. काविलिज्जं | काविलिज्जं |
| ९. नमिपव्वज्जा | णमिपव्वज्जा |
| १०. दुमपत्तयं | दुमपत्तयं |
| ११. बहुसुयपूजा | बहुसुयपुज्जं |
| १२. हरिएसिज्जं | हरिएस |
| १३. चित्तसंभूयं | चित्तसंभूइ |
| १४. उसुकारिज्जं | उसुआरिज्जं |

१—समवायांग, समवाय ३६।

२—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा १३-१७।

३—वही, गाथा २४३ :

एसा खलु निज्जुली खुड्डागनियंठयुत्तस्स ।

| | |
|--------------------|--|
| १५. सभिनकुवुं | सभिनकु |
| १६. समाहिठाणाई | समाहिठाणं |
| १७. पावसमणिज्जं | पावसमणिज्जं |
| १८. संजइज्जं | संजइज्जं |
| १९. मियचारिता | मियचारिया |
| २०. अणाहपव्वज्जा | निर्यंठिज्जं (महानियंठ ^१) |
| २१. समुद्धपालिज्जं | समुद्धपालिज्जं |
| २२. रहनेमिज्जं | रहनेमीयं |
| २३. गोयमकेसिज्जं | केसिगोयमिज्जं |
| २४. समितीओ | समिद्धो |
| २५. जन्निज्जं | जन्निज्जं |
| २६. सामायारी | सामायारी |
| २७. खलु किज्जं | खलु किज्जं |
| २८. मोक्खमग्गई | मुक्खगई |
| २९. अप्पमाओ | अप्पमाओ |
| ३०. तवोमग्गो | तव |
| ३१. चरणविही | चरण |
| ३२. पमायठाणाई | पमायठाणं |
| ३३. कम्मपगडी | कम्मप्पयडी |
| ३४. लेसज्मयणं | लेसा |
| ३५. अणगारमग्गे | अणगारमग्गे |
| ३६. जीवाजीवविभत्ती | जीवाजीवविभत्ती |

१—उत्तराध्ययनं निर्धुक्ति, गाथा ४२२ :

एसा खलु निज्जुत्ती महानियंठस्स सुत्तस्स ।

निर्युक्ति के अनुसार छत्तीस अव्ययनों का विषय-वर्णन इस प्रकार है -

| अध्ययन | श्लोक | सूत्र | विषय |
|--------|-------|-------|----------------------------------|
| १ | ४८ | | विनय |
| २ | ४६ | ३ | प्राप्त-कष्ट-सहन का विधान । |
| ३ | २० | | चार दुर्लभ अंगों का प्रतिपादन । |
| ४ | १३ | | प्रमाद और अप्रमाद का प्रतिपादन । |
| ५ | ३२ | | मरण-विभक्ति—अकाम और सकाम मरण । |
| ६ | १७ | | विद्या और आचरण । |

१—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा १८-२७ :

| | | | | | |
|-----------------|-----------|--------------|------------|--------------------------|----------------|
| पढमे | विणओ | वीए | परिसहा | दुछहंगया | तइय । |
| अहिगारो | य | चउत्ये | होइ | पमायप्पमाएत्ति ॥ | |
| मरणविभत्ती | पुण | पंचमम्मि | विज्जा | चरणं च | छट्ठअज्जयणे । |
| रसगेहिएरिच्चाओ | | सत्तमे | अट्टमि | | अलामे ॥ |
| निक्कंपया | य | नवमे | दसमे | अणुसासणोवमा | भणिया । |
| इक्कारसमे | | पूया | तवरिद्धी | चेव | वारसमे ॥ |
| तेरसमे | अ | नियानं | अनियानं | चेव | होइ चउदसमे । |
| मिक्खुगुणा | | पन्नरसे | सोलसमे | | वंसगुत्तीओ ॥ |
| पावाण | चज्जणा | खलु | सत्तरसे | भोगिद्धिद्विज्जहण्हारो । | |
| एगुणि | | अप्परिकम्मे | अणाहया | चेव | वीसइमे ॥ |
| चरिया | य | विच्चित्ता | इक्कीसि | वावीसिमे | थिरं चरणं । |
| तेवीसइमे | | धम्मो | चउवीसइमे | य | समिइओ ॥ |
| वंसगुण | | पन्नवीसे | सामायारी | य | होइ छव्वीसे । |
| सत्तावीसे | | असदया | अट्टावीसे | य | मुक्खगई ॥ |
| एगुणतीस | | आवस्सगप्पमाओ | तथो | अ | होइ तीसइमे । |
| चरणं | च | इक्कीसे | वत्तीसि | | पमायठागाइं ॥ |
| तेत्तीसइमे | | कम्मं | चउत्तीसइमे | य | हुंति लैसाओ । |
| मिक्खुगुणा | | पणतीसे | जीवाजीवा | य | छत्तीसे ॥ |
| उत्तरज्जयणाणेसो | | | पिंडत्यो | वण्णिओ | समासेगं । |
| इत्तो | इक्किक्कं | पुण | अज्जयगं | | कित्तइस्तामि ॥ |

| अध्ययन | श्लोक | सूत्र | विषय |
|--------|-------|-------|----------------------------------|
| ७ | ३० | | रस-गृद्धि का परित्याग । |
| ८ | २० | | लाभ और लोभ के योग का प्रतिपादन । |
| ९ | ६२ | | संयम में निष्प्रकम्प भाव । |
| १० | ३७ | | अनुशासन । |
| ११ | ३२ | | बहुश्रुत की पूजा । |
| १२ | ४७ | | तप का ऐश्वर्य । |
| १३ | ३५ | | निदान—भोग-संकल्प । |
| १४ | ५३ | | अनिदान—भोग-असंकल्प । |
| १५ | १६ | | भिक्षु के गुण । |
| १६ | १७ | १२ | ब्रह्मचर्य की गुप्तियाँ । |
| १७ | २१ | | पाप-वर्जन । |
| १८ | ५३ | | भोग और ऋद्धि का त्याग । |
| १९ | ६८ | | अपरिकर्म—देहाध्यास का परित्याग । |
| २० | ६० | | अनाथता । |
| २१ | २४ | | विचित्र चर्या । |
| २२ | ४९ | | चरण का स्थिरीकरण । |
| २३ | ८९ | | धर्म—चातुर्याम और पंचयाम । |
| २४ | २७ | | समितियाँ-गुप्तियाँ । |
| २५ | ४३ | | ब्राह्मण के गुण । |
| २६ | ५२ | | सामाचारी । |
| २७ | १७ | | अशठता । |
| २८ | ३६ | | मोक्ष-गति । |
| २९ | | ७४ | आवश्यक में अप्रमाद । |
| ३० | ३७ | | तप । |
| ३१ | २१ | | चारित्र । |
| ३२ | १११ | | प्रमाद-स्थान । |
| ३३ | २५ | | कर्म । |
| ३४ | ६१ | | लेश्या । |
| ३५ | २१ | | भिक्षु के गुण । |
| ३६ | २६८ | | जीव और अजीव का प्रतिपादन । |

निर्युक्तिकार ने उत्तराध्ययन के प्रतिपाद्य के संक्षिप्त सकेत प्रस्तुत किए हैं। इनसे एक स्थूल-सी रूपरेखा हमारे सामने आ जाती है। विस्तार में जाएँ तो उत्तराध्ययन का प्रतिपाद्य बहुत विशद है। भगवान् पार्ष्व और भगवान् महावीर की धर्म-देशनाओं का स्पष्ट चित्रण यहाँ मिलता है। वैदिक और श्रमण संस्कृति के मतवादों का संवादात्मक शैली में इतना व्यवस्थित प्रतिपादन अन्य आगमों में नहीं है। इसमें धर्म-कथाओं, आध्यात्मिक-उपदेशों तथा दार्शनिक-सिद्धान्तों का आकर्षक योग है। इसे भगवान् महावीर की विचार-धारा का प्रतिनिधि सूत्र कहा जा सकता है।

१६ : उत्तराध्ययन की कथाएँ : तुलनात्मक दृष्टिकोण

भारतीय धर्मों की अनेक साहित्यिक शाखाएँ हैं। उनमें अनेक कथाएँ एक जैसी हैं। प्रस्तुत सूत्र में चार कथाएँ ऐसी हैं, जो किंचित् रूपान्तर के साथ महाभारत और बौद्ध-साहित्य में मिलती हैं। जैसे—

| उत्तराध्ययन | महाभारत | जातक |
|-------------------------|--|----------------------|
| १ हरिकेश बल (अ० १२) | × | मार्तग (सं० ४६७) |
| २ चित्त-संभूत (अ० १३) | × | चित्तसंभूत (सं० ४६८) |
| ३ इषुकारीय (अ० १४) | शान्तिपर्व, अ० १७५ गान्तिपर्व, अ० २७७ | हस्तिपाल (सं० ५०६) |
| ४ नमि-प्रव्रज्या (अ० ६) | गान्तिपर्व, अ० १७८ तथा अ० २७६ | महाजन (सं० ५३६) |

इनके सादृश्य का कारण पूर्व कालीन 'श्रमण-साहित्य' का स्वीकरण है। प्रत्येक-बुद्धों द्वारा रचित प्रकरण हजारों की संख्या में प्रचलित थे। उन्होंने भारतीय साहित्य की प्रत्येक धारा को प्रभावित किया था। मार्कण्डेय पुराण के पिता-पुत्र संवाद की तुलना उत्तराध्ययन के चौदहवें इषुकारीय अध्ययन गत पिता-पुत्र संवाद से करने पर दोनों का स्रोत एक ही परम्परा में प्राप्त होता है। इसकी विस्तृत चर्चा हमने 'उत्तराध्ययन एक समीक्षात्मक अध्ययन' में की है।

२० : उत्तराध्ययन : व्याकरण-विमर्श

वर्तमान प्राकृत व्याकरण की अपेक्षा प्राचीन आगमों में कुछ विगिष्ट प्रयोग उपलब्ध होते हैं। उत्तराध्ययन भी उसी कोटि का आगम है। इसके अनेक स्थलों में विभक्ति-विहीन शब्द प्रयोग हैं। अनेक स्थलों में ह्रस्व का दीर्घीकरण और दीर्घ का ह्रस्वीकरण है। संस्कृत तुल्य तथा प्राकृत व्याकरण से असिद्ध संधि-प्रयोग प्राप्त होते हैं। विभक्ति, वचन आदि का व्यत्यय भी विपुल मात्रा में मिलता है। इसमें समालोच्य शब्द भी प्रयुक्त है।

विभक्ति-विहीन शब्द-प्रयोग :

बुद्धपुत्त (११७)

भाय (११३६)

कल्लाण (११३६)

भिक्खु (२१२२)

तेल्ल (१४११८)

जीविय (३२१२०)

ह्रस्व का दीर्घीकरण :

समाययन्ती (४१२)

परत्या (४१५)

दुक्खपजराए (८११)

जाईमय (१२१५)

अन्नमन्नमणूरत्ता (१३१५)

अम्मामाहिंसी (१६११)

दीर्घ का ह्रस्वीकरण :

पक्खिणि (१४१४१)

जिया (२२११६)

पमाणि (२६१२७)

सस्कृत-तुल्य संधि-प्रयोग :

सुइरादवि ७१८

प्राकृत व्याकरण से असिद्ध संधि-प्रयोग :

उवसग्गे + अभिघारए = उवसग्गाभिघारए (२१२१)

बुद्धेहि + आयरियं = बुद्धेहायरियं (११४२)

विप्परियासं + उवेइ = विप्परियासुवेइ (२०१४६)

विभक्ति-व्यत्यय :

आणुपुर्व्वि (१११)—यहाँ तृतीया के अर्थ में द्वितीया विभक्ति है ।

अदीणमणसो (२१३)—यहाँ प्रथमा के अर्थ में षष्ठी विभक्ति है ।

सव्वदुक्खाणं (८१८)—यहाँ तृतीया के अर्थ में षष्ठी विभक्ति है ।

चोद्दसहिं ठाणेहिं (१११६)—यहाँ सप्तमी के अर्थ में तृतीया विभक्ति है ।

मुहाजीवी (२५१२७)—यहाँ द्वितीया के अर्थ में प्रथमा विभक्ति है ।

चरमाण (३०१२०)—यहाँ षष्ठी के अर्थ में प्रथमा-विभक्ति है ।

वचन-व्यत्यय :

बिहन्नइ (२।६)—यहाँ बहुवचन के स्थान पर एकवचन है ।

आहु (१२।२५)—यहाँ एकवचन के स्थान पर बहुवचन है ।

तं (३६।४८)—यहाँ बहुवचन के स्थान पर एकवचन है ।

परित्तसंसारी (३६।२६०)—यहाँ बहुवचन के स्थान पर एकवचन है ।

अलाक्षणिक :

फरसु+आईहि = फरसुमाईहि ११।६६

मुट्टि+आईहि = मुट्टिमाईहि ११।६७

असजत् = संजए २१।२०

समालोच्य शब्द :

अप्यायके (३।१८)—यहाँ 'अप्प' का प्रचलित अर्थ 'अल्प' प्राप्त नहीं होता ।
यहाँ यह शब्द निषेधार्थ में प्रयुक्त है ।

सुदिट्ठं (१२।३८) , सुजट्ठं (१२।४०)—इन दोनों में समान प्रयोग चाहिए ।
संभव है 'सुदिट्ठं' के स्थान में लिपि-दोष से 'सुजट्ठं' हो गया हो ।

भवताम् = भवयाणं (१२।१०)

२१ : उत्तराध्ययन : भाषा की दृष्टि से

उत्तराध्ययन की भाषा प्राकृत है । भरत मुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में सात प्राकृतों का उल्लेख किया है—मागधी, आवन्ती, प्राच्या, शौरसेनी, अर्द्धमागधी, चाल्हीका और दाक्षिणात्या ।^१

१—नाट्यशास्त्र, १७।४८ :

मागध्यवन्तिजा प्राच्या शौरसेन्यर्द्धमागधी ।

चाल्हीका दाक्षिणात्याश्च सप्तभाषाः प्रकीर्तिताः ॥

आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत व्याकरण में प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैंशाची, चूलिका-पैंशाचिक और अपभ्रंश—इन छह प्राकृतों का उल्लेख किया है ।

‘षड्भाषा चन्द्रिका’ में भी प्राकृत के ये ही छह विभाग मिलते हैं । वहाँ महाराष्ट्र की भाषा को प्राकृत, शूरसेन (मथुरा के आसपास के प्रदेश) की भाषा को शौरसेनी, मगध की भाषा को मागधी, पिशाच (पाण्ड्य, केकय आदि देशों) की भाषा को पैंशाची और चूलिका पैंशाची तथा आभीर आदि देशों की भाषा को अपभ्रंश कहा गया है^१ ।

भगवान् महावीर अर्द्धमागधी भाषा में बोलते थे । आगमों में स्थान-स्थान पर यही उल्लेख मिलता है^२ । प्राचीन जैन आगमों की भाषा अर्द्धमागधी और मागधी रही है ।

१-षड्भाषाचन्द्रिका, उपोद्घात :

षड्विधा सा प्राकृती च शौरसेनी च मागधी ।
 पैंशाची चूलिकापैंशाच्यपभ्रंश इति क्रमात् ॥
 तत्र तु प्राकृतं नाम महाराष्ट्रोद्भवं विदुः ।
 शूरसेनोद्भवा भाषा शौरसेनीति गीयते ॥
 मगधोत्पन्नभाषां तां मागधी संप्रचक्षते ।
 पिशाचदेशनियतं पैंशाचीद्वितयं भवेत् ॥
 पाण्ड्यकेकयवाल्हीक सिंह नेपाल कुन्तलाः ।
 सुधेष्णभोजगान्धारहैवकन्नोजकास्तथा ॥
 एते पिशाचदेशाः स्युस्तद्देश्यस्तद्गुणो भवेत् ।
 पिशाचजातमथवा पैंशाचीद्वयमुच्यते ॥
 अपभ्रंशस्तु भाषा स्यादाभीरादिगिरां चय ।
 ॥

२-(क) औपार्तिक, सूत्र ३४ :

तए णं समणं भगवं महावीरे कूणिअस्स भंभासारयुत्तस्स.....
 अद्धमागहाए भासाए भासति..... ॥

(ख) समवायांग, समवाय ३४ :

भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ (२२) ।

क्षेत्र की दृष्टि से अर्द्धमागधी उस भाषा का नाम है, जो आवे मगध में अर्थात् मगध के पश्चिमी भाग में व्यवहृत थी। इसमें मागधी भाषा के लक्षण प्राप्त थे, इसलिये प्रवृत्ति की दृष्टि से भी संभव है इसे अर्द्धमागधी कहा गया। भाषा-शास्त्रियों के अनुसार मागधी की तीन मुख्य विशेषताएँ हैं—

(१) प्रथमा विभक्ति के एकवचन में 'ओकार' के स्थान पर 'एकार' होना।

(२) 'र' का 'ल' होना।

(३) 'ष', 'स' के स्थान पर 'श' होना।

अर्द्धमागधी में प्रथम विशेषता बहुलता से मिलती है, दूसरी कहीं-कहीं मिलती है और तीसरी प्रायः नहीं मिलती।

जब जैन मुनि पूर्वी भारत से हट कर पश्चिमी भारत में विहार करने लगे तब उनकी मुख्य भाषा महाराष्ट्री-प्राकृत हो गई। अर्द्धमागधी और मागधी में लिखे हुए आगम भी उससे प्रभावित हुए। प्राकृत के सभी रूपों में महाराष्ट्री ने उत्कर्ष भी प्राप्त कर लिया। महाकवि दण्डी ने भी इसका उल्लेख किया है—“महाराष्ट्राश्रयां, प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः”^१।

फिर भी जैन आचार्यों को आगमों की मूल भाषा की विस्मृति नहीं हुई। वे समय के विविध परिवर्तनों में भी इसी तथ्य की पुनरावृत्ति करते रहे हैं कि आगमों की मूल भाषा अर्द्धमागधी है। प्रज्ञापना में अर्द्धमागधी भाषा बोलने वाले को 'भाषा-आर्य' कहा गया है।^२ स्थानाग^३ और अनुयोगद्वार^४ में संस्कृत तथा प्राकृत को ऋषिभाषित कहा गया है। आचार्य हरिभद्र सूरि ने भाषा-आर्य की व्याख्या में संस्कृत और जोडा है।^५ कुछ आचार्य पूर्वो की भाषा भी संस्कृत मानते हैं।^६ इन सब तथ्यों के अध्ययन के उपरान्त भी हम इस तथ्य की विस्मृति नहीं कर सकते कि प्राचीन आगमों की भाषा अर्द्धमागधी थी।

१—काव्यादर्श, १।३४।

२—प्रज्ञापना, पद १, सूत्र ३७ : भासारिया जे णं अद्धमागहाए भासाए भासेत्ति ।

३—स्थानाग ७।३।५५३, गाथा २८ :

सकता पागता च्चव, बुहा भणित्तीओ आहिया ।

सरमंडलंमि गिज्जंते, पसत्था इसिभासिता ॥

४—अनुयोगद्वार, सूत्र १२७ गाथा ५३ :

सक्या पायया च्चव, भणिईओ होंति दोण्णि वा ।

सरमंडलंमि गिज्जंते, पसत्था इसिभासिया ॥

५—तत्त्वार्थ सूत्र ३।१५, हारिभद्रीय वृत्ति पृष्ठ १८० :

शिष्टाः-सर्वातिशयसम्पन्ना गणधरादयः तेषां भाषा संस्कृताऽर्द्धमागधिकादिका च ।

६—प्रभावक चरित, पृष्ठ ५८, बृद्धवादिसूरि चरित, श्लोक ११३ :

चतुर्दशापि पूर्वाणि संस्कृतानि पुराऽभवन् ।

अर्द्धमागधी और महाराष्ट्री

उत्तराध्ययन की भाषा महाराष्ट्री से प्रभावित अर्द्धमागधी है। अर्द्धमागधी और महाराष्ट्री का अन्तर निम्न प्रकार है

| अर्द्धमागधी | महाराष्ट्री |
|---|--|
| असंयुक्त 'क' को 'ग' या 'त' होता है— कुमारगा (१४।११) लोगो (१४।२२) | 'क' का प्राय लुक् होता है— अज्जावयाणं (१२।१६) |
| असंयुक्त 'ग' का लुक् नहीं होता— कामभोगेसु (१४।६) सगरो (१८।३५) | 'ग' का प्राय लुक् होता है— भोए (१४।३७) |
| असंयुक्त 'च' और 'ज' के तकार बहुल प्रयोग मिलते हैं— तेगिच्छं (२।३३) वितिगिच्छा (१६। सू० ४) | 'च' और 'ज' का प्राय लुक् होता है— समुवाय (१४।३७) वीयाई (१२।१२) |
| असंयुक्त 'त' का प्राय लुक् नहीं होता— अतरं (८।६) | 'त' का प्राय लुक् होता है— पुरोहियं (१४।३७) |
| असंयुक्त 'द' का प्राय लुक् नहीं होता और कही-कही उसको 'त' हो जाता है— उदंग (७।२३) | 'द' का प्राय लुक् होता है— विइयाणि (१२।१३) |
| असंयुक्त 'प' को प्राय 'व' हो जाता है— महादीवो (२३।६६) | 'प' का प्राय लुक् होता है— तउय (३६।७३) |
| असंयुक्त 'य' का प्राय लुक् नहीं होता और कही-कही उसको 'त' हो जाता है— उवाया (३२।९) | 'य' का प्राय लुक् होता है— काए (३६।८२) आउ (७।१०) |
| असंयुक्त 'व' का प्राय लुक् नहीं होता और कही-कही उसको 'त' हो जाता है— पवरे (११।१६) दिवायरे (११।२४) | 'व' का प्राय लुक् होता है— चेय (२४।१६) |
| प्रथमा के एकवचन में 'एकार' होता है— कयरे (१२।६) धीरे (१५।३) | प्रथमा के एकवचन में 'ओकार' होता है— मणगुत्तो (१२।३) |

शब्द-भेद—

| | |
|----------------------|-------------------|
| अर्द्धमागधी | महाराष्ट्री |
| कम्मुणा | कम्मेण |
| वेयसां (२५।१६) | वेयाण |
| विसालिसेहिं (३।१४) | विसरिसेहिं |
| दुवालसंगं (२४।३) | वारसंगं (२३।७) |
| गेही (६।४) | गिद्धी |
| सोही (३।१२) | सुद्धी |
| तेगिच्छं (२।३३) | चीइच्छं |
| मिलेक्खुया (१०।१६) | मिलिच्छा, मिच्छा |
| माहणा (१२।१३) | वम्हणो (२५।१६) |
| पडुप्पन्न (२६।सू०१३) | पच्चुप्पन्न (७।६) |

उत्तराध्ययन में अर्द्धमागधी के साथ-साथ महाराष्ट्री-प्राकृत के प्रयोग भी मिलते हैं। इसलिए भाषा की दृष्टि से इसे भाषा-द्वय की मिश्रित कृति कहा जा सकता है।

२२ : उत्तराध्ययन के व्याख्या-ग्रन्थ

जैन आगमों में उत्तराध्ययन सर्वाधिक प्रिय आगम है। उसकी प्रियता का कारण उसके सरस कथानक, सरस संवाद और सरस रचना-शैली है। उसकी सर्वाधिक प्रियता के साक्ष्य व्यापक अध्ययन-अध्यापन और विशाल व्याख्या-ग्रन्थ है। जितने व्याख्या-ग्रन्थ उत्तराध्ययन के हैं, उतने अन्य किसी आगम के नहीं हैं।

१-निर्युक्ति :

यह उत्तराध्ययन के प्रात व्याख्या-ग्रन्थों में सर्वाधिक प्राचीन है। इसमें ५५७ गाथाएँ हैं। यह लघु कृति है, किन्तु इसमें अनेक महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध हैं। इसलिये यह उत्तरवर्ती सभी व्याख्या-ग्रन्थों की आधार-भित्ति रही है। इसके कर्ता द्वितीय भद्रबाहु (वि० छठी शताब्दी) हैं।

२-चूर्ण :

यह प्राकृत-संस्कृत में लिखी गई उत्तराध्ययन की महत्त्वपूर्ण व्याख्या है। इसमें अन्तिम अठारह अध्ययनों का व्याख्यान बहुत ही संक्षिप्त है। ग्रन्थ की प्रशस्ति में ग्रन्थकार

ने अपना परिचय 'गोपालिक महत्तर शिष्य' के रूप में दिया है।^१ इनका अस्तित्व-काल विक्रम की सातवीं शताब्दी है।

३—गिष्यहिता (बृहद्बृत्ति या पाइय-टीका) :

उत्तराध्ययन की संस्कृत-व्याख्याओं में यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। इसमें अवतरणात्मक कथाएँ प्राकृत में ग्रहीत हैं। बृहद्बृत्तिकार ने अनेक बार 'बृद्धसम्प्रदाया-दवसेय'^२ या 'सम्प्रदायादवसेय'^३ लिख कर उनका अवतरण किया है।

बृहद्बृत्तिकार के सामने चूर्ण के अतिरिक्त और भी कोई प्राचीन व्याख्या रही है, ऐसा प्रतीत होता है। नौवें अध्ययन के अट्टाईसवें श्लोक की व्याख्या में—'तथा च बृद्धा-लोमहारा प्राणहारा इति'^४ ऐसा उल्लेख मिलता है। यह वाक्य चूर्ण का नहीं है। उसमें 'लोमहार' का अर्थ—'लोमहारा णाम पेल्लणमोसगा'^५—इन शब्दों में है।

इससे यह प्रमाणित होता है कि बृहद्बृत्ति में उद्धृत वाक्य चूर्ण से अतिरिक्त किसी दूसरी प्राचीन व्याख्या का है।

बृहद्बृत्तिकार ने 'बृद्ध' शब्द के द्वारा चूर्णिकार का भी उल्लेख किया है—'बृद्धास्तु व्याचक्षते-लोलुप्यमाणं ति लालप्यमानं—भरणपोषणकुलसंताणेसु य तुब्भे भविस्सह ति'^६।

मिलाइए—उत्तराध्ययन चूर्ण, पृष्ठ २२३ 'लोलुप्यमाणं लोलुप्यमाणं भरणपोषण-कुलसंताणेसु य तुब्भे भविस्सह ति'।

ये बृहद्बृत्तिकार है वादी-वेताल शान्ति सूरि। इनका अस्तित्व-काल विक्रम की ११वीं शताब्दी है।

१—उत्तराध्ययन चूर्ण, पृष्ठ २८३ :

वाणिजकुलसंभूओ, कोडियगणिओ उ वयरसाहीतो ।

गोवालियमहत्तरओ, विक्खाओ आसि लोगंमि ॥१॥

ससमयपरसमयविऊ, ओयस्सी दित्तिमं सुगंभीरो ।

सीसगणसंपरिबुडो, वक्खाणरतिप्पिओ आसी ॥२॥

तेसि सीसेण इमं, उत्तरभयणण कुण्णिखंडं तु ।

रइयं अणुगहत्थं, सीसाणं मंदबुद्धीणं ॥३॥

२—उत्तराध्ययन बृहद्बृत्ति, पत्र १४५ ।

३—वही, पत्र १२५ ।

४—वही, पत्र ३१२ ।

५—उत्तराध्ययन चूर्ण, पृष्ठ १८३ ।

६—उत्तराध्ययन बृहद्बृत्ति, पत्र ४०० ।

४-सुखबोधा :

यह बृहद्बृत्ति से समुद्धृत लघु बृत्ति है। इसके कर्ता नेमिचन्द्र सूरि है। सूरिपद-प्राप्ति से पूर्व इनका नाम देवेन्द्र था। इस बृत्ति का रचना-काल विक्रम सं० ११२९ है।

५-सर्वार्थसिद्धि :

इसके रचयिता भावविजय है। इसका रचना-काल विक्रम संवत् १६७९ है। इसमें कथाएँ पद्यबद्ध है।

इनके अतिरिक्त और भी व्याख्या-ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं। वे सारे के सारे प्रायः इन्हीं मुख्य व्याख्या-ग्रन्थों के उपजीवी हैं। हम उनका संक्षिप्त परिचय—नाम, कर्ता और रचना-काल के विवरण-सहित—नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं^१

| | | |
|----------------|------------------|---------------|
| ६-अवचूरि | ज्ञानसागर | वि० सं० १६४१ |
| ७-वृत्ति | कमल संयम | ,, १५५४ |
| ८-दीपिका | उदयसागर | ,, १५४६ |
| ९-लघुबृत्ति | खरतर तपोरत्नवाचक | ,, १५५० |
| १०-वृत्ति | कीर्तिवल्लभ | ,, १५५२ |
| ११-वृत्ति | विनयहंस | ,, १५६७-८१ |
| १२-टीका | अजितदेव सूरि | ,, १६२८ |
| १३-दीपिका | हर्षकुल | १६ वी शताब्दी |
| १४-अवचूरि | अजितदेव सूरि | |
| १५-टीका-दीपिका | माणिक्यशेखर सूरि | |
| १६-दीपिका | लक्ष्मीवल्लभ | १८ वी शताब्दी |
| १७-वृत्ति-टीका | हर्षनन्दन | वि० सं० १७११ |
| १८-वृत्ति | शान्तिभद्राचार्य | |
| १९-टीका | मुनिचन्द्र सूरि | |
| २०-अवचूरि | ज्ञानशीलगणी | |
| २१-अवचूरि | | वि० सं० १४९१ |
| २२-बालावबोध | समरचन्द्र | |
| २३-बालावबोध | कमललाम | १६ वी शताब्दी |
| २४-बालावबोध | मानविजय | वि० सं० १७४१ |

१-जैनमारती (वर्ष ७, अंक ३३, पृ० ५६५-६८) में प्रकाशित श्री अगारचन्द्रजी नाहडा के उत्तराध्ययन सूत्र और उसकी टीकाएँ लेख पर आधृत।

इनके अनिरिक्त कुछ वृत्ति-टीकाएँ, दीपिकाएँ तथा अवचूरियाँ भी उपलब्ध होती हैं। कई में कर्ता का नाम नहीं है तो कई में रचना-काल का उल्लेख नहीं है। वे ये हैं—

| व्याख्या-ग्रन्थ | कर्ता | रचना-काल |
|-----------------|-------------------------|----------------|
| मकरन्द टीका | | वि० नं० १७५० |
| दीपिका | | ,, १६३७ |
| वृत्ति-दीपिका | | |
| दीपिका | | ,, १६४३ |
| वृत्ति | | |
| अक्षरार्थ लवलण | | |
| टब्बा | आदिचन्द्र या रायचन्द्र | |
| टब्बा | पार्ष्वचन्द्र, धर्मसिंह | १८ वीं शताब्दी |
| वृत्ति | मतिकीर्ति के निष्प | |
| भाषा पद्यसार | ब्रह्म ऋषि | वि० सं० १५६६ |

तेरापन्थ के चतुर्थ आचार्य श्रीमज्जयाचार्य (वि० नं० १८६०-१९३८) ने इस सूत्र के उननीस अव्ययनों पर राजस्थानी भाषा में पद्य-बद्ध 'जोड़' की रचना की। यत्र-तत्र उन्होंने विषय को स्पष्ट करने के लिए वार्तिक भी लिखे हैं।

२३ : उपसंहार

प्रस्तुत भूमिका में दशकैकालिक और उत्तराख्ययन का संक्षिप्त पर्यालोचन किया गया है। उनके छन्द आदि अनेक विषयों पर यहाँ कोई विमर्श नहीं किया गया है। इनका पर्यालोचन 'दशकैकालिक : एक समीक्षात्मक अव्ययन' तथा 'उत्तराख्ययन - एक समीक्षात्मक अव्ययन' में किया जा चुका है। इसलिए उनके अवलोकन की सूचना के साथ-साथ मैं इस विषय को सम्पन्न कर रहा हूँ।

वाँठिया-सवन
दीक्षातर
१ अगस्त, १९६६

आचार्य तुलसी

भूमिका में प्रयुक्त ग्रन्थों की तालिका

- | | |
|---|-------------------------------|
| १ अनुयोगद्वार (वि० सं० २०१६) (प्र० देवचन्द्र लालभाई पुस्तकोद्धार फण्ड, बम्बई) | ले० आर्यरक्षित सूरि |
| २ आगम अट्ठुत्तरी | ले० अभयदेव सूरि |
| ३. आगम पुरुषनु रहस्य, श्री (वि०सं० २०१०) (प्र० श्री गोडजी मित्र मंडल, बम्बई) | ले० मुनि अभयसागर |
| ४. आगमाधिकार (अप्रकाशित) | ले० श्रीमज्जयाचार्य |
| ५ आचाराग सूत्रम् (वि० सं० २००७) (प्र० श्री जैन साहित्य समिति, नयापुरा, उज्जैन) | अनु० मुनि सौभाग्यमलजी |
| ६ आवश्यक निर्युक्ति (वि० सं० १९८४) (प्र० आगमोदय समिति, बम्बई) | ले० भद्रबाहु स्वामी (द्वितीय) |
| ७ आवश्यकवृत्ति (वि० सं० १९८८) (प्र० आगमोदय समिति, बम्बई) | ले० मलयगिरि |
| ८ उत्तराध्ययन चूर्णि (वि० सं० १९८९) (प्र० श्री ऋषभदेव केसरीमलजी श्री श्वे० संस्था, इन्दौर) | ले० जिनदासगणि महत्तर |
| ९ उत्तराध्ययन निर्युक्ति भा० १-३ (वि०सं० १९७२) (प्र० देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार भांडागार संस्था) | ले० भद्रबाहु (द्वितीय) |
| १० उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति (वि०सं० १९७२) (भा० १-३) (प्र० देवचन्द्र लालभाई पुस्तकोद्धार भांडागार संस्था) | ले० वेदालवादी शान्ति सूरि |
| ११ उत्तराध्ययन सूत्र एक समीक्षात्मक अध्ययन वाचना-प्रमुख आचार्य तुलसी (अप्रकाशित) | |
| १२ उत्तराध्ययन सूत्र, दी (२ भाग) (सन् १९२२) (प्र० उषसला विश्वविद्यालय) | स० जार्ज शार्पेन्टियर |

१३. औपपातिक सूत्रम् (सवृत्ति) (वि०सं० १९९४) सं० मुनि हेमसागर
(प्र० पं० भूरालाल कालीदास)
१४. ओघनिर्मुक्तिः श्रीमती (वृत्ति सहित) (वि०सं० १९७५) ले० भद्रबाहु (द्वितीय)
(प्र० आगमोदय समिति)
१५. अगपण्णात्ति
(प्र० भाणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाल)
१६. कल्पसूत्र (वि० सं० २००८) ले० आर्य भद्रबाहु स्वामी
(प्र० साराभाई मणिकलाल नवाव, अहमदाबाद) सं० मुनि पुण्यविजयजी
१७. कषायपाहुड (भाग-१-६)(वि०सं० २००० से २०२२) ले० भगवद् गुणवराचार्य
(प्र० भारतीय दिगम्बर जैन संघ, चौरासी, मथुरा)
१८. काव्यादर्श (सन् १९२४) ले० दंडी
(प्र० ओरियन्टल बुक्स सप्लाइ ऐजेन्सी, पूना)
१९. केनीनिकल लिटरेचर ऑफ टी जैन्स ले० हीरालाल रसिकदास
(प्र० ही०रा० संकडीसेरी, गोपीपुरा, सूरत)
२०. गाथा सहस्री ले० समयसुन्दर गणी
२१. गोम्मटसार (जीवकांड) (सन् १९२७) ले० नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती
(प्र० सेन्द्रल जैन पब्लिशिंग हाउस, अजिताश्रम, अनु० सं० जे० एल० जैनी
लखनऊ) एम० ए०
२२. चार्ित्रमर्क्ति (क्रियाकलाप में मुद्रित) ले० पूजपाद स्वामी
२३. जयधवला (६ भाग) (वि०सं० २००० से २०२२) ले० वीरसेनाचार्य
(प्र० भारत दिगम्बर जैन संघ, चौरासी, मथुरा) सं० फूलचन्द सिद्धान्तशास्त्री,
सं० कैलाशचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री
२४. जातक (६ खंड) (प्रथम संस्करण) अनु० भदन्त आनन्द कोस्त्यायन
(प्र० हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग)
२५. जैनधर्मवरस्तोत्र (स्वोपज्ञवृत्ति सहित) (वि० सं० १९८९) ले० भावप्रभ सूरि
(प्र० जव्हेरी जीवनचन्द्र साकरचन्द्र)
२६. जैन भारती (मासिक) (वर्ष ७ अंक ३३)
(प्र० जैन स्वे० तेरापंथी महासभा, कलकत्ता-१)

२७. तत्त्वार्थवार्त्तिक (राजवार्त्तिक) (वि०सं०२०००) ले० अकलंकदेव
(प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, काशी)
२८. तत्त्वार्थवृत्ति (श्रुतसागरीय) (वि०सं०२०००) ले० श्रुतसागर
(प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, काशी) सं० प्रो० महेन्द्रकुमार जैन
२९. तत्त्वार्थवृत्ति (हारिभद्रीय) (वि०सं०१९९२) ले० हरिभद्र
(प्र० ऋषभदेव केसरीमल जैन श्री श्वे० संस्था, रतलाम) सं० आनन्दसागर सूरि
३०. दशवैकालिक्य (भाग २) (वि०सं०२०२०) वाचना-प्रमुख आचार्य तुलसी
(प्र० श्री जैन श्वे० तेरापंथी महासभा, कलकत्ता)
३१. दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन वाचना-प्रमुख आचार्य तुलसी
(यन्त्रस्य)
३२. दशवैकालिक चूर्णि (अगम्य) ले० स्यविर अगस्त्यसिंह
(अप्रकाशित)
३३. दशवैकालिक चूर्णि (जिनदास) (वि०सं०१९८९) ले० जिनदास महत्तर
(प्र० ऋषभदेव केसरीमल जैन श्री श्वे० संस्था, रतलाम)
३४. दशवैकालिक दीपिका (वि०सं०१९७५) ले० समयमुन्दर उपाध्याय
(प्र० श्री जिनयश सूरिजी ग्रन्थमाला समिति, खंभात)
३५. दशवैकालिक निर्युक्ति (वि०सं०१९७४) ले० भद्रवाहु (द्वितीय)
(प्र० देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार भण्डागार संस्था)
३६. दशवैकालिक वृत्ति (हारिभद्रीय) (वि०सं०१९७४) ले० हरिभद्र
(प्र० देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार भण्डागार संस्था)
३७. दसवेयालिक्य सूच (सन् १९३२) ले० डॉ० वाल्मिर गुब्रिग
(प्र० सेठ आनन्दजी कल्याणजी, अहमदाबाद)
३८. दशवैकालिक सूत्र, ए स्टडी, जी (सन् १९३३) ले० प्रो० पट्टवर्द्धन एम०ए०
(प्र० विलिंगटन कालेज, संगली)
३९. दशाश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति (वि०सं०२०११) ले० भद्रवाहु (द्वितीय)
(प्र० पन्यास मणिविजयजी गणि ग्रन्थमाला) सं० विजय कुमुदसूरीस्वरजी
४०. देशीनाममाला (द्वितीय संस्करण) (सन् १९३८) ले० आचार्य हेमचन्द्र
(प्र० दम्बई संस्कृत सीरीज)

४१. धवला (षट्खण्डागम) (भा०१-९) (वि०सं०१९९६ से २००६)
(प्र० जैन साहित्योद्धार कार्यालय, अमरावती) ले० वीरसेनाचार्य
सं० हीरालाल जैन
४२. नन्दी चूर्ण
(प्र० ऋषभदेव केशरीमल जैन श्री श्वे० संस्था, रतलाम)
४३. नन्दी वृत्ति (वि०सं०१९८०)
(प्र० आगमोदय समिति) ले० मलयगिरि
४४. नन्दी वृत्ति (वि०सं०१९८४)
(प्र० ऋषभदेव केशरीमल जैन श्री श्वे० संस्था, रतलाम) ले० हरिभद्र
४५. नन्दी सूच (सन् १९५८)
(प्र० सन्मति ज्ञानपीठ, लोहामंडी, आगरा) सं० सुबोध मूनि
४६. नन्दी सूत्रम् श्रीमद् (चूर्ण और हारिभद्रीय वृत्ति सहित) (वि०सं०१९८८)
(प्र० श्रीमद् रूपचन्द्रजी नवलमलजी, इन्दौर) सं० विजयदास सूरि
४७. नाट्यशास्त्र (सन् १९३६)
(प्र० गायकवाड ओरियंटल सीरीज) ले० भरत मुनि
४८. प्रथम द्वात्रिंशिका
ले० सिद्धसेन
४९. प्रभावकचरित (१९९७)
(प्र० सिंघी जैन ग्रन्थमाला, अहमदाबाद) ले० श्री प्रभावचन्द्र आचार्य
सं० मुनि जिनविजय
५०. प्रज्ञापना (वि०सं०१९७४)
(प्र० आगमोदय समिति, मेसाणा) ले० श्यामाचार्य
५१. पञ्चकल्प भाष्य (बृहद्)
ले० संघदास क्षमाश्रमण
५२. पञ्चकल्प चूर्ण
५३. प्राकृत भाषाओ का व्याकरण (वि०सं०२०१५)
(प्र० विहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना) ले० आर० पिशाल
अनु० डॉ० हेमचन्द्र जोशी
५४. पातजल महाभाष्य (सन् १९५१)
(प्र० निर्णयसागर, नम्बई) ले० पतजलि
सं० भार्गव शास्त्री
५५. पिप्लु निर्युक्ति (वि०सं०२०१८)
(प्र० शासन कण्टकोडारक ज्ञानमंदिर,
भावनगर (सौराष्ट्र) अनु० श्री हंससागरजी महाराज

५६. बृहत्कल्प सूत्रम् (भाष्य निर्युक्ति सहित) (सन् १९३३ से १९३८) ले० भद्रबाहु
(प्र० श्री जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, (सौराष्ट्र) सं० पुण्यविजयजी
५७. महाभारत (प्रथम संस्करण) ले० महर्षि वेदव्यास
(प्र० गीताप्रेस, गोरखपुर)
५८. मार्कण्डेय पुराण (वि०सं० २०१८) ले० कृष्ण द्वैपायन
(प्र० गुरुमंडल ग्रन्थमाला, मनसुखराय मोर, कलकत्ता)
५९. मूलाचार (वि०सं० २४८४) ले० बट्टकेर आचार्य
(प्र० सूरत भाण्डागार ग्रन्थमाला समिति, अनु० जिनदास पार्श्वनाथ फुडकुले शास्त्री
फलटन, जि० उत्तरसतारा)
६०. मूलाचार (वि०सं० १९७७) ले० बट्टकेर आचार्य
(प्र० जैन ग्रन्थमाला समिति) सं०पं०पन्नालाल न्याय-काव्यतीर्थ
सं०पं०गजाधरलाल
६१. मूळाराधना (टीका-विजयोदया) ले० अपराजित सूरि
६२. रत्नमुनि स्मृति ग्रन्थ (वि०सं० २००१) सं० विजय मुनि
(प्र० गुरुदेव स्मृतिग्रन्थ ग्रन्थमाला समिति,
लोहामंडी, आगरा) डॉ० हरिसंकर शर्मा
६३. रिळीजियन ट जैन, ल अनु० डॉ० ग्यारीनो
६४. व्यवहारभाष्य (वि०सं० १९९४) संशोधक मुनि माणक
(प्र० वकील केशवलाल प्रेमचन्द, भावनगर)
६५. विचारलेस (विचारसार प्रकरण) ले० प्रद्युम्न सूरि
६६. वैज्ञानिक दर्शन (सन् १९५४, द्वितीय संस्करण) ले० दर्शनानन्द सरस्वती
(प्र० पुस्तक भण्डार, बरेली)
६७. स्थानाग (द्वितीय संस्करण, सं० १९५४) ले०
(प्र० माणिकचन्द चुबीलाल, अहमदाबाद)
६८. समवायाग सूत्रम् (वि०सं० १९७४) ले०
(प्र० आगमोदय समिति)
६९. सामाचारीज्ञातक (वि०सं० १९९६) ले० समयसुन्दरगणी
(प्र० जवेरी मूलचन्द हीराचंद भगत, बम्बई)
७०. सिद्धान्तस्तवज्ञोत ले० जिनप्रभ सूरि

७१. सूत्रकृताग (सं० १९७३)
(प० आगमोदय समिति)
७२. षड्भाषाचन्द्रिका
७३. हरिवंश पुराण (दो भाग) (ग्रन्थांक ३२, ३३) ले० जिनसेन
(प्र० माणिकचन्द दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला) सं० पं० दरवारीलाल
७४. हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर (भाग-२) (सन् १९३३)
(प्र० कलकत्ता विश्वविद्यालय) ले० मोरी विन्टरनित्ज, पी-एच०डी०
७५. हिस्ट्री ऑफ दी केनोनिकल लिटरेचर
ऑफ दी जैन्स, ए (सन् १९४१) ले० एच०आर०कापडिया
(प्र० हीरालाल रसिकदास कापडिया, गोपीपुरा, सुरत)
७६. हेमशब्दानुशासन (सं १९६२) ले० आचार्य हेमचन्द्र सूरि
(प्र० सेठ मनसुख भाई पोरवाड डायमंड जुबली
प्रिन्टिंग प्रेस, सालापोस दरवाजा, अहमदाबाद)
७७. श्रमण भगवान् महावीर (वि०सं० १९९८) ले० पं० कल्याणविजयजी गणी
(प्र० श्री क० वि० शास्त्रसंग्रह समिति, जालोर)
७८. श्रावक विधि ले० धनपाल

दसवेआलियं : विषय-सूची

| | | | | | |
|--------------------|----------|-----|---------------|-----|-------|
| १. कुम्भपुष्पिका | ... | ... | ... | ... | पृ० १ |
| घम्म-पदं | १ | | भमर-चरिया-पदं | | २-५ |
| २. साम्भणपुत्रयं | ... | ... | ... | ... | २ |
| काम-पदं | १ | | राईमई-पदं | | ६-१० |
| चाई-पदं | २-३ | | निकखेव-पदं | | ११ |
| मणो-निगह-पदं | ४-५ | | | | |
| ३. खुड्डियायारकहा | ... | ... | ... | ... | ४ |
| उकखेव-पदं | १ | | उउचरिया-पदं | | १२ |
| अगायार-पदं | २-१० | | निकखेव पदं | | १३-१५ |
| निगंथ-पदं | ११ | | | | |
| ४. छुज्जीवणिया | ... | ... | ... | ... | ६ |
| उकखेव-पदं | सू०१-३ | | वणस्सड-पदं | | सू०२२ |
| जीव-पदं | सू०४-१० | | तस-पदं | | सू०२३ |
| महव्वय-पदं | सू०११-१७ | | संजम-पदं | | १-६ |
| पुढवी-पदं | सू०१८ | | नाण-पदं | | १०-१३ |
| आउ-पदं | सू०१९ | | आरोह-पदं | | १४-२५ |
| तेउ-पदं | सू०२० | | निकखेव-पदं | | २६-२९ |
| वाउ-पद | सू०२१ | | | | |
| ५. पिंडेसणा (उ० १) | ... | ... | ... | ... | १८ |
| उकखेव-पदं | १ | | अणायतनं | | ६-११ |
| गवेसणा-पदं— | | | गमणं | | १२-२२ |
| गमणं | २-८ | | दिट्टि-संजमो | | २३ |

| | |
|---------------------------|-------|
| मित-भूमि | २४-२६ |
| गहणेसणा-पदं | |
| छद्दियं | २७-२८ |
| दायगो | २९ |
| सहृडं | ३०-३१ |
| पुराकम्मं | ३२-३४ |
| पच्छाकम्म | ३५-३६ |
| अणिसट्ठं | ३७-३८ |
| गुन्धिवणी | ३९ |
| दायगा | ४०-४३ |
| संकिय | ४४ |
| उब्धिन्न | ४५-४६ |
| दाणट्ठं | ४७-४८ |
| पुण्णट्ठं | ४९-५० |
| वणिमट्ठं | ५१-५२ |
| समणट्ठं | ५३-५४ |
| पिंडेसणा (७०२) ... | |
| उक्खेव-पदं | १ |
| पुणो-गमण-पदं | २-३ |
| समय-पदं | ४-६ |
| पाण-पदं | ७ |
| कहा-पदं | ८ |
| अबलंबण-पदं | ९ |
| बणीमग-पदं | १०-१३ |

गहणेसणा-पदं—

| | |
|------------------------|-------|
| सत्त-दोसा | ५५-५६ |
| उम्मीसं | ५७-५८ |
| निक्खत्तं | ५९-६४ |
| सकमो | ६५-६६ |
| मालोहृडं | ६७-६९ |
| सच्चित्त | ७०-७२ |
| बहु-उज्जिम्य | ७३-७५ |
| अपरिणंत | ७६ |
| अच्चंवल्लं | ७७-८१ |
| परिभोगेसणा-पदं— | |
| बहि-भोयणं | ८२-८६ |
| ठाण-भोयणं | ८७ |
| पडिक्कमण | ८८-८९ |
| आलोयण | ९०-९१ |
| विउसग्गो | ९२-९४ |
| भोयण | ९५-९९ |
| निक्खेव-पदं | १०० |

२९

| | |
|-------------|-------|
| अकप्प-पदं | १४-२४ |
| समुयाण-पदं | २५ |
| अदीण-पदं | २६-२८ |
| संथव-पद | २९-३० |
| माया-पदं | ३१-३५ |
| सुरा-पद | ३६-४५ |
| तेण-पद | ४६-४९ |
| निक्खेव-पदं | ५० |

| | | | | | |
|---------------------|-------|-------------------|-----|-----|------------|
| ६. सहायारकहा | ... | ... | ... | ... | ३८५ |
| उक्खेव-पदं | १-३ | तेउ-पदं | | | ३३-३६ |
| आयार-गोयर-पद | ४-८ | वाउ-पदं | | | ३७-४० |
| अहिंसा-पदं | ९-११ | वणस्सइ-पदं | | | ४१-४३ |
| सच्च-पद | १२-१३ | तस-पदं | | | ४४-४६ |
| अतेणग-पद | १४-१५ | अकप्प-पदं | | | ४७-५० |
| वमचेर-पदं | १६-१७ | गिहि-भायण-पदं | | | ५१-५३ |
| अपरिगह-पद | १८-२२ | आसन्दी-पद | | | ५४-५६ |
| एगभत्त-पद | २३ | निमेज्जा-पदं | | | ५७-६० |
| भोयण-पद | २४-२६ | सिणाण-पदं | | | ६१-६४ |
| पुढवी-पद | २७-२९ | विभूसा-पद | | | ६५-६७ |
| आउ-पदं | ३०-३२ | निकखेव-पदं | | | ६८-६९ |
| ७ वक्कसुद्धि | .. | .. | ... | ... | ४३ |
| भासा-पदं | १-५ | सावज्ज-अणवज्ज-पदं | | | ४०-४६ |
| सकिय-पद | ६-१० | आएस-पदं | | | ४७ |
| फरुस-भासा-पद | ११-१४ | जहत्य-पदं | | | ४८-४९ |
| ममत्त-भासा-पद | १५-१८ | आसंसा-पदं | | | ५० |
| नाम-गोत्त-पदं | १९-२० | जहत्य-पदं | | | ५१-५३ |
| जाइ-पदं | २१-३९ | निकखेव-पदं | | | ५४-५७ |
| ८. आयारपणिही | ... | ... | ... | ... | ८५० |
| उक्खेव-पदं | १-२ | पइण्ण-चरिया-पदं | | | ४०-४५ |
| अहिंसा-पद | ३-१२ | भासा-पद | | | ४६-५० |
| सुहुम-पद | १३-१६ | लयण-पदं | | | ५१-५२ |
| पहिलेहण-पदं | १७ | इत्थी-पद | | | ५३-५७ |
| परिट्ठावणा-पदं | १८ | विसय-पदं | | | ५८-५९ |
| पइण्ण-चरिया-पदं | १९-३५ | सद्धा-पदं | | | ६० |
| कसाय-पदं | ३६-३९ | निकखेव-पदं | | | ६१-६३ |

| | |
|------------------------------|------------------------|
| ६. विणयसम्माही (उ० १) | ८७ |
| उक्खेव-पदं १ | आयरिय-पदं ११-१६ |
| आसायण-पदं २-१० | निकखेव-पदं १७ |
| विणयसम्माही (उ० २) | ६१ |
| दुम-पदं १-२ | विणीयाविणीय-पद ५-११ |
| कट्ट-पद ३ | सिक्खा-पदं १२-२१ |
| कोव-पदं ४ | निकखेव-पदं २२ |
| विणयसम्माही (उ० ३) | ६३ |
| स-पुज्ज-पद १-३ | अवत्तव्व-पदं ६ |
| जवणट्टया-पद ४ | गुण-पद १०-१२ |
| अप्पिच्छा-पद ५ | माणरिह-पदं १३-१४ |
| कटय-पदं ६-८ | निकखेव-पद १५ |
| विणयसम्माही (उ० ४) | ६८ |
| उक्खेव-पदं सू०१-३ | तव-पदं सू०६ |
| विणय-पद सू०४ | आयार-पद सू०७ |
| सुय-पद सू०५ | निकखेव-पद ६-७ |
| १० स-भिनक्खु | ७१ |
| उक्खेव-पद १ | बोसट्ट-चत्त-वेह-पदं १३ |
| अहिंसा-पदं २-४ | परीसह-जय-पद १४ |
| सवर-पदं ५ | सजय-पदं १५ |
| धुव-जोगी-पदं ६ | असग-पदं १६ |
| सम्महिंटी-पद ७ | ठिअप्पा-पदं १७ |
| असन्निहि-पदं ८ | समता-पद १८ |
| छदणा-पदं ९ | मत्त-पदं १९ |
| कहा-पदं १० | अज्जपय-पदं २० |
| भय-भेरव-पदं ११ | निकखेव-पदं २१ |
| पडिमा-पदं १२ | |

रइवक्क (पढमा चूलिया) पृ० ७६

| | | | |
|-----------------|-------|---------------|-------|
| गयकुस-पदं | १ | घम्म-भट्ट-पदं | १२-१४ |
| पच्छा-परिताव-पद | १-६ | थिरीकरण-पद | १५-१७ |
| स्तारत-पद | १०-११ | निकखेव-पदं | १८ |

विच्चिचरिया (विंइया चूलिया) . . . ८१

| | | | |
|------------|-------|---------------|----|
| उक्खेव-पद | १ | पडिसंहरण-पद | १४ |
| पडिसोय-पद | २-३ | पडिदुद्ध-पदं | १५ |
| चरिया-पद | ४-११ | अप्परक्खा-पदं | १६ |
| सपेक्खा-पद | १२-१३ | | |

| | | | |
|-----------------------|-------|-----------------|-------|
| ४. असखयं | ... | ... | १०३ |
| सञ्च-पद | २-६ | अप्यमाय-पदं | ८-१३ |
| अणसण-पद | ७ | | |
| ५. अकाममरणिज्ज | ... | ... | १०६ |
| - उक्खेव-पदं | १-३ | सकाम-मरण-पदं | १७-३२ |
| अकाम-मरण-पदं | ४-१६ | | |
| ६. खुड्डागनियण्ठिज्जं | ... | ... | ११० |
| सच्च-पद | २-७ | अप्यमाय-पद | १२-१७ |
| नाण-वाय-पदं | ८-११ | | |
| ७. उरन्निभज्जं | ... | ... | ११३ |
| उरन्निभज्ज-पद | १-१० | कुसग-जल-पद | २३-२७ |
| कागिणि अम्भग-पद | ११-१३ | निक्खेव-पद | २८-३० |
| वणिय-पद | १४-२२ | | |
| ८. काविलीयं | ... | ... | ११७ |
| दुक्ख-मुत्ति-पदं | १-३ | अभियोग-भावणा-पद | १३-१५ |
| असग-पद | ४-६ | लोभ-पद | १६-१७ |
| अहिंसा-पद | ७-१० | इत्थी-पदं | १८-१९ |
| आहाग-पदं | ११-१२ | निक्खेव-पद | २० |
| ९. नमिपव्वज्जा | ... | ... | १२२ |
| उक्खेव-पदं | १-६ | दाण-पद | ३७-४० |
| मिहिला-पदं | ७-१६ | घोरासम-पदं | ४१-४४ |
| पागार-पदं | १७-२२ | कोस-पदं | ४५-४९ |
| पासाय पदं | २३-२६ | काम-पद | ५०-५३ |
| दण्ड-पद | २७-३० | कसाय-पद | ५४ |
| जुज्झ-पदं | ३१-३६ | निक्खेव-पदं | ५५-६२ |

| | | | |
|---------------------|-------|--------------|-------|
| १०. दुमपत्तयं | ... | ... | १२९ |
| भव-पदं | १-४ | हाण-पदं | २१-२७ |
| संसार-पदं | ५-१५ | उवदेस-पदं | २८-३६ |
| दुल्लह-पदं | १६-२० | निकखेव-पदं | ३७ |
| ११. बहुस्सुयपुज्जं | ... | ... | १३६ |
| उक्खेव-पदं | १ | अविणीय-पदं | ६-६ |
| अबहुस्सुय-पदं | २ | भुविणीय-पदं | १०-१४ |
| असिक्खा-पदं | ३ | बहुस्सुय-पदं | १५-३० |
| सिक्खा-सील-पदं | ४-५ | निकखेव-पदं | ३१ |
| १२. हरिएसिज्जं | ... | ... | १४० |
| उक्खेव-पदं | १-२ | अहोदाण-पद | ३५-३६ |
| जन्नवाड-पदं | ३-११ | जाड-पदं | ३७ |
| खेत-पद | १२-१५ | सोहि-पद | ३८-३९ |
| तालण-पदं | १६-३० | जन्न-पदं | ४०-४४ |
| पासा-पदं | ३१-३४ | तित्थ-पदं | ४५-४७ |
| १३. चित्तसम्भूइज्जं | .. | ... | १४९ |
| उक्खेव-पदं | १-१२ | संबोहि-पद | १७-२३ |
| निमंतण-पदं | १३-१६ | निकखेव-पदं | ३४-३५ |
| १४. उसुयारिज्जं | ... | ... | १५५ |
| निकखेव-पदं | १-६ | कमलावर्ड-पदं | ३७-५० |
| भिगु-पुत्त-पदं | ७-२८ | निकखेव-पदं | ५१-५३ |
| भिगु-जसा-पदं | २९-३६ | | |
| १५. सभक्खुयं | ... | ... | १६४ |
| पडण्णा-पदं | १ | आय-गवेसय-पदं | ५ |
| असंग-पदं | २ | निग्गह-पदं | ६ |
| अहियास-पदं | ३-४ | आणायार-पदं | ७ |

उत्तररज्जभयणं : विषय-सूची

- ३५

| | | | |
|------------|----|------------|----|
| संयव-पद | १० | उवसत्त-पदं | १५ |
| पिण्ड-पदं | ११ | निकखेव-पद | १६ |
| भय-भेरव-पद | १४ | | |

१६. बम्भचेरसमाहिठाणं १६८

| | | | |
|----------------|---------|------------------|--------|
| उकखेव-पद | सू० १-३ | पणीय-पद | सू० ६ |
| इत्थी-कह-पद | सू० ४ | अडमत्त-पद | सू० १० |
| सन्निसेज्जा-पद | सू० ५ | विभूसा-पद | सू० ११ |
| चक्खु-संजम-पद | सू० ६ | कामगुण-पद | सू० १२ |
| सोय-सजम-पद | सू० ७ | बभचेर-गुत्ति-पदं | सू० १७ |
| सइ-सजम-पद | सू० ८ | | |

१७. पावसमणिज्जं १७५

| | | | |
|----------------|-----|-----------------|-------|
| उकखेव-पद | १-२ | विवाद-पदं | १२ |
| निहासील-पदं | ३ | निसीदण-पद | १३ |
| अविणय-पद | ४-५ | सेज्जा-पद | १४ |
| संजय-भन्नया-पद | ६ | विगड-पद | १५ |
| अप्पमज्जण-पद | ७ | अत्थन्त-आहार-पद | १६ |
| दवदव-पद | ८ | गाणगणिय-पदं | १७ |
| पडिलेहा-पद | ९ | पर-गेह-पद | १८ |
| परिभावय-पद | १० | सन्नाइ-पिड-पद | १९ |
| असविभागी-पद | ११ | निकखेव-पदं | २०-२१ |

१८. सजइज्जं १७८

| | | | |
|-----------|-------|-------------|-------|
| उकखेव-पद | १-११ | रायरिसह-पदं | १८-५० |
| सवोहि-पदं | १२-१७ | निकखेव-पद | ५१-५३ |

| | | | |
|--------------------|-------|----------------|-------|
| १९. मियापुतिज्जं | ... | ... | १८५ |
| उक्खेव-पद | १-१४ | भव-दुक्ख-पद | ४५-४६ |
| दुक्ख-पद | १५-१७ | नरय-दुक्ख-पद | ४७-७४ |
| धम्म-पद | १८-२१ | मिग-चारिया-पदं | ७५-८५ |
| सार-भण्ड-पद | २२-२३ | पव्वज्जा-पद | ८६-८७ |
| महव्वय-पद | २४-३० | समता-पद | ८८-९५ |
| दुक्कर-पद | ३१-४४ | निकखेव-पद | ९६-९८ |
| २०. महानियण्ठिज्जं | ... | ... | १९७ |
| उक्खेव-पद | १-७ | धम्म-लोव-पद | ३८-५० |
| अणाह-पद | ८-३५ | निकखेव-पद | ५१-६० |
| अत्त-पद | ३६-३७ | | |
| २१. समुद्दपालीयं | | .. | २०६ |
| उक्खेव-पद | १-११ | चरिया-पद | १३-२३ |
| महव्वय-पदं | १२ | निकखेव-पद | २४ |
| २२. रह्णेमिज्ज | .. | | २११ |
| उक्खेव-पदं | १-५ | आसीवाय-पद | २५-२७ |
| निज्जाण-पदं | ६-१४ | राईमई-पद | २८-४८ |
| सवेग-पदं | १५-२० | निकखेव-पद | ४९ |
| अभिनिकखमण-पदं | २१-२४ | | |
| २३. केसिगोयमिज्जं | ... | | २१८ |
| उक्खेव-पद | १-२२ | पास-पद | ४१-४४ |
| चाउज्जाम-पद | २३-२८ | ल्या-पदं | ४५-४९ |
| अचेला-पद | २९-३४ | अगो-पद | ५०-५४ |
| विजय-पदं | ३५-४० | दुदुस्स-पदं | ५५-५९ |

उत्तरज्जयण : विषय-सूची

| | | | |
|------------------|-------|-----------------|-------|
| कुप्पह-पदं | ६०-६४ | उज्जोय-पद | ७५-७६ |
| दीव-पद | ६५-६९ | ठाण-पदं | ८०-८७ |
| नावा-पद | ७०-७४ | निकखेव-पद | ८८-८९ |
| २४. पवयण-माया | ... | ... | २२८ |
| उक्खेव-पद | १-३ | वइ-गुत्ति-पदं | २२-२३ |
| समिइ-पद | ४-१६ | काय-गुत्ति-पदं | २४-२५ |
| गुत्ति-पद | २०-२१ | निकखेव-पदं | २६-२७ |
| २५. जन्नइज्जं | ... | ... | २३१ |
| उक्खेव-पद | १-१० | थुइ-पदं | ३४-३७ |
| मुख-पदं | ११-१८ | संबोहि-पद | ३८-४१ |
| माहण-पद | १९-३३ | निकखेव-पद | ४२-४३ |
| २६. सामायारी | ... | ... | २३७ |
| सामायारी-पद | १-७ | अणाहाग-पद | ३३-३४ |
| चरिया-पद | ८-१० | विहार-पद | ३५ |
| दिवस-चरिया-पद | ११-१६ | सज्जाय-पद | ३६ |
| रत्ति-चरिया-पद | १७-१९ | संक्का-पद | ३७-३८ |
| पडिलेहण-पद | २०-२२ | पडिक्कमण-पदं | ३९-५१ |
| पडिलेहण-विहि-पदं | २३-३० | निकखेव-पदं | ५२ |
| आहार-पद | ३१-३२ | | |
| २७. खलुंकिज्जं | | | २४४ |
| २८. मोक्खमग्गाई | ... | ... | २४७ |
| मग्गा-पद | २-३ | सम्मत्त-रुइ-पदं | १५-३१ |
| नाण-पदं | ४-५ | चरित्त-पदं | ३२-३३ |
| दब्ब-पदं | ६-१३ | तव-पदं | ३४ |
| नव-तहिय-पदं | १४ | निकखेव-पदं | ३५-३६ |

| | | | | |
|-------------------|-----------|----------------------|-----------|-----|
| २९. सम्मतपरकमे | ... | ... | ... | २५३ |
| उक्त्वेव-पदं | सू० १ | बोदाण-पदं | सू० २८ | |
| संवेग-पदं | सू० १ | मुहसाय-पदं | सू० २९ | |
| निव्वेय-पदं | सू० २ | अप्पडिबद्ध-पदं | सू० ३० | |
| धम्म-सद्धा-पदं | सू० ३ | वित्त-पदं | सू० ३१ | |
| सुस्सुसणा-पदं | सू० ४ | विनियट्टण-पदं | सू० ३२ | |
| आलोयणा-पदं | सू० ५ | पच्चकखाय-पद | सू० ३३-४१ | |
| निदण-पद | सू० ६ | पडिख्व-पद | सू० ४२ | |
| गरहण-पदं | सू० ७ | वेयावच्च-पदं | सू० ४३ | |
| सामाइय-पदं | सू० ८ | सव्व-गुण सम्पन्न-पदं | सू० ४४ | |
| चउव्वीसत्थव-पद | सू० ९ | वीयरग-पदं | सू० ४५ | |
| वंदण-पद | सू० १० | खंति-पद | सू० ४६ | |
| पडिक्कमण-पद | सू० ११ | मुत्ति पद | सू० ४७ | |
| काउस्सग-पदं | सू० १२ | अज्जव-पद | सू० ४८ | |
| पच्चकखाण-पदं | सू० १३ | मद्व-पद | सू० ४९ | |
| थवथुइ-पद | सू० १४ | सच्च-पद | सू० ५०-५२ | |
| काल-पडिल्लेहण-पदं | सू० १५ | गुत्ति-पद | सू० ५३ | |
| पायच्छित्त-पद | सू० १६ | समाहारण-पदं | सू० ५६-५८ | |
| खेमावण-पद | सू० १७ | सपन्नया-पद | सू० ५९-६१ | |
| सज्झाय-पद | सू० १८-२३ | इदिय-निग्गह-पद | सू० ६२-६६ | |
| सुय-पदं | सू० २४ | कसाय-विजय-पद | सू० ६७-७० | |
| एयग-मण-पदं | सू० २५ | खवणा-पद | ७१-७२ | |
| सजम-पद | सू० २६ | निक्खेव-पद | सू० ७३ | |
| तव-पद | सू० २७ | | | |

| | | | | |
|--------------------|-------|------------------|-----|-------|
| ३०. तवमग्ग | ... | ... | ... | २७१ |
| उक्खेव-पद | १-६ | अब्भित्तर-तव-पदं | | ३०-३६ |
| तव-पदं | ७ | निकखेव-पदं | | ३७ |
| वाहिरग-तव-पदं | ८-२६ | | | |
| ३१. चरणविही | ... | ... | ... | २७६ |
| उक्खेव-पद | १ | वज्जण-पद | | ६ |
| नियत्ति-पवत्ति-पदं | २ | जयणा-पदं | | ७-२० |
| निरोध-पदं | ३-५ | निकखेव-पदं | | २१ |
| ३२. पमायट्ठाणं | ... | ... | ... | २७९ |
| उक्खेव-पदं | १ | गन्ध-पदं | | ४८-६० |
| तण्हा-पदं | ६-८ | रस-पदं | | ६१-७३ |
| उवाय-पदं | ९-१८ | फास-पदं | | ७४-८६ |
| दुक्खं-पदं | १९-२२ | भाव-पदं | | ८७-९९ |
| रूढ-पदं | २३-३४ | निकखेव-पदं | | १०० |
| सद-पदं | ३५-४७ | | | |
| ३३. कम्मपयडी | ... | ... | ... | ३०१ |
| उक्खेव-पदं | १ | ठिड-पदं | | १९-२३ |
| कम्म-पद | २-३ | अणुभाग-पद | | २४ |
| पयडि-पदं | ४-१६ | निकखेव-पदं | | २५ |
| पाएस-पद | १७-१८ | | | |
| ३४. लेसज्जम्यणं | ... | ... | ... | ३०५ |
| उक्खेव-पदं | १-२ | रत्त-पदं | | १०-१५ |
| लेसा-पद | ३ | गन्ध-पदं | | १६-१७ |
| वण-पदं | ४-६ | फास-पदं | | १८-१९ |

| | | | | |
|--------------------|---------|-----|--------------------|---------|
| परिणाम-पदं | २०-३२ | .. | घम्म-नेमा-पदं | ५७ |
| शाण-पद | ३३ | | उपवात-पदं | ५८-६० |
| ठिड-पद | ३४-५५ | | निकषेव-पदं | ६१ |
| अदम्म-नेमा-पदं | ५६ | | | |
| ३५. अणगारमग्गर्ह | ... | ... | ... | ३१७ |
| उक्खेव-पदं | १ | | वय-विक्खय पदं | १४-१५ |
| अमंग-पदं | २ | | पिण्डवाय-पद | १६ |
| उवम्मसय-पदं | ४-७ | | ममता-पदं | १८ |
| गिह-समारभ-पदं | ८-९ | | चोसट्ट-काय-पदं | १९ |
| पायण-पदं | १०-११ | | सल्लहणा-पदं | २० |
| जोड-पदं | १२ | | निकषेव-पदं | २१ |
| मम-लेद्धं-कंचण-पदं | १३ | | | |
| ३६. जीवाजीवविभत्ती | ... | ... | ... | ३२० |
| उक्खेव-पदं | १ | | वेडंदिअ-पदं | १२७-१२५ |
| लो-तान्णोक-पद | २-४ | | तेडंदिअ-पदं | १३६-१४४ |
| अरु-वि-अजीव-पदं | ५-९ | | चउरिदिअ-पदं | १४५-१५४ |
| रु-वि-अजीव-पदं | १०-४७ | | पंचिदिअ-पदं | १५५ |
| जीव-पद | ४८ | | नेग्गय-पदं | १५६-१६६ |
| सिद्ध-जीव-पदं | ४९-६७ | | तिरिक्कअ-जोगिय-पदं | १७०-१९४ |
| गंमाण्य-जीव-पदं | ६८-६९ | | मणुअ-पदं | १९५-२०३ |
| पुट्ठवी-पदं | ७०-८३ | | देव-पदं | २०४-२४९ |
| आड-पदं | ८४-९१ | | मंल्लहणा-पदं | २५०-२५४ |
| घणस्सउ-पदं | ९२-१०७ | | भावणा-पदं | २५६-२६७ |
| तेउ-पदं | १०८-११६ | | निकषेव-पदं | २६८ |
| वाड-पदं | ११७-१२६ | | | |

दसवेआलियं

पद्म अञ्जयणं

दुमपुष्पिया

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो ।
देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥

जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आवियइ रसं ।
न य पुप्फं किलामेइ सो य पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥

एमेए समणा मुत्ता जे लोए संति साहुणो ।
विहंगमा व पुप्फेसु दाणभत्तेसणे रया ॥ ३ ॥

वयं च वित्ति लब्भामो न य कोइ उवहम्मई ।
अहागडेसु रोयंति पुप्फेसु भमरा जहा ॥ ४ ॥

महुकारसमा बुद्धा जे भवंति अणिसिया ।
नाणापिंडरया दंता तेण वुच्चंति साहुणो ॥ ५ ॥

—त्ति वेमि ॥

*

वीर्यं अज्मयणं

सामण्यपुत्रवयं

‘कहं नु कुञ्जा’^१ सामंण्यं जो कामे न निवारण ।
 पए पए वित्तीयंतो संकप्पत्त वसं गओ ॥ १ ॥
 वत्थगन्धमलंकारं इत्थीओ सयणाणि य ।
 अच्चन्दा जे न भुंजन्ति न से चाइ त्ति वुच्चइ ॥ २ ॥
 जे य^२ कन्ते पिए भोए लद्धे विपिड्ढिकुब्बई^३ ।
 साहीणे चयइ भोए^४ से हु चाइ त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥
 समाए^५ पेहाए परिव्वयंतो
 सिया मणो नित्सरई बहिद्धा ।
 न सा महं नोवि अहं पि तीसे
 इच्चेव ताओ विपएज्ज रागं ॥ ४ ॥
 आयावयाही चय सोउमल्लं
 कामे कमाही कमियं खु दुक्खं ।
 ‘छिन्दाहि दोसं विपएज्ज रागं’^६
 एवं चुहो होहिति संपराए ॥ ५ ॥

१—अहं नु कुञ्जा (अ. उ. ह.) : अहं नु कुञ्जा (अ. उ. ह.) :

कहं न कुञ्जा (अ.) : कहं न कुञ्जा (अ.) : कहं नु कुञ्जा (अ.) ।

२—उ (उ) ।

३—विपिड्ढि^० (उ) : विपिड्ढि^० (उ) : विपिड्ढि^० (उ) ।

४—भोए (अ.) ।

५—समाए (अ.) ।

६—छिन्दाहि दोसं विपएज्ज रागं (उ) ।

पक्खन्दे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं ।
 नेच्छन्ति वन्तयं भोत्तु^१ कुले जाया अगन्धणे ॥ ६ ॥
 धिरत्थु 'ते जसोकामी'^२ जो तं जीवियकारणा ।
 वन्तं इच्छसि आवेउं सेयं ते मरणं भवे ॥ ७ ॥
 अहं च भोयरायस्स^३ तं चऽसि अन्धगवण्हिणो ।
 मा 'कुले गंधणा'^४ होमो संजमं निहुओ चर ॥ ८ ॥
 जइ तं काहिसि भावं जा जा दच्छसि नारिओ ।
 वायाइद्धो व्व हडो^५ अट्टिअप्पा भविस्ससि ॥ ९ ॥
 तीसे सो वयणं सोच्चा संजयाए सुभासियं ।
 अंकुसेण जहा नागो धम्मे संपडिवाइओ ॥ १० ॥
 एवं करेन्ति संबुद्धा^६ पण्डिया पवियक्खणा ।
 विणियट्टन्ति भोगेसु जहा से पुरिसोत्तमो^७ ॥ ११ ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—भुत्त (ल) ।

२—ते ऽजसो ° (आ, जा) ।

३—भोग ° (क, ख, ग, घ, ङ, छ, झ) ।

४—कुल गन्धिणो (जा) ।

५—हडो (अ, क, ख) ।

६—संपन्ना (अ, ज) ।

७—पुरिसोत्तिमे (अ), पुरिसुत्तम् (ल, ग, घ), पुरिसुत्तमो (ज) ।

तद्वयं अज्मयणं

खुड्डियायारकहा

संजमे सुद्विअप्पाणं विप्पमुक्काण ताइणं ।
 तेसिमेयमणाइण्णं निग्गंथाणं महेसिणं ॥ १ ॥
 उद्वेसियं कीयगडं नियागमभिहडाणि य ।
 राइभत्ते सिणाणे य गंधमल्ले य वीयणे ॥ २ ॥
 सन्निही गिहिमत्ते य रायपिंडे किमिच्छए ।
 संबाहणा दंतपहोयणा य संपुच्छणा^१ देहपलोयणा य ॥ ३ ॥
 अट्ठावए य^२ नालीय छत्तस्स य धारणट्ठाए ।
 तेसिच्छं पाणहा पाए समारंभं च जोइणो ॥ ४ ॥
 सेज्जायरपिंडं च 'आसंदीपलियंकए'^३ ।
 गिहंतरनिसेज्जा य गायस्सुवट्टणाणि य ॥ ५ ॥
 गिहिणो वेयावडियं 'जायआजीववित्तिया'^४ ।
 तत्तानिव्वुडभोइत्तं आउरस्सरणाणि^५ य ॥ ६ ॥
 मूलए सिंगबेरे य उच्छुखंडे अनिव्वुडे ।
 कंदे मूले य सच्चित्ते फले बीए य आमए ॥ ७ ॥

१—संपुच्छणो (अ) ।

२—x (ग) ।

३—आसण्ण परिवज्जए (आ, जा) ।

४—^० व. त्तिया (ख, ग) ।५—जाइ याजीव^० (ग), जाय आजीवि^० (अ) ।६—आउरेस्सर^० (अ); आउरस्सर^० (हा, जा) ।

सोवच्चले सिधवे लोणे रोमालोणे^१ य आमए ।
 सामुद्दे पंसुखारे य कालालोणे य आमए ॥ ८ ॥
 ध्रुवणेत्ति वमणे य वत्थीकम्म विरेयणे ।
 अंजणे दंतवणे य गायभंगविभूसणे ॥ ९ ॥
 सब्वमेयमणाइण्णं निग्गंथाण महेसिणं ।
 'संजमम्मि य^२ जुत्ताणं'^३ लहुभूयविहारिणं^४ ॥ १० ॥
 पंचासवपरिन्नाया तिगुत्ता छसु संजया ।
 पंचनिग्गहणा धीरा^५ निग्गंथा उज्जुदंसिणो ॥ ११ ॥
 आयावयंति गिम्हेसु हेमंतेसु अवाउडा ।
 वासासु पडिसंलीणा संजया सुसमाहिया ॥ १२ ॥
 परीसहरिऊदंता धुयमोहा जिइंदिया ।
 सब्वदुक्खप्पहीणट्टा 'पक्कमंति महेसिणो'^६ ॥ १३ ॥
^७दुक्कराइं करेत्ताणं दुस्सहाइ सहेत्तु य ।
 केइत्थ देवलोएसु केई सिज्झंति नीरया ॥ १४ ॥
 खवित्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य ।
 सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता ताइणो परिनिव्वुडा^८ ॥ १५ ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१—रमा^० (अ, घ, ज) ।

२—उ (अ) ।

३—सजय अणुपालता (ज) ।

४—^०विहारिणो (ज) ।

५—वीरा (अ) ।

६—ते वदति सिव गतिं (अ) ; परक्कपति महेसिणो (ज) ।

७—अगस्त्यचूर्णों में श्लोक १४ और १५ पाठान्तर रूप में स्वीकृत हैं ।

८—परिनिव्वुडे (क, ख, घ, हा) ; परिनिव्वुडे (ख) ; परिनिव्वुए (ह) ।

चउत्थं अज्भयणं

छज्जीवणिया

सुयं मे 'आउसं! तेणं'^१ भगवया एवमक्खायं—इह खलु छज्जीवणिया नामज्भयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता । सेयं मे अहिज्जिउं अज्भयणं धम्मपन्नत्ती ॥ सू० १ ॥

कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामज्भयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता ? सेयं मे अहिज्जिउं अज्भयणं धम्मपन्नत्ती ॥ सू० २ ॥

इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्भयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता । सेयं मे अहिज्जिउं अज्भयणं धम्मपन्नत्ती तं जहा—पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया तसकाइया ॥ सू० ३ ॥

पुढवी^१ चित्तमंतमक्खाया^२ अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ४ ॥

आऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ५ ॥

तेऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ६ ॥

१—आवसत्तेणं, आमसत्तेण (हाटी पा०) ।

२—चित्तमत्ता अक्खाया (जिच्चू) ; चित्तपत्ता अक्खाया (जिच्चू पा०) ; चित्तमत्त मक्खाया (अच्चू पा० ; हाटी पा०) ।

। वाऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ७ ॥

वणस्सई चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं, तं जहा—अग्गबीया मूलबीया पोर्बीया खंध-बीया बीयरुहा सम्मुच्छिमा तणलया वणस्सइकाइया सबीया चित्तमंतमक्खाया, अणेगजीवा, पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ८ ॥

से जे पुण इमे अणेगे बह्वे तसा पाणा तं जहा—अंडया पीयया जराउया रसया संसेइमा^१ सम्मुच्छिमा उब्भिया उववाइया । जेसिं केसिंचि^२ पाणाणं अभिक्कंतं पडिक्कंतं संकुचियं पसारियं रुयं भंतं तसियं पलाइयं आगइगइविन्नाया—जे य कीडपयंगा जा य कुंथुपिवीलिया 'सव्वे बेइंदिया सव्वे तेइदिया सव्वे चउरिंदिया सव्वे पच्चिंदिया सव्वे तिरिक्खजोणिया सव्वे नेरइया सव्वे मणुया सव्वे देवा सव्वे पाणा'^३ परमाहम्मिया^४ एसो^५ खलु छट्ठो जीव-निकाओ तसकाओ त्ति पवुच्चई ॥ सू० ९ ॥

इच्चैसिं^६ छण्हं जीवनिकायाणं नेवसयं दंड समारभेज्जा नेवन्नेहिं दंडं समारभावेज्जा दंडं समारभंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा^७

१—ससेयणा (जिच्चू) ।

२—केसिं च (ख) ।

३—सव्वे नेरइया, सव्वे पच्चिंदिया, सव्वे तिरिक्खजोणिया, सव्वे मणुया, सव्वे देवा, सव्वे पाणा (जिच्चू) ।

४—सव्वे देवा, सव्वे असुरा, सव्वे नेरइया, सव्वे पच्चिंदियतिरिक्खजोणिया, सव्वे मणुस्सा, सव्वे पाणा (अच्चू) ।

५—परधम्मिता (जिच्चू पा० , जिच्चू पा०) ।

६—× (अच्चू) ।

७—इच्चैतेहिं (जिच्चू , अच्चू) ।

८—समणुजागामि (क, ख, ग, अच्चू , सू १० से २२ तक) ।

जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं 'मणेणं वायाए काएणं' न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० १० ॥

पढमे भंते ! महव्वए^१ पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वं भंते ! पाणाइवायं पच्चक्खामि—से सुहुमं वा बायरं वा तसं वा 'थावरं वा'^३ नेव सयं पाणे अइवाएज्जा^४ नेवन्नेहि पाणे अइवायावेज्जा^५ पाणे अइवायंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

पढमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि^६ सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥ सू० ११ ॥

अहावरे दोच्चे भंते ! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं सव्वं भंते ! मुसावायं पच्चक्खामि—से कोहा वा लोहा वा भया वा हासा वा नेव सयं मुसं वएज्जा^७ नेवन्नेहि मुसं वायावेज्जा^८ मुसं वयंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न

१—पणसा वयसा कायसा (अचू) ।

२—महव्वए उवट्ठिओमि (अचू सू० ११ से १५ तक) ।

३—थावरं वा से त पाणातिवाते चतुर्विहे, त दव्वतो खेततो कलतो भावतो (अचू पा०) ।

४—अइवाएपि (अचू) एव षोडश सूत्र पर्यन्त प्रथमपुरुषस्य स्थाने उत्तमपुरुषस्य प्रयोगः ।

५—अइवायावेमि (अचू) ।

६—x (अचू) सू ११ से १५ तक ।

७—वयामि (अचू) ।

८—वायावेमि (अचू) ।

समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

दोच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥ सू० १२ ॥

अहावरे तच्चे भंते ! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं सव्वं भंते ! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि से गामे वा नगरे वा रण्णे^१ वा अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा, नेव सयं अदिन्नं गेण्हेज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गेण्हावेज्जा अदिन्नं गेण्हंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

तच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥ सू० १३ ॥

अहावरे चउत्थे भंते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं सव्वं भंते ! मेहुणं पच्चक्खामि—से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्खजोणियं वा, नेव सयं मेहुणं सेवेज्जा नेवन्नेहिं मेहुण सेवावेज्जा मेहुणं सेवते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

चउत्थे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥ सू० १४ ॥

१—अरण्णे (अचू) ।

अहावरे पंचमे भंते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं सव्वं भंते ! परिग्गहं पच्चक्खामि—से 'गामे वा'^१ नगरे वा रण्णे^२ वा अप्पं वा बह्वं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा, नेव सयं परिग्गहं परिगेण्हेज्जा नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगेण्हावेज्जा परिग्गहं परिगेण्हते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

पंचमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ सू० १५ ॥

अहावरे छट्ठे भंते ! वए राईभोयणाओ वेरमणं सव्वं भंते ! राईभोयणं पच्चक्खामि—से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा नेव सय राइं भुंजेज्जा नेवन्नेहिं राइं भुंजावेज्जा राइं भुंजते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

छट्ठे भंते ! वए उवट्ठिओमि सव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥ सू० १६ ॥

इच्चेयाइं^३ पच महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्त-
हियट्ठयाए^४ उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥ सू० १७ ॥

१—× (क, ख, ग, घ, हाटी०) ।

२—अरण्णे (अचू) ।

३—इच्चेइयाइं (ख, ग, घ) ।

४—^० हियट्ठाए (घ, ज) ।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-
पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा 'एगओ वा
परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा'^१—से पुढर्वि वा भित्ति वा
सिलं वा लेल्लुं^२ वा ससरक्खं वा कायं ससरक्खं वा वत्थं हत्थेण
वा पाएण वा 'कट्टेण वा किलिचेण वा अंगुलियाए वा सलागाए
वा'^३ सलागहत्थेण वा, न आलिहेज्जा न विलिहेज्जा न घट्टेज्जा
न भिदेज्जा अन्नं न आलिहावेज्जा न विलिहावेज्जा न घट्टावेज्जा
न भिदावेज्जा अन्नं आलिहंतं वा विलिहंतं वा घट्टंतं वा भिदंतं
वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए
काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि ।
तस्स भंते ! पडिक्कामामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं
वोसिरामि ॥ सू० १८ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय-
पावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा
जागरमाणे वा—से उदगं वा ओसं वा हिमं वा महियं वा करगं वा
हरतणुगं वा सुद्धोदगं वा उदओल्लं वा कायं उदओल्लं वा वत्थ
ससिणिद्धं वा कायं ससिणिद्धं वा वत्थं, न आमसेज्जा न
संफुसेज्जा न आवीलेज्जा न पवीलेज्जा न अक्खोडेज्जा न
पक्खोडेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा अन्नं न आमसावेज्जा न
संफुसावेज्जा न आवीलावेज्जा न पवीलावेज्जा न अक्खोडावेज्जां
न पक्खोडावेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा अन्नं आमसंतं वा
संफुसंतं वा आवीलंतं वा पवीलंतं वा अक्खोडंतं वा पक्खोडंतं वा

१—सुत्ते वा जागरमाणे वा एगओ वा परिसागओ वा (अ, ज) । एव सूत्र १९ से २३ में ।

२—लेल्लं (ख) ।

३—अंगुलियाए वा सलागाए वा कट्टेण वा किलिचेण वा (अ) ।

आयावंतं वा पयावंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहिं
तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि
अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि
गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० १९ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सजयविरय-
पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ
वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से अगणि वा इंगालं वा मुम्मुरं वा
अच्चि वा 'जालं वा अलायं वा'^१ सुद्धागणि वा उक्क वा, न उंजेज्जा
'न घट्टेज्जा न उज्जालेज्जा'^२ न निव्वावेज्जा अन्नं न उंजावेज्जा
'न घट्टावेज्जा न उज्जालावेज्जा'^३ न निव्वावेज्जा अन्नं उंजंतं वा
'घट्टंतं वा उज्जालंतं वा'^४ निव्वावंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए
तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं
पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि
गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० २० ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सजयविरय-
पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा
परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से सिएण वा विहुयणेण
वा तालियंटेण वा 'पत्तेण वा'^५ साहाए वा साहाभगेण वा पिहुणेण
वा पिहुणहत्थेण वा चेल्लेण वा चेल्लकणेण वा हत्थेण वा मुहेण वा
अप्पणो वा कायं बाहिरं वा वि पुग्गलं, न फुमेज्जा न वीएज्जा
अन्नं न फुमावेज्जा न वीयावेज्जा अन्नं फुमंतं वा वीयंतं वा न

१—अलाय वा जाल वा (अ) ।

२—न घट्टेज्जा न मिदेज्जा न उज्जालेज्जा न पज्जालेज्जा (क, ख, ग, घ) ।

३—न घट्टावेज्जा न मिदावेज्जा न उज्जावेज्जा न पज्जालावेज्जा (क, ख, ग, घ) ।

४—घट्टन्तं वा भिंदत्तं वा उज्जलत्तं वा पज्जलत्तं वा (क, ख, ग, घ) ।

५—पत्तेण वा पत्तभगेण वा (क, ख, ग, घ) ।

समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए
काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि ।
तस्स भंते ! पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं
वोसिरामि ॥ सू० २१ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-
पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा
परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—सेवीएसु वा बीयपइट्टिएसु^१
वा रुढेसु वा रुढपइट्टिएसु वा जाएसु वा जायपइट्टिएसु वा हरिएसु
वा हरियपइट्टिएसु वा छिन्नेसु वा 'छिन्नपइट्टिएसु वा'^२
सच्चित्तकोलपडिनिस्सिएसु, वा, न गच्छेज्जा न चिट्ठेज्जा न
निसीएज्जा न तुयट्टेज्जा अन्नं न गच्छावेज्जा न चिट्ठावेज्जा न
निसीयावेज्जा न तुयट्टावेज्जा अन्नं गच्छंतं वा चिट्ठंतं वा
निसीयंतं वा तुयट्ठंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं
तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि
अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निदामि
गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० २२ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-
पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा
परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से कीडं वा पयंगं वा
कुंथुं वा पिवीलियं वा हत्थंसि वा पायंसि वा "बाहुंसि वा ऊरुंसि
वा 'उदरंसि वा सीसंसि वा वत्थंसि वा 'पडिग्गहंसि वा'^३
रयहरणंसि वा'^४ गोच्छांसि वा उडगंसि वा दंडगंसि वा

१—वीयपइट्टेसु (क, ख, ग, घ) ।

२—छिन्नपइट्टिएसु वा सच्चित्तेसु वा (क, ख, ग, घ, ह) ।

३—पडिग्गहंसि वा कबलंसि वा पाय-पुंछणंसि वा (क, ख, ग) ।

४—उदरंसि वा वत्थंसि वा रयहरणंसि वा (ह) ।

पीढगंसि वा^१ फलगंसि वा सेज्जंसि वा संधारगंसि वा अन्नयरंसि
वा तेहप्पगारे उवगरणजाए तओ संजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय
पमज्जिय पमज्जिय एगंतमवणेज्जा नो णं संधायमावज्जेज्जा ॥ सू० २३ ॥

अजय चरमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई^३ ।

बंधई^४ पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ १ ॥

अजयं चिट्ठमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।

बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ २ ॥

अजयं आसमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।

बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ३ ॥

अजयं सयमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।

बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ४ ॥

अजयं भुजमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।

बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ५ ॥

अजयं भासमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।

बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ६ ॥

कहं चरे? कहं चिट्ठे? कहमासे? कहं सए?

कहं भुंजन्तो भासन्तो पावं कम्मं न बंधई? ॥ ७ ॥

जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए ।

जयं भुंजन्तो भासन्तो पावं कम्मं न बंधई ॥ ८ ॥

सच्चभूयप्पभूयस्स सम्मं भूयाइ पासओ ।

पिहियासवस्स दंतस्स पावं कम्मं न बंधई ॥ ९ ॥

१—वाहंसि वा उदसीससि वा उरुंसि वा उदरसि वा पात्तसि वा रयहरणसि वा
गोच्छगंसि वा इण्डगंसि वा कवलसि वा उंडुयसि वा पीढासि वा (अ) ।

२—य (ख, ग) । गाथा १ से ६ तक ।

३—हिंसओ (अ, ज) । गाथा १ से ६ में ।

४—वज्झइ (अ) । गाथा १ से ६ व ९ में ।

पढमं नाणं तओ दया एव चिद्दइ सव्वसंजए ।
 अन्नाणी कि काही ? किवानाहिइ छेय पावमं ? ॥१०॥
 सोच्चा जाणइ कल्लणं सोच्चा जाणइ पावमं ? ।
 उभयं पिजाणई सोच्चा जं छेय तं समायरे ॥११॥
 जो जीवे वि न याणाइ अजीवे वि न याणई ।
 जीवाजीवे अयाणंतो कहं सो नाहिइ संजमं ? ॥१२॥
 जो जीवे वि वियाणाइ अजोवे वि वियाणई ।
 जीवाजीवे वियाणंतो सो हु 'नाहिइ संजमं' ॥१३॥
 जया 'जीवे अजीवे' य दो वि एए वियाणई ।
 तया गइं बहुविहं सव्वजीवाण जाणई ॥१४॥
 जया गइं बहुविहं सव्वजीवाण जाणई ।
 तया पुण्णं च पावं च बंधं मोक्खं च जाणई ॥१५॥
 जया पुण्णं च पावं च बंधं मोक्खं च जाणई ।
 तया निव्विदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ॥१६॥
 जया निव्विदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ।
 तया चयइ^१ संजोगं सव्विभंतरवाहिरं ॥१७॥
 जया चयइ^२ संजोगं सव्विभंतरवाहिरं ।
 तया मुंडे भवित्ताण पव्वइए^३ अणगारियं ॥१८॥
 जया मुंडे भवित्ताणं पव्वइए^३ अणगारियं ।
 तया सवरमुक्किट्टं धम्मं फासे^४ अणुत्तरं ॥१९॥
 जया संवरमुक्किट्टं धम्मं फासे^४ अणुत्तरं ।
 तया धुणइ कम्मरय अवोहिकलुसं कडं ॥२०॥

१—जीवमजीवे (क, ख, ग, घ) ।

२—जहइ (अ, ज) ।

३—पव्वए (ग), पव्वाति (अ) ।

४—फासेइ (अ, ज) ; फासइ (घ) ।

जया धुणइ कम्मरयं अबोहिकलुस कडं ।
 तथा सव्वत्तग^१ नाणं दंसणं चाभिगच्छई ॥२१॥
 जया सव्वत्तगं नाणं दंसणं चाभिगच्छई ।
 तथा लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ॥२२॥
 जया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ।
 तथा जोगे निरुंभित्ता सेलेसि पडिवज्जई ॥२३॥
 जया जोगे निरुंभित्ता सेलेसि पडिवज्जई ।
 तथा कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥२४॥
 जया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ।
 तथा लोग मत्थयत्थो सिद्धो हवइ सासओ ॥२५॥
 सुहसायगस्स^२ समणस्स

सायाउलगस्स निगामसाइस्स ।

उच्छोलणापहोइस्स

दुलहा सुग्गइ तारिसगस्स ॥२६॥

तवोगुणपहाणस्स

उज्जुमइ खंतिसजमरयस्स ।

परीसहे जिणंतस्स

सुलहा सुग्गइ तारिसगस्स ॥२७॥

[पच्छा वि ते पयाया

खिप्यं गच्छन्ति अमरभवणाइं ।

जेसिं पिओ तवो संजमो य

खन्ती य ब्भचेरं च ॥]^३

१—सव्वत्था (ज) ।

२—सुहसीलगस्स (अ), सुहसायगस्स (आ) ।

३—यह गाथा (क, ख, ग, घ) प्रतियों में है किन्तु चूर्णोदय व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

इचचेयं

छज्जीवणियं

सम्मदिट्ठी सया जए ।

दुलहं^१

लभित्तु सामण्णं

कम्मुणा न विराहेज्जासि ॥२८॥

—त्ति बेमि ॥

१—दुलह (ज), दुलम (आ) ।

पंचमं अज्जयण

पिंडेसणा (पढमोद्देसो)

संपत्ते भिक्खकालम्मि^१ असंभंतो अमुच्छिओ ।
 इमेण^२ कमजोगेण भत्तपाणं गवेसए ॥ १ ॥
 से गामे वा नगरे वा गोयरग्गओ मुणी ।
 चरे मंदमणुव्विग्गो अव्वक्खित्तेण^३ चेयसा ॥ २ ॥
 पुरओ^४ जुगमायाए^५ पेहमाणो महि चरे ।
 वज्जंतो बीयहरियाइं पाणे य दगमट्टियं ॥ ३ ॥
 ओवायं विसमं खाणुं विज्जलं परिवज्जए ।
 संकमेण न गच्छेज्जा विज्जमाणे परक्कमे ॥ ४ ॥
 पवडन्ते व से तत्थ पक्खलन्ते व संजए ।
 हिंसेज्ज पाणभूयाइं^६ तसे अडुव थावरे ॥ ५ ॥
 तम्हा तेण न गच्छेज्जा संजए सुसमाहिए ।
 सइ अन्तेण मग्गेण जयमेव परक्कमे ॥ ६ ॥

१—भिक्खु-० (क, ग) ।

२—अवखित्तेण (अ) ; अव्विखित्तेण (ग) ।

३—सव्वतो (आ, जा) ।

४—^०मायाय (जा) ; ^०मादाय (आ) ।

५—^०भूतेय (अ, ज) ।

६—श्लोक ६ के पश्चात् अगस्त्यचूर्णि में निम्न श्लोक का (जो कि कुछ परिवर्तन के साथ ६५वें, ६६वें श्लोक के प्रथम दो-दो चरण हैं) उल्लेख है (अय कस्सिचि सिलोगो उवरिं भण्णेहिहि)—

चल कट्ट सिलं वावि इट्ठालं वावि संकमो ।

न तेण भिक्खु गच्छेज्जा दिट्ठो तत्थ असजमो ।

इंगाल छारियं रासिं तुसरसिं च गोमयं ।
 'ससरक्खेहि पाएहि'^१ संजओ तं 'न अक्कमे'^२ ॥ ७ ॥
 न चरेज्ज वासे वासंते महियाए व^३ पडंतीए ।
 महावांए व वायंते तिरिच्छसंपाइमेसु वा ॥ ८ ॥
 न चरेज्ज वेससामंते बंभचेरवसाणुए^४ ।
 बंभयारिस्स दंतस्स होज्जा तत्थ विसोत्तिया ॥ ९ ॥
 अणायणे चरंतस्स संसग्गीए अभिक्खणं ।
 होज्ज वयाणं पीला सामण्णम्मि य संसओ ॥ १० ॥
 तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 वज्जए वेससामंतं मुणी एगंतमस्सिए ॥ ११ ॥
 साणं सूइयं^५ गाविं दित्तं गोणं हयं गयं ।
 संडिब्भं कलहं जुद्धं दूरओ परिवज्जए ॥ १२ ॥
 अणुन्नए नावणए अप्पहिट्ठे अणाउले ।
 इंदियाणि जहाभागं^६ दमइत्ता मुणी चरे ॥ १३ ॥
 दवदवस्स न गच्छेज्जा भासमाणो य^७ गोयरे ।
 हसंतो नाभिगच्छेज्जा कुलं उच्चावयं सया ॥ १४ ॥
 आलोयं थिग्गलं दारं संधिं दग्गभवणाणि य ।
 चरंतो न विणिज्झाए संकट्टाणं विवज्जए ॥ १५ ॥
 रन्नो गिहवईणं च 'रहस्सारक्खियाण'^८ य ।
 संकिलेसकरं ठाणं दूरओ परिवज्जए ॥ १६ ॥

१—ससरक्खेण पाएण (अ) ।

२—नुइक्कमे (क, ख, ग, घ) ।

३—× (अ) ।

४—वमचारी^० (आ) ; ^० वसागए (ह) ।

५—सूय (क, ख, ग, घ, ह) ; सू वेय (ज) ।

६—जहाभाव (ज) ।

७—व (ह) ।

८—रहस्सारक्खियाणि (ख) ।

- पडिक्कुळुळं न पविसे मानगं परिवज्जाए ।
 अत्रियन्कुळं न पविसे त्रियत्तं पविसे कुळं ॥१७॥
 साणीपात्राणपिहितं अप्पणा - नावपंगुरे ।
 क्कवाडं नो पणोत्तेज्जा ओग्गहंसि अजाइया ॥१८॥
 गोयरन्गपविट्ठो उ वच्चमुत्तं न वाणए ।
 ओगामं फामुयं नच्चा अणुत्तविय वंसिरे ॥१९॥
 नोयडुवारं नमयं कोइयां पण्विज्जाए ।
 अक्कवुविमओ जय्य पाणा दुप्पडिल्लेहया ॥२०॥
 जय्य पुप्फाड गोयाइ विप्पडिण्णाइ कोइए ।
 अट्टणोवलिन्तं उळ्ळं इट्टुणं परिवज्जाए ॥२१॥
 गण्णं दारणं माणं वच्चयां वावि कोइए ।
 उळ्ळंविद्या न पविसे विळ्ळहिताण व संजए ॥२२॥
 असंसत्तं पणोएज्जा नाइडुरावलोयए ।
 उक्कुळ्ळं न विणिज्जाए नियट्टेज्जा अयंपिरो ॥२३॥
 अइभूमि न गच्छेज्जा गोयरन्गपओ मुणी ।
 कुळस्स भूमि जाणित्ता मियं भूमि परक्कमे ॥२४॥
 नत्थेव पडिल्लेहेज्जा भूमिभागं वियक्कणो ।
 मिणाणस्स य वच्चस्स संलोगं परिवज्जाए ॥२५॥
 'इगमद्वियआयाणं'^१ वीयाणि हरियाणि य^२ ।
 परिवज्जंतो चिट्ठेज्जा सत्त्विदियसमाहिए ॥२६॥
 नत्थे न चिट्ठमाणस्स आहरे पाणभोयणं ।
 अक्कपियं न इच्छेज्जा^३ पडिगाहेज्जा कप्पियं ॥२७॥

१—^०आयणे (क, च, ग, घ) ।

२—वा (क) ।

३—निहेजा (क, घ, ह) ।

आहरन्ती-सिया तत्थ परिसाडेज्ज भोयणं ।
 देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥२८॥

सम्मद्दमाणी पाणाणि बीयाणि हरियाणि य ।
 असंजमकरि नच्चा तारिसं^१ परिवज्जे ॥२९॥

साहट्टु निक्खवित्ताणं सच्चित्तं घट्टियाणं^२ य ।
 तहेव समणद्व्याए उदगं संपणोल्लिया ॥३०॥

आगाहइत्ता^३ चलइत्ता आहरे पाणभोयणं ।
 देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥३१॥

पुरेकम्मेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
 देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥३२॥

[एवं उदओल्ले ससिणिद्धे ससरक्खे मट्टिया ऊसे ।
 हरियाले हिंगुलए मणोसिला अंजणे लोणे ॥३३॥

गेरुय वण्णिय सेडिय सोरट्टिय पिट्ट कुक्कुसकए य ।
 उक्कट्टमसंसट्टे संसट्टे चेव वोधव्वे ॥३४॥]^४

१—तारिसि (ह) ।

२—घट्टियाणि (क, ख, ग) ।

३—ओगाहइत्ता (अ, ज, ह) ।

४—अगस्त्य चूर्णि में गाथा ३३-३४ के स्थान में सतरह श्लोक हैं :

१—उदउल्लेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।

देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥

२—ससिणिद्धे ण हत्थेण

३—ससरक्खेण ”

४—मट्टियागतेण ” ..

५—उसगतेण ”

६—हारसालगतेण ”

७—हिंगुलएगतेण ”

८—पणोसिलागतेण ”

९—अजणगतेण ” .. .

१०—लोणगतेण हत्थेण

११—गेरुयगतेण ”

१२—वण्णियगतेण ”

१३—सेडियगतेण ”

१४—सोरट्टियगतेण ”

१५—पिट्टगतेण ”

१६—कुक्कुसगतेण ”

१७—उक्कट्टगतेण ”

असंसद्वेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
 दिज्जमाणं न इच्छेज्जा पच्छाकम्मं जहि भवे ॥३५॥
 संसद्वेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
 दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा जं तत्थेसणियं भवे ॥३६॥
 दोण्हं तु भुंजमाणं एगो तत्थ निमंतए ।
 दिज्जमाणं न इच्छेज्जा छंदं से पडिलेहए ॥३७॥
 दोण्हं तु भुंजमाणं दोवि तत्थ निमंतए ।
 दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा जं तत्थेसणियं भवे ॥३८॥
 गुव्विणीए उवन्नत्थं विविहं पाणभोयणं ।
 भुज्जमाणं विवज्जेज्जा भुत्तसेसं पडिच्छए ॥३९॥
 सिया य समणट्ठाए गुव्विणी कालमासिणी ।
 उट्ठिया वा निसीएज्जा निसन्ना वा पुणुट्ठए ॥४०॥
 'तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।'
 देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४१॥
 'थणं पिज्जेमाणी दारगं वा कुमारियं ।'
 तं निक्खिवित्तु रोयंतं आहरे पाणभोयणं ॥४२॥
 तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४३॥
 जं भवे भत्तपाणं तु कप्पाकप्पम्मि संकियं ।
 देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४४॥
 दगवारएण पिहियं नीसाए पीढएण वा ।
 लोढेण वा वि लेवेण सिलेसेण व केणई ॥४५॥

१—भुंजमाण. (क, ख, ग, घ, ज) ।

२—अगस्त्य चूर्णी में श्लोक ४१-४३ के प्रथम दो चरण नहीं हैं—पुव्व मणितं सुत्तं सिलोगद्धं वित्तीए अणुस्सरिज्जति “देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पति तारिसं” अहवा दिवद्ध सिलोगो (अ) ।

तं च उब्भदिया देजा समणद्वाए व दावए ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४६॥
 असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा दाणद्वा पगडं इमं ॥४७॥
 'तं भवे'^१ भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४८॥
 असण पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा पुण्णद्वा पगड इमं ॥४९॥
 तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५०॥
 असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा वणिमद्वा पगड इमं ॥५१॥
 तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५२॥
 असणं पाणग वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा समणद्वा पगडं इमं ॥५३॥
 तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५४॥
 उद्देशियं कीयगडं पूर्वकमं च आहडं ।
 अज्भोयर पामिच्चं मीसजायं 'च वज्जए'^२ ॥५५॥
 उग्गमं से पुच्छेज्जा कस्सद्वा केण वा कडं ? ।
 सोच्चा निस्संक्रियं सुद्धं पडिगाहेज्ज संजए ॥५६॥

१—तारिस (अ, क, ह) ।

२—विवज्जए (अ, ज) ।

असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 पुफ्फेमु होज्ज उम्मोसं वीएणु हरिएणु वा ॥१७॥
 'तं भवे' भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥१८॥
 असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 उदगम्मि होज्ज निक्खित्तं उत्तिगपणणेमु वा ॥१९॥
 'तं भवे' भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥२०॥
 असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 'तेउम्मि' होज्ज निक्खित्तं तं च संघट्टिया दए ॥२१॥
 तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥२२॥

[एवं उस्सच्चिया ओसच्चिया उज्जालिया पज्जालिया निव्वाविया ।
 उस्सिच्चिया निस्सिच्चिया ओवत्तिया ओयारिया दए ॥२३॥]^३

१—तारिसं (उ. म. ह) ।

२—उगण्णि (उ) ।

३—अगस्त्यवृषि में गद्यः ६३ के स्थान पर निम्न उद्धृत श्लोक हैं—

१—उत्तगं पाणं वडि खाइमं साइमं तहा ।

ते उम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च उस्सच्चिया दए ॥

२—तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।

देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥

३—..... तं च ओसच्चिया दए ॥

५—..... तं च उज्जालिया .. ॥

७—..... तं च निव्वाविया .. ॥

९—..... तं च उस्सिच्चिया .. ॥

११—..... तं च उक्कट्टिया .. ॥

१३—..... तं च निस्सिच्चिया . ॥

१५—..... तं च ओवत्तिया .. ॥

१७—..... तं च ओयारिया .. ॥

श्लोक ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८ ठीक दूसरे श्लोक की तरह हैं ।

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६४॥
 'होज्ज कट्ठं सिलं वा वि इट्ठालं वा वि एगया ।
 ठवियं संकमट्ठाए तं च होज्ज चलाचलं ॥६५॥'^१
 'न तेण भिक्खू गच्छेज्जा दिट्ठो तत्थ असंजमो ।'^२
 गंभीरं झुसिरं चेव सन्विदियसमाहिए ॥६६॥
 निस्सेणि फलगं पीढं उस्सवित्ताणमारुहे ।
 मंचं कीलं च पासायं समणट्ठाए व दावए ॥६७॥
 दुरुहमाणी^३ पवडेज्जा हत्थं पायं व लूसए ।
 पुढविजीवे^४ वि हिसेज्जा जे य^५ तन्निस्सिया जगा ॥६८॥
 'एयारिसे महादोसे जाणिऊण महेसिणो ।'^६
 तम्हा^७ मालोहडं भिक्खं न 'पडिगेण्हंति संजया'^८ ॥६९॥
 कदं मूलं पलंबं वा आमं छिन्नं व सन्निरं ।
 तुबागं सिगवेरं च आमगं परिवज्जए ॥७०॥
 तहेव सत्तुचुण्णाइं कोलचुण्णाइं आवणे ।
 सक्कुलि फाणियं पूयं अन्नं वा वि तहाविहं ॥७१॥
 विक्कायमाणं पसढं रएण परिफासियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७२॥

१—अगस्त्य चूर्णि में यह श्लोक यहाँ नहीं है । किन्तु इसी उद्देशक के छठे श्लोक के पश्चात् है ।

२—६६वें श्लोक के प्रथम दो चरण अगस्त्य चूर्णि में व्याख्यात नहीं हैं ।

३—दुरुहमाणे (अ) ।

४—पुढविक्खाय (अ, ज,)

५—वा (अ) ।

६—६९वें श्लोक के प्रथम दो चरण अगस्त्य चूर्णि में व्याख्यात नहीं हैं ।

७—हदि (हा) ।

८—पडिगाहेज्ज सजए (अ) ।

बहु-अद्वियं पुग्गलं अणिमिसं वा. बहु-कंटयं ।
 अत्थियं तिदुयं बिल्लं उच्छुखंडं व^१ सिंबलिं ॥७३॥
 अप्पे सिया भोयणजाए बहु-उज्झिय-धम्मिए ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७४॥
 तहेवुच्चावयं पाणं अदुवा वारधोयणं ।
 संसेइमं चाउलोदगं अहुणाधोयं विवज्जए ॥७५॥
 ज जाणेज्ज चिराधोयं मईए दंसणेण वा ।
 पडिपुच्छिऊण सोच्चा वा जं च निस्संकियं भवे ॥७६॥
 अजीवं परिणयं नच्चा पडिगाहेज्ज संजए ।
 अह संकियं भवेज्जा आसाइत्ताण रोयए ॥७७॥
 थोवमासायणट्टाए हत्थगम्मि दलाहि मे ।
 मा मे अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणित्तए ॥७८॥
 तं च अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणित्तए ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७९॥
 तं च होज्ज अकामेणं विमणेण पडिच्छियं ।
 तं 'अप्पणा न पिबे'^२ नो वि अन्नस्स दावए ॥८०॥
 एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया ।
 जयं परिट्टवेज्जा परिट्टप्प^३ पडिक्कमे ॥८१॥
 सिया य गोयरग्गओ इच्छेज्जा परिभोत्तुयं ।
 कोट्टगं भित्तिमूलं वा पडिलेहित्ताण फासुयं ॥८२॥
 अणुन्नवेत्तु मेहावी पडिच्छन्नाम्मि संवुडे ।
 हत्थगं संपमज्जित्ता तत्थ भुंजेज्ज संजए ॥८३॥

१—च (क, ख, घ) ।

२—अप्पणा वि न पिबे अ) ।

३—पडिट्टप्प (ह) ।

तत्थ से भुंजमाणस्स अट्ठियं कंटओ सिया ।
 तण-कट्ट-सक्करं वा वि अन्नं 'वा वि'^१ तहाविहं ॥८४॥
 तं उक्खवित्तु न निक्खवे आसएण न छेड्डुए ।
 हत्थेण तं गहेऊणं एगंतमवक्कमे ॥८५॥
 एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया ।
 जयं परिट्टवेज्जा परिट्टप्प^२ पडिक्कमे ॥८६॥
 सिया य भिक्खू इच्छेज्जा सेज्जमागम्म भोत्तुयं ।
 सर्पिडपायमागम्म उंडुय^३ पडिलेहिया ॥८७॥
 विणएण पविसित्ता सगासे गुरुणो मुणी ।
 इरियावहियमायाय^४ आगओ य पडिक्कमे ॥८८॥
 आभोएत्ताण नीसेसं अइयारं^५ जहक्कमं ।
 गमणागमणे चेव भत्तपाणे व^६ संजए ॥८९॥
 उज्जुप्पन्नो अणुव्विग्गो अन्वक्खित्तेण चेर्यसा ।
 आलोए गुरुसगासे जं जहा गहियं भवे ॥९०॥
 न सम्ममालोइयं होज्जा पुव्वि पच्छा व जं कडं ।
 पुणो पडिक्कमे तस्स वोसट्ठो चित्ते इमं ॥९१॥
 अहो जिणेहि असावज्जा वित्ती साहूण देसिया ।
 मोक्खसाहणहेउस्स साहुदेहस्स धारणा ॥९२॥
 नमोक्कारेण पारेत्ता करेत्ता जिणसंथवं ।
 सज्झायं पट्टवेत्ताणं वीसमेज्ज खणं मुणी ॥९३॥

१—चापि (ह) ।

२—पडिडुप्प (ह) ।

३—उण्णय (अ) ।

४—^० मायाए (ख) ।

५—अइयारं च (क, ग, घ, ह) ।

६—य (क, ख, ग, घ, ह) ।

वीसमंतो इमं चिते हियमद्धं लाभमद्धिओ ।
 जइ मे अणुग्गहं कुज्जा साहू होज्जामि तारिओ ॥१४॥
 साहवो तो चियत्तेणं निमंतेज्ज जहक्कमं ।
 जइ तत्थकेइ^१ इच्छेज्जा तेहिं सद्धि तु भुंजए ॥१५॥
 अह कोइ न इच्छेज्जा तओ भुंजेज्ज एक्कओ ।
 आलोए^२ भायणे साहू जय 'अपरिसाडयं'^३ ॥१६॥
 तित्तगं व कडुयं व कसायं

अंबिलं व^४ महरं लवणं वा ।

एय लद्धमन्नद्ध-पउत्तं

महु-घयं व भुजेज्ज संजए ॥१७॥

अरसं विरसं वा वि सूइयं^५ वा असूइयं ।

उल्लं वा जइ वा सुक्कं मन्थु-कुम्मास-भोयणं ॥१८॥

उप्पणं नाइहीलेज्जा अप्पं पि^६ बहु फासुयं ।

मुहालद्धं मुहाजीवी भुंजेज्जा दोसवज्जियं ॥१९॥

दुल्लहा उ^७ मुहादाई मुहाजीवी वि दुल्लहा ।

मुहादाई मुहाजीवी दो वि गच्छति सोग्गइं ॥१००॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—कोइ (अ) ।

२—आलोय (अ, ज) ।

३—अपरिसाडिय (क, ख, ग, घ, ज) ।

४—× (ग, घ) ।

५—सूविय (अ) ।

६—या (क, ख, ग, घ, ह) ।

७—हु (अ) ।

पंचमं अज्मयणं
पिंडेसणा (वीओ उद्देशो)

पडिगहं संलिहत्ताणं लेव-मायाए^१ संजए ।
 दुगंधं वा सुगंधं वा सव्वं भुंजे न छड्डुए^२ ॥ १ ॥
 सेज्जा निसीहियाए समावन्नो व^३ गोयरे ।
 अयावयट्ठा भोच्चाणं जइ तेणं न संथरे ॥ २ ॥
 तओ कारणमुप्पन्ते भत्तपाणं गवेसए ।
 विहिणा पुव्व-उत्तेण इमेण उत्तरेण य ॥ ३ ॥
 कालेण निक्खमं भिक्खू 'कालेण य' पडिक्खे ।
 अकालं च विवज्जेत्ता काले कालं समायरे ॥ ४ ॥
 अकाले चरसि भिक्खू कालं न पडिलेहसि ।
 अप्पाणं च किलामेसि सन्निवेशं च गरिहसि ॥ ५ ॥
 सइ काले चरे भिक्खू कुज्जा पुरिसकारियं ।
 अलाभोत्ति न सोएज्जा तवोत्ति अहियासाए ॥ ६ ॥
 तहेवुच्चावया पाणा भत्तट्ठाए समागया ।
 त-उज्जुयं न गच्छेज्जा जयमेव परक्खे ॥ ७ ॥
 गोयरग्ग-पविट्ठो उ^४ न निसीएज्ज कत्यई ।
 कहं च न पवंधेज्जा चिद्धित्ताणं व संजए ॥ ८ ॥
 अगलं फलिहं दारं कवाडं वा वि संजए ।
 अवलंबिया न चिट्ठेज्जा गोयरग्गओ मुणी ॥ ९ ॥

१—^० मायाय (ग) ; मादाय (अ) ; मायाइ (स्त) ।

२—उज्झए (ह) ।

३—य (क, स, ग) ।

४—कालेण व (अ) ।

५—य (ग) ।

समणं माहणं वा वि किविणं वा वणीमगं ।
 'उवसंकमंतं' भत्तद्वा पाणद्वाए व संजए'^१ ॥१०॥
 तं अइक्कमित्तु^२ न पविसे न चिट्ठे 'चक्खु-भोयरे'^३ ।
 'एगंतमवक्कमित्ता' तत्थ चिट्ठेज्ज संजए'^१ ॥११॥
 वणीमगस्स वा तस्स दायगस्सुभयस्स वा ।
 अप्पत्तियं सियाहोज्जा लहुत्तं^४ पवयणस्स वा ॥१२॥
 पडिसेहिएव दिन्ने^५ वा तओ तम्मि नियत्तिए ।
 उवसंकमेज्ज भत्तद्वा पाणद्वाए व संजए ॥१३॥
 उप्पलं पउमं वा वि कुमुयं वा मगदंतियं ।
 अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं तं च संलुंचिया दए ॥१४॥
 'तं भवे'^६ भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥१५॥
 उप्पलं पउमं वा वि कुमुयं वा मगदंतियं ।
 अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं तं च सम्मद्विया दए ॥१६॥
 'तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं'^७ ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥१७॥
 सालुयं वा विरालियं कुमुदुप्पलनालियं^८ ।
 मुणालियं सासवनालियं उच्छुखंडं अनिव्वुडं वा १८॥

१—अगस्त्य चूर्णि में दस और ग्यारह श्लोक के अन्तिम दो-दो चरण व्याख्यात नहीं हैं ।

२—अइक्कम्म (अ) ।

३—चक्खु-फासओ (अ) ।

४—लहुयत्त (घ) ।

५—दिन्ने (अ) ।

६—तारिसं (ह) ; एतस्स सिलोगस्स प्रागेण पच्चदूध पढति (अ) ।

७—अगस्त्य चूर्णि में ये दो चरण व्याख्यात नहीं हैं ।

८—कुमुयं उप्पल (क, ख, ग, घ) ।

तरुणाः वा पवालं रुक्वस्स तणगस्स वा ।
 अन्नस्स वा विहरियस्स आमगं परिवज्जए ॥१९॥
 तरुणियं व छिवाडि आमियं भज्जियं सइं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥२०॥
 तहा कोलमणुस्सिन्नं वेलुयं कासवनालियं ।
 तिलपप्पडगं नीमं आमगं परिवज्जए ॥२१॥
 तहेव चाउलं पिट्ठं वियडं वा तत्तनिव्वुडं ।
 तिलपिट्ठं पूइ पिन्नागं आमगं परिवज्जए ॥२२॥
 कविट्ठं माउलिंगं च मूलगं 'मूलगतियं'^१ ।
 आमं असत्थपरियं मणसा वि न पत्थए ॥२३॥
 तहेव फलमंथूणि बीयमंथूणि जाणिया ।
 बिहेलगं पियालं च आमगं परिवज्जए ॥२४॥
 समुयाणं चरे भिक्खू कुलं उच्चावयं सया ।
 नीयं कुलमइक्कम्म ऊसढं नाभिधारए ॥२५॥
 अदीणो वित्तिमेसेज्जा न विसीएज्ज पंडिए ।
 अमुच्छिओ भोयणस्मि मायन्ने एसणारए ॥२६॥
 बहं परघरे अत्थि विविहं खाइमसाइमं ॥
 न तत्थि पंडिओ कुप्पे इच्छा देज्जपरो न वा ॥२७॥
 सयणासणः वत्थं वा भत्तपाणं व संजए ।
 अदेतस्स न कुप्पेज्जा पच्चक्खे वि य दीसओ ॥२८॥
 इत्थियं पुरिसं वा त्रि डहरं वा महलगं ।
 वंदमाणो^२ न जाएज्जा नो य णं फरुसं वए ॥२९॥

१—मूलवत्तिय (घ, ह) ।

२—वदमाणं (अ, क, ख, ग, घ, ज, ह) ; वदमाणो (आ, जा, ह) ।

जे न वदे न से कुप्ये वंदितो न समुक्ते ।
 एवमन्नेसमाणस्तत्तामण्णमणुचिद्धई ॥३०॥
 सिया एगइओ लद्धुं लोभेण विणिगूहई ।
 मा मेयं दाइयं सत्तं दड्डुणं सयमायए ॥३१॥
 अत्तड्डुणुओ लुद्धो बहु पावं पकुव्वई ।
 द्दुत्तोसओ य से होइ निव्वाणं च न गच्छई ॥३२॥
 सिया एगइओ लद्धुं विविहं पाणभोयणं ।
 भद्दणं भद्दणं भोच्चा विवण्णं विरत्तमाहरे ॥३३॥
 जाणंतु ता इमे समणा आययद्धी अयं सुणी ।
 सत्तुद्धो सेवई पंतं लूहवित्ती सुत्तोसओ ॥३४॥
 पूयणद्धो जत्तोकामी माणसम्माणकामए ।
 बहुं पसवई पावं मायासल्लं च कुव्वई ॥३५॥
 चुरं वा मेरुं वा वि अन्नं वा मज्जगं रत्तं ।
 सत्तक्खं न पिबे भिक्खू जसं सारक्खमप्पणो ॥३६॥
 पिया एगइओ तेणो न मे कोइ वियाणई ।
 तत्त पत्तह दोसाइं नियडिं च सुणेहे मे ॥३७॥
 वड्डई सौंडिया तत्त मायमोसं च भिक्खुणो ।
 अयसो य अनिव्वाणं सययं च अत्ताहुया ॥३८॥
 निच्चुव्विण्णो जहा तेणो अत्तक्खमेहि दुम्मई ।
 तारित्तो मरणंते वि नाराहेइ संवरं ॥३९॥
 आयरिए नाराहेइ समणे यावि तारित्तो ।
 गिहत्था वि णं गरहंति जेण जाणंति तारित्तं ॥४०॥

१—लद्धं (ल) ।

२—पूयणद्धो (ल. ल. ग. घ. ह) ।

३—पकुव्वई (ल) ; वि कुव्वई (ल) ;

४—अनिव्वाणी (ल) ।

'एवं तु अगुणप्पेही गुणाणं च विवज्जओ' ।
 तारिसो मरणंते वि नाराहेइ संवरं ॥४१॥^१
 तवं कुव्वइ मेहावी पणीयं वज्जए रसं ।
 मज्जप्पमायविरओ तवस्सी अइउक्कसो ॥४२॥
 तस्स पस्सह कल्लाणं अणेगसाहुपूइयं^२ ।
 विउलं अत्थसंजुत्तं कित्तइस्सं सुणेह मे ॥४३॥
 एवं 'तु गुणप्पेही'^३ अगुणाणं 'च विवज्जओ'^४ ।
 तारिसो मरणंते वि आराहेइ संवरं ॥४४॥
 आयरिए आराहेइ समणे यावि तारिसो ।
 गिहत्था वि णं पूयंति जेण जाणंति तारिसं ॥४५॥
 तवतेणे वयतेणे रूवतेणे य जे नरे ।
 आयारभावतेणे य कुव्वइ देवकिब्बिसं ॥४६॥
 लद्धूण वि देवत्तं उववन्नो देवकिब्बिसे ।
 तत्था वि से न याणाइ किमे किच्चा ईमं फलं ? ॥४७॥
 तत्तो वि से चइत्ताणं लब्धिही एलमूययं ।
 नरयं तिरिक्खजोणिं वा बोही जत्थ सुदुल्लाहा ॥४८॥
 एयं च दोस दट्टूणं नायपुत्तेण भासियं ।
 अणुमाय पि मेहावी मायामोसं विवज्जए ॥४९॥

१—यह श्लोक चूर्णद्वय में व्याख्यात नहीं है ।

२—अणेग० (ज) ।

३—स गुणप्पेही (ह) ; अगुणप्पेही (जा) ।

४—विवज्जए (अ, क, जा) ।

सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहि
 संजयाण बुद्धाण सगासे ।
 तत्थ भिक्खू सुप्पणिहिदिए
 तिब्बलज्ज गुणवं विहरेज्जासि ॥५०॥
 —त्ति वेमि ॥

सुर या न्ने
 ससक्खं न पिब्बे
 पिया एगइ
 तस्स पस्सह
 वड्ढई सोड्डिया तस्स म
 अयसो य अनिब्बाणं* स
 निच्चुव्विग्गोजहातेणो
 तारिसो मरणंते
 आयरिए
 गिहत्था वि

नं वा मज्जग
 सारक्खमुप्पण
 कोइ विय

१—लद्धं (ख) ।

२—पूयणह्हा (क, ख)

३—पकुव्वइ (ख)

४—अनिब्बाणी (३)

छट्टुमज्जमयणं
महायारकहा

नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं ।
गणिमागमसंपन्नं उज्जाणम्मि समोसढं ॥ १ ॥
रायाणो रायमच्चा य माहणा अट्टुव खत्तिया ।
पुच्छंति निहुअप्पाणो कहं भे आयारगोयरो ? ॥ २ ॥
तेसि सो निहुओ दंतो सव्वभूयमुहावहो ।
सिक्खाए सुसमाउत्तो आइवखइ विग्रक्खणो ॥ ३ ॥
हंदि धम्मत्यकामाणं निगंथाणं मुणेह मे ।
आयारगोयरं भीमं सयलं दुरहिट्ठियं ॥ ४ ॥
नन्नत्य एरिसं वुत्तं जं लोए परमदुच्चरं ।
विउलट्ठाणभाइस्स' न भूयं न भविस्सई ॥ ५ ॥
सखुहुगवियन्नाणं वाहियाणं च जे गुणा ।
अखंडफुडिया' कायच्चा तं मुणेह जहा तथा ॥ ६ ॥
दस अट्टु य ठाणाइ जाइं वालोऽवरउम्हई ।
तत्य अन्नयरे ठाणे निगंथत्ताओ भस्सई ॥ ७ ॥
| वयछत्तकं कायछत्तकं अकप्पो गिहिभायणं ।
पल्लियंकं नित्तेजा य सिणाणं सोहवज्जणं ॥ १'

१—० भावेत्स (५) ।

२—० पुला (८) : ० पुल्ला (८) ।

३—यह श्लोक (क, ख, ग, घ) प्रतियोगी में है किन्तु पुनिदय व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

तत्थिमं पढमं ठाणं महावीरेण देसियं ।
 अहिंसा निउणं^१ दिट्ठा सव्वभूएसु^२ संजमो ॥ ८ ॥
 जावंति लोए पाणा तसा अदुव थावरा ।
 ते जाणमजाणं वा न हणे णो वि^३ घायए ॥ ९ ॥
 सव्वे^४ जीवा विइच्छन्ति जीविउं न मरिज्जिउं ।
 तम्हा पाणवहं^५ घोरं निग्गंथा वज्जयंति णं ॥१०॥
 अप्पणट्ठा परट्ठा वा कोहा वा जइ वा भया ।
 हिंसगं न मुसं बूया नो वि अन्नं वयावए ॥११॥
 मुसावाओ य लोगम्मि सव्वसाहूहिं गरहिओ ।
 अविस्सासो य भूयाणं तम्हा मोसं विवज्जए ॥१२॥
 चित्तमंतमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा बहुं ।
 दंतसोहणमेत्त पि ओग्गहंसि अजाइया ॥१३॥
 तं अप्पणा न गेण्हंति नो वि गेण्हावए परं ।
 अन्नं वा गेण्हमाणं पि 'नाणुजाणंति सजया'^६ ॥१४॥
 अबंभचरियं घोरं पमायं दुरहिट्ठियं ।
 नायरंति मुणी लोए भेयाययणवज्जिणो ॥१५॥
 मूलमेयमहम्मस्स महादोससमुस्सयं ।
 तम्हा मेहुणसंसग्गि निग्गंथा वज्जयंति णं ॥१६॥

१—निउणा (क, ख, ग, घ, ज, ह) ।

२—^० जीवेषु (आ, ज) ।

३—व (क, ख, ग) ।

४—सव्व (अ, ख) ।

५—पाणिवहं (क, ग, घ) ।

६—नाणुजाणेज्ज सजए (अ) ।

बिडमुब्भेइमं^१ लोणं तेल्लं सप्पि च फाणियं ।
 न ते सन्निहिमिच्छन्ति नायपुत्तवओरया ॥१७॥
 लोभस्सेसो अणुफासो मन्ने अन्नयरामवि ।
 जे सिया सन्निहीकामे गिही पव्वइए न से ॥१८॥
 जं पि वत्थं व पायं वा कंबल पायपुंछणं ।
 तं पि संजमलज्जट्ठा धारंति परिहरंति य ॥१९॥
 न सो परिग्गहो वुत्तो नायपुत्तेण ताइणा ।
 मुच्छा परिग्गहो वुत्तो इइ वुत्तं महेसिणा ॥२०॥
 सव्वत्थुवहिणा बुद्धा संरक्खणपरिग्गहे ।
 अवि अप्पणो वि देहम्मि नायरंति ममाइयं ॥२१॥
 अहो निच्च तवोकम्मं सव्वबुद्धेहि वणियं ।
 जाय^२ लज्जासमा वित्ती एगभत्तं च भोयणं ॥२२॥
 संतिमे सुहुमा पाणा तसा अदुव थावरा ।
 जाइं राओ अपासंतो कहमेसणियं चरे ? ॥२३॥
 उदउल्ल वीयसंसत्तं पाणा निवडिया महिं ।
 दिया ताइं विवज्जेज्जा राओ तत्थ कहं चरे ? ॥२४॥
 एयं च दोसं दट्ठूणं नायपुत्तेण भासियं ।
 सव्वाहारं न भुंजंति निग्गंथा राइभोयणं ॥२५॥
 पुढविकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
 तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥२६॥
 पुढविकायं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
 तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥२७॥

१—पिडमुब्भे ० (अ) ।

२—व (अ) ।

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 पुढविकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जे ॥२८॥
 आउकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
 तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥२९॥
 आउकायं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
 तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥३०॥
 तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 आउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जे ॥३१॥
 जायतेयं न इच्छंति पावगं जलइत्तए ।
 तिक्खमन्नयरं सत्थं सव्वओ वि दुरासयं ॥३२॥
 पाईणं पडिणं वा वि उड्ढं अणुदिसामवि ।
 अहे दाहिणओ वा वि दहे उत्तरओ वि य ॥३३॥
 भूयाणमेसमाघाओ हव्ववाहो न संसओ ।
 तं पईवपयावट्ठा संजया किंचि नारभे ॥३४॥
 तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 तेउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जे ॥३५॥
 अनिलस्सं समारंभं बुद्धा मन्नंति तारिसं ।
 सावज्जबहुलं चेयं नेयं ताईहिं सेवियं ॥३६॥
 तालियंटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा ।
 न ते वीइउमिच्छन्ति वीयावेऊण वा परं ॥३७॥
 जंपि वत्थं व पायं वा कंबलं पायंपुंछणं ।
 न ते वायमुईरंति जयं परिहरंति य ॥३८॥

१—० वियावट्ठा (अ) ।

२—अणिकाय ० (क, घ) ।

३—ना वि वीयावए पर (क) ।

४—वाउ ० (ख, घ) ।

- तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 १ वाउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥३९॥
- वणस्सइं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
 २ तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥४०॥
- वणस्सइं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
 ३ तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४१॥
- तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 ४ वणस्सइसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥४२॥
- तसकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
 ५ तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥४३॥
- तसकायं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
 ६ तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४४॥
- तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 ७ तसकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥४५॥
- जाइं चत्तारिऽभोज्जाइं इसिणाहारमाईणि ।
 ८ ताइं तु विवज्जंतो संजमं अणुपालए ॥४६॥
- पिंडं सेज्जं च वत्थं च चउत्थं पायमेव य ।
 ९ अकप्पियं न इच्छेज्जा पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥४७॥
- जे नियागं ममायंति कीयमुद्देसियाहडं ।
 १० वहं ते समणुजाणंति इइ वुत्तं महेसिणा ॥४८॥
- तम्हा असणपाणाइं कीयमुद्देसियाहडं ।
 ११ वज्जयंति ठियप्पाणो निग्गंथा धम्मजीविणो ॥४९॥

कसेसु - कंसपाएसु 'कुंडमोएसु'^१ वा पुणो ।
 भुंजंतो असणपाणाइं आयारा परिभस्सइ ॥५०॥
 सीओदगसमारंभे मत्तघोयणछ्छुणे ।
 जाइं छिन्नंति^२ भूयाइं दिट्ठो तत्थ असंजमो ॥५१॥
 पच्छाकम्मं पुरेकम्मं सिया तत्थ न कप्पई ।
 एयमट्ठं न भुंजंति निगंथा गिहिभायणे ॥५२॥
 आसंदीपलियंकेसु मंचमासालएसु वा ।
 अणायरियमज्जाणं आसइत्तु सइत्तु वा ॥५३॥
 'नासंदीपलियंकेसु न निसेज्जा न पीढए ।
 निगंथाऽपडिलेहाए बुद्धवुत्तमहिट्ठगा ॥५४॥'^३
 गंभीरविजया एए पाणा दुप्पडिलेहगा ।
 आसंदीपलियंका^४ य एयमट्ठं विवज्जिया ॥५५॥
 गोयरग्गपविट्ठस्स निसेज्जा जस्स कप्पई ।
 इमेरिसमणायारं आवज्जइ अबोहियं ॥५६॥
 विवत्ती बंभचेरस्स पाणाणं अवहे^५ वहो ।
 वणीमगपडिग्घाओ पडिकोहो अगारिणं ॥५७॥
 अगुत्तो बंभचेरस्स इत्थीओ यावि^६ संकणं ।
 कुसीलवड्ढणं ठाणं दूरओ परिवज्जए ॥५८॥

१—कुंडकोसेसु (आ. जा) ।

२—छिन्नति (क, ख, ग) : छिप्पति (ह) ।

३—'णसंदीपलियंकेसु' एस सिलोगो केसिचि णेव अत्थि (अ) ; जिनदास चूणि में भी यह श्लोक व्याख्यात नहीं है ।

४—^० पलियंको (क, ग) ; ^० पलियके (ख) ।

५—च वहै (क, ख, ग, घ, ह) ।

६—वावि (अ, क, ख, ग, ज) ।

तिण्हमन्नयरागस्स निसेज्जा जस्स कप्पई ।
 जराए अभिभूयस्स वाहियस्स तवस्सिणो ॥५९॥
 वाहिओ वा अरोगी वा सिणाणं जो उ पत्थए ।
 वोक्कंतो होइ आयारो जढो हवइ संजमो ॥६०॥
 संतिमे सुहुमा पाणा घसासु भिलुगासु य ।
 जे उ' भिक्खू सिणायंतो वियडेणुप्पिलावए ॥६१॥
 तम्हा ते न सिणायंति सीएण उसिणेण वा ।
 जावज्जीवं वयं घोरं असिणाणमहिट्ठमा ॥६२॥
 सिणाणं अदुवा कक्कं लोद्धं पउमगाणि य ।
 गायस्सुव्वट्टणद्वाए नायरंति कयाइ वि ॥६३॥
 नगिणस्स वा वि मुंडस्स दीहरोमनहंसिणो ।
 मेहुणा उवसंतस्स किं विभूसाए कारियं? ॥६४॥
 विभूसावत्तियं भिक्खू कम्मं वंधइ चिक्कणं ।
 संसारसायरे घोरे जेणं पडइ' दुरुत्तरे ॥६५॥
 विभूसावत्तियं चेयं वुद्धा मन्नति तारिसं ।
 सावज्जबहुलं चेयं नेयं ताईहिं सेवियं ॥६६॥
 खवेति अप्पाणममोहदंसिणो
 तवे रया संजम अज्जवे गुणे ।
 धुणंति पावाइं पुरेकडाइं
 नवाइ पावाइं न ते करेति ॥६७॥

१—य (ख) ।

२—भपइ (अ) ।

सत्तमज्जभयणं

वक्खसुद्धि

चउण्हं खलु भासाणं परिसंखाय पन्तवं ।
 दोण्हं तु विणयं^१ सिक्खे दो न भासेज्ज सव्वसो ॥ १ ॥
 जा य^२ सच्चा अवत्तव्वा सच्चामोसा य जा मुसा ।
 जा य बुद्धेहिंण्णाइन्ना न तं भासेज्ज पन्तवं ॥ २ ॥
 असच्चमोसं सच्चं च अणवज्जमकक्कसं ।
 समुप्पेहमसंदिद्धं गिरं भासेज्ज पन्तवं ॥ ३ ॥
 एयं च अट्टमन्नं वा जं तु नामेइ सासयं ।
 स भासं सच्चमोसं पि^३ तं पि धीरो विवज्जए ॥ ४ ॥
 वित्तहं पि तहामुत्ति जं गिरं भासए नरो ।
 तम्हा सो पुट्टो पावेणं किंपुण जो मुसं वए ? ॥ ५ ॥
 तम्हा गच्छामो वक्खामो अमुगं वाणे भविस्सई ।
 अहं वा णं करिस्सामि एसो वा णं करिस्सई ॥ ६ ॥
 एवमाई उ जा भासा एसकालम्मि संकिया ।
 संपयाईयमट्टे वा तं पि धीरो विवज्जए ॥ ७ ॥
 'अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागए ।
 जमट्टं तु न जाणेज्जा एवमेयं ति नो वए ॥ ८ ॥
 अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागए ।
 जत्थ संका भवे तं तु एवमेयं ति नो वए ॥ ९ ॥

१—विजय (अ) ; विनय (आ) ।

२—जा (अ) ।

३—च (ख) ।

अइयम्मि य कालम्मी पञ्चुप्यन्तमणागए ।
 निस्संक्रियं भवे जं तु 'एवमेयं ति निद्दिसे' ॥१०॥^१
 तहेव फल्सा भासा गुरुभूओवघाङ्गी ।
 सत्ता वि सा न वत्तव्वा जओ पावस्स आगमो ॥११॥
 तहेव काणं काणे ति पंडगं पंडगे ति वा ।
 वाहियं वा वि रोगि ति तेणं चोरे ति नो वए ॥१२॥
 एएणन्नेण वट्टेण^३ परो जेणुवहम्मई ।
 आयारभावदोसन्नु^४ न तं भासेज्ज पन्नवं ॥१३॥
 तहेव होले गोले ति साणे वा वमुले ति य ।
 दमए दुहए वा^५ वि नेवं^६ भासेज्ज पन्नवं ॥१४॥
 अज्जिए पज्जिएवा वि अम्मो माउस्सिय ति य ।
 पिउस्सिए भाङ्गेज्जति धूए नत्तुणिए ति य ॥१५॥
 हले हले ति अन्ने ति भट्टे सामिणि गोमिणि ।
 होले गोले वमुले ति इत्थियं नेवमालवे ॥१६॥

१—धोव धोवं तु निद्दिसे (हा) ।

२—श्लोक ८, ९ व १० के स्थान पर त्रुगिद्वय में निम्न श्लोक हैं :—

तहेवुणमात्तं अट्टं जं वण्ण मग्गु(ण) व धारियं ।

संक्रियं पडुपणं वा 'एवमेयं' ति गो वदे ॥ ८ ॥

तहेवुणगर्हं अट्टं जं वण्ण मु(न) व धारियं ।

नीसंक्रियं पडुपणं धाव धावाए णिद्दिसे ॥ ९ ॥ (अ) ।

तं तहेव उइयंनि कालंनिउणवधारियं ।

जं जणं संक्रियं वावि 'एवमेयं' ति नो वए ॥ ८ ॥

तहेवागणयं अट्टं जं हेइ उवधारियं ।

निस्संक्रियं पडुपण्णे 'एवमेयं' ति निद्दिसे ॥ ९ ॥ (ज) ।

३—अट्टेण (क. ङ. ग, घ) ।

४—^० दोसेन (अ) ।

५—वा (ह) ।

६—नेयं (ङ) ।

नामधिज्जेण णं बूया इत्थीगोत्तेण वा पुणो ।
जहारिहमभिगिज्झ आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥१७॥
अज्जए पज्जए वा वि बप्पो चुल्लपिउ त्ति य ।
माउला भाइणेज्ज त्ति पुत्ते नत्तुणिय त्ति य ॥१८॥
हे हो हले त्ति अन्ने त्ति भट्टा सामिय गोमिए ।
होल गोल वसुले त्ति पुरिसं नेवमालवे ॥१९॥
नामधिज्जेण णं बूया पुरिसगोत्तेण वा पुणो ।
जहारिहमभिगिज्झ आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥२०॥
पंचिदियाण पाणाणं एस इत्थी अयं पुमं ।
जाव णं न विजाणेज्जा ताव जाइ त्ति आलवे ॥२१॥
तहेव मणुस्सं पसुं पक्खिवा विसरीसिवं ।
थूले पमेइले वज्जे पाइमे त्ति य नो वए ॥२२॥
परिवुइडे त्ति णं बूया बूया उवचिए त्ति य ।
संजाए पीणिए वा वि महाकाए त्ति आलवे ॥२३॥
तहेव गाओ दुज्झाओ दम्मा गोरहग त्ति य ।
वाहिमा रहजोग त्ति नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२४॥
जुव गवे त्ति णं बूया धेणुं रसदय त्ति य ।
रहस्से महल्लए^१ वा वि वए संवहणे त्ति य ॥२५॥
तहेव गंतुमुज्जाणं पव्वयाणि वणाणि य ।
रुक्खा महल्ल पेहाए नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२६॥
अलं पासायखंभाणं तोरणणं गिहाण य ।
फलिहगलनावाणं अलं उदगदोणिणं ॥२७॥

पीढए चंगबेरे य नंगले मइयं सिया ।
 जंतलट्टी व नामो वा गंडिया^१ व अलं सिया ॥२८॥
 आसणं सयणं जाणं होज्जा वा 'किंचुवस्सए'^२ ।
 भूओवघाइणि भासं नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२९॥
 तहेव गंतुमुज्जाणं पव्वयाणि वणाणि य ।
 रुक्खा महल्ल पेहाए एव भासेज्ज पन्नवं ॥३०॥
 जाइमंता इमे रुक्खा दीहवट्टा महालया ।
 पयायसाला विडिमा^३ वए दरिसणि त्ति य ॥३१॥
 तहा फलाइं पक्काइं पायखज्जाइं नो वए ।
 वेलोइयाइं टालाइं वेहिमाइ त्ति नो वए ॥३२॥
 असंथडा इमे अंबा बहुनिवट्टिमा फला ।
 वएज्ज बहुसंभूया भूयरूव त्ति वा पुणो ॥३३॥
 तहेवोसहीओ पक्काओ नीलियाओ छवीइय ।
 लाइमा भज्जिमाओ त्ति पिहुखज्ज त्ति नो वए ॥३४॥
 रूढा^४ बहुसंभूया थिरा उस्सढा^५ वि य ।
 गन्भियाओ पसूयाओ ससाराओ^६ त्ति आलवे ॥३५॥
 तहेव संखडिं नच्चा 'किच्चं कज्जं'^७ त्ति नो वए ।
 तेणगं वा वि वज्जे त्ति सुत्तिथ त्ति य आवगा ॥३६॥

१—दडिया (क, ख, ग) ।

२—किं चुवस्सए (ख) ।

३—पडिपा (ख) ।

४—विरूढा (ज) ।

५—उस्सढा (अ), उस्सिया (ज) ।

६—ससाराओ (ह) ।

७—करणजति (घ) ।

संखडिं संखडिं ब्रूया 'पणियट्ट त्ति'^१ तेणमं ।
 बहुसमाणि तित्थाणि आवगाणं वियागरे ॥३७॥
 तहा - नईओ पुण्णाओ 'कायतिज्ज त्ति'^२ नो वए ।
 नावाहिं तारिमाओ त्ति पाणिपेज्ज त्ति नो वए ॥३८॥
 बहुवाहडा - अगाहा बहुसलिलुप्पिलोदगा ।
 बहुवित्थडोदगा यावि एवं भासेज्ज पन्तवं ॥३९॥^३
 तहेव सावज्जं जोगं परस्सट्ठाए निट्ठियं ।
 कीरमाणं ति वा नच्चा सावज्जं न लवे मुणी ॥४०॥
 सुकडे त्ति सुपक्के त्ति सुच्छिन्ने सुहडे मडे ।
 सुनिट्ठिए सुलट्ठे त्ति सावज्जं वज्जए मुणी ॥४१॥
 पयत्तपक्के त्ति व पक्कमालवे ।
 पयत्तच्छिन्न त्ति व छिन्नमालवे ।
 पयत्तलट्ठ त्ति व कम्महेउयं,
 'पहारगाढ'^४ त्ति व गाढमालवे ॥४२॥
 सव्वुक्कसं पररघं वा अउलं नत्थि एरिसं ।
 अवक्कियमवत्तव्व^५ अचियत्तं चेव नो वए ॥४३॥
 सव्वमेयं वइस्सामि सव्वमेयं त्ति नो वए ।
 अणुवीइ सव्वं सव्वत्थ एव भासेज्ज पन्तव ॥४४॥
 सुक्कीयं वा सुविक्कीय अकेज्जं केज्जमेव वा ।
 इमं गेण्ह इमं मुंच पणियं नो वियागरे ॥४५॥

१—पणियट्ट त्ति (ख, ग, घ) ।

२—काय-पेज्जत्ति (अ), काय-तैज्जत्ति (आ), काय-पेज्जत्ति (जा) ।

३—अगस्स्य चूर्णि में श्लोक ३६, ३७ के स्थान में ३८, ३९ और ३८, ३९ के स्थान में ३६, ३७ इस प्रकार दो श्लोकों का व्यत्यय है ।

४—गाढप्पहार (अ, ज, ह) ।

५—अचक्किय ° (ख, ग) ; अवक्किय ° (अ) ।

अप्पग्घे वा महग्घे वा कए वा विक्कए वि वा ।
 पणियट्ठे समुपन्ने अणवज्जं वियांगरे ॥४६॥
 तहेवासंजयं धीरो आस एहिं करेहि वा ।
 सय चिट्ठ वयाहि त्ति नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥४७॥
 बहवे इमे असाहु लोए वुच्चंति साहुणो ।
 न लवे असाहुं साहु त्ति साहुं साहु त्ति आलवे ॥४८॥
 नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं ।
 एवं गुणसमाउत्तं संजयं साहुमालवे ॥४९॥
 देवाणं मणुयाणं च तिरियाणं च वुग्गहे ।
 अमुयाणं जओ होउ मावा होउ त्ति नोवए ॥५०॥
 वाओ वुट्ठं व सीउण्हं खेमं धायंसिवं ति वा ।
 कया णु होज्ज एयाणि मावा होउ त्ति नोवए ॥५१॥
 तहेव मेहं व नहं व माणवं
 न देव देव त्ति गिरं वएज्जा ।
 समुच्छिए उन्नए वा पओए
 वएज्ज वा वुट्ठ बलाहए त्ति ॥५२॥
 अंतलिकखे त्ति णं बूया गुज्झाणुचरिय त्ति य ।
 रिद्धिमंतं नरं दिस्स रिद्धिमंतं ति आलवे ॥५३॥
 तहेव सावज्जणुभोयणी गिरा
 ओहारिणी जा य परोवघाइणी ।
 से कोह लोह भयसा^१ व माणवो^२
 न हासमाणो वि गिरं दएज्जा ॥५४॥

१—विग्गहे (ह) ।

२—भय-हास (ख, ज, ह) ।

३—माणवा (ख) ।

सवक्कसुद्धिं^१ समुपेहिया मुणी
 गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया ।
 मियं अदुट्ठं अणुवीइ भासए
 सयाण मज्जे लहई पसंसणं ॥५५॥
 भासाए दोसे य गुणे य जाणिया
 तीसे य दुट्ठे परिवज्जए^२ सया ।
 छसु संजए सामणिए सया जए
 वएज्ज बुद्धे हियमाणुलोमियं ॥५६॥
 परिकखभासी सुसमाहिइंदिए
 चउक्कसायावगए अणिस्सिए ।
 स निद्धणे धुन्नमलं पुरेकडं
 आराहए लोगमिणं तहा परं ॥५७॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—सव्वक्क ° (क, घ) ; सुव्वक्क ° (ख, ग) ।

२—विवज्जगो (अ) ।

अट्टमज्जयणं

आचारपणिही

अयारप्पणिहिं लद्धुं जहा कायव्व भिक्खुणा ।
 तं भे उदाहरिस्सामि आणुपुब्बि सुणेह मे ॥ १ ॥
 पुढवि दग अगणि मारुय तणरुक्ख सबीयगा ।
 तसा य पाणा जीव त्ति इइ वुत्तं महेसिणा ॥ २ ॥
 तेसिं अच्छणजोएण निच्चं होयव्वयं सिया ।
 मणसा कायवक्केण एवं भवइ संजए ॥ ३ ॥
 पुढविं भितिं सिलं लेलुं नेव भिदे न संलिहे ।
 तिविहेण करणजोएण संजए सुसमाहिए ॥ ४ ॥
 सुद्धपुढवीए^१ न निसिए ससरक्खम्मि य आसणे ।
 पमज्जित्तु निसीएज्जा जाइत्ता जस्स ओग्गहं ॥ ५ ॥
 सीओदगं न सेवेज्जा सिलावुट्ठं^२ हिमाणि य ।
 उसिणोदगं तत्तफासुयं पडिगाहेज्ज सजए ॥ ६ ॥
 उदउल्लं अप्पणो कायं नेव पुंछे न संलिहे ।
 समुप्पेह^३ तहाभूयं नो णं संघट्टए मुणी ॥ ७ ॥
 इंगालं अगणि अच्चिं अलायं व सजोइयं ।
 न उंजेज्जा न घट्टेज्जा नो णं निव्वावए मुणी ॥ ८ ॥
 तालियंटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा ।
 न वीएज्ज अप्पणो कायं बाहिरं वा वि पोग्गलं ॥ ९ ॥

१—० पुढवी (ख) ।

२—० वुट्ठिं (क, ख) ।

३—समुप्पेहे (अ, ज) ।

तणस्खलं^१ नं छिदेज्जा फलं मूलं व कस्सई ।
 आमगं विविहं वीयं मणसा वि न पत्थए ॥१०॥
 गहणेसु^२ न चिद्वेज्जा बीएसु हरिएसु वा ।
 उदगम्मि तहा निच्चं उत्तिगपणगेसु वा ॥११॥
 तसे पाणे न हिसेज्जा वाया अदुव कम्मणा ।
 उवरओ सव्वभूएसु पासेज्ज विविहं जगं ॥१२॥
 अट्ट सुहुमाइं पेहाए^३ 'जाइं जाणित्तु संजए'^४ ।
 दयाहिगारी भूएसु आस चिद्व सएहि वा ॥१३॥
 कयराइं अट्ट सुहुमाइं जाइं पुच्छेज्ज संजए ।
 इमाइं ताइं मेहावी आइक्खेज्ज वियक्खणो ॥१४॥
 सिणेहं पुप्फसुहुमं च पाणुत्तिगं तहेव य ।
 पणगं वीय हरियं च अंडसुहुमं च अट्टमं ॥१५॥
 एवमेयाणि जाणित्ता सव्वभावेण संजए ।
 अप्पमत्तो जए निच्चं सव्विदियसमाहिए ॥१६॥
 ध्रुवं च पडिलेहेज्जा जोगसा पायकंबलं ।
 सेज्जमुच्चारभूमि च संथारं अदुवासणं ॥१७॥
 उच्चारं पासवणं खेलं सिघाणजल्लियं ।
 फासुर्यं पडिलेहित्ता परिट्ठावेज्ज संजए ॥१८॥
 पविसिंत्तु परागारं पाणट्ठा भोयणस्स वा ।
 जयं चिद्वे मियं भासे ण^५ य रूवेसु मणं करे ॥१९॥

१—० रुक्खे (अ) ।

२—गहणमि (अ) ।

३—मेहावी (अ) ।

४—पडिलेहित्तु सजए (अ) ।

५—णो (अ) ।

बहं सुणेइ कण्णेहिं बहं अच्छीहिं पेच्छइ^१ ।
 न य दिट्ठं सुयं सव्वं भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥२०॥
 सुयं वा जइ वा दिट्ठं न लवेज्जोवघाइयं ।
 न य केणइ^२ उवाएणं गिहिजोगं समायरे ॥२१॥
 निट्ठाणं रसनिज्जूढं भद्दं पावणं ति वा ।
 पुट्ठो वा वि अपुट्ठो वा लाभालाभं न निद्दिसे ॥२२॥
 न य भोयणम्मि गिद्धो चरे उच्छं अयंपिरो ।
 अफासुर्यं न भुंजेज्जा कीयमुट्ठेसियाहडं ॥२३॥
 सन्निहिं च न कुव्वेज्जा अणुमायं पि संजए ।
 मुहाजीवी असंबद्धे ह्वेज्ज जगनिस्सिए ॥२४॥
 लूहवित्ती सुसंतुट्ठे अप्पिच्छे सुहरे सिया ।
 आसुरत्तं न गच्छेज्जा सोच्चाणं जिणसासणं ॥२५॥
 कण्णसोक्खेहिं सद्देहिं पेमं नाभिनिवेसए ।
 दारुणं कक्कसं फासं काएण अहियासए ॥२६॥
 खुहं पिवासं दुस्सेज्जं सीउण्हं अरई भयं ।
 अहियासे अव्वहिओ देहे^३ दुक्खं महाफलं ॥२७॥
 अत्थंगयम्मि आइच्चे पुरत्था य अणुग्गए ।
 आहारमइयं^४ सव्वं मणसा वि न पत्थए ॥२८॥
 अर्तित्तिणे अचवले अप्पभासी^५ मियासणे ।
 ह्वेज्ज उयरे दंते थोवं लद्धं न खिसए ॥२९॥

१—पासति (अ) ।

२—कोइ (ज) ; केण (ख, घ) ।

३—देह (क, ख, घ) ।

४—^० माइयं (क) ।

५—^० वादी (अ, ज) ।

न बाहिरं परिभवे अत्ताणं न समुक्खसे ।
 सुयलाभे न मज्जेज्जा जच्चा तवसिबुद्धिए ॥३०॥
 से जाणमजाणं वा कट्टु आहम्मियं पयं ।
 संवरे खिप्पमप्पाणं वीयं तं न समायरे ॥३१॥
 अणायारं परक्कम्म नेव गूहे न निण्हवे ।
 सुई सया वियडभावे असंसत्ते जिइंदिए ॥३२॥
 अमोहं वयणं कुज्जा आयरियस्स महप्पणो ।
 तं परिगिज्झ वायाए कम्मुणा उववायए ॥३३॥
 अधुवं जीवियं नच्चा सिद्धिमगं वियाणिया ।
 विणियट्टेज्ज^१ भोगेसु आउं परिमियमप्पणो ॥३४॥
 [बलं थामं च पेहाए सद्धामारोगमप्पणो ।
 खेतं कालं च विन्नाय तहप्पाणं निजुंजए ॥]^२
 जरा जाव न पीलेइ वाही जाव न वड्ढई ।
 जाविदिया न हायंति ताव धम्मं समायरे ॥३५॥
 कोहं माणं च मायं च लोभं च पापवड्ढणं ।
 वसे चत्तारि दोसे उ इच्छंतो हियमप्पणो ॥३६॥
 कोहो पीइं पणासेइ मांणो विणयनासणो ।
 माया मित्ताणि नासेइ लोहो सव्वविणासणो ॥३७॥
 उवसमेण हणे कोहं माणं मद्दवया जिणे ।
 मायं चज्जवभावेण लोभं संतोसओ^३ जिणे ॥३८॥

१—विणिव्विज्जेज्ज (अ) ।

२—यह श्लोक (क, ख, ग, घ) प्रतियों में है, किन्तु चूणि व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

३—सत्तुट्ठिए (ज) ।

कोहो य माणो य अणिग्गीयां

माया य लोभो य पवद्धमाणा ।

चत्तारि-ए-ए कसिणा कसाया

सिचंति मूलाइं पुणब्भवस्स ॥३९॥

राइणिएसु विणयं पउंजे

धुवसीलयं सययं न हावएज्जा ।

कुम्मो व्व अलीणपलीणगुत्तो

परक्कमेज्जा तवसंजमम्मि ॥४०॥

निदं च न बहुमन्नेज्जा संपहासं^१ विवज्जए ।

मिहोकहाहिं न रमे संज्जायम्मि^२ रओ सया ॥४१॥

जोगं च समणधम्मम्मि^३ जुजे अणलसो^४ धुवं ।

जुत्तो य समणधम्मम्मि अट्टं लहइ अणुत्तरं ॥४२॥

इहलोगपारत्तहियं जेण गच्छइ सोग्गइ ।

बहुस्सुयं पज्जुवासेज्जा पुच्छेज्जत्थ विणिच्छयं ॥४३॥

हत्थं पायं च कायं च पणिहाय जिइंदिए ।

अलीणगुत्तो निसिए सगासे गुरुणो मुणी ॥४४॥

न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ ।

न य ऊरुं समासेज्जा चिट्ठेज्जा गुरुणंतिए ॥४५॥

अपुच्छिओ न भासेज्जा भासमाणस्स अंतरा ।

पिट्ठिमंसं न खाएज्जा मायामोसं विवज्जए ॥४६॥

अप्पत्तियं जेण सिया आसुकुप्पेज्ज वा परो ।

सव्वसो त न भासेज्जा भासं अहियगामिणिं^४ ॥४७॥

१—सप्पहास (क, ख, ग, घ, ह) ।

२—अज्जायणम्मि (ज) ।

३—^० धम्मस्स (अ) ।

४—^० गामिणी (अ) ।

दिद्वं मियं असंदिद्वं पडिपुन्नं वियंजियं ।
 अयंपिरमणुव्विग्गं भासं निसिर अत्तवं ॥४८॥
 आयारपन्नतिधरं दिद्विवायमहिज्जगं ।
 वइक्खलियं नच्चा न तं उवहसे मुणो ॥४९॥
 नक्खत्तं सुमिणं जोगं निमित्तं मंत भेसजं ।
 गिहिणो ते न आइक्खे भूयाहिगरणं पयं ॥५०॥
 अन्नद्वं पगडं लयणं भएज्ज सयणासणं ।
 उच्चारभूमिसंपन्नं इत्थीपसुविवज्जियं ॥५१॥
 विवित्ता य भवे सेज्जा नारीणं न लवे कहं ।
 गिहिसंथवं न कुज्जा कुज्जा साहूहि संथवं ॥५२॥
 जहा कुक्कुडपोयस्स निच्चं कुललो भयं ।
 एवं खु बंभयारिस्स इत्थीविग्गहओ भयं ॥५३॥
 चित्तभित्तिं न निज्झाए नारिं वा सुअलंकियं ।
 भक्खरं पिव दद्वुणं दिद्वि पडिसमाहरे ॥५४॥
 हत्थपायपडिच्छिन्नं कण्णनासविगप्पियं ।
 अवि वाससइं नारिं 'बंभयारी विवज्जए'^१ ॥५५॥
 विभूसा इत्थिसंसग्गी पणीयरसभोयणं^२ ।
 नरस्सत्तगवेसिस्स विसं तालउडं जहा ॥५६॥
 अंगपच्चंगसंठाणं चारुल्लवियपेहियं^३ ।
 इत्थीणं तं न निज्झाए कामरागविवड्ढणं ॥५७॥
 विसएसु मणुन्नेसु पेमं नाभिनिवेसए ।
 अणिच्चं तेसिं विन्नाय परिणामंपोगलाणउ^४ ॥५८॥

१—दूरओ परिवज्जए (ज) ।

२—पणीय रसं (क, ख, ग) ।

३—चारुल्लविय^० (अ, ज) ।

४—य (क, ख, ग, घ) ।

पोग्गलाण परीणामं तेसिं नच्चा जहा तथा ।
 विणीयतण्हो विहरे सीईभूएण अप्पणा ॥५९॥
 जाए सद्धाए निक्खंतो परियायट्ठाणमुत्तमं - ।
 तमेव अणुपालेज्जा गुणे आयरियसम्मए ॥६०॥
 तवं चिमं संजमजोगयं^१ च
 सज्झायजोगं च सया अहिट्टए ।
 सूरे व सेणाए समत्तमाउहे
 अलमप्पणो होइ अलं परेसिं ॥६१॥
 सज्झायसज्झाणरयस्स ताइणो
 अपावभावस्स तवे रयस्स ।
 विसुज्झई जं सि मलं^२ पुरेकडं
 समीरियं रूप्पमलं व जोइणा ॥६२॥
 से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए
 सुएण जुत्ते अममे अक्किचणे ।
 विरायई^३ कम्मघणम्मिं^४ अवगाए
 कसिणब्भपुडावगमे व चंदिमा ॥६३॥
 —त्ति बेमि ॥

२—० जोगं (अ) ।

३—रयं (अ) ।

१—विसुज्झई (अ), विमुच्चइ (ज) ।

२—पुब्बकडेण कम्मणा (अ, ज) ।

नवमं अर्जुन्यणं
विणयसमाही (पढमो उद्देशो)

थंभा व कोहा व मयप्पमाया
गुरुस्सगासे विणयं न सिक्ख^१ ।
सो चेव उ तस्स अभूइभावो
फलं व कीयस्से वहाय होइ ॥ १ ॥
जे यावि मंदि त्ति गुरुं विइत्ता
डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा ।
हीलंति मिच्छं पडिवेज्जमाणा
करंति आसायण ते गुरुणं ॥ २ ॥
पगईए मंदा वि भवेति एणे
डहरा वि य जे सुयबुद्धोववेया ।
आयारमंता गुण सुट्ठिअप्पा
जे हीलिया सिहिरिव भास कुज्जा ॥ ३ ॥
जे यावि नागं डहरं ति नच्चा
आसायणं से अहियाय होइ ।
एवायरियं पि हु हीलयंतो
नियच्छई जाइपहं खु मंदा ॥ ४ ॥
आसीविसो यावि^२ परं सुरुद्धो
किं जीवनासाओ^३ परं नुकुज्जा ।
आयरियपाया पुण अप्पसन्ना
अबोहिआसायणनत्थि मोक्खो ॥ ५ ॥

१—चिद्धे (अ, ज, हा) ।

२—यावि (क, ख, ग, ज) ।

३—जीवि^० (घ) ; जीवित^० (अ) ।

जो पावगं जलियमवकमेज्जा
 आसीविसं वा वि हु. कोवएज्जा ।
 जो वा विसं खायइ जीवियट्टी
 एसोवमासायणया गुरुणं ॥ ६ ॥
 सिया हु से पावय तो डहेज्जा
 आसीविसो वा कुविओ न भक्खे ।
 सिया विसं हालहलं न मारे
 न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ७ ॥
 जो पव्वयं सिरसा भेतुमिच्छे
 सुत्तं व सीहं पडिबोहएज्जा ।
 जो वा दए सत्तिअग्गे पहारं
 एसोवमासायणया गुरुणं ॥ ८ ॥
 सिया हु सीसेण गिरि पि भिदे
 सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे ।
 सिया न भिदेज्ज व सत्तिअग्गं
 न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥
 आयरियपाया पुणं अप्पसन्ना
 अबोहिआसायण नत्थि मोक्खो ।
 तम्हा अणाबाह सुहाभिकंखी
 गुरुप्पसायाभिमुहो रमेज्जा ॥ १० ॥
 जहाहियग्गी जलणं नमंसे
 नाणाहुईमंतपयाभिसित्तं ।
 एवायरियं उवच्चिट्टएज्जा
 अणंतनाणोवगओ वि संतो ॥ ११ ॥

जस्संतिए धम्मपयाइ सिक्खे
 तस्संतिए वेणइयं पउंजे ।
 सक्कारए सिरसा पंजलीओ
 कायगिरा भो मणसा य^१ निच्चं ॥१२॥

लज्जा दया संजम बंभच्चेरं
 कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं ।
 जे मे गुरू सययमणुसासयंति
 ते हं गुरू सययं पूययामि ॥१३॥

जहा निसंते तवणच्चिमाली
 पभासई केवलभारहं तु ।
 एवायरिओ सुयसीलबुद्धिए
 विरायई सुरमज्जे व इंदो ॥१४॥

जहा ससी कोमुइजोगजुत्तो
 नक्खत्ततारागणपरिवुडप्पा ।
 खे सोहई विमले अब्भमुक्के
 एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्जे ॥१५॥

महागरा आयरिया महेसी
 'समाहिजोगे सुयसीलबुद्धिए'^२ ।
 संपाविउकामे अणुत्तराई
 आराहए^३ तोसए धम्मकामी ॥१६॥

१—वि (ख) ।

२—समाहिजोगस्सुय^० (हा) ।

३—उवद्धिओ (अ) ।

सोच्चाण मेहावौ सुभासियाडं . . .
 सुस्सूसए आयरियप्पमत्तो ।
 आराहइत्ताण गुणे अणेगे
 से पावई सिद्धिमणुत्तरं ॥१७॥
 —त्ति वेमि ॥

*

नवम अङ्कयण

विणयसमाही (बीओ उद्देशो)

मूलाओ खधप्पभवो दुमस्स
 खधाओ पच्छा समुवेति साहा ।
 साहप्पसाहा विरूहति पत्ता
 ताओ से पुप्फं च फलं रसो य ॥ १ ॥
 एवं धम्मस्स विणओ मूलं परमो से मोकखो ।
 जेण कित्ति सुयं सिग्घ निस्सेस चाभिगच्छई^१ ॥ २ ॥
 जे य चंडे मिए थद्धे दुव्वाई नियडी सढे ।
 वुज्झइ से अविणीयप्पा कट्टं सोयगयं जहा ॥ ३ ॥
 विणयं पि जो उवाएणं चोइओ कुप्पई नरो ।
 दिव्वं सो सिरिमेज्जंति दंडेण पडिसेहए ॥ ४ ॥
 तहेव अविणीयप्पा उववज्झा हया गया ।
 दीसंति दुहमेहंता आभिओगमुवट्टिया ॥ ५ ॥
 तहेव सुविणीयप्पा उववज्झा हया गया ।
 दीसति सुहमेहता इड्ढि^२ पत्ता महायसा ॥ ६ ॥
 तहेव अविणीयप्पा लोगंसि नरनारिओ ।
 दीसति दुहमेहंता छाया विगलितेदिया^३ ॥ ७ ॥
 दंडसत्थपरिजुण्णा असव्भ वयणेहि य ।
 कल्लुणा विवन्नछंदा खुप्पिवासाए^४ परिगया ॥ ८ ॥

१—चाधिगच्छई (अ, ह) ।

२—इड्ढि (अ) ।

३—ते विगलितिया (क, ख, ग, घ) , विगलितिया (अ) ।

४—खु प्पिवासा (घ) , खु प्पिवासाहि (क, ग) , खु प्पिवासा य (ख) ।

तहेव सुविणीयप्पा लोगंसि नरनारिओ ।
 दीसंति सुहमेहंता इडिड पत्ता महायसा ॥ ९ ॥
 तहेव अविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा ।
 दीसंति दुहमेहंता आभियोगमुवट्ठिया ॥१०॥
 तहेव सुविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा ।
 दीसंति सुहमेहंता इडिड पत्ता महायसा ॥११॥
 जे आयरियउवज्झायाणं सुस्सूसावयणंकरा ।
 तेसि सिक्खा पवड्ढंति जलसित्ता इव^१ पायवा ॥१२॥
 अप्पणट्ठा परट्ठा वा सिप्पा णेउणियाणि य ।
 गिहिणो उवभोगट्ठा इह्लोग्गस्स कारणा ॥१३॥
 जेण वंधं वहं घोरं परियावं च दारुणं ।
 सिक्खमाणा नियच्छंति जुत्ता ते ललिइंदिया ॥१४॥
 ते वि.तं गुरुं पूयंति तस्स सिप्पस्स कारणा ।
 सक्कारेति^२ नमंसंति^३ तुट्ठा निद्देसवत्तिणो ॥१५॥
 किं पुण जे सुयग्गाही 'अणंतहियकामए'^४ ।
 आयरिया जं वए भिवखू तरहा तं नाइवत्तए ॥१६॥
 नीयं सेज्जं गइं ठाणं नीयं च आसणाणि य ।
 नीयं च पाए वंदेज्जा नीयं कुज्जा य अंजलिं ॥१७॥
 संघट्ठइत्ता काएणं तथा उवहिणामवि ।
 खमेह अवराहं मे वएज्ज न पुणो त्ति य ॥१८॥
 दुग्गओ वा पओएणं चोइओ वहई रहं ।
 एवं दुबुद्धि किच्चाणं^५ वुत्तो वुत्तो पकुव्वई ॥१९॥

१-व (अ) ।

२-समणंति (अ) ।

३-^०सुहकामए (अ) ।

४-किच्चाइ (अ, ज, हा) ।

[आलवंते लवंते वा न निसेज्जाए पडिस्सुणे ।
 मोत्तूणं आसणं धीरो सुस्सुसाए पडिस्सुणे ॥]^१
 कालं छंदोवयारं च पडिलेहित्ताण हेउहिं ।
 तेण तेण उवाएण तं तं संपडिवायए ॥२०॥
 विवत्ती अविणीयस्स संपत्ती विणियस्स म् ।
 जस्सेयं दुहओ नायं सिक्खं से अभिगच्छइ^२ ॥२१॥
 जे यावि चंडे मइइड्ढिगारवे
 पिसुणे नरे साहस हीणपेसणे ।
 अदिदुधम्मे विणए अकोविए
 असंविभागी नहु तस्स मोक्खो ॥२२॥
 निद्देसवत्ती पुण जे गुरूणं
 सुयत्थधम्मा विणयम्मि कोविया ।
 तरित्तु ते ओहमिणं दुरुत्तरं
 खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गय ॥२३॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—यह श्लोक (क, ख, ग, घ) प्रतियों में है, किन्तु चूणि व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

२—अधिगच्छइ (हा) ।

नवमं अज्जमयणं
विणयसमाही (तइओ उहेसो)

आयरियं^१ अग्गिमिवाहियग्गी
सुस्सूसमाणो पडिजागरेज्जा ।
आलोइयं^२ इंगियमेव तच्चा
जो छन्दमाराहयइ स पुज्जे ॥ १ ॥

आयारमट्ठा विणयं पउंजे
सुस्सूसमाणो परिगिज्ज वक्कं ।
जहोवड्डं अभिकंखमाणो^३
'गुरुं तु नत्ताययई'^४ स पुज्जे ॥ २ ॥

राइणिएसु विणयं पउंजे
डहरा वि य जे परियायजेट्ठा ।
नियत्तणे वट्टइ सच्चवाई
ओवायवं वक्करे स पुज्जे ॥ ३ ॥

अग्गायउंछं चरई विसुद्धं
जवणट्टया समुयाणं च निच्चं ।
अलद्धयं नो परिदेवएज्जा
लद्धं न विकत्थयई' स पुज्जे ॥ ४ ॥

१—आयरियग्गि (अ, क, ख, ग) ।

२—आलोइय (क, ख) ।

३—अविकंखमाणो (अ, ज) ।

४—जो छंदमाराहयइ (अ, ज) ।

५—विकंथई (ग) : विकंथयई (क, ख, घ) ।

संधारसेज्जासणभत्तपाणे
 अप्पिच्छ्या अइलाभे वि संते ।
 जो एवमप्पाणभित्तोसएज्जा
 संतोसपाहन्न ए स पुज्जो ॥ ५ ॥
 सक्का सहेउं आसाए^१ कंटया
 अओमया उच्छहया नरेणं ।
 अणासए जो उ सहेज्ज कंटए
 वईमए कणसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥
 मुहुत्तदुक्खा हु^२ हवंति कंटया
 अओमया ते वि तओ सुउद्धरा^३ ।
 वायादुस्ताणि दुरुद्धराणि
 वेराणुबंधीणि महब्भयाणि ॥ ७ ॥
 समावयंता वयणाभिवाया
 कणंगया दुम्मणियं जणति ।
 धम्मो त्ति किच्चा परमगसूरे
 जिइंदिए जो सहई स पुज्जो ॥ ८ ॥
 अवण्णवायं च परम्महस्स
 पच्चक्खओ पडिणीयं च भासं ।
 ओहारिणि अप्पियकारिणि च
 भासं नं भासेज्ज-सया सं पुज्जो ॥ ९ ॥

१—आसाय (ख) ।

२—उ (क, ख, ग, घ) ।

३—सुउद्धरा (क) ।

अलोलुए अक्कुहए अमाई
 अपिसुणे यावि अदीणवित्ती ।
 नो भावए नो वि य भावियप्पा
 अकोउह्वले य सया स पुज्जो ॥१०॥

गुणेहि साहू अगुणेहिऽसाहू
 गिण्हाहि साहूगुण मुंचऽसाहू ।
 वियाणिया अप्पगमप्पएणं
 जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो ॥११॥

तहेव डहरं व महल्लां वा
 इत्थीपुमं पव्वइयं गिहिं वा ।
 नो हीलए नो वि य खिसएज्जा
 थंभं च कोहं च चए स पुज्जो ॥१२॥

जे माणिया सययं माणयंति
 जत्तेण कन्नं व निवेसयंति ।
 ते भाणए माणरिहे तवस्सी
 जिइंदिए सच्चरए स पुज्जो ॥१३॥

तेसिं गुरूणं गुणसागराणं
 सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं ।
 चरे मुणी पंचरए^१ तिगुत्तो
 चउक्कसोयावगए स पुज्जो ॥१४॥

गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी
जिणमयनिउणे^१ अभिगमकुसले ।
धुणिय रयमलं पुरेकडं
भासुरमउलं गइं गय^२ ॥१५॥
—त्ति वेमि ॥

*

१—जिणवयण^० (अ) ।

२—वइ (ज, ह) ।

नवमं अज्भयणं

विणयसमाही (चउत्थो उद्देसो)

सुयं मे आजसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठणा पन्नत्ता ॥ सू० १ ॥

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठणा पन्नत्ता ? ॥ सू० २ ॥

इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठणा पन्नत्ता, तंजहा—(१) विणयसमाही (२) सुयसमाही (३) तवसमाही (४) आयारसमाही ।

विणए सुए अ तवे आयारे निच्चं पंडिया ।

अभिरामयंति अप्पाणं जे भवंति जिइंदिया ॥ १ ॥

॥ सू० ३ ॥

चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइ, तंजहा—(१) अणु-सासिज्जंतो सुस्सूसइ (२) सम्मं संपडिवज्जइ (३) वेयमाराहयइ^१ (४) न य भवइ अत्तसंपग्गहिए । चउत्थं पयं भवइ ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

पेहेइ^२

हियाणुसासणं

सुस्सूसइ तं च पुणो अहिट्ठए ।

न य माणमएण मज्जइ

विणयसमाही

आययट्ठिए ॥ २ ॥

॥ सू० ४ ॥

१—वेयमाराहइ (ख, ज) ।

२—वीहेति (अ) ।

चउव्विहा खलु सुयसमाही भवइ, तंजहा—(१) सुयं मे भविस्सइ त्ति अज्ज्हाइयव्वं भवइ (२) एगगचित्तो भविस्सामि त्ति अज्ज्हाइयव्व भवइ (३) अप्पाणं ठावइस्सामि त्ति अज्ज्हाइयव्वं भवइ (४) ठिओ परं ठावइस्सामि त्ति अज्ज्हाइयव्वं भवइ । चउत्थं पयं भवइ ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

नाणमेगगचित्तो य' ठिओ ठावयई परं ।

सुयाणि य अहिज्जित्ता रओ सुयसमाहिए ॥ ३ ॥

॥ सू० ५ ॥

चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ, तंजहा—(१) नो इहलोगट्टयाए तवमहिट्ठेज्जा (२) नो परलोगट्टयाए तवमहिट्ठेज्जा (३) नो कित्तिवण्णसट्ठसिलोगट्टयाए तवमहिट्ठेज्जा (४) नन्नत्थ निज्जरट्टयाए तवमहिट्ठेज्जा । चउत्थं पयं भवइ ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

विविहगुणतवोरए य निच्चं

भवइ निरासए निज्जरट्टिए ।

तवसा धुणइ पुराणपावगं

जुत्तो सया तवसमाहिए ॥ ४ ॥

॥ सू० ६ ॥

चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ, तंजहा—(१) नो इहलोगट्टयाए आयारमहिट्ठेज्जा (२) नो परलोगट्टयाए आयारमहिट्ठेज्जा (३) नो कित्तिवण्णसट्ठसिलोगट्टयाए आयारमहिट्ठेज्जा (४) नन्नत्थ आरहतेहि हेऊहि आयारमहिट्ठेज्जा । चउत्थं पयं भवइ ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

जिणवयणरए^१

अत्तिणिणे

पड्डिपुण्णाययमाययट्टिए ।

आयारसमाहिसंवुडे

भवइ य दत्ते भावसंधए ॥ ५ ॥

॥ सू० ७ ॥

अभिगम^२ चउरो समाहिओ^३

सुविसुद्धो सुसमाहियप्पओ ।

विजलहियसुहावहं

पुणो

कुव्वइ सो पयखेममप्पणो ॥ ६ ॥

जाइमरणाओ

मुच्चई

इत्थंथं^४ च चयइ^५ सव्वसो ।

सिद्धे वा

भवइ सासए

देवे वा अप्परए महिड्डिए ॥ ७ ॥

—त्ति वेमि ॥

*

१—०मए (अ) ।

२—अभिगत (अ) ।

३—सपाहीओ (ख) ।

४—इत्थत्तं (अ) ।

५—जहाइ (अ. ज) ।

दसमज्जयणं
स-भिक्षु

निकखम्ममाणाए^१ वुद्धवयणे^२
 निच्चं चित्तसमाहिओ हवेज्जा ।
 इत्थीण वसं न यावि गच्छे
 वंतं नो पडियायई जे स भिक्षू ॥१॥
 पुढवि^३ न खणे न खणावए
 सीओदगं न पिए^४ न पियावए^५ ।
 अगणिसत्थं जहा सुनिसियं
 तं न जले न जलावए जे स भिक्षू ॥२॥
 अनिलेण न 'वीए न वीयावए'^६
 हरियाणि न 'छिदे न छिदावए'^७ ।
 वीयाणि सया विवज्जयंतो
 सच्चित्तं नाहारए जे स भिक्षू ॥३॥
 वहणं तसथावराण होइ
 पुढवितणकट्टनिस्सियाणं ।
 तम्हा उट्टेसियं न भुंजे
 नो 'विपए'^८ न पयावए जे स भिक्षू ॥४॥

१—^० माणाइय (क, ख, ग) , ^० मादाय (जा) ।

२—^० वयण (जा) ।

३—पुढवि (अ) ।

४—पीए (ख) ।

५—पीयावए (ख) ।

६—वीयावए न वीए (अ) ।

७—छिदावए न छिदे (अ) ।

८—न पए (अ) ।

रोइय नायपुत्तवयणे

अत्तसमे मन्नेज्ज छप्पि काए ।

पंच य फासे मह्व्वयाइं

पंचासवसंवरे^१ जे स भिक्खू ॥५॥

चत्तारि वमे सया कसाए

धुवजोगी य^२ हवेज्ज बुद्धवयणे ।

अहणे निज्जायरुवरयए^३

गिहिजोगं परिवज्जए जे स भिक्खू ॥६॥

सम्मद्दिट्ठी सया अमूढे

अत्थि हु नाणे तवे संजमे य ।

तवसा धुणइ पुराणपावगं

मणवयकायसुसंबुडे जे स भिक्खू ॥७॥

तहेव असणं पाणगं वा

विविहं खाइमसाइमं लभित्ता ।

होही अट्ठो सुए परे वा

तं न निहेन निहावए जे स भिक्खू ॥८॥

तहेव असणं पाणगं वा

विविहं खाइमसाइम लभित्ता ।

छंदिय साहम्मियाण भुंजे

भोच्चा सज्जायरए य^४ जे स भिक्खू ॥९॥

१—^०सबुडे (घ, ह) ।

२—[×](ज, ह) ।

३—^०रए (ख, ग) ।

४—[×](क, ख, ग) ।

न य वृग्गहियं^१ कहं कहेज्जा
 न य^२ कुप्पे निहुइंदिए पसंते ।
 संजमधुवजोगजुत्ते
 उवसंते अविहेडए^३ जे स भिक्खू ॥१०॥

जो सहइ हु^४ गामकंटए
 अक्कोसपहारतज्जणाओ य ।
 भयभेरवसद्दसंपहासे^५
 समसुहुदुक्खसहे य जे स भिक्खू ॥११॥

पडिमं पडिवज्जिया मसाणे
 नो भायए भयभेरवाइं दिस्स^६ ।
 विविहगुणतवोरए य निच्चं
 न सरीरं चाभिकंखई जे स भिक्खू ॥१२॥

असइं वोसट्टत्तदेहे
 अक्कुट्टे व हए व लूसिए वा ।
 पुढवि समे मुणी हवेज्जा
 अनियाणे अकोउहल्ले^७ य जे स भिक्खू ॥१३॥

१—विग्गहिय (अ, ह) ।

२—हु (क, ख, ग) ।

३—अवहेडए (क, ग) ।

४—इइ (ख) ।

५—^० सप्पहासे (क, ख, ग, घ, ज, ह) ।

६—दिअस्स (ख) ।

७—अक्कुत्तहलि (अ) ।

अभिभूय काएण परीसहाइं
 समुद्धरे जाइपहाओ^१ अप्पयं ।
 विइत्तु जाईमरणं महब्भयं
 तवे^२ रए सामणिए जे स भिक्खू ॥१४॥
 हत्थसंजए पायसंजए
 वायसंजए संजइंदिए ।
 अज्झप्परए सुसमाहियप्पा
 सुत्तत्थं च वियाणई जे स भिक्खू ॥१५॥
 उवहिम्मि अमुच्छिए अगिद्धे^३
 अन्नायउंछं पुलनिप्पुलाए ।
 कयविक्कयसन्निहिओ^४ विरए
 सब्बसंगावगएय जे स भिक्खू ॥१६॥
 अलोल भिक्खू न रसेसु गिद्धे
 उंछं चरे जीविएनाभिकंखे^५ ।
 इड्ढि च सक्कारण पूयणं च
 चए^६ ठियप्पा अणिहे^७ जे स भिक्खू ॥१७॥
 न परं वएज्जासि अयं कुसीले
 जेणउन्नो कुप्पेज्ज न तं वएज्जा ।
 जाणिय पत्तेयं पुण्णपावं
 अत्ताणं न समुक्खसे जे स भिक्खू ॥१८॥

१—०वहाओ (अ. ज) ।

२—भवे (अ) ।

३—अगट्टिए (अ) ।

४—०सन्निहोहिं (अ) ।

५—०नावकखे (अ) : ०नाभिकखी (क, ख, ग, घ) ।

६—जहे (अ, ज) ।

७—अणिहिय (क) ; अणिहिए (ग) ।

न जाइमत्ते न य ख्वमत्ते
 न लाभमत्ते न नुएणमत्ते ।
 मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता^१
 धम्मज्झाणरए जे^२ स भिक्खू ॥१९॥
 पवेयए अज्जपयं^३ महामुणी
 धम्मे ठिओ ठावयई परं पि ।
 निक्खम्मं वज्जेज्ज कुसीललिं
 न यावि हस्सकुहए^४ जे स भिक्खू ॥२०॥
 तं देहवासं अमुडं असासयं
 सया चए^५ निच्च हियट्ठियप्पा ।
 छिंदित्तु जाईमरणस्स वंघणं
 उवेड भिक्खू अपुणागमं गइं ॥२१॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१—विवज्जयतो (क. ख) ; विणिं च धीतो (ज) ।
 २—^० रए य जे (क) ।
 ३—अज्जवय (ल) ।
 ४—हासं^० (क. ख, ग, घ) ।
 ५—जहे (ज) ।

रइवक्का (पढमा चूलिया)

इह खलु भो ! पव्वइएणं, उप्पन्नदुक्खेणं, संजमे अरइसमावन्न-
चित्तेणं, ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएणं चेव, ह्यरस्सिगयंकुस-
पोयपडागाभूयाइं^१ इमाइं अट्टारस ठाणाइं सम्मं संपडिलेहियव्वाइं
भवन्ति । तंजहा—

- १—हं भो ! दुस्समाए दुप्पजीवी^२ ।
- २—लहुस्सगा इत्तरिया गिहीणं कामभोगा ।
- ३—भुज्जो य साइबहुला^३ मणुस्सा ।
- ४—इमे य मे दुक्खे न चिरकालो वट्टाई भविस्सइ ।
- ५—ओमजणपुरक्कारे ।
- ६—वंतस्स य पडियाइयणं ।
- ७—अहरगइवासोवसंपया ।
- ८—दुल्लभे खलु भो ! गिहीणं धम्ममे गिहिवासमज्जे वसंताणं ।
- ९—आयंके से वहाय होइ ।
- १०—संकप्पे से वहाय होइ ।
- ११—सोवक्केसे गिहवासे ॥ निरुवक्केसे परियाए ॥
- १२—बंधे गिहवासे ॥ मोक्खे परियाए ॥
- १३—सावज्जे गिहवासे ॥ अणवज्जे परियाए ॥
- १४—बहुसाहारणा गिहीणं कामभोगा ॥
- १५—पत्तेयं पुण्णपाचं ॥
- १६—अणिच्चे खलु^४ भो ! मणुयाण जीविए कुसग्गजलबिदुचंचले ॥

१—^० पडागारो (अ) ।

२—दुप्पजीवं (अ) ।

३—साय^० (क, दी, ग, घ)

४—x (आ, जा) ।

१७-बहुं च खलु^१ पावं कम्मं पगडं ॥

१८-पावाणं च खलु भो । कटाणं कम्माणं पुञ्चि दुग्गिग्गाणं
दुप्पडिकंताणं^२ वेयडत्ता मोक्खो, नन्थि अवेयडत्ता, तवसा
वा भोसडत्ता अट्टारसमं पर्यं भवड ॥ सू० १ ॥

भवड य इत्थ सिलोगो—

जया य चयई^३ धम्मं अणज्जो भांगकाग्गा ।

से तत्थ मुच्छिण्णं वाले आयडं नाववुज्जकड ॥ १ ॥

जया ओहाविओ होड डदो वा पटिओ छमं ।

सव्वधम्म परिभट्टो स पच्छा पग्गित्पड ॥ २ ॥

जया य वंदिमो होड पच्छा होड अवदिमो ।

देवया व चुया ठाणा स पच्छा पग्गित्पड ॥ ३ ॥

जया य पूडमो होड पच्छा होड अपूडमो ।

राया व रज्जपडभट्टो स पच्छा पग्गित्पड ॥ ४ ॥

जया य माणिमो होड पच्छा होड अमाणिमो ।

सेट्ठि व्व कट्टवे छूडो स पच्छा पग्गित्पड ॥ ५ ॥

जया य थेरओ होड समडवकंनजोव्वणो ।

मच्छो व्व गलं गिलित्ता स पच्छा पग्गित्पड ॥ ६ ॥

‘जया य कुकुडंबस्सा कुतत्तीहिं विहम्मड ।

हत्थी व वंधणं वट्टो स पच्छा पग्गित्पड ॥ ७ ॥’

१-खलु भो (ख. घ.) ।

२-दुप्परसखत्ताण (ह), दुप्परिकत्ताण (ल) ।

३-उरु (ल. ल.) ।

४-एहं इत्थं एतत्तल्लिखितं पतितो मे हे तथा टीका मे एतत्तल्लिखितं हे विष्णु पुत्रिण्ड मे
व्याख्यं त मही हे ।

पुत्तदारपरिकिण्णो मोहसंताणसंतओ ।
 पंकोसन्नो जहा नागो स पच्छा परितप्पइ ॥ ८ ॥
 'अज्ज आहं'^१ गणी हुंतो भावियप्पा बहुस्सुओ ।
 जइ हं रमंतो परियाए सामण्णे जिणदेसिए ॥ ९ ॥
 देवलीगसमाणो उ^२ परियाओ महेसिणं ।
 रयाणं अरयाणं तु^३ महानिरयसारिसो ॥१०॥
 अमरोवमं जाणिय सोक्खमुत्तमं
 रयाण परियाए तहारयाणं ।
 निरओवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं
 रमेज्ज तम्हा परियाय पंडिए ॥११॥
 धम्माउ भट्ठं सिरिओ ववेयं^४
 जन्तग्गि विज्झायमिव प्पतेयं ।
 हीलंति णं दुव्विहियं कुसीला^५
 दाहुद्धियं^६ घोरविसं व नागं ॥१२॥
 इहेवधम्मो अयसो अकित्ती
 दुन्तामधेज्जं^७ च पिहुज्जणम्मि ।
 चुयस्स धम्माउ अहम्मसेविणो
 संभिन्नवित्तस्स य^८ हेट्ठओ गई ॥१३॥

१—अज्जत्तेह (जा) ।

२—य (ख) ।

३—च (क, ख, ग, घ, ह) ।

४—अवेयं (क, ग, घ, ह) ।

५—कुसील (अ, ज,) ।

६—दाहुद्धियं (क, ज, ह) ।

७—^० गोत्तं (अ, ज) ।

८—उ (क, घ) ।

भुञ्जितु भोगाड परज्भु चयेना
 तहाविहं कट्टु असंजमं व्हं ।
 गडं च गच्छे अणभिज्भयं' दुहं
 वोही य से नो मुग्गभा पुणो पुणो ॥१४॥

इमस्स ता नेरइयस्स जंतुणा
 दुहोवणीयस्स किल्लेसवत्तिणो ।
 पलिओवमं भिज्जइ सागरोवमं
 किमंगपुण मज्भु इमं मणादुहं ? ॥१५॥

न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सई
 असासया भोगपिवास जंतुणो ।
 न चे' सरीरेण इमेणवेस्सई
 अविस्सई' जीवियपज्जवेण मे ॥१६॥

जस्सेवमण्या उ ह्वेज्ज निच्छिओ'
 नाग्ज' देहं न उ' धम्मनानणं ।
 तं तारिसं नो पयन्तेति इट्ठिया
 उवेनवाया' व मुदंसणं गिरि ॥१७॥

१—अग्निहिज्जिय (क, स, ग, घ) ।

२—मे (ल) ।

३—वियरसई (ड) ।

४—भिज्जओ (स) ।

५—उहं (अ) ।

६—य (ल, ज) ।

७—उदिदि० (क) ; उदिदि० (ग) ।

इच्चेव संपस्सिय बुद्धिमं नरो
 आंयं उवायं विविहं वियाणिया ।
 काएण वाया अदु माणसेणं
 तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिद्धिज्जासि^१ ॥१८॥
 —त्ति वेमि ॥

*

विविक्तचरिया (विद्या चरिया)

चूलियं तु पक्वामि मुयं केवल्लिभानियं ।
जं मुणित्त्वं सपुत्राणं^१ धम्मं उपज्जाणं मई ॥ १ ॥
अणुसोयपट्टिण्वहुजणम्मि पडिसोयल्लहल्लणं ।
पडिसोयमेव अप्पा दायच्चो होउकामेणं ॥ २ ॥
अणुसोयसुहोळोगो

पडिसोओ आसवो^२ गुविहियाणं ।

अणुसोओ संसारो

पडिसोओ तस्सा उत्तरो^३ ॥ ३ ॥

तम्हा^४ आयारपरक्केण संवरसमाहिवहुल्लेणं ।
चरिया गुणा य नियमा य होति साहूण दट्टच्चा ॥ ४ ॥
अणिएवामो समुयाणचरिया

अन्नायउच्छ परक्किया य ।

अप्पोवही कल्लहविवज्जणा य^५

विहारचरिया इत्तिणं पनत्था ॥ ५ ॥

आउण्णओमाणविवज्जणा य

ओसल्लदिट्ठाहडभत्तपाणे^६ ।

ससट्टक्केण चरेज भिक्खु

नजायनसट्ट जट्टं जण्जा ॥ ६ ॥

१—समुज्जलं (घ), मुपुत्राण (ह) ।

२—आसवो (अ, ए) ।

३—विगतो (अ, ल) ।

४—उ (अ, ल) ।

५—न (ल) ।

६—^०पाण (अ) ।

अमज्जमंसासि अमच्छरीया
 'अभिकखणं निव्विगइं' गया य'^२ ।
 अभिकखणं काउस्सगकारी
 सज्झायजोगे पयओ ह्वेज्जा ॥ ७ ॥
 न पडिन्नवेज्जा सयणासणाइं
 सेज्जं निसेज्जं तह भत्तपाणं ।
 गामे कुले वा नगरे व देसे
 ममत्तभावं^३ न 'कहिं चि'^४ कुज्जा ॥ ८ ॥
 गिहिणो वेयावडियं न कुज्जा
 अभिवायणं वंदण पूयणं च^५ ।
 असंकिलिट्ठेहिं समं वसेज्जा
 मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥ ९ ॥
 न या लभेज्जा निउणं सहायं
 गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
 एक्को वि पावाइं विवज्जयंतो
 विहरेज्ज^६ कामेसु असज्जमाणो ॥१०॥
 संवच्छरं चावि परं पमाणं
 बीयं च वासं न तहिं वसेज्जा ।
 सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू
 सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ ॥११॥

१—निव्विगइं (अ, घ) ।

२—अभिकखणि व्वितियजोगया य (आ, जा) ।

३—ममत्ति^० (अ) ।

४—कहिं पि (ख) ।

५—वा (क, ख, ग, घ, ह) ।

६—चरेज्ज (अ) ।

जो पुव्वरत्तावररत्तकाले
संपिक्खई^१ अप्पगमप्पएणं ।
कि मे कडं ? किं च मे किच्चसेसं ?
किं सक्कणिज्जं न समायरामि ? ॥१२॥

कि मे परो पासइ ? किं व^२ अप्पा ?
किं वाह^३ 'खलियं न विवज्जयामि'^४ ?
इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो
अणागयं नो पडिबंधं कुज्जा ॥१३॥

जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्त^५
काएण वाया अट्ठ माणसेणं ।
तत्थेव धीरो पडिसाहरेज्जा
आइन्नओ^६ खिप्पमिव^७ क्खलीणं ॥१४॥

जस्सेरिसा जोग जिइंदियस्स
धिइमओ सप्पुरिसस्स निच्चं ।
तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी
सो जीवइ संजमजीविएणं ॥१५॥

१—सारक्खई (अ, ज) ।

२—च (क, ग, घ, ज) ।

३—चाह (क) ।

४—खलित्तो वि^० (अ) ; खलित्त ण वि^० (आ) ।

५—दुप्पणीय (अ, ज) ; दुप्पइत्त (क) ।

६—आइण्णो (अ) ; आइण्ण (ज) ।

७—खिप्प^० (आ, जा) ; खित्त^० (अ, जा) ; ओखित्त^० (ज) ।

अप्पा^१ खलु सययं रक्खियव्वो
 सव्विदिएहि सुसमाहिण्हि ।
 अरक्खओ जाइपहं^२ उवेइ
 सुरक्खओ सव्वदुहाण मुच्चइ ॥१६॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—अप्पा व्व (क. ख, ग, घ) ।

२—^०वहं (जा, आ) ।

उत्तरज्भयणं

पदमं अज्भयणं

विणयसुयं

- १—संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो ।
विणयं पाउकरिस्सामि आणुपुण्वि सुणेह मे ॥
- २—आणानिद्देसकरे गुरुणमुववायकारए ।
इंगियागारसंपन्ने से विणीए त्ति वुच्चई ॥
- ३—आणाऽनिद्देसकरे^१ गुरुणमणुववायकारए ।
पडिणीए असंबुद्धे अविणीए त्ति वुच्चई ॥
- ४—जहा सुणी पूइकणी निक्कसिज्जइ सब्वसो ।
एवं दुस्सीलपडिणीए मुहरी निक्कसिज्जई ॥
- ५—कणकुण्डगं चइत्ताणं^२ विट्ठं भुंजइ सूयरे ।
एवं सीलं चइत्ताणं दुस्सीले रमई मिए^३ ॥
- ६—सुणियाऽभावं साणस्स सूयरस्स नरस्स य ।
विणए ठवेज्ज अप्पाणं इच्छन्तो हियमप्पणो ॥
- ७—तम्हा विणयमेसेज्जा सीलं 'पडिल्लमे जओ'^४ ।
बुद्धपुत्तं^५ नियागट्ठी न निक्कसिज्जइ कण्हई ॥

१—आणा अनिद्देसकरे (अ) ।

२—जहित्ताण (वृ०, चू०) ।

३—मिई (आ) ।

४—पडिल्लमिज्जओ (ऋ) ; पडिल्लमेज्जओ (अ) ।

५—बुद्धउत्ते (वृ०) : बुद्धपुत्ते, बुद्धवुत्ते (वृ० पा०) ।

- ८—निसन्ते सियाऽमुहरी^१ बुद्धाणं अन्तिए सया ।
अट्टजुत्ताणि सिक्खेज्जा निरट्टाणि उ वज्जए ॥
- ९—अणुसासिओ न कुप्पेज्जा खंति सेविज्ज पण्डिए ।
खुट्ठेहि सह संसग्गि हासं कीडं च वज्जए ॥
- १०—मा य चण्डालियं कासी^२ बहुयं मा य आलवे ।
कालेण य अहिज्जिता तओ भाएज्ज एगगो^३ ॥
- ११—आहच्च चण्डालियं कट्टु न निण्हविज्ज कयाइ वि ।
कडं कडे त्ति भासेज्जा अकडं नो कडे त्ति य ॥
- १२—मा 'गलियस्सेव'^४ कसं वयणमिच्छे पुणो पुणो ।
कसं व दट्ठुमाइण्णे पावगं परिवज्जए^५ ॥
- १३—अणासवा^६ थूलवया कुसीला
मिउं पि चण्डं पकरेति सीसा ।
चित्ताणुया लहु दक्खोववेया
पसायए ते हु दुरासयं पि ॥
- १४—नापुट्ठो वागरे किञ्चि पुट्ठो वा नालियं वए ।
कोहं असच्चं कुव्वेज्जा धारेज्जा पियमप्पियं ॥
- १५—'अप्पा चेव दमेयव्वो'^७ अप्पा हु खलु दुट्ठमो ।
अप्पा दन्तो सुही होइ अस्सि लोए परत्थ य ॥

१—सियाअमुहरी (अ) ।

२—कुज्जा (उ) ।

३—एक्कओ (अ) ।

४—गलियस्सेव्व (उ, ऋ) ; गलियस्सेव्व (अ) ।

५—पडिवज्जए (अ, वृ० पा०) ।

६—अणासुणा (वृ० पा०) ।

७—अप्पाणमेव दमए (वृ०, चू०) ।

- १६—वरं^१ मे अप्पादन्तो संजमेण तवेण य ।
 माहं परेहि दम्मन्तो बन्धणेहि वहेहि य ॥
- १७—पडिणीयं च बुद्धाणं वाया अदुव कम्मुणा ।
 आवी वाजइ वारहस्से नेव कुज्जा कयाइ वि ॥
- १८—न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
 न जुंजे ऊरुणा ऊरुं सयणे नो पडिस्सुणे ॥
- १९—नेव पव्हत्थियं कुज्जा पक्खपिण्डं व संजए ।
 पाए पसारिए^२ वावि न चिट्ठे गुरुणन्तिए ॥
- २०—आयरिएहिं वाहिनो^३ तुसिणीओ न कयाइ वि ।
 पसायपेही^४ नियागट्ठी उवचिट्ठे गुरुं सया ॥
- २१—आलवन्ते लवन्ते वा न निसीएज्ज कयाइ वि ।
 चइऊणमासणं धीरो जओ जत्तं^५ पडिस्सुणे ॥
- २२—आसणगओ न पुच्छेज्जा नेव 'सिज्जागओ कया'^६ ।
 आगम्मुकुडुओ सन्तो पुच्छेज्जा पंजलीउडो^७ ॥
- २३—एवं विणयजुत्तस्स सुत्तं अत्यं च तदुभयं ।
 पुच्छमाणस्स सीसस्स वागरेज्ज जहासुर्यं ॥
- २४—मुसं परिहरे भिक्खू न य ओहारिणिं वए ।
 भासादोसं परिहरे मायं च वज्जए सया ॥
- २५—न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं न निरट्ठं न मम्मयं ।
 अप्पेणट्ठा परट्ठा वा उभयस्सन्तरेण वां ॥

१—वर (अ, उ, म) ।

२—पसारि नो (वृ०) ; पसारिए (वृ० पा०) ।

३—वाहित्तो (अ, आ, इ, उ) ।

४—पसायट्ठी (वृ० पा०) ।

५—जुत्तं (अ, उ) ।

६—णिसिज्जागओ कयाइ (चू०) ।

७—पजलीउडो (वृ०) , पजलीउडो (वृ० पा०) ।

- २६—समरेसु अगारेसु 'सन्धीसु य महापहे'^१ ।
 एगो एगित्थिए सद्धि नेव चिट्ठे न संलवे ॥
- २७—जं मे बुद्धाणुसासन्ति सीएण^२ फरुसेण वा ।
 मम लाभो त्ति पेहाए पयओ तं पडिस्सुणे ॥
- २८—अणुसासणमोवायं दुक्कडस्स य चोयणं^३ ।
 हियं तं मन्नेए पण्णो वेसं होइ असाहुणो ॥
- २९—हियं विगयभया बुद्धा फरुसं पि अणुसासणं ।
 वेसं तं होइ मूढाणं खन्तिसोहिकरं^४ पयं ॥
- ३०—आसणे उवचिट्ठेज्जा 'अणुच्चे अकुए'^५ थिरे ।
 अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई निसीएज्जप्पकुक्कुए ॥
- ३१—कालेण निक्खमे भिक्खू कालेण य पडिक्कमे ।
 अकालं च विवज्जित्ता काले कालं समायरे ॥
- ३२—परिवाडीए न चिट्ठेज्जा भिक्खू दत्तेसणं चरे ।
 पडिरूवेण एसित्ता मियं कालेण भक्खए ॥
- ३३—नाइदूरमणासन्ने^६ नन्नेसि चक्खुफासओ ।
 एगो चिट्ठेज्ज भत्तट्ठा लंघिया तं नइक्कमे^७ ॥
- ३४—नाइउच्चे व नीए वा नासन्ने नाइदूरओ ।
 फासुयं परकडं पिण्डं पडिगाहेज्ज संजए ॥

१—गिहसन्धीसु महापहे (सु) ; गिहसधिसु अ महापहेसु (वृ०) ।

२—सीएण (अ) ; सीलेण (वृ० पा०, चू० पा०) ।

३—पेरणं (वृ०) ; चोयणा (चू०) ।

४—^० सुद्धिकरं (वृ०) ।

५—अणुच्चेअकुक्कुए (वृ०) ।

६—गाइ दूरे अणासण्णे (चू०) ।

७—न अइक्कमे (अ) ।

- ४४—वित्ते अचोइए निच्चं^१ 'खिप्पं हवइं सुचोइए'^२ ।
 जहोवइइं सुकयं किच्चाइं कुव्वईं सया ॥
- ४५—नच्चा नमइ मेहावी लोए 'कित्ती से'^३ जायए ।
 हवईं किच्चाणं सरणं भूयाणं जगईं जहा ॥
- ४६—पुज्जा जस्स पसीयन्ति संबुद्धा पुव्वसंथुया ।
 पसन्ना^४ लाभइस्सन्ति विउलं अट्ठियं सुयं ॥
- ४७—स पुज्जसत्थे सुविणीयसंसए
 'मणोरुई'^५ चिट्ठइ कम्मसंपया ।^६
 तवोसमायारिसमाहिंसंबुडे
 महज्जुई पंचवयाइं पालिया ॥
- ४८—स देवगन्धव्वमणुस्सपूइए
 चइत्तु देहं मलपंकपुव्वयं ।
 सिद्धे वा हवइ सासए
 देवे वा अप्परए महिड्ढिए ॥
 —त्ति बैमि ॥

१—खिप्पं (वृ० पा०, चू० पा०) ।

२—पसन्ने धामवं करे (वृ० पा०, चू० पा०) ।

३—कित्तीय (अ, उ, ऋ) ; कित्ती सि (ऋ) ।

४—संपन्ना (वृ० पा०) ।

५—मणोरुइ (वृ० पा०) ।

६—मणोरुइ चिट्ठइ कम्मसपय (वृ० पा०) ; मणिच्छियं संपयमुत्तम गया
 (नागार्जुनीयाः) ।

वीर्यं अज्भयणं

परीसहपविभत्ती

सू० १—सुयं मे, आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए^१ परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा^२ ।

सू० २—कयरे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा ?

सू० ३—इमे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा, तं जहा—

१. दिगिंछपरीसहे, २. पिवासापरीसहे, ३. सीयपरीसहे, ४. उसिणपरीसहे, ५. दंसमसयपरीसहे, ६. अचेलपरीसहे, ७. अरइ-परीसहे, ८. इत्थीपरीसहे, ९. चरियापरीसहे, १०. निसीहिया-परीसहे, ११. सेज्जापरीसहे, १२. अक्कोसपरीसहे,^३ १३. वहपरीसहे, १४. जायणापरीसहे, १५. अलाभपरीसहे, १६. रोगपरीसहे, १७. तणफासपरीसहे, १८. जल्लपरीसहे, १९. सक्कारपुरक्कारपरीसहे, २०. पन्नापरीसहे, २१. अन्नाणपरीसहे, २२. दंसणपरीसहे ।

१—परीसहाणं पविभत्ती कासवेणं पवेइया ।

तं भे उदाहरिस्सामि आणुपुव्वि सुणेह मे ॥

१—भिक्खुचरियाए (वृ०) ; भिक्खायरियाए (वृ० पा०) ।

२—विनिहन्नेज्जा (वृ०) ।

३—उक्कोस ° (अ, ऋ) ।

(१) दिगिच्छापरीसहे

- २—दिगिच्छापरीसहे^१ देहे तवस्सी भिक्खु थामवं ।
 न छिन्दे न छिन्दावए न पए न पयावए ॥
- ३—कालीपव्वंगसंकासे किसे धमणिसंतए ।
 मायन्ते असणपाणस्स अदीणमणसो चरे ॥

(२) पिवासापरीसहे

- ४—तओ पुट्ठो पिवासाए दोगुंछी लज्जसंजए^२ ।
 सीओदगं न सेविज्जा वियडस्सेसणं चरे ॥
- ५—छिन्नावाएसु पन्थेसु आउरे सुपिवासिए^३ ।
 परिसुक्कमुहेऽदीणे^४ तं तितिकखे परीसहं^५ ॥

(३) सीयपरीसहे

- ६—चरन्तं विरयं लूहं सीयं फुसइ एगया ।
 नाइवेलं मुणी गच्छे सोच्चाणं जिणसासणं^६ ॥
- ७—न मे निवारणं अत्थि छवित्ताणं न विज्जई ।
 अहं तु अग्गि सेवामि इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

(४) उसिणपरीसहे

- ८—उसिणपरियावेणं परिदाहेण तज्जिए ।
 धिसु वा परियावेणं सायं नो परिदेवए ॥

१—^०परियावेण (वृ०) : ^०परित्तापेग (चू०) : ^०परिगते (वृ० पा०) ।

२—लज्जसंजने (वृ० चू०) : लज्जासंजए, लज्जसंजने (वृ० पा०) ; लज्जसंजते (चू० पा०) ।

३—सुप्पिवासिए (अ) : सुपिवासए (ऋ) ।

४—^०मुहोदीणे (अ, सु) : ^०मुहोदीणे (ऋ) ।

५—सव्वतो य परिव्वए (वृ० पा०) ।

६—नाइवेलं विहन्निज्जा पावदिही विहन्नाइ (चू०, वृ०) : नाइवेलं मुणी गच्छे सोच्चाणं जिणसासणं (चू० पा०, वृ० पा०) ।

९—उण्हाहितत्ते मेहावी सिणाणं 'नो वि पत्थए'^१ ।
गायं नो परिसिचेज्जा^२ न वीएज्जा य अप्पयं ॥

(५) दंसमसण्परीसहे

१०—पुट्ठो य दंसमसएहिं समरेव^३ महामुणी ।
नागो संगामसीसे वा सूरुो अभिहणे परं ॥

११—न संतसे न वारेज्जा मणं पि न पओसए ।
उवेहे^४ न हणे पाणे भुंजन्ते मंससोणियं ॥

(६) अचेलपरीसहे

१२—परिजुण्णेहि वत्येहिं होक्खामि त्ति अचेलए ।
अदुवा सचेलए होक्खं इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

१३—'एगयाऽचेलए होइ'^५ सचेले यावि एगया ।
एयं धम्महियं नच्चा नाणी नो परिदेवए ॥

(७) अरइपरीसहे

१४—नामाणुगामं रीयन्तं अणगारं अकिंचणं ।
अरई अणुप्पविसे तं तितिक्खे परीसहं ॥

१५—अरइं पिट्ठओ किच्चा विरए आयरक्खिए ।
धम्मरामे निरारम्भे उवसन्ते मुणी चरे ॥

(८) इत्थीपरीसहे

१६—संगो एस मणुस्साणं जाओ लोणंमि इत्थिओ ।
जस्स एया परिन्नाया सुकडं^६ तस्स सामण्णं ॥

१—नामिपत्थए (चू०, वृ०) ; णोऽवि पत्थए (वृ० पा०) ।

२—परिसेविज्जा (उ, ऋ) ।

३—सम एव (अ) ।

४—उवेहे (उ, चू०, ऋ) ।

५—एगता अचेलगे भवति (चू०) : अचेलए सयं होइ (वृ० पा०, चू० पा०) ।

६—सुकर (वृ० पा०) ।

१७—एवमादाय^१ मेहांवी 'पंकभूया उ इत्थिओ'^२ ।
नो ताहिं विणिहन्नेज्जा^३ चरेज्जत्तगवेसए ॥

(९) चरियापरीसहे

१८—एग एव^४ चरे लाढे अभिभूय पंरीसहे ।
गामे वा नगरे वावि निगमे वा रायहाणिए ॥

१९—असमाणो चरे भिक्खू नेव^५ कुज्जा परिगंहं ।
असंसत्तो गिहत्थेहि अणिएओ परिव्वए ॥

(१०) निसीहियापरीसहे

२०—सुसाणे सुन्नगारे वा ख्खमूले व एगओ ।
अकुक्कुओ निसीएज्जा न य वित्तासए परं ॥

२१—तत्थ से चिट्ठमाणस्स^६ 'उवसग्गाभिघारए'^७ ।
संकाभीओ न गच्छेज्जा उट्ठित्ता^८ अन्नमासणं ॥

(११) सेज्जापरीसहे

२२—उच्चावयाहिं सेज्जाहिं तवस्सी भिक्खु थामवं ।
नाइवेलं विहन्नेज्जा पावदिट्ठी विहन्नेइ ॥

२३—पइरिक्कुवस्सयं लद्धुं कल्लाणं अदु पावगं ।
'किमेगरायं करिस्सइ'^९ एवं तत्थज्जहियासए ॥

१—एवमाणाय (चू०, व०) ; एवपादाय (चू० पा०, व० पा०) ।

२—जहा एया लहुस्सगा (चू० पा०, व० पा०) ।

३—विहन्नेज्जा (अ, सु) ।

४—एगो (चू० पा०) : एगो (व० पा०) ।

५—नेयं (अ) ।

६—अच्छमाणस्स (व० पा०, चू०) ।

७—उवसग्गमय भवे (व० पा०, चू० पा०) ।

८—उवट्ठित्ता (उ) ।

९—किं मज्झ एग रायाए (चू०) ।

(१२) अक्रोसपरीसहे

- २४—अक्रोसेज्ज परो भिक्खुं न तेसिं पडिसंजले ।
सरिसो होइ बालाणं तम्हा भिक्खू न संजले ॥
२५—सोच्चाणं फरुसा भासा दारुणा गामकण्टगा ।
तुसिणीओ उवेहेज्जा न ताओ मणसीकरे ॥

(१३) बहपरीसहे

- २६—हओ न संजले भिक्खू मणं पि न पओसए ।
तित्तिक्खं परमं नच्चा 'भिक्खुधम्मं विचितए'^१ ॥
२७—समणं संजयं दन्तं हणेज्जा कोइ कथई ।
नत्थि जीवस्स नासु त्ति 'एवं पेहेज्ज संजए'^२ ॥

(१४) जायणापरीसहे

- २८—दुक्करं खलु भो निच्चं अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वं से जाइयं होइ नत्थि किञ्चि अजाइयं ॥
२९—गोयरगपविट्ठस्स पाणी नो सुप्पसारए ।
सेओ अगारवासु त्ति इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

(१५) अलाभपरीसहे

- ३०—परेसु घासमेसेज्जा भोयणे परिणिट्ठिए ।
लद्धे पिण्डे अलद्धे वा नाणुत्तप्पेज्ज संजए^३ ॥
३१—अज्जेवाह न लब्भामि अवि लाभो सुए सिया ।
जो एवं पडिसंविक्खे^४ अलाभो तं न तज्जए ॥

१—^० धम्मपि चितए (वृ०) ; ^० धम्मं व चितए (वृ० पा०) ।

२—ग त पेहे असाधुव (वृ०) ; न ता पेहे असाधुव (चू०) : एव पीहेज्ज संजए (चू० पा०) ; न य पेहे असाधुय, पठन्ति च—एव पेहिज्ज सज्जतो (वृ० पा०) ।

३—पडिए (अ) ।

४—पडिसच्चिक्खे (सु) ।

(१६) रोगपरीसहे

- ३२—नच्चा उप्पइयं दुक्खं वेयणाए दुहट्टिए ।
 अदीणो थावए पन्नं पुट्ठो तत्थहियासए ॥
 ३३—तेगिच्छं नाभिनन्देज्जा संचिक्खत्तगवेसए ।
 एवं^१ खु तस्स सामण्णं जं न कुज्जा न कारवे ॥

(१७) तण्णफासपरीसहे

- ३४—अचेलागस्स लूहस्स संजयस्स तवस्सिणो ।
 तणेसु सयमाणस्स हुज्जा गायविराहणा ॥
 ३५—आयवस्स निवाएणं अउला^२ हवइ वेयणा ।
 एवं^३ नच्चा न सेवन्ति तन्तुजं^४ तणतज्जिया ॥

(१८) जल्लपरीसहे

- ३६—किलिन्नाए^५ मेहावी पंकेण व रएण वा ।
 धिसु वा परितावेण सायं नो परिदेवए ॥
 ३७—वेएज्ज^६ निज्जरापेही 'आरियं धम्मणुत्तरं'^७ ।
 जाव सरीरभेउ त्ति जल्ल काएण धारए^८ ।

(१९) सक्कारपुरक्कारपरीसहे

- ३८—अभिवायणमब्भुट्ठाणं सामी कुज्जा निमन्तणं ।
 जे ताइं पडिसेवन्ति न तेसिं पीहए मुणी ॥

१—एय (अ, उ, ऋ, वृ०) ; एव (वृ० पा०) ।

२—तिउला (चू०, वृ०) , अतुला, विपुला वा (वृ० पा०) ।

३—एयं (अ, उ, ऋ, वृ०) ; एव (वृ० पा०) ।

४—तन्तय (चू० पा०, वृ० पा०) ।

५—किलिद्धगाए (चू० पा०, वृ० पा०) ।

६—वेयज्ज (अ) ; वेइ तो, वेइज्ज, वेयतो (वृ० पा०) ।

७—आरियं धम्मणुत्तरं (स०), आरिय धम्ममणुत्तर (अ) ।

८—उव्वटे (चू०, वृ० पा०) ; धारए (चू० पा०) ।

३९—अणुक्कसाई अप्पिच्छे अन्नाएसी अलोलुए ।
 'रसेसु' नाणुगिज्जेज्जा'^१ 'नाणुतप्पेज्ज पन्नवं'^३ ॥

(२०) पन्नापरीसहे

४०—से नूण मए पुव्वं कम्माणाणफला कडा ।
 जेणाह नाभिजाणामि पुट्टो केणइ कण्हई ॥

४१—अह पच्छा उइज्जन्ति कम्माणाणफला कडा ।
 एवमस्सासि अप्पाणं नच्चा कम्मविवागयं ॥

(२१) अन्नाणपरीसहे

४२—निरद्धगमि विरओ मेहुणाओ सुसंवुडो ।
 जोसक्ख^४ नाभिजाणामि धम्मं कल्लाण पावणं ॥

४३—तवोवहाणमादाय पडिमं पडिवज्जओ^५ ।
 एवं पि विहरओ मे छउमं न नियट्टई ॥

(२२) दंसणपरीसहे

४४—नत्थि नूणं परे लोए इड्ढीवावितवस्सिणो ।
 अदुवा वंचिओ मि त्ति इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

४५—अभू जिणा अत्थि जिणा अदुवावि भविस्सई ।
 भुसं ते एवमाहंसु इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

४६—एए परीसहा सव्वे कासवेण पवेइया ।
 जे भिक्खू न विहन्नेज्जा पुट्टो केणइ कण्हई ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—सरसेसुं (वृ०) ।

२—रसिपसु णालिगिज्जेज्जा (चू०), रसेसु नाणुं (वृ० पा०, चू० पा०) ।

३—न तेसि पीहए मुणी (चू०, वृ०) ; नाणुतप्पेज्ज पण्णव (वृ० पा०, चू० पा०) ।

४—सक्ख (चू०) ।

५—पडिवज्जओ (वृ०), पडिवज्जओ (वृ० पा०) ।

तद्वयं अञ्जयणं

चाउरंगिज्जं

- १-चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह जन्तुणो^१ ।
माणुसत्तं सुई सद्धा संजमंमि य वीरियं ॥
- २-समावन्नाण संसारे नाणागोत्तासु जाइसु ।
कम्मा नाणाविहा कट्टु पुढो^२ विस्संभिया पया ॥
- ३-एगया देवलोएसु नरएसु वि एगया ।
एगया आसुर कायं आहाकम्मेहिं गच्छई ॥
- ४-एगया खत्तिओ होइ तओ चण्डालवोक्कसो ।
तओ कीडपयंगो य तओ कुन्थुपिवीलिया ॥
- ५-एवमावट्टजोणीसु पाणिणो कम्मकिब्बिसा ।
न निविज्जन्ति संसारे 'सव्वट्टेसु व^३'^४ खत्तिया ॥
- ६-कम्मसंगेहिं सम्मूढा दुक्खिया बहुवेयणा ।
अमाणुसासु जोणीसु विणिहम्मन्ति पाणिणो ॥
- ७-कम्माणं तु पहाणाए आणुपुव्वी कयाइ उ ।
जीवा सोहिमणुप्पत्ता 'आययन्ति मणुस्सयं'^५ ॥
- ८-माणुस्सं विग्गहं लद्धु सुई धम्मस्स दुल्लहा ।
जं सोच्चा पडिवज्जन्ति तवं खन्तिमहिंसयं ॥

१-देहिणो (बु० पा०, चू०) ।

२-पुणो (चू० पा०) ।

३-य (अ) ; वि (ऋ) ।

४-सव्वट्ट इव (बु० पा०, चू० पा०) ।

५-जायन्ते मणुसत्तय (बु० पा०) ।

- ९-आहच सवणं लद्धुं सद्धा परमदुल्लहा ।
 सोच्चा नेआउयं मगं बहवे परिभस्सई ॥
- १०-सुइं च लद्धु सद्धं च वीरियं पुण दुल्लहं ।
 बहवे रोयमाणा वि 'नो एणं' पडिवज्जए ॥
- ११-माणुसत्तंमि आयाओ जो धम्मं सोच सद्देहे ।
 तवस्सी वीरियं लद्धुं संबुडे निद्धुणे रयं ॥
- १२-"सोही उज्जुयभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई ।
 निव्वाणं परमं जाइ 'घयसित्तं व्व'^३ पावए ॥"^३
- १३-विगिंच^४ कम्मणो^५ हेउं जसं संचिणु खन्तिए ।
 पाढवं सरीरं हिच्चा उड्डं पक्कमई दिस ॥
- १४-विसालिसेहिं सीलेहिं जक्खा उत्तरउत्तरा ।
 महासुक्का व दिप्पन्ता मन्नन्ता अपुणच्चवं ॥
- १५-अप्पिया देवकामाणं कामरूवविउव्विणो ।
 उड्डं कप्पेसु चिट्ठन्ति पुव्वा वाससया बहू ॥
- १६-तत्थ ठिच्चा जहाठाणं जक्खा आउक्खए चुया ।
 उवेन्ति माणुसं जोणिं से दसंगेऽभिजायई ॥
- १७-खेतं वत्थुं हिरण्णं च पसवो दासपोरुसं ।
 चत्तारि कामखन्धाणि तत्थ से उववज्जई ॥

१-नो य ण (स, सु, वृ०) ।

२-घयसत्तिव्व (उ) ; घयसित्तिव्व (ऋ, सु,) , घयसित्ते व (वृ०) ।

३-चउद्धा सपय लद्धु इहेव ताव भायते ।

तेयत्ते तेजसपन्ने घयसित्ते व पावए ॥ (नागार्जुनीयाः) ।

४-विकिंचि (अ, आ) , विकिंच (चू०) ; विगिंच (चू० पा०) ।

५-कम्मणो (उ, ऋ) ।

- १८—मिह्वं नायवं^१ होइ उजागोए य वण्वं ।
 अप्पायकं महान्णे जनिजाए जसोवले ॥
- १९—मोडा नायुम्मए मोए अप्पडिल्ले अहाज्यं ।
 पुव्वं विमुद्धसद्धन्ने केवचं वोहि वृज्जिया ॥
- २०—वट्ठरंगं कुल्लहं मत्ता^२ मंजमं पडिवज्जिया ।
 तवसा वुयकम्ममे मिद्धे हवइ नासए ॥
 —त्ति वेनि ॥

*

१—नह्वं (अ) ; नह्वं (उ) ।

२—वट्ठ (उ) ।

चउत्थं अज्भयणं

असंखयं

- १—असंखयं जीविय मा पमायए
जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं ।
एवं^१ वियाणाहि जणे पमत्ते
कण्ण विहिंसा अजया गहिनत्ति ॥
- २—जे पावकस्मेहिं धणं मणूसा
समाययन्ती अमइं^२ गहाय ।
पहाय ते 'पास पयट्टिए'^३ नरे
वेराणुबद्धा नरयं उवेन्ति ॥
- ३—तेणे जहा सन्धिमुहे गहीए
सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ।
एवं पया पेच्च^४ इहं च^५ लोए
'कडाण कम्माण न मोक्ख^६ अत्थि'^७ ॥
- ४—संसारमावन्न परस्स अट्टा
साहारणं जं च करेइ कम्मं ।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले
न बन्धवा बन्धवयं उवेन्ति ॥

१—एण (वृ० पा०) ।

२—अमय (वृ० पा०, चू० पा०) ।

३—पासपयट्टिए (ऋ) ; पासपइट्टिए (उ) ।

४—पेच्च (वृ०) ; पेच्च (वृ० पा०) ।

५—पि (चू०, वृ० पा०) ।

६—भोक्खो (वृ०, चू०) ।

७—ण कम्मुणो पीहाति तो क्याती (वृ० पा०, चू० पा०) ।

- ५—वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते
इमंमि लोए अदुवा परत्था ।
दीवप्पण्हे व अणन्तमोहे
नेयाउयं दट्टुमदट्टुमेव ॥
- ६—सुत्तेसु यावी पडिवुद्धजीवी
न वीससे पण्डिए आसुपन्ने ।
घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं
भारुण्डपक्खी व चरप्पमत्तो ॥
- ७—चरे पयाइं परिसंकमाणो
जं किंचि पासं इह मण्णमाणो ।
लाभन्तरे जीविय बूहइत्ता
पच्छा परिन्नाय मलावघंसी ॥
- ८—छन्दं निरोहेण उवेइ मोकखं
आसे जहा सिक्खियवम्मघारी ।
पुव्वाइं वासाइं चरप्पमत्तो
तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मोकखं ॥
- ९—स पुव्वमेवं न लभेज्ज पच्छा
एसोवमा सासयवाइयाणं ।
विसीयई सिढिले आउयंमि^१
कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥
- १०—खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं
तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे ।
समिच्च लोयं समयया महेसी
अप्पाणरक्खी चरमप्पमत्तो^२ ॥

१—आउंमि (उ) ।

२—व चरप्पमत्तो (ऋ) : चरप्पमत्तो (उ) ।

- ११—मुहुं मुहुं मोहगुणे जयन्तं
 अणेगरूवा समणं चरन्तं ।
 फासा फुसन्ती असमंजसं च
 न तेसु भिक्खू मणसा पउस्से ॥
- १२—‘मन्दा य फासा बहुलोहणिज्जा’^१
 तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा ।
 रक्खेज्ज कोह विणएज्ज माणं
 मायं न सेवे पयहेज्ज लोहं ॥
- १३—जे संखया तुच्छ परप्पवाई
 ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा ।
 एए ‘अहम्मे’त्ति दुगुंछमाणो
 कंखे गुणे जाव सरीरभेओ ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—मदाउ तहा हियस्स बहुलोमणेज्जा (चू० पा०) ।

प वम अज्जभयणं

अकाममरणिज्जं

- १—अण्वंसि महोहंसि^१ एगे तिण्णे^२ दुरुत्तरं ।
तत्थ एगे महापत्ते इमं पट्टमुदाहरे^३ ॥
- २—सन्तिमे य^४ दुवे ठाणा अक्खाया मारणत्तिया ।
अकाममरणं चेव सकाममरणं तथा ॥
- ३—बालाणं^५ अकामं तु मरणं असइं भवे ।
पण्डियाण सकाम तु उक्कोसेण सइं भवे ॥
- ४—तत्थिम पढमं ठाणं महावीरेण देसियं ।
कामगिद्धे जहा बाले भिसं कूराइं कुव्वई ॥
- ५—जे गिद्धे कामभोगेसु एगे कूडाय गच्छई ।
न मे दिट्ठे परे लोए चक्खुदिट्ठा इमा रई ॥
- ६—हत्थागया इमे कामा
कालिया जे अणागया ।
को जाणइ परे लोए
अत्थि वा नत्थि वा पुणो ? ॥
- ७—जणेण सद्धि होक्खामि इइ बाले पगब्भई ।
कामभोगाणुराएणं केसं सपडिवज्जई ॥
- ८—तओ से दण्डं समारभई तसेसु थावरेसु य ।
अट्ठाए य अणट्ठाए भूयग्गामं विहिसई ॥

१—महोघसि (वृ० पा०) ।

२—तरइ (वृ०, चू०.) ; तिण्णे (वृ० पा०) ।

३—पण्डमुदाहरे (वृ० पा०, चू० पा०, सु) ।

४—खलु (चू०), ए (वृ०) ।

५—वालाण य (ऋ) ।

- ९—हिसे बाले मुसावाई माइल्ले पिसुणे सढे ।
 भुंजमाणे सुरं मंस सेयमेयं ति मन्नई ॥
- १०—कायसा वयसा मत्ते वित्ते गिद्धे य इत्थिसु ।
 दुहओ मलं संचिणइ सिसुणागु व्व मट्टियं ॥
- ११—तओ पुट्टो आयंकेणं गिलाणो परितप्पई ।
 पभीओ परलोगरस कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥
- १२—सुया मे नरए ठाणा असीलाणं च जा गई ।
 बालाण कूरकम्माण पगाढा जत्थ वेयणा ॥
- १३—तत्थोववाइय ठाणं जहा मेयमणुस्सुयं ।
 आहाकम्मेहि गच्छन्तो सो पच्छा परितप्पई ॥
- १४—जहा सागडिओ जाण सम हिच्चा महापहं ।
 विसमं मग्गमोइण्णो^१ 'अक्खे भग्गमि'^२ सोयई ॥
- १५—एवं धम्म विउक्कम्म अहम्मं पडिवज्जिया ।
 बाले मच्चुमुहं पत्ते अक्खे भग्गे व सोयई ॥
- १६—तओ से मरणन्तंमि बाले सन्तस्सई^३ भया ।
 अकाममरणं मरई धुत्ते व कलिना जिए ॥
- १७—एयं अकाममरणं बालाणं तु पवेइयं ।
 एत्तो सकाममरणं पण्डियाणं सुणेह मे ॥
- १८—मरण पि सपुण्णाणं^४ जहा मेयमणुस्सुयं ।
 विप्पसणमणाघायं^५ सजयाण वुसीमओ ॥

१—मग्गमोइण्णो (चू०) ; मग्गमोइण्णो (वृ० पा०) ।

२—अक्खे भग्गमि (वृ०) ; अक्खस्स भग्गे (चू०) ; अक्खे भग्गमि (वृ० पा०) ।

३—सत्तसई (चू०) ।

४—सपुण्णाण (अ) ।

५—सुपसन्नेहिं अक्खाय (वृ० पा०, चू०) , सुप्पसन्नमणक्खाय (वृ०) ;
 विप्पसणमणाघाय (चू० पा०) ।

- १९—न इमं 'सव्वेसु भिक्खूसु'^१
 न इमं सव्वेसुऽगारिसु ।
 नाणासील्ला अगारत्था
 विसमसीला य भिक्खुणो ॥
- २०—सन्ति एगेहि भिक्खूहि गारत्था संजमुत्तरा ।
 गारत्थेहि य सव्वेहिं साहवो संजमुत्तरा ॥
- २१—चीराजिणं नगिणिणं^२ जडीसंवाडिमुण्डिणं ।
 एयाणि वि न तायन्ति दुस्सीलं परियागयं ॥
- २२—पिण्डोलए व^३ दुस्सीले नरगाओ न मुच्चई ।
 भिक्खाए वा गिहत्थे वा सुव्वए कम्मई दिवं ॥
- २३—अगारिसामाइयंग्गाइं सड्ढी काएण फासए ।
 पोसहं दुहओ पक्खं एगरायं न हावए ॥
- २४—एवं सिक्खासमावन्ने गिहवासे^४ वि सुव्वए ।
 मुच्चई छविपव्वाओ गच्छे जक्खसलोगयं ॥
- २५—अह जे संवुडे भिक्खू दोण्हं अन्नयरे^५ सिया ।
 सव्वदुक्खप्पहीणे वा देवे वावि महड्ढिणए ॥
- २६—उत्तराइं विमोहाइं जुइमन्ताणुपुव्वसो ।
 समाइण्णाइं जक्खेहिं आवासाइं जसंसिणो ॥
- २७—दीहाउया इड्ढिमन्ता समिद्धा कामरूविणो ।
 अहुणोववन्नसंकासा भुज्जो अच्चिमालिप्पभा ॥

१—सव्वेसिं भिक्खूणं (चू०) ।

२—गिगिणिणं (वृ०) ; गियण (चू०) ।

३—वि० (अ, चू०) ।

४—गिह्वासे (उ) ।

५—एगयरे (चू०) ।

- २८—ताणि ठाणाणि गच्छन्ति सिक्खित्ता संजमं तवं ।
 भिक्खाए वा गिहत्थे वा जे सन्ति परिनिव्वुडा ॥
- २९—तेसिं सोच्चा सपुज्जाणं^१ संजयाण वुसीमओ ।
 न संतसन्ति मरणन्ते सीलवन्ता बहुस्सुया ॥
- ३०—तुलिया विसेसमादाय दयाधम्मस्स खन्तिए ।
 विप्पसीएज्ज मेहावी तहाभूएण अप्पणा ॥
- ३१—तओ काले अभिप्पेए सड्ढी तालिसमन्तिए ।
 विणएज्ज लोमहरिसं भेयं देहस्स कंखए ॥
- ३२—अह कालंमि संपत्ते 'आघायाय समुस्सयं ।'^२
 सकाममरणं मरई तिण्हमन्नयरं मुणी ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१—सुपुज्जाण (चू०) ।

२—सुतक्खाल समाहितो (चू०) ; आघायाए समुच्छय (चू० पा०) ।

छट्टमंज्जयणं

खुड्ढागनियंठिज्जं

- १—जावेन्तऽविज्जापुरिसा 'सव्वे ते दुक्खसंभवा'^१ ।
 लुप्पन्ति बहुसो मूढा संसारंमि अणन्तए ॥
- २—'समिक्ख पंडिए तम्हा'^२ पासजाईपहे व्हू ।
 अप्पणा^३ सच्चमेसेज्जा मेत्ति भूएसु^४ कप्पए ॥
- ३—माया पिया ण्हुसा भाया भज्जा पुत्ता य ओरसा ।
 नालं ते मम ताणाय लुप्पन्तस्स सकम्भुणा ॥
- ४—एयमट्ठं सपेहाए पासे समियदंसणे ।
 छिन्द-गेहि^५ सिणेहं च न कखे पुव्वसंथवं ॥
- ५—गवासं मणिकुंडलं पसवो दासपोरुसं ।
 सव्वमेय चइत्ताणं कामरूवी भविस्ससि ॥
 [थावर जंगमं चेव धणं धण्ण उवक्खर ।
 पच्चमाणस्स कम्मेहिं नाल दुक्खाउ मोयणे ॥]^६
- ६—अज्झत्थं सव्वओ सव्वं दिस्स पाणे पियायए ।
 'न हणे पाणिणो पाणे'^७ भयवेराओ उवरए ॥
- ७—आयाणं नरयं दिस्स नायएज्ज तणामवि ।
 'दोगुंछी' अप्पणो पाए'^८ दिन्नं भुजेज्ज भोयण ॥

१—तै सव्वे दुक्खसंभवा (न ग,र्जुनीयाः) ।

२—जम्हा समिक्ख मेहावी (चू०, वृ० पा०) ; समिक्ख प,डिए तम्हा (चू० पा०) ।

३—अत्तहा (वृ० पा०) ।

४—भूएसु (चू०) ।

५—गेह (उ) ।

६—यह श्लोक चूणि व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

७—नो हिंसेज्ज पाणिण पाणे (चू०) ; नो हणे पाणिण पाणे (वृ० पा०) ।

८—दोगुणी (ऋ) ।

९—अप्पणो पाणिपाते (चू० पा०) ।

- ८—इहमेगे उ मन्नन्ति अप्पच्चखाय पावगं ।
आयरिय^१ विदित्ताणं संव्वदुक्खा विमुच्चई ॥
- ९—भणन्ता अकरेन्ता य बन्धमोक्खपइण्णिणो ।
वायाविरियमेत्तेण समासासेन्ति अप्पयं ॥
- १०—न चित्ता तायए भासा कओ विज्जाणुसासणं ? ।
विसन्ना पावकम्मेहिं^२ बाला पंडियमाणिणो ॥
- ११—जे केइ सरीरे सत्ता वण्णे रूवे य सव्वसो ।
'मणसा कायवक्केण'^३ सव्वे ते दुक्खसंभवा ॥
- १२—आवन्ता दीहमद्दाणं ससारंमि अणंतए ।
तम्हा सव्वदिसं पस्स अप्पमत्तो परिव्वए ॥
- १३—बहिया उड्डमादाय नावकंखे कयाइ वि ।
पुव्वकम्मखयट्ठाए इम देहं समुद्धरे ॥
- १४—विविच्च^४ कम्मणो हेउं कालकंखी परिव्वए ।
मायं पिंडस्स पाणस्स कडं लद्धूण भक्खए ॥
- १५—सन्निहि च न कुव्वेज्जा लेवमायाए संजए ।
पक्खी पत्त समादाय निरवेक्खो^५ परिव्वए ॥
- १६—एसणासमिओ लज्जू गामे अणियओ चरे ।
अप्पमत्तो पमत्तेहि पिंडवायं गवेसए ॥

१—आयरिय (वृ० पा०, उ, सु) ।

२—पावकिच्चेहिं (वृ० पा०) ।

३—मणसा वयसा चैव (चू०, वृ०) ; मणसा कायवक्केण (वृ० पा०) ।

४—विविच्च (अ, आ, इ, उ, वृ० पा०) ।

५—निरवेक्खी (चू०) ।

१७—'एवं से उदाहु, अणुत्तरनाणी
 अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे ।
 अरहा नायपुत्ते
 भगवं वेसालिए वियाहिए ॥'^१
 —त्ति बेमि ।'

*

१—एव से उदाहु अरहा पासे पुरिसादाणीए ।
 भगवंते वेसालिए दुद्धे परिनिव्वुडे ॥ (दृ० पा०, चू० पा०)

सत्तमं अज्भयणं

उरब्भिज्जं

- १—जहाएसं समुद्दिस्स कोइ पोसेज्ज एलयं ।
 ओयणं 'जवसं देज्जा'^१ पोसेज्जा 'वि सयंगणे'^२ ॥
- २—तओ से पुट्टे परिवूढे जायमेए महोदरे ।
 पीणिए विउले देहे आएसं परिकंखए^३ ॥
- ३—जाव न एइ^४ आएसे ताव जीवइ से दुही ।
 अह पत्तंमि आएसे सीसं छेत्तूण भुज्जई ॥
- ४—जहा खलु से उरब्भे आएसाए समीहिए ।
 एवं बाले अहम्मिद्वे ईहई नरयाउयं ॥
- ५—हिंसे बाले^५ मुसावाई अद्धाणंमि विलोवए ।
 अन्नदत्तहरे तेणे^६ माई कण्हुहरे^७ सढे ॥
- ६—इत्थीविसयगिद्वे य महारंभपरिग्गहे ।
 भुजमाणे सुरं मंसं परिवूढे परंदमे ॥
- ७—अयककरभोई य तुंदिल्ले चियलोहिए^८ ।
 आउयं नरए कंखे जहाएसं व एलए ॥
- ८—आसणं सयणं जाणं वित्तं कामे य भुंजिया ।
 दुस्साहडं धणं हिच्चा बहं संचिणिया रयं ॥

१—जवसे दैति (चू०) ।

२—विसयगणे (वृ० पा०, चू०) ।

३—पडिं (वृ०) : परिं (वृ० पा०) ।

४—एज्जति (चू०) ।

५—कोही (वृ० पा०) ।

६—बाले (वृ०) . तेणे (वृ० पा०) ।

७—किन्नुहरे (चू०) ; कन्नुहरे (सु) ।

८—^० सोणिए (उ, ऋ) ।

- ९—तओ कम्मगुरू जन्तू पच्चुप्पन्नपरायणे^१ ।
अय व्व आगयाएसे मरणन्तंमि सोयई ॥
- १०—तओ आउपरिक्खीणे 'चुया देहा'^२ विहिंसगा^३ ।
आसुरियं दिसं बाला^४ 'गच्छन्ति अवसा'^५ तमं ॥
- ११—जहां कागिणिए हेउं सहस्सं हारए नरो ।
अपत्थं अम्बगं भोच्चा राया रज्जं तु हारए ॥
- १२—एवं माणुस्सगा कामा देवकामाण अन्तिए ।
सहस्सगुणिया भुज्जो आउं कामा य^६ दिव्विया ॥
- १३—अणेगवासानउयो जा सा पन्नवओ ठिई ।
'जाणि जीयन्ति'^७ दुम्मेहा अणे वाससयाउए ॥
- १४—जहा य तिन्नि वणिया मूलं घेत्तूण निग्गया ।
एगोऽत्थ लहई लाहं एगो मूलेण आगओ ॥
- १५—एगो मूलं पि हारित्ता आगओ तत्थ वाणिओ ।
ववहारे उवमा एसा एवं धम्मे वियाणह ॥
- १६—माणुसत्तं भवे मूलं लाभो देवगई भवे ।
मूलच्छेएण जीवाणं नरगतिरिक्खत्तणं धुवं ॥
- १७—दुहओ गई बालस्स आवई वहमूलिया ।
देवत्तं माणुसत्तं च जं जिए लोलयासढे ॥

१—० पलज्जणे (चू०) ।

२—चुओदेहा (बृ०) ; चुयदेहो (बृ० पा०) ।

३—विहिंसगो (बृ०) ।

४—बालो (बृ०) ।

५—गच्छइ अवसो (बृ०) ।

६—उ (ऋ) ।

७—हारिन्ति (बृ० पा०) ।

- १८—तओ जिए सइं होइ दुविहं दोगइं गए ।
दुल्लाहा तस्स उम्मज्जा अद्दाए सुइरादविं ॥
- १९—एवं जिय^१ सपेहाए तुलिया वालं च पंडियं ।
मूलियं ते पवेसन्ति माणुसं जोणिमेन्ति^२ जे ॥
- २०—वेमायाहिं सिक्खाहि जे नरा गिहिसुव्वया ।
उवेन्ति माणुसं जोणिं कम्मसच्चा^३ हु पाणिणो ॥
- २१—जेसिंतु विउला सिक्खा मूलियं ते अइच्छिया^४ ।
सीलवन्ता सवीसेसा अदीणा जन्ति देवयं ॥
- २२—एवमदीणवं^५ भिक्खु अगारिं^६ च वियाणिया ।
कहण्णु जिच्चमेलिक्ख 'जिच्चमाणे न'^७ संविदे ? ॥
- २३—जहां कुसग्गे उदगं समुद्देण समं मिणे ।
एव माणुस्सगा कामा देवकामाण अन्तिए ॥
- २४—कुसग्गमेत्ता इमे कामा सन्निरुद्धंमि आउए ।
कस्स हेउं पुराकाउं^८ जोगक्खेमं न संविदे ? ॥
- २५—इह कामाणियट्टस्स अत्तट्टे अवरज्झई ।
'सोच्चा' नेयाउयं मग्गं जं भुज्जो परिभस्सई^९ ॥

१—जिए (वृ०) ।

२—जोणिमिन्ति (उ, चू०) ।

३—कम्मसत्ता (वृ० पा०, चू० पा०) ।

४—तिउच्छिया (अ) ; ते उद्धिया (चू०) , ते अइच्छिया (चू० पा०) ;
विउद्धिया, अत्तिद्धिया, अत्तिच्छिया (वृ०) ।

५—एव अदीगव (चू०, वृ०) ।

६—अगारिं (उ, ऋ) ।

७—जिच्चमाण व (चू०) ।

८—पुरोकाउ (चू०) ।

९—पत्तो (वृ० पा०, चू० पा०) ।

१०—पूइदेह निरोहेण भवे देवे त्ति मे सुय (चू० पा०) ।

- २६—'इह कामणियट्टस्स अत्तट्ठे नावरज्जई ।
 पूइदेहनिरोहेणं भवे देवि त्ति मे सुयं ॥'^१
- २७—इड्ढी जुई जसो वण्णो आउं सुहमणुत्तरं ।
 भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु तत्थ से उववज्जई ॥
- २८—बालस्स पस्स बालत्तं अहम्मं पड्डिवज्जिया^२ ।
 चिच्चा धम्म अहम्मिट्ठे नरए^३ उववज्जई ॥
- २९—धीरस्स पस्स धीरत्तं सव्वधम्माणुवत्तिणो ।
 चिच्चा अधम्मं धम्मिट्ठे^४ देवेषु उववज्जई ॥
- ३०—तुलियाण बालभावं अबालं चेव पण्डिए ।
 चंइऊण बालभावं अबालं सेवए मुणि ॥
 —त्ति वेमि ।

*

१—यह श्लोक चूर्ण में व्याख्यात नहीं है ।

२—पड्डिवज्जिणो (अ, वृ० पा०) ।

३—नरएसु (अ, उ) ।

४—धम्मट्ठे (उ) ।

अट्टमं अज्मयणं
काविलीयं

- १—अधुवे असासयंमि^१
ससारंमि दुक्खपउराए ।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं
'जेणाहं दोग्गडं न गच्छेज्जा'^२ ॥
- २—विजहित्तु पुव्वसंजोगं
न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा ।
असिणेह सिणेहकरेहिं
दोसपओसेहिं^३ मुच्चए भिक्खू ॥
- ३—तो नाणदंसणसमग्गो
हियनिस्सेसाए^४ सव्वजीवाणं ।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए
भासई मुणिवरो विगयमोहो ॥
- ४—सव्वं गन्थं कलहं च
विप्पजहे तहाविहं^५ भिक्खू ।
'सव्वेसु कामजाएसु'^६
पासमाणो न लिप्पई ताई ॥

१—अधुवमि मोह्गहणए (नागार्जुनीयाः) ।

२—जेणाह(ध) दुग्गइतो मुच्चेज्जा (चू०, वृ० पा०) ।

३—दोसपएहिं (वृ०) , दोसपउसेहिं (वृ० पा०) ।

४—हियनिस्सेसाय (चू०, सु) ।

५—तहाविहो (वृ० पा०, चू० पा०) ।

६—सव्वेहिं कामजाएहिं (चू०) ।

५—भोगामिसदोसविसण्णे

हियनिस्सेयसबुद्धिवोच्चत्थे ।

बाले य मन्दिए मूढे

बज्झई मच्छिया व खेलंमि ॥

६—दुपरिच्चया इमे कामा

नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं ।

अह सन्ति सुव्वया साहू'

जे तरन्ति 'अतरं वणिया व' ॥

७—समणा मु एगे वयमाणा

पाणवहं मिया अयाणन्ता ।

मन्दा निरयं^३ गच्छन्ति

बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ॥

८—न हु पाणवहं अणुजाणे

मुच्चेज्ज कयाइ सव्वदुक्खाणं ।

एवारिएहिं^४ अक्खायं

जेहि इमो साहुधम्मो पन्नत्तो ॥

९—पाणे य नाइवाएज्जा

से 'समिए त्ति'^५ वुच्चई ताई ।

तओ से पावयं कम्मं

निज्जाइ^६ उदगं व थलाओ ॥

१—सव्वे (चू०) ।

२—वणिया व समुद्धं (बू० पा०, चू०) ; अतर वणिया व (चू० पा०)

३—नरय (बू० पा०, चू०) ।

४—एवारिएहिं (अ, ऋ), एवमारिएहिं (आ, सु) ।

५—समिय त्ति (चू०), समीए त्ति (अ०), समीइ त्ति (उ. ऋ) ।

६—णिज्जाइ (बू० पा०) ।

- १०—'जगनिस्सिएहि भूएहि
तसनामेहि थावरेहि च ।'^१
नो तेसिमारभे दंडं
मणसा वयसा कायसा चेव ॥
- ११—सुद्धेसणाओ नच्चाणं
तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ।
जायाए घासमेसेज्जा
रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥
- १२—पन्ताणि चेव सेवेज्जा
सीयपिंडं पुराणकुम्मासं ।
अदु वुक्कसं पुलागं वा
'जवणद्दाए निसेवए'^२ मंथु ॥
- १३—जे लक्खणं च सुविणं च
अगविज्जं च जे पउंजन्ति ।
न हु ते समणा वुच्चन्ति
एवं आयरिएहि^३ अक्खायं ॥
- १४—इह्जीवियं अणियमेत्ता
पब्भट्ठा समाहिजोएहि ।
ते कामभोगरसगिद्धा
उववज्जन्ति आसुरे काए ॥

१—जगनिस्सियाण भूयाण तसाण थावराण य । (वृ० पा०) ;
जगणिसित भूताण तसणामाणं च थावराण च । (चू०) ;
जगनिस्सित्तैसु थावरणामेसु भूतैसु तसणामेसु वा । (चू० पा०) ;
जगनिस्सिएहि भूएहि तसनामेहि थावरे हि वा । (चू०) ।
२—जवणद्दा वा सेवए (वृ०) ; जवणद्दाए णिसेवए (वृ० पा०) ।
३—आरिएहि (अ, वृ०) ।

- १५—ततो वि य उवट्टिता
 संसारं बहूँ अणुपरियडन्ति^१ ।
 बहुकम्मलेवलित्ताणं
 बोही होइ^२ सुदुल्लाहा तेसिं ॥
- १६—कसिणं पि जो इमं लोयं
 पडिपुण्णं दलेज्ज इक्कस्स ।
 तेणावि से न संतुस्से^३
 इइ दुप्पूरए इमे आया ॥
- १७—जहा लाहो तथा लोहो
 लाहा लोहो पवड्ढई ।
 दोमासकयं कज्जं
 कोडीए वि न निट्ठियं ॥
- १८—नो रक्खसीसु गिज्जेज्जा
 गंडवच्छासु ण्णेगचित्तासु ।
 जाओ पुरिसं पलोभित्ता
 खेळन्ति जहा व दासेहिं ॥
- १९—नारीसु नोपगिज्जेज्जा
 इत्थी विप्पजहे अणगारे ।
 धम्मं च पेसलं नच्चा
 तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ॥

१—अनुपरियट्टंति (ऋ) : अनुपरियति (अ, वृ०) , अनुचरंति (वृ० पा०) ।

२—जल्थ (वृ० पा०) ।

३—संतुसिज्जा (ऋ) ; तुसिज्ज (उ) ; तुसिज्जा (अ) ; (स) तुस्से (चू०) ।

२०—इइ एस धम्मे अक्खाए
कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं ।
तरिहन्ति जे उ काहन्ति
तेहिं आराहिया दुवे लोण ॥
—त्ति वेमि ॥

*

नवम अज्जयणं

नमिपव्वज्जा

- १—चइऊण देवलोगाओ
 " उववन्तो माणुसंमि लोगंमि ।
 उवसन्तमोहणिज्जो
 सरई पोराणियं जाइं ॥
- २—जाइं सरित्तु भयवं
 सहसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।
 पुत्तं ठवेत्तु रज्जे
 अभिणिक्खमई नमी राया ॥
- ३—से देवलोगसरिसे
 अन्तेउरवरगओ वरे भोए ।
 भुंजित्तु नमी राया
 बुद्धो भोगे परिच्चयई ॥
- ४—मिहिल सपुरजणवय
 बलमोरोहं च परियणं सब्वं ।
 चिच्चा अभिनिक्खन्तो
 एगन्तमहिद्धिओ भयवं ॥
- ५—कोलाहलगभूयं
 आसी मिहिलाए पव्वयन्तंमि ।
 तइया रायरिसिंमि
 नमिमि अभिणिक्खमन्तंमि ॥
- ६—अब्भुद्धियं रायरिसिं पव्वज्जाठाणमुत्तमं ।
 सको माहणरूवेण इमं वयणमब्बवी ॥

- ७—किण्णु भो ! अञ्ज मिहिलाए कोलाहलगसंकुला । १-२-३ ?
 सुव्वन्ति दारुणा सदा पासाएमु गिहेसु य ? ॥
- ८—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ । १
 तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥
- ९—मिहिलाए चेइए वच्छे सीयच्छाए मणोरसे ।
 पत्तपुप्फफलोवेए वहुणं बहुगुणे सया ॥
- १०—वाएण हीरमाणंमि चेइयंमि मणोरसे ।
 दुहिया असरणा अत्ता एए कन्दन्ति भो ! खगा ॥
- ११—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ । १
 तओ नमि रायरिसि देविन्दो इणमव्ववी ॥
- १२—एस अग्गी य वाऊ य एयं डज्झइ मन्दिरं ।
 भयवं ! अन्तेउरं तेणं कीसणं नावपेक्खसि ? ॥
- १३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ । १
 तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥
- १४—सुहं वसामो जीवामो जेसिं मो नत्थि किंचण ।
 मिहिलाए डज्झमाणीए न मे डज्झइ किंचण
- १५—चत्तपुत्तकलत्तस्स निव्वावारस्स भिक्खुणे
 पियं न विज्जई किंचि अप्पियं पि न विज्जए
- १६—बहुं खु मुणिणो भदं अणगारस्स भिक्खुणे
 सव्वओ विप्पमुक्कस्स एगन्तमणुपस्सओ
- १७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमि रायरिसि देविन्दो इणमव्ववी

- १८—पागारं कारइत्ताणं गोपुरट्टालगाणि च ।
उत्सूलगसयग्धीओ^१ तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥
- १९—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥
- २०—सद्धं नगरं^२ किच्चा तवसंवरमग्गलं ।
'खन्ति निउणपागारं तिगुत्तं दुप्पधंसयं'^३ ॥
- २१—धणुं परक्कमं किच्चा जीवं च इरियं सया ।
धिइं च केयणं किच्चा सच्चेण पल्लिमन्थए^४ ॥
- २२—तवनारायजुत्तेण भेत्तूणं कम्मकंचुयं ।
मुणी विगयसंगामो भवाओ परिमुच्चए ॥
- २३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमि रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥
- २४—पासाए^५ कारइत्ताणं वद्धमाणगिहाणि य ।
बालगपोइयाओ य तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥
- २५—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥
- २६—संसयं खलु सो कुणई, जो मग्गे कुणई घरं ।
जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा तत्थ कुव्वेज्जा सासयं ॥
- २७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमि रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

१—उच्छूलग^० (स) ।

२—नगरीं (वृ०) ।

३—खन्ति निउण पागार तिगुत्ति दुप्पधसय (वृ० पा०) ।

४—पल्लिकथए (चू०) ।

५—पासायं (ऋ) ।

- २८—आमोसे लोमहारे य गंठिभेए य तकूरे ।
नगरस्स खेमं काऊणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥
- २९—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥
- ३०—असइं तु मणुस्सेहिं मिच्छा दण्डो पजुंजई ।
अकारिणोऽत्थ वज्झन्ति मुच्चई कारओ जणो ॥
- ३१—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमव्ववी ॥
- ३२—जे केइ पत्थिवा तुब्भं^१ नानमन्ति नराहिवा ! ।
वसे ते ठावइत्ताणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥
- ३३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥
- ३४—जो सहस्सं सहस्साणं संगामे दुज्जेण जिणे ।
एणं जिणेज्ज अप्पाणं एस से परमो जओ ॥
- ३५—अप्पाणमेव जुज्झाहि किं ते जुज्जेण वज्झओ ।
अप्पाणमेव^२ अप्पाणं जइत्ता सुहमेहए ॥
- ३६—पंचिन्दियाणि कोहं माणं मायं तहेव लोहं च ।
दुज्जयं चैव अप्पाणं सव्वं अप्पे जिए जियं ॥
- ३७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमव्ववी ॥
- ३८—जइत्ता विउले जन्ने भोइत्ता समणमाहणे ।
दच्चा भोच्चा य जट्ठा य तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥

१—तुज्झ (वृ० पा०) ।

२—अप्पणा चैव (अ) ।

- ३९—एयमट्टं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥
- ४०—जो सहस्स सहस्साण मासे मासे गवं दए ।
तस्सावि संजमो सेओ अदिन्तस्स वि किंचण ॥
- ४१—एयमट्टं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमि रायरिसि देविन्दो इणमव्ववी ॥
- ४२—घोरासमं चइत्ताणं अन्नं पत्थेसि आसमं ।
इहेव पोसहरओ भवाहि मणुयाहिवा ! ॥
- ४३—एयमट्टं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥
- ४४—मासे मासे तु जो वालो कुसगेण तु^१ भुंजए ।
न सो सुयक्खायधम्मस्स कलं अग्घइ सोलसि ॥
- ४५—एयमट्टं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमि रायरिसि देविन्दो इणमव्ववी ॥
- ४६—हिरणंसुवण्णं मणिमुत्तं कंसं दूसं 'च वाहणं'^२ ।
कोसं वड्ढावइत्ताणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥
- ४७—एयमट्टं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥
- ४८—सुवण्णरूपस्स उ^३ पव्वया भवे
सिया हु केलाससमा असंखया ।
नरस्स लुंद्धस्स न तेहिं^४ किंचि
इच्छा उ आगाससमा अणन्तिया ॥

१—जहिलाणं (वृ० पा०) ।

२—व (अ) ।

३—सवाहण (वृ० पा०, चू०) ।

४—य (अ) ।

५—तेणं (वृ० पा०) ।

- ४९—पुढवी साली जवा चैव हिरण्णं पसुभिस्सह ।
पड्डिपुण्णं^१ नालमेगस्स इइ विज्जा तवं चरे ॥
- ५०—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमव्ववी ॥
- ५१—अच्छेरगमव्वुदए भोए चयेसिं^२ पत्थिवा^३ ।
असन्ते कामे पत्थेसिं संकप्पेण विहन्सि ॥
- ५२—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥
- ५३—सल्लं कामा विसं कामा कामा आसीविसोवमा ।
कामे पत्थेमाणा अकामा जन्ति दोग्गइं ॥
- ५४—अहे वयइ कोहेणं माणेणं अहमा गई ।
माया गईपड्डिग्घाओ लोभाओ दुहओ भयं ॥
- ५५—अवउज्झिऊण माहणहवं विउव्विऊण इन्दत्तं ।
वन्दइ अभित्युणन्तो इमाहि महुराहिं वग्गूहिं ॥
- ५६—अहो ते निज्जिओ कोहो अहो ते माणो पराजिओ ।
अहो ते निरक्किया माया अहो ते लोभो वसीकओ ॥
- ५७—अहो ते अज्जवं साहु अहो ते साहु मद्दवं ।
अहो ते उत्तमा खन्ती अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥
- ५८—इहं सि उत्तमो भन्ते पेच्चा होहिसि उत्तमो ।
लोगुत्तमुत्तमं^४ ठाणं सिद्धिं गच्छसि नीरओ ॥

१—सव्वत (वृ० पा०) ।

२—जहसि (वृ०) , चयसि (वृ० पा०) ।

३—सत्तिया (वृ० पा०) ।

४—लोगुत्तम मुत्तमं (वृ० पा०) ।

५९—एवं अभित्थुणन्तो.
 रायरिसि उत्तमाए सद्धाए ।
 पयाहिणं^१ करेन्तो
 पुणो पुणो वन्दई सक्को ॥
 ६०—तो^२ वन्दिऊण पाए
 चक्कंकुसलक्खणे मुणिवरस्स ।
 आगासेणुप्पइओ
 ललियचवलकुंडलतिरीडी ॥
 ६१—नमी नमेइ अप्पाणं सक्खं^३ सक्केण चोइओ ।
 चइऊण गेहं वइदेही सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥
 ६२—एवं करेन्ति संबुद्धा^४ पंडियां पवियक्खणा ।
 विणियट्ठन्ति भोगेसु जहा से नमी रायरिसि ॥
 —त्ति बेमि ॥

१—पायाहिण (वृ०) ।

२—स (वृ० पा०) ।

३—सक्कं (क्क) ।

४—सपन्ना (चू०) ।

दसमं अज्भयणं

दुमपत्तयं

१—दुमपत्तए पण्डुयए जहा
निवडइ राइगणाण - अच्चए । -

एवं मणुयाण जीवियं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

२—कुसग्गे जह ओसबिन्दुए
थोवं चिट्ठइ लम्बमाणए ।

एवं मणुयाण जीवियं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

३—'इइ इत्तरियम्मि आउए
जीवियए बहुपच्चवायए'^१ ।

विट्ठणाहि रयं पुरे कडं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

४—दुलहे खलु माणुसे भवे
चिरकालेण वि सव्वपाणिणं ।

गाढा य विवाग कम्मणो
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

५—पुढविक्कायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे ।

कालं संखाइयं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१—एवं मणुयाण जीविए
एत्तिरिए बहुपच्चवायए । (वृ० पा०) ।

६—आउक्कायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

७—तेउक्कायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

८—वाउक्कायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

९—वणस्सइक्कायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालमणन्तदुरन्तं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१०—त्रेइन्दियकायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखिज्जसन्नियं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

११—तेइन्दियकायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखिज्जसन्नियं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१२—चउरिन्दियकायमङ्गओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 कालं संखिज्जसन्नियं
 समयं गोयम! मा पमायए ॥

१३—पंचिन्दियकायमङ्गओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 सत्तट्ठभवग्गहणे
 समयं गोयम! मा पमायए ॥

१४—देवे नेरइए य अङ्गओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
 इक्किक्कभवग्गहणे
 समयं गोयम! मा पमायए ॥

१५—एवं

भवसंसारे
 जीवो संसरइ सुहासुहेहि कम्मोहि ।
 पमायवहुलो
 समयं गोयम! मा पमायए ॥

१६—लद्धूणं

वि माणुसत्तणं
 वहेवे आरिजत्तं पुणरावि दुद्धं ।
 दसुया मिलेक्खुया
 समयं गोयम! मा पमायए ॥

१७—लद्धूणं

वि आरियत्तणं
 विगलिन्दियया अहीणपंचिन्दियया हु दुद्धा ।
 हु दीसई
 समयं गोयम! मा पमायए ॥

१८—अहीणपंचिन्दियत्तं पि से लहे
 उत्तमधम्मसुई हु दुल्लाहा ।
 कुत्तित्थिनिसेवए^१ जणे
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१९—लद्धूण वि उत्तमं सुइं
 सद्दहणा पुणरावि दुल्लाहा ।
 मिच्छत्तनिसेवए जणे
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

२०—धम्मं पि हु सद्दहन्तया
 दुल्लाहया^२ काएण फासया ।
 इह कामगुणेहि^३ मुच्छिया
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

२१—परिजूरइ ते सरीरयं
 केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
 से सोयबले य हायई
 समय गोयम ! मा पमायए ॥

२२—परिजूरइ ते सरीरयं
 केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
 से चक्खुबले य हायई
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१—कुत्तित्थं (वृ० पा०, चू०) ।

२—दुल्लाहा (उ) ।

३—कामगुणेषु (उ, म, वृ०) ; काम गुणेहि (वृ० पा०) ।

- २३—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से घाणबले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए ॥
- २४—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा, पण्डुरया हवन्ति ते ।
से जिग्भबले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए ॥
- २५—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से फासबले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए ॥
- २६—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से सव्वबले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए ॥
- २७—अरई गण्डं विसूइया
आयका विविहा फुसन्ति ते ।
विवडइ विद्धंसइ ते सरीरयं
समयं गोयम! मा पमायए ॥
- २८—बोद्धिन्द सिणेहमप्पणो
कुमुयं सारइयं व^र पाणियं ।
से सव्वसिणेहवज्जिए
समयं गोयम! मा पमायए ॥

२९—चिच्चाण धणं च भारियं
 पव्वइओ हि सि अणगारियं ।
 मा वन्तं पुणो वि आइए
 समयं गोयम! मा पमायए ॥

३०—अवउज्जियं मित्तवन्धवं
 विउलं चैव धणोहसंचयं ।
 मा तं विइयं गवेसए
 समयं गोयम! मा पमायए ॥

३१—न हु जिणे अज्ज दिस्सई
 बहुमए दिस्सई मग्गदेसिए ।
 संपइ नेयाउए पहे
 समयं गोयम! मा पमायए ॥

३२—अवसोहिय कण्टगापहं
 ओइण्णो सि पहं महालयं ।
 गच्छसि मग्गं विसोहिया
 समयं गोयम! मा पमायए ॥

३३—अबले जह भारवाहए
 मा मग्गे विससे वगाहिया ।
 पच्छा पच्छाणुतावए
 समयं गोयम! मा पमायए ॥

३४—तिण्णो हु सि अण्णवं महं
 किं पुण चिद्धसि तीरमागओ ।
 अभितुर पारं गमित्तए
 समयं गोयम! मा पमायए ॥

३५—अकलेवरसेणिमुस्सिया

सिद्धिं गोयंम लोयं गच्छसि ।

खेमं च सिवं अणुत्तरं

समयं गोयम! मा पमायए ॥

३६—बुद्धे

परिनिव्वुडे चरे

गामगए नगरे व संजए ।

सन्तिमगं च बूहए

समयं गोयम! मा पमायए ॥

३७—बुद्धस्स

निसम्म भासियं

सुकहियमट्टपओवसोहियं ।

रागं दोसं च छिन्दिया

सिद्धिगइं गए गोयमे ॥

—त्ति बेमि ॥

*

इकारसमं अञ्जभयणं

बहुस्सुयपुज्जा

- १—संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो ।
आयारं पाउकरिस्सामि आणुपुव्वि सुणेह मे ॥
- २—जे यावि होइ निव्विज्जे थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
अभिक्खणं उल्लवई अविणीए अबहुस्सुए ॥
- ३—अह पंचहिं ठाणेहि जेहिं सिक्खा न लब्भई ।
थम्भा कोहा पमाणं रोगेणाऽलस्सएण य ॥
- ४—अह अट्टहिं ठाणेहि सिक्खासीले त्ति वुच्चई ।
अहस्सिरे सया दन्ते न य मम्ममुदाहरे ॥
- ५—नासीले न विसीले न सिया अइलोलुए ।
अकोहणे सच्चरए सिक्खासीले त्ति वुच्चई ॥
- ६—अह चउदसहिं ठाणेहिं वट्टमाणे उ संजए ।
अविणीए वुच्चई सो उ निव्वाणं च न गच्छइ ॥
- ७—अभिक्खणं कोही हवइ पबन्धं च पकुव्वई ।
मेत्तिज्जमाणो वमइ सुयं लद्धूण मज्जई ॥
- ८—अवि पावपरिक्खेवी अवि मित्तेसु कुप्पई ।
सुप्पियस्सावि मित्तस्स रहे भासइ पावगं ॥
- ९—पइण्णवाई दुहिले थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
असंविभागी अचियत्ते अविणीए त्ति वुच्चई ॥
- १०—अह पन्नरसहिं ठाणेहिं सुविणीए त्ति वुच्चई ।
नीयावत्ती अचवले अमाई अकुञ्जहले ॥

- ११—अप्यं चाऽहिक्विवई^१ पबन्धं च न कुव्वई ।
मेत्तिज्जमाणो भयई सुयं लद्धं न मज्जई ॥
- १२—न य पावपरिक्खेवी न य मित्तसु कुप्पई ।
अप्पियस्सावि मित्तस्स रहे कल्लाणं भासई ॥
- १३—कलहडमरवज्जए वुद्धे अभिजाइए ।
हिरिमं पडिसंलीणे सुविणीए त्ति वुच्चई ॥
- १४—वसे गुरुकुले निच्चं जोगवं उवहाणवं ।
पियंकरे पियंवाई से सिक्खं लद्धुमरिहई ॥
- १५—जहा संखम्मि पयं
'निहियं दुहओ'^२ वि विरायइ ।
एवं बहुस्सुए भिक्खू
धम्मो कित्ती तहा सुयं ॥
- १६—जहा से कम्बोयाणं आइण्णे कन्थए सिया ।
आसे जवेण पवरे एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- १७—जहाइण्णसमारुढे सूरे दढपरक्कमे ।
उभओ नन्दिघोसेणं एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- १८—जहा करेणुपरिकिण्णे कुंजरे सट्ठिहायणे ।
बलवन्ते अप्पडिहए एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- १९—जहा से तिक्खसिंणे जायखन्वे विरायई ।
वसहे जूहाहिवई एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २०—जहा से तिक्खदाढे उदग्गे दुप्पहंसए ।
सीहे मियाण पवरे एवं हवइ बहुस्सुए ॥

१—चाऽहिक्विवइ (अ) ; चाऽहिक्विवइ (उ) ।

२—णिसित उभयतो (च०) ।

- २१-जहा से त्रासुदेवे संखञ्जकगयाधरे ।
अप्प्रडिहयबले जोहे एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २२-जहा से चाउरन्ते चक्कवट्टी महिडिडए ।
चउदसरयणाहिवई एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २३-जहा से सहस्सक्खे वज्जपाणी पुरन्दरे ।
सक्खे देवाहिवई एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २४-जहा से तिमिरविद्धंसे उत्तिट्ठन्ते दिवायरे ।
जलन्ते इव तेएण एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २५-जहा से उडुवई च्चन्दे नक्खत्तपरिवारिए ।
पडिपुण्णे पुण्णमासीए एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २६-जहा से साम्माइयाणं^१ कोट्टागारे सुरक्खिए ।
नाणाधन्मपडिपुण्णे एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २७-जहा सा दुमाण पवरा जम्बू नाम सुदंसणा ।
अणाडियस्स देवस्स एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २८-जहा सा नईण पवरा सलिल्ला सागरंगमा ।
सीया नीलवन्तपवहा^२ एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २९-जहा से नगाण पवरे सुमहं मन्दरे गिरी ।
नाणोसहिपज्जलिए एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- ३०-जहा से सयंभूरमणे उदही अक्खओदए ।
नाणाख्यणपडिपुण्णे^३ एवं हवइ बहुस्सुए ॥

१-साम्माइयर्णाणं (षु० पा०) ।

२-० पवहा (षु०) ; ० पवहा (षु० पा०) ।

३-० संपुण्णे (अ) ।

- ३१—समुद्गम्भीरसमा दुरसंसया
 अचक्रियो केणइ दुप्पहंसया^१ ।
 सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो
 खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥
- ३२—तम्हो सुयमहिद्वेज्जा उत्तमद्वगवेसए^२ ।
 जेणऽप्याणं परं चेव सिद्धिं संपाउणेज्जासि ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१—दुप्पहंसिया (चू०) ।

२—उत्तमिद्व ° (अ) ।

वारसमं अज्भयणं

हरिएसिज्जं

१—सोवागकुलसंभूओ

गुणुत्तरधरो^१ मुणी ।

हरिएसबलो

नाम

आसि भिक्खू जिइन्दिओ ॥

२—इरिएसणभासाए

उच्चारसमिईसु य ।

जओ

आयाणनिक्खेवे

संजओ सुसमाहिओ ॥

३—मणगुत्तो

वयगुत्तो

कायगुत्तो जिइन्दिओ ।

भिक्खट्ठा

बम्भइज्जम्मि

जन्नवाडं उवट्ठिओ ॥

४—तं पासिऊणमेज्जन्तं तवेण परिसोसियं ।

पन्तोवहिउवगरणं उवहसन्ति अणारिया ॥

५—जाईमयपडिथट्ठा^२ हिसगा अजिइन्दिया ।

अबम्भचारिणो बाला इमं वयणमव्ववी ॥

६—'कयरे आगच्छइ'^३ दित्तरूवे

काले विगराले फोक्कनासे ।

ओमचेलए

पंसुपिसायभूए

संकरदूसं परिहरिय कण्ठे ॥

१—अणुत्तरधरो (अ, वृ०पा०, चू०) ।

२—^० पडिथट्ठा (उ, वृ०पा०) ।

३—कयरे तुम एसिघ (चू०) ; कयरे आगच्छति (चू० पा०) ;

को रे आगच्छइ (वृ० पा०) ।

७-क्यरे^१ तुमं इय अदंसणिज्जे
 काए व आसाइ हमागओ सि ।
 ओमचेलगा पंसुपिसायभूया
 गच्छ क्वलाहि किमिहं ठिओसि ? ॥

८-जक्खो तहिं तिन्दुयस्खवासी
 अणुकम्पओ तस्स महामुणिस्स ।
 पच्छायइत्ता नियग सरीरं
 इमाइं वयणाइमुदाहरित्था ॥

९-समणो अहं संजओ बम्भयारी
 विरओ धणपयणपरिग्गहाओ ।
 परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले
 अन्नस्स अट्ठा इहमागओ मि ॥

१०-वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जई य
 अन्नं पभूयं भवयाणमेयं ।
 जाणाहि मे जायणजीविणु^२ त्ति
 सेसावसेसं लभऊ तवस्सी ॥

११-उवक्खडंभोयण माहणाणं
 अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं ।
 न ऊ वयं एरिसमन्नपाणं
 दाहामु तुज्झं किमिहं ठिओ सि ? ॥

१-को रे (सु० पा०, वृ० पा०) ।

२-^० जीवणो त्ति (वृ० पा०) ।

१२-थलेसु बीयाइ ववन्ति कासगा
 तहेव निन्नेसु य आससाए ।
 एयाए सद्धाए दलाह मज्झं
 'आराहए पुण्णमिणं खु खेत्त'^१ ॥

१३-खेत्ताणि अम्हं विइयाणि लोए
 जहिं पक्किणा विरुहन्ति पुण्णा ।
 जे माहणा जाइविज्जोववेया
 ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥

१४-कोहो य माणो य वहो य जेसि
 मोसं अदत्तं च परिग्गहं च ।
 ते माहणा जाइविज्जाविहूणा
 ताइं तु खेत्ताइं सुपावयाइं ॥

१५-तुब्भेत्थ भो भावधरा^२ गिराणं
 अट्ठं न जाणाह अहिज्ज वेए ।
 उच्चावयाइं मुणिणो चरन्ति
 ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥

१६-अज्झावयाणं पडिकूलभासी
 पभाससे किं तु सगासि अम्हं ।
 अवि एयं विणस्सउ अन्नपाणं^३
 न य णं दहामु तुमं नियण्ठा ! ॥

१-आराहगा होहिम पुण्ण खेत्त' (बु० पा०) ।

२-भास्वहा (बु० पा०) ।

३-भत्तपाण (ऋ) ।

१७-समिईहि मज्झं सुसमाहियस्स
 गुत्तीहि गुत्तस्स जिइन्दियस्स ।
 जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं
 किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाहं ? ॥

१८-के एत्थ खत्ता उवजोइया वा
 अज्भावया वा सह खण्डिएहिं ।
 एयं^१ दण्डेण फलेण हन्ता
 कण्ठम्मि घेत्तूण खलेज्ज जो णं ? ॥

१९-अज्भावयाणं वयणं सुणेत्ता
 उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा ।
 दण्डेहि वित्तेहि कसेहि चेव
 समागया तं 'इसि तालयन्ति'^२ ॥

२०-रन्नो तहिं कोसलियस्स धूया
 भइ त्ति नामेण अणिन्दियंगी ।
 तं पासिया संजय हम्ममाणं
 कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥

२१-देवाभिओगेण निओइएणं
 दिन्ना मु रत्ता मणसा न भ्माया ।
 नरिन्ददेविन्दऽभिवन्दिएणं
 जेणमिह वन्ता इसिणा स एसो ॥

१-एय खु (अ उ) ; एयं तु (आ) ।

२-इसि ताडयति (उ, ऋ) ।

२२-एसो हु सो उग्गतवो महप्पा
 जिइन्दिओ संजओ बम्भयारी ।
 'जो मे'^१ तया नेच्छइ दिज्जमाणि
 पिउणा सयं कोसलिएण रन्ना ॥

२३-महाजसो एस महाणुभागो^२
 घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
 मा एयं हीलह अहीलणिज्जं
 मा सव्वे तेएण भे निद्दहेज्जा ॥

२४-एयाइं तीसे वयणाइ सोच्चा
 पत्तीइ भद्दाइ सुहासियाइं ।
 इसिस्स वेयावडियट्टयाए
 जक्खा कुमारे विणिवाडयन्ति^३ ॥

२५-ते घोररूवा ठिय अन्तलिकखे
 असुरा तहि तं जणं तालयन्ति ।
 ते भिन्नदेहे रुहिरं वमन्ते
 पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥

२६-गिरि नहेहि खणह
 अयं दन्तेहि खायह ।
 जायतेयं पाएहि हणह
 जे भिक्खु अवमन्नह ॥

१-जो म (अ, आ०) ।

२-महानुभावो (वृ० पा०, चू०) ।

३-विणिवारयन्ति (वृ० पा०) ।

२७-आसीविसो उग्गतवो महेसी
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
अगणि व पक्खन्द पयंगसेणा
जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह^१ ॥

२८-सीसेण एयं सरणं उवेह
समागया सव्वजणेण तुब्भे ।
जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा
लोगं पि एसो कुविओ डहेज्जा ॥

२९-अवहेडिय^२ पिट्टिसउत्तमंगे
पसारियाबाहु अकम्मचेट्टे ।
निब्भेरियच्छे रुहिरं वमन्ते
उड्डंमुहे निग्गयजीहनेत्ते ॥

३०-ते पासिया खण्डिय कट्टभूए
विमणो विसण्णो अह माहणो सो ।
इसि पसाएइ सभारियाओ.
हीलं च निन्दं च खमाह भन्ते ! ॥

३१-बालेहि मूढेहि अयाणएहि
जं हीलिया तस्स खमाह भन्ते ! ।
महप्पसाया इसिणो ह्वन्ति
न ह्नु मुणी कोवपरा ह्वन्ति ॥

१-हणेह (ऋ) ।

२-आवडिय (वृ० पा०) ।

- ३२-‘पुर्व्वि च इण्हि च अणागयं च’^१
 मणप्पदोसो न मे अत्थि कोइ ।
 जक्खा हु वेयावडियं करेन्ति
 तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥
- ३३-अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा
 तुब्भे न वि कुप्पह भूइपत्ता ।
 तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो
 समागया सव्वजणेण अम्हे ॥
- ३४-अच्चेमु ते महाभाग!^२ न ते किञ्चि न अच्चिमो ।
 भुंजाहि सालिमं कूरं नाणावंजणसंजुयं ॥
- ३५-इमं च मे अत्थि पभूयमन्नं
 तं भुंजसू अम्ह अणुग्गहट्ठा ।
 बाढं ति पडिच्छइ भत्तपाणं
 मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥
- ३६-तहियं गन्धोदयपुप्फवासं
 दिव्वा तर्हि वसुहारा य वुट्ठा ।
 पहयाओ^३ दुन्दुहीओ सुरेहि
 आगासे अहो दाणं च घुट्टं ॥
- ३७-सक्खं खु दीसइ तवोविसेसो
 न दीसई जाइविसेस कोई ।
 ‘सोवागपुत्ते हरिएससाहू’^४
 जस्सेरिसा इड्ढि महाणुभागा ॥

१-पुर्व्वि च पच्छा व त्थेव मज्झे (वृ० पा०) ; पुर्व्वि च पच्छा व अणागय च (वृ०)

२-महाभागा ! (अ, उ, ऋ) ।

३-पहया (उ, ऋ) ।

४-सोवागपुत्तं हरिएससाहू (वृ० पा०) ।

- ३८—कि माहणा ! जोइसमारभन्ता
 उदएण सोहि वहिया विमग्गहा ? ।
 जं मग्गहा वाहिरियं विसोहिं
 न तं सुदिट्ठं कुसला वयन्ति ॥
- ३९—कुसं च जूवं तणकट्टमग्गि
 सायं च पायं उदगं फुसन्ता ।
 पाणाइ भूयाइ विहेडयन्ता
 भुज्जो वि मन्दा ! पगरेह पावं ॥
- ४०—कहं चरे ? भिक्खु ! वयं जयामो ?
 पावाइ कम्माइ पणोल्लयामो ? ।
 अक्खाहि णे संजय ! जक्खपूइया !
 कहं सुजट्ठं कुसला वयन्ति ? ॥
- ४१—छ्ज्जीवकाए असमारभन्ता
 मोसं अदत्तं च असेवमाणा ।
 परिग्गहं इत्थिओ माणमायं
 एयं परिन्नाय चरन्ति^१ दन्ता ॥
- ४२—सुसंबुडो^२ पंचहिं संवरेहि
 इह जीवियं अणवकंखमाणो^३ ।
 वोसट्टकाओ^४ सुइचत्तदेहो^५
 महाजयं जयई जन्नसिट्ठं ॥

१—चरेज्ज (वृ०) ; चरन्ति (वृ० पा०) ।

२—सुसंबुडा (उ, सु) ।

३—अणवकंखमाणा (उ, सु) ।

४—वोसट्टकाया (उ, सु) ।

५—सुइचत्तदेहा (उ, सु) ।

- ४३—के ते जोई ? के व ते जोइठाणे ?
 का ते सुया ? कि व^१ ते कारिसंगं ? ।
 एहा य ते कयरा सन्ति ? भिक्खू !
 कयरेण होमेण हुणासि जोइं ? ॥
- ४४—तवो जोई जीवो जोइठाणं
 जोगा सुया सरीरं कारिसंगं ।
 कम्म एहा संजमजोगसन्ती
 होम हुणामी इसिणं पसत्थं ॥
- ४५—के ते हरए ? के य ते सन्तितित्थे ?
 कहिसि ण्हाओ व रयं जहासि ? ।
 आइक्ख णे संजय ! जक्खपूइया ।
 इच्छामो नाउं भवओ सगासे ॥
- ४६—धम्मे हरए बम्भे सन्तितित्थे
 अणाविले अत्तपसन्नलेसे ।
 जहिसि ण्हाओ विमलो विसुद्धो
 सुसीइभूओ^२ पजहामि दोसं ॥
- ४७—एयं सिणाणं कुसलेहि दिट्ठं
 महासिणाणं इसिणं पसत्थं ।
 'जहिसि ण्हाया'^३ विमला विसुद्धा
 महारिसी उत्तम ठाण पत्त ॥
 —त्ति वेमि ॥

१—च (उ, ऋ) ।

२—सुसीलभूओ (वृ० पा०) ।

३—जहिं सिणाया (अ, उ, ऋ) ।

तेरसमं अज्भयणं
चित्तसम्भूज्जं

- १-जाईपराजिओ खलु
कासि नियाणं तु हत्थिणपुरम्मि ।
चुलणीए बम्भदत्तो
उववन्तो पउमगुम्माओ ॥
- २-कम्पिल्ले संभूओ
चित्तो पुण जाओ पुरिमतालम्मि ।
सेट्टिकुलम्मि विसाले
धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥
- ३-कम्पिल्लम्मि य नयरे
समागया दो वि चित्तसम्भूया ।
सुहदुक्खफलविवागं
कहेन्ति ते एकमेक्कस्स ॥
- ४-चक्कवट्टी महिड्ढीओ वम्भदत्तो महायसो ।
भायरं बहुमाणेणं इमं वयणमव्ववी ॥
- ५-आसिमो भायरा दो वि अन्नमन्नवसाणुगा ।
अन्नमन्नमणूरत्ता अन्नमन्नहिएसिणो ॥
- ६-दासा दसण्णे आसी मिया कालिंजरे नगे ।
हंसा मयंगतीरे^१ सोवागा^२ कासिभूमिए ॥

१-मयगतीराए (अ, उ, ऋ) ।

२-चडाला (उ, ऋ) ।

- ७—देवा य^१ देवलोगम्मि आसि अम्हे महिड्ढिया ।
 'इमानो'^२ छट्ठिया जाई अन्नमन्नेण जा विणा ॥
- ८—कम्मा नियाणप्पगडा तुमे राय विचिन्तिया ।
 तेसि फलविवागेण विप्पओगमुवागया ॥
- ९—सच्चसोयप्पगडा कम्मा मए पुरा कडा ।
 ते 'अज्ज परिभुंजामो किं नुचित्ते वि सेतहा ? ॥
- १०—सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं
 कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।
 अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहि
 आया ममं पुण्णफलोववेए ॥
- ११—जाणासि संभूय ! महाणुभागं
 महिड्ढियं पुण्णफलोववेयं ।
 चित्तं पि जाणाहि तहेव रायं !
 इड्ढी जुई तस्स वि य प्पभूया ॥
- १२—महत्थरूवा वयणप्पभूया
 गाहाणुगीया नरसंघमज्जे ।
 जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया
 'इहज्जयन्ते समणो'^३ म्हि जाओ ॥
- १३—उच्चोयए महु कक्के य बम्भे
 पवेइया आवसहा 'य रम्मा'^४ ।
 इम गिहं चित्तघणप्पभूयं^५
 पसाहि पंचालगुणोववेयं ॥

१—वि (उ) ।

२—इमामे (वृ०) ; इमानो (वृ० पा०) ।

३—इहज्जयन्ते सुमणो (चू० पा०) ; इहज्जयन्ते सुमणो (वृ० पा०) ।

४—उत्तरम्मा, सुरम्मा वा (वृ० पा०) ।

५—वित्तघणोववेय (वृ०) ; घणवित्तोववेय (चू०) ; वित्तघणप्पभूय (वृ० पा०) ।

- १४—नट्टेहि गीएहि य वाइएहि
नारीजणाइं परिवारयन्तो^१ ।
भुंजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू !
मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ॥
- १५—तं पुव्वनेहेण कयाणुरागं
नराहिवं कामगुणेषु गिद्धं ।
धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही
चित्तो इमं वयणमुदाहरित्था^२ ॥
- १६—सव्वं विलवियं गीयं सव्वं नट्टं विडम्बियं^३ ।
सव्वे आभरणा भारा सव्वे कामा दुहावहा ॥
- १७—‘बालाभिरामेषु दुहावहेसु
न तं सुहं कामगुणेषु रायं ।
विरत्तकामाण तवोधणाणं
जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं ॥’^४
- १८—नरिद ! जाई अहमा नराणं
सोवागजाई दुहओ गयाणं ।
जहि वयं सव्वजणस्स वेस्सा
वसीय सोवागनिवेसणेषु ॥
- १९—तीसे य जाईइ उ पावियाए
वुच्छामु सोवागनिवेसणेषु ।
सव्वस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा
इहं तु कम्माइं पुरेकडाइं ॥

१—पवियारियंतो (वृ० पा०) ; परियारयतो (अ, उ, ऋ) ।

२—वक्क^० (वृ०) ; वयण^० (वृ० पा०) ।

३—विडवणा (उ, चू०) ।

४—यहःश्लोक चूणि में व्याख्यात नहीं है ।

- २०—सो दाणि सि राय । महाणुभागो
महिडिढओ पुण्णफलोववेओ ।
चइत्तु भोगाइ असासयाइं
'आयाणहेउं अभिणिकखमाहि'^१ ॥
- २१—इह जीविए राय । असासयम्मि
धणियं तु पुण्णाइं अकुव्वमाणो ।
से सोयई मच्चुमुहोवणीए
धम्मं अकाऊण परंसि लोए ॥
- २२—जहेह सीहो व मियं गहाय
मच्चू नरं नेइ हु अन्तकाले ।
न तस्स माया 'व पिया व भाया'^२
कालम्मि तम्मिसहरा^३ भवन्ति ॥
- २३—न तस्स दुक्खं विभयन्ति नाइओ
न मित्तवग्गा न सुया न बन्धवा ।
एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं
कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं ॥
- २४—चेच्चा दुपयं च चउप्पयं च
खेत्तं गिहं धणधन्नं च सव्वं ।
कम्मप्पवीओ^४ अवसो पयाइ
परं भवं सुंदर पावगं वा ॥

१—आदाणमेव अणुचित्तयाहि (चू०) ; आदाण हेउ अभिणिकखमाहि (चू० पा०) ;
आयाणमेवा अणुचित्तयाहि (वृ० पा०) ।

२—न पिया न भाया (उ) ।

३—तम्मसहरा (उ) ।

४—सकम्मप्पवीओ (उ) ; सकम्मवीओ (ऋ) ; कम्मप्पविइओ (अ) ।

२५—तं इक्कगं तुच्छसरीरगं से
चिईगयं डहिय उ पावगेणं ।
भज्जा य पुत्ता^१ वि य नायओ य
दायारमन्नं अणुसंकमन्ति ॥

२६—उवणिज्जई जीवियमप्पमायं
वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं ।
पंचालराया! वयणं सुणाहि
मा कासि कम्माइं महालयाइं ॥

२७—अहं पि जाणामि 'जहेह साहू!'^२
जं मे तुमं साहसि वक्कमेयं ।
भोगा इमे संगकरा हवन्ति
जे दुज्जया अज्जो अम्हारिसेहि ॥

२८—हत्थिणपुरम्मि चित्ता दट्टूणं नरवइ महिड्ढियं ।
कामभोगेसु गिद्धेणं नियाणमसुहं कडं ॥

२९—तस्स मे अपडिकन्तस्स इमं एयारिसं फलं ।
जाणमाणो वि जं धम्मं कामभोगेसु मुच्छिओ ॥

३०—नागो जहा पंकजलावसन्तो
दट्टुं थलं नाभिसमेइ तीरं ।
एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा
न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ॥

१—पुत्तो (वृ०) ।

२—जो एत्थ सारो (वृ० पा०, चू०) ।

- ३१—अच्चेइ कालो तूरन्ति राइओ
 न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा ।
 उविच्च भोगा पुरिसं चयन्ति^१
 दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ॥
- ३२—'जइ ता सि'^२ भोगे चइउं असत्तो
 अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं ! ।
 धम्मे ठिओ सव्वपयाणकम्पी
 तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ॥
- ३३—न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी
 गिद्धो सि आरम्भपरिग्गहेसु ।
 मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावो
 गच्छामि रायं ! आमन्तिओ सि ॥
- ३४—पंचालराया वि य बम्भदत्तो
 साहुस्स तस्स^३ वयणं अकाउं ।
 अणुत्तरे भुंजिय कामभोगे
 अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ॥
- ३५—चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो
 उदग्गचारित्तवो^४ महेसी ।
 अणुत्तरं संजम पालइत्ता
 अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—जहति (चू०) ।

२—जइ तसि (उ, वू० पा०, ऋ) ; जईउसि (चू०) ।

३—तस्सा (अ, आ, इ, स) ।

४—उदत्त^० (चू०, वू०, सु) ।

चउदसम अजभयणं

उसुयारिज्जं

- १—देवा भवित्ताण पुरे भवम्मी
 केई चुया एगविमाणवासी ।
 पुरे पुराणे उसुयारनामे
 खाए, समिट्ठे सुरलोगरम्मे ॥
- २—सकम्मसेसेण पुराकएणं
 कुलेमु दग्गेमु^१ य ते पमूया ।
 निच्चिण्णसंसारभया जहाय
 जिणिन्दमग्ग सर्णं पवन्ता ॥
- ३—पुमत्तमागम्म कुमार दौ वी
 पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
 विसालक्किती य तहोमुयारो
 गयत्थ देवी कमलावई य ॥
- ४—जाईजरामच्चुभयाभिभूया^२
 बहिविहाराभिनिविट्ठचित्ता ।
 ससारचक्खस्स विमोक्खणट्ठा
 दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ॥
- ५—पियपुत्तगा दोन्नि वि माहणस्स
 सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।
 सरित्तु पोरणिय तत्थ जाइं
 तहा मुच्चिण्णं तवसंजम च ॥

१—दत्तेसु (चू०, वृ०) ; जग्गेसु (च) ।

२—^० भयाभिभूए (वृ० पा०) ।

६—ते कामभोगेसु असज्जमाणा
 माणुस्सएसुं जे यावि दिव्वा ।
 मोक्खाभिकंखी अभिजायसड्ढा
 तायं उवागम्म. इमं उदाहु ॥

७—असासयं दट्ठु इमं विहारं
 बहुअन्तरायं न य दीहमाउं ।
 तम्हा गिहंसि न रइं लहामो
 आमन्तयामो चरिस्सामु मोणं ॥

८—अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं
 तवस्स वाघायकरं वयासी ।
 इमं वयं वेयविओ वयन्ति
 जहा न होई असुयाण लोगो ॥

९—अहिज्ज वेए पग्गिस्स विप्पे
 पुत्ते पडिद्वप्प^१ गिहंसि जाया! ।
 भोच्चाण भोए सह इत्थियाहिं
 'आरण्णगा होह मुणी पसत्था'^२ ॥

१०—सोयग्गिणा आयगुणिन्धणेणं
 मोहाणिला पज्जलणाहिणं ।
 संतत्तभावं परित्थप्पमाणं
 लोलुप्पमाणं बहुहा बहुं च ॥

१—परिद्वप्प (वृ० पा०) ।

२—पच्छा वणप्पवेस पसत्थ (दू०) ।

- ११—पुरोहितं तं कमसोऽणुणन्तं^१
 निमंतयन्तं च सुए धणेणं ।
 जहक्कमं कामगुणेहि^२ चैव
 कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ॥
- १२—वेया अहीया न भवन्ति ताणं
 भुत्ता दिया नित्ति तमं तमेणं ।
 जाया य पुत्ता न हवन्ति ताणं
 को णाम ते अणुमन्नेज्ज^३ एयं ॥
- १३—खणमेत्तसोक्खा बहुकालदुक्खा
 पगामदुक्खा अणिगामसोक्खा ।
 संसारमोक्खस्स विपक्खभूया
 खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥
- १४—परिव्वयन्ते अणियत्तकामे
 अहो य राओ परित्पमाणे ।
 अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे
 पप्पोत्ति मच्चु पुरिसे जरं च ॥
- १५—इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि
 इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं ।
 तं एवमेव लालप्पमाणं
 हरा हरंति त्ति कहां पमाए ? ॥

१—^० णिणत्तं (उ) ।

२—कामगुणेषु (वृ० पा०) ।

३—अणुमोदेज्ज (अ) ।

- १६—धणं पभूयं सहं इत्थियाहि
 सयणा तथा कामगुणा पगामा ।
 तवं कए तप्पइ जस्स लोगो
 तं सव्व साहीणमिहेव तुब्भं ॥
- १७—धणेण कि धम्मधुराहिगारे
 सयणेण वा कामगुणेहि चेव ।
 समणा भविस्सामु गुणोहधारी
 बहिंविहारा अभिगम्म भिक्खं ॥
- १८—जहा य अग्गी अरणीउऽसन्तो
 खीरे घयं तेह्लामहा तिलेसु ।
 एमेव जाया ! सरीरंसि सत्ता
 संमुच्छई नासइ नावचिट्ठे ॥
- १९—तो इन्दियग्गेज्झ अमुत्तभावा
 अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो ।
 अज्झत्थहेउं निययऽस्स बन्धो
 ससारहेउं च वयन्ति बन्धं ॥
- २०—जहा वयं धम्ममजाणमाणा
 पावं पुरा कम्ममकासि मोहा ।
 ओरुज्झमाणा परिरिक्खयन्ता
 तं नेव भुज्जो वि समायरामो ॥
- २१—अब्भाहयंमि लोगंमि सव्वओ परिवारिए ।
 'अमोहाहिं पडन्तीहि'^१ गिहंसि न रइं लभे ॥
- २२—केण अब्भाहओ लोगो ? केण वा परिवारिओ ? ।
 का वा अमोहा वुत्ता ? जाया ! चित्तावरो हुमि ॥

१—अमोहायए पुत्तीहि (उ) ।

- २३—मच्चुणाऽऽभाहओ लोगो जराए परिवारिओ ।
 अमोहा रयणी वुत्ता एवं ताय। वियाणह ॥
- २४—जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई ।
 अहम्मं कुणमाणस्स अफला जन्ति राइओ ॥
- २५—जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई ।
 धम्मं च कुणमाणस्स सफला जन्ति राइओ ॥
- २६—एगओ संवसित्ताणं दुहओ सम्मत्तसंजुया ।
 पच्छाजाया ! गमिस्सामो भिक्खमाणा कुले कुले ॥
- २७—जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं जस्स वऽत्थि^१ पलायणं ।
 जो जाणे न मरिस्सामि सो हु कंखे सुए सिया ॥
- २८—अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो
 जहि पवन्ता न पुणब्भवामो ।
 अणागयं नेव य अत्थि किञ्चि
 सद्धाखमं णे विणइत्तु रागं ॥
- २९—पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो
 वासिट्ठि । भिक्खायरियाइ कालो ।
 साहाहि रुक्खो लहए समाहि
 छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणुं ॥
- ३०—पंखाविहूणो व्व^२ जहेह^३ पक्खी
 भिच्चाविहूणो^४ व्व^२ रणे नरिन्दो ।
 विवन्तसारो वणिओ व्व पोए
 पहीणपुत्तो मि तथा अहं पि ॥

१—चउत्थि (ऋ) ।

२—व (उ, ऋ) ।

३—जहेव (अ, उ, ऋ) ।

४—भिच्चाविहीणु (ऋ) ; मिच्चुविहीणु (उ) ।

- ३१—सुसंभिया कामगुणा इमे ते
 संपिण्डिया अगगरसापभूया^१ ।
 भुंजामु ता कामगुणे पगामं
 पच्छा- गमिस्सामु पहाणमग्गं ॥
- ३२—भुत्ता रसा भोइ^२ ! जहाइ णे वओ
 न जीवियट्ठा पजहामि भोए ।
 लाभं अलाभं च सुहं च दुक्खं
 संचिक्खमाणो^३ चरिस्सामि^४ मोणं ॥
- ३३—मा हू तुमं सोयरियाण सम्भरे
 जुण्णो व हंसो पडिसोत्तगामी ।
 भुंजाहि भोगाइ मए समाणं
 दुक्खं खु भिक्खायरियाविहारो ॥
- ३४—जहा य भोई^५ ! तणुयं भुयंगो^६
 निम्मोयणि हिच्च पलेइ मुत्तो ।
 एमेए^७ जाया पयहन्ति भोए
 'ते हं'^८ कहं नाणुगमिस्समेक्को ? ॥
- ३५—छिन्दित्तु जालं अबलं व रोहिया
 मच्छा जहा कामगुणे पहाय ।
 धोरेयसीला तवसा उदारा
 धीरा हु भिक्खायरियं चरन्ति ॥

१—अगगरसप्पभूया (उ, ऋ) ।

२—होइ (वृ०) ।

३—संचिक्खमाणो (चू० उ) ।

४—चरिस्सामिः (अ, ऋ) ; करिस्सामि (चू०) ।

५—भोगि (वृ० पा०) ।

६—भुयंगमो (अ, वृ०) ।

७—इमेति (वृ० पा०) ।

८—ताह (उ, चू०) ; तोह (अ) ।

- ३६—नहेव कुंचा समइक्कमन्ता
 तथाणि जालाणि दलित्तु हंसा ।
 पलेन्ति पुत्ता-य पई य मज्झं
 'ते हं' कहं नाणुगमिस्समेक्का ? ॥
- ३७—पुरोहित्यं तं ससुयं सदारं
 सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए ।
 कुडुम्बसारं विजलुत्तमं त
 रायं अभिक्खं समुवाय देवी ॥
- ३८—वन्तासी पुरिसो रायं ! न सो होइ पसंसिओ ।
 माहणेण परिच्चत्तं धणं आदाउमिच्छसि ॥
- ३९—सव्वं जगं जइ तुहं सव्वं वावि धणं भवे ।
 सव्वं पि ते अपज्जत्तं नेव ताणाय तं तव ॥
- ४०—मरिहिसि रायं । जया तथा वा
 मणोरमे कामगुणे पहाय^१ ।
 एक्को हु धम्मो नरदेव ! ताणं
 न विज्जई अन्नमिहेह किंचि ॥
- ४१—नाहं रमे पक्खणि पंजरे वा
 संताणद्धिन्ना चरिस्सामि मोणं ।
 अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा
 परिग्गहारम्भनियत्तदोसा ॥
- ४२—द्वन्निगणा जहा रण्णे डज्भमाणेसु जन्तुसु ।
 अन्ने सत्ता पमोयन्ति रागद्वोसवसं गया ॥

१—ताह (उ, चू०) ; तोह (अ) ।

२—जहाय (चू०) ।

- ४३—एवमेव^१ वयं मूढा कामभोगेषु मुच्छ्रिया ।
 डञ्जमाणं न बुञ्जामो रागद्वोसगिणा जगं ॥
- ४४—भोगे भोञ्चा वमिता य लहुभूयविहारिणो ।
 आमोयमाणा गच्छन्ति दिया कामकमा इव ॥
- ४५—इमे य वद्धा^२ फन्दन्ति मम हृत्थऽज्जमागया ।
 वयं च सत्ता कामेषु भविस्सामो जहा इमे ॥
- ४६—सामिसं कुललं दिस्स बञ्जमाणं निरामिसं ।
 आमिसं सव्वमुज्जिक्त्ता विहरिस्सामि निरामिसा ॥
- ४७—गिद्धोवमे उ नच्चाणं कामे संसारवड्डणे ।
 उरगो 'सुवण्णपासे व'^३ संकमाणो तणुं चरे ॥
- ४८—नागो व्व वन्धणं छित्ता अप्पणो वसहिं वए ।
 एयं पत्थं महारायं ! उसुयारि त्ति मे सुयं ॥
- ४९—चइत्ता विउलं रज्जं^४ कामभोगे य दुच्चए ।
 निव्विसया निरामिसा निन्नेहा निप्परिग्गहा ॥
- ५०—सम्मं धम्मं वियाणित्ता चेच्चा कामगुणे वरे ।
 तवं पगिज्जऽहक्खायं^५ घोरं घोरपरक्कमा ॥
- ५१—एवं ते कमसो बुद्धा
 सव्वे धम्मपरायणा^६ ।

जम्ममच्चुभउव्विग्गा

दुक्खस्सन्तगवेसिणो

॥

१—एवमेवं (वृ०) ।

२—लद्धा (चू०) ।

३—सुवण्णपासेव्व (उ, चू०, सु) ; सुवण्णपासित्ता (ऋ) ; सुवण्णपासिव्वा (अ) ।

४—रद्ध (वृ०, चू०) ; रज्जं (वृ० पा०) ।

५—^० अहकामं (चू० पा०) ।

६—^० परंपरा (वृ० पा०) ।

५२-सासणे विगयमोहाणं पुर्व्वि भावणभाविया ।
 अचिरेणेव कालेण दुक्खस्सन्तमुवागया ॥
 ५३-राया सह देवीए माहणो य पुरोहिओ ।
 माहणी दारगा चेव सव्वे ते परिनिव्वुड^१ ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१-परिनिव्वुड्ड (ऋ) . परिनिव्वुडि (अ) ; परिनिव्वुए (चू०) ।

पनरसमं अज्जभयणं

सभिकखुयं

- १—मोणं चरिस्सामि^१ समिच्च धम्मं
 सहिए उज्जुकडे नियानछिन्ने ।
 संथवं जहिज्ज अकामकामे
 अन्नायएसी परिव्वए जे स भिकखू ॥
- २—राओवरयं^२ चरेज्ज लाढे
 विरए वेयवियाऽऽयरक्खिए ।
 पन्ने अभिभूय सव्वदंसी
 जे कम्हिचि^३ न मुच्छिए स भिकखू ॥
- ३—अकोसवहं विइत्तु धीरे
 मुणो चरे लाढे निच्चमायगुत्ते ।
 अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे
 जे कसिणं अहियासए स भिकखू ॥
- ४—पन्तं सयणासणं भइत्ता
 सीउण्हं विविहं च ढंसमसग ।
 अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे
 जे कसिणं अहियासए स भिकखू ॥
- ५—नो सक्रियमिच्छई न पूयं
 नो वि य वन्दणं कुओ पसंसं ।
 से संजए सुव्वए तवस्सी
 सहिए आयगवेसए स भिकखू ॥

१—चरिस्सामो (वृ०) ।

२—राओवरय (वृ०) ; राओवरयं (वृ० पा०) ।

३—कम्हि वि (अ, उ, ऋ) ।

६—जेण पुण जहाइ जीवियं
 मोहं वा कसिणं नियच्छई ।
 नरनारिं पजहे सया तवस्सी
 न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू ॥

७—छिन्नं सरं भोमं अन्तलिक्खं
 सुमिणं लक्खणदण्डवत्थुविज्जं ।
 अगवियारं सरस्स विजयं
 जो विज्जाहि न जीवइ स भिक्खू ॥

८—मन्तं मूल विविहं वेज्जचिन्तं
 वमणविरेयणधूमणेत्तसिणाणं ।
 आउरे सरणं तिगिच्छियं च
 तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥

९—खत्तियगणउगारायपुत्ता
 माहणभोइय विविहा 'य सिप्पिणो'^१ ।
 नो तेसि वयइ^२ सिलोगपूयं
 तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥

१०—गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा
 अप्पव्वइएण व संथुया हविज्जा ।
 तेसि इहलोइयफलट्ठा^३
 जो संथवं न करेइ स भिक्खू ॥

१—सिप्पिणोऽणे (वृ० पा०) ।

२—करेइ (च०) ।

३—इहलोगफलट्ठाए (अ, आ, इ, च०) ।

११—सयणासणपाणभोयणं

विविहं खाइमसाइमं परेसिं ।
अदए पडिसेहिए नियण्ठे
जे तत्थ न पउस्सई स भिक्खू ॥

१२—जं किञ्चि आहारपाणं^१ विविहं

खाइमसाइमं परेसि लद्धुं ।
जो तं तिविहेण नाणुकम्पे
मणवयकायसुसंवुडे स भिक्खू ॥

१३—आयामगं चेव जवोदणं च

‘सीयं च सोवीरजवोदणं च’^२ ।
नो हीलए पिण्डं नीरसं तु
पन्तकुलाइं परिव्वए स भिक्खू ॥

१४—सद्दा विविहा भवन्ति लोए

दिव्वा ‘माणुस्सगा तहा तिरिच्छा’^३ ।
भीमा भयभेरवा उराला
जो सोच्चा न वहिज्जई^४ स भिक्खू ॥

१५—वादं विविहं समिच्च लोए

सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा ।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी
उवसन्ते अविहेडए^५ स भिक्खू ॥

१—वाहार^० (अ) ।

२—सीय सुवीर च जवोदण च (स, सु) ।

३—माणुस्सया तिरिच्छा य (चू०) ।

४—वहिए (उ) ।

५—उविहेडए (उ) ।

१६—असिप्पजीवी^१ अगिहे अमित्ते
जिइन्दिए सव्वओ विप्पमुक्के ।
अणुक्साई लहुअप्पभक्खी
चेच्चा गिहं एगचरे स भिक्खू ॥
—त्ति वेमि ॥

*

१—असिप्पजीवे (अ) ।

सोलसमं अज्जयणं

बम्भचेरसमाहिठाणं

सू० १—सुयं मे, आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ।

सू० २—कयरे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ? जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ?

सू० ३—इमे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा, तं जहा—‘वित्ताइं सयणासणाइं सेविज्जा’, से निग्गन्थे ।’^१ नो इत्थीपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा चाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ ‘वा धम्माओ’^३ भंसेज्जा । तम्हा नो इत्थिपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

१—सेविज्जा हवइ (उ) ।

२—“वित्ताइ सयणासणाइं सेविज्जा से निग्गन्थे” इतना पाठ चूणि मे नहीं है ।

३—धम्माओ (उ, इ) ।

सू० ४—नो इत्थीणं क्हं कहित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं क्हं कहेमाणस्स, बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । 'तम्हा नो इत्थीणं'^१ क्हं कहेज्जा ।

सू० ५—नो इत्थीहिं^२ सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागयस्स, बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरेज्जा^३ ।

सू० ६—नो इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता, निज्झाइत्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं, मणोरमाइं आलोएमाणस्स, निज्झायमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवल-

१—तम्हा खलु निग्गन्थे नो इत्थीण (उ) ।

२—इत्थीण (अ, ऋ) ।

३—विहरइ (अ) ।

पन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु 'निग्गन्थे नो'^१ इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं, मणोरमाइं आलोएज्जा, निज्झाएज्जा ।

सू० ७-नो इत्थीणं कुड्डन्तरंसि वा, दूसन्तरंसि वा, भित्तन्तरंसि वा, कुइयसहं वा, रुइयसहं वा, गीयसहं वा, हसियसहं वा, थणियसहं वा, कन्दियसहं वा, विलवियसहं वा, सुणेत्ता हवइ से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं 'कुड्डन्तंसि वा, दूसन्तरंसि वा, भित्तन्तरंसि^२ वा'^३, कुइयसहं वा, रुइयसहं वा, गीयसहं वा, हसियसहं वा, थणियसहं वा, कन्दियसहं वा, विलवियसहं वा, सुणेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु निग्गन्थे नो इत्थीणं कुड्डन्तरंसि वा, दूसन्तरंसि वा, भित्तन्तरंसि वा, कुइयसहं वा, रुइयसहं वा, गीयसहं वा, हसियसहं वा, थणियसहं वा, कन्दियसहं वा, विलवियसहं वा सुणेमाणे विहरेज्जा ।

सू० ८-नो निग्गन्थे पुव्वरयं, पुव्वकीलियं अणुसरित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु पुव्वरयं^४, पुव्वकीलियं अणुसरमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा,

१-नो निग्गन्थे (अ) ।

२-मिति अतरसि वा (अ, ऋ) ; भित्तितरसि (उ) ।

३-कुड्डन्तरसि वा भित्तन्तरसि वा दूसन्तरसि वा (दू०, स) ; कड्डतरसि वा^० (अ) ।

४-इत्थीण पुव्वरय (उ, ऋ) ।

वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं ह्वेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरेज्जा ।

सू० ९—नो पणीयं आहार आहारित्ता ह्वइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु पणीयं पाणभोयणं आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं ह्वेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे पणीयं आहारं आहारेज्जा ।

सू० १०—नो अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता ह्वइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु अइमायाए पाणभोयणं आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं ह्वेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे अइमायाए पाणभोयणं भुंजिजा ।

सू० ११—नो विभूसाणुवाई ह्वइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—विभूसावत्तिए^१, विभूसियसरीरे इत्थिजणस्स अभिलसणिज्जे ह्वइ । तओ णं तस्स इत्थिजणेणं अभिलसिज्जमाणस्स

१—निग्गन्थस्स खलु विभूसावत्तिए (अ) ।

बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे विभूसाणुवाई सिया ।

सू० १२—नो सद्वरसगन्धफासाणुवाई हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु सद्वरसगन्धफासाणुवाईस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे सद्वरसगन्धफासाणुवाई हविज्जा । दसमे बम्भचेरसमाहिठाणे हवइ ।

भवन्ति इत्थं सिलोगा, तं जहा—

१—जं विवित्तमणाइण्णं रहियं थीजणेण य ।

बम्भचेरस्स रक्खट्ठा आलयं तु निसेवए ॥

२—मणपल्हायजणणिं कामरागविवड्ढणिं ।

बम्भचेररओ भिक्खू थीकहं तु विवज्जए ॥

३—समं च संथवं थीहिं संकहं च अभिक्खणं ।

बम्भचेररओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए ॥

४—अंगपच्चंगसंठाणं चारुल्लवियपेहियं ।

बम्भचेररओ थीणं^१ चक्खुगिज्झं विवज्जए ॥

५—कुइयं रुइयं गीयं हसियं थणियकन्दियं ।

बम्भचेररओ थीणं सोयगिज्झं विवज्जए ॥

- ६—“हासं किड्डं रइं दप्पं सहसाऽवत्तासियाणि^१ य^२” ।
 बम्भचेररओ थीणं नाणुचिन्ते कयाइ वि ॥
- ७—पणीय भत्तपाणं तु^३ खिप्पं मयविवड्डणं ।
 बम्भचेररओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए ॥
- ८—धम्मलद्धं^४ मियं काले जत्तत्थं पणिहाणवं ।
 नाइमत्तं तु भुंजेज्जा वम्भचेररओ सया ॥
- ९—विभूसं परिवज्जेज्जा सरीरपरिमण्डणं ।
 बम्भचेररओ भिक्खू सिगारत्थं न धारए ॥
- १०—सहे रूवे य गन्वे य रसे फासे तहेव य ।
 पंचविहे कामगुणे निच्चसो परिवज्जए ॥
- ११—आलओ थीजणाइण्णो थीकहा य मणोरमा ।
 संथवो चेव नारीणं^५ तासिं इन्दियदरिसणं ॥
- १२—कुइयं रुइयं गीयं हसियं^६ भुत्तासियाणि य ।
 पणीयं भत्तपाणं च अइमायं^७ पाणभोयणं ॥
- १३—गतभूसणमिट्ठ च कामभोगा य दुज्जया ।
 नरस्सऽत्तगवेसिस्स विसं तालउडं जहा ॥
- १४—दुज्जए कामभोगे य निच्चसो परिवज्जए ।
 सकट्टाणाणि सव्वाणि वज्जेज्जा^८ पणिहाणवं ॥

१—सहसावित्ता^० (ऋ), सहभुत्ता^० (अ) ।

२—हस्स दप्प रइ किड्ड सहभुत्ता^० (वृ० पा०) ।

३—च (अ) ।

४—धम्म लद्ध (वृ०), धम्मलद्धु, धम्मलद्ध (वृ० पा०) ।

५—नारिहिं (ऋ) ।

६—सहभुत्ता^० (अ) ।

७—अइमाणं (ऋ) ।

८—वज्जिया (ऋ) ।

- १५—धम्मारासे चरे भिक्खू धिइमं धम्मसारही ।
 धम्मारामरए दन्ते बम्भचेरसमाहिए ॥
- १६—देवदाणवगन्धव्वा जक्खरक्खसकिन्नरा ।
 बम्भयारिं नमंसन्ति दुक्करं जे करन्ति त^१ ॥
- १७—एस धम्मे धुवे निअए सासए जिणदेसिए ।
 सिद्धा सिज्झन्ति चाणेण सिज्झिस्सन्ति तहापरे ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

सतरसमं अज्भयणं
पावसमणिज्जं

- १-जे 'के इमे'^१ पव्वइए नियण्ठे
धम्मं सुणिता विणओववन्ने ।
सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं^२
विहरेज्ज पच्छा य जहासुहं तु ॥
- २-सेज्जा दढा पाउरणं मे अत्थि
उप्पज्जई भोत्तुं^३ तहेव पाउं ।
जाणामि जं वट्टइ आउसु । त्ति
किं नाम काहामि सुएण भन्ते ! ॥
- ३-जे के इमे पव्वइए निहासीले पगामसो ।
भोच्चा पेच्चा सुहं सुवइ^३ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ४-आयरियउवज्झाएहि सुयं विणयं च गाहिए ।
ते चेव खिसई बाले पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ५-आयरियउवज्झायाणं सम्मं नो पडित्तप्पइ ।
अप्पडिपूयए थद्वे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ६-सम्महमाणे पाणाणि बीयाणि हरियाणि य ।
असंजए संजयमन्नमाणे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ७-संथारं फलगं पीढं निसेज्जं पायकम्बलं ।
अप्पमज्जियमारुहइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

१-केइ उ (वृ०, ऋ, सु), के इमे (वृ० पा०) ।

२-मुत्तु (ऋ) ।

३-वसइ (वृ० पा०) ।

- ८—द्वद्वद्वस्त चरई पमत्ते य अभिक्त्तणं ।
उल्लघणे य चण्डे य पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ९—पडिलेहेइ पमत्ते अवउज्झइ पायकम्बलं ।
पडिलेहणाअणाउत्ते^१ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १०—पडिलेहेइ पमत्ते से किंचि हु निसामिया ।
गुरुपरिभावए^२ निच्चं पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ११—बहुमाई पमुहरे^३ थडे लुद्धे अणिग्गहे ।
असंविभागी अचियत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १२—विवादं च उदीरेइ अहम्मे अत्तपन्नहा^४ ।
दुग्गहे कलहे रत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १३—अथिरासणे कुक्कुईए जत्य तत्य निसीयई ।
आसणन्मि अणाउत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १४—ससरक्खपाए सुवई सेज्जं न पडिलेहइ ।
संयारए अणाउत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १५—डुद्धव्हीविगईओ आहारेइ अभिक्त्तणं ।
अरण य तवोक्कम्मे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १६—अत्यन्तन्मि^५ य सूरम्मि आहारेइ अभिक्त्तणं ।
चोइओ पडिचोएइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १७—आयरियपरिच्चाई परपासण्डसेवए ।
गाणंगणिए दुन्भूए पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

१—पडिलेहा^० (स) ।

२—गुरुपरिभावइ (उ) : गुरुपरिभाव (वृ०) : गुरुपरिभाव (वृ० पा०) ।

३—पमुहरे (इ, चू. स) :

४—अत्तपन्नहा (वृ०) : अत्तपन्नहा (वृ० पा०) ।

५—अत्यन्तपयंनि (वृ० पा०) ।

- १८—सयं गेहं परिचज्ज परगेहंसि वावडे^१ ।
 निमित्तेण य ववहरई पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १९—सन्नाइपिण्डं जेमेइ नेच्छई सामुदाणियं ।
 गिह्निसेज्जं च वाहेइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- २०—एयारिसे पंचकुसीलसंबुडे
 रूबंधरे मुणिपवराण हेट्ठिमे ।
 अयंसि लोए विसमेव गरहिए
 न से इहं नेव परत्थ लोए ॥
- २१—जे वज्जए एए सया उ दोसे
 से सुव्वए होइ मुणीण मज्जे ।
 अयंसि लोए अमयं व पूइए
 आराहए 'दुहओ लोगमिण'^२ ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१—वावरे (वृ०, सु) ; ववहरे (वृ० पा०) ।

२—लोगमिण तहापर (उ, स, सु, ऋ) ।

अद्वारसम अजभयण

संजइज्जं

उक्खेव-पदं

- १—कम्पिल्ले नयरे राया उदिण्णबलवाहणे ।
 नामेणं संजए नाम मिगव्वं उवणिग्गए ॥
- २—हयाणीए गयाणीए रहाणीए तहेव य ।
 पायत्ताणीए महया सव्वओ परिवारिए^१ ॥
- ३—मिए छुभित्ता ह्यगओ कम्पिल्लुज्जाणकेसरे ।
 भीए सन्ते मिए तत्थ वहेइ रसमुच्छिए ॥
- ४—अह केसरम्मि उज्जाणे अणगारे तवोधणे ।
 सज्झायज्झाणजुत्ते धम्मज्झाणं भियायई ॥
- ५—अप्फोवमण्डवम्मि भायई भवियासवे^२ ।
 तस्सागए मिए पासं वहेई से नराहिवे ॥
- ६—अह आसगओ राया खिप्पमागम्म सो तहि ।
 हए मिए उ पासित्ता अणगारं तत्थ पासई ॥
- ७—अह राया तत्थ संभन्तो अणगारो मणाऽऽहओ ।
 मए उ मन्दपुण्णेणं रसगिद्धेण घत्तुणा^३ ॥
- ८—आसं विसज्जइत्ताणं अणगारस्स सो निवो ।
 विणएण वन्दए पाए भगवं ! एत्थ मे खमे ॥
- ९—अह मोणेण सो भगवं अणगारे भाणमस्सिए ।
 रायाणं न पडिमन्तेइ तओ राया भयट्ठुओ ॥

१—परिवारए (अ) ।

२—खवियासवे (स) ।

३—घत्तुणा (उ) ; धम्मणा (ऋ) ।

- १०—सजओ अहमम्मीति भगवं ! वाहराहि मे ।
 कुद्धे तेएण अणगारे डहेज्ज नरकोडिओ ॥
 ११—अभओ^१पत्थिवा ! तुब्भं अभयदाया भवाहि य ।
 अणिच्चे जीवलोगम्मि कि हिंसाए पसज्जसि ? ॥

सवोहि-पद

- १२—जया सव्वं परिच्चज्ज गन्तव्वमवसस्स ते ।
 अणिच्चे जीवलोगम्मि किं रज्जम्मि^२पसज्जसि ? ॥
 १३—जीवियं चेव रूवं च विज्जुसंपायचंचल ।
 जत्थ तं मुज्झसी रायं पेच्चत्थं नावबुज्झसे ॥
 १४—‘दाराणि य सुया चेव मित्ता य तह बन्धवा ।
 जीवन्तमणुजीवन्ति मयं नाणुव्वयन्ति य ॥’^३
 १५—नीहरन्ति मयं पुत्ता पियर परमदुक्खिया ।
 पियरो वि तहा पुत्ते बन्धू रायं । तवं चरे ॥
 १६—तओ तेणऽज्जिए दव्वे दारे य परिरिक्खिए ।
 कीलन्तऽन्ने नरा रायं ! हङ्कतुट्टमलंकिया ॥
 १७—तेणावि जं कयं कम्मं सुहं वा जइ वा दुहं ।
 कम्मुणा तेण संजुत्तो गच्छई उ परं भव ॥

रायरिसि-पदं

- १८—सोऊण तस्स सो धम्मं अणगारस्स अन्तिए ।
 महया संवेगनिव्वेयं समावन्नो नराहिवो ॥

१—अमय (अ, आ) ।

२—रज्जेण (उ, ऋ), हिंसाए (वृ० पा०) ।

३—इदं सूत्र चिरन्तनवृत्तिकृता न व्याख्यात, प्रत्यन्तरेषु च दृश्यत
 इत्यस्माभिरुन्नीतम् (वृ०) ।

- १९—संजओ चइउं रज्जं निक्खन्तो जिणसासणे ।
गह्मभालिस्स भगवओ अणगारस्स अन्तिए ॥
- २०—चिच्चा रट्ट पव्वइए खत्तिए परिभासइ ।
जहा ते दीसई ख्व पसन्नं ते तथा मणो ॥
- २१—किंनामे ? किंगोत्ते ? कस्सट्ठाए व माहणे ? ।
कहं पडियरसी बुद्धे ? कहं विणोए त्ति बुच्चसि^१ ? ॥
- २२—संजओ नाम नामेणं तथा गोत्तेण गोयमे ।
गह्मभाली ममायरिया विज्जाचरणपारगा ॥
- २३—किरियं अकिरियं विणयं
अन्नाणं च महामुणी ! ।
एएहि चउहि ठाणेहि
मेयन्ने^२ कि पभासई ? ॥
- २४—इइ पाउकरे बुद्धे नायए परिनिव्वुडे ।
विज्जाचरणसंपन्ने सच्चे सच्चपरक्कमे ॥
- २५—पडन्ति नरए घोरे जे नरा पावकारिणो ।
दिव्वं च गइं गच्छन्ति चरित्ता धम्ममारियं ॥
- २६—‘मायावुइयमेयं तु मुसाभासा निरत्थिया ।
संजममाणो वि अहं वसामि इरियामि य ॥’^३
- २७—सव्वे ते विइया मज्झं मिच्छादिट्ठी अणारिया ।
विज्जमाणे परे लोए सम्मं जाणामि अप्पगं ॥
- २८—अहमासी महापाणे जुइमं वरिससओवमे ।
जा सा पाली महापाली दिव्वा वरिससओवमा ॥

१—बुच्चई (अ, ऋ, वृ०) ।

२—मियन्ना (चू०) ।

३—इदमपि सूत्र प्रायो न दृश्यते (वृ०) ।

- २९—से च्चुए^१ बम्भलोगाओ माणुस्स भवमागए ।
 अप्पणो य परेसि च आउं जाणे जहा तथा ॥
- २०—नाणारुइ च छन्दं च परिवज्जेज्ज संजए ।
 अणट्ठा जे य सव्वत्था इइ विज्जामणुसंचरे ॥
- ३१—पडिक्कमामि पसिणाण परमन्तेहि वा पुणो ।
 अहो उट्टिए अहोराय इइ विज्जा तव चरे ॥
- ३२—जं च मे पुच्छसी काले सम्मं सुद्धेण^२ चेषसा ।
 ताइं पाउकरे बुद्धे त नाणं जिणसासणे ॥
- ३३—किरियं च रोयए धीरे अकिरियं परिवज्जए ।
 दिट्ठीए दिट्ठिसंपन्ते धम्मं चर सुदुच्चरं ॥
- ३४—एय पुण्णपयं सोच्चा अत्थधम्मोवसोहियं ।
 भरहो वि भारहं वास चेच्चा कामाइ पव्वए ॥
- ३५—सगरो वि सागरन्तं भरहवासं नराहिवो ।
 इस्सरियं केवल हिच्चा दयाए परिनिव्वुडे^३ ॥
- ३६—चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्ठी महिड्ढिओ ।
 पव्वज्जमब्भुवगओ मघवं नाम महाजसो ॥
- ३७—सणकुमारो मणुस्सिन्दो चक्कवट्ठी महिड्ढिओ ।
 पुत्तं रज्जे ठवित्ताणं^४ सो वि राया तवं चरे ॥
- ३८—चइत्ता भारहं वास चक्कवट्ठी महिड्ढिओ ।
 सन्ती सन्तिकरे लोए पत्तो गइमणुत्तरं ॥

१—च्युया (अ) ।

२—बुद्धेण (वृ०) ।

३—परिनिव्वुओ (उ, ऋ) ।

४—ठवैऊण (उ ऋ) ।

- ३९—इक्खागरायवसभो कुन्थू नाम नराहिवो ।
विक्खायकित्ती धिइमं^१ 'मीक्खं गओ अणुत्तरं'^२ ॥
- ४०—सागरन्तं जहित्ताणं^३ 'भरह वासं नरीसरो'^४ ।
अरो य अरयं^५ पत्तो पत्तो गइमणुत्तरं ॥
- ४१—चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी नराहिवो^६ ।
चइत्ता उत्तमे भोए महापउमे तवं चरे ॥
- ४२—एगच्छत्तं पसाहित्ता महि माणनिसूरणो ।
हरिसेणो मणुस्सिन्दो पत्तो^७ गइमणुत्तरं ॥
- ४३—अन्निओ रायसहस्सेहि सुपरिच्चाई दमं चरे ।
जयनामो जिणक्खाय पत्तो गइमणुत्तरं ॥
- ४४—दसण्णरज्जं मुइय चइत्ताणं मुणी चरे ।
दसण्णभट्टो निक्खन्तो सक्खं सक्केण चोइओ ॥
[नमी नमेइ अप्पाणं सक्ख सक्केण चोइओ ।
चइळ्ळण गेहं वइदेही सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥]^८
- ४५—करकण्डू कलिगेसु पंचालेसु य दुस्सुहो^९ ।
नमी राया विदेहेसु गन्धारेसु य नग्गई ॥

१—भगव (उ, ऋ) ।

२—पत्तो गइमणुत्तर (उ, ऋ) ।

३—चइत्ताण (उ, ऋ, स) ।

४—भरह नरवरीसरो (उ, ऋ) ।

५—अरस (वृ० पा०) ।

६—महिळ्ळिदओ (उ, ऋ) ।

७—गओ (अ) ।

८—यह श्लोक वृत्ति में व्याख्यात नहीं है ।

९—दुस्सुहा (ऋ) ।

- ४६—एए^१ नरिन्दवसभा निक्खन्ता जिणसासणे ।
 पुत्ते रज्जे ठवित्ताणं^२ सामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥
- ४७—सवीररायवसभो चेच्चा^३ रज्जं मुणी चरे ।
 उदायणो^४ पव्वडओ पत्तो गइमणुत्तरं ॥
- ४८—तहेव कासीराया सेओसच्चपरक्कमे ।
 कामभोगे परिच्चज्ज पहणे कम्ममहावणं ॥
- ४९—तहेव विजओ राया 'अणट्ठाकित्ति' पव्वए^५ ।
 रज्जं तु गुणसमिद्धं पयहित्तु महाजसो ॥
- ५०—तहेवुगं^६ तवं किच्चा अब्वक्खित्तेण चेषसा ।
 महावलो^७ रायरिसी अदायं^८ सिरसा सिरं^९ ॥
- निक्खेव-पद
- ५१—कह धीरो अहेऊहि उम्मत्तो^{१०} व्व^{११} महिं चरे ? ।
 एए विसेसमादाय सूरा दढपरक्कमा ॥
- ५२—अच्चन्तनियाणखमा सच्चा^{१२} मे भासिया वई ।
 अतरिमु तरन्तेगे^{१३} तरिस्सन्ति अणागया^{१४} ॥

१—एव (उ, ऋ) ।

२—ठवेऊण (उ, ऋ) ।

३—चइत्ताण (अ, उ, ऋ) ।

४—उदाहणो (ऋ), उदायणो (वृ०, आ, उ, ऋ) ।

५—अणट्ठा^० (वृ०) ; आणट्ठा^० (सु) ।

६—आणट्ठा किइ पव्वइ (वृ० पा०) ।

७—तहेवउग्ग (अ) ।

८—महव्वलो (अ, आ, ऋ) . महवलो (उ) ।

९—आदाय (उ, ऋ, सु, वृ० पा०) ।

१०—सिरिं (वृ० पा० अ, आ, उ, ऋ) ।

११—उम्मत्तु (उ, ऋ) ।

१२—व (अ) ।

१३—एसा (वृ०) सच्चा, सच्चा (वृ० पा०) ।

१४—तरन्ते (वृ० पा०) ।

१५—अणागय (अ) ।

५३—कहं धीरे अहेऊहि अत्ताणं^१ परियावसे ? ।
 सव्वसंगविनिम्मुक्के सिद्धे हवइ नीरणे ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

एगूणविसइमं अज्भयणं

मियापुतिज्जं

उक्खेव-पटं

- १—सुगीवे नयरे रम्मे काणणुज्जाणसोहिए ।
 राया बलभद्दो त्ति मिया तस्सग्गमाहिसी ॥
- २—तेसिं पुत्ते बलसिरी मियापुत्ते त्ति विस्सुए ।
 अम्मापिरुण दइए जुवराया दसीसरे ॥
- ३—नन्दणे सो उ पासाए कीलए^१ सह इत्थिहिं ।
 देवो दोगुन्दगो चेव निच्चं मुइयमाणसो ॥
- ४—मणिरयणकुट्टिमतले पासायालयणद्धिओ ।
 आलोएइ नगरस्स चउक्कतियचच्चरे ॥
- ५—अह तत्थ अइच्छन्तं पासई समणसंजयं ।
 तवनियमसंजमधरं सीलइढं गुणआगरं ॥
- ६—तं देहई^२ मियापुत्ते दिट्ठीए अणिमिसाए उ ।
 कहिं मन्नेरिसं रुवं दिट्ठपुव्वं मए पुरां ॥
- ७—साहुस्स दरिसणे तस्स अज्भवसाणम्मि सोहणे ।
 मोहंगयस्स सन्तस्स जाईसरणं समुप्पन्नं ॥
 [देवलोग चुओ संतो माणुसं भवमागओ ।
 सन्निनाणे समुप्पण्णे जाइं सरइ पुराणयं ॥]^३
- ८—जाईसरणे समुप्पन्ने मियापुत्ते महिड्ढिए ।
 सरई पोरणिणं जाइं सामण्णं च पुराकयं ॥

१—कीलिए (ऋ) ।

२—पेहइ (वृ०) ।

३—यह श्लोक वृहद् वृत्ति और सर्वार्थसिद्धि में व्याख्यात नहीं है ।

- ९—विसएहि अरज्जन्तो रज्जन्तो संजमम्मि य ।
अम्मापियरं उवागम्म इमं वयणमब्बवी ॥
- १०—सुयाणि मे पंच महव्वयाणि
नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु ।
निव्विण्णकामो मि^१ महण्णवाओ
अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ! ॥
- ११—अम्मताय ! मए भोगा भुत्ता विसफलोवमा ।
पच्छा कडुयविवागा अणुबन्धदुहावहा ॥
- १२—इमं सरीरं अणिच्चं असुइं असुइसंभवं ।
असासयावासमिणं दुक्खकेसाण भायणं ॥
- १३—असासए^२ सरीरम्मि रइं नोवलभामहं ।
पच्छा पुरा व चइयव्वे फेणबुब्बुयसन्तिभे ॥
- १४—माणुसत्ते असारम्मि वाहीरोगाण आलए ।
जरामरणघत्थम्मि खणं पि न रमामऽहं ॥

दुक्ख-पदं

- १५—जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं रोगा य मरणाणि य ।
अहो दुक्खो हु संसारो जत्थ कीसन्ति जन्तवो^३ ॥
- १६—खेतं वत्थुं हिरण्णं च पुत्तदारं च बन्धवा^४ ।
चइत्ताणं इमं देहं गन्तव्वमवसस्स मे ॥
- १७—जहा किम्पागफलाणं परिणामो न सुन्दरो ।
एवं भुत्ताण भोगाणं परिणामो न सुन्दरो ॥

१—हि (स) ।

२—आसासए (अ, उ) ।

३—जन्तुणो (आ, ऋ) ; पाणिणो (उ, स) ।

४—उधवं (उ) ।

धम्म-पद

- १८—अद्धाणं जो महन्तं तु अपाहेओ पवज्जई ।
 गच्छन्तो सो दुही होइ छुहातण्हाए पीडिओ ॥
 १९—एवं धम्मं अकाळणं जो गच्छइ परं भवं ।
 गच्छन्तो सो दुही होइ वाहीरोगेहिं पीडिओ ॥
 २०—अद्धाणं जो महन्तं तु सपाहेओ पवज्जई ।
 गच्छन्तो सो सुही होइ छुहातण्हाविवज्जिओ ॥
 २१—एवं धम्मं पि काळणं जो गच्छइ परं भवं ।
 गच्छन्तो सो सुही होइ अप्पकम्मे अवेयणे ॥

सारभण्ड-पदं

- २२—जहा गेहे पलित्तम्मि तस्स गेहस्स जो पहू ।
 सारभण्डाणि नीणेइ असारं अवउज्जइ ॥
 २३—एवं लोए पलित्तम्मि जराए मरणेण य ।
 अप्पाणं तारइस्सामि तुब्भेहिं अणुमन्निओ ॥

महव्वय-पद

- २४—तं बित्तं ऽम्मापियरो सामणं पुत्त ! दुच्चरं ।
 गुणाणं तु सहस्साइं धारेयव्वाइं भिक्खुणो^१ ॥
 २५—समया सव्वभूएसु सत्तुमित्तेसु वा जगे ।
 पाणाइवायविरईं जावज्जीवाए दुक्करा^२ ॥
 २६—निच्चकालऽप्पमत्तेणं मुसावायविवज्जणं ।
 भासियव्व हिंयं सच्चं निच्चाउत्तेण दुक्करं ॥
 २७—दन्तसोहणमाइस्स अदत्तस्स विवज्जणं ।
 अणवज्जेसणिज्जस्स गेप्पहणा अवि दुक्करं ॥

१—भिक्खुणा (वृ०), भिक्खुणो (वृ० पा०) ।

२—दुक्कर (वृ०, सु) ।

- २८—विरई अबम्भचेरस्स कामभोगरसन्नुणा ।
उगं महव्वयं बम्भं धारेयव्वं सुदुक्करं ॥
- २९ धणधन्तपेसवगोसु परिग्गहविवज्जणं^१ ।
सव्वारम्भपरिच्चाओ निम्ममत्तं सुदुक्करं ॥
- ३०—चउव्विहे वि आहारे राईभोयणवज्जणा ।
सन्निहीसंचओ चेव वज्जेयव्वो सुदुक्करो^२ ॥

दुक्कर-पद

- ३१—छुहा तण्हा य सीउण्हं दंसमसगवेयणा ।
अक्कोसा दुक्खसेज्जा य तणफासा जल्लमेव य ॥
- ३२—तालणा तज्जणा चेव वह्बन्धपरीसहा ।
दुक्खं भिक्खायरिया जायणा य अलाभया ॥
- ३३—कावोया जा इमा वित्ती केसलोओ य दारुणो ।
दुक्खं बम्भवयं घोर धारेउं अ महप्पणो ॥
- ३४—सुहोइओ तुमं पुत्ता ! सुकुमालो सुमज्जिओ ।
न हुसी पभू तुमं पुत्ता ! सामण्णमणुपालिउं ॥
- ३५—जावज्जीवमविस्सामो गुणाणं तु महाभरो ।
गुरुओ लोहभारो व्व जो पुत्ता ! होइ दुव्वहो ॥
- ३६—आगासे गंगसोउ व्व पडिसोओ व्व दुत्तरो ।
बाहाहि सागरो चेव तरियव्वो गुणोयही ॥
- ३७—वालुयाकवले^३ चेव निरस्साए उ^४ संजमे ।
असिधारागमणं चेव दुक्करं चरिउं तवो ॥

१—^० विवज्जणा (आ, इ, ऋ) ।

२—सुदुक्कर (उ) ।

३—^० कवला (अ) ।

४—व (उ) ।

- ३८—अहीवेगन्तदिट्ठीए चरित्ते पुत्त दुच्चरे ।
जवा लोहमया चेव चावेयव्वा सुदुक्करं ॥
- ३९—जहा अग्गिसिहा दित्ता पाउं होइ सुदुक्करं^१ ।
तह दुक्करं करेउं जे तारुण्णे समणत्तणं ॥
- ४०—जहा दुक्खं भरेउं जे होइ वायस्स कोत्थलो ।
तहा दुक्खं करेउं जे कीवेणं समणत्तणं ॥
- ४१—जहा तुलाए तोलेउं दुक्करं मन्दरो गिरी ।
तहा निहुय नीसकं दुक्करं समणत्तणं ॥
- ४२—जहा भुयाहि तरिउं दुक्करं रयणागरो ।
तहा अणुवसन्तेणं दुक्करं^२ दमसागरो ॥
- ४३—भुंज माणुस्सए भोगे पंचलक्खणए तुमं ।
भुत्तभोगी तओ जाया ! पच्छा धम्मं चरिस्ससि ॥
- ४४—‘तं वित ऽम्मापियरो’^३ एवमेयं जहा फुडं ।
इह लोए निप्पिवासस्स नत्थि किञ्चि वि दुक्करं ॥

भवदुक्ख-पदं

- ४५—सारीरमाणसा चेव वेयणाओ अणन्तसो ।
मए सोढाओ भीमाओ असइं दुक्खभयाणि य ॥
- ४६—जरामरणकन्तारे चाउरन्ते भयागरे ।
मए सोढाणि भीमाणि जम्माणि मरणाणि य ॥

नरयदुक्ख-पदं

- ४७—जहा इहं अगणी उण्हो ‘एत्तोऽणन्तगुणे तहि’^४ ।
नरएसु वेयणा उण्हो अस्साया वेइया मए ॥

१—सुदुक्करा (वृ० पा०) ।

२—दुत्तरं (आ) ।

३—सो वे अम्मापियरो (उ, वृ० पा० ऋ) : सो वेत्तऽम्मापियरो (वृ० पा०) ।

४—एत्तोऽणन्तगुणे तहि (वृ० पा०) ।

- ४८—जहा 'इमं इहं'^१ सीयं 'एत्तोऽणन्तगुणं तहि'^२ ।
 नरएसु वेयणा सीया अस्साया वेइया मए ॥
- ४९—कन्दन्तो कदुकुम्भीसु उड्ढपाओ अहोसिरो ।
 हुयासणे जलन्तम्मि पक्कपुव्वो अणन्तसो ॥
- ५०—महादवगिसंकासे मरम्मि वइरवालुए ।
 कलम्बवालुयाए य दड्ढपुव्वो अणन्तसो ॥
- ५१—रसन्तो कंदुकुम्भीसु उड्ढं बद्धो अबन्धवो ।
 करवत्तकरकयाईहिं छिन्नपुव्वो अणन्तसो ॥
- ५२—अइतिक्खकण्टगाइण्णे तुंगे सिम्बलिपायवे ।
 खेवियं^३ पासबद्धेणं कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ॥
- ५३—महाजन्तेसु उच्छू वा आरसन्तो सुभेरवं ।
 पीलिओ मि सकम्मेहि पावकम्मो अणन्तसो ॥
- ५४—कूवन्तो कोलसुणएहि
 सामेहि सबलेहि य ।
 पाडिओ फालिओ छिन्नो
 विप्फुरन्तो^४ अणेगसो ॥
- ५५—असीहिं^५ अयसिवण्णाहि
 भल्लीहि पट्टिसेहि य ।
 छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य
 ओइण्णो^६ पावकम्मुणा ॥

१—इहं इम (उ, ऋ) ।

२—एत्तो ऽणन्तगुणा तहिं (वृ० पा०) ।

३—खेदिय (वृ०) ।

४—विप्फुरतो (अ, ऋ) ।

५—अरसाहिं (वृ०) , असीहि (वृ० पा०) ।

६—उववण्णो (ऋ) ।

- ५६—अवसो लोहरहे जुत्तो जलन्ते^१ समिलाजुए ।
चोइओ तोत्तजुत्तेहिं रोज्फो वा जहपाडिओ ॥
- ५७—हुयासणे जलन्तम्मि चियासु महिसो विव ।
दड्ढो पक्को य अवसो पावकम्मेहि पाविओ ॥
- ५८—बला संडासतुण्डेहिं लोहतुण्डेहि पक्खिहिं ।
विलुत्तो विलवन्तो ह ढंकगिद्धेहिणन्तसो ॥
- ५९—तण्हाकिलन्तो धावन्तो पत्तो वेयरणिं नदि ।
जलं 'पाहि ति'^२ चिन्तन्तो खुरधारहिं विवाइओ^३ ॥
- ६०—उण्हाभितत्तो संपत्तो असिपत्तं महावणं ।
असिपत्तेहिं पडन्तेहिं छिन्नपुव्वो अणेगसो^४ ॥
- ६१—मुगरेहिं मुसंडीहिं सूलेहिं मुसलेहि य ।
गयासं भग्गत्तेहिं पत्तं दुक्खं अणन्तसो ॥
- ६२—खुरेहिं तिक्खधारेहिं^५ छुरियाहिं^६ कप्पणीहिय ।
कप्पिओ फालिओ छिन्नो उक्कत्तो^७ य अणेगसो^८ ॥
- ६३—पासेहिं कूडजालेहिं मिओ वा अवसो अहं ।
वाहिओ^९ वद्धरुद्धो अ 'बहुसो'^{१०} चेव विवाइओ ॥

१—जलत्त (वृ० पा०) ।

२—पाह ति (वृ०) ।

३—विपाडिओ (वृ०) , विवाइओ (वृ० पा०) ।

४,८—अणत्तसो (उ, ऋ) ।

५—तिक्ख दाढेहिं (उ) ।

६—छुरीहिं (ऋ) ।

७—उक्कित्तो (वृ० पा०, सु) ।

८—गहिओ (वृ० पा०) ।

१०—विवसो (उ, ऋ) ।

- ६४—गलेहि मगरजालेहि
मच्छो वा अवसो अहं ।
उल्लिओ^१ फालिओ गहिओ
मारिओ य अणन्तसो ॥
- ६५—वीदंसएहि^२ जालेहि
लेप्पाहिं सउणो विव ।
गहिओ लगो^३ बद्धो य
मारिओ य अणन्तसो ॥
- ६६—कुहाडफरसुमाईहि
वड्ढईहि दुमो विव ।
कुट्टिओ फालिओ छिन्नो
तच्छिओ य अणन्तसो ॥
- ६७—चवेडमुट्टिमाईहि
कुमारेहि अयं पिव ।
ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो
चुण्णिओ य अणन्तसो ॥
- ६८—तत्ताइं तम्बलोहाइं तउयाइं सीसयाणि य ।
पाइओ कलकलन्ताइं आरसन्तो सुभेरवं ॥
- ६९—तुहं पियाइं मंसाइं खण्डाइं सोल्लगाणि य ।
खाविओ मि^४ समंसाइं अग्गिवण्णाइं णेगसो ॥
- ७०—तुहं पिया सुरा सीहू मेरओ य महुणि^५ य ।
पाइओ^५ मि जलन्तीओ वसाओ रुहिराणि य ॥

१—अल्लिओ (उ, ऋ) ।

२—वीसंदएहि (ऋ) ; वीस देहिप (उ) ।

३—भगो (अ) ।

४—वि (ऋ) ।

५—पज्जितो (वृ०) ।

- ७१—निच्चं^१ भीएण तत्थेण दुहिएण वहिएण य ।
परमा दुहसंबद्धा वेयणा वेइया मए ॥
- ७२—तिव्वचण्डप्पगाढाओ घोराओ अइदुस्सहा ।
मह्वभयाओ^२ भीमाओ नरएसु वेइया मए ॥
- ७३—जारिसा माणुसे लोए ताया ! दीसन्ति वेयणा ।
एत्तो^३ अणन्तगुणिया नरएसु दुक्खवेयणा ॥
- ७४—सव्वभवेसु अस्साया वेयणा वेइया मए ।
निमेसन्तरमित्तं पि जं साया नत्थि वेयणा ॥

मिगचारिया-पदं

- ७५—तं वित्तं^४ म्मापियरो छन्देणं पुत्त ! पव्वया ।
नवरं पुण सामण्णे दुक्खं निप्पडिकम्मया ॥
- ७६—सो वित्तं म्मापियरो ! एवमेयं जहाफुडं ।
पडिकम्मं को कुणई अरण्णे मियपक्खिणं ? ॥
- ७७—एगभूओ अरण्णे वा जहा उ चरई मिगे ।
एवं धम्मं चरिस्सामि संजमेण तवेण य ॥
- ७८—जया मिगस्स आयंको महारण्णम्मि जायई ।
अच्छन्तं रुक्खमूलम्मि कोणं ताहे तिगिच्छई^५ ? ॥
- ७९—को वा से ओसहं देई ? को वा से पुच्छई सुहं ? ।
को से भत्तं च 'पाणं च'^५ आहरित्तु पणामए ? ॥
- ८०—जया य से सुही होइ तया गच्छइ गोयरं ।
भत्तपाणस्स अट्ठाए वल्लराणि सराणि य ॥

१—निच्च (अ, ऋ) ।

२—महालया (वृ० पा०) ।

३—तत्तो (अ) ; इत्तो (उ, ऋ) ।

४—विगिच्छई (उ), चिगिच्छई (ऋ) ।

५—पाण वा (ऋ) ।

८१—खाइत्ता पाणियं पाउं वल्लरेहिं सरेहि वा ।

मिगचारियं चरित्ताणं गच्छई मिगचारियं ॥

८२—एवं समुद्धिओ भिक्खू एवमेव अणेगओ^१ ।

मिगचारियं चरित्ताणं उद्धं पक्कमई दिसं ॥

८३—जहा मिगे एग अणेगचारी

अणेगवासे धुवगोयरे य ।

एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे

नो हीलए नो वि य खिसएज्जा ॥

८४—मिगचारियं चरिस्सामि एवं पुत्ता! जहासुहं ।

अम्मापिऊहिंऽणुन्नाओ जहाइ उवहि तओ ॥

८५—मिगचारियं चरिस्सामि सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।

तुब्भेहि अम्म!ऽणुन्नाओ गच्छ पुत्त! जहासुहं ॥

पव्वज्जा-पदं

८६—एवं सो अम्मापियरो अणुमाणित्ताण बहुविहं ।

ममत्तं छिन्दई ताहे महानागो व्व कंचुयं ॥

८७—इड्ढिं^२ वित्तं च मित्ते य पुत्तदारं च नायओ ।

रेणुयं व पडे लग्गं निद्धुणित्ताण निग्गओ ॥

समत्ता-पदं

८८—पंचमहव्वयजुत्तो

पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तो य ।

सन्निन्तरवाहिरओ

तवोकम्मंसि

उज्जुओ ॥

१—अणेगओ (अ, ऋ) ; अणिपयणे (वृ० पा०) ।

२—इड्ढी (उ, ऋ) ।

- ८९-निम्ममो निरहंकारो निस्संगो चत्तगारवो । --
 समो य सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य ॥
- ९०-लाभालाभे सुहे दुक्खे जीविए मरणे तहा ।
 समो निन्दापसंसासु तहा माणावमाणओ ॥
- ९१-गारवेसु कसाएसु दण्डसल्लभएसु य ।
 नियत्तो हाससोगाओ अनियाणो अवन्धणो ॥
- ९२-अणिस्सिओ इहं लोए परलोए अणिस्सिओ ।
 वासीचन्दणकप्पो य असणे अणसणे तहा ॥
- ९३-अप्पसत्थेहिं दारेहिं सव्वओ पिहियासवे ।
 अज्भप्पज्झाणजोगेहिं पसत्थदमसासणे ।
- ९४-एवं नाणेण चरणेण दंसणेण तवेण य ।
 भावणाहिं 'य सुद्धाहिं'^१ सम्मं भावेत्तु अप्पयं ॥
- ९५-बहुयाणि उ^२ वासाणि सामणमणुपालिया ।
 मासिएण उ^३ भत्तेण सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ॥
 निक्खेव-पदं
- ९६-एवं करन्ति संवुद्धा^४ पण्डिया पवियक्खणा ।
 विणियट्टन्ति भोगेसु मियापुत्ते जहारिसी^५ ॥
- ९७-महापभावस्स महाजसस्स
 मियाइ पुत्तस्स निसम्म भासियं ।
 तवप्पहाणं चरियं^६ च उत्तमं
 गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुयं ॥

१-विमुद्धाहिं (वृ०, सु) ।

२-ओ (उ) ; अ (ऋ) ।

३-य (अ) ।

४-सपन्ना (उ, वृ०) ।

५-जहामिसी (वृ०, सु) ।

६-चरित्तं (अ) ।

९८—वियाणिया दुक्खविवद्धणं धणं
 ममत्तबंधं च महब्भयावहं ।
 सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं
 धारेह निव्वाणगुणावहं^१ महं ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

विसङ्गं अज्जयणं
महानियण्ठिज्जं

उक्खेव-पदं

- १-सिद्धाणं नमो किञ्चा संजयाणं च भावओ ।
अत्यधम्मगइं^१ तच्चं अणुसट्ठिं सुणेह मे ॥
- २-पभूयरयणो राया सेणिओ मगहाहिवो ।
विहारजत्तं निज्जाओ मण्डिकुच्छिसि चेइए ॥
- ३-नाणाट्टुमलयाइण्णं नाणापक्खिनिसेवियं ।
नाणाकुसुमसंछल्लं उज्जाणं तन्दपोवमं ॥
- ४-तत्थ सो पासई साहुं संजयं सुसमाहियं ।
निसल्लं ख्खमूलम्मि सुकुमालं सुहोइयं ॥
- ५-तस्स ख्वं तु पासित्ता राइणो तम्मि संजए ।
अच्चन्तपरमो आसी अउलो ख्वविम्हओ ॥
- ६-अहो! वण्णो अहो! ख्वं अहो! अज्जस्स सोमया ।
अहो! खन्ती अहो! मुत्ती अहो! भोगे असंगया ॥
- ७-तस्स पाए उ वन्दित्ता काळण य पयाहिणं ।
नाइद्वूरमणासन्ने^२ पंजली पडिपुच्छई ॥

अणाह-पदं

- ८-तरुणो सि अज्जो ! पव्वइओ
भोगकालम्मि संजया ! ।
उवट्ठिओ^३ सि सामण्णे
एयमट्ठं सुणेमि ता ॥

१-^० गत (अ) ; ^० वइं (वृ० पा०) ।

२-निसण्णो नाइद्वूरंमि (आ) ।

३-उवहिलो (वृ० पा०) ।

- ९—अणाहो मि महाराय ! नाहो मज्झ न विज्जई ।
अणुकम्पगं सुहि वावि 'कंचि नाभिसमेमऽहं'^१ ॥
- १०—तओ सो पहसिओ राया सेणिओ मगहाहिवो ।
एवं ते इड्ढि मन्तस्स कहं नाहो न विज्जई? ॥
- ११—होमि नाहो भयन्ताणं ! भोगे भुंजाहि संजया ! ।
मित्तनाईपरिवुडो माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥
- १२—अप्पणा वि अणाहो सि सेणिया ! मगहाहिया ! ।
अप्पणा अणाहो सन्तो कहं^२ नाहो भविस्ससि ? ॥
- १३—एवं वुत्तो नरिन्दो सो सुसंभन्तो सुविम्हिओ ।
वयणं अस्सुयपुव्वं साहुणा विम्हयन्निओ^३ ॥
- १४—अस्सा हत्थी मणुस्सा मे पुरं अन्तेउरं च मे ।
भुंजामि माणुसे भोगे^४ आणाइस्सरियं च मे ॥
- १५—एरिसे सम्पयग्गम्मि^५ सव्वकामसमप्पिए ।
कहं अणाहो भवइ ? 'मा ह्हु भन्ते ! मुसं वए'^६ ॥
- १६—न तुमं जाणे अणाहस्स अत्थं 'पोत्थं व'^७ पत्थिवा ! ।
जहा अणाहो भवई सणाहो वा नराहिया ? ॥
- १७—सुणेह मे महाराय ! अव्वक्खित्तेण^८ चेयसा ।
जहा अणाहो भवई जहा मे य पवत्तियं ॥

१—कचीनाहि तुमे मह (वृ०, सु) ; कची नाभिसमेमऽहं (वृ० पा०) ।

२—कस्स (आ) ।

३—विम्हयन्निओ (अ, उ, ऋ) ।

४—लोए (अ) ।

५—संपयायम्मि (वृ० पा०) ।

६—भन्ते ! माह्हु मुस वए (वृ० पा०) ।

७—उत्थं व (वृ०) ; पोत्थं च (अ) ; पोत्थं व (वृ० पा०) ।

८—अविक्वित्तेण (ऋ) ।

- १८—कोसम्बी नाम नयरी पुराणपुरभेयणी^१ ।
 तत्थ आसी पिया मज्झ पभूयघणसंचओ ॥
- १९—पढमे वए महाराय! अजला मे अच्छिद्वेयणा ।
 अहोत्था विउलो^२ दाहो 'सव्वंगेसु य'^३ पत्थिवा ! ॥
- २०—सत्थं जहा परमतिक्खं सरीरविवरन्तरे^४ ।
 पवेसेज्ज^५ अरी कुट्ठो एवं मे अच्छिद्वेयणा ॥
- २१—तियं मे अन्तरिच्छं च उत्तमंगं च पीडई ।
 इन्दासणिसमा घोरा वेयणा परमदारुणा ॥
- २२—उवट्ठिया मे आयरिया विज्जामन्ततिगिच्छणा^६ ।
 'अवीया सत्थकुसला'^७ मन्तमूलविसारया ॥
- २३—ते मे तिगिच्छं कुव्वन्ति चाउप्पायं जहाहियं ।
 न य दुक्खा विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥
- २४—पिया मे सव्वसारं पि दिज्जाहि मम कारणा ।
 न य दुक्खा^८ विमोएइ^९ एसा मज्झ अणाहया ॥
- २५—माया य^{१०} मे महाराय !
 पुत्तसोगदुहट्ठिया^{११} ।
 न य दुक्खा^{१२} विमोएइ
 एसा मज्झ अणाहया ॥

१—नगराण पुढभेयण (वृ० पा०) ।

२—तिउलो (वृ०) ; विउलो (वृ० पा०) ।

३—सव्वगत्तेसु (वृ) ; सव्वंगेसु य (वृ० पा) ।

४—सरीर वीय अंतरे (वृ० पा०) ।

५—आविलिज्ज (उ, वृ० पा०, ऋ) ।

६—^० विगिच्छणा (ऋ) ।

७—नाना सत्थत्थ कुसला (वृ० पा०) ; अवीया (अ) ।

८—दुक्खाओ (ऋ) ; दुक्खाउ (उ) ।

९—विमोयन्ति (वृ०), एव सर्वत्र ।

१०—वि (उ) ।

११—^० दुहट्ठिया (वृ० पा०) ।

१२—पा० टि० ७

- २६—भायरो^१ मे महाराय ! सगा जेद्वकणिद्वगा ।
 न य दुक्खा^२ विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥
- २७—भइणीओ मे महाराय ! सगा जेद्वकणिद्वगा ।
 न य दुक्खा^३ विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥
- २८—भारिया मे महाराय ! 'अणुरत्ता अणुव्वया'^४ ।
 अंसुपुण्णेहिं नयणेहिं उरं मे परिसिचई ॥
- २९—अन्नं पाणं च ण्हाणं च गन्धमल्लविलेवणं ।
 'मए नायमणायं वा'^५ सा वाला नोवभुंजई ॥
- ३०—खणं पि मे महाराय ! पासाओ वि^६ न फिट्टई ।
 न य दुक्खा विमोएइ एसा मज्झ अणाहया ॥
- ३१—तओ हं एवमाहंसु दुक्खमा हु पुणो पुणो ।
 वेयणा अणुभविउं जे संसारम्मि अणन्तए ॥
- ३२—सइं^७ च जइ मुच्चेज्जा वेयणा विउला इओ ।
 खन्तो दन्तो निरारम्भो पव्वए^८ अणगारियं ॥
- ३३—एवं च चिन्तइत्ताणं पसुत्तो मि नराहिवा ! ।
 परियद्वन्तीए राईए वेयणा मे खयं गया ॥
- ३४—तओ कल्ले पभायम्मि आपुच्छित्ताण बन्धवे ।
 खन्तो दन्तो निरारम्भो पव्वइओऽणगारियं ॥
- ३५—ततो हं नाहो जाओ अप्पणो य परस्स य ।
 सव्वेसि चेव भूयाणं तसाण थावराण य ॥

१—भाया (उ) ।

२, ३—दुक्खाओ (ऋ) ; दुक्खाउ (उ) ।

४—अणुत्तरमणुव्वया (उ, ऋ, वृ० पा०) ।

५—तारिसं रोगमावण्णे (वृ० पा०) ।

६—य (अ, आ, उ) ।

७—सयं (उ, वृ०) ; सइय (अ) ।

८—पव्वइए (उ) ।

अत्त-पदं

- ३६—अप्पा नई वेयरणी अप्पा मे कूडसामली ।
 अप्पा कामदुहा धेणू अप्पा मे नन्दणं वणं ॥
- ३७—अप्पा कत्ता विकत्ता य दुहाण य सुहाण य ।
 अप्पा मित्तममित्तं चं दुप्पट्टियंसुपट्टिओ ॥

धम्मलोव-पद

- ३८—इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा !
 तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि ।
 नियण्ठधम्मं लहियाण वी जहां
 सीयन्ति एगे बहुकायरा नरा ॥

- ३९—जो पव्वइत्ताण महव्वयाइं
 सम्मं नो फासयई^१ पमाया ।
 अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे
 न मूलओ छिन्दइ बन्धणं से ॥

- ४०—आउत्तया जस्स न अत्थि काइ
 इरियाए भासाए तहेसणाए ।
 आयाणनिक्खेवदुगुच्छणाए
 न वीरजायं^२ अणुजाइ मग्गं ॥

- ४१—चिरं पि से मुण्डरुई भवित्ता
 अथिरव्वए तवनियमेहि भट्ठे ।
 चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता
 न पारए होइ हु संपराए ॥

१—फासइ (उ, ऋ) ।

२—वीरजाय (सु) ।

- ४२—'पोल्ले व'^१ मुट्ठी जह से असारे
 अयन्तिए कूडकहावणे वा ।
 राढामणी वेरुलियप्पगासे
 अमहग्घए होइ य जाणएसु ॥
- ४३—कुसील्लिंगं इह धारइत्ता
 इसिज्भयं जीविय बूहइत्ता ।
 असंजए संजयलप्पमाणे^२
 विणिघायमागच्छइ से चिरं पि ॥
- ४४—'विसं तु पीयं'^३ जह कालकूडं
 हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं ।
 'एसे व'^४ धम्मो विसओववन्नो
 हणाइ वेयाल इवाविवन्नो^५ ॥
- ४५—जे लक्खणं सुविण पउंजमाणे
 निमित्तकोऊहलसंपगाढे ।
 कुहेडविज्जासवदारजीवी
 न गच्छई सरणं तम्मि काले ॥
- ४६—तमंतमेणेव उ से असीले
 सया दुहो विप्परियासुवेइ^६ ।
 संधावई नरगतिरिक्खजोणिं
 मोणं विराहेत्तु असाहुरूवे ॥

१—पोल्लार (वृ० पा०) ।

२—सजयलाममाणे (वृ० पा०) ।

३—विस पिपित्ता (अ, आ) : विस पिपन्ती (वृ०) ।

४—एसो वि (अ) : एसो व (उ) ।

५—इवाविबंधणो (वृ० पा०) ।

६—^० समेइ (अ) ।

४७—उद्देसियं कीयगडं नियामं
 न मुंचई किंचि अणेसणिज्जं ।
 अग्गी विवा सव्वभक्खी भवित्ता
 इओ चुओ गच्छइ कट्टु पावं ॥

४८—न तं अरी कण्ठेत्ता करेड
 जं से करे अप्पणिया दुरप्पा' ।
 से नाहिई मच्चुमुहं तु पत्ते
 पच्छाणुतावेण द्याविहूणो ॥

४९—निरट्टिया नग्गइ उ तस्स
 जे उत्तमइं विवज्जासमेई ।
 इमे वि से नत्थि परे वि लोए
 दुहओ वि से फिज्जइ तत्थ लोए ॥

५०—एमेवऽहाद्धन्वकुसीलह्वे
 मग्गं विराहेत्तु जिणुत्तमाणं ।
 कुररी विवा भोगरसाणुगिद्धा
 निरट्टसोया परियावमेइ ॥
 निक्खेव-पवं

५१—सोच्चाण मेहावि सुभासियं इनं
 अणुसासणं नाणगुणोववेयं ।
 मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं
 महानियण्ठाण वए पहेणं ॥

- ५२—चरित्तमायारगुणन्नि^१ तओ
 अणुत्तरं संजम पालियाणं ।
 निरासवे संखवियाण कम्मं
 उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं ॥
- ५३—एवुग्गदन्ते वि महातवोधणे
 महामुणी महापइन्ते महायसे ।
 महानियण्ठिज्जमिणं महासुयं
 से काहए महया वित्थरेणं ॥
- ५४—तुट्ठो य सेणिओ राया इणमुदाहु कयंजली ।
 अणाहत्तं जहाभूय सुट्ठु मे उवदंसियं ॥
- ५५—तुज्झं सुलद्धं खु मणुस्सजम्मं
 लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी ! ।
 तुब्भे सणाहा य सबन्धवा य
 जं भे ठिया मग्गे जिणुत्तमाणं ॥
- ५६—तं सि नाहो अणाहाणं सव्वभूयाण संजया ! ।
 खामेमि ते महाभाग ! इच्छामि अणुसासिउं ॥
- ५७—पुच्छिऊण मए तुब्भं फ़ाणविग्घो उ^२जो कओ ।
 निमन्तिओ^३ य भोगेहि तं सव्वं मरिसेहि मे ॥
- ५८—एवं थुणित्ताण स रायसीहो
 अणगारसीहं परमाइ भत्तिए ।
 'सओरोहो य सपरियणो य'^४
 धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ॥

१—^० गुणत्ति (अ) ।

२—अ (ऋ) ।

३—निमत्तिया (अ, आ, इ, उ) ।

४—सओरोहो सपरियणो सवधवो (अ, आ, इ) ।

५९—ऊससियरोमकूवो काऊण य पयाहिणं ।
 अभिवन्दिऊण सिरसा अइयाओ^१ नराहिवो ॥

६०—इयरो वि गुणसमिद्धो
 तिगुत्तिगुत्तो तिदण्डविरओ य ।
 विहग इव विप्पमुक्को
 विहरइ वसुह विगयमोहो ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

एगविसइम अज्भयण

समुद्दपालीयं

उक्खेव-पदं

- १—चम्पाए पालिए नाम सावए आसि वाणिए ।
महावीरस्स भगवओ सीसे सो उ महप्पणो ॥
- २—निग्गन्थे पावयणे सावए से विकोविए ।
पोएण ववहरन्ते पिहुण्डं नगरमागए ॥
- ३—पिहुण्डे ववहरन्तस्स वाणिओ देइ धूरं ।
तं ससत्तं पइगिज्झ सदेसमह पत्थिओ ॥
- ४—अह पालियस्स धरणी समुद्धंमि पसवई ।
अह 'दारए तहि'^१ जाए समुद्धपालि त्ति नामए ॥
- ५—खेमेण आगए चम्पं सावए वाणिए घरं ।
संवड्ढई घरे तस्स दारए से सुहोइए ॥
- ६—बावत्तरिं कलाओ य सिक्खए^२ नीइकोविए ।
जोव्वणेण य संपन्ने^३ सुरूवे पियदंसणे ॥
- ७—तस्स रूववइं भज्ज पिया आणेइ रूविणिं ।
पासाए कीलए रम्मे देवो दोगुन्दओ जहा ॥
- ८—अह अन्नया कयाई पासायालयणे ठिओ ।
वज्झमण्डणसोभागं वज्झं पासइ वज्झगं ॥

१—वालए ° (उ) ; वालए तम्मि (ऋ) ।

२—सिक्खिए (उ, ऋ, वृ०) ; सिक्खए (वृ० पा०) ।

३—अप्फुण्णे (वृ०) ; सम्पन्ने (वृ० पा०) ।

- ९-तं पासिरुण संविगो^१ समुद्पालो इणमव्ववी ।
 अहोऽसुभाण कम्माणं निज्जाणं पावगं इमं ॥
- १०-संबुद्धो सो तर्हि भगवं 'परं संवेगमागओ'^२ ।
 आपुच्छऽम्मापियरो पव्वए^३ अणगारियं ॥
- ११-'जहित्तु संगं च'^४ महाकिलेसं
 महन्तमोहं कसिणं भयावहं^५ ।
 परियायधम्मं चऽभिरोयएज्जा
 वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥
 महव्वय-पद
- १२-अर्हिस सच्चं च अतेणगं च
 तत्तो य 'वम्मं अपरिगहं च'^६ ।
 पडिवज्जिया पंच महव्वयाणि
 चरिज्ज धम्मं जिणदेसियं विरु ॥
 चरिया-पद
- १३-सव्वेर्हि भूएर्हि दयाणुकम्पी^७
 खन्तिकवमे संजयवम्भयारी ।
 सावज्जजोगं परिवज्जयन्तो
 चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइन्द्रिए ॥

१-सवेगं (उ, ऋ, वृ०) ।

२-परम^० (उ) ।

३-पव्वइए (उ) ।

४-जहिज्ज सगथ (वृ०) ; जहित्तुऽसंगंथ (चू०) ; जहित्तु, सागंथ^० (सु) ;
 जहित्तु सग च, जहाय सग च (वृ० पा०) ।

५-भयाणग (वृ०, चू०) ।

६-अव्वम परिगह च (वृ० पा०) ।

७-दयाणुकपो (वृ० पा०) ।

- १४—कालेण कालं विहरेज्ज रट्टे^१
 बलाबलं जाणिय अप्पणो य^२ ।
 सीहो व सट्टेण न संतसेज्जा
 वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ॥
- १५—उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा
 पियमप्पियं सव्व तित्तिक्खएज्जा ।
 न सव्व सव्वत्थऽभिरोयएज्जा
 न यावि पूयं गरहं च संजए ॥
- १६—अणेगच्छन्दाइह^३ माणवेहिं
 जे भावओ संपगरेइ^४ भिक्खू ।
 भंयभेरवा तत्थ उइन्ति^५ भीमा
 दिव्वा मणुस्सा अदुवा त्तिरिच्छा ॥
- १७—परीसहा दुव्विसहा अणेगे
 सीयन्ति जत्था बहुकायरा नरा ।
 से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू
 संगामसीसे इव नागराया ॥
- १८—सीओसिणा दंसमसा य फासा
 आयंका विविहा फुसन्ति देहं ।
 अकुक्कुओ^६ तत्थऽहियासएज्जा
 रयाइं^७ खवेज्ज पुरेकडाइं ॥

१—रिट्टे (ऋ) ।

२—उ (अ) ।

३—^० छदामिह (वृ०) ।

४—सोपगरेइ (वृ०) ।

५—उवेन्ति (वृ० पा०) ।

६—अक्ककरे (वृ० पा०, चू०) ।

७—रज्जाइं (उ) ।

- १९—पहाय रागं च तहेव दोसं
मोहं च भिक्खू सययं वियक्खणो ।
मेरु व्व वाएण अकम्पमाणो
परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥
- २०—अणुन्नए नावणए महेसी
न यावि पूयं गरहं च संजए ।
स उज्जुभावं पडिवज्ज संजए
निव्वाणमग्गं विरए उवेइ ॥
- २१—अरइरइसहे पहीणसंथवे
विरए आयहिए पहाणवं ।
परमद्वपएहिं चिइई
द्धिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥
- २२—विवित्तलयणाइ भएज्ज ताई^१
निरोवलेवाइ असंथडाइ ।
इसीहि चिण्णाइ महायसेहि
काएण फासेज्ज परीसहाइं ॥
- २३—सन्नाणनाणोवगए^२ महेसी
अणुत्तरं चरिउं धम्मसंचयं ।
अणुत्तरेणाणधरे^३ जसंसी
ओभासई सूरिए वन्तलिक्वे^४ ॥

१—ताया (ऋ) ।

२—सन्नाईण^० (ऋ) : सन्नाण^० (वृ० पा०) ; सनाण^० (वृ०) ।

३—गुणुत्तरे^० (वृ० पा०) ।

४—वन्तलिक्वे (अ) ।

निकखेव-पदं

२४—दुविहं खवेऊण य पुण्णपावं
निरंगणे^१ सव्वओ विप्पमुक्के ।

तरित्ता समुदं व महाभवोधं
समुदपाले 'अपुणागमं गए'^२ ॥

—त्ति वेमि ॥

*

१—निरंजणे (बृ०) ; निरंगणे (बृ० पा०) ।

२—^० गहं गउ (अ, चू०, ऋ, सु) ।

वाइसमं अज्मयण

रहनेमिञ्जं

उक्खेव-पदं

- १—सोरियपुरंमि नयरे आसि राया महिड्डिए ।
 वसुदेवे त्ति नामेणं रायलक्खणसंजुए ॥
- २—तस्स भज्जा दुवे आसी रोहिणी देवई तथा ।
 तासिं दोण्हं पि दो पुत्ता इट्ठा रामकेसवा ॥
- ३—सोरियपुरंमि नयरे आसी राया महिड्डिए ।
 समुद्विजए नामं रायलक्खणसंजुए ॥
- ४—तस्स भज्जा सिवा नाम तीसे पुत्तो महायसो ।
 भगवं अरिद्धनेमि त्ति लोगनाहे दमीसरे ॥
- ५—सोऽरिद्धनेमिनामो उ लक्खणस्सरसंजुओ^१ ।
 अट्टसहस्सलक्खणधरो गोयमो कालगच्छवीः ॥

निज्जाण-पदं

- ६—वज्जरिसहसंघयणो समचउरंसो भसोयरो ।
 तस्स राईमइं कन्नं भज्जं जायइ केसवो ॥
- ७—अह सा रायवरकन्ना सुसीला चारुपेहिणी ।
 सव्वलक्खणसंपुन्ना^२ विज्जुसोय्यामणिप्पभा ॥
- ८—अहाह जणओ तीसे वासुदेवं महिड्डियं ।
 इहागच्छऊ कुमारो जा से कन्नं दलाम हं ॥

१—वज्जणस्सर ° (अ, वृ० पा०) ।

२—° संपन्ना (स. क्र) ।

- ९—सव्वोसहीहि प्हविओ कयकोउयमंगलो ।
दिव्वजुयलपरिहिओ आभरणेहि विभूसिओ^१ ॥
- १०—मत्तं च गन्धहत्थिं^२ वामुदेवस्स जेड्ढं ।
आरूढो सोहए अहियं सिरे चूडामणी जहा ॥
- ११—‘अह ऊसिएण’^३ छत्तेण चामराहि य सोहिए ।
दसारचक्केण य सो सव्वओ परिवारिओ ॥
- १२—चउरंगिणीए सेनाए रइयाए जहक्कमं ।
तुरियाण सन्निनाएण दिव्वेण गगणं फुत्ते ॥
- १३—एयारिसीए इड्ढोए जुईए उत्तिमाए य ।
नियगाओ भवणाओ निज्जाओ वण्हिपुंगवो ॥
- १४—अह सो तत्थ निज्जन्तो दिस्स पाणे भयद्दुए ।
वाडेहि पंजरेहि च सन्निरुद्धे^४ सुद्धुक्खिए ॥

यवेग-पठं

- १५—जीवियन्तं तु संपत्ते मंसद्धा भक्खियव्वए ।
पासेत्ता से महापन्ने सारहि इणमव्ववी ॥
- १६—कस्स अट्ठा ‘इमे पाणा’^५ एए सव्वे मुहेसिणो ।
वाडेहि पंजरेहि च सन्निरुद्धाय अच्छहि ? ॥
- १७—अह सारही तओ भणइ एए भट्ठा उ पाणिणो ।
तुज्झं विवाहकज्जंमि भोयावेउं वहुं जणं ॥

१—विमूत्तई (ऋ) ।

२—^० हत्थिं च (अ, आ, इ, उ) ।

३—ते ओसिएण (वृ० पा०) ।

४—वद्धरुद्धे (वृ० पा०) ।

५—इहपाणे (वृ० पा०) ।

- १८—सौऋण तस्स^१ वयणं बहुपाणिविणासणं^२ ।
 चिन्तेइ से महापन्ने साणुक्कोसे जिएहि उ ॥
- १९—जइ मज्झ कारणा एए 'हम्मिहिति बहू'^३ जिया ।
 न मे एयं तु निस्सेसं परलोगे भविस्सई ॥
- २०—सो कुण्डलाण जुयलं
 सुत्तगं च महायसो ।
 आभरणाणि य सव्वाणि^४
 सारहिस्स पणामए ॥
 अभिनिकखमण-पदं
- २१—मणपरिणामे य कए
 देवा य जहोइयं समोइण्णा^५ ।
 सव्वड्ढीए सपरिसा
 निकखमणं तस्स काउं जे ॥
- २२—देवमणुस्सपरिवुडो
 सीयारयणं^६ तओ. समाख्खो ।
 निकखमिय वारगाओ
 रेवययंमि द्विओ भगवं ॥
- २३—उज्जाण संपत्तो
 ओइण्णो उत्तिमाओ सीयाओ^७ ।
 साहस्सीए परिवुडो
 अह निकखमई उ चित्ताहि ॥

१—तस्स सो (उ, ऋ) ।

२—बहुपाण^० (वृ०) ।

३—हम्मति सुवहू (उ, ऋ, वृ०), हम्मिहिति सु वहू (वृ० पा०) ।

४—सैसाणि (उ, ऋ) ।

५—समोवड्डिया (वृ० पा०) ।

६, ७—सीइया^० (ऋ) ।

२४—अहं से सुगन्धगन्धि^१ तुरियं मउयकुंचि^२ ।
सयमेव लुंचई केसे पंचमुड्डीहि^३ समाहिओ ॥

आसीवाय-पद

२५—वासुदेवो य णं भणइ लुत्तकेसं जिइन्दियं ।
इच्छियमणोरहे तुरियं पावेसू^४ तं दमीसरा ॥

२६—नाणेणं दंसणेणं च चरित्तेण तहेव^५ य ।
खन्तीए मुत्तीए^६ वड्ढमाणो भवाहि य ॥

२७—एवं ते रामकेसवा दसारा य बहू जणा ।
अरिद्वणेमि वन्दित्ता अइगया बारणापुरि ॥

राईमई-पद

२८—सोऊण रायकन्ता पव्वज्जं सा जिणस्स उ ।
नीहासा य निराणन्दा सोगेण उ समुत्थया^७ ॥

२९—राईमई विचिन्तेइ धिरत्थु मम जीवियं ।
जा हं तेण परिच्चत्ता 'सेयं पव्वइउं'^८ मम ॥

३०—अहं सा भमरसन्निभे^९ कुच्चफणगपसाहि^{१०} ।
सयमेव लुंचई केसे धिइमन्ता ववस्सिया^{११} ॥

१—सुगधि^० (ऋ, ब्रु०) ।

२—मओए^० (अ) ।

३—पचउड्ढाहिं (ब्रु०) ।

४—पावसु (ष्रु०) ।

५—त्तेण (सु) ।

६—मुत्तीए चैव (उ) ।

७—समुत्थिया (अ) ; समुच्छया (आ) ।

८—सेउं पव्वइउ (ऋ०) ; से ओ पव्वइओ (उ) ; सेउं-पव्वइयं (अ) ।

९—^० संकासे (अ) ।

१०—^० फला^० (अ) ।

११—वि तवस्सिया (अ) ।

- ३१-वासुदेवो य णं भणइ लुत्तकेसं जिइन्दियं ।
 संसारसागरं घोरं तर कन्ने! लहुं लहुं ॥
- ३२-सा पव्वइया सन्ती पव्वावेसी^१ तहिं बहं ।
 सयणं परियणं चेव सीलवन्ता बहुस्सुया ॥
- ३३-गिरिं रेवययं^२ जन्ती वासेणुल्ला उ अन्तरा ।
 वासन्ते अन्धयारंमि अन्तो लयणस्स सा ठिया ॥
- ३४-चीवराइं विसारन्ती जहा जाय त्ति पासिया ।
 रहनेमी भग्गचित्तो पच्छा दिट्ठो य तीइ वि ॥
- ३५-भीयाय सा तहिं दट्ठुं एगन्ते संजयं तयं ।
 वाहाहिं काउं संगोफं वेवमाणी निसीयई ॥
- ३६-अह सो वि रायपुत्तो समुट्ठविजयंगओ ।
 भीयं पवेवियं दट्ठुं इमं वक्कं उदाहरे ॥
- ३७-रहनेमी अहं भद्दे! सुरूवे! चारुभासिणि! ।
 ममं^३ भयाहि सुयणू! न ते पीला भविस्सई ॥
- ३८-एहि ता भुंजिमो भोए माणुस्सं खु सुट्ठुहं ।
 'भुत्तभोगा तओ'^४ पच्छा जिणमग्गं चरिस्सिमो ॥
- ३९-दट्ठूण रहनेमिं तं भग्गुज्जोयपराइयं ।
 राईमई असम्भन्ता अप्पाणं संवरे तहिं ॥
- ४०-अह सा रायवरकन्ना सुट्ठिया नियमव्वए ।
 जाई कुलं च सीलं च रक्खमाणी तयं वए ॥
- ४१-जइ सि रूवेण वेसमणो ललिएण नलकूवरो ।
 तहा वि ते न इच्छामि जइ सि सक्खं पुरन्दरो ॥

१-पव्वावेती (अ) ।

२-रवेइय (अ) ।

३-मम (वृ० पा०) ।

४-भुत्तमोगी तओ (उ, ऋ) ; भुत्तमोगा पुणो (वृ०) ।

- [पक्खदे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं ।
नेच्छन्ति वंतयं भोत्तुं कुले जाया अगंधणे ॥]^१
- ४२—धिरत्थु ते जसोकामी! जो तं जीवियकारणा ।
वन्तं इच्छसि आवेउं सेयं ते मरणं भवे ॥
- ४३—अह च भोयरायस्स तं च सि अन्धगवण्हिणो ।
मा कुले गन्धणा होमो संजमं निहुओ चर ॥
- ४४—जइ तं काहिसि भावं जाजा दिच्छसि नारिओ ।
वायाविद्धो व्व हढो अट्टिअप्पा भविस्ससि ॥
- ४५—गोवालो भण्डवालो^२ वा
जहा तद्दव्वऽणिस्सरो ।
एवं अणिस्सरो तं पि
सामण्णस्स भविस्ससि ॥
- [कोहं माणं निगिण्हित्ता मायं लोभं च सव्वसो ।
इन्दियाइं वसे काउं अप्पाणं उवसंहरे ॥]^३
- ४६—तीसे सो वयणं सोच्चा संजयाए सुभासियं ।
अंकुसेण जहा नागो धम्मे संपडिवाइओ ॥
- ४७—मणगुत्तो वयगुत्तो कायगुत्तो जिइन्दिओ ।
सामण्णं निच्चलं फासे जावज्जीवं दढव्वओ ॥
- ४८—उगं तवं चरित्ताणं जाया दोण्णि वि केवली ।
सव्वं कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥

१—यह श्लोक चूणि और बृहद् वृत्ति मे व्याख्यात नहीं है ।

२—दंडपाली (बृ० पा०) ।

३—यह श्लोक चूणि और बृहद् वृत्ति मे व्याख्यात नहीं है ।

वाङ्मयं-अजभयणं

निक्खेव-पदं

४९—एवं करेन्ति संबुद्धा पण्डिया पवियक्खणा ।
 विणियट्टन्ति भोगेषु जहा सो पुरिसोत्तमो ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

तेविसइमं अज्भयणं
केसिगोयमिज्जं

उक्खेव-पदं

- १—जिणे पासे त्ति नामेण 'अरहा लोगपूइओ ।
संबुद्धप्पा य सव्वन्नू धम्मतित्थयरे जिणे'^१ ॥
- २—तस्स लोगपईवस्स आसि सीसे महायसे ।
केसीकुमारसमणे विज्जाचरणपारगे ॥
- ३—ओहिनाणसुए बुद्धे सीससंघसमाउले ।
गामाणुगामं रीयन्ते सावत्थि नगरिमागए ॥
- ४—तिन्दुयं नाम उज्जाणं तम्मी नगरमण्डले ।
फासुए सिज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥
- ५—अह तेणेव कालेणं धम्मतित्थयरे जिणे ।
भगवं वद्धमाणो त्ति सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥
- ६—तस्स लोगपईवस्स आसि सीसे महायसे^२ ।
भगवं गोयमे नामं विज्जाचरणपारगे ॥
- ७—बारसंगविऊ बुद्धे सीससंघसमाउले ।
गामाणुगामं रीयन्ते से वि सावत्थिमागए ॥
- ८—कोट्ठगं नाम उज्जाणं तम्मी नयरमण्डले ।
फासुए सिज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥
- ९—केसीकुमारसमणे गोयमे य महायसे ।
उभओ वि तत्थ विहरिंसु अल्लीणा^३ सुसमाहिया ॥

१—..... अरिहा लोगविस्सुए ।

सव्वन्नू सव्वदंस्सी य धम्मतित्थस्स देसए ॥ (वृ० पा०) ।

२—महिडिडए (अ) ।

३—अलीणा (वृ० पा०) ।

- १०—उभओ सीससंघाणं संजयाणं तवस्सिणं ।
तत्थ चिन्ता समुप्पन्ना गुणवन्ताण ताङ्गं ॥
- ११—केरिसो वा इमो धम्मो ? इमो धम्मो व केरिसो ? ।
आयारधम्मपणिही इमा वा सा व केरिसी ? ॥
- १२—चाउज्जामो य जो धम्मो जो इमो पंचसिक्खिओ ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामुणी ॥
- १३—अचेलगो य जो धम्मो जो इमो सन्तरुत्तरो ।
एगकज्जपवन्ताणं विसेसे किं तु कारणं ? ॥
- १४—अह ते तत्थ सीसाणं विन्नाय पवितक्खियं ।
समागमे कयमई उभओ केसिगोयमा ॥
- १५—गोयमे पडिख्वन्नू सीससंघसमाउले ।
जेट्ठं कुलमवेक्खन्तो तिन्दुयं वणमागओ ॥
- १६—केसीकुमारसमणे गोयमं दिस्समागयं ।
पडिख्वं पडिवत्तिं सम्मं संपडिवज्जई ॥
- १७—पलालं फासुयं तत्थ पंचमं कुसत्तणाणि य ।
गोयमस्स निसेज्जाए खिप्पं संपणामए ॥
- १८—केसीकुमारसमणे गोयसे य महायसे ।
उभओ निसण्णा सोहन्ति चन्दसूरसमप्पभा ॥
- १९—समागंया बहू तत्थ पासण्डा 'कोउगा मिगा'^१ ।
गिहत्थाणं अणेगाओ साहस्सीओ समागया ॥
- २०—देवदाणवगन्धव्वा जक्खरक्खसकिन्नरा ।
अदिस्साणं च भूयाणं आसी तत्थ समागमो ॥
- २१—पुच्छामि ते महाभाग ! केसी गोयममव्ववी ।
तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमव्ववी ॥

१—कोउगासिया (वृ०) ; कोउगा मिगा (वृ० पा०) ।

२२—पुच्छ भन्ते! जहिच्छं ते केसिं गोयममब्बवी ।
तओ केसी अणुन्नाए गोयमं इणमब्बवी ॥

चाउज्जाम-पद

२३—चाउज्जामो य जो धम्मो जो इमो पंचसिक्खिओ ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामुणी ॥

२४—एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं ? ।
धम्मे दुविहे मेहावि! कहं^१ विप्पच्चओ न ते ? ॥

२५—तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ।
पन्ना समिक्खए धम्मं तत्तं तत्तविणिच्छयं^२ ॥

२६—पुरिमा उज्जुजडा^३ उ वंकजडा य पच्छिमा ।
मज्झिमा 'उज्जुपन्नाय'^४ तेण धम्मे दुहा कए ॥

२७—पुरिमाणं दुव्विसोज्झो उ
चरिमाणं दुरणुपालओ ।
कप्पो मज्झिमगाणं तु
सुविसोज्झो सुपालओ ॥

२८—साहु गोयम! 'पन्ना ते'^५
छिन्तो मे संसओ इमो ।
अन्तो वि संसओ मज्झं
तं मे कहसु गोयमा! ॥

१—कहिं (अ) ।

२—^० विणिच्छियं (उ, ऋ) ।

३—उज्जुकडा (अ) ।

४—उज्जुपन्नाओ (उ, ऋ) ।

५—पन्नाए (वृ० पा०) ।

अचेलंग-पदं

- २९-अचेलगो य जो घम्मो जो इमो सन्तरुतो ।
 देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महाजसा^१ ॥
- ३०-एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं ? ।
 लिंगे दुविहे मेहावि । कहां विप्पच्चओ न ते ? ॥
- ३१-केसिमेवं बुवाणं तु गोयमो इणमब्बवी ।
 विन्नाणेण समागम्म धम्मसाहणमिच्छियं ॥
- ३२-पच्चयत्थं च लोगस्स नाणाविहविगप्पणं ।
 जत्तत्थं गहणत्थं च लोणे लिंगप्पोयणं ॥
- ३३-अह भवे पइन्ना उ मोक्खसम्भूयसाहणे^२ ।
 नाणं च दंसणं चैव चरित्तं चैव निच्छए ॥
- ३४-साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

विजय-पद

- ३५-अणेगाणं सहस्साणं मज्जे चिद्धसि गोयमा ! ।
 ते य ते अहिगच्छन्ति कहां ते निज्जिया तुमे ? ॥
- ३६-एगे जिए जिया पंच पंच जिए जिया दस ।
 दसहा उ जिणित्ताणं सव्वसत्तू जिणामहं ॥
- ३७-सत्तू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
 तओ केसि बुवत तु गोयमो इणमब्बवी ॥
- ३८-एगप्पा अजिए सत्तू कसाया इन्दियाणि य ।
 ते जिणित्तु^३ जहानायं विहरामि अहं मुणी ! ॥

१-महामुणी (वृ०), महाजसा (वृ० पा०) ।

२-मुक्ख सम्भूय^० (उ, ऋ), मोक्खे सम्भूय^० (अ) ।

३-जहित्तु (अ) ।

- ३९—साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो विसंसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा! ॥
 ४०—दीसन्ति बहवे लोए पासबद्धा सरीरिणो ।
 मुक्कपासो लहुब्भूओ कंहं तं विहरसी? मुणी! ॥

पास-पद

- ४१—ते पासे सव्वसो छित्ता निहन्तूण उवायओ ।
 मुक्कपासो लहुब्भूओ विहरामि अहं मुणी! ॥
 ४२—पासा य इइ के वुत्ता? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
 ४३—रागद्दोसादओ तिब्वा नेहपासा भयंकरा ।
 ते छिन्दित्तु जहानायं विहरामि जहक्कमं ॥
 ४४—साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा! ॥

लया-पद

- ४५—अन्तोहिययसंभूया लया चिट्ठइ गोयमा! ।
 फलेइ विसभक्खीणि^१ सा उ उद्धरिया कंहं? ॥
 ४६—तं लयं सव्वसो छित्ता उद्धरित्ता समूलियं ।
 विहरामि जहानायं मुक्को मि विसभक्खणं ॥
 ४७—लया य इइ का वुत्ता? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
 ४८—भवतण्हा लया वुत्ता भीमा भीमफलोदया ।
 तमुद्धरित्तु^२ जहानायं विहरामि महामुणी! ॥

१—विसभक्खीण (बू०) ।

२—तमुच्छित्तु (उ, ऋ) ; तमुद्धरित्ता (आ) ।

४९—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

अग्गी-पदं

५०—संपज्जलिया घोरा अग्गी चिट्ठइ गोयमा ! ।

जे डहन्ति सरीरत्था^१ कहंविज्झाविया तुमे ? ॥

५१—महामेहप्पसूयाओ गिज्झ वारि जलुत्तमं ।
'सिंचामि सययं देहं'^२ सित्ता नो व डहन्ति मे ॥

५२—अग्गी य इइ के वुत्ता केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

५३—कसाया अग्गिणो वुत्ता सुयसीलतवो जलं ।
सुयधाराभिहया सन्ता भिन्ना हु न डहन्ति मे ॥

५४—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

दुट्ठस्स-पद

५५—अयं साहसिओ भीमो दुट्ठस्सो परिधावई ।
जंसि गोयम ! आरूढो कहं तेण न हीरसि ? ॥

५६—पधावन्तं निगिण्हामि सुयरस्सीसमाहियं ।
न मे गच्छइ उम्मगं मगं च पडिवज्जई ॥

५७—अस्से य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं^३ बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

५८—मणो साहसिओ भीमो दुट्ठस्सो परिधावई ।
तं सम्मं निगिण्हामि धम्मसिक्खाए कन्थगं ॥

१—जा डहेति सरीरत्था (वृ० पा०) ।

२—सिंचामि सयय ते ओ, (ते उ) (उ, ऋ, वृ) ; सिंचामि सयय देहा,
सिंचामि सयय त तु (वृ० पा०) ।

३—तओ केसि (अ) ।

५९—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

कुप्पह-पदं

६०—कुप्पहा वहवो लोए जेहि नासन्ति जंतवो ।
अद्धाणे कह वट्टन्ते तं न नस्ससि ? गोयमा ! ॥

६१—जे य मग्गेण गच्छन्ति 'जे य उम्मग्गपट्टिया'^१ ।
ते सव्वे विइया मज्झं तो न नस्सामहं^२ मुणी ॥

६२—मग्गे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममव्ववी ।
केसिमेवं वुवंतं तु गोयमो इणमव्ववी ॥

६३—कुप्पवयणपासण्डी सव्वे उम्मग्गपट्टिया ।
सम्मग्गं तु जिणक्खायं एस मग्गे हि^३ उत्तमे ॥

६४—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

दीव-पदं

६५—महाउदगवेगेणं वुज्झमाणेण पाणिणं ।
सरणं गई पइट्ठा य दीवं 'कं मन्नसी ?'^४ मुणी ! ॥

६६—अत्थि एगो महादीवो वारिमज्जे महालओ ।
महाउदगवेगस्स गई तत्थ न विज्जई ॥

६७—दीवे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममव्ववी ।
केसिमेवं वुवंतं तु गोयमो इणमव्ववी ॥

१—जे उम्मग्ग पट्टिया (अ) ।

२—नस्सामिह (अ) ।

३—हे (अ) ।

४—कम्मणसी (अ) ।

- ६८—जरामरणवेगेणं वुज्झमाणण पाणिणं ।
 धम्मो दीवो 'पइट्ठा य'^१ गई सरणमुत्तमं ॥
 ६९—साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा! ॥

नावा-पदं

- ७०—अण्णवंसि महोहंसि नावा विपरिधावई ।
 जंसि गोयममारूढो कंहं पारं गमिस्ससि ? ॥
 ७१—जा उ अस्साविणी^२ नावा
 न सा पारस्स गामिणी ।
 जा निरस्साविणी नावा
 सा उ पारस्स गामिणी ॥
 ७२—नावाय इइ का वुत्ता? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
 ७३—सरीरमाहु नाव त्ति जीवो वुच्चइ नाविओ ।
 संसारो अण्णवो वुत्तो जं तरन्ति महेसिणो ॥
 ७४—साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा! ॥

उज्जोय-पदं

- ७५—अन्धयारे तमे घोरे चिद्धन्ति पाणिणो बहू ।
 को करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोगंमि पाणिणं ? ॥
 ७६—उग्गओ विमलो भाणू सव्वलोगप्पभंकरो ।
 सो करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोगंमि पाणिणं ॥

१—पचिट्ठा णं (अ) ।

२—सस्साविणी (वृ० पा०) ।

- ७७—भाणू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
- ७८—उग्गओ खीणसंसारी सव्वन्नु जिणभक्खरो ।
 सो करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोयंमि पाणिणं ॥
- ७९—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

ठाण-पदं

- ८०—सारीरमाणसे दुक्खे बज्जमाणेण^१ पाणिणं ।
 खेमं सिवमणाबाहं ठाणं किंमन्नसी मुणी ? ॥
- ८१—अत्थि एगं धुवं ठाणं लोगगंमि दुरारुहं ।
 जत्थं नत्थि जरा मच्चू वाहिणो वेयणा तथा ॥
- ८२—ठाणे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
- ८३—निव्वाणं ति अबाहं ति सिद्धी लोगगमेव य ।
 खेमं सिवं अणाबाहं जं चरन्ति महेसिणो ॥
- ८४—तं ठाणं सासयंवासं लोगगंमि दुरारुहं ।
 जं संपत्ता न सोयन्ति भवोहन्तकरा मुणी ॥
- ८५—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
 नमो ते संसयाईय ! सव्वसुत्तमहोयही ! ॥
- ८६—एवं तु संसए छिन्ने केसी घोरपरक्कमे ।
 'अभिन्दित्ता सिंरसा गोयमं तु महायसं'^२ ॥

१—पञ्चमाणेण (वृ० पा०) ।

२—वंदित्तु पंजलिउडो गोत्तमं तु महामुणी (चू०) ।

८७—'पंचमहव्वयधम्मं पडिवज्जइ भावओ ।
पुरिमस्स पच्छिमंमी^१ मग्गे तत्थ सुहावहे ॥'^२

निक्खेव-पदं

८८—केसिगोयमओ निच्चं तम्मि आसि समागमे ।
सुयसीलसमुक्करिसो महत्थऽत्थविणिच्छओ ॥
८९—तोसिया परिसा सब्वा 'सम्मग्गं^३ समुवट्ठिया'^४ ।
'संथुया ते पसीयन्तु'^५ भयवं केसिगोयमे ॥
—त्ति वेमि ॥

*

१—पच्छिमस्सी (अ) ।

२—पंच महव्वय जुत्तं भावतो पडिवज्जिया ।

धम्म पुरिमस्स पच्छिममि मग्गे सुहावहे ॥ (चू०) ।

३—पज्जुवट्ठिया (वृ० पा०) ।

४—सम्मत्ते पज्जुवट्ठिया (चू०) ।

५—सज्जुता ते पदीसत्तु (चू०) ।

चउविसइमं अज्भयणं

पवयण-माया

उक्खेव-पदं

- १-अट्ट पवयणमायाओ समिई गुत्ती तहेव य ।
 पंचेव य समिईओ तओ गुत्तीओ आहिया ॥
- २-इरियाभासेसणादाणे उच्चारे समिई इय ।
 मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती य' अट्टमा ॥
- ३-एयाओ अट्ट समिईओ समासेण वियाहिया ।
 दुवालसंगं जिणक्खायं मायं जत्थ उ पवयणं ॥

समिइ-पद

- ४-आलम्बणेण कालेण मग्गेण जयणाइ य ।
 चउकारणपरिसुद्धं संजए इरियं रिए ॥
- ५-तत्थ आलंबणं नाणं दंसणं चरणं तहा ।
 काले य दिवसे वुत्ते मग्गे उप्पहवज्जिए^२ ॥
- ६-दव्वओ खेत्तओ चेव कालओ भावओ तहा ।
 जयणा^३ चउव्विहावुत्ता तं मे कित्तयओ सुण ॥
- ७-दव्वओ चक्खुसा पेहे जुगमित्तं च खेत्तओ ।
 कालओ जाव रीएज्जा उवउत्ते य भावओ ॥
- ८-इन्दियत्थे विवज्जित्ता सज्झायं चेव पंचहा ।
 तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे उवउत्ते इरियं^४ रिए ॥

१-उ (अ) ।

२-दुप्पह वज्जिए (अ) ।

३-जायणा (ऋ) ।

४-रियं (ऋ) ।

- ९—‘कोहे माणे य मायाए लोभे य उवउत्तया^१ ।
हासे भए मोहरिए विगहासु तहेव च ॥’^२
- १०—एयाइं अट्ट ठाणाइं परिवज्जित्तु संजए ।
असावज्जं मियं काले भासं भासेज्ज पन्नवं ॥
- ११—‘गवेसणाए गहणे य परिभोगेसणा य जा ।
आहारोवहिसेज्जाए एए तिन्नि विसोहए ॥’^३
- १२—उग्गमुप्पायणं पढमे बीए सोहेज्ज एसणं ।
परिभोयंमि चउक्कं विसोहेज्ज जयं जई ॥
- १३—ओहोवहोवग्गहियं भण्डगं दुविहं मुणी ।
गिण्हन्तो निक्खवन्तोय पउंजेज्ज इमं विहिं ॥
- १४—चक्खुसा पडिलेहिता पमज्जेज्ज जयं जई ।
आइए निक्खिवेज्जा वा दुहओ वि समिए सया ॥
- १५—उच्चारं पासवणं खेलं सिघाणजल्लियं ।
आहारं उवहिं देहं अन्नं वावि तहाविहं ॥
- १६—अणावायमसंलोए अणावाए चेव ह्योइ संलोए ।
आवायमसंलोए आवाए चेय संलोए ॥
- १७—अणावायमसंलोए परस्सऽणुवघाइए ।
समे अज्झुसिरे यावि अचिरकालकयंमि य ॥
- १८—वित्थिण्णे दूरभोगाढे नासन्ने बिलवज्जिए ।
तसपाणबीयरहिए उच्चाराईणि वोसिरे ॥

१—उवउत्तओ (अ) ।

२—कोहे य माणे य माया य लोभे य तहेव य ।

हास भय मोहरीए विकहा य तहेव य ॥ (वृ० पा०) ।

३—गवेसणाए गहणेणं परिभोगेसणाणि य ।

आहारमुवहिं सेज्ज एए तिन्नि विसोहिय ॥ (वृ० पा०) ।

१९—एयाओ पंच समिईओ समासेण वियाहिया ।
एत्तो य तओ गुत्तीओ वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥

गुत्ति-पदं

२०—सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा मणगुत्ती चउव्विहा ॥

२१—संरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य ।
मणं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ॥

२२—सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा वइगुत्ती चउव्विहा ॥

२३—संरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य ।
वयं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ॥

२४—ठाणे निसीयणे चेव तहेव य तुयट्टणे ।
उल्लंघणपल्लंघणे इन्दियाण य जुंजणे ॥

२५—संरम्भसमारम्भे आरम्भम्मि तहेव य ।
कायं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ॥

निकखेव-पद

२६—एयाओ पंच समिईओ चरणस्स य पवत्तणे ।
गुत्ती नियत्तणे वुत्ता असुभत्थेसु सव्वसो ॥

२७—एया पवयणमाया जे सम्मं आयरे मुणी ।
से खिप्पं सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिण ॥

—त्ति बेमि ॥

पंचविंसद्म अज्जयणं

जन्मइज्जं

उक्खेव-पद

- १—माहणकुलसंभूओ आसि विप्पो महायसो ।
जायाई जमजन्तंमि जयघोसे त्ति नामओ ॥
- २—इन्दियग्गामनिग्गाही मग्गामी महामुणी ।
गामाणुगामं रीयन्ते पत्ते वाणारसिं पुरिं ॥
- ३—वाणारसीए^१ वहिया उज्जाणंमि मणोरमे ।
फासुए सेज्जसंधारे तत्थ वासमुवागए ॥
- ४—अह तेणेव कालेणं पुरीए तत्थ माहणे ।
विजयघोसे त्ति नामेण जन्तं जयइ वेयवी ॥
- ५—अह से तत्थ अणगारे मासक्खमणपारणे ।
विजयघोसस्स जन्तंमि भिक्खमट्ठा^२ उवट्ठिए ॥
- ६—समुवट्ठियं तर्हि सन्तं जायगो पडिसेहए ।
न हु दाहामि ते भिक्खं भिक्खू जायाहि अन्नओ ॥
- ७—जे य वेयविऊ विप्पा जन्तट्ठा य 'जे दिया'^३ ।
जोइसंगविऊ जे य जे य धम्माण पारगा ॥
- ८—जे समत्था समुद्धत्तं परं अप्पाणमेव य ।
तेसिं अन्नमिणं देयं भो भिक्खू सव्वकामियं ॥
- ९—सो 'एवंतत्थ'^४ पडिसिद्धो जायगेण महामुणी ।
न वि रुट्ठो न वि तुट्ठो उत्तमट्ठगवेसओ ॥

१—वाणारसीय (अ, वृ०) ।

२—भिक्खस्स अट्ठा (वृ० पा०) ।

३—जिहदिया (आ) ।

४—तत्थ एव (वृ०) ।

१०—नऽन्नद्वं पाणहेउं वा न वि निव्वाहणाय वा ।
तेसिं विमोक्खणद्वाए इमं वयणमब्बवी ॥

मुख-पदं

११—नवि जाणसि वेयमुहं नवि जन्नाण जं मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं जं च जं च धम्माण वा मुहं ।

१२—जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ।
न ते तुमं वियाणासि अह जाणासि तो भण ॥

१३—तस्सऽक्खेवपमोक्खं च अचयन्तो तहि दिओ ।
सपरिसो पंजली होउं पुच्छई तं महानुणिं ॥

१४—वेयाणं च मुहं बूहि बूहि जन्नाण जं मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं बूहि बूहि धम्माण वा मुहं ॥

१५—जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ।
एयं मे संसयं सव्वं साहू कहयं पुच्छिओ ॥

१६—अग्गिहोत्तमुहा वेया जन्नट्ठी वेयसां मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं चन्दो धम्माणं कासवो मुहं ॥

१७—जहा चन्दं गहाईया चिद्वन्ती पंजलीउडा ।
वन्दमाणा नमंसन्ता उत्तमं मणहारिणो ॥^१

१८—अजाणगा जन्नवाई विज्जामाहणसंपया ।
गूढा^३ सज्झायतवसा भासच्छन्ता इवऽग्गिणो ॥

माहण-पद

१९—जो लोए बम्भणो वुत्तो अग्गी वा महिओ जहा ।
सया कुसलसंदिद्वं तं वयं बूम माहणं ॥

१—कहइ (अ) ।

२—जहा चन्दे गहाईये चिद्वन्ती पजलीउडा ।

णमंसमाणा वदती उद्वत्तमणहारिणो [उद्वत्तमणहारिणो] ॥ (वृ० पा०) ।

३—मूढा (वृ०) ; गूढा (वृ० पा०) ।

- २०—जो न सज्जइ आगन्तुं पव्वयन्तो न सोयई^१ ।
 रमए अज्जवयणंमि तं वयं वूम माहणं ॥
- २१—जायरुवं जहामट्टं^२ निद्धन्तमलपावगं ।
 रागट्ठोसभयाईयं तं वयं वूम माहणं ॥
 [तवस्सियं किसं दन्तं अवचियमंससोणियं ।
 सुव्वयं पत्तनिव्वाणं तं वयं वूम माहणं ॥]^३
- २२—तसपाणे वियाणेत्ता संगहेण 'य धावरे'^४ ।
 जो न हिंसइ तिविहेणं^५ तं वयं वूम माहणं ॥
- २३—कोहा वा जइ वा हासा लोहा वा जइ वा भया ।
 मुसं न वयई जो उ तं वयं वूम माहणं ॥
- २४—चित्तमन्तमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा वहुं ।
 न गेण्हइ अदत्तं जो तं वयं वूम माहणं ॥
- २५—दिव्वमाणुसतेरिच्छं जो न सेवइ मेहुणं ।
 मणसा कायवक्केणं तं वयं वूम माहणं ॥
- २६—जहा पोमं जले जायं नोवलिप्पइ चारिणा ।
 एवं अलित्तो^६ कामेहिं तं वयं वूम माहणं ॥
- २७—अलोलुयं मुहाजीवी^७ अणगारं अर्किचणं ।
 असंसत्तं गिहत्येसु तं वयं वूम माहणं ॥

१—चुव्वइ (उ) ।

२—महामट्टं (वृ०) ; जहामट्टं (वृ० पा०) ।

३—यह श्लोक बृहद् वृत्ति में व्याख्यात नहीं है ।

४—सधावरे (वृ० पा०) ।

५—पर्यं तु (वृ०) ; तिविहेण (वृ० पा०) ।

६—अलित्तं (जा, इ, चु) ।

७—मुहाजीवी (वृ० पा०) ।

- [अहिता पुव्वसंजोगं नाइसंगे^१ य बन्धवे । --
 जो न सज्जइ एएहिं^२ तं वयं बूम माहणं ॥]^३
 २८—पसुबन्धा^४ सव्ववेया^५ जहं च पावकम्मणा ।
 न तं तायन्ति दुस्सीलं कम्माणि बलवन्ति ह ॥
 २९—त विमुण्डिण समणो न ओंकारेण बम्भणो ।
 न मुणी रण्णवासेण कुसचीरेण न तावसो ॥
 ३०—समयाए समणो होइ बम्भचेरेण बम्भणो ।
 नाणेण य मुणी होइ तवेण होइ तावसो ॥
 ३१—कम्मणा बम्भणो होइ कम्मणा होइ खत्तिओ ।
 वइस्सो कम्मणा होइ सुदो हवइ^६ कम्मणा ॥
 ३२—एए^७ 'पाउकरे बुद्धे'^८ जेहिं होइ सिणायओ ।
 सव्वकम्मविनिम्मक्कं तं वयं बूम माहणं ॥
 ३३—एवं गुणसमाउत्ता जे भवन्ति दिउत्तमा ।
 ते समत्था उ उद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ॥

धुइ-पदं

- ३४—एवं तु संसए छिन्ने विजयघोसे य माहणे^९ ।
 'समुदाय लयं^{१०} तं तु'^{१०} जयघोसं महामुणिं ॥

१—नाइ सजोगे (ऋ) ।
 २—भोगेसु (ऋ) ; एएसु (उ) ।
 ३—यह श्लोक बृहद वृत्ति में पाठान्तर रूप में स्वीकृत है ।
 ४—पसुवद्धा (वृ० पा०) ।
 ५—सव्व वेया य (अ) ।
 ६—होइय (अ) ; होइ उ (वृ०) ।
 ७—पाउकराधम्मा (वृ० पा०) ।
 ८—बमणे (वृ०) ; माहणे (वृ० पा०) ।
 ९—तओ (अ, सु, ऋ) ।
 १०—सजाणंती तओ तं तु (वृ० पा०) ; समादाय तयं तं व (उ) ।

३५—तुट्ठे^१ य विजयघोसे^२ इणमुदाहु^३ कयंजली ।
माहणत्तं जहाभूयं मुट्ठु मे उवदंसियं ॥

३६—तुव्वे जइया जन्नाणं तुव्वे वेयविळु विळु ।
जोइसंगविळु तुव्वे तुव्वे धम्माण पारगा ॥

३७—तुव्वे समत्या उद्धत्तु परं अप्पाणमेव य ।
तमणुग्गहं करेहम्मं^४ भिक्खेणं^५ भिक्खुउत्तमा ॥

संवेहि-पदं

३८—न कज्जं मज्झ भिक्खेण खिप्पं निक्खममू दिया ।
मा भमिहिसि भयावट्ठे^६ घोरे^६ संसारसागरे ॥

३९—उवलेवो होइ भोगेसु अभोगी नोवलिप्पई ।
भोगी भमइ संसारे अभोगी विप्पमुच्चई ॥

४०—उल्लो सुक्को य दो छूढा गोलया मट्टियामया ।
दो वि आवडिया कुट्ठे जो उल्लोसोतत्थं लग्गई ॥

४१—एवं लग्गन्ति दुम्मोहा जे नरा कामलालसा ।
विरत्ता उ न लग्गन्ति जहा सुक्को उ गोलओ ॥

निक्खेव-पदं

४२—एवं से विजयघोसे जयघोसस्स अन्तिए ।
अणगारस्स निक्खन्तो धम्मं^६ सोच्चा अणुत्तरं^६ ॥

१—करे उम्मं (अ, इ) ।

२—भिक्खुणं (दृ०) ।

३—मयावत्ते (दृ० पा०) ।

४—दीहे (दृ० पा०) ।

५—सोत्तं (दृ०, ऋ) ।

६—सोच्चा, वेत्तं (दृ० पा०) ।

४३-खवित्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य ।
 जयघोसविजयघोसा सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

छवीसइमं अज्मयणं

सामायारी

सामायारी-पदं

- १-सामायारिं पवक्खामि सव्वदुक्खविमोक्खणि ।
जं चरित्ताण निगन्था तिण्णा संसारसागरं ॥
- २-पढमा आवस्सिया नाम विइया य^१ निसीहिया ।
आपुच्छणा य तइया चउत्थी पडिपुच्छणा ॥
- ३-पंचमा छन्दणा नाम इच्छाकारो य छट्ठओ ।
सत्तमो मिच्छकारो य^२ तहक्कारो य अट्ठमो ॥
- ४-अब्भुट्ठाणं नवमं, दसमा उवसंपदा ।
एसा दसंगा साहूणं सामायारी पवेइया ॥
- ५-गमणे आवस्सियं कुज्जा ठाणे कुज्जा निसीहियं ।
आपुच्छणा सयंकरणे परकरणे पडिपुच्छणा ॥
- ६-छन्दणा दव्वजाएणं इच्छाकारो य सारणे ।
मिच्छाकारो य निन्दाए तहक्कारो य^३ पडिस्सुए ॥
- ७-अब्भुट्ठाणं गुरुपूया अच्छणे उवसंपदा ।
'एवं दुपंचसंजुत्ता'^{*} सामायारी पवेइया ॥

चरिया-पदं

- ८-पुव्विल्लंमि चउब्भाए आइच्चंमि समुट्ठिए ।
भण्डयं पडिलेहित्ता वन्दित्ता य तओ गुरुं ॥

१-होइ (उ) ।

२-उ (आ, इ) ।

३-X (उ) ।

४-एसा दसंगा साहूणं (दृ० पा०) ।

- ९-पुच्छेज्जा पंजलिउडो किं कायव्वं मए इहं ? ।
 इच्छं निओइउं भन्ते ! वेयावच्चे व सज्भाए ॥
 १०-वेयावच्चे निउत्तेणं कायव्वं अगिलायओ ।
 सज्भाए वा निउत्तेण सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥

दिवसचरिया-पदं

- ११-दिवसस्स चउरो भागे कुज्जा भिक्खू वियक्खणो ।
 तओ उत्तरगुणे कुज्जा दिणभागेसु चउसु वि ॥
 १२-पढमं पोरिसि सज्भायं बीयं भाणं भियायई ।
 तइयाए भिक्खायरियं पुणो चउत्थीए सज्भायं ॥
 १३-आसाढे मासे दुपया पोसे मासे चउप्पया ।
 चित्तासोएसु मासेसु तिपया हवइ पोरिसी ॥
 १४-अंगुलं सत्तरत्तेणं पक्खेण य दुअंगुलं ।
 वड्ढए हायए वावी मासेणं चउरंगुलं ॥
 १५-आसाढेबहुलपक्खे भद्दवए कत्तिए य पोसे य ।
 फग्गुणवइसाहेसु य नायव्वा^१ अमोरत्ताओ ॥
 १६-जेट्टामूले आसाढसावणे छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा ।
 अट्टहिं बीयतियंमी तइए दस अट्टहिं चउत्थे ॥

रत्तिचरिया-पदं

- १७-रत्तिं पि चउरो भागे भिक्खू कुज्जा वियक्खणो ।
 तओ उत्तरगुणे कुज्जा राइभाएसु चउसु वि ॥
 १८-पढमं पोरिसि सज्भायं बीयं भाणं भियायई ।
 तइयाए निद्दमोक्खं तु चउत्थी भुज्जो^२ वि सज्भायं ॥

१-बोद्धवा (आ) ।

२-पुणो (अ) ।

१९—जं नेइ जया रत्ति
 नक्खत्तं तंमि नहचउब्भाए ।
 संपत्ते विरमेज्जा
 सज्झायं पओसकालम्मि ॥
 पडिलेहण-पद

२०—तम्मेव य नक्खत्ते
 गयणचउब्भागसावसेसंमि ।
 वेरत्तियं पि कालं
 पडिलेहिता मुणी कुज्जा ॥

२१—पुब्बिल्लंमि चउब्भाए पडिलेहिताण भण्डयं ।
 गुरुं वन्दित्तु सज्झायं कुज्जा दुक्खविमोक्खणं ॥
 २२—पोरिसीए चउब्भाए वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
 अपडिक्कमित्ता कालस्स भायणं पडिलेहए ॥

पडिलेहणविहि-पद
 २३—मुहपोत्तियं^१ पडिलेहिता पडिलेहिज्ज गोच्छ्रं ।
 गोच्छ्रगलइयंगुलिओ वत्थाइं पडिलेहए ॥

२४—उड्हं थिरं अतुरियं पुव्वं वा वत्थमेव पडिलेहे ।
 तो बिइयं पप्फोडे तइयं च पुणो पमज्जेज्जा ॥

२५—अणच्चावियं अवलियं
 अणाणुबन्धि, अमोसलिं^२ चेव ।

छप्पुरिमा नव खोडा
^३पाणीपाणविसोहणं^४ ॥

१—मुहपत्ति (आ, इ, उ, ऋ) ।

२—अमोसल (अ) ; आमोसलि (वृ०) ।

३—पाणीपाणि० (वृ०) ।

४—^०पमज्जण (आ, वृ० पा०) ; ^०पमज्जणया (ओघनिर्युक्ति ४२५)

२६—आरभडा सम्मद्दा
 वज्जेयन्वा य मोसली तइया ।
 पप्फोडणा चउत्थी
 विक्खित्ता वेइया छद्दा ॥

२७—पसिढिलपलम्बलोलो
 एगामोसा अणेगरूवधुणा^१ ।
 कुणइ पमाणि पमायं
 संकिएगणणोवगं कुज्जा ॥

२८—अणूणाइरित्तपडिलेहा
 अविक्खासा तहेव य ।
 पढमं पयं पसत्थं
 सेसाणि उ अप्पसत्थाइं ॥

२९—पडिलेहणं कुणन्तो
 मिहोकहं कुणइ जणवयकहं वा ॥
 देइ व पच्चक्खाणं
 वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥

३०—पुढवीआउक्काए
 तेऊवाऊवणस्सइतसाणं ।
 पडिलेहणापमत्तो
 छण्हं पि विराहओ होइ ॥
 आहार-पदं

[पुढवीआउक्काए तेऊवाऊवणस्सइतसाणं ।
 पडिलेहणआउत्तो छण्हं आराहओ होइ ॥]^२

१—अणेगरूवधुया (वृ० पा०) ।

२—यह गाथा केवल (अ) प्रति में ही है ।

३१—तइयाए पोरिसीए भत्तं पाणं गवेसए ।
छ्हं अन्नयरागम्मि कारणंमि समुद्धिए ॥

३२—वेयणवेयावच्चे

इरियद्धाए ये संजमद्धाए ।
तह पाणवत्तियाए
छ्हं पुण धम्मचिन्ताए ॥
अणाहार-पदं

३३—निगन्थो

धिइमन्तो
निगन्थी वि न करेज्ज छ्हिं चव ।
ठाणेहिं उ इमेहिं
अणइक्कमणा य से होइ ॥

३४—आयंके

उवसगो^१
तितिव्खया बम्भचेरंगुत्तीसु ।
पाणिदया तवहेउं
सरीरवोच्छेयणद्धाए ॥
विहार-पदं

३५—अवसेसं भण्डगं गिज्झा चक्खुसा पडिलेहए ।

परमद्धजोयणाओ विहारं विहरए मुणी ॥

३६—चउत्थीए पोरिसीए निक्खिवित्ताण भायणं ।

सज्झायं तओ कुज्जा सव्वभावविभावणं^२ ॥

संझा-पदं

३७—पोरिसीए चउब्भाए वन्दिताण तओ गुरुं ।

पडिक्कमित्ता कालस्स सेज्जं तु पडिलेहए ॥

१—उमगो (उ) ।

२—सव्वदुक्खविमोक्खण (वृ० पा०) ।

३८-पासवणुच्चारभूमिं च पडिलेहिज्ज जयं जई ।
काउत्सगं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

पडिक्खण-परं

३९-देसियं च अईयारं चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो ।
नाणे^१ दंसणे चेव चरित्तस्मि तहेव य ॥

४०-पारियकाउत्सगो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
देसियं तु अईयारं आलोएज्ज जहहम्मं ॥

४१-पडिक्खमित्तु निस्सल्लो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
काउत्सगं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

४२-पारियकाउत्सगो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
'शुइमंगलं च काऊण'^२ कालं संपडिलेहए ॥

४३-'पढमं पोरिसिं सज्जायं बीयं भाणं भियायई ।
तइयाए निइमोक्खं तु सज्जायं तु चउत्थिए ॥'^३

४४-'पोरिसीए चउत्थीए कालं तु पडिलेहिया ।
सज्जायं तओ कुज्जा अबोहेत्तो असंजए ॥''^४

४५-पोरिसीए चउत्थाए 'वन्दिऊण तओ गुरु'^५ ।
पडिक्खमित्तु कालस्त कालं तु पडिलेहए ॥

४६-आगए कायचोत्सगे सव्वदुक्खविमोक्खणे ।
काउत्सगं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

१-नाणेय (आ) : नामानि (उ) ।

२-सिद्धाणं संदवं लिखा (इ० पा०) ।

३-पढमा पोरिसिं सज्जायं बीयं भाणं भियायई !

तइयाए निइमोक्खं च चउत्थाए चउत्थिए ॥ (इ० पा०) ।

४-कालं तु पडिलेहिता अबोहेत्तो असंजए !

कुज्जा मुणी र सज्जायं सव्वदुक्खविमोक्खणं ; (इ० पा०) ।

५-ते से वंदित्तु ते गुरुं (इ० पा०) :

४७—राइयं च अईयारं चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो ।

नाणंमि दंसणंमी य चरित्तंमि तवंमि य ॥

४८—पारियकाउस्सगो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।

राइयं तु अईयारं आलोएज्ज जहक्कमं ॥

४९—पडिक्कमित्तु निस्सल्लो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।

काउस्सगं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

५०—किं तवं पडिवज्जामि एवं तत्थ विचिन्ताए ।

काउस्सग तु पारित्ता वन्दई य तओ गुरुं ॥

५१—पारियकाउस्सगो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।

तवं संपडिवज्जेत्ता' करेज्ज सिद्धाण संथवं ॥

निकखेव-पदं

५२—एसा सामायारी समासेण वियाहिया ।

जं चरित्ता वहू जीवा तिण्णा संसारसागरं ॥

—त्ति वेमि ॥

*

सत्तावीसद्वयं अज्जयणं

खलुंकिज्जं

- १—थेरे गणहरे गरगे मुणो आसि विसारए ।
आइण्णे गणिभावस्मि समाहि पडिसंधए ॥
- २—वहणे वहमाणस्स^१ कन्तारं अइवत्तई ।
जोए वहमाणस्स संसारो अइवत्तई ॥
- ३—खलुके जो उ जोएइ विहम्माणो किलिस्सई^२ ।
असमाहिं च वेएइ तोत्तओ य से भज्जई ॥
- ४—एगं डसइ पुच्छंमि एगं विन्धइऽभिकखणं ।
एगो भंजइ समिलं एगो उप्पहपट्ठिओ ॥
- ५—एगो पडइ पासेणं निवेत्तइ निवज्जई ।
उक्कुट्टइ उप्फिडई सढे वालगवी वए ॥
- ६—माई मुट्ठेण पडइ कुट्ठे गच्छइ पडिप्पहं ।
'मयलक्खेण चिट्ठई'^३ वेगेण य पहावई ॥
- ७—छिन्नाले छिन्दइ सेल्लिं दुट्ठन्तो भंजए जुगं ।
से वि य सुत्सुयाइत्ता^४ उज्जाहिता^५ पलायए ॥
- ८—खलुंका जारिसा जोज्जा दुस्सीसा वि हु तारिसा ।
जोइया धम्मजाणम्मि भज्जन्ति धिइदुव्वला ॥

१—ठाहयमाणस्स (अ. चु) ; वहगमाणस्स (क.) ।

२—किल्लमई (वृ०) ; किलिस्सई (वृ० पा०) ।

३—पलयं (दलं) ते प चिट्ठिया (वृ० पा०) ।

४—सुत्सुयता (ल) ।

५—उज्जुहिता (आ. वृ०, चु) ।

- ९-इड्ढीगारविए एगे एगेऽत्थ रसगारवे ।
 सायागारविए एगे एगे मुचिरकोहणे ॥
- १०-भिक्खालसिए एगे एगे ओमाणभीरुए थद्वे ।
 एगं च^१ अणुसासम्मी हेळ्हिं कारणेहि य ॥
- ११-सो वि अन्तरभासिल्लो दोसमेव पकुञ्चई^२ ।
 आयरियाणं तं वयणं पडिकूलेड अभिक्खणं ॥
- १२-न सा ममं वियाणाड न वि^३ सा मज्झ दाहिई ।
 निग्गया होहिई मन्ने साहू अन्नोऽत्थ वच्चड ॥
- १३-पेसिया^४ पलिउंचन्ति ते परियन्ति समन्तओ ।
 रायवेड्ढिं^५ व मन्नन्ता करेन्ति भिउडिं मुहे ॥
- १४-वाइया संगहिया चेव 'भत्तपाणे य'^६ पोसिया ।
 जायपक्खा जहा हंसा पक्कमन्ति दिसोदिसिं ॥
- १५-अह सारही विचिन्तेइ^७ खलुकेहि समागओ ।
 किं मज्झ दुड्ढसीसेहि अप्पा मे अवसीयई ॥
- १६-जारिसा^८ मम सीसाड तारिसा^९ गळ्ळिगद्वहा ।
 गळ्ळिगद्वहे चडत्ताणं^{१०} दढं परिगिण्हइ^{११} तवं ॥

१-× (अ) ।

२-पभात्तए (वृ० पा०) ।

३-य (उ) ।

४-पोसिया (वृ० पा०) ।

५-रायाविड्ढिं (अ) ।

६-भत्तपाणेण (अ, आ, इ) ।

७-हि चित्तेइ (अ) ।

८-तारिसा (अ) ।

९-जारिसा (अ) ।

१०-उहित्तान (आ) ।

११-पगिण्हामि (वृ०) : परिगिण्हई (वृ० पा०) ।

१७—मिउ मद्दवसंपन्ने गम्भीरे सुसमाहिए ।
 विहरइ मर्हि महप्पा सीलभूएण अप्पणा ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

अट्टावीसद्मं अज्भयणं

मोक्खमग्गई

१-मोक्खमग्गई तच्चं सुणेह जिणभासियं ।
चउकारणसंजुत्तं नाणदंसणलक्खणं ॥

मग्ग-पद

२-नाणं च दंसणं चैव चरित्तं च तवो तहा ।
एस^१ मग्गो त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं^२ ॥
३-नाणं च दंसणं चैव चरित्तं च तवो तहा ।
एयंमग्गमणुप्पत्ता^३ जीवा गच्छन्ति सोग्गईं ॥

नाण-पदं

४-तत्थ पंचविहं नाणं सुयं आभिनिबोहियं ।
ओहीनाणं तु तइयं मणनाणं च केवलं ॥
५-एयं पंचविहं नाणं दव्वाण य गुणाण य ।
पज्जवाणं च सव्वेसिं नाणं नाणीहिं देसियं ॥

दव्व-पदं

६-गुणाणमासओ दव्वं एगदव्वस्सिया गुणा ।
लक्खणं पज्जवाणं तु उभओ^४ अस्सिया भवे ॥
७-धम्मो अहम्मो आगासं कालो पुग्गलजन्तवो-।
एस लोगो त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं ॥

१-एय (अ) ।

२-सव्वदसिहि (अ) ।

३-एव^० (अ) ।

४-इहओ (अ) ।

- ८-धम्मो अहम्मो आगासं दव्वं इक्किमाहियं ।
अणन्ताणि य दव्वाणि कालो पुग्गलजन्तवो ॥
- ९-गइलक्खणो उ^१ धम्मो अहम्मो ठाणलक्खणो ।
भायणं सव्वदव्वाणं न्हं ओगांहलक्खेणं ॥
- १०-वत्तणालक्खणो कालो जीवो उवओगलक्खणो ।
नाणेणं दंसणेणं च सुहेण य दुहेण य ॥
- ११-नाणं च दंसणं चैव चरित्तं च तवो तथा ।
वीरियं उवओगो य एयं जीवस्स लक्खणं ॥
- १२-सइन्धयारउज्जोओ पहा 'छायातवे इ वा'^२ ।
वण्णरसगन्धफासा पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥
- १३-एगत्तं च पुहत्तं^३ च संखा संठाणमेव य ।
संजोगा य विभागा य पज्जवाणं तु लक्खणं ॥

नवतहिय-पदं

- १४-जीवाजीवा य बन्धो य पुण्णं पावासवो तथा ।
संवरो निज्जरा मोक्खो सन्तेए तहिया नव ॥

सम्मत्तइ-पदं

- १५-तहियाणं तु भावाणं 'सब्भावे उवएसणं ।
भावेणं सदइहन्तस्स सम्मत्तं तं वियाहियं'^४ ॥

१-य (अ) ।

२-^० तवेइ या (अ, ऋ) : ^० तवुलि वा (वृ०) ।

३-दुहत्त (उ) ।

४-
सब्भावो (वेणो) वएसणे ।

भावेण उ सदइहणा सम्मत्तं होति आहियं ॥ (वृ० पा०) ।

१६-निसग्गुवएसरुई

आणारुई सुत्तवीयरुइमेव ।

अभिगमवित्थाररुई

किरियासंखेवधम्मरुई ॥

१७-भूयत्थेणाहिगया

जीवाजीवा य पुण्णपावं च ।

सहसम्मुइयासवसंवरो य^१

रोएइ उ निसग्गो ॥

१८-जो

जिणदिट्ठे भावे

चउच्चिहे सद्दहाइ सयमेव ।

एमेव^२ नज्जह ति य

निसग्गरुइ ति नायव्वो ॥

१९-एए

चेव

उ^३ भावे

उवइट्ठे जो परेण सद्दहई ।

छउमत्थेण जिणेण व^४

उवएसरुइ ति नायव्वो ॥

२०-रागो

दोसो मोहो

अन्नाणं जस्स अवगयं होइ ।

आणाए

रीयंतो

सो खलु आणारुई नाम ॥

१-उ (अ) ।

२-एमेय (अ, उ, वृ०) ।

३-हु (ऋ) ।

४-य (ऋ) ।

- २१—जो सुत्तमहिज्जन्तो
 सुएण ओगाहई उ सम्मत्तं ।
 अंगेण बाहिरेण व^१
 सो सुत्तरुइ त्ति नायव्वो ॥
- २२—एगेण अणेगाइं
 पयाइं जो पसरई उ सम्मत्तं ।
 उदए व्व तेल्लबिन्दू
 सो बीयरुइ त्ति नायव्वो ॥
- २३—सो होइ अभिगमरुई
 सुयनाणं जेण अत्थओ दिट्ठं^२ ।
 'एक्कारसः अंगाइं'^३
 पइण्णगं^३ दिट्ठिवाओ य ॥
- २४—दव्वाणा सव्वभावा
 सव्वप्रमाणेहि जस्स उवलद्धा ।
 सव्वाहि नयविहीहि य
 वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥
- २५—दंसणनाणचरित्ते
 तवविणए सव्वसमिइगुत्तीसु^४ ।
 जो किरियाभावरुई
 सो खलु किरियारुई नाम ॥

१—य (ऋ) ।

२—इकारसमगाइं (उ, ऋ) ।

३—पइण्णियं (अ) ।

४—सव्व^० (अ) ।

२६—अणभिग्गहियकुदिट्ठी

अविसारओ

सखेवरुइ त्ति होइ नायव्वो ॥

पवयणे

अणभिग्गहियो य सेसेसु ॥

२७—जो

अत्थिकायधम्मं

सुयधम्मं खलु चरित्तधम्मं च ।

सद्दहइ

जिणाभिहियं

सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो ॥

२८—परमत्थसंथवो

वा

सुदिट्ठपरमत्थसेवणा चा वि १-

वावन्नकुदंसणवज्जणा

य

सम्मत्तसद्दहणा ॥

२९—नत्थि चरित्तं

सम्मत्तविहूणं

दंसणे उ

भइयव्वं ।

सम्मत्तचरित्ताइं

जुगवं पुव्वं व^१ सम्मत्तं ॥

३०—नादंसणिस्स

नाणं

नाणेण विणा न हुन्ति चरणगुणा ।

अगुणिस्स

नत्थि मोकखो

नत्थि अमोकखस्स निव्वाणं ॥

३१—निस्संकिय

निककंखिय

निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य ।

उववूह

थिरीकरणे

वच्छल्ल पभावणे अट्ट ॥

चारित्त-पदं

- ३२—सामाइयत्थ^१ पढमं छेओवट्ठावणं भवे बीयं ।
परिहारविसुद्धीयं सुहुमं तह संपरायं च ॥
- ३३—अकसायं अहक्खायं छउमत्थस्स जिणस्स वा ।
एयं चयरित्तकरं चारित्तं होइ आहियं ॥

- तव-पदं

- ३४—तवो य दुविहो वुत्तो बाहिरब्भन्तरो तथा ।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो एवमब्भन्तरो तवो ॥

निकखेव-पद

- ३५—नाणेण जाणई भावे दंसणेण य सदहे ।
चरित्तेण निगिण्हाइ^२ तवेण परिसुज्झई ॥
- ३६—खवेत्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य ।
सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा पक्कमन्ति महेसिणो ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—सामाइयं च (उ, ऋ) ।

२—न गिण्हति (बु० पा०) ।

एगुणतीसइमं अज्भयणं

सम्मत्तपरक्कमे

उक्खेव-पदं

सू० १—‘सुयं मे आउस ! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु सम्मत्त-
परक्कमे ‘नाम अज्भयणे’ समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं
पवेइए जं सम्मं सद्वहिता पत्तियाइत्ता रोयइत्ता फासइत्ता पालइत्ता’
तीरइत्ता किट्टइत्ता सोहइत्ता आराहइत्ता आणाए अणुपालइत्ता बह्वे
जीवा सिज्झन्ति बुज्झन्ति मुच्चन्ति परिनिव्वायन्ति सव्वदुक्खाणमन्तं
करेन्ति । तस्स णं अयमट्ठे एवमाहिज्जइ तं जहा—संवेगे १ निव्वेए २
धम्मसद्धा ३ गुरुसाहम्मियसुस्सूसणया ४ आलोयणया ५ निन्दणया ६
गरहणया ७ सामाइए ८ चउव्वीसत्थए ९ वन्दणए^१ १०
पडिक्कमणे ११ काउस्सग्गे १२ पच्चक्खाणे १३ थवथुइमंगले^२ १४
कालपडिलेहणया १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७
सज्झाए १८ वायणया^३ १९ पडिपुच्छणया २० परियट्टणया २१ अणु-
प्पेहा २२ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४ एगग्गमणसंनिवे-
सणया २५ संजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८ सुहसाए २९ अप्पडि-
बद्धया ३० विवित्तसयणासणसेवणया ३१ विणियट्टणया ३२ संभोग-
पच्चक्खाणे ३३ उवहिपच्चक्खाणे ३४ आहारपच्चक्खाणे ३५ कसाय-
पच्चक्खाणे ३६ जोगपच्चक्खाणे ३७ सरीरपच्चक्खाणे ३८ सहाय-

१—नाम मज्झयणे (अ, ऋ) ; नामज्झयणे (स, उ) ।

२—पालइत्ता, पूरइत्ता (अ) ।

३—वदणे (अ) ।

४—थय थुइ मंगले (अ, ऋ) , थण थुई मंगले (उ) ।

५—वायणाए (ऋ) ; वायणा (उ) ।

पञ्चक्खाणे ३९ भत्तपञ्चक्खाणे ४० सन्भावपञ्चक्खाणे ४१ पडिह्वया^१
 ४२ वैयावच्चे ४३ सव्वगुणसंपण्णया^२ ४४ वीयरगया ४५
 खन्ती ४६ मुत्ती ४७ अज्जवे^३ ४८ मह्वे^४ ४९ भावसच्चे ५० करण-
 सच्चे ५१ जोगसच्चे ५२ मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया
 ५५ मणसमाधारणया ५६ वयसमाधारणया ५७ कायसमाधारणया
 ५८ नाणसंपन्नया ५९ दंसणसंपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१
 सोइन्दियनिग्गहे ६२ चक्खिन्दियनिग्गहे ६३ घाणिन्दियनिग्गहे ६४
 जिब्भिन्दियनिग्गहे ६५ फासिन्दियनिग्गहे ६६ कोहविजए ६७
 माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोहविजए ७० पेज्जदोसमिच्छा-
 दंसणविजए ७१ सेलेसी ७२ अकम्मया ७३ ॥

संवेग-पदं

सू० २—संवेगेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ । अणुत्तराए
 धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ । अणन्ताणुबन्धि कोहमाणमायालोभे
 खवेइ । कम्मं न बन्धइ । तप्पच्चइयं च णं मिच्छत्तविसोहिं काऊण
 दंसणाराहए भवइ । दंसणविसोहीए य णं विसुद्धाए अत्येगइए
 तेणेव भवग्गहणेणं सिज्भइ । सोहीए य णं विसुद्धाए तच्चं पुणो
 भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥

निव्वेय-पद

सू० ३—निव्वेएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

निव्वेएणं दिव्वमाणुसतेरिच्छिएसु कामभोगेसु निव्वेयं
 हव्वमागच्छइ । सव्वविसएसु विरज्जइ सव्वविसएसु विरज्जमाणे

१—पडिह्वणया (ऋ) ।

२—^० संपुण्णया (अ, आ, इ, वृ०) ।

३—मह्वे (अ, सु, वृ०) ।

४—अज्जवे (अ, सु, वृ०) ।

५—नवं च कम्मं (अ, आ, इ) ।

आरम्भपरिच्चायं^१ करेइ । आरम्भपरिच्चायं करेमाणे संसारमगं
वोच्छन्दइ सिद्धिमग्गे पडिवन्ते य भवइ ॥

धम्मसद्धा-पद

सू० ४-धम्मसद्धाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

धम्मसद्धाए णं सायासोकखेसु रज्जमाणे विरज्जइ । अगारधम्मं
च णं चयइ अणगारेए णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं छेयणभेयण-
संजोगाईणं वोच्छेयं करेइ अक्वाबाहं च सुहं निव्वत्तेइ^२ ॥

सुस्सुसणा-पद

सू० ५-गुरुसाहम्मियसुस्सुसणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

गुरुसाहम्मियसुस्सुसणयाए णं विणयपडिवत्तिं जणयइ । 'विणय-
पडिवन्ते य णं'^३ जीवे अणच्चासायणसीले नेरइयतिरिक्खजोणिय-
मणुस्सदेवदोगईओ निरुम्भइ । वण्णसंजलणभत्तिबहुमाणयाए
मणुस्सदेवसोगईओ निबन्धइ सिद्धिं सोग्गइं च विसोहेइ । पसत्थाइं
च णं विणयमूलाइं सव्वकज्जाइं साहेइ । अन्ते य बह्वे जीवे
विणइत्ता भवइ ॥

आलोयणा-पद

सू० ६-आलोयणाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

आलोयणाए णं मायानियाणमिच्छादंसणसल्लापं मोक्खमग्ग-
विग्घाणं अणन्तसंसारवद्धणाणं^४ उद्धरणं करेइ । उज्जुभावं च^५
जणयइ । उज्जुभावपडिवन्ते^६ य णं जीवे अमाई इत्थीवेयनपुंसगवेयं
च न बन्धइ । पुव्ववद्धं च णं निज्जरेइ ॥

१-आरम्भपरिग्गहं (अ) ।

२-निव्वित्ते (ऋ) ।

३-० पडिवन्नएण (ऋ) ।

४-० वद्धमाण (अ) ।

५-च ण (उ, ऋ, स) ।

६-० पडिवन्नएण (ऋ) ।

निन्दण-पदं

सू० ७—निन्दणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

निन्दणयाए णं पच्छाणुत्तावं जणयइ । पच्छाणुत्तावेणं विरज्जमाणे करणगुणसेट्ठि^१ पड्विज्जइ । करणगुणसेट्ठि 'पड्विन्ने य'^२ णं अणगारे मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ ॥

गरहण-पदं

सू० ८—गरहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

गरहणयाए णं अपुरक्कारं जणयइ । अपुरक्कारणए णं जीवे अप्पसत्येहिंत्तो जोगेहिंत्तो नियत्तेइ^३ पसत्थजोगपड्विन्ने य णं अणगारे अणन्तघाइपज्जवे खवेइ ॥

सामाइय-पदं

सू० ९—सामाइएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सामाइएणं सावज्जजोगविरइं जणयइ ॥

चउव्वीसत्यव-पदं

सू० १०—चउव्वीसत्यएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

चउव्वीसत्यएणं दंसणविसोहिं जणयइ ॥

वन्दण-पदं

सू० ११—वन्दणएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वन्दणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ । उच्चागोयं निवन्धइ । सोहगं च णं अप्पडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ दाहिणभावं च णं जणयइ ॥

१—० सेट्ठीए (अ) ; ० सेट्ठी (वृ०) ।

२—पड्विन्ने य (ऋ) : पड्विन्ने (उ, अ) ।

३—नियत्तेइ पसत्थे य पवत्तइ (उ, ऋ) ।

पडिक्रमण-पदं

सू० १२—पडिक्रमणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिक्रमणेणं वयच्छिद्दाइं पिहेइ । पिहियवयच्छिद्दे पुण जीवे
निरुद्धासवे असबलचरित्ते अद्दसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते^१
सुप्पणिहिए^२ विहरइ ।

काउस्सग-पदं

सू० १३—काउस्सगणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

काउस्सगणेणं तीयपडुप्पन्तं पायच्छित्तं विसोहेइ ।
विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुयहियए 'ओहरियभारो व्व'^३ भारवहे
पसत्थज्झाणोवगाए^४ सुहंसुहेणं विहरइ ।

पच्चक्खाण-पदं

सू० १४—पच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पच्चक्खाणेणं आसवदाराइं निरुम्भइ^५ ।

थवथुइ-पदं

सू० १५—थवथुइमंगलेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

थवथुइमंगलेणं नाणदंसणचरित्तबोहिलाभं जणयइ ।
नाणदंसणचरित्तबोहिलाभसंपन्ते य णं जीवे अन्तकिरियं
कप्पविमाणोववत्तिगं आराहणं आराहेइ ।

कालपडिलेहण-पदं

सू० १६—कालपडिलेहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कालपडिलेहणयाए णं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ।

१—अपमत्ते (वृ० पा०) ।

२—सुप्पणिहिदिप (वृ० पा०) ; सुप्पिणिहिप (अ, उ, ऋ) ।

३—० भरव्व (उ, ऋ) ।

४—० ज्झाणज्झाइ (वृ० पा०) ।

५—निरुम्भइ । पच्चक्खाणेण इच्छानिरोह जणयइ । इच्छानिरोहं गए य णं जीवे सब्बदब्बेसु
विणीयत्तणहे सीइभूए विहरइ । (इ, उ) ।

पायच्छित्त-पद

सू० १७—पायच्छित्तकरणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पायच्छित्तकरणेणं पावकम्मविसोहिं जणयइ निरइयारे यावि भवइ । सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मगं च मगंफलं च विसोहेइ आयारं च आयारफलं च आराहेइ ।

खमावण-पदं

सू० १८—खमावणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

खमावणयाए णं पल्हायणभावं^१ जणयइ । पल्हायणभावमुवगए य सब्वपाणभूयजीवसत्तेसु मित्तीभावमुप्पाएइ । मित्तीभावमुवगए यावि जीवे भावविसोहिं कारुण निब्भए भवइ ।

सज्झाय-पदं

सू० १९—सज्झाएण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सज्झाएण नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ।

सू० २०—वायणाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वायणाए णं निज्जरं जणयइ । सुयस्स य 'अणासायणाए वट्टए'^२ । सुयस्स अणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलम्बइ । तित्थधम्मं अवलम्बमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ।

सू० २१—पडिपुच्छणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिपुच्छणयाए णं सुत्तत्थतट्टुभयाइं विसोहेइ । कंखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छिन्दइ ।

सू० २२—परियट्टणाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

परियट्टणाए णं वंजणाइं जणयइ वंजणलद्धिं च उप्पाएइ ।

१—पल्हाएणंत भावं (वृ०) ; पल्हायणमावं (वृ० पा०) ।

२—अणुसज्जाए वट्टइ (वृ० पा०) ।

सू० २३—अणुप्पेहाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

अणुप्पेहाए णं आउयवज्जाओ सत्तकम्मप्पगडीओ घणियबन्धणबद्धाओ सिद्धिलबन्धणबद्धाओ पकरेइ । दीहकालट्टिइयाओ हस्सकालट्टिइयाओ पकरेइ । तिच्चाणुभावाओ मन्दाणुभावाओ पकरेइ । 'बहुपएसग्गाओ अप्पएसग्गाओ पकरेइ'^१ । आउयं च णं कम्मं सिय बन्धइ सिय नो बन्धइ । 'असायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ'^२ अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरन्तं संसारकन्तारं खिप्पामेव वीइवयइ ।

सू० २४—धम्मकहाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

धम्मकहाए णं 'निज्जरं जणयइ'^३ । 'धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ'^४ । पवयणपभावेणं जीवे आगमिसस्स भट्ठाए कम्मं निबन्धइ ।

सुय-पदं

सू० २५—सुयस्स आराहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सुयस्स आराहणयाएणं खवेइ न य संकिलिस्सइ ।

एगग्गमण-पदं

सू० २६—एगग्गमणसंनिवेशणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

एगग्गमणसंनिवेशणयाए णं चित्तनिरोहं करेइ ।

संजम-पदं

सू० २७—संजमेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

संजमेणं अणण्हयत्तं जणयइ ।

१—बहुपएसग्गाओ अप्पएसग्गाओ पकरेइ (वृ० पा०) ।

२—साया वेयणिज्जं च ण कम्मं भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ (वृ० पा०) ।

३—पवयण पभावेइ (वृ० पा०) ।

४—X (वृ०) ।

तव-पदं

सू० २८—तवेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

तवेणं वोदाणं जणयइ ।

वोदाण-पदं

सू० २९—वोदाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वोदाणेणं अकिरियं जणयइ । अकिरियाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ।

सुहसाय-पदं

सू० ३०—सुहसाएणं^१ भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सुहसाएणं अणुस्सुयत्तं जणयइ । अणुस्सुयाए णं जीवे अणुकम्पए अणुब्भडे विगयसोगे चरित्तमोहणिज्जं कम्मं खवेइ ।

अपडिबद्ध-पदं

सू० ३१—अप्पडिबद्धयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

अप्पडिबद्धयाए णं निस्संगत्तं जणयइ । निस्संगत्तेणं^२ जीवे एगे एगगचित्ते दिया य राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ।

विवित्त-पदं

सू० ३२—विवित्तसयणासणयाए^३ णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

विवित्तसयणासणयाए णं चरित्तगुत्तिं जणयइ । चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दढ्ढचरित्ते एगन्तरए मोक्खभावपडिबन्ते अट्टविहकम्मगण्ठि निज्जरेइ ।

१—सुहसाइयाएण (वृ०) ; सुहसायाएण, सुहसाएणं (वृ० पा०) ;

सुहसायाएणं (अ, आ, इ, उ, ऋ) ।

२—निस्संगत्तं राएणं (उ, ऋ) ।

३—० सयणासणसैवणयाए (आ, इ) ।

विनियट्टण-पदं

सू० ३३—विणियट्टणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

विणियट्टणयाए णं पावकम्माणं अकरणयाए अवभुट्ठेइ ।
पुव्ववद्धानं य निज्जरणयाए तं नियत्तेइ तओ पच्छा चाउरत्तं
संसारकन्तारं वीइवयइ ।

पच्चक्खाण-पदं

सू० ३४—संभोगपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

संभोगपच्चक्खाणेणं आलम्बणाइं खवेइ । निरालम्बणस्स य
आययट्ठिया जोगा भवन्ति । सएणं लाभेणं संतुस्सइ^१ परलाभं
'नो आसाएइ'^२ नो तक्केइ नो पीहेइ नो पत्येइ नो अभिलसइ ।
परलाभं अणासायमाणे^३ अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्येमाणे
अणभिलसमाणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।

सू० ३५—उवहिपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

उवहिपच्चक्खाणेणं अपलिमन्थं जणयइ । निरुवहिए णं जीवे
निककखे^४ उवहिमन्तरेण य न संकिलिस्सइ ।

सू० ३६—आहारपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

आहारपच्चक्खाणेणं 'जीवियासंसप्पओगं'^५ वोच्छिन्दइ^६ ।
जीवियासंसप्पओगं वोच्छिन्दित्ता जीवे आहारमन्तरेणं न
संकिलिस्सइ ।

१—सुस्सइ (उ, ऋ) ।

२—'नो आसाएइ' व्याख्यात नहीं है (वृ०) ।

३—अणस्सायमाणे (वृ०) ।

४—'निककखे' एतन्न पदं क्वचिदेव दृश्यते (वृ०) ।

५—जीवियास संसप्पओगं (वृ० पा०) ।

६—वोच्छिदिय (वृ० पा०) ।

सू० ३७—कसायपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कसायपच्चक्खाणेणं वीयरगभावं जणयइ ।
वीयरगभावपडिवन्ते वि य णं जीवे समसुहुदुक्खे भवइ ।

सू० ३८—जोगपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

जोगपच्चक्खाणेणं अजोगत्तं जणयइ । अजोगी^१ णं जीवे नव
कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं निज्जरेइ ।

सू० ३९—सरीरपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सरीरपच्चक्खाणेणं सिद्धाइसयगुणत्तणं^२ निव्वत्तेइ ।
सिद्धाइसयगुणसंपन्ने य णं जीवे लोगगमुवगए परमसुही भवइ ।

सू० ४०—सहायपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सहायपच्चक्खाणेणं एगीभावं जणयइ । एगीभावभूए वि^३ य
णं^४ जीवे एगगं भावेमाणे अप्पसद्दे^५ अप्पझंझे अप्पकलहे अप्पकसाए
अप्पतुमंतुमे संजमबहुले संवरबहुले समाहिए यावि भवइ ।

सू० ४१—भत्तपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

भत्तपच्चक्खाणेणं अणेगाइं भवसयाइं निरुम्भइ ।

सू० ४२—सब्भावपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सब्भावपच्चक्खाणेणं अनियट्ठिं^६ जणयइ । अनियट्ठिपडिवन्ते^७
य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ तं जहा वेयणिज्जं आउयं

१—अजोगीय (ऋ) ।

२—^०सयगुणत्तं (उ, ऋ) ।

३—X (उ, ऋ) ।

४—X (उ, ऋ) ।

५—X (वृ०) ।

६—नियट्ठिं (वृ० पा०) ।

७—नियट्ठि० (वृ० पा०) ।

नामं गोयं । तत्रो^१ पच्छा सिज्भइ, वुज्भइ, मुच्चइ, परिनिच्वाएइ
सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ।

पडित्त्व-पद

मू० ४३—पडित्त्वयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पडित्त्वयाए णं लाघवियं जणयइ । लहुभूए णं^२ जीवे
ब्रह्ममत्ते पागडल्लिगे पसत्यल्लिगे विमुद्धसम्मत्ते सत्तसमिज्जसमत्ते
सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु वीससणिज्जह्वे अप्पडिल्लेहे^३ जिइन्द्रिए
विज्जलतवसमिइसमन्नागए यावि भवइ ।

वेयावच्च-पदं

मू० ४४—वेयावच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वेयावच्चेणं तित्थियरनामगोत्तं कम्मं निबन्धइ ।

सव्वगुणसंपन्न-पदं

मू० ४५—सव्वगुणसंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सव्वगुणसंपन्नयाए णं अपुणरावत्ति जणयइ । अपुणरावत्ति
पत्तए यं^४ णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं नो भागी भवइ ।

वीयरोग-पदं

मू० ४६—वीयरोगयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वीयरोगयाए णं 'नेहाणुवन्धणाणि तप्हाणुवन्धणाणि'^५ य
वोच्चिन्इ मणुन्नेमु^६ सद्दफरिसरत्तस्वगन्वेमु चेंव विज्जइ ।

१—X (उ. अ.) ।

२—य न (उ. अ.) ।

३—अप्पडिल्लेहे (६० पा०) ।

४—अपुणरावत्ति (उ. अ.) ।

५—य (उ. अ.) ।

६—० धम्मणि तस्सा धम्मणि (६०) : नेहणु वन्धणाणि तप्हाणु वन्धणाणि (६० पा०) ।

७—मणुन्नेमु (अ.) ।

खंति-पदं

सू० ४७—खन्तीए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

खन्तीए णं परीसहे जिणइ ।

मुत्ति-पदं

सू० ४८—मुत्तीए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मुत्तीए णं अकिंचणं जणयइ । अकिंचणे य जीवे
अत्थल्लोलाणं^१ अपत्थणिज्जो भवइ ॥

अज्जव-पदं

सू० ४९—अज्जवयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

अज्जवयाए णं काउज्जुययं भावुज्जुययं भासुज्जुययं
अविसंवायणं जणयइ । अविसंवायणसंपन्नयाए णं जीवे धम्मस्स
आराहए भवइ ।

मद्दव-पदं

सू० ५०—मद्दवयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मद्दवयाए णं 'अणुस्सियत्तं जणयइ । अणुस्सियत्ते णं
जीवे मिउमद्दवसंपन्ते अट्ठ मयट्ठाणाइं निट्ठवेइ'^२ ।

सच्च-पदं

सू० ५१—भावसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

भावसच्चेणं भावविसोहिं जणयइ । भावविसोहीए वट्टमाणे
जीवे अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ ।

१—अत्थल्लोलाण पुरिसाण (आ, इ, उ, ऋ, स) ।

२—अणुस्सुअत्तं जणइ । अणुसुअत्तेण जीवे मद्दवयाएण मिउ० (अ) ; मद्दवयाए ण
मिउ० (उ, वृ०, ऋ) ; मद्द० अणुसियत्तं जणैत्ति, अणुस्सियत्ते ण जीवे मिउ०
(वृ० पा०) ।

अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए^१ अब्भुट्ठिता-
परलोगधम्मस्स^२ आराहए हवइ ।

सू० ५२-करणसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

करणसच्चेणं करणसत्तिं जणयइ । करणसच्चे वट्टमाणे-
जीवे जहावाई तहाकारी यावि भवइ ।

सू० ५३-जोगसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

जोगसच्चेणं जोगं विसोहेइ ।

सू० ५४-मणगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मणगुत्तयाए णं जीवे एगगं जणयइ । एगगचित्ते णं जीवे
मणगुत्ते संजमाराहए भवइ ।

गुत्ति-पदं

सू० ५५-वयगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वयगुत्तयाए णं निव्वियारं^३ जणयइ । 'निव्वियारेणं जीवे'^४
वइगुत्ते अज्भप्पजोग'ज्झाणगुत्ते'^५ यावि भवइ ।

सू० ५६-कायगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कायगुत्तयाए णं संवरं जणयइ । संवरेणं कायगुत्ते पुणे
पावासवनिरोहं करेइ ।

समाहारण-पदं

सू० ५७-मणसमाहारणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मणसमाहारणयाए णं एगगं जणयइ । एगगं जणइत्ता
नाणपज्जवे जणयइ । नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं
च निज्जरेइ ।

१-आराहणयाए ण (ऋ) ।

२-परलोगाराहए (वृ० पा०) ।

३-निव्वियारत्तं (अ, स) ।

४-निव्वियारे णं जीवे वयगुत्तयं जणयइ (वृ० पा०) ।

५-० साहणज्जुत्ते (उ, ऋ, वृ०) ।

सू० ५८—वयसमाहारणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वयसमाहारणयाए णं वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेइ ।
वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेत्ता सुलहबोहियत्तं निव्वत्तेइ
दुल्लहबोहियत्तं निज्जेइ ।

सू० ५९—कायसमाहारणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कायसमाहारणयाए णं चरित्तपज्जवे विसोहेइ । चरित्तपज्जवे
विसोहेत्ता अहक्खायचरित्तं विसोहेइ । अहक्खायचरित्तं विसोहेत्ता
चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा सिज्भइ बुज्भइ मुच्चइ
परिनिव्वंएइ सव्वहुक्खाणमन्तं करेइ ।

सपन्नया-पद

सू० ६०—नाणसंपन्नायाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

नाणसंपन्नायाए णं जीवे सव्वभावाहिगमं जणयइ ।
नाणसंपन्ने णं जीवे चाउरन्ते संसारकन्तारे न विणुस्सइ ।

जहा सूई ससुत्ता

पडिया वि न विणुस्सइ ।

तहा जीवे ससुत्ते

संसारे न विणुस्सइ ॥

नाणविणयतवचरित्तजोगे संपाउणइ ससमयपरसमय^१

संघायणिज्जे भवइ ।

सू० ६१—दंसणसंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

दंसणसंपन्नयाए णं भवमिच्छत्तच्छेयणं करेइ परं न विज्झायइ^२ ।
'अणुत्तरेणं नाणदंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ'^३ ।

१—^० समय विसारए य (अ) ।

२—विज्झाइ (ऋ) ; वज्झाइ । पर आणाज्झायमाणे (अ) ।

३—अप्पाण संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे अणुत्तरेणं नाणदंसणेणं विहरइ (अ) ; अनुत्तरेणं
नाणदंसणेणं विहरइ (बु० पा०) ।

सू० ६२—चरित्तसंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

चरित्तसंपन्नयाए णं सेलेसीभावं जणयइ । सेलेसि पडिदन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा सिज्झइ वुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमत्तां करेइ^१ ।

इन्दियनिग्गह-पदं

सू० ६३—सोइन्दियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सोइन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु सट्ठेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न वन्धइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६४—चक्खिन्दियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

चक्खिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु ह्वेसु^२ रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न वन्धइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६५—घाणिन्दियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

घाणिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु गन्धेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न वन्धइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६६—जिठ्ठिन्दियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

जिठ्ठिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु रसेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न वन्धइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६७—फासिन्दियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

फासिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न वन्धइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ।

१—सेलेसी पडिदन्ने विहरइ (वृ०) ; सेलेसि पडिदन्ने अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेति, ततो पच्छा सिज्झति (वृ० पा०) ।

२—चक्खिदिएसु (अ) ।

वरनाणदंसणं समुप्पाडेइ । जाव सजोगी भवइ तत्रि य इरियावहियं
कम्मं बन्धइ सुहफरिसं दुसमयठिइयं । तं पढमसमए बद्धं बिइयंसमए
वेइयं तइयसमए निज्जिण्णं^१ तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं वेइयं निज्जिण्णं
सेयाले य अकम्मं चावि भवइ ।

सू० ७३—अहाउयं पालइत्ता अन्तोमुहुत्तद्वावसेसाउए^२ जोगनिरोहं
करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइ सुक्कज्जाणं क्कायमाणे
तप्पढमयाए 'मणजोगं निरुम्भइ २ ता वइजोगं निरुम्भइ २ ता
आणापाणुनिरोहं'^३ करेइ २ ता ईसि पंचरहस्सक्खस्वारद्धाए य णं
अणगारे समुच्छिन्नकिरियं अनियट्टिसुक्कज्जाणं क्कायमाणे
वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च एए चत्तारि वि^४ कम्मसे
जुगवं^५ खवेइ ।

निकखेव-पदं

सू० ७४—तओ ओरालियकम्माइ च सव्वाहिं विप्पजहणाहिं
विप्पजहिता उज्जुसेडिपत्ते अफुसमाणगई उड्ढं एगसमएणं
अविग्गहेणं तत्थ गन्ता सागारोवउत्ते सिज्जइ बुज्जइ मुच्चइ
परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ^६ ।

१—निविण्ण (अ) ।

२—अंतोमुहुत्तद्वावसेसाए (वृ० पा०) ; अंतोमुहुत्तावसेसाउए । (उ, ऋ, वृ० पा०) ।

३—मणजोग निरुम्भइ वइजोगं निरुम्भइ आणापाणुनिरोह करेइ (वृ०) ; मणजोगं
निरुम्भइ, वइजोग निरुम्भइ, कायजोगं निरुम्भइ आणापाण^० (आ, इ) ।

४—X (उ, ऋ) ।

५—X (उ, ऋ) ।

६—(क) इह च चूर्णिकृता—“सेलेसीए णं मन्ते ! जीवे किं जणयइ ? अकम्मयं
जणति, अकम्मयाए जीवा सिज्जति” इति पाठः, पूर्वत्र च क्वचित्किञ्चित्पाठ-
भेदेनाहपा एव प्रश्ना आश्रिताः, अस्माभिरस्तु भूयसीषु प्रतिषु
यथाव्याख्यातपाठदर्शनादित्थमुन्नीतमिति (वृ० पा०) ।

(ख) सेलेसीएण मन्ते । जीवे किं जणयइ ? अकम्मयं जणति अकम्मयाए जीवा
सिज्जति बुज्जति मुच्चं इति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणं अर्तं करंति (वृ०) ।

एस खलु, सम्मत्तपरक्रमस्स, अज्झयणस्स. अट्टे समणेणं;
 भगवयाः महावीरेणं अघविए पन्नविए परूविए दंसिए^१. उवदंसिए ।
 — त्तः वेमि ॥

*

तीसइमं अज्जयणं

'तवमग्गइ'

उक्खेव-पदं

१-जहा उ पावगं कम्मं रागदोससमज्जियं ।
खवेइ तवसा भिक्खू तमेगग्गमणो सुण ॥

२-पाणवहमुसावाया^१

अदत्तमेहुणपरिग्गहा विरओ ।

राईभोयणविरओ

जीवो भवइ अणासवो ॥

३-पंचसमिओ 'तिगुत्तो अकसाओ जिइन्दिओ ।

अगारवो य निस्सल्लो जीवो ह्योइ अणासवो ॥

४-एएंसि तु विवच्चासे^२ रागदोससमज्जियं ।

'जहा खवयइ 'भिक्खू'^३ 'तं मे एगमणो'^४ सुण ॥

५-जहा महातलायस्स सन्निरुद्धे जलागंभे ।

उस्सिचणाए तवणाए कमेणं सोसणा भवे ॥

६-'एवं तु'^५ संजयस्सावि पावकम्मनिरासवे ।

भवकोडीसंचियं कम्मं तवसा निज्जरिज्जइ ॥

तव-पदं

७-सो तवो दुविहो वुत्तो बाहिरब्भन्तरो तथा ।

बाहिरो छ्विव्हो वुत्तो एवमब्भन्तरो तवो ॥

१-पाणिवह मुसावाए (उ, ऋ) ।

२-विवज्जासे (वृ९) ।

३-खवेइ ज जहा कम्म (उ, ऋ) ; खवेइ तं जहा भिक्खू (वृ०) ।

४-त मे एगमणा (स) ; तमेगग्गमणो (सु)-।

५-एमेव (अ) ।

बाहिरगतव-पदं

८-अणसणमूणोयरिया

भिक्षायरिया य रसपरिच्चाओ ।

कायकिल्लेसो संलीणया य

बज्ज्मो तवो होइ ॥

९-इत्तिरिया मरणकाले^१ 'दुविहा अणसणा'^२ भवे ।

इत्तिरिया सावकंखा निरवकंखा^३ बिइज्जिया ॥

१०-जो सो इत्तरियतवो

सो समासेण छ्विहो ।

सेद्धितवो पयरतवो

घणो य 'तह होइ वग्गो य'^४ ॥

११-तत्तो य वग्गवग्गो उ-पंचमो छट्ठओ पइण्णतवो ।

मणइच्छियचित्तत्थो नायव्वो होइ इत्तरिओ ॥

१२-जा सा अणसणा मरणे दुविहा सा वियाहिया ।

सवियारअवियारा^५ कायचिहं पई भवे ॥

१३-अहवा 'सपरिकम्मा अपरिकम्मा'^६ य आहिया ।

त्तीहारिमणीहारी आहारच्छेओ य दोसु वि ॥

१४-ओमोयरियं^७ पंचहा समासेण वियाहियं ।

'दव्वओ खेत्तकालेणं'^८ भावेणं^९ पज्जवेहि य ॥

१-० कालाय (उ, ऋ) ।

२-अणसणा दुविहा (उ, ऋ, वृ०) ।

३-निरकंखा उ (वृ०) ; निरवकंखा उ (सु) ; निरवकंखा (वृ० पा०) ।

४-वग्गो चउत्थोउ (अ) ।

५-सवियारमवियारा (उ, ऋ, वृ०, सु) ।

६-सपडिकम्मा अपडिकम्मा (अ) ।

७-ओमोयरियं (अ, वृ० पा०, ऋ) ।

८-खित्तओ काले (ऋ) ; खेत्त काले य (अ) ।

९-भावओ (अ) ।

- १५—जो जस्स उ आहारो तत्तो ओमं^१ तु जो करे ।
जहन्नेणेगसित्थाई एवं दब्बेण ऊ भवे ॥
- १६—गामे नगरे तह रायहाणि- निगमे य आगरे पल्ली ।
खेडे कब्बडदोणमुह- पट्टणमडम्बसंवाहे ॥
- १७—आसमपए विहारे सन्निवेसे समायघोसे य ॥
थल्लिसेणाखन्धारे सत्थे संवट्टकोट्टे य ॥
- १८—वाडेसु व रच्छासु व घरेसु वा एवमित्थियं खेतं ।
कप्पइ उ एवमाई एवं खेत्तेण ऊ भवे ॥
- १९—पेडा य अद्धपेडा
गोमुत्तिपयंगवीहिया चेव ।
सम्बुक्कावट्टाऽऽययगन्तुं
पच्चागया छट्ठा ॥
- २०—दिवसस्स पोरुसीणं
चउण्हं पि उ जत्तिओ भवे कालो ।
एवं चरमाणो खलु
कालोमाणं मुणेयव्वो^२ ॥
- २१—अहवा तइयाए पोरिसीए
ऊणाइ घासमेसन्तो ।
चउभागूणाए वा
एवं कालेण ऊ भवे ॥
- २२—इत्थी वा पुरिसो वा
अलंकिओ वाऽणलकिओ वा वि ।
अन्नयरवयत्थो वा
अन्नयरेणं व वत्थेणं ॥

१—ऊण (अ) ।

२—मुणेयव्वं (उ, ऋ) ।

- २३—अन्नेण विसेसेण
वण्णेणं भावमणुमुयन्ते उ ।
एवं चरमाणो खलु
भावोमाणं मुण्येयव्वो^१ ॥
- २४—दव्वे खेत्ते काले
भावम्मि य आहिया उ जे भावा ।
एएहि ओमचरओ
पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥
- २५—अट्ठविहगोयरग्गं तु तहा सत्तेव एसणा ।
अभिग्गहा य जे अन्ने भिक्खायरियमाहिया ॥
- २६—खीरदहिसप्पिमाई पणीयं पाणभोयणं ।
परिवज्जणं रसाणं तु भणियं रसविवज्जणं ॥
- २७—ठाणा वीरासणाईया जीवस्स उ सुहावहा ।
उग्गा जहा धरिज्जन्ति कायकिलेसं तमाहियं ॥
- २८—एगन्तमणावाए इत्थोपसुविवज्जिए ।
सयणासणसेवणया विवित्तसयणासणं ॥
- २९—एसो बाहिरगतवो समासेण वियाहिओ ।
अब्भिन्तरं 'तवं एत्तो'^२ वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥
अब्भितरतव-पदं
- ३०—पायच्छित्तं विणओ
वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।
'क्काणं च विउस्सग्गो'^३
'एसो अब्भिन्तरो तवो'^४ ॥

१—मुण्येयव्व (उ, ऋ) ।

२—तवो इत्तो (उ, ऋ) ।

३—झाण उस्सग्गो वि य (उ, ऋ, स) ।

४—अब्भिन्तरओ तवो होइ (उ, ऋ, स) ।

- ३१—आलोगणारिहाईयं पायच्छित्तं तु दसविहं ।
जे भिक्खू वहई सम्मं पायच्छित्तं तमाहियं ॥
- ३२—अब्भुद्धानं अंजलिकरणं तहेवासणदायणं ।
गुरुभत्तिभावसुस्सूसा विणओ एस वियाहिओ ॥
- ३३—आयरियमाइयम्मि^१ य वेयावच्चम्मि दसविहे ।
आसेवणं जहाथामं वेयावच्चं तमाहियं ॥
- ३४—वायणा पुच्छणा चेव तहेव परियट्टणा ।
अणुप्पेहा धम्मकहा सज्झाओ पंचहा भवे ॥
- ३५—अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता भाएज्जा सुसमाहिए ।
धम्मसुक्काइं ज्ञाणाइं ज्ञाणं तं तु बुहा वए ॥
- ३६—सयणासणठाणे वा जे उ भिक्खू न वावरे ।
कायस्स विउस्सग्गे छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥

निक्खेव-पदं

- ३७—एवं तवं तु दुविहं जे सम्मं आयेरे-मुणी ।
‘से खिप्पं सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिए’ ॥
—त्ति वेमि ॥

*

१—आयरिमाईए (उ, ऋ) ।

२—सो खवेत्तुरय अरओ नीरय तु गहं गए (वृ० पा०) ।

एगतीसइमं अज्भयणं

चरणविही

- १—चरणविहिं पवक्खामि जीवस्स उ सुहावहं ।
जं चरित्ता बहू जीवा तिण्णा संसारसागरं ॥
- २—एगओ विरइं कुज्जा एगओ य पवत्तणं ।
असंजमे नियत्ति च संजमे य पवत्तणं ॥
- ३—रागदोसे य दो पावे पावकम्मपवत्तणे ।
जे भिक्खू रुम्भई निच्चं से न अच्छइ^१ मण्डले ॥
- ४—दण्डाणं गारवाणं च सल्लाणं च तियं तियं ।
जे भिक्खू चयई निच्चं से न अच्छइ^२ मण्डले ॥
- ५—दिव्वे य जे^३ उवसग्गे तथा तेरिच्छमाणुसे ।
जे भिक्खू सहई निच्चं से न अच्छइ^४ मण्डले ॥
- ६—विगहाकसायसन्नाणं भाणाणं च दुयं तथा ।
जे भिक्खू वज्जई निच्चं से न अच्छइ^५ मण्डले ॥
- ७—वएसु इन्दियत्थेसु 'समिईसु किरियासु य'^६ ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- ८—लेसासु छसु काएसु छक्के आहारकारणे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- ९—पिण्डोग्गाहपडिमासु भयट्ठाणेसु सत्तसु ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥

१, २—गच्छइ (अ, वृ० पा०) ।

३—X (उ, ऋ) ।

४, ५—गच्छइ (अ, वृ० पा०) ।

६—समीतीसु य तहेव य (वृ० पा०) ।

- १०—मयेसु बम्भगुत्तीसु भिक्खुधम्ममि दसविहे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- ११—उवासगाणं पडिमासु भिक्खूणं पडिमासु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १२—किरियासु भूयगामेसु परमाहम्मिएसु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १३—गाहासोलसएहिं तथा अस्संजमम्मि य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १४—बम्भम्मि नायज्भयणेसु ठाणेसु यऽ समाहिए ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १५—एगवीसाए सवलेसु बावीसाए परीसहे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १६—तेवीसइ सूयगडे रुवाहिएसु सुरेसु^१ अ ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १७—पणवीसणावणाहिं^२ उदेसेसु दसाइणं ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १८—अणगारगुणेहिं च पकप्पम्मि तहेव य^३ ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १९—पावसुयपसगेसु मोहट्ठाणेसु चैव य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- २०—सिद्धाइगुणजोगेसु तेत्तीसासायणासु^४ य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥

१—देवेसु (दू० पा०) ।

२—पणु^० (अ) ।

३—उ (उ, ऋ, वृ) ।

४—^०णाणि (अ) ।

२१-इइ एएसु ठाणसु जे भिक्खू जयई सया ।
 खिप्पं से सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिओ ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

वतीसइमं अज्भयण

पमायट्टाणं

उक्खेव-पदं

- १—अच्चन्तकालस्स समूलगस्स
 सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
 तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता
 सुणेह एगगहियं^१ हियत्थं ॥
- २—नाणस्स सव्वस्स^२ पगासणाए
 अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए ।
 रागस्स दोसस्स य संखएणं
 एगन्तसोक्खं समुवेइ मोकखं ॥
- ३—तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा
 विवज्जणा बालजणस्स दूरा ।
 'सज्झायएगन्तनिसेवणा य'^३
 सुत्तत्थसंचिन्तणया धिई य ॥
- ४—आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं
 सहायमिच्छे निउणत्थवुद्धिं^४ ।
 निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोगं
 समाहिकामे समणे तवस्सी ॥

१—एगन्त^० (वृ० पा०, सु) ।

२—सव्वस्स (वृ० पा०, सु, पा) ।

३—^० निसेवणाए (वृ० पा०), ^० निसेवणा य (वृ०) ।

४—निउणेह^० (वृ० पा०) ।

५—न वा लभेज्जा निउणं सहायं
 गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
 एक्को वि पावाइ विवज्जयन्तो^१
 विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥
 तण्हा-पदं

६—जहा य अण्डप्पभवा बलागा
 अण्डं बलागप्पभवं जहा य ।
 एमेव ... मोहाययणं खु तण्हं^२
 मोहं च तण्हाययणं वयन्ति ॥

७—रागो य दोसो वि य कम्मवीयं
 कम्मं च मोहप्पभवं वयन्ति ।
 कम्मं च जाईमरणस्स मूलं
 दुक्खं च जाईमरणं वयन्ति ॥

८—दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो
 मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा ।
 तण्हा हया जस्स न होइ लोहो
 लोहो हओ जस्स न किच्चणाइं^३ ॥
 उवाच-पदं

९—रागं च दोसं च तहेव मोहं
 उद्धत्तुकामेण स मूलजालं ।
 जे जे 'उवाया पडिवज्जियव्वा'^४
 ते कित्तइस्सामि अहाणुपुञ्चि ॥

१—अणायरन्तो (वृ० पा०) ।

२—तण्हा (अ) ।

३—किच्चनत्थि (वृ० पा०) ।

४—अपाया परि० (वृ० पा०) ।

- १०—रसा पगामं न निसेवियञ्चा
 पायं रसा दित्तिकरा^१ नराणं ।
 दित्तं च कामा समभिद्वन्ति
 दुमं जहा साउफलं व पक्खी ॥
- ११—जहा द्वग्गी पउरिन्धणे वणे
 समारुओ नोवसमं उवेइ ।-
 एविन्दियग्गी वि पगामभोइणो
 न बम्भयारिस्स हियाय कस्सई ॥
- १२—विवित्तसेज्जासणजन्तियाणं
 ओमासणाणं^२ दमिइन्दियाणं ।
 न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं
 पराइओ वाहिरिवोसहेहिं ॥
- १३—जहा बिरालावसहस्स मूले
 न मूसगाणं वसही पसत्था ।
 एमेव इत्थीनिलयस्स मज्जे
 न बम्भयारिस्स खमो निवासो ॥
- १४—न रुवलावण्णविलासहासं
 न जंपियं इंगियपेहियं^३ वा ।
 इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता
 दट्ठुं ववस्से समणे तवस्सी ॥

१—दित्तिकरा (वृ० पा०) ।

२—ओमासणाए, ओमासणाई (वृ०, पा०) ।

३—^० वीहिय (वृ०, सु) ।

- १५—अदंसणं चैव अपत्थणं च
 अचिन्तणं चैव अकित्तणं च ।
 इत्थीजणस्सारियभाणजोगं
 हियं सया बम्भवए^१ रयाणं ॥
- १६—कामं तु देवीहि विभूसियाहि
 न चाइया खोभइउं तिगुत्ता ।
 तहा वि एगन्तहियं ति नच्चा
 विवित्तवासो^२ मुणिणं^३ पसत्थो ॥
- १७—मोक्खाभिकंखिस्स वि माणवस्स
 संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे ।
 नेयारिसं^४ दुत्तरमत्थि लोए
 जह्मित्थिओ बालमणोहराओ ॥
- १८—एए य संगे समइक्कमित्ता
 सुहुत्तरा चैव भवन्ति सेसा ।
 जहा महासागरमुत्तरित्ता
 नई भवे अवि गंगासमाणा ॥
 दुक्ख-पदं
- १९—कामाणुगिद्विप्पभवं खु दुक्खं
 सन्वस्स लोगस्स सदेवगस्स ।
 जं काइयं माणसियं च किंचि
 तस्सऽन्तगं गच्छइ वीयरगो ॥

१—बंभवेरे (उ, वृ० पा०, ऋ) ।

२—० भावो (उ, ऋ) ।

३—मुणिणो (अ) ।

४—न तारिसं (आ, इ, उ, ऋ) ।

२०—जहा य किपागफला मणोरमा

रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा ।

ते खुहुए जीविय^१ पच्चमाणा

एओवमा कामगुणा विवागे ॥

२१—जे इन्दियाण विसया मणुन्ता

न तेसु^२ भावं निसिरे कयाइ ।

न याऽमणुन्नेसु मणं पि^३ कुज्जा

समाहिकामे समणे तवस्सी ॥

२२—चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति

तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।

तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु

समो य जो तेसु स वीयरगो ॥

रूव-पद

२३—रूवस्स चक्खुं गहणं वयन्ति

चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति ।

रागस्स हेउं समणुन्नमाहु^४

दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु^५ ॥

२४—रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिब्बं^६

अकालियं पावइ से विणासं^७ ।

रागाउरे से जह वा पयंगे

आलोयलोले समुवेइ मच्चुं ॥

१—ते जीविय खुहुए (अ), ते जीविय खुदति (वृ० पा०) ; ते खुहुए जीविय (सु) ।

२—तेसि (अ) ।

३—पि (अ) ।

४—समणुणमाहु (वृ० पा०) ।

५—समणुणमाहु (वृ० पा०) ।

६—निच्चं (अ) ।

७—किलेसं (वृ० पा०) ।

- २५—जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं^१
 तंसि क्खणे से 'उ उवेइ दुक्खं'^२ ।
 दुदन्तदोसेण सएण जन्तू
 न किञ्चि रूवं अवरज्झई से ॥
- २६—एगन्तरत्ते^३ रुइरंसि रूवे
 अतालसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥
- २७—रूवाणुगासाणुगए^४ य जीवे
 चराचरे हिसइ ऽणेरूवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले
 पीलेइ अत्तट्टगुरू किलिद्धे ॥
- २८—रूवाणुवाएण^५ परिग्गहेण
 उप्पायणे रक्खणसन्निओगे^६ ।
 वए विओगे य कर्हि सुहं से ?
 संभोगकाले य अतित्तिलाभे^७ ॥
- २९—रूवे अत्तित्ते य परिग्गहे य
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
 लोभाविले आययई अदत्तं ॥

१—निच्च (वृ०, अ) ।

२—समुवेति सव्वं (वृ० पा०) ।

३—^०रुत्तो (अ) ।

४—^०वायाणुगए (वृ० पा०) ।

५—^०वाए य (अ) ; ^०रागेण (वृ० पा०) ; ^०वाए ण (सु) ।

६—^०सन्निओगे (उ) ।

७—अत्तित्त ^०(वृ०) ; अत्तित्ति ^०(वृ० पा०) ।

- ३०—तण्हाभिभूयस्सं अदत्तहारिणो
 रुवे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
 मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
 तत्थाऽवि दुक्खा न विमुच्चई से ॥
- ३१—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
 पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
 एवं अदत्ताणि समाययन्तो
 रुवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥
- ३२—रूवाणुरत्तस्स नरस्स एवं
 कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किञ्चि ? ।
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
 निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥
- ३३—एमेव रुवम्मि गओ पओसं
 उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
 पदुट्ठचित्तो य^१ चिणाइ कम्मं
 जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥
- ३४—रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो
 एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
 न लिप्पए भवमज्जे वि सन्तो
 जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥
 सद्-पदं
- ३५—सोयस्स सट्ठं गहणं वयन्ति
 तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
 तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
 समो य जो तेसु स वीयरगो ॥

३६—सद्दस्स सोयं गहणं वयन्ति
सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति ।

रागस्स हेउं समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥

३७—सद्देसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं^१
अकालियं पावइ से विणास ।

रागाउरे हरिणमिगे व^२ मुद्धे^३
सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चुं ॥

३८—जे यात्रि दोसं समुवेइ तिव्वं^४
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।

दुद्धन्तदोसेण सएण जन्तू
न किञ्चि सद्दं अवरज्झई से ॥

३९—एगन्तरत्ते रुइरंसि सद्दे
अतालिसे से कुणई पओसं ।

दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

४०—सद्दाणुगासाणुगए य जीवे
चराचरे हिंसइ ण्णेरूवे ।

चित्तेहि ते परियावेइ बाले
पीलेइ अत्तइगुरू किलिद्धे ॥

१—निच्च (अ) ।

२—व्व (उ, ऋ) ।

३—बुद्धे (अ) ।

४—निच्च (अ, वु०) ।

४१—सद्गणुवाएण^१ परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कर्हि सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे^२ ॥

४२—सद्दे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं ॥

४३—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
सद्दे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

४४—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

४५—सद्गणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचिं ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसट्टुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥

१—^० वाए य (अ) ; रागेण (द्द० पा०) ; वाए ण (सु) ।

२—अतित्त (द्द) ; अतित्ति (द्द० पा०) ।

४६—एमेव सद्दम्मि गओ पओसं
 उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
 पट्टच्चित्तो य^१ चिणाइ कम्मं
 जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥

४७—सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो^२
 एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
 न लिप्पए भवमज्जे वि सन्तो
 जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

गन्ध-पदं

४८—घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति
 तं रागहेउं तु मणुन्तमाहु ।
 तं दोसहेउं अमणुन्तमाहु
 समो य जो तेसु स वीयरगो ॥

४९—गन्धस्स घाणं गहणं वयन्ति
 घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति ।
 रागस्स हेउं समणुन्तमाहु
 दोसस्स हेउं अमणुन्तमाहु ॥

५०—गन्धेसु^३ जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं^४
 अकालियं पावइ से विणासं ।
 रागाउरे ओसहिगन्धगिद्धे
 सप्पे बिलाओ विव निक्खमन्ते ॥

१—उ (अ) ।

२—असोगो (अ) ।

३—गंधस्स (अ, ऋ) ।

४—निच्चं (अ) ।

५१—जे यावि दोसं समुवेइ^१ तिब्बं^१
 तंसि कखणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुइत्तदोसेण सएण जन्तु
 न किंचि गन्धं अवरज्भई से ॥

५२—एगन्तरत्ते रुइरंसि गन्धे
 अतालसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

५३—गन्धाणुगासाणुगए य जीवे
 चराचरे हिंसइ ऽणेरूवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले
 पीलेइ अत्तइगुरु किलिट्ठे ॥

५४—गन्धाणुवाएण^२ परिग्गहेण
 उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वए विओगे य कहिं सुहं से ?
 संभोगकाले य अतित्तिलाभे^३ ॥

५५—गन्धे अतित्ते य परिग्गहे य
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
 लोभाविले आययई अदत्तं ॥

१—निच्च (वृ०, अ) ।

२—^० वाए य (अ), ^० रागेण (वृ० पा०), ^० वाए ण (सु) ।

३—अत्ति^० (वृ०) ; अत्ति^० (वृ० पा०) ।

- ५६—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
गन्धे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥
- ५७—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
गन्धे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥
- ५८—गन्धाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किञ्चि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥
- ५९—एमेव गन्धम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुद्धचित्तो य^१ चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥
- ६०—गन्धे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्जे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥
रस-पदं
- ६१—जिहाए रसं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरगो ॥

- ६२-रसस्स जिब्भं^१ गहणं वयन्ति
जिब्भाए रसं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥
- ६३-रसेसु^२ जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं^३
अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे बडिसविभिन्नकाए
मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे^४ ॥
- ६४-जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं^३
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुहन्तदोसेण सएण जन्तू
'रसं न किञ्चि'^५ अवरज्जई से ॥
- ६५-एगन्तरत्ते रुइरे रसम्मि
अतालसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥
- ६६-रसाणुगासाणुगए य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरु किलिट्ठे ॥

१-जीहा (उ, ऋ) ।

२-रसस्स (अ, ऋ) ।

३-निच्चं (अ) ।

४-° लोभगिद्धे (अ) ।

५-निच्च (वृ०, अ) ।

६-न किञ्चि रस्सं (अ) ।

६७—रसाणुवाएण^१ परिग्गहेण
 उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वए विओगे य कर्हिं सुहं से ?
 संभोगकाले य अतित्तिभाभे^२ ॥

६८—रसे अत्तित्ते य परिग्गहे य
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
 लोभाविले आययई अदत्तं ॥

६९—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
 रसे अत्तित्तस्स परिग्गहे य ।
 मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
 तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

७०—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
 पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
 एवं अदत्ताणि समाययन्तो
 रसे अत्तित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

७१—रसाणुरत्तस्स नरस्स एवं
 कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
 निव्वत्तई जस्स कए ण दुक्खं ? ॥

१—^० वाए य (अ) ; ^० रागेण (वृ० पा०) ; ^० वाए ण (सु) ॥

२—अत्तित्त^० (वृ०) ; अत्तित्ति^० (वृ० पा०) ।

७२—एमेव रसम्मि गओ पओसं
 उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
 पदुद्धचित्तो य^१ चिणाइ कम्मं
 जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥

७३—रसे विरत्तो मणुओ विसोगो
 एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
 न लिप्पई भवमज्जे वि सन्तो
 जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

फास-पदं

७४—कायस्स फासं गहणं वयन्ति
 तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
 तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
 समो य जो तेसु स वीयरगो ॥

७५—फासस्स कायं गहणं वयन्ति
 कायस्स फासं गहणं वयन्ति ।
 'रागस्स हेउं समणुन्नमाहु'^२
 'दोसस्स हेउं'^३ अमणुन्नमाहु ॥

७६—फासेसु जो गिद्धिमुवेइ तिच्चं^४
 अकालियं पावइ से विणासं ।
 रागाउरे सीयजलावसन्ने
 गाहग्गहीए महिसे व ऽरन्ने ॥

१—उ (अ) ।

२—त राग हेउ तु मणुन्नमाहु (अ) ।

३—त दोस हेउस्स (अ) ।

४—निच्च (अ) ।

- ७७—जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं^१
 तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुद्धन्तदोसेण सएण जन्तू
 न किञ्चि फासं अवरज्ज्झई से ॥
- ७८—एगन्तरत्ते रुद्धरंसि फासे
 अतालसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥
- ७९—फासाणुगासाणुगए य जीवे
 चराचरे हिंसइ ऽणेरूवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले
 पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥
- ८०—फासाणुवाएण^२ परिग्गहेण
 उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वए विओगे य कर्हि सुहं से ?
 संभोगकाले य अतित्तिलाभे^३ ॥
- ८१—फासे अतित्ते य परिग्गहे य
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अत्तुट्ठिदोसेण दुही परस्स
 लोभाविले आययई अदत्तं ॥

१—निच्चं (बृ०, अ) ।

२—^०वाए य (अ) ; ^०रागेण (बृ० पा०) ; ^०वाए ण (सु) ।

३—अतित्त^० (बृ०) ; अतित्ति^० (बृ० पा०) ।

- ८२-तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
 फासे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
 मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
 तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥
- ८३-मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
 पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
 एवं अदत्ताणि समाययन्तो
 फासे अतित्तो द्दुहिओ अणिस्सो ॥
- ८४-फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं
 कत्तो सुहं होज्जकयाइ किञ्चि ? ।
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
 निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥
- ८५-एमेव फासम्मि गओ पओसं
 उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
 पदुट्टचित्तो य' च्चिणाइ कम्मं
 जं से पुणो होइ द्दुहं विवागे ॥
- ८६-फासे विरत्तो मणुओ विसोगो
 एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
 न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो
 जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥
 भाव-पदं
- ८७-मणस्स भावं गहणं वयन्ति
 तं रागहेउं तु मणुन्ममाहु ।
 तं दोसहेउं अमणुन्ममाहु
 समो य जो तेसु स वीयरगो ॥

८८—भावस्स मणं गहणं वयन्ति
 मणस्स भावं गहणं वयन्ति ।
 रागस्स हेउं समणुन्नमाहु
 दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥

८९—भावेसु^१ जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं^२
 अकालियं पावइ से विणासं ।
 रागाउरे कामगुणेषु गिद्धे
 करेणुमग्गावहिए 'व नागे'^३ ॥

९०—जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं^४
 तंसि वखणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुद्धन्तदोसेण सएण जन्तू
 न किञ्चि भावं अवरज्जई से ॥

९१—एगन्तरत्ते रुइरंसि भावे
 अतालसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

९२—भावाणुगासाणुगए य जीवे
 चराचरे हिसइ ऽणेगरुवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले
 पीलेइ अत्तट्टगुरु किलिट्ठे ॥

१—मणेण (अ) ; भावस्स (ऋ) ।

२—निच्च (अ) ।

३—गए व्व (अ) ।

४—निच्च (वृ०, अ) ।

- ९३—भावाणुवाएण^१ परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहिं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तिभाभे^२ ॥
- ९४—भावे अत्तित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं ॥
- ९५—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
भावे अत्तित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥
- ९६—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
भावे अत्तित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥
- ९७—भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेत्तदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥

१—^०वाए य (अ) ; ^०रागेण (वृ० पा०) ; ^०वाए ण (सु) ।

२—अत्तित्त^० (वृ०) ; अत्तित्ति^० (वृ० पा०) ।

- ९८—एमेव भावस्मि गतो पञ्चोसं
 उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
 पट्टुच्चित्तो य' चिणाइ कम्मं
 जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥
- ९९—भावे विरत्तो मणुओ विसोगो
 एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
 न लिप्पई भवमज्जे वि सन्तो
 जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥
 निक्खेव-पदं
- १००—एविन्दियत्था य मणस्त अत्था
 दुक्खस्सहेउं मणुयस्स रागिणो ।
 ते चेव थोवं पि कयाइ दुक्खं
 न वीयरगस्स करेन्ति किञ्चि ॥
- १०१—न कामभोगा समयं उवेन्ति
 न यावि भोगा विगइं उवेन्ति ।
 जे तप्पओसी य परिग्गही य
 सो तेसु मोहा विगइं उवेइ ॥
- १०२—कोहं च माणं च तहेव मायं
 लोहं दुगुंछं अरइं रइं च ।
 हासं भयं सोगपुमित्थिवेयं
 नपुंसवेयं विविहे य भावे ॥
- १०३—आवज्जई एवमणेगरुवे
 एवंविहे कामगुणेषु सत्तो ।
 अन्ने य एयप्पभवे विसेसे
 कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से ॥

१०४—कप्पं न इच्छिज्ज सहायलिच्छू
 पच्छाणुतावेय^१ तवप्पभावं ।
 एवं वियारे अमियप्पयारे
 आवज्जई इन्दियचोरवस्से ॥

१०५—तओ से जायन्ति पओयणाइं
 निमज्जिउं मोहमहण्णवम्मि ।
 सुहेसिणो दुक्खविणोयणद्वा^२
 तप्पच्चयं^३ उज्जमए य रागी ॥

१०६—विरज्जमाणस्स य इन्दियत्था
 सद्दाइया^४ तावइयप्पगारा ।
 न तस्स सव्वे वि मणुन्नयं वा
 निव्वत्तयन्ती अमणुन्नयं वा ॥

१०७—एवं ससंकप्पविकप्पणासु^५
 संजायई समयमुवट्ठियस्स ।
 'अत्थे य संकप्पयओ'^६ तओ से
 पहीयए कामगुणेसु तण्हा ॥

१०८—स वीयरगो कयसव्वकिच्चो
 खवेइ नाणावरणं खणेणं ।
 तहेव जं दंसणमावरेइ
 जं चऽन्तरायं पकरेइ कम्मं ॥

१—पच्छाणुतावेण (सु) ।

२—दुक्ख विमोयणाय (वृ० पा०) ।

३—सप्पच्चया (वृ० पा०) ।

४—वण्णाइया (वृ० पा०) ।

५—^० विकप्पणासो (वृ० पा०) ।

६—अत्थे असकप्पयतो (वृ० पा०) ।

- १०९—सर्व्वं तथो जाणइ पासए य
 अमोहणे होइ निरन्तराए ।
 अणासवे भाणसमाहिजुत्ते
 आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥
- ११०—सो तस्स सर्व्वस्स दुहस्स मुक्को
 जं बाहई सययं जन्तुमेयं ।
 दीहामयविप्पमुक्को पसत्थो
 तो होइ अच्चन्तसुही कयत्थो ॥
- १११—अणाइकालप्पभवस्स एसो
 'सर्व्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गे'^१ ।
 वियाहियो जं समुविच्च सत्ता
 कमेण अच्चन्तसुही भवन्ति ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—संसार चक्कस्स विमोक्खमग्गे (वु० पा०) ।

तेतीसइमं अज्जमयणं

कम्मपयडी

उक्खेव-पदं

१—अट्ट कम्माइं वोच्छामि आणुपुव्विं जहकमं^१ ।
जेहि बद्धो अयं जीवो संसारे परिवत्ताए^२ ॥

कम्म-पदं

२—नाणस्सावरणिज्जं दंसणावरणं तथा ।
वेयणिज्जं तथा मोहं आउकम्मं तहेव य ॥
३—नामकम्मं च गोयं च अन्तरायं तहेव य ।
एवमेयाइ कम्माइं अट्टेव उ समासओ ॥

पयडि-पदं

४—नाणावरणं पंचविहं सुयं आभिणिबोहियं ।
ओहिनाणं तइयं मणनाणं च केवलं ॥

५—निदा तहेव पयला
निदानिदा य पयलपयला य ।
तत्तो य थीणगिद्धी उ
पंचमा होइ नायव्वा ॥

६—चक्खुमचक्खुओहिस्स
दंसणे केवले य आवरणे ।
एवं^३ तु नवविगप्पं
नायव्वं दंसणावरणं ॥

१—सुणेह मे (वृ० पा०) ।

२—परिभम्मए (वृ० पा०) ।

३—एय (अ) ।

- ७—वेयणीयं पि य^१ दुविहं
सायमसायं च आहियं ।
सायस्स उ बहू भेया
एमेव असायस्स वि ॥
- ८—मोहणिज्जं पि दुविहं दंसणे चरणे तथा ।
दंसणे तिविहं वुत्तं चरणे दुविहं भवे ॥
- ९—सम्मत्तं चेव मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तमेव य ।
एयाओ तिन्नि पयडीओ मोहणिज्जस्स दंसणे ॥
- १०—‘चरित्तमोहणं कम्मं दुविहं तु वियाहियं’^२ ।
‘कसायमोहणिज्जं’^३ तु नोकसायं तहेव य ॥
- ११—सोलसविहभेएणं कम्मं तु कसायजं ।
सत्तविहं नवविहं वा कम्मं नोकसायजं ॥
- १२—नेरइयतिरिक्खाउ मणुस्साउ तहेव य ।
देवाउयं चउत्थं तु^४ आउकम्मं चउव्विहं ॥
- १३—नामं कम्मं तु^५ दुविहं सुहमसुहं ‘च आहियं’^६ ।
सुहस्स उ^७ बहू भेया एमेव असुहस्स वि ॥
- १४—गोयं कम्मं दुविहं उच्चं नीयं च आहियं ।
उच्चं अट्टविहं होइ एवं नीयं पि आहियं ॥
- १५—दाणे लाभे य भोगे य उवभोगे वीरिए तथा ।
पंचविहमन्तरायं समासेण वियाहियं ॥

१—हु (ऋ) ।

२—चरित्त मोहणिज्ज दुविह वोच्छामि अणुपुव्वसो (बु० पा०) ।

३—^० वेयणिज्ज य (बु०) ।

४, ५—× (उ, ऋ) ।

६—वियाहियं (उ, ऋ) ।

७—य (उ, ऋ) ।

तेतोसइमं अज्झयणं

१६-एयाओ मूलपयडीओ उत्तराओ य आहिया ।
पएसगं खेतकाले य भावं चाडुत्तरं सुण ॥

पएस-पदं

१७-सर्वेसिं चेव कम्माणं पएसगमणन्तं ।
गण्ठियसत्ताइयं^१ अन्तो सिद्धाण आहियं ॥

१८-सव्वजीवाण कम्मं तु संगहे छद्दिसागयं ।
सव्वेसु वि पएसेसु सव्वं सव्वेण वद्धं ॥

ठिड्य-पदं

१९-उदहीसरिनामाणं तीसई कोडिकोडिओ ।
उक्कोसिया ठिई होइ अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

२०-आवरणिज्जाण दुण्हं पि वेयणिज्जे तहेव य ।
अन्तराए य कम्मम्मि ठिई एसा वियाहिया ॥

२१-उदहीसरिनामाणं सत्तरिं कोडिकोडिओ ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

२२-तेत्तीस सागरोवमा उक्कोसेण वियाहिया ।
ठिई उ आउकम्मस्स अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

२३-उदहीसरिनामाणं वीसई कोडिकोडिओ ।
नामगोत्ताणं उक्कोसा अट्ट मुहुत्ता जहन्निया ॥

अणुभाग-पदं

२४-सिद्धाणऽणन्तभागो य^२ अणुभागा हवन्ति उ ।
सव्वेसु वि पएसगं सव्व जीवेसु ऽइच्छियं^३ ॥

१-गण्ठि सत्ताणाइ (वृ० पा०) ।

२-X (उ, ऋ) ।

३-स इच्छिय (उ, सु) ; अहिच्छिय (स) ।

तिक्खेव-पदं

२५—तम्हा एएसि कम्माण अणुभागे वियाणिया ।
 एएसि संवरे चेव खवणे य जए बुहे ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

चउतीसइमं अज्मयणं

लेसज्मयणं

उक्खेव-पदं

- १-लेसज्मयणं पवक्खामि आणुपुण्वि जहक्कमं ।
 छण्हं पि कम्मलेसाणं अणुभावे सुणेह मे ॥
- २-नामाइं वण्णरसगन्ध- फासपरिणामलक्खणं ।
 ठाणं ठिइं गइं चाउं लेसाणं तु सुणेह मे ॥

लेसा-पदं

- ३-किण्हा नीला य काऊ य तेऊ पम्हा तहेव य-
 सुक्खलेसा य छट्ठा उ^१ नामाइं तु जहक्कमं ॥

वण्ण-पदं

- ४-जीमूयनिद्धसकासा गवलरिद्धगसन्निभा ।
 खंजणंणतयणनिभा किण्हलेसा उ वण्णओ ॥
- ५-नीलाऽसो गसंकासा चासपिच्छसम्पभा ।
 वेरुलियनिद्धसंकासा नीललेसा उ वण्णओ ॥
- ६-अयसीपुप्फसकासा कोइलच्छदसन्निभा ।
 पारेवयगीवनिभा काउलेसा उ वण्णओ ॥
- ७-हिंमुलुयघाउसंकासा तरुणाइच्चसन्निभा^२ ।
 सुयतुण्डपईवनिभा^३ तेउलेसा उ वण्णओ ॥
- ८-हरियालभेयसंकासा हलिद्दाभेयसंनिभा^४ ।
 सणासणकुसुमनिभा पम्हलेसा उ^५ वण्णओ ॥

१-य (उ, ऋ) ।

२-^० छावि^० (वृ० पा०) ।

३-सुयतुण्डगसकासा, सुयतुण्डालत्तदीवामा (वृ० पा०) ।

४-^० सम्पभा (अ, आ. इ) ।

५-य (ऋ) ।

९—संखंककुन्दसंकासा खीरपूरसमप्पभा^१ ।
रययहारसंकासा सुक्कलेसा उ^२ वण्णओ ॥

रस-पदं

१०—जह कड्डयतुम्बगरसो
निम्बरसो कड्डयरोहिणिरसो वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ^३ किण्हाए नायव्वो ॥

११—जह तिगड्डयस्स य रसो
तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ नीलाए नायव्वो ॥

१२—जह तरुणअम्बगरसो
तुवरकविट्ठस्स^४ वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ काऊए नायव्वो ॥

१३—जहपरिणयम्बगरसो
पक्कविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ^५ तेऊए नायव्वो ॥

१—खीरतूल^० (वृ०) ; खीरघार^०, खीरपूर^० (वृ० पा०) ।

२, ३—य (ऋ) ।

४—तुंदर^० (अ) ; तुंदर^० (उ) ; अट्ट^० (वृ० पा०) ।

५—य (ऋ) ।

१४—वरवास्णीए व रसो
विविहाण व आसवाण जारिसओ ।

‘महुमेरगस्स व रसो
एत्तो पम्हाए^१ परएणं^२ ॥

१५—खज्जूरमुद्दियरसो
खीररसो खण्डसक्कररसो वा ।

एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ^३ सुक्काए नायव्वो ॥

गन्ध-पदं

१६—जह गोमडस्स गन्धो
सुणगमडगस्स^४ व जहा अहिमडस्स ।

‘एत्तो वि’^५ अणन्तगुणो
लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥

१७—जह सुरहिकुसुमगन्धो
गन्धवासाणं^६ पिस्समाणाणं^७ ।

‘एत्तो वि’^८ अणन्तगुणो
पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥

१—पम्हाउ (अ) ।

२—एत्तो वि अणन्त गुणो रसो उ पम्हाए नायव्वो (वृ० पा०) ।

३—य (ऋ) ।

४—^० मडस्स (उ, ऋ) ।

५—एत्तोउ (अ) ; इत्तो वि (उ, ऋ) ।

६—गंधाण य (वृ० पा०) ।

७—पिस्समाणाणं (अ) ।

८—एत्तोउ (अ) ; इत्तो वि (उ, ऋ) ।

फास-पदं

१८-जह करगयस्स फासो
गोजिब्भाए व सागपत्ताणं ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥

१९-जह वूरस्स व फासो
नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाणं ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥

एत्ता परिणाम-पद

विहो वा

१२-जह तरुणञ्जीसइविहेक्कसीओ वा ।
तुवरक्कि वा
एत्तो वि अणन्तगुणो होइ परिणामो ॥
रसो उ

१३-जहपरिणयम्बगरसो च्छसु अविरओ य ।
पक्कविट्टस्स वा
एत्तो वि अणन्तगुणो ने नरो^१ ॥
रसो उ^२ तेऊए इन्दिओ^३ ॥

१-खीरतूल^० (वृ०) ; खीरघार^०, खीरपूर^० (वृ० पा०) ; रिणमे ॥

२, ३-य (ऋ) ।

४-तुवर^० (अ) ; तुवर^० (उ) ; अट्ट^० (वृ० पा०) ।

५-य (ऋ) ।

- २३—इस्साअंमरिसअतवो अविज्जमाया 'अहीरिया य'^१।
 गेद्धी पओसे य सढे पमत्ते^२ रसलोलुए साय गवेसए य ॥
- २४—आरम्भाओ^३ अविरओ खुट्ठी साहस्सिओ नरो ।
 एयजोगसमाउत्तो नीललेसं तु परिणमे ॥
- २५—वंके वंकसमायारे नियडिल्ले अणुज्जुए ।
 पलिउंचग ओवहिए मिच्छद्विट्ठी अणारिए ॥
- २६—उप्फालगदुट्ठवाई^४ य तेणे यावि य मच्छरी ।
 एयजोगसमाउत्तो काउलेस तु परिणमे ॥
- २७—नीयावित्ती अचवले अमाई अकुळहले ।
 विणीयविणए दन्ते जोगव उवहाणवं ॥
- २८—पियधम्मे दढधम्मे वज्जभीरू हिएसए^५ ।
 एयजोगसमाउत्तो तेउलेस तु परिणमे ॥
- २९—पयणुक्कोहमाणे य मायालोभे य पयणुए ।
 पसन्तचित्ते दन्तप्पा जोगवं उवहाणवं ॥
- ३०—तहा पयणुवाई^६ य उवसन्ते जिडन्दिए ।
 एयजोगसमाउत्तो पम्हलेसं तु परिणमे ॥
- ३१—अट्टरूढाणि वज्जित्ता धम्ममुक्काणि ञ्जायए^७ ।
 पसन्तचित्ते दन्तप्पा समिए गुत्ते य गुत्तिहिं ॥

१—अहीरियगयाय (अ) ।

२—य मत्ते (वृ० पा०) ।

३—आरम्भाओ (अ) . आरम्भा (उ, ऋ) ।

४—उफालदुट्ठवाई (अ) , उफालाण^० (उ) ; उफाला^० (ऋ) ।

५—हियासए, अणासए (वृ० पा०) ।

६—^० याइ (अ) ।

७—साहए (वृ०, सु) झायए (वृ० पा०) ।

३२—सरागे वीयरगे वा^१ उवसन्ते^२ जिइन्दिए ।
 एयजोगसमाउत्तो सुक्कलेसं तु परिणमे ॥

ठाण-पदं

३३—असंखिज्जाणोसप्पिणीण^३
 उस्सप्पिणीण जे समया ।
 संखाईया^४ लोगा
 लेसाण हुन्ति ठाणाइं ॥

ठिइ-पद

३४—‘मुहुत्तद्धं तु’^५ जहन्ना
 तेत्तीसं सागरा मुहुत्तऽहिया ।
 उक्कोसा होइ ठिई
 नायव्वा किण्हलेसाए ॥

३५—‘मुहुत्तद्धं तु’^६ जहन्ना
 दस उदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
 उक्कोसा होइ ठिई
 नायव्वा नीललेसाए ॥

३६—‘मुहुत्तद्धं तु’^७ जहन्ना
 तिण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
 उक्कोसा होइ ठिई
 नायव्वा काउलेसाए ॥

१—य (अ) ।

२—सुद्धजोगे (वृ० पा०) ।

३—असखेज्जाणओ उस्सप्पिणीण (अ) ।

४—असखेया (वृ० पा०) ।

५—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।

६—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।

७—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।

- ३७- 'मुहुत्तद्धं तु'^१ जहन्ना
दोउदही पलियमसंखभागमव्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा तेउलेसाए ॥
- ३८- 'मुहुत्तद्धं तु'^२ जहन्ना
दस 'होन्ति सागरा मुहुत्ताहिया'^३ ।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा पम्हलेसाए ॥
- ३९- 'मुहुत्तद्धं तु'^४ जहन्ना
तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा सुक्कलेसाए ॥
- ४०- एसा खलु लेसाणं
ओहेण ठिई उ वणिया होइ ।
चउसु वि गईसु एत्तो
लेसाण ठिइं तु वोच्छामि ॥
- ४१- दस वाससहस्साइं
काऊए ठिई जहन्निया होइ ।
'तिण्णुदही 'पलिओवम
असंखभागं' च उक्कोसा'^५ ॥

१-मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।

२-मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।

३-उदही इति मुहुत्तान्वहिया (उ, ऋ) ।

४-मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।

५-पलियमसत्त भाग (सु), पलियमसत्तेज्ज माग (वृ०) ।

६-उक्कोसा तिन्नुदही पलियमसत्तेज्जभागहिय (वृ० पा०) ।

- ४२—तिण्णुदही पलिय-
 मसंखभागा जहन्नेण नीलठिई ।
 दस उदही 'पलिओवम
 असंखभागं'^१ च उक्कोसा ॥
- ४३—'दस उदही 'पलिय-
 मसंखभागं'^२ जहन्निया होइ ।
 तेत्तीससागराइं उक्कोसा
 होइ किण्हाए ॥'^३
- ४४—एसा नेरइयाणं
 लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
 तेण परं वोच्छामि
 तिरियमणुस्साण देवाणं ॥
- ४५—अन्तोमुहुत्तमद्धं
 लेसाण ठिई जहिं जहिं जा उ ।
 तिरियाण नराणं वा^४
 वज्जित्ता केवलं लेसं ॥
- ४६—मुहुत्तद्धं तु जहन्ना
 उक्कोसा होइ पुव्वकोडी उ ।
 नवहि वरिसेहि ऊणा
 नायव्वा सुक्कलेसाए ॥

१—पलिअ असखभाग (उ, ऋ) ।

२—पलियमसखं भाग च (उ) ।

३—दस उदही पलियपसख भाग च जहन्नेण कण्ह लेसाए ।

तेत्तीस सागराइं मुहुत्त अहिया उ उक्कोसा ॥ (अ) ॥

४—तु (वृ०) ; च (उ, ऋ) ।

४७-एसा तिरियनराणं
 लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
 तेण परं वोच्छामि
 लेसाण ठिई उ देवाणं ॥

४८-दस वाससहस्ताइं
 किण्हाए ठिई जहन्निया होइ ।
 पलियमसंखिज्जइमो
 उक्कोसा होइ किण्हाए ॥

४९-जा किण्हाए ठिई खलु
 उक्कोसा सा उ समयमव्वहिया ।
 जहन्नेणं नीलाए
 'पलियमसंखं तु' उक्कोसा ॥

५०-जा नीलाए ठिई खलु
 उक्कोसा सा उ समयमव्वहिया ।
 जहन्नेणं कारुए
 पलियमसंखं च उक्कोसा ॥

५१-तेण परं वोच्छामि
 तेउलेसा जहा सुरगणाणं ।
 भवणवडवाणमन्तर-
 जोइसवेमाणियाणं च ॥

१-पलियमसखं च (उ, ऋ) ; पलियमसखिज्ज (वृ०) ।

५२-पलिओवमं^१ जहन्ना
उक्कोसा सागरा उ द्रुण्हऽहिया^२ ।

पलियमसंखेज्जेणं

होई भागेण^३ तेऊए ॥

५३-दस

वाससहस्साइं

तेऊए ठिई जहन्निया होइ ।

द्रुण्णुदही^४

पलिओवम

असंखभागं च उक्कोसा ॥

५४-जा

तेऊए

ठिई खलु

उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।

जहन्नेणं

पम्हाए दसउ

मुहुत्तऽहियाइं च उक्कोसा ॥

५५-जा

पम्हाए

ठिई खलु

उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।

जहन्नेणं

सुक्काए

तेत्तीसमुहुत्तमब्भहिया ॥

अहम्मलेसा-पद

५६-किण्हा

नीला

काऊ

तिन्नि वि एयाओ अहम्मलेसाओ^५ ।

एयाहि

तिहि

वि जीवो

द्रुग्गइं उववज्जई बहुसो^५ ॥

१-पलिओवम च (अ) ।

२-द्रुन्नहिया (उ, ऋ) ।

३-त्तिभागेण (अ) ।

४-अहम^० (अ, वृ० पा०) ।

५-X (उ, ऋ) ।

धम्मलेसा-पदं

५७-तेऊ पम्हा सुक्का
 तिन्नि वि एयाओ धम्मलेसाओ ।
 एयाहि तिहि वि जीवो
 सुग्गइं उववज्जई वहुसो^१ ॥

उववात-पद

५८-लेसाहिं सव्वाहिं
 पढमे समयम्मि परिणयाहिं तु ।
 'न वि कस्सवि उववाओ'^२
 परे भवे अत्थि^३ जीवस्स ॥

५९-लेसाहिं सव्वाहिं
 चरमे समयम्मि परिणयाहिं तु ।
 'न वि कस्सवि उववाओ'^४
 परे भवे अत्थि^५ जीवस्स ॥

६०-अन्तमुहुत्तम्मि गए
 अन्तमुहुत्तम्मि सेसए चेव ।
 लेसाहिं परिणयाहिं
 जीवा गच्छन्ति परलोयं ॥

१-× (उ, ऋ) ।

२-न इ कस्सवि उववत्ति (वृ०) ।

न वि० ' (वृ० पा०) ; न इ० ' (उ, ऋ, सु) ।

३-भवइ (वृ०, सु) ।

४-न इ कस्सवि उववत्ति (वृ०) ।

५-भवइ (वृ०, सु) ।

निकखेव-पदं

६१—तम्हा एयाण^१ लेसाणं

अणुभागे

वियाणिया ।

अप्पसत्थाओ

वज्जित्ता

पसत्थाओ

अहिट्ठेज्जासि^२ ॥

—त्ति बेमि ॥

१—एयासि (उ, ऋ) ।

२—अहिट्ठिप (उ, ऋ) ।

पणतीसइमं अज्मयणं

अणगारसंगगई

- १—सुणेहे 'मे एगगमणा'^१ मगं बुद्धेहि देसियं ।
जमायरन्तो भिक्खू दुक्खाणन्तकरो भवे ॥
- २—गिहवासं परिच्चज्ज पवज्जंअस्सिओ^२ मुणी ।
इमे संगे वियाणिज्जा^३ जेहि सज्जन्ति माणवा ॥
- ३—तहेव हिंसं अलियं चोज्जं अबम्भसेवणं ।
इच्छाकामं च लोभं च संजओ परिवज्जए ॥
- ४—मणोहर चित्तहर मल्लधूवेण वासियं ।
सकवाढं पण्डुरुल्लोयं मणसा वि न पत्थए ॥
- ५—इन्दियाणि उ भिक्खुस्स तारिसम्मि उवस्सए ।
दुक्कराइं निवारेउं^४ कामरागविवद्दणे ॥
- ६—सुसाणे सुन्नगारे वा खखमूले व एकओ^५ ।
पइरिक्के^६ परकडे वा वासं तत्थऽभिरोयए ॥
- ७—फासुयम्मि अणावाहे इत्थीहिं अणभिद्दुए ।
तत्थ संकप्पए वासं भिक्खू परमसंजए ॥
- ८—न सय गिहाइं कुज्जा णेव अन्नेहिं कारण ।
गिहकम्मसमारम्भे भूयाणं दीसई वहो ॥

१—मे एगगमणा (उ, ऋ) ।

२—पवज्जामस्सिए (उ, ऋ) ।

३—वियाणेत्ता (अ) ।

४—उ धारेउ (वृ०) : निवारेउ (वृ० पा०) ।

५—एगओ (उ, ऋ) . एया (वृ०) ; एहत्तो (वृ० पा०) ।

६—परक्के (वृ०) , पइरिक्के (वृ० पा०) ।

- ९—तसाणं थावराणं च सुहुमाणं बायराण य ।
तम्हा गिहसमारम्भं संजओ परिवज्जए ॥
- १०—तहेव भत्तपाणेषु पयण^१ पयावणेषु य ।
पाणभूयदयट्ठाए न पये न पयावए ॥
- ११—जलधन्ननिस्सिया जीवा^२ पुढवीकट्टनिस्सिया^३ ।
हम्मन्ति भत्तपाणेषु तम्हा भिक्खू न पायए ॥
- १२—विसप्ये सव्वओधारे बहुपाणविणासणे ।
नत्थि जोइसमे सत्थे तम्हा जोइं न दीवए ॥
- १३—हिरणं जायरूवं च मणसा वि न पत्थए ।
समलेट्ठुकंचणे भिक्खू विरए कयविक्कए ॥
- १४—किणन्तो कइओ होइ विक्किणन्तो य वाणिओ ।
कयविक्कयम्मि वट्टन्तो भिक्खू न भवइ तारिसो ॥
- १५—भिक्खियव्वं न केयव्वं भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा ।
कयविक्कओ महादोसो भिक्खावत्ती^४ सुहावहा ॥
- १६—समुयाणं उंछ्छमेसिज्जा जहासुत्तमणिन्दियं ।
लाभालाभम्मि संतुट्ठे पिण्डवायं 'चरे मुणी'^५ ॥
- १७—अलोले न रसे गिद्धे जिब्भादन्ते अमुच्छिण्णए ।
न रसट्ठाए भुंजिज्जा जवणट्ठाए महामुणी ॥
- १८—अच्चणं रयणं चेव वन्दणं पूयणं तहा ।
इड्ढीसक्कारसम्माणं मणसा वि न पत्थए ॥

१—पयणेषु (ऋ) ; पयणे य (अ) ।

२—पाणा (अ) ।

३—^०काय^० (उ) ।

४—भिक्खू विली (उ, ऋ) ।

५—गवेसए (वृ० पा०) ।

पणतीसइमं अज्जयणं

- १९—सुक्कभाणं भियाएज्जा अणियाणे अकिचणे ।
 वोसइक्काए विहरेज्जा जाव कालस्स पज्जओ ॥
- २०—निज्जूहिऊण आहारं कालधम्ममे उवट्टिए ।
 जहिऊण^१ माणुसं बोन्दि पहू दुक्खे विमुच्चई ॥
- २१—निम्ममो निरहंकारो वीयरगो अणासवो^२ ।
 संपत्तो केवलं नाणं सासयं परिणिव्वुए ॥
 --त्ति वेमि ॥

*

१—चइऊण (उ, ऋ) ।

२—निरासवे (चू०) ।

छत्तीसइम अज्भयणं

जीवाजीवविभत्ती

उक्खेव-पद

१—जीवाजीवविभत्ति 'सुणेह मे'^१ एगमणा इओ ।
 जं जाणिरुण समणे^२ सम्मं जयइ संजमे ॥
 लोकालोक-पदं

२—जीवा चेव अजीवा य एस लोए वियाहिए ।
 अजीवदेसमागासे अलोए से वियाहिए ॥
 ३—दव्वओ खेत्तओ चेव कालओ भावओ तुहा ।
 परूवणा तेसि भवे जीवाणमजीवाण य ॥
 ४—रूविणो चेवऽरूवी य अजीवा दुविहा भवे ।
 अरूवी दसहा वुत्ता रूविणो वि चउव्विहा ॥
 अरूवि-अजीव-पदं

५—धम्मत्थिकाए तद्देसे तप्पएसे य आहिए ।
 अहम्मे तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए ॥
 ६—आगासे तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए ।
 अद्धासमए चेव अरूवी दसहा भवे ॥
 ७—धम्माधम्मे य दोऽवेए^३ लोगमित्ता वियाहिया ।
 लोगालोगे य आगासे समए समयखेत्तिए ॥
 ८—धम्माधम्मागासा त्तिन्नि वि एए अणाइया ।
 अपज्जवसिया चेव सव्वद्धं तु वियाहिया ॥

१—मे सुणेह (बु०) ।

२—मिक्खू (उ, ऋ, बु०) ; समणे (बु० पा०) ।

३—दोएए (उ) ; दोवे य (ऋ) ।

१—'समए वि सन्तइं पप्प एवमेव'^१ वियाहिए ।
आएसं पप्प साईए सपज्जवसिए वि य ॥

रूवि अजीव-पदं

- १०—खन्धा य खन्धदेसा य तप्पएसा तहेव य ।
परमाणुणो य बोद्धव्वा रूविणो य चउव्विहा ॥
- ११—एगत्तेण पुहत्तेण खन्धा य परमाणुणो ।
लोएगदेसे लोए य भइयव्वा ते उ खेत्तओ ॥
इत्तो कालविभागं तु तेसि वुच्छं चउव्विहं ॥
- १२—संतइं पप्प तेऽणाई अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- १३—असंखकालमुक्कोसं 'एगं समयं जहन्निया'^२ ।
अजीवाण^३ य रूवीणं ठिई एसा वियाहिया ॥
- १४—अणन्तकालमुक्कोसं एगं समयं जहन्नयं ।
अजीवाण^३ य रूवीण अन्तरेयं वियाहियं ॥
- १५—वण्णओ गन्धओ चेव रसओ फासओ तथा ।
संठाणओ य विन्नेओ परिणामो तेसि पंचहा ॥
- १६—वण्णओ परिणया जे उ पंचहा ते पक्कित्तिया ।
किण्हा नीला य लोहिया हालिद्दा सुक्किला तथा ॥
- १७—गन्धओ परिणया जे उ दुविहा ते वियाहिया ।
सुब्भिगन्धपरिणामा दुब्भिगन्धा तहेव य ॥
- १८—रसओ परिणया जे उ पंचहा ते पक्कित्तिया ।
तित्तकडुयकसाया अम्बिला महुरा तथा ॥

१—एमेव सत्तइं पप्प समए वि (वृ० पा०) ।

२—एगो समयो जहन्नय (ऋ), इक्को समयो जहन्निया (उ) ।

३—अजीवाण (उ) ।

- १९—फासओ परिणया जे उ अट्टहा ते पकित्तिया ।
कक्खडा मउया चेव गरुया लहुया तथा ॥
- २०—सीया उण्हा य निद्धा य तथा लुक्खा य आहिया ।
इइ फासपरिणया एए पुगला समुदाहिया ॥
- २१—संठाणपरिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया ।
परिमण्डला 'य वट्टा'^१ तंसा चउरंसमायया ॥
- २२—वण्णओ जे भवे किण्हे भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- २३—वण्णओ जे भवे नीले भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- २४—वण्णओ लोहिए जे उ भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- २५—वण्णओ पीयए जे उ भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- २६—वण्णओ सुक्किले जे उ भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- २७—गन्धओ जे भवे सुब्भी भइए से उ वण्णओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- २८—गन्धओ जे भवे दुब्भी भइए से उ वण्णओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- २९—रसओ तित्तए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

१—वट्टा य (ऋ) ।

- ३०—रसओ कडुए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ३१—रसओ कसाए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ३२—रसओ अम्बिले जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ३३—रसओ महुरए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ३४—फासओ कक्खडे जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ३५—फासओ मउए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ३६—फासओ गुरुए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ३७—फासओ लहुए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ३८—फासओ सीयए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ३९—फासओ उण्हए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ४०—फासओ निद्धए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ४१—फासओ लुक्खए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
 गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

- ४२-रसि-उत्संगो नइए ते उ वग्यो ।
 ग्यो रसो वेव नइए कस्यो वि य ॥
- ४३-संगो नवे वडे नइए ते उ वग्यो ।
 ग्यो रसो वेव नइए कस्यो वि य ॥
- ४४-संगो नवे तते नइए ते उ वग्यो ।
 ग्यो रसो वेव नइए कस्यो वि य ॥
- ४५-संगो य वउरते नइए ते उ वग्यो ।
 ग्यो रसो वेव नइए कस्यो वि य ॥
- ४६-ने आयसंगो नइए ते उ वग्यो ।
 ग्यो रसो वेव नइए कस्यो वि य ॥
- ४७-एता जेवविस्तो समसेय विवाहिया ।
 इतो जेवविस्तो वुञ्जानि जगुञ्जतो ॥

जिह्वं

- ४८-संसारया य सिद्धा य कुविहायेवा विवाहिया ।
 सिद्धायेविहायुता ते वे कित्तयो मुग ॥

निज्जोव्वं

- ४९-इत्थो पुरिसिद्धा य तहेव य नमुत्तया ।
 सल्लो अल्लो य गिहिल्लो तहेव य ॥
- ५०-उत्तोयाहगर य वहननज्जिमाइ य ।
 उद्धं जहे यत्तिरियं य समुद्धन्ति जलन्ति य ॥
- ५१-इत्त वेव नमुत्तुं वीत्तं इत्थियानु य ।
 पुरिसिन्नु य उद्धत्तयं सनएणेण सिग्गई ॥

१-संते ते (कु ७०) :

२-नयजे वेहा सिद्धा (कु ७०) :

३-उ नमुत्तुं (कु) :

- ५२—चत्तारि य गिहिल्लिगे अन्नल्लिगे दसेव य ।
सल्लिगेण य अट्टसयं समएणेगेण सिज्झई ॥
- ५३—उक्कोसोगाहणाए य सिज्झन्ते जुगवं दुवे ।
चत्तारि जहन्ताए जवमज्झऽट्टुत्तरं^१ सयं ॥
- ५४—‘चउरुद्धलोए य दुवे समुद्वे
तओ जले वीसमहे तहेव^२ ।
सयं च अट्टुत्तर तिरियलोए
समएणेगेण उ ‘सिज्झई उ’^३ ॥’^४
- ५५—कहिं पडिहया सिद्धा ? कहिं सिद्धा पइड्डिया ? ।
कहिं वोन्दि चइत्ताणं ? कत्थ गन्तूण सिज्झई ? ॥
- ५६—अलोए पडिहया सिद्धा लोयग्गे य पइड्डिया ।
इहं वोन्दि चइत्ताणं तत्थ गन्तूण सिज्झई ॥
- ५७—वारसहिं जोयणेहिं सव्वट्टस्सुवरिं भवे ।
ईसीपव्वभारनामा उ^५ पुढवी छत्तसंठिया ॥
- ५८—पणयालसयसहस्सा जोयणाणं तु आयया ।-
तावइयं चेव वित्थिण्णा ‘तिगुणो तस्सेव परिरओ’^६ ॥
- ५९—अट्टजोयणवाहल्ला सा मज्झम्मि वियाहिया ।
परिहायन्ती चरिमन्ते मच्छियपत्ता तणुयरी ॥

१—मज्झे अट्टुत्तर (अ) ।

२—तहेव य (अ) ।

३—सिज्झइ थुव (उ, ऋ) ।

४—चउरो उद्धल्लोगमि वीसपहत्त अहे भवे ।

सय अट्टुत्तर तिरिए एण समएण सिज्झइ ॥

दुवे समुद्वे सिज्झत्ति सेस जलेसु ततो जणा ।

एसा इ सिज्झणा मणिया पुव्वभावं पडुच्च उ ॥ (वृ० पा०) ।

५—× (उ, ऋ) ।

६—तिउण साहिय पडिरिय (वृ० पा०) ।

६०—अज्जुणसुवण्णगमई

सा पुढवी निम्मला सहावेणं ।

उत्ताणगच्छत्तगसंठिया य

भणिया जिणवरेहि ॥

६१—संखंककुन्दसंकासा पण्डुरा निम्मला सुहा ।

सीयाए जोयणे तत्तो लोयन्तो उ वियाहिओ ॥

६२—जोयणस्स उ जो तस्स^१ कोसो उवरिमो भवे ।

‘तस्स कोसस्स छब्भाए सिद्धाणोगाहणा भवे’^२ ॥

६३—तत्थ सिद्धा महाभागा लोयगम्मि पइड्डिया^३ ।

भवप्पवंच उम्मुक्का सिद्धि वरगइं गया ॥

६४—उस्सेहो जस्स जो होइ भवम्मि चरिमम्मि उ^४ ।

तिभागहीणा तत्तो य सिद्धाणोगाहणा भवे ॥

६५—एगत्तेण साईया अपज्जवसिया वि य ।

पुहुत्तेण अणाईया अपज्जवसिया वि य ॥

६६—अरूविणो जीवघणा नाणदंसणसन्निया ।

अउलं सुहं संपत्ता उवमा जस्स नत्थि उ ॥

६७—लोएगदेसे^५ ते सव्वे नाणदंसणसन्निया ।

संसारपारनिच्छिन्ना सिद्धि वरगइं गया ॥

संसारत्यजीव-पट

६८—संसारत्था उ जे जीवा दुविहा ते वियाहिया ।

तसा य थावरा चेव थावरा तिविहा तर्हि ॥

१—तत्थ (बृ०) ; तस्स (बृ० पा०) ।

२—कोसस्सवि य जो तत्थ छब्भागो उवरिमो भवे (बृ० पा०) ।

३—य सड्डिया (अ) ।

४—य (ऋ) ।

५—लोएगग^० (बृ० पा०) ।

६९—पुढवी आउजीवा य तहेव य वणस्सई ।
इच्चेए थावरा तिविहा तेसिं भेए सुणेह मे ॥

पुढवि-पदं

७०—दुविहा पुढवीजीवा उ सुहुमा बायरा तथा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए^१ दुहा पुणो ॥

७१—बायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया ।
सण्हा खरा य बोद्धव्वा सण्हा सत्तविहा तर्हि ॥

७२—किण्हा नीला य रुहिरा य^२
हालिद्दा सुक्किला तथा ।
पण्डुपणगमट्टिया
खरा छत्तीसईविहा ॥

७३—पुढवी य सक्करा वालुया य
उवले सिला य लोणूसे ।
'अयतम्बतउय'^३-सीसग-
रुप्पसुवण्णे य वइरे य ॥

७४—हरियाले हिंगुलुए
मणोसिला सासगंजणपवाले ।
अन्भपडलऽन्भवालय
वायरकाए मणिविहाणा ॥

१—एगमेगे (दृ० पा०) ।

२—× (अ) ।

३—अयव त्तओ य (अ) ; अय त्उय त्तम्ब (उ, ऋ) ।

- ७५—गोमेज्जए य स्यगे
अंके फलिहे य लोहियक्खे य ।
मरगयमसारगल्ले
भुयमोयगइन्दनीले य ॥
- ७६—चन्दणरोरुयहंसगढभ
पुलए सोगन्धिए य वोद्धञ्जे ।
चन्दप्पहवेरलिए
जलकन्ते मूरकन्ते य ॥
- ७७—एए खरपुढवीए भेया छत्तीसमाहिया ।
एगविहमणाणत्ता सुहुमा तस्थ वियाहिया ॥
- ७८—सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगढेसे य वायरा !
इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥
- ७९—संतइं पप्पणार्इया^१ अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- ८०—त्रावीससहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउठिईं पुढवीणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया^२ ॥
- ८१—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायठिईं पुढवीणं तं कायं तु अमुंचओ ॥
- ८२—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजडंमि सए काए पुढवीजीवाण अन्तरं ॥
- ८३—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

१—^० तेगाई (अ) ।

२—जहन्नगं (अ) ।

आउ-पदं

- ८४—दुविहा आउजीवा उ सुहुमा बायरा तथा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥
- ८५—बायरा जे उ पज्जत्ता पंचहा ते पकित्तिया ।
सुद्धोदए य उस्से हरतणू महिया हिमे ॥
- ८६—एगविहमणणात्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य बायरा ॥
- ८७—सन्तइं पप्पणाईया^१ अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- ८८—सत्तेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउट्टिई आऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया^२ ॥
- ८९—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ।
कायट्टिई आऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥
- ९०—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजडंमि सए काए आऊजीवाण अन्तरं ॥
- ९१—एएसि वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

वणस्सई-पदं

- ९२—दुविहा वणस्सईजीवा सुहुमा बायरा तथा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए^३ दुहा पुणो ॥
- ९३—बायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया ।
साहारणसरीरा य पत्तेगा य तहेव य ॥

१—^०तेणाई (अ) ।

२—जहन्नाग (अ) ।

३—एवमेव (अ) ।

- १४—'पत्तेगसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया'^१ ।
 रुक्खा गुच्छाय गुम्माय लया वल्ली तणा तथा ॥
- १५—लयावलया^२ पव्वगा^३ कुहुणा
 जलरुहा ओसहीतिणा^४ ।
 हरियकाया य बोद्धवा
 पत्तेया इति आहिया ॥
- १६—साहारणसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया ।
 आलुए मूलए चेव सिंगबेरे तहेव य ॥
- १७—हिरिली सिरिली सिस्सिरिली
 जावई केदकन्दली^५ ।
 पलंदूलसणकन्दे य
 कन्दली य कुडुंबए^६ ॥
- १८—लोहि णीहू य थिहू य कुहगा य तहेव य ।
 कण्हे य वज्जकन्दे य कन्दे सूरणए^७ तथा ॥
- १९—अस्सकणीय बोद्धवा सीहकणी तहेव य ।
 मुसुण्डी य हलिद्दा य ऽणेगहा एवमायओ ॥
- १००—एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
 सुहुमा सव्वलोगम्मि लोणदेसे य न्नायरा ॥

१—बारसविह भेषण पत्तेया उ वियाहिय (बृ० पा०) ।

२—वलया य (अ) ।

३—पव्वया (बृ०) ; पव्वगा (बृ० पा०) ।

४—^० तथा (अ, आ, इ, उ, सु) ।

५—केलि^० (उ) ।

६—कुडुव्वए (उ, ऋ) ; कुहव्वए (स) ।

७—पुसूरणे (उ) ।

- १०१—संतइं पप्पण्णार्इया^१ अपज्जवंसिया वि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- १०२—दस चेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
 वणप्फईण^२ आउं तु अन्तोमुहुत्तं जहन्नगं ॥
- १०३—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 कायठिईं पणगाणं तं कायं तु अमुंचओ ॥
- १०४—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 विज्जंमि सए काए पणगजीवाण अन्तरं ॥
- १०५—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥
- १०६—इच्चेए थावरा तिविहा समासेण वियाहिया ।
 इत्तो उ तसे तिविहे वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥
- १०७—तेऊ वाऊ य बोद्धव्वा उराला य तसा तहा ।
 इच्चेए तसा तिविहा तेसिं भेए सुणेह मे ॥
- तेउ-पदं
- १०८—दुविहा तेउजीवा उ सुहुमा बायरा तहा ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥
- १०९—बायरा जे उ पज्जत्ता णेगहा ते वियाहिया ।
 इंगाले मुम्मुरे अगणी अच्चिं जाला तहेव य ॥
- ११०—उक्का विज्जू य बोद्धव्वा णेगहा एवमायओ ।
 एगविहमणाणत्ता सुहुमा ते वियाहिया ॥
- १११—सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे^३ य बायरा ।
 इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥

१—० तेणाह (अ) ।

२—वणस्सईण (उ, ऋ, वृ०) ; वण्णप्फईण (वृ० पा०) ।

३—एगदेसे (अ) ।

- ११२—संतईं पप्पण्णाईया अपज्जवसिया वि यं ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि यं ॥
- ११३—तिण्णोव अहोरत्ता उक्कोसेण वियाहिया ।
आउट्टिईं तेऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- ११४—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायट्टिईं तेऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥
- ११५—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजडंमि सए काए तेउजीवाण अन्तरं ॥
- ११६—एएसिं वण्णओ चोव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

वाउ-पदं

- ११७—दुविहा वाउजीवा उ सुहुमा वायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥
- ११८—बायरा जे उ पज्जत्ता पंचहा ते पकित्तिया ।
उक्कलियामण्डलिया- घणगुंजा सुद्धवाया य ॥
- ११९—संवट्टगवाते य ऽणेगविहा^१ एवमायओ ।
एगविहमणाणत्ता सुहुमा ते वियाहिया ॥
- १२०—सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे^२ य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्चं चउव्विहं ॥
- १२१—संतईं पप्पण्णाईया अपज्जवसिया वि यं ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि यं ॥
- १२२—तिण्णोव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउट्टिईं वाऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१—ऽणेगहा (उ, ऋ) ।

२—एगदेसे (अ) ।

१२३—असंखकालमुक्कोसं : अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।

कायद्धिई वाऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥

१२४—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।

त्रिजडमि सए काए वाउजीवाण अन्तरं ॥

१२५—एएसि वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।

संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

१२६—ओराला तसा जे उ चउहा^१ ते पकित्तिया ।

बेइन्दियतेइन्दिय- चउरोपंचिन्दिया चेव ॥

बेइन्दिय-पदं

१२७—बेइन्दिया उ^२ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया ।

पज्जत्तमपज्जत्ता तेसि भेए सुणेह मे ॥

१२८—किमिणो सोमंगला चेव अलसा माइवाहया ।

वासीमुहा य सिप्पीया^३ संखा संखणगा^४ तथा ॥

१२९—पल्लोयाणुल्लया^५ चेव, तहेव य वराडगा ।

जलूगा जालगा चेव चन्दणा य तहेव य ॥

१३०—इइ बेइन्दिया एए णेगहा एवमायओ ।

लोगेगंसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥^६

१३१—संतइं पप्पणाईया अपज्जवसिया वि य ।

ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१—चउव्विहा (ऋ) ।

२—य (अं, ऋ) ।

३—सप्पीया (आ, ई, ऋ) ।

४—सखलगा (अ) ; संखाणगा (उ) ।

५—गल्लोया^० (आ) ; अल्लोया^० (ऋ) ।

६—इस श्लोक के वाद इतना और है :—

एतो काल विभाग तु तेसि वुञ्च चउव्विहं ॥ (उ) ।

- १३२—वासाइं वारसे व उ उक्कोसेण वियाहिया ।
 वेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- १३३—संखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं^१ ।
 वेइन्दियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ ॥
- १३४—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 वेइन्दियजीवाणं अन्तरेयं^२ वियाहियं ॥
- १३५—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

तेइन्दिय-पदं

- १३६—तेइन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥
- १३७—कुन्थुपिवील्लिउड्डंसा उक्कलुद्देहिया तथा ।
 तणहारकड्डहारा मालुगा पत्तहारगा ॥
- १३८—कप्पासऽट्ठिर्मिजा य तिंदुगा तउसमिजगा ।
 सदावरी य गुम्मी य बोद्धव्वा इन्दकाइया ॥
- १३९—इन्दगोवगमाईया णेगहा एवमायओ ।
 लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥
- १४०—संतंइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- १४१—एगूणवण्णऽहोरत्ता^३ उक्कोसेण वियाहिया ।
 तेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१—जहन्निया (अ) ।

२—^० णं (अ) ।

३—एगूणवण्ण^० (उ, ऋ) ।

- १४२—संखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं^१ ।
तेइन्दियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ ॥
- १४३—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
तेइन्दियजीवाणं अन्तरेयं वियाहियं ॥
- १४४—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥
चउरिन्दिय-पदं
- १४५—चउरिन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पक्कित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥
- १४६—अन्धिया पोत्तिया चेव मच्छिया मसगा तथा ।
भमरे कीडपयंगे य ढिकुणे कुंकुणे तथा ॥
- १४७—कुक्कुडे सिंगिरीडी य नन्दावत्ते य विच्छिए ।
डोले भिंगारी^२ य विरली अच्छिवेहए ॥
- १४८—अच्छिले माहए^३ अच्छि-
रोडए विचित्ते चित्तपत्तए ।
ओहिंजलिया जलकारी य
नीया तन्तवगावियं^४ ॥
- १४९—इइ चउरिन्दिया एए ऽणेगहा एवमायओ- ।
लोगस्स एग देसम्मि ते सव्वे परिकित्तिया ॥^५

१—जहन्निया (अ) ।

२—भिंगिरीडी (उ, ऋ, स) ।

३—साहिए (अ) ।

४—तवगाइया (उ, ऋ) ।

५—इस श्लोक के पश्चात्-इतना और हे :-

एत्तो काल विभाग तु तेसिं वुच्च चउव्विह ॥ (उ) ।

- १५०—संतइं पप्पण्णाईयां अपज्जवसिया वि य १
 ठिइं पडुच्च साईयां सपज्जवसिया वि य ॥
- १५१—'छच्चेव य' १ मासा उ उक्कोसेण वियाहियां ।
 चउरिन्दियआउठिई २ अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- १५२—संखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ३ ।
 चउरिन्दियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ ॥
- १५३—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ४ ।
 'विजठमि सए काए' ५ अन्तरेयं वियाहियं ॥
- १५४—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
 'संठाणादेसओ वावि' ६ विहाणाइं सहस्ससो ॥

पच्चिन्दिय-पदं

- १५५—पच्चिन्दिया उ जे जीवा चउव्विहा ते वियाहिया ।
 नेरइयतिरिक्खा य मणुया देवा य आहिया ॥

नेरइय-पदं

- १५६—नेरइया सत्तविहा पुंढवीसु सत्तसू भवे ।
 रयणाभ सक्कराभा वालुयाभा य आहिया ॥
- १५७—पंकाभा धूमाभा तमा तमतमा तथा ।
 इइ नेरइया एए सत्तहा परिकित्तिया ॥
- १५८—लोगस्स एगदेसम्मि ते सब्बे उ वियाहिया ।
 एत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥

१—छच्चेविउ (अ) ।

२—चउरिन्दिया य आउठिई (अ) ।

३—जहन्निया (अ) ।

४—जहन्निया (अ) ।

५—चउरिन्दियजीवाणं (उ) ।

६—संठाण भेयओ या वि (अ) ।

- १५९—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- १६०—सागरोवममेगं तु उक्कोसेण वियाहिया ।
पढमाए जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥
- १६१—तिण्णेव सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
दोच्चाए जहन्नेणं एगं तु सागरोवमं ॥
- १६२—सत्तेव सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
तइयाए जहन्नेणं तिण्णेव उ सागरोवमा ॥
- १६३—दस सागरोवमा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
चउत्थीए जहन्नेणं सत्तेव उ सागरोवमा ॥
- १६४—सत्तरस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
पंचमाए जहन्नेणं दस चेव उ सागरोवमा ॥
- १६५—बावीस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
छट्ठीए जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमा ॥
- १६६—तेत्तीस सागरा^१ ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
सत्तमाए जहन्नेणं बावीसं सागरोवमा ॥
- १६७—जा चेव उ आउठिई नेरइयाण वियाहिया ।
सा तेसिं कायठिई जहन्नुक्कोसिया भवे ॥
- १६८—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजडंमि सए काए नेरइयाणं तु अन्तरं ॥
- १६९—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
'संठाणादेसओ वावि'^२ विहाणाइं सहस्ससो ॥

१—सागराइ (ऋ) ।

२—सठाण भेयओ या वि (अ) ।

तिरिक्खजोगिय-पदं

१७०—पंचिन्दियतिरिक्खाओ दुविहा ते वियाहिया ।

सम्मुच्छिमतिरिक्खाओ^१गन्भवक्कन्तिया तथा ॥

१७१—दुविहावि ते भवे तिविहा

जलयरा थलयरा तथा ।

खहयरा य बोद्धव्वा

तेसि भेए सुणेह मे ॥

१७२—मच्छा य कच्छभा य गाहा य मगरा तथा ।

सुंसुमारा य बोद्धव्वा पंचहा^२ जलयराहिया ॥

१७३—लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ।

एत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसि चउव्विहं ॥

१७४—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।

ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१७५—एगा य पुव्वकोडीओ उक्कोसेण वियाहिया ।

आउट्टिई जलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१७६—पुव्वकोडीपुहत्तं तु उक्कोसेण वियाहिया ।

कायट्टिई जलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१७७—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।

विजढंमि सए काए जलयराणं तु अन्तरं ॥

१७८—‘एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रसफासओ ।

संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥’^३

१—^० तिरिक्खा य (उ) ।

२—पचविहा (अ) ।

३—X (अ, ऋ) ।

- १७९—चउप्पया य परिसप्पा द्रुविहा थलयरा भवे ।
चउप्पया चउविहा ते मे कित्तयओ सुण ॥
- १८०—एगखुरा दुखुरा चेव गण्डीपयसणप्पया ।
हयमाडगोणमाइ- गयमाइसीहमाइणो ॥
- १८१—भुओरगपरिसप्पा य परिसप्पा द्रुविहा भवे ।
गोहाई अहिमाई य एक्केक्का णेगहा भवे ॥
- १८२—लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ।
एत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥
- १८३—संतड पप्पणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिडं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- १८४—पलिओवमाउ^१ तिण्णिउ उक्कोसेण वियाहिया ।
आउट्टिई थलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- १८५—पलिओवमाउ तिण्णिउ^२ उक्कोसेण तु साहिया ।
पुव्वकोडीपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- १८६—कायट्टिई थलयराण अन्तरं तेसिमं भवे ।
कालमणन्तमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥
- १८७—एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाडं सहस्ससो ॥
- १८८—चम्मे उ लोमपक्खी य तडया समुग्गपक्खिया ।
विययपक्खी य वोद्धव्वा पक्खिणो य चउव्विहा ॥

१—०३ (उ) ।

२—य (अ) ।

- १८९—लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ।
इत्तो कालविभागं तु वुच्चं तेसिं चउव्विहं ॥^१
- १९०—संतइं पप्पणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- १९१—पलिओवमस्स भागो असंखेज्जइमो भवे ।
आउट्ठिई खह्यराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- १९२—असंखभागो पलियस्स उक्कोसेण उ साहियो ।
पुन्वकोडीपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- १९३—कायठिई खह्यराणं अन्तरं तेसिमं भवे ।
कालं अणन्तमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥
- १९४—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
'संठाणादेसओ वावि'^२ विहाणाइं सहस्सओ ॥

मणुय-पद

- १९५—मणुया दुविहभेया उ ते मे कित्तयओ सुण ।
संमुच्छिमा य मणुया गढभवक्कन्तिया तहा ॥

१—श्लोक क्रमाक १८७ से १८९ के स्थान पर निम्न श्लोक है—

विजडमि सए काए थलयराणं तु अतरं ।
चम्मेय लोप पक्खीय तइया समुग पक्खिया ॥
वित्ततपक्खी उ (य) वोधव्वा पक्खिणो उ चउव्विहा ।
लोएग देसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥ (अ, ऋ) ।
विजडमि सए काए थलयराणं तु अतरं ।
एएसिं वण्णओ चेव गधओ रसफासओ ॥
सठाण देसओ वावि विहाणाइ सहस्सओ ।
चम्मे उ लोम पक्खीअ तइया समुग पक्खिया ॥
विययपक्खी य वोधव्वा पक्खिणो य चउव्विहा ।
लोएग देसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥ (उ) ।

२—संठाण मेयओ या वि (अ) ।

- १९६—गब्भवकन्तिया जे उ तिविहा ते वियाहिया ।
 अकम्मकम्मभूमा य अन्तरदीवया तथा ॥
- १९७—‘पन्नरस तीसइ विहा’^१ भेया अट्टवीसइं ।
 संखा उ कमसो तेसिं इइ एसा वियाहिया ॥
- १९८—संमुच्छिमाण एसेव भेओ होइ आहियो ।
 लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे वि^२ वियाहिया ॥
- १९९—संतइं पप्पणाईया अपज्जवसिया वि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- २००—पलिओवमाइं तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया ।
 आउट्टिई मणुयाणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- २०१—पलिओवमाइं तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया^३ ।
 पुव्वकोडीपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया^४ ॥
- २०२—कायट्टिई मणुयाणं अन्तरं तेसिमं भवे ।
 अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥
- २०३—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
 ‘संठाणादेसओ वावि’^५ विहाणाइं सहस्ससो ॥

देव-पदं

- २०४—देवा चउव्विहा वुत्ता ते मे कित्तयओ सुण ।
 भोमिज्जवाणमन्तर- जोइसवेमाणिया तथा ॥
- २०५—दसहा उ भवणवासी अट्टहा वणचारिणो ।
 पंचविहा जोइसिया दुविहा वेमाणिया तथा ॥

१—तीस पन्नरस विहा (वृ० पा०) ।

२—य (अ) ; × (उ) ।

३—वु साहिया (ऋ) ।

४—जहन्नय (अ) ।

५—संठाण भेयओ या वि (अ) ।

२०६-असुरा नागसुवर्णा विज्जू अग्नी य आहिया ।
दोदोदहिदिसा वाया थणिया भवणवासिणो ॥

२०७-पिसायभूय जक्खा य
रक्खसा किन्नरा य किंपुरिसा ।
महोरगा य गन्धव्वा
अट्टविहा वाणमन्तरा ॥

२०८-चन्द्रा मूरा य नक्खत्ता गहा तारागणा तथा ।
दिसाविचारिणो^१ चैव पंचहा^२ जोइसालया ॥

२०९-वेमाणिया उ जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।
कप्पोवगा य वोद्धव्वा कप्पाईया तहेव य ॥

२१०-कप्पोवगा वारसहा सोहम्मोसाणगा तथा ।
सणकुमारमाहिन्दा वन्धलोगा य लन्तगा ॥

२११-महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया तथा ।
आरणा अच्चुया चैव इइ कप्पोवगा सुरा ॥

२१२-कप्पाईया उ^३ जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।
गेविज्जाऽणुत्तरा चैव गेविज्जा नवविहा तर्हि^४ ॥

२१३-हेट्टिमाहेट्टिमा चैव हेट्टिमामज्झिमा तथा ।
हेट्टिमा उवरिमा चैव मज्झिमाहेट्टिमा तथा ॥

२१४-मज्झिमामज्झिमा चैव मज्झिमाउवरिमा तथा ।
उवरिमाहेट्टिमा चैव उवरिमामज्झिमा तथा ॥

१-ठिया^० (आ, उ, ऋ) ।

२-पंचविहा (उ) ।

३-य (ऋ) ।

४-तहा (ऋ) ।

- २१५-उवरिमाउवरिमा चैव इय गेविज्जगा सुरा ।
विजया वेजयन्ता य^१ जयन्ता अपराजिया ॥
- २१६-सव्वट्टसिद्धगा^२ चैव पंचहाऽणुत्तरा सुरा ।
इइ वेमाणिया देवा^३ गेगहा एवमायओ ॥
- २१७-लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे परिकित्तिया ।
इत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसि चउव्विहं ॥
- २१८-संतइं पप्पाऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिईं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- २१९-साहियं सागरं एक्कं उक्कोसेण ठिई भवे ।
भोमेज्जाणं जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥
- २२०-पलिओवममेगं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
वन्तराणं जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥
- २२१-पलिओवमं एगं तु वासलक्खेण साहियं ।
पलिओवमऽट्टभागो जोइसेसु जहन्निया ॥
- २२२-दो चैव सागराइं उक्कोसेण वियाहिया^४ ।
सोहम्ममि जहन्नेणं एगं च पलिओवमं ॥
- २२३-सागरा साहिया दुन्नि उक्कोसेण वियाहिया^५ ।
ईसाणम्मि जहन्नेणं साहियं पलिओवमं ॥
- २२४-सागराणि य सत्तेव उक्कोसेण ठिई भवे ।
सणकुमारे जहन्नेणं दुन्नि ऊ सागरोवमा ॥

१-× (अ) ।

२-° सिद्धिगा (अ) ।

३-एए (उ, ऋ) ।

४-ठिई भवे (आ, स) ।

५-ठिई भवे (आ, स) ।

- २२५—साहिया सागरा सत्त उक्कोसेण ठिई भवे ।
 माहिन्दम्मि जहन्नेणं साहिया दुन्नि सागरा ॥
- २२६—दस चेव सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 बम्भलोए जहन्नेणं सत्त ऊ सागरोवमा ॥
- २२७—चउद्दस^१ सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 लन्तगम्मि जहन्नेणं दस ऊ सागरोवमा ॥
- २२८—सत्तरस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 महासुक्के जहन्नेणं चउद्दस सागरोवमा ॥
- २२९—अट्टारस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 सहस्सारे जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमा ॥
- २३०—सागरा अउणवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
 आणयम्मि जहन्नेणं अट्टारस सागरोवमा ॥
- २३१—वीसं तु सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 पाणयम्मि जहन्नेणं सागरा अउणवीसई ॥
- २३२—सागरा इक्कीवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
 आरणम्मि जहन्नेणं वीसई सागरोवमा ॥
- २३३—बावीसं सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 अच्चुयम्मि जहन्नेणं सागरा इक्कीवीसई ॥
- २३४—तेवीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 पढमम्मि जहन्नेणं बावीसं सागरोवमा ॥
- २३५—चउवीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 बिइयम्मि जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमा ॥
- २३६—पणवीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 तइयम्मि जहन्नेणं चउवीसं सागरोवमा ॥

- २३७—छ्वीस सागराई उक्कोसेण ठिई भवे ।
 चउत्थम्मि जहन्नेणं सागरा पणुवीसई ॥
- २३८—सागरा सत्तवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
 पंचमम्मि जहन्नेणं सागरा उ छ्वीसई ॥
- २३९—सागरा अट्टवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
 छट्ठम्मि जहन्नेणं सागरा सत्तवीसई ॥
- २४०—सागरा अउणतीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
 सत्तमम्मि जहन्नेणं सागरा अट्टवीसई ॥
- २४१—तीसं तु सागराई उक्कोसेण ठिई भवे ।
 अट्टमम्मि जहन्नेणं सागरा अउणतीसई ॥
- २४२—सागरा इक्कीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
 नवमम्मि जहन्नेणं तीसई सागरोवमा ॥
- २४३—तेत्तीस सागराउ उक्कोसेण ठिई भवे ।
 चउसुं पि विजयाईसुं जहन्नेणेक्कीसई^१ ॥
- २४४—अजहन्मणुक्कोसा^२ तेत्तीसं सागरोवमा ।
 महाविमाण सव्वट्ठे ठिई एसा वियाहिया ॥
- २४५—जा चव उ^३ आउठिई देवाणं तु वियाहिया ।
 सा तेसिं कायठिई जहन्नुक्कोसिया^४ भवे ॥
- २४६—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 विजढंमि सए काए देवाणं हुज्ज अन्तरं ॥^५

१—जहन्ना इक्कीसई (उ, ऋ) ।

२—^० मणुक्कोसं (अ, ऋ) ।

३—य (अ) ।

४—जहन्नसु^० (ऋ, इ०) ।

५—इस श्लोक के बाद दो श्लोक और हैं :-

अणत्तकालमुक्कोसं वासपुहत्तं जहन्नगं ।

आणयादीण-क्कप्पाणं गेविज्जाणं तु अन्तरं ॥

सस्सिज्जसागरक्कोसं वासपुहत्तं जहन्नगं ।

अणुत्तराण देवाणं अन्तरं तु वियाहियं ॥ (उ) ।

२४७—एएसि वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।

‘संठाणादेसओवावि’^१ विहाणाइं सहस्सओ ॥

२४८—संसारत्था य सिद्धा य इइ जीवा वियाहिया ।

रूविणो चेव ऽरूवी य अजीवा दुविहा वि य ॥

२४९—इइ जीवमजीवे य सोच्चा सद्वहिज्जण य ।

सव्वनयाण अणुमए रमेज्जा संजमे मुणी ॥^२

सलेहणा-पदं

२५०—तओ बहूणि वासाणि सामण्णमणुपालिया ।

इमेण कमजोगेण अप्पाणं संलिहे मुणी ॥

२५१—बारसेव

उ

वासाइं

संलेहुक्कोसिया^३ भवे ।

संवच्छरं

मज्झमिया^४

छम्मासा^५ य जहन्निया^६ ॥

२५२—पढमे वासचउक्कम्मि विगईंनिज्जूहणं^७ करे ।

बिइए वासचउक्कम्मि विचित्तं तु तवं चरे ॥

२५३—एगन्तरमायामं कट्टु संवच्छरे दुवे ।

तओ संवच्छरद्धं तु नाइविगिट्ठं तवं चरे ॥

१—सठाण मेयओ या वि (अ) ।

२—श्लोक क्रमाक २४८, २४९ के स्थान पर चूर्णि मे निम्न दो श्लोक हैं :—

जीवमजीवे एते णच्चा सद्वहिज्जण य ।

सव्वन्नसमतमी जएज्जा सजमे विदू ॥

पसत्थसज्जाणोवगए कालं किच्चा ण सजए ।

सिद्धे वा सासए भवति देवे वावि महच्छिदए ॥

३—सलेहुक्कोसतो (बृ० पा०) ।

४—मज्झमतो (बृ० पा०), मज्झमिया (ऋ) ।

५—छम्मासे (अ) ।

६—जहन्नतो (बृ० पा०) ।

७—वित्ति^० (बृ०), विगईं^० (बृ० पा०) ।

२५४—‘तओ संवच्छरद्धं तु विगिद्धं तु तवं चरे ।

परिमियं चैव आयामं तंमि संवच्छरे करे ॥’^१

२५५—कोडीसहियमायामं कट्टु संवच्छरे मुणी ।

‘मासद्धमासिएणं तु आहारेण’ तवं चरे ॥

२५६—कन्दप्पमाभिओगं^३

किन्विसियं मोहमासुरत्त च ।

एयाओ

दुग्ईओ

मरणम्मि विराहिया होन्ति ॥

भावणा-पद

२५७—मिच्छादंसणरत्ता सनियाणा हु हिंसगा ।

इय जे मरन्ति जीवा तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥

२५८—सम्मदंसणरत्ता

अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा ।

इय जे मरन्ति जीवा

सुल्लहा तेसिं भवे वोही ॥

२५९—मिच्छादंसणरत्ता

सनियाणा कण्हलेसमोगाढा ।

इय जे मरन्ति जीवा

तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥

१—परिमियं चैव आयामं गुणुकस्स मुणी चरे ।

तत्तो संवच्छरद्धणं विगिद्धं तु तवं चरे ॥ (वृ० पा०) ।

२—समणं (वृ० पा०) ।

३—कदप्पमाभिओगं च (अ) ।

- २६०—जिणवयणे अणुरत्ता
जिणवयणं जे करेन्ति भावेण ।
अमला असंकिलिद्धा
ते होन्ति परित्तसंसारी ॥
- २६१—बालमरणाणि बहुसो
अकाममरणाणि चेव य बहूणि^१ ।
मरिहन्ति^२ ते वराया
जिणवयणं जे न जाणन्ति ॥
- २६२—बहुआगमविन्नाणा
समाहिउप्पायगा^३ य गुणगाही ।
एएण कारणेण
अरिहा आलोयणं सोउं ॥
- २६३—कन्दप्पकोक्कुइयाइं^४ तह
सीलसहावहासविगहार्हिं^५ ।
विम्हावेन्तो य परं
कन्दप्पं भावणं कुणइ ॥
- २६४—मन्ताजोगं^६ काउं
भूईकम्मं च जे पउंजन्ति ।
सायरसइडिढहेउं
अभिओगं भावणं कुणइ ॥

१—बहूयाणि (इ, उ, ऋ, स) ।

२—मरहंति (उ) ; मरिहति (ऋ) ।

३—^०मुपायगा (अ) ।४—^०कोक्कुयाइ (वृ०, सु०) ।५—^०हसण (वृ०, सु) ।

६—मंतं (अ) ।

- २६५—नाणस्त केवलीणं
 धम्मायरियस्त संघसाहूणं ।
 माई अवण्णवाई
 किब्बिसियं भावणं कुणइ ॥
- २६६—अणुबद्धरोसपसरो
 तह य निमित्तंमि ह्णोइ पडिसेवि ।
 एएहि कारणेहि
 आसुरियं भावणं कुणइ ॥
- २६७—सत्थग्गहणं विसभक्खणं च
 जलणं च जलप्पवेसो य ।
 अणायारभण्डसेवा
 जम्मणमरणाणि बन्धन्ति ॥
 निक्खेव-पदं
- २६८—इइ पाउकरे बुद्धे नायए परिनिव्वुए ।
 छत्तीसं उत्तरज्झाए भवसिद्धीयसंमए^१ ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

परिशिष्ट-१
दसवेआलिय शब्दसूची

10
11
12
13

दसवेआलिय शब्द-सूची

[१—अव्यय और सर्वनाम के साक्ष्य-स्थल का निर्देश प्रायः एक बार किया गया है ।

२—रूपान्तरों को एक साथ लिया है । जैसे—लोअ(ग, य), चंद(न्द) ।

३—ताराकित शब्द धातुएँ हैं । उनके रूप उनके नीचे निर्देशचिह्न (ढैश) के बाद है ।

४—संस्कृत छाया केवल समान शब्दों की ही दी गई है ।]

| अ | अ | अ | अ | अ | अ |
|---------------|-------|---------|----------|-------|--------|
| अ | १६(४) | १ | अउल | ७ | ४३ |
| अइउकस | ५(२) | ४२ | | ६(३) | १५ |
| अइकमित्तु | ५(२) | ११ | अगोमय | ६(३) | ६,७ |
| अइकम्म | ५(२) | २५ | अंकुस | २ | १० |
| अइदूर | ५(१) | २३ | | १ चू० | सू० १ |
| अइभूमि | ५(१) | २४ | अंग | ८ | ५७ |
| अइयार | ५(१) | ८६ | | १ चू० | १५ |
| अइलाम | ६(३) | ५ | अंगुलिया | ४ | सू० १८ |
| अइवत्त * | | | अंजग | ३ | ६ |
| -अइवत्ताए | ६(२) | १६ | | ५(१) | ३३ |
| अइवाय * | | | अंजली | ६(२) | १७ |
| -अइवाएज्जा | ४ | सू० ११ | अंड | ८ | १५ |
| -अइवायावेज्जा | ४ | सू० ११ | अंडय | ४ | सू० ६ |
| अइवायत * | | | अंतरा | ८ | ४६ |
| -अइवायते | ४ | सू० ११ | अंतलिक्ख | ७ | ५३ |
| अइहील * | | | अतिय | ८ | ४५ |
| -अइहीलेज्जा | ५(१) | ६६ | | ६(१) | १२ |
| अईअ | ७ | ८ से १० | अंधगवण्ह | २ | ८ |

१—शब्द के सामने दी हुई पहली सख्या अध्ययन और अध्ययन-सख्या के बाद कोष्ठगत सख्या उद्देश्य का द्योतन करती है । वाद की सख्या श्लोक की द्योतक है । 'सू०' सूत्र के लिए प्रयुक्त है । 'चू०' चूलिका का संकेत है ।

| | | | | | |
|------------|-------|---|--------------|-------|--------|
| अंब | ७ | ३३ | अक्खोड* | | |
| अंबिल | ५(१) | ६७ | -अक्खोडेज्जा | ४ | सू० १६ |
| अक्कास | ७ | ३ | अक्खोडत | ४ | सू० १६ |
| अक्कप्प | ५(१) | ४४ | अक्खडफुडिय | ६ | ६ |
| अक्कप्पिय | ५(१) | २७, ४१, ४३, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८, ६०, ६२, ६४ | अगांघण | २ | ६ |
| | ५(२) | १५, १७ | अगणि | ४ | सू० २० |
| | ६ | ४७ | | ८ | २, ८ |
| अकाम | ५(१) | ८० | अगारि | ६ | ५७ |
| अकाल | ५(२) | ४, ५ | अगाह | ७ | ३६ |
| अकिचण | ६ | ६८ | अगिद्ध | १० | १६ |
| | ८ | ६३ | अगुण | ५(२) | ४४ |
| अकित्ति | १ चू० | १३ | | ६(३) | ११ |
| अकेज्ज | ७ | ४५ | अगुणप्पेहि | ५(२) | ४१ |
| अकोउहल्ल | ६(३) | १० | अगुत्ति | ६ | ५८ |
| | १० | १३ | अग्ग | ५(१) | २ |
| अकोविय | ६(२) | २२ | | ६(१) | ८, ९ |
| अक्कम* | | | अग्गवीय | ४ | सू० ८ |
| -अक्कमे | ५(१) | ७ | अग्गला | ५(२) | ६ |
| अक्कुकुट्ट | १० | १३ | | ७ | २७ |
| अक्कुकुहअ | ६(३) | १० | अग्गि | ६(३) | १ |
| अक्कोस | १० | ११ | | १ चू० | १२ |
| अक्खाउं | ८ | २० | अचक्खुविसअ | ५(१) | २० |
| अक्खाय | ४ | सू० १ से ८ | अचक्खुस | ६ | २७, ३० |
| | ६(४) | सू० १ | अचक्खुस | ६ | ४१, ४४ |
| | | | अचक्खुस | ८ | २६ |

| | | |
|--------------|-------|------------|
| अचित्त | ५(१) | ८१, ८६ |
| | ६ | १३ |
| अचित्तमत | ४ | सू० १३, १५ |
| अचित्त (दि०) | ५(१) | १७ |
| | ७ | ४३ |
| अच्चविले | ५(१) | ७८, ७९ |
| अच्चि | ४ | सू० २० |
| | ८ | ८ |
| अच्चिमालि | ९(१) | १४ |
| अच्चणजोय | ८ | ३ |
| अच्चद | २ | २ |
| अच्चि | ८ | २० |
| अजय | ४ | १ से ६ |
| अजाइया | ५(१) | १८ |
| | ६ | १३ |
| अजाण | ६ | ९ |
| | ८ | ३१ |
| अजीव | ४ | १२ से १४ |
| | ५(१) | ७७ |
| अज्ज (आर्य) | ६ | ५३ |
| अज्ज (अद्य) | १ चू० | ९ |
| अज्जपय | १० | २० |
| अज्जय | ७ | १८ |
| अज्जव | ६ | ६७ |
| अज्जवभाव | ८ | ३८ |
| अज्जियां | ७ | १५ |

| | | |
|-------------|-------|--------------|
| अज्जप्परय | १० | १५ |
| अज्जयण | ४ | सू० १ से ३ |
| अज्जाइयव्व | ९(४) | सू० ५ |
| अज्जोयर | ५(१) | ५५ |
| अट्ट (अर्थ) | ३ | ४, १३ |
| | ४ | सू० १७ |
| | ५(१) | ३०, ४०, ४७, |
| | | ४९, ५१, ५३, |
| | | ५६, ६५, ६७, |
| | | ७८, ९४, ९७ |
| | ६ | ११, १९, ३४ |
| | | ५२, ५५, ६३ |
| | ७ | ४, ७, ८, १३, |
| | | ४०, ४६ |
| | ८ | ४२, ५१ |
| | ९(२) | १३ |
| | ९(३) | २, ४ |
| | ९(४) | सू० ६, ७ |
| | १० | ८ |
| अट्ठ (अष्ट) | ६ | ७ |
| | ८ | १३, १४ |
| अट्ठम | ८ | १५ |
| अट्ठया | ९(४) | सू० ६ |
| अट्ठारस | १ चू० | सू० १ |
| अट्ठारसम | १ चू० | सू० १ |
| अट्ठावय | ४ | ३ |

| | | |
|--------------|-------|--------|
| अट्ठ्य | ५(१) | ८४ |
| अट्ठ्यम्प | २ | ६ |
| अणंतनाण | ६(१) | ११ |
| अणंतहियकामय | ६(२) | १६ |
| अणगारिया | ४ | १८, १९ |
| अणज्ज | १ चू० | १ |
| अणभिज्जिम्य | १ चू० | १४ |
| अणलस | ८ | ४२ |
| अणवज्ज | ७ | ३, ४६ |
| | १ चू० | सू० १ |
| अणाइण्ण(न्न) | ३ | १, १० |
| | ७ | २ |
| अणाउल | ५(१) | १३ |
| अणागय | ७ | ८, ९ |
| | २ चू० | १३ |
| अणाबाह | ६(१) | १० |
| अणायण | ५(१) | १० |
| अणायरिय | ६ | ५३ |
| अणायार | ६ | ५६ |
| | ८ | ३२ |
| अणासा | ६(३) | ६ |
| अणिण्यवास | २ चू० | ५ |
| अणिग्गहीय | ८ | ३९ |
| अणिन्न | ८ | ५८ |
| | १ चू० | सू० १ |
| अणिमिस | ५(१) | ७३ |

| | | |
|--------------|-------|--------|
| अणिसिसय | ७ | ५७ |
| अणिह | १० | १३ |
| अणु | ४ सू० | १३, १५ |
| अणुगय | ६ | ६८ |
| अणुग्गय | ८ | २८ |
| अणुग्गह | ५(१) | ६४ |
| अणुच्चिट्ठ * | | |
| -अणुच्चिट्ठई | ५(२) | ३० |
| अणुजाण * | | |
| -अणुजाणति | ६ | १४ |
| अणुत्तर | ४ | १६, २० |
| | ८ | ४२ |
| | ६(१) | १६, १७ |
| अणुदिसा | ६ | ३३ |
| अणुन्नय | ५(१) | १३ |
| अणुन्नविय | ५(१) | १६ |
| अणुन्नवेत्तु | ५(१) | ८३ |
| अणुपाल * | | |
| -अणुपालए | ६ | ४६ |
| -अणुपालेज्जा | ८ | ६० |
| अणुपासमाण | २ चू० | १३ |
| अणुप्पत्त | ३ | १५ |
| अणुफास | ६ | १८ |
| अणुबंधि | ६(३) | ७ |
| अणुमाय | ५(२) | ४९ |
| | ८ | २४ |
| अणुमोयणी | ७ | ५४ |

दसवेआलिय शब्द-सूची

५

| | | |
|---------------|-------|------------|
| अणुविग | ५(१) | २,६० |
| | ८ | ४८ |
| अणुवीड | ७ | ४४,५५ |
| अणुसास * | | |
| -अणुसासयंति | ६(१) | १३ |
| अणुसासण | ६(४) | २ |
| अणुसासिज्जत | ६(४) | सू० ४ |
| अणुसोय | २ चू० | २,३ |
| अणुस्तिन्न | ५(२) | २१ |
| अणेग | ४ | सू० ४ से ६ |
| | ५(२) | ४३ |
| | ६(१) | १७ |
| अणोहाडय | १ चू० | सू० १ |
| अत्तिणिण | ८ | २६ |
| | ६(४) | ५ |
| अत्त | ४ | सू० १७ |
| | ८ | ३० |
| | १० | ५, १८ |
| अत्तकम्म | ५(२) | ३६ |
| अत्तगवेसि | ८ | ५६ |
| अत्तट्ठागुरुअ | ५(२) | ३२ |
| अत्तव | ८ | ४८ |
| अत्तसपग्गहिय | ६(४) | सू० ४ |
| अत्थ (अर्थ) | १० | १५ |
| | २ चू० | ११ |
| अत्थ (अत्र) | ३ | १४ |

| | | |
|--------------|-------|----------|
| अत्यंगय | ८ | २८ |
| अत्यविणिच्छय | ८ | ४३ |
| अत्यसंजुत्त | ५(२) | ४३ |
| अत्यिय | ५(१) | ७३ |
| अदिट्ठवम्म | ६(२) | २३ |
| अदिन्न | ४ | सू० १३ |
| अदिन्नादाण | ४ | सू० १३ |
| अदीण | ५(२) | २६ |
| अदीणवित्ति | ६(३) | १० |
| अट्टु | १ चू० | १८ |
| | २ चू० | १४ |
| अट्टुट्टु | ७ | ५५ |
| अट्टुव | ५ | १५ |
| | ६ | २, ६, २३ |
| | ८ | १२ |
| अट्टुवा | ५(१) | ७५ |
| | ६ | ६३ |
| | ८ | १७ |
| अदेत | ५(२) | २८ |
| अवुव | ८ | ३४ |
| अनियाण | १० | १३ |
| अनिल | ६ | ३६ |
| | १० | ३ |
| अनिब्बाण | ५(२) | ३८ |
| अनिब्बुड | ३ | ७ |
| | ५(२) | १८ |

| | | | | |
|-----------------|-------------------------------|-----------------|-------------------------------|------------------------|
| अन्न (अन्यत्) ४ | सू० १० से १६, सू० १८ से २३ | अपावभाव | ८ | ६३ |
| | ५(१) ६,७,१,८, ८,९,७ | अपासंत | ६ | २३ |
| | ५(२) १४,१६, १९,३६ | अपि | २ | ४ |
| | ६ ११,१४ | अपिसुण | ९(३) | १० |
| | ७ ४,१३ | अपुच्छिय | ८ | ४६ |
| | ८ ५१ | अपुट्ट | ८ | २२ |
| | १० १८ | अपुणागम | १० | २१ |
| अन्न (दे०) ७ | १९ | अपूडम | १ चू० | ४ |
| अन्नत्य ४ | सू० ४ से ८ | अप्य (आत्मन्) ४ | मू० १० से १६, सू० १८ से २३ | |
| | ६ ५ | | ४ | ९ |
| | ९(४) सू० ६,७ | | ५(१) | १८,८० |
| अन्नयर ४ | सू० २३ | | ५(२) | ५,३६ |
| | ६ ७,१८,३२ | | ६ | १३,१४,२१, ६७ |
| अन्नयराग ६ | ५९ | | ८ | ७,९,३१,३४, ३६,५९,६१ |
| अन्ना (दे०) ७ | १६ | | ९(१) | १५ |
| अन्नाणि ४ | १० | | ९(२) | ३,५,७,१० |
| अन्नायच्छ ९(३) | ४ | | ९(३) | ५ |
| | १० १६ | | ९(४) | १,६ |
| | २ चू० ५ | | १० | १५ |
| अन्नेसमाण ५(२) | ३० | | १ चू० | १७ |
| अपडिलेहाए ६ | ५५ | | २ चू० | २,१३,१६ |
| अपरिसाड्य ५(१) | ९६ | | | |

दसवेआलिय गव्द-सूची

७

| | | |
|-----------------|-------|------------|
| अप्य (अल्प) | ४ | सू० १३, १५ |
| | ५(१) | ७४, ६६ |
| | ६ | १३ |
| | २ चू० | ५ |
| अप्यग | ६(३) | ११ |
| | २ चू० | १२ |
| अप्यगघ | ७ | ४६ |
| अप्यण | ६ | ११ |
| | ६(२) | १३ |
| अप्यतेय | १ चू० | १२ |
| अप्यत्तिय (दि०) | ५(२) | १२ |
| | ८ | ४७ |
| अप्यभासि | ८ | २६ |
| अप्यभूय | ४ | ६ |
| अप्यमत्त | ८ | १६ |
| | ६(१) | १७ |
| अप्यय | १ | २ |
| | १० | १४ |
| अप्यरय | ६(४) | ७ |
| अप्यसन्न | ६(१) | ५, ७, १० |
| अप्यसुय | ६(१) | २ |
| अप्यहिद्ध | ५(१) | १३ |
| अप्यिच्छ | ८ | २५ |
| अप्यिच्छ्या | ६(३) | ५ |
| अप्यियकारिणी | ६(३) | ६ |
| अफासुय | ८ | २३ |

| | | |
|----------------|-------|--------|
| अवंमचरिय | ६ | १५ |
| अवोहि | ४ | २०, २१ |
| | ६(१) | ५, १० |
| अवोहिय | ६ | ५६ |
| अव्म | ८ | ६३ |
| | ६(१) | १५ |
| अविमंतर | ४ | १७, १८ |
| अभिकंख * | | |
| -अभिकंखई | १० | १२ |
| -अभिकंखे | १० | १७ |
| अभिकखमाण | ६(३) | २ |
| अभिकंखि | ६(१) | १० |
| अभिककत | ४ | सू० ६ |
| अभिकखणं | ५(१) | १० |
| | २ चू० | ७ |
| अभिगच्छ * | | |
| -अभिगच्छई | ४ | २१, २२ |
| | ६(२) | २ |
| -अभिगच्छेज्जा | ५(१) | १४ |
| -अभिगच्छइ | ६(२) | २१ |
| अभिगम | | |
| (अभिगम) ६(३) | | १५ |
| अभिगम | | |
| (अभिगम्य) ६(४) | | ६ |
| अभिगिज्ज | ७ | १७, २० |
| अभिघाय | ६(३) | ८ |

| | | | | | |
|--------------|-------|-------|------------|-------|-------|
| अभितोस * | | | अमुच्छ्रिय | ५(१) | १ |
| -अभितोसएज्जा | ६(३) | ५ | | ५(२) | २६ |
| अभिघार * | | | | १० | १६ |
| -अभिघारए | ५(२) | २५ | अमुय | ७ | ५० |
| अभिनिवेस * | | | अमूढ | १० | ७ |
| -अभिनिवेसए | ८ | २६,५८ | अमोह | ८ | ३३ |
| अभिभूय | | | अमोहदसि | ६ | ६७ |
| (अभिभूत) | ६ | ५६ | अम्मा | ७ | १५ |
| अभिभूय | | | अम्ह | १ | ४ |
| (अभिभूय) | १० | १४ | अयपिर | ५(१) | २३ |
| अभिमुह | ६(१) | १० | | ८ | २३,४८ |
| अभिराम * | | | अयस | ५(२) | ३८ |
| -अभिरामयंति | ६(४) | १ | | १ चू० | १३ |
| अभिवायण | २ चू० | ६ | अयाणंत | ४ | १२ |
| अभिसित्त | ६(१) | ११ | अरइ | ८ | २७ |
| अभिहड | ३ | २ | | १ चू० | सू० १ |
| अभूइभाव | ६(१) | १ | अरक्खिय | २ चू० | १६ |
| अभोज्ज | ६ | ४६ | अरय | १ चू० | १०,११ |
| अमच्छरि | २ चू० | ७ | अरस | ५(१) | ६८ |
| अमज्जमंसासि | २ चू० | ७ | अरिह | ८ | २० |
| अमम | ६ | ६८ | अरोगि | ६ | ६० |
| | ८ | ६३ | अलं | ५(१) | ७८,७९ |
| अमर | १ चू० | ११ | | ७ | २७ |
| अमाइ | ६(३) | १० | | ८ | ६१ |
| अमाणिम | १ चू० | ५ | अलंकार | २ | २ |
| अमुग | ७ | ६ | अलद्धयं | ६(३) | ४ |

दसवेआलिय शब्द-सूची

| | | |
|--------------|---------|--------|
| अलाम | ५(२) | ६ |
| | ८ | २२ |
| अलाय | ४ | सू० २० |
| | ८ | ८ |
| अलोग | ४ | २२, २३ |
| अलोल | १० | १७ |
| अलोलुअ | ६(३) | १० |
| अलीण | ८ | ४०, ४४ |
| अवंदिम | १ चू० | ३ |
| अवक्कम * | | |
| (अव+क्रम) | | |
| -अवक्कमे | ५(१) | ८५ |
| अवक्कम * | | |
| (अप+क्रम) | | |
| -अवक्कमेज्जा | ६(१) | ६ |
| अवक्कमिता | ५(१) | ८१, ८६ |
| | ५(२) | ११ |
| | ८ | ६३ |
| अवगम | ७ | ५७ |
| अवगय | ८ | ६३ |
| | ६(३) | १४ |
| | १० | १६ |
| | ५(१) | १३ |
| अवणय | | |
| अवणी * | | |
| -अवणेज्जा | ४ ; सू० | २३ |
| अवणवाय | ६(३) | ६ |
| अवत्तव्व | ७ | २, ४३ |

| | | |
|-------------|-------|-----------------|
| अवपंगुर * | | |
| -अवपंगुरे | ५(१) | १८ |
| अवरज्ज * | | |
| -अवरज्जई | ६ | ७ |
| अवररत्त | २ चू० | १२ |
| अवराह | ६(२) | १८ |
| अवलंविा | ५(२) | ६ |
| अवलोय * | | |
| -अवलोयए | ५(१) | २३ |
| अवह | ६ | ५७ |
| अवाउड | ३ | १२ |
| अवि | १ | १ |
| अविक्किय | ७ | ४३ |
| अविणीय | ६(२) | ३, ५, ७, १०, २१ |
| अविस्सास | ६ | १२ |
| अविहेडअ | १० | १० |
| अवे * | | |
| -अवेत्सइ | १ चू० | १६ |
| -अविस्सइ | १ चू० | १६ |
| अवेयइत्ता | १ चू० | सू० १ |
| अव्वक्खित्त | ५(१) | २, ६०. |
| अव्वहिय | ८ | २७ |
| अस * | | |
| -सति | १ | ३ |
| | ६ | २३, ६१ |
| | २ | ८ |
| -होमो | | |

| | | | | | |
|--------------|------|----------------------------------|------------|------|--------------|
| -अभि | ४ | सू० ११ से १६ | असण | ६ | ४६, ५० |
| -अत्थि | ५(२) | २७ | | १० | ८, ९ |
| | ७ | ४३ | असत्थपरिणय | ५(२) | २३ |
| | ९(१) | १० | असन्भवयण | ९(२) | ८ |
| | १० | ७ | असावज्ज | ५(१) | ९२ |
| असइ | १० | १३ | असासय | १० | २१ |
| असंक्किलिट्ठ | २ | चू० ६ | | १ | चू० १६ |
| असंजम | ५(१) | २९, ६६ | असाहु | ७ | ४८ |
| | ६ | ५१ | | ९(३) | ११ |
| | १ | चू० १४ | असाहुया | ५(२) | ३८ |
| असंजय | ७ | ४७ | असिणाण | ६ | ६२ |
| असंथड | ७ | ३३ | असुइ | १० | २१ |
| असदिद्ध | ७ | ३ | असुइय | ५(१) | ९८ |
| | ८ | ४८ | अस्सिय | ५(१) | ११ |
| असंबद्ध | ८ | २४ | अह | ४ | सू० ११ से १६ |
| असंभत | ५(१) | १ | | ५(१) | ७७, ९६ |
| असविभागि | ९(२) | २२ | अहण | १० | ६ |
| असंसट्ठ | ५(१) | ३४, ३५ | अहम्म | ६ | १६ |
| असंसत्त | ५(१) | २३ | अहम्मसेवि | १ | चू० १३ |
| | ८ | ३२ | अहर | १ | चू० सू० १ |
| असञ्चमोसा | ७ | ३ | अहागड | १ | ४ |
| असज्जमाण | २ | चू० १० | अहिसा | १ | १ |
| असण | ४ | सू० १६ | | ६ | ८ |
| | ५(१) | ४७, ४९, ५१, ५३, ५७, ५९, ६१ | अहिगरण | ८ | ५० |
| | | | अहिज्जग | ८ | ४९ |

दसवेआलिय शब्द-सूची

| | | |
|---------------------|-------|------------|
| अहिज्जिउं | ४ | सू० १ से ३ |
| अहिज्जिता | ६(४) | ३ |
| अहिट्ट [*] | | |
| -अहिट्टए | ८ | ६१ |
| | ६(४) | २ |
| -अहिट्टेज्जा | ६(४) | सू० ६, ७ |
| -अहिट्टिज्जासि | १ चू० | १८ |
| अहिट्टग | ६ | ५४, ६२ |
| अहिय (अहित) | ६(१) | ४ |
| अहिय (अधिक) | २ चू० | १० |
| अहियगामिणी | ८ | ४७ |
| अहियास [*] | | |
| -अहियासए | ५(२) | ६ |
| | ८ | २६ |
| -अहियासे | ८ | २७ |
| अहुणाघोय | ५(१) | ७५ |
| अहुणोवलित्त | ५(१) | २१ |
| अहे | ६ | ३३ |
| अहो | ५(१) | ६२ |
| | ६ | २२ |
| आ | | |
| आ | १ चू० | ६ |
| आइ | ६ | ४६ |
| | ७ | ७ |

| | | |
|--------------------|-------|----------|
| आइक्ख [*] | | |
| -आइक्खइ | ६ | ३ |
| -आइक्खेज्ज | ८ | १४ |
| -आइक्खे | ८ | ५० |
| आइच्च | ८ | २८ |
| आइद्ध | २ | ६ |
| आइण्ण | २ चू० | ६ |
| आइन्नअ | २ चू० | १४ |
| आउ (अप्) | ४ | सू० ५ |
| आउ (आयुस्) | ८ | ३४ |
| आउकाइय | ४ | सू० ३ |
| आउकाय | ६ | २६ से ३१ |
| आउरस्सरण | ३ | ६ |
| आउल्लग | ४ | २६ |
| आउस | ४ | सू० १ |
| | ६(४) | सू० १ |
| आगअ | ५(१) | ८८ |
| आगइ | ४ | सू० ६ |
| आगम | ६ | १ |
| | ७ | ११ |
| आगमण | ५(१) | ८६ |
| आगम्म | ५(१) | ८६ |
| आगाहइत्ता | ५(१) | ३१ |
| आघाअ | ६ | ३४ |
| आजीववित्तिया | ३ | ६ |

१२

परिशिष्ट-१

| | | | | | |
|--------------|-------|-----------|------------|-------|-----------|
| आणव * | | | आयर * | | |
| -आणवेइ | २ चू० | ११ | -आयरंति | ६ | १५,२१.६३ |
| आणा | १० | १ | आयरिय | ५(२) | ४०,४५ |
| आणुपुव्वी | ८ | १ | | ८ | ३३,६० |
| आणुलोमिजा | ७ | ५६ | | ६(१) | ४,५.१०. |
| आभिओग | ६(२) | ५,१० | | | ११.१४.१६. |
| आभोएत्ताण | ५(१) | ८६ | | | १७ |
| आम | ५(१) | ७० | | ६(२) | १२,१६ |
| | ५(२) | २३ | | ६(३) | १ |
| आमग | ३ | ७,८ | आया * | | |
| | ५(१) | ७० | -आयए | ५(२) | ३१ |
| | ५(२) | १६,२१,२२, | आयाण | ५(१) | २६ |
| | | २४ | आयाय | ५(१) | ८८ |
| | ८ | १० | आयार | ६ | ५०,६० |
| आमिया | ५(२) | २० | | ६(३) | २ |
| आमुस * | | | | ६(४) | १ |
| -आमुसेज्जा | ४ | सू० १६ | | ६(४) | सू० ७ |
| -आमुसावेज्जा | ४ | सू० १६ | | २ चू० | ४ |
| आमुसंत | ४ | सू० १६ | | ७ | १३ |
| आय | १ चू० | १८ | आयारगोयर | ६ | २,४ |
| आयइ | १ चू० | १ | आयारपणिहि | ८ | |
| आयंक | १ चू० | सू० १ | | ८ | १ |
| आयय | ६(४) | ५ | आयारभावतेण | ५(२) | ४६ |
| आययट्टि | ५(२) | ३४ | आयारसंत | ६(१) | ३ |
| आययट्टिय | ६(४) | २ | आयारसमाहि | ६(४) | सू० ३.७ |
| आययण | ६ | १५ | | ६(४) | ५ |

| | | |
|-------------|------|--------------------------------------|
| आयाव * | | |
| -आर्यावयाही | २ | ५ |
| -आयावयति | ३ | १२ |
| -आयावेज्जा | ४ | सू० १६ |
| आयावत | ४ | सू० १६ |
| आयावयट्ट | ५(२) | २ |
| आरंभ * | | |
| -आरभे | ६ | ३४ |
| आरन्धिय | ५(१) | १६ |
| आरहंत | ६(४) | सू० ७ |
| आराह * | | |
| -आराहेइ | ५(२) | ३६, ४०, ४५ |
| -आराहए | ७ | ५७ |
| | ६(१) | १६ |
| -आराहयइ | ६(३) | १ |
| | ६(४) | सू० ४ |
| आराहइत्ताण | ६(१) | १७ |
| आरुह * | | |
| -आरुहे | ५(१) | ६७ |
| आलव * | | |
| -आलवे | ७ | १६, १६, २१, २३, ३५, ४२, ४८, ५३ |
| -आलवेज्ज | ७ | १७, २० |
| आलिह * | | |
| -आलिहेज्जा | ४ | सू० १८ |

| | | |
|--------------|------|------------|
| -आलिहावेज्जा | ४ | सू० १८ |
| आलिहंत | ४ | सू० १८ |
| आलोइय | | |
| (आलोचित) | ५(१) | ६१ |
| आलोइय | | |
| (आलोकित) | ६(३) | १ |
| आलोअ * | | |
| -आलोए | ५(१) | ६०, ६६ |
| आलोय | ५(१) | १५ |
| | ५(१) | ६६ |
| आवगा | ७ | ३६, ३७, ३६ |
| आवज्ज * | | |
| -आवज्जेज्जा | ४ | सू० २३ |
| आवज्जइ | ६ | ५६ |
| आवण | ५(१) | ७१ |
| आविअ * | | |
| -आवियइ | १ | २ |
| आवील * | | |
| -आवीलेज्जा | ४ | सू० १६ |
| -आवीलावेज्जा | ४ | सू० १६ |
| आवीलंत | ४ | सू० १६ |
| आवेउं | २ | ७ |
| आस * | | |
| -आसे | ४ | ७ |
| आसं | ७ | ४७ |
| | ८ | १३ |
| आसइत्तु | ६ | ५४ |

| | | | | | |
|-------------------|-------|-----------|---------------|------|------------|
| आसंदी | ३ | ५ | आहड | ५(१) | ५५ |
| | ६ | ५३ से ५५ | | ६ | ४८, ४९ |
| आसण | ५(२) | २८ | | ८ | २३ |
| | ७ | २९ | आहम्मिय | ८ | ३१ |
| | ८ | ५, १७, ५१ | आहर * | | |
| | ९(२) | १७ | -आहरे | ५(१) | २७, ३१, ४२ |
| | ९(३) | ५ | | ५(२) | ३३ |
| | २ चू० | ८ | -आहारए | १० | ३ |
| आसमाण | ४ | ३ | आहार | ६ | २५, ४६ |
| आसय | ५(१) | ८५ | आहारमइय | ८ | २८ |
| आसव | ३ | ११ | आहारंत | ५(१) | २८ |
| | १० | ५ | आहियग्गि | ९(१) | ११ |
| | ४ | ९ | | ९(३) | १ |
| | २ चू० | ३ | आहुइ | ९(१) | ११ |
| आसा | ९(३) | ६ | | | |
| आसाअ ^३ | | | इ | | |
| -आसायए | ९(१) | ४ | इ | १ | ४ |
| -आसाययई | ९(३) | २ | | ३ | १४ |
| आसाइत्ताण | ५(१) | ७७ | | ५(१) | ९५, ९६ |
| आसायण | ५(१) | ७८ | इ * | | |
| आसायणा | ९(१) | २, ५, ६ | -एहि | ७ | ४७ |
| | ८ | १० | इइ | २ | ४ |
| आसाल्य | ६ | ५३ | इंगाल(अङ्गार) | ४ | सू० २० |
| आसोविस | ९(१) | ५ से ७ | | ८ | ८ |
| आसु | ८ | ४७ | इंगाल(आङ्गार) | ५(१) | ७ |
| आसुरत्त | ८ | २५ | इंगिय | ९(३) | १ |

दसवेआलिय शब्द-सूची

| | | | | | |
|-------------|-------|----------------------------------|------------|-------|------------|
| इंद | ६(१) | १४ | इत्थंय | ६(४) | ७ |
| | १ चू० | २ | इत्थी | २ | २ |
| इदिय | ५(१) | १३, २६, ६६ | | ५(२) | २६ |
| | ८ | १६, ३५ | | ७ | १६, १७, २१ |
| | १० | १५ | | ८ | ५१, ५३, |
| | १ चू० | १७ | | | ५६, ५७ |
| | २ चू० | १६ | | ६(३) | १२ |
| इच्छ " | | | | १० | १ |
| -इच्छसि | २ | ७ | इत्थीओ | ६ | ५८ |
| -इच्छेज्जा | ५(१) | २७, ३५, ३७, ८२, ८७, ९५, ९६ | इम | ४ | सू० ३ |
| | ६ | ४७ | इमेरिस | ६ | ५६ |
| -इच्छति | ६ | १०, १७, ३२, ३७ | इरियानहिया | ५(१) | ८८ |
| -इच्छे | ६(१) | ८ | इव | ६(२) | १२ |
| इच्छत | ८ | ३६ | इसि | ६ | ४६ |
| इच्छा | ५(२) | २७ | | २ चू० | ५ |
| इट्टाल(दि०) | ५(१) | ६५ | इह | ४ | सू० १ |
| इडिड | ६(२) | ६, ९, ११, २२ | इहलोग | ८ | ४३ |
| | १० | १७ | | ६(२) | १३ |
| इति | २ | २ | | ६(४) | सू० ६, ७ |
| इत्तरिय | १ चू० | सू० १ | | | |
| इत्थ | ३ | १४ | | | |
| | ६(४) | सू० ४ से ७ | | | |
| | १ चू० | सू० १ | | | |
| | | | इ | ५(१) | ४५ |
| | | | | ८ | १०, २१ |

| उ | | |
|-------------|------|--------|
| उ | ४ | १ |
| उईर * | | |
| -उईरंति | ६ | ३८ |
| उउ | ६ | ६८ |
| उंछ | ८ | २३ |
| | १० | १७ |
| उंज * | | |
| -उंजेज्जा | ४ | सू० २० |
| | ८ | ८ |
| -उंजावेज्जा | ४ | सू० २० |
| उंजंत | ४ | सू० २० |
| उंढा (दि०) | ४ | सू० २३ |
| उंढुय (दि०) | ५(१) | ८७ |
| उक्कट्ट | ५(१) | ३४ |
| उक्का | ४ | सू० २० |
| उक्किट्ट | १ | १ |
| | ४ | १६, २० |
| उक्खित्तु | ५(१) | ८५ |
| उग्गम | ५(१) | ५६ |
| उच्चार | ८ | १८ |
| उच्चार-भूमि | ८ | १७, ५१ |
| उच्चवाय | ५(१) | १४, ७५ |
| | ५(२) | ७, २५ |
| उच्छह | ६(३) | ६ |

| | | |
|----------------|-------|--------|
| उच्छुखण्ड | ३ | ७ |
| | ५(१) | ७३ |
| | ५(२) | १८ |
| उच्छोलणा | ४ | २६ |
| उज्जाण | ६ | १ |
| | ७ | २६, ३० |
| उज्जाल * | | |
| -उज्जालेजा | ४ | सू० २० |
| -उज्जालावेज्जा | ४ | सू० २० |
| उज्जालंत | ४ | सू० २० |
| उज्जालिया | ५(१) | ६३ |
| उज्जुदंसि | ३ | ११ |
| उज्जुप्पन्न | ५(१) | ६० |
| उज्जुमइ | ४ | २७ |
| उट्ट * | | |
| -उट्टए | ५(१) | ४० |
| उट्टिअ | ५(१) | ४० |
| उड्ढ | ६ | ३३ |
| उड्ढिय | १ चू० | १२ |
| उण्ह | ७ | ५१ |
| | ८ | २७ |
| उत्तम | ८ | ६० |
| | ६(२) | २३ |
| | १ चू० | ११ |
| उत्तर | ५(२) | ३ |
| उत्तरओ | ६ | ३३ |
| उत्तार | २ चू० | ३ |

दसवेआलिय शब्द-सूची

| | | | | | |
|---------------|-------|------------|---------------|-------|--------------|
| उत्तिग | ५(१) | ५६ | उप्पिलोदगा | ७ | ३६ |
| | ८ | ११, १५ | उप्पेहि | १ चू० | सू० १ |
| उद+उल्ल | ६ | २४ | उप्पुल्ल | ५(१) | २३ |
| | ८ | ७ | उन्निदिया | ५(१) | ४६ |
| उदओल्ल | ४ | सू० १६ | उन्निभय | ४ | सू० ६ |
| | ५(१) | ३३ | उन्नेइय | ६ | १७ |
| उदग | ४ | सू० १६ | उन्भय | ४ | ११ |
| | ५(१) | ३०, ५८, ७५ | | ५(२) | १२ |
| | ८ | ११ | उन्मीस | ५(१) | ५७ |
| उदगदोणी | ७ | २७ | उयर | ८ | २६ |
| उदर | ४ | सू० २३ | उल्ल | ५(१) | २१, ६८ |
| उदाहर * | | | उल्लंघिया | ५(१) | २२ |
| -उदाहरिस्सामि | ८ | १ | उवइट्ट | ६(३) | २ |
| उद्देसिय | ३ | २ | उवगय | ६(१) | ११ |
| | ५(१) | ५५ | उवगरण | ४ | सू० २३ |
| | ६ | ४८, ४९ | उवघाइणी | ७ | ११, २६, ५४ |
| | ८ | २३ | उवचिट्ट * | | |
| | १० | ४ | -उवचिट्टएज्जा | ६(१) | ११ |
| उन्नय | ७ | ५२ | उवचिय | ७ | २३ |
| उप्पज्ज * | | | उवज्जाय | ६(२) | १२ |
| -उप्पज्जाए | २ चू० | १ | उवट्टाइ | १ चू० | सू० १ |
| उप्पण्ण | ५(१) | ६६ | उवट्टिय | ४ | सू० ११ से १६ |
| | ५(२) | ३ | | ६(२) | ५, १० |
| | १ चू० | सू० १ | उवणीय | १ चू० | १५ |
| उप्पल | ५(२) | १४, १६, १८ | उवन्नत्थ | ५(१) | ३६ |
| उप्पिलाव * | | | उवभोग | ६(२) | १३ |
| -उप्पिलावए | ६ | ६१ | | | |

१८

| | | |
|-----------------|-------|--------|
| उवमा | ६(१) | ६,८ |
| | १ चू० | ११ |
| उवयार | ६(२) | २० |
| उवरअ | ८ | १२ |
| उववज्ज | ६(२) | ५,६ |
| उववन्न | ५(२) | ४७ |
| उववाइय | ४ | सू० ६ |
| उववाय * | | |
| -उववायए | ८ | ३३ |
| उववेय | ६(१) | ३ |
| उवसंकम * | | |
| -उवसंकमेज्ज | ५(२) | १३ |
| उवसंकमंत | ५(२) | १० |
| उवसंत | ६ | ६४, ६८ |
| | १० | १० |
| उवसंपज्जित्ताणं | ४ | सू० १७ |
| उवसंपया | १ चू० | सू० १ |
| उवसम | ८ | ३८ |
| उवस्सअ | ७ | २६ |
| उवहण * | | |
| -उवहम्मई | १ | ४ |
| | ७ | १३ |
| उवहस * | | |
| -उवहसे | ८ | ४६ |
| वहि | ६ | २१ |

परिहि

| | | |
|--------------|-------|--------|
| उवहि | ६(२) | १८ |
| | १० | १६ |
| | २ चू० | ५ |
| उवाय | ८ | २१ |
| | ६(२) | ४, २० |
| | १ चू० | १८ |
| उवे | | |
| -उवेत | ६ | ६८ |
| -उवेइ | १० | २१ |
| | २ चू० | १६ |
| उवेत | १ चू० | १७ |
| उव्वट्टण | ३ | ५ |
| | ६ | ६३ |
| | ६(१) | १२ |
| उव्विग्ग | ५(२) | ३६ |
| उसिण | ६ | ६२ |
| उसिणोदग | ८ | ६ |
| उस्सविकिया | ५(१) | ६३ |
| उस्सवित्ताणं | ५(१) | ६७ |
| उस्सिचिया | ५(१) | ६३ |
| | | |
| ऊ | | |
| ऊरु | ४ | सू० २३ |
| | ८ | ४५ |

दसवेआलिय शब्द-सूची

| | | |
|-----|------|----|
| ऊस | ५(१) | ३३ |
| ऊसढ | ५(२) | २५ |
| | ७ | ३५ |

ए

| | | |
|----------|-------|-------------------|
| एकक | २ चू० | १० |
| एककथ | ५(१) | ६६ |
| एग | ५(१) | ३७ |
| | ६(१) | ३ |
| एगअ | ४ | सू० १८ से २३ |
| एगइय | ५(२) | ३१, ३३, ३७ |
| एगत | ४ | सू० २३ |
| | ५(१) | ११, ८१, ८५, ८६ |
| | ५(२) | ११ |
| एगगचित्त | ६(४) | सू० ५ |
| | ६(४) | ३ |
| एकभत्त | ६ | २२ |
| एगया | ५(१) | ६५ |
| एज्जत | ६(२) | ४ |
| एय | १ | ३ |
| एयारिस | ५(१) | ६६ |
| एरिस | ६ | ५ |
| | ७ | ४३ |
| | २ चू० | १५ |

| | | |
|-----------|------|------------------|
| एल्ला | ५(१) | २२ |
| एल्लमूयया | ५(२) | ४८ |
| एव | ४ | सू० १० |
| एवं | १ | ३ |
| एस | | |
| -ऐसेज्जा | ५(२) | २६ |
| एसकाल | ७ | ७ |
| एसणा | १ | ३ |
| | ५(२) | ३६, ५० |
| एसणिय | ५(१) | ३६, ३८ |
| | ६ | २३ |
| एहत | ६(२) | ५ से ७ ६ से १ |

ओ

| | | |
|----------|-------|-------|
| ओगास | ५(१) | १६ |
| ओगह | ५(१) | १८ |
| | ६ | १३ |
| | ८ | ५ |
| ओघ | ६(२) | २३ |
| ओमजण | १ चू० | सू० १ |
| ओमाण | २ चू० | ६ |
| ओयारिया | ५(१) | ६३ |
| ओवघाइय | ८ | २१ |
| ओवत्तिया | ५(१) | ६३ |

| | | |
|---------------|-------|--------|
| ओववाइय | ४ | सू० ६ |
| ओवाय | ५(१) | ४ |
| ओवायव | ६(३) | ३ |
| ओसक्किया | ५(१) | ६३ |
| ओसन्न | १ चू० | ७ |
| ओसन्नदिट्टाहड | २ चू० | ६ |
| ओसहि | ७ | ३४ |
| ओसा (दे०) | ४ | सू० १६ |
| ओह | ६(२) | २३ |
| ओहाण | १ चू० | सू० १ |
| ओहारिणी | ७ | ५४ |
| | ६(३) | ६ |
| ओहाविअ | १ चू० | २ |
| क | | |
| क | १ | ४ |
| कइ | २ चू० | १४ |
| कटय | ५(१) | ८४ |
| | ६(३) | ६, ७ |
| कत | २ | ३ |
| कंद | ३ | ७ |
| | ५(१) | ७० |
| कंस | ६ | ५० |
| कंसपाय | ६ | ५० |
| कक्क | ६ | ६३ |

| | | |
|--------|-------|--|
| कक्कस | ८ | २६ |
| कज्ज | ७ | ३६ |
| कट्टु | ८ | ३१ |
| | १ चू० | १४ |
| कट्ट | ४ | सू० १८ |
| | ५(१) | ६५, ८४ |
| | ६(२) | ३ |
| | १० | ४ |
| कड | ४ | २०, २१ |
| | ५(१) | ५६, ६१ |
| | १ चू० | सू० १ |
| | २ चू० | १२ |
| कडुय | ४ | १ से ६ |
| | ५(१) | ६७ |
| कण्ण | ४ | सू० २१ |
| | ८ | २०, २६, ५५ |
| | ६(३) | ८ |
| कण्णसर | ६(३) | ६ |
| कत्थइ | ५(२) | ८ |
| कन्ना | ६(३) | १३ |
| कप्प * | | |
| -कप्पइ | ५(१) | २८, ३१, ३२, ४१, ४३, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८, ६०, ६२, ६४ |

| | | | | | |
|-------------|-------|-------------|------------|-------|---------------------------|
| -कप्पइ | ५(१) | ७२, ७४, ७६ | कया | ७ | ५१ |
| | ५(२) | १५, १७, २० | कयाइ | ६ | ६३ |
| -कप्पई | ६ | ५२, ५६, ५६ | कर * | | |
| कप्प | ५(१) | ४४ | -काहिसि | २ | ६ |
| कप्पिय | ५(१) | २७ | -काही | ४ | १० |
| | ६ | ४७ | -कुज्जा | ५(१) | ६४ |
| कब्बड | १ चू० | ५ | | ५(२) | ६ |
| कम * | | | | ८ | ३३, ५२ |
| -कमाही | २ | ५ | | ६(१) | ५ |
| कम | ५(१) | १, ४ | | ६(२) | १७ |
| कमिय | २ | ५ | | २ चू० | ८, ९, १३ |
| कम्म | ३ | १५ | -करेति | ६ | ६७ |
| | ४ | १ से ६ | | ६(१) | २ |
| | ४ | २०, २१, २४, | -करिस्सामि | ७ | ६ |
| | | २५, २८ | -करिस्सई | ७ | ६ |
| | ६ | ६५ | -करेहि | ७ | ४७ |
| | ८ | १२, ३३, ६३ | -करे | ८ | १६ |
| | ६(२) | २३ | कर | ५(१) | १६, २६ |
| | १ चू० | सू० १ | करत | ४ | सू० १० से १६, १८ से २३ |
| कम्महेउअ | ७ | ४२ | करग | ४ | सू० १६ |
| कय (कृत) | ५(१) | ३४ | करण | ६ | २६, २६, ४०, ४३ |
| कय (क्रय) | ७ | ४६ | | | |
| | १० | १६ | | | |
| कयर | ४ | सू० २ | | ८ | ४ |
| | ८ | १४ | करेता | ५(१) | ६३ |
| | ६(४) | सू० २ | करेत्ताणं | ३ | १४ |

२२

परिशिष्ट-१

| | | |
|---------------|-------|-----------|
| कलह | ५(१) | १२ |
| | २ चू० | ५ |
| कलुण | ६(२) | ८ |
| कलुस | ४ | २०, २१ |
| कल्लाण | ४ | ११ |
| | ५(२) | ४३ |
| कल्लाणभाणि | ६(१) | १३ |
| कवाड | ५(१) | १८ |
| | ५(२) | ६ |
| कविट्ट | ५(२) | २३ |
| कसाय | ५(१) | ६७ |
| | ७ | ५७ |
| | ८ | ३६ |
| | ६(३) | १४ |
| | १० | ६ |
| कसिण | ८ | ३६, ६३ |
| कह | १० | १० |
| कहं | २ | १ |
| | ४ | ७, १२ |
| | ६ | २, २३, २४ |
| कहा | ५(२) | ८ |
| | ८ | ५२ |
| | १० | १० |
| कहि | २ चू० | ८ |
| काउस्सग्गकारि | २ चू० | ७ |
| काण | ७ | १२ |

| | | |
|----------|-------|---------------------------|
| काम | २ | १, ५ |
| | ६ | १८ |
| | ८ | ५७ |
| | १ चू० | सू० १ |
| | २ चू० | १० |
| कामय | ५(२) | ३५ |
| काय | ४ | सू० १० से १६, १८ से २३ |
| | ६ | २६, २६, ४० |
| | | ४३ |
| | ८ | ३, ७, ६, |
| | | २६, ४४ |
| | ६(१) | १२ |
| | ६(२) | १८ |
| | १० | ५, ७, १४ |
| | १ चू० | १८ |
| | २ चू० | १४ |
| कायतिज्ज | ७ | ३८ |
| कायव्व | ६ | ६ |
| | ८ | १ |
| कारण | २ | ७ |
| | ५(२) | ३ |
| | ६(२) | १३, १५ |
| | १ चू० | १ |
| कारिय | ६ | ६४ |
| काल | ५(१) | १ |

| | | |
|-------------|-------|------------|
| काल | ५(२) | ४ से ६ |
| | ७ | ८ |
| | ९(२) | २० |
| | २ चू० | १२ |
| कालमासिणी | ५(१) | ४० |
| कालालेण | ३ | ८ |
| कासव | ४ | सू० १ से ३ |
| कासवनालिआ | ५(२) | २१ |
| किं | ३ | १४ |
| | ४ | १० |
| | ५(२) | ४७ |
| | ६ | ६४ |
| | ७ | ५ |
| | ९(१) | ५ |
| | ९(२) | १६ |
| | २ चू० | १२, १३ |
| किंचि | ६ | ३४ |
| | ७ | २६ |
| किच्च | ७ | ३६ |
| | २ चू० | १२ |
| किच्चा | ५(२) | ४७ |
| | ९(२) | १६ |
| | ९(३) | ८ |
| किच्चाण | ८ | ४५ |
| कित्त * | | |
| -कित्तइस्सं | ५(२) | ४३ |

| | | |
|---------------|-------|-----------|
| कित्ति | ९(२) | २ |
| | ९(४) | सू० ६, ७ |
| किमिच्छय | ३ | ३ |
| किलाम * | | |
| -किलामेइ | १ | २ |
| -किलामेसि | ५(२) | ५ |
| किंलिच (दि०) | ४ | सू० १८ |
| किलेस | १ चू० | १५ |
| किविण | ५(२) | १० |
| कीड | ४ | सू० ९, २३ |
| कीय | ६ | ४८, ४९ |
| | ८ | २३ |
| कीय | ९(१) | १ |
| कीयगड | ३ | २ |
| | ५(१) | ५५ |
| कीरमाण | ७ | ४० |
| कील | ५(१) | ६७ |
| कुंडमोय (दि०) | ६ | ५० |
| कुंथु | ४ | सू० ९, २३ |
| कुकुडं | १ चू० | ७ |
| कुक्कुड | ८ | ५३ |
| कुक्कुस | ५(१) | ३४ |
| कुत्तित्ति | १ चू० | ७ |
| कुप्प * | | |
| -कुप्पे | ५(२) | २७, ३० |
| | १० | १० |

| | | | | | |
|-------------|-------|------------|----------|-------|----------|
| -कुप्पई | ६(२) | ४ | केवल | ६(१) | १४ |
| -कुप्पेज्ज | ८ | ४७ | केवलि | ४ | २२, २३ |
| | १० | १८ | | २ चू० | १ |
| -कुप्पेज्जा | ५(२) | २८ | कोट्टअ | ५(१) | २१, २२ |
| कुमारिया | ५(१) | ४२ | कोट्टग | ५(१) | २०, ८२ |
| कुमुय | ५(२) | १४, १६, १८ | कोमुई | ६(१) | १५ |
| कुम्म | ८ | ४० | कोल | ४ सू० | २२ |
| कुम्मास | ५(१) | ६८ | | ५(२) | २१ |
| कुल | २ | ६, ८ | कोलचुण्ण | ५(१) | ७१ |
| | ५(१) | १४, १७, २४ | कोविय | ६(२) | २३ |
| | ५(२) | २५ | कोह | ४ सू० | १२ |
| | २ चू० | ८ | | ६ | ११ |
| कुललओ | ८ | ५३ | | ७ | ५४ |
| कुविय | ६(१) | ७, ६ | | ८ | ३६ से ३६ |
| कुव्व | | | | ६(१) | १ |
| -कुव्वइ | ५(२) | ४२, ४६ | | ६(३) | १२ |
| | ६(४) | ६ | | | |
| -कुव्वई | ५(२) | ३५ | | | |
| -कुव्वेज्जा | ८ | २४ | | | |
| कुसग्ग | १ चू० | सू० १ | ख | ६(१) | १५ |
| कुसल | ६(३) | १५ | खति | ४ | २७ |
| कुसील | ६ | ५८ | खंघ | ६(२) | १ |
| | १० | १८ | खघबीय | ४ सू० | ८ |
| | १ चू० | १२ | खंभ | ७ | २७ |
| कुसीललिग | १० | २० | खण | ५(१) | ६३ |
| केज्ज | ७ | ४५ | | | |

दसवेआलिय गळद-सूची

| | | |
|-----------|-------|---------------|
| लग्न * | | २ |
| -लग्नावय | १० | २ |
| -खणे | १० | २ |
| वक्तिय | ६ | २ |
| खम * | | १८ |
| -खमेह | ६(२) | १३ |
| वलिप्य | २ चू० | १४ |
| वलीण | २ चू० | सू० १ से ३, ६ |
| खलू | ४ | १ |
| | ७ | सू० १ से ७ |
| | ६(४) | सू० १ |
| | १ चू० | सू० १ |
| | २ चू० | १६ |
| खव * | | ६७ |
| -खवैति | ६ | १५ |
| खविता | ३ | २४, २५ |
| खवित्ताणं | ४ | २३ |
| खवित्तु | ६(२) | ४६ |
| खाज * | | ६ |
| -खाएज्जा | ८ | सू० १६ |
| -खायइ | ६(१) | ४७, ४६, ५१, |
| खाइम | ४ | ५३, ५७, ५६, |
| | ५(१) | ६१ |
| | ५(२) | २७ |
| | १० | ८, ६ |

| | | |
|--------------|-------|--------------|
| खाणू | ५(१) | ४ |
| खिस * | = | २६ |
| -खिसए | ६(३) | १२ |
| -खिसएज्जा | = | ३१ |
| खिप्य | २ चू० | १४ |
| | २ | ५ |
| खु | २ | = |
| खु | ६(२) | = |
| खुडुग | ६ | ६ |
| खुडियायारकहा | ३ | २७ |
| खुहा | ८ | ५१ |
| खेम | ७ | ६ |
| | ६(४) | १८ |
| | = | |
| खेल | | |
| खज(य) | २ | १ |
| | ४ | सू० १८ से २६ |
| | ५(१) | २, २४, ८१ |
| | ५(२) | ८ |
| | ६(२) | ३, २३ |
| | २ चू० | ७ |
| | ४ | सू० ६ |
| | ४ | १४, १५ |
| | ६(२) | १७ |

| | | | | | |
|--------------|-------|------------|----------|-------|-------------------------------|
| गइ | ६(३) | १५ | गणि | ६ | १ |
| | १० | २१ | | ६(१) | १५ |
| | १ चू० | सू० १ | | १ चू० | ६ |
| | १ चू० | १३, १४, २३ | गन्मिय | ७ | ३५ |
| गंडिया | ७ | २८ | गमण | ५(१) | ८६ |
| गंतुं | ७ | २६, ३० | गय | ५(१) | १२ |
| गंघ | २ | २ | | ६(२) | ५, ६ |
| | ३ | २ | | १ चू० | सू० १ |
| गंघग | २ | ८ | गरह * | | |
| गंभीर | ५(१) | ६६ | -गरहंति | ५(२) | ४० |
| गंभीर टिज्य | ६ | ५५ | गरहिय | ६ | १२ |
| गच्छ, * | | | गरिह * | | |
| -गच्छइ | ४ | २४, २५ | -गरिहसि | ५(२) | ५ |
| | ८ | ४३ | -गरिहामि | ४ | सू० १० से १६, सू० १८ से २२ |
| -गच्छई | ५(२) | ३२ | | | |
| -गच्छंति | ५(१) | १०० | गल | १ चू० | ६ |
| -गच्छामो | ७ | ६ | गव | ७ | २५ |
| -गच्छादेज्जा | ४ | सू० २२ | गवेस * | | |
| -गच्छे | १० | १ | -गवेमए | ५(१) | १ |
| | १ चू० | १४ | | ५(२) | ३ |
| -गच्छेज्जा | ४ | सू० २२ | गहण | ८ | ११ |
| | ५(१) | ४, ६, २४, | गहिय | ५(१) | ६० |
| | | ६६ | गहेऊण | ५(१) | ८५ |
| | ८ | २५ | गा | ७ | २४ |
| गच्छंत | ४ | सू० २२ | गाढ | ७ | ४२ |
| गण | ६(१) | १५ | | | |

| | | |
|----------------|-------------|---------------------|
| गाम | ४ | सू० १३, १५ |
| | ५(१) | २ |
| | २ चू० | ८ |
| गाम कटअ | १० | ११ |
| गाय | ३ | ५ |
| | ६ | ६३ |
| गायाभाग | ३ | ६ |
| गारव | ६(२) | २२ |
| गावी (दे०) | ५(१) | १२ |
| गिण्ह | | |
| -गिण्हहि | ६(३) | ११ |
| गिद्ध | ८ | २३ |
| | १० | १७ |
| गिम्ह | ३ | १२ |
| गिरा | ७ | ३, ५, ५२, ५४, ५५ |
| | ६(१) | १२ |
| गिरि | ६(१) | ६ |
| | १ चू० | १७ |
| गिलिता | १ चू० | ६ |
| गिह | ७ | २७ |
| गिहतर निसेज्जा | ३ | ५ |
| गिहल्य | ५(२) | ४०, ४५ |
| गिहवई | ५(१) | १६ |
| गिहवास | १ चू० - सू० | १ |
| गिहि | ३ | ६ |

| | | |
|--------------|-------|--------|
| गिहि | ६ | १८ |
| | ८ | ५० |
| | ६(२) | १३ |
| | ६(३) | १२ |
| | १ चू० | सू० १ |
| | २ चू० | ६ |
| गिहिजोग | ८ | २१ |
| | १० | ६ |
| गिहिभायण | ६ | ५२ |
| गिहिमत | ३ | ३ |
| गिहिसंथव | ८ | ५२ |
| गुज्झग | ६(२) | १०, ११ |
| गुज्झाणुचरिअ | ७ | ५३ |
| गुण | ४ | २७ |
| | ५(२) | ४१ |
| | ६ | ६, ६७ |
| | ७ | ४६, ५६ |
| | ८ | ६० |
| | ६(१) | ३, १७ |
| | ६(३) | ११, १४ |
| | ६(४) | ४ |
| | १० | १२ |
| | २ चू० | ४, १० |
| गुणओ | २ चू० | १० |
| गुणप्पेहि | ५(२) | ४४ |
| गुणव | ५(२) | ५० |

| | | |
|---------------|-------|---------------------|
| गुत्त | ८ | ४०,४४ |
| | १ चू० | १८ |
| गुरु | ५(१) | ८८,६० |
| | ७ | ११ |
| | ८ | ४४,४५ |
| | ९(१) | १,२,६,७, ८,१०,१३ |
| | ९(२) | १५,२३ |
| | ९(३) | २,१४,१५ |
| गुञ्जिणी | ५(१) | ३६,४० |
| गूह * | | |
| -गूहे | ८ | ३२ |
| गेण्ह * | | |
| -गेण्ह | ७ | ४५ |
| -गेण्हावए | ६ | १४ |
| -गेण्हावेज्जा | ४ | सू० १३ |
| -गेण्हेज्जां | ४ | सू० १३ |
| -गेण्हंति | ६ | १४ |
| गेण्हंत | ४ | सू० १३ |
| गेण्हमाणं | ६ | १४ |
| गेख्य | ५(१) | ३४ |
| गोच्छ्रा | ४ | सू० २३ |
| गोण (दे०) | ५(१) | १२ |
| गोत्त | ७ | १७,२० |
| गोमय | ५(१) | ७ |
| गोमि | ७ | १६ |

| | | |
|---------------|------|-------|
| गोमिणी | ७ | १६ |
| गोयर | ५(१) | १४ |
| | ५(२) | २ |
| गोयरग्ग | ५(१) | १६ |
| | ५(२) | ८ |
| | ६ | ५६ |
| गोरहग (दे०) | ७ | २४ |
| गोल (दे०) | ७ | १४,१६ |
| गोला (दे०) | ७ | १६ |

घ

| | | |
|--------------|-------|-----------|
| घट्ट * | | |
| -घट्टावेज्जा | ४ | सू० १८ |
| -घट्टेज्जा | ४ | सू० १८ |
| | ८ | ८ |
| घट्ट त | ४ | सू० १८,२० |
| घट्टियाण | ५(१) | ३० |
| घण | ८ | ६३ |
| घय | ५(१) | ६७ |
| घसा (दे०) | ६ | ६१ |
| घाय * | | |
| -घायए | ६ | ६ |
| घोर | ६ | १०,१५,६२, |
| | | ६५ |
| | ९(२) | १४ |
| | १ चू० | १२ |

| शब्द | १ | ४ |
|-------------|-------|-----------------|
| अडत्ताण | ५(२) | ४८ |
| अउ | ६ | ४६ |
| | ७ | १,५७ |
| | ८ | ३६,३६ |
| | ९(३) | १४ |
| | ९(४) | सू० १ से ७ |
| | १० | ६ |
| अउत्थ | ४ | सू० १४ |
| | ६ | ४७ |
| | ९(४) | सू० ४ से ७ |
| अउरिदिय | ४ | सू० ९ |
| अउव्विह | ९(४) | सू० ४ से ७ |
| अगवेर (दे०) | ७ | २८ |
| अचल | १ चू० | सू० १ |
| अड | ९(२) | ३,२२ |
| अदिम | ६ | ६८ |
| | ८ | ६३ |
| अकखुगोय | ५(२) | ११ |
| अकखुस | ६ | २७,३०, ४१,४४ |
| अय * | | |
| -अए | ९(३) | १२ |
| | १० | १७,२१ |
| -अय | २ | ५ |

| शब्द | २ | ३ |
|---------------|-------|--------|
| | ४ | १७,१८ |
| | ९(४) | ७ |
| | १ चू० | १ |
| अर * | | |
| -अर | २ | ८ |
| -अरसि | ५(२) | ५ |
| -अरे | ४ | १७,८ |
| | ५(१) | २,३,१३ |
| | ५(२) | ६,२५ |
| | ६ | २३,२४ |
| | ८ | २३ |
| -अरेज्ज | ५(१) | ८,९ |
| | २ चू० | ६,११ |
| अरंत | ५(१) | १०,१५ |
| अरमाण | ४ | १ |
| अरित्त | २ चू० | ९ |
| अरिया | २ चू० | ४,५ |
| अलइत्ता | ५(१) | ३१ |
| अलाचल | ५(१) | ६५ |
| अाइ | ७ | २,३ |
| अाइल (दे०) | ५(२) | २२ |
| अाइलोदग (दे०) | ५(१) | ७५ |
| अारु | ८ | ५७ |
| अि | ४ | सू० ९ |
| | २ चू० | ८ |

३०

| | | | | | |
|---------------|-------|-------------|----------------|-------------|-------|
| वित्त * | | | चिद्यत्त (दि०) | ५(१) | १७,६५ |
| -चित्तए | ५(१) | ६१ | चिरं | १ चू० | १६ |
| -चित्ते | ५(१) | ६४ | चिरकाल | १ चू० सू० १ | |
| चिक्कण | ६ | ६५ | चिराघोषं | ५(१) | ७६ |
| चिट्ट * | | | | १ चू० सू० १ | |
| -चिट्ट | ७ | ४७ | चुय | १ चू० | ३,१३ |
| | ८ | १३ | चुल्लपिठ | ७ | १८ |
| -चिट्टइ | ४ | १० | चूलिया | २ चू० | १ |
| -चिट्टे | ४ | ७ | चै | १ चू० | १६ |
| | ८ | १६ | चैय | ५(१) | २,६० |
| -चिट्टेज्ज | ५(२) | ६१ | | ६ | ६६ |
| -चिट्टेज्जा | ४ सू० | २२ | | १ चू० | १४ |
| | ५(१) | २६ | चेल | ४ सू० | २१ |
| | ५(२) | ६ | चोह्य | ६ | २,४ |
| | ८ | ११,४५ | चोर | ७ | १२ |
| -चिट्टावेज्जा | ४ सू० | २२ | | | |
| चिट्ठंत | ४ सू० | २२ | छ | | |
| चिट्ठमाण | ४ | २ | | | |
| | ५(१) | २७ | छ | ३ | ११ |
| चिट्ठित्ताण | ५(२) | ८ | | ४ सू० | ६,१० |
| चित्त | १० | १ | | ७ | ५६ |
| | १ चू० | सू० १ | | १० | ५ |
| चित्तमिति | ८ | ५४ | छद | ५(१) | ३७ |
| चित्तमंत | ४ | सू० ४ से ८, | | ५६(२) | २० |
| | | १३,१५ | | ६(३) | १ |
| | ६ | १३ | छंदिय | १० | ६ |

| | | | | | |
|--------------|-------|---------------|------------|-------|------------|
| छज्जीवणिया | ४ | सू० १ से ३ | ज | | |
| | ४ | २८ | ज | १ | १ |
| छट्ठ | ४ | सू० ९, १६, १७ | जअ | ७ | ५० |
| छहु * | | | जइ (यदि) | २ | ९ |
| -छहुए | ५(१) | ८५ | | ५(१) | ९४, ९५, ९८ |
| | ५(२) | १ | | ५(२) | २ |
| छहुण | ६ | ५१ | | ६ | ११, १३ |
| छण * | | | | ८ | २१ |
| -छनति | ६ | ५१ | | १ चू० | ९ |
| छत्त | ३ | ४ | जइ (यति) | २ चू० | ६ |
| छमा | १ चू० | २ | जओ | ७ | ११ |
| छविइय | ७ | ३४ | | २ चू० | ९ |
| छाय | ९(२) | ७ | जंतलट्टि | ७ | २८ |
| छारिय | ५(१) | ७ | जंतु | १ चू० | १५, १६ |
| छिद्र * | | | जकख | ९(२) | १०, ११ |
| -छिद्रावाए | १० | ३ | जग (दे०) | ५(१) | ६८ |
| -छिद्राहि | २ | ५ | जग(जगत्) | ८ | १२ |
| -छिदे | १० | ३ | जगनिस्सिय | ८ | २६ |
| -छिदेज्जा | ८ | १० | जड़ | ६ | ६० |
| छिदित्तु | १० | २१ | जण * | | |
| छिन्न | ४ | सू० २२ | -जणंति | ९(३) | ८ |
| | ५(१) | ७० | जण | २ चू० | २ |
| | ७ | ४२ | जत्त | ९(३) | १३ |
| छिवाडी (दे०) | ५(२) | २० | जत्य | ५(१) | २०, २१ |
| छू | १ चू० | ५ | | ५(२) | ४८ |
| छेय | ४ | १०, ११ | | ७ | ९ |

| | | |
|------------|--------|------------|
| जत्थ | २ चू० | १४ |
| जन्न | १ चू० | १२ |
| जय (यत्) | ४ | ८, २८ |
| | ५(१) - | ६, ८१, ८६, |
| | | ९६ |
| | ५(२) | ७ |
| | ६ | ३८ |
| | ७ | ५६ |
| | ८ | १९ |
| जय (यत्) * | | |
| -जए | ८ | १६ |
| -जएजा | २ चू० | ६ |
| जया | ४ | १४ से २५ |
| | १ चू० | १ से ७ |
| जरा | ६ | ५९ |
| | ८ | ३५ |
| जराउय | ४ | सू० ९ |
| जल | ९(२) | १२ |
| | १ चू० | सू० १ |
| जल * | | |
| -जलावए | १० | २ |
| -जले | १० | २ |
| जलइत्तए | ६ | ३३ |
| जलण | ९(१) | ११ |
| जलिय | २ | ६ |
| | ९(१) | ६ |

| | | |
|--------------|-------|-------------|
| जल्लिय (दि०) | ८ | १८ |
| जवण | ९(३) | ४ |
| जस | ५(२) | ३६ |
| जसंसि | ६ | ६८ |
| जसोकामि | २ | ७ |
| | ५(२) | ३५ |
| जह | २ चू० | ११ |
| जहक्कम | ५(१) | ८९, ९५ |
| जहा | १ | २, ४ |
| | २ | १०, ११ |
| | ४ | सू० ३, ८, ९ |
| | ५(१) | ९० |
| | ५(२) | ३९ |
| | ६ | ६ |
| | ८ | १, ५३, ५६, |
| | | ५९ |
| | ९(१) | ११, १४, १५ |
| | ९(२) | ३ |
| | ९(४) | सू० ३ से ७ |
| | १० | २ |
| | १ चू० | ८ |
| जहाभाग | ५(१) | १३ |
| जहारिह | ७ | १७, २० |
| जहिं | ५(१) | ३५ |
| जहोवड्ड | ९(३) | २ |
| जाइ | ७ | २१ |
| | १० | १९ |

| | | |
|---------------|-------|--------------|
| जाइ | ८ | ३० |
| | ६(४) | ७ |
| | १० | १४, २१ |
| जाइत्ता | ८ | ५ |
| जाइपह | ६(१) | ४ |
| | १० | १४ |
| | २ चू० | १६ |
| जाइमत | ७ | ३१ |
| जागरमाण | ४ | सू० १८ से २३ |
| जाण # | | |
| -जाणइ | ४ | ११, २२, २३ |
| -जाणई | ४ | ११ |
| -जाणति | ५(२) | ४०, ४५ |
| -जाणंतु | ५(२) | ३४ |
| -जाणेज्ज | ५(१) | ४७, ७६ |
| -जाणेज्जा | ७ | ८ |
| जाण (जानत्) | ६ | ६ |
| | ८ | ३१ |
| जाण (यान) | ७ | २६ |
| जाणिऊण | ५(१) | ६६ |
| जाणित्ता | ५(१) | २४ |
| | ८ | १६ |
| जाणित्तु | ८ | १३ |
| जाणिय | १० | १८ |
| | १ चू० | ११ |
| जाणिया | ५(२) | २४ |
| | ७ | ५६ |

| | | |
|----------|---------|----------------------------------|
| जाय | २ | ६ |
| | ४ | सू० २२, २३ |
| जाय # | | |
| -जाएज्जा | ५(२) | २६ |
| जायतेय | ६ | ३२ |
| जाला | ४ | सू० २० |
| जाव | ७ | २१ |
| | ८ | ३५ |
| जावत | ६ | ६ |
| जावज्जीव | ४ | सू० १० से १६, १८ से २३ |
| | ६ | २८, ३१, ३५, ३६, ४२, ४५, ६२ |
| जिडंदिय | ३ | १३ |
| | ८ | ३२, ४४, ६३ |
| | ६(३) | ८, १३ |
| | ६(४) | १ |
| | २ चू० | १५ |
| जिण | ४ | २२, २३ |
| | ५(१) | ६२ |
| जिण # | | |
| -जिणे | ८ | ३८ |
| जिणत | ४ | २७ |
| जिणदेसिय | : १ चू० | ६ |

| | | |
|-----------|-------|-------------|
| जिणमय | ६(३) | १५ |
| जिणवयण | ६(४) | ५ |
| | १ चू० | १८ |
| जिणसंथव | ५(१) | ६३ |
| जिणसासण | ८ | २५ |
| जिय | ८ | ४८ |
| जीव † | | |
| -जीवइ | २ चू० | १५ |
| जीव | ४ | सू० ४ से ५८ |
| | ४ | १२ से १५ |
| | ५(१) | ६८ |
| | ६ | १० |
| | ८ | २ |
| | ६(१) | ५ |
| जीविउं | ६ | १० |
| जीविय | २ | ७ |
| | ८ | ३४ |
| | १० | १७ |
| | १ चू० | सू० १, १६ |
| जीवियट्टि | ६(१) | ६ |
| जुगमाया | ५(१) | ३ |
| जुत्त | ३ | १० |
| | ८ | ४२, ६३ |
| | ६(१) | १५ |

| | | |
|----------|-------|------------|
| जुत्त | ६(२) | १४ |
| | ६(४) | ४ |
| | १० | १० |
| जुद्ध | ५(१) | १२ |
| जम्ह | २ | ८, ६ |
| जुव | ७ | २५ |
| जोइ | २ | ६ |
| | ३ | ४ |
| | ८ | ६२ |
| जोग | ४ | २३, २४ |
| | ५(१) | १ |
| | ७ | ४० |
| | ८ | ४, १७, ४२, |
| | | ५०, ६१ |
| | ६(१) | १५, १६ |
| | २ चू० | १५ |
| जोगय | ८ | ६१ |
| जोय | ६ | २६, ४०, ४३ |
| जोव्वण | १ चू० | ६ |
| | | |
| | | |
| भुसिर | ५(१) | ६६ |
| भोसइत्ता | १ चू० | सू० १ |

| | | |
|-----------|---|----|
| ट | | |
| टाल (दि०) | ७ | ३२ |

| | | |
|------|------|----|
| ठ | | |
| ठविय | ५(१) | ६५ |
| ठाण | ५(१) | १६ |

| | | |
|--|-------|------------|
| | ६ | ७,८,५८ |
| | ६(२) | १७ |
| | ६(४) | सू० १ से ३ |
| | १ चू० | सू० १ |
| | १ चू० | ३ |

| | | |
|--------|------|-------|
| ठावय † | | |
| -ठावयई | ६(४) | ३ |
| ठिय | ६(४) | ३ |
| | १० | २० |
| ठियप्प | ६ | ४६ |
| | १० | १७,२१ |

| | | |
|----------|------|--------|
| ड | | |
| डह = | | |
| -डहेज्जा | ६(१) | ७ |
| डहर | ५(२) | २६ |
| | ६(१) | २ से ४ |
| | ६(३) | ३,१२ |

| | | |
|---|------|---|
| ण | | |
| ण | ५(२) | २ |

| | | |
|----|------|----|
| णं | ५(२) | २६ |
| णु | ७ | ५१ |
| णो | ६ | ६ |
| | ७ | ६ |

| | | |
|-----------|------|--------|
| त | | |
| त (तत्) | १ | २ |
| त (त्वत्) | २ | ८,६ |
| तज्जुय | ५(२) | ७ |
| तओ | ४ | सू० २३ |
| | ४ | १० |
| | ५(१) | ६६ |
| | ५(२) | ३,१३ |
| | ६(२) | १ |
| | ६(३) | ७ |

| | | |
|--------------|------|--------|
| तजहा | ४ | सू० ३ |
| तच्च | ४ | सू० १३ |
| तज्जणा | १० | ११ |
| तज्जायसंसट्ट | २ | ६ |
| तण | ४ | सू० ८ |
| | ५(१) | ८४ |
| | ८ | २,१० |
| | १० | ४ |

| | | |
|-------|------|--------|
| तणग | ५(२) | १६ |
| तण्हा | ५(१) | ७,८,७६ |

| | | | | | |
|---------------|-------|-------------|-----------|-------|------------|
| तत्तानिव्वुड | ५(२) | २२ | तव | ४ | २७ |
| तत्तफामुय | ८ | ६ | | ५(२) | ६,४२ |
| तत्तानिव्वुड- | | | | ६ | १,६७ |
| भोड्त | ३ | ६ | | ७ | ४६ |
| तत्तो | ५(२) | ४८ | | ८ | ४०, ६१, ६२ |
| तत्त्य | ५(१) | ५, ६, | | ९(४) | १, ४ |
| | | २५ से २८, | | १० | ७, १२, १४ |
| | | ३६ से ३८, | | १ चू० | सू० १ |
| | | ६६, ८३, ८४, | तवण | ९(१) | १४ |
| | | ९५ | तवतेण | ५(२) | ४६ |
| | ५(२) | ११, २७, ४७, | तवसमाही | ९(४) | सू० ३, ६ |
| | | ५० | | ९(४) | ४ |
| | ६ | ७, ८, २४, | तवस्सि | ५(२) | ४२ |
| | | ५१, ५२ | | ६ | ५९ |
| | १ चू० | १ | | ८ | ३० |
| | २ चू० | १४ | | ९(३) | १३ |
| तन्निस्सिय | ५(१) | ६८ | तवोक्कम्म | ६ | २२ |
| तमस | ५(१) | २० | तम | ४ | सू० ९, ११ |
| तयस्सिय | ६ | २७, ३०, | | ५(१) | ५ |
| | | ४१, ४४ | | ६ | ८, २३, २७, |
| | | | | | ३०, ४१, ४४ |
| तया | ४ | १४ से २५ | | | |
| तरित्तु | ९(२) | २३ | | ८ | २, ११ |
| तरुणग | ५(२) | १९ | | १० | ४ |
| तरुणिया | ५(२) | २० | तसकाड्य | ४ | सू० ३ |
| तव | १ | १ | तसकाय | ४ | सू० ९ |
| | ३ | १५ | | ६ | ४३ से ४५ |

| | | | | | |
|-----------|-------|--|-----------|------|--|
| तसिय | ४ | सू० ६ | तारा | ६(१) | १५ |
| तह | २ चू० | ८ | तारिस | ५(१) | २८, २९, ३१, ३२, ४१, ४३, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८, ६०, ६२, ६४, ७२, ७४, ७६ |
| तहप्पगार | ४ | सू० २३ | | | |
| तहा | ५(१) | ३०, ४७, ४९, ५१, ५३, ५९, ६१, ७१, ७५ | | | |
| | ५(२) | २१ | | | |
| | ६ | ६ | | | |
| | ७ | ३२, ३८, ५७ | | | |
| | ८ | ११, ५६ | | | |
| | ९(२) | १८ | | | |
| | १ चू० | ११ | | | |
| तहाभूय | ८ | ७ | | | |
| तहामुत्ति | ७ | ५ | | | |
| तहाविह | ५(१) | ७१, ८४ | | | |
| | १ चू० | १४ | | | |
| तहि | २ चू० | ११ | | | |
| तहेव | ५(१) | ७१ | | | |
| ता | ५(२) | ३४ | | | |
| | १ चू० | १५ | | | |
| ताड | ३ | १, १५ | | | |
| | ६ | २०, ३६, ६६, ६८ | | | |
| | ८ | ६२ | | | |
| तारिय | ५(१) | ६४ | | | |
| तारिम | ७ | ३८ | | | |
| | | | तारिसग | ४ | २६, २७ |
| | | | तालउड | ८ | ५६ |
| | | | तालियट | ४ | सू० २१ |
| | | | | ६ | ३७ |
| | | | | ८ | ६ |
| | | | ताव | ७ | २१ |
| | | | | ८ | ३५ |
| | | | त्ति | ६ | ५६ |
| | | | त्तिदुय | ५(१) | ७३ |
| | | | त्तिक्ख | ६ | ३२ |
| | | | त्तिगुत्त | ३ | ११ |
| | | | | ६(१) | १४ |

| | | |
|-------------------------------------|-------|---------------------------|
| तिगुत्ति | १ चू० | १८ |
| तित्तग | ५(१) | ६७ |
| तित्थ | ७ | ३७ |
| तिरिक्खजोणि | ५(२) | ४८ |
| तिरिक्खजोणिय (तिर्यग्-योनिक) (ज) | ४ | सू० ६ |
| तिरिक्खजोणिय (तिर्यग्-योनिक) | ४ | सू० १४ |
| तिरिच्छसपाइम | ५(१) | ८ |
| तिरिय | ७ | ५० |
| तिलपप्पडग | ५(२) | २१ |
| तिलपिट्ट | ५(२) | २२ |
| तिविह | ४ | सू० १० से १६, १८ से २३ |
| | ६ | २६, ४०, ४३ |
| | ८ | ४ |
| तिव्व | ५(२) | ५० |
| तु | ५(१) | ३७ |
| तुबाग | ५(१) | ७० |
| तुट्ट | ६(२) | १५ |
| तुयट्ट * | | |
| -तुयट्टावेज्जा | ४ | सू० २२ |
| -तुयट्टेज्जा | ४ | सू० २२ |
| तुयट्ट त | ४ | सू० २२ |
| तुस | ५(१) | ७ |

| | | |
|--------------|------|------------|
| तेइदिय | ४ | सू० ६ |
| तेउ | ४ | सू० ६ |
| | ५(१) | ६१ |
| तेउकाइअ | ४ | सू० ३ |
| तेउकाय | ६ | ३५ |
| तेगिच्छ | ३ | ४ |
| तेण | ५(२) | ३७, ३६ |
| | ७ | १२ |
| तेणग | ७ | ३६, ३७ |
| तेल्ल | ६ | १७ |
| तो | ५(१) | ६५ |
| तोरण | ७ | २७ |
| तोस * | | |
| -तोसए | ६(१) | १६ |
| | थ | |
| थम | ६(१) | १ |
| | ६(३) | १२ |
| थणग | ५(१) | ४२ |
| थद्ध | ६(२) | ३ |
| थावर | ४ | सू० ११ |
| | ५(१) | ५ |
| | ६ | ६, २३ |
| | १० | ४ |
| थिग्गल (दे०) | ५(१) | १५ |
| थिर | ७ | ३५ |
| थूल | ४ | सू० १३, १५ |
| | ७ | २२ |

इसवेआलिय शब्द-सूची

| | | | |
|------------|------|-----|--------|
| धेर | ६(४) | सू० | १ से ३ |
| धेरअ | १ | चू० | ६ |
| धोव | ५(१) | | ७८ |
| | ८ | | २६ |
| व | | | |
| दढ | ४ | सू० | १० |
| | ६(२) | | ४, ८ |
| दडग | ४ | सू० | २३ |
| दत | १ | | ५ |
| | ३ | | १३ |
| | ४ | | ६ |
| | ५(१) | | ६ |
| | ६ | | ३ |
| | ८ | | २६ |
| | ६(४) | | ५ |
| दंतपहोयणा | ३ | | ३ |
| दतवण (दि०) | ३ | | ६ |
| दंतसोहण | ६ | | १३ |
| दसण | ४ | | २१, २२ |
| | ५(१) | | ७६ |
| | ६ | | १ |
| | ७ | | ४६ |
| दग | ५(१) | | ४५ |
| | ८ | | २, ६ |

| | | |
|-----------|-------|------------|
| दगभवण | ५(१) | १५ |
| दगमट्टिआ | ५(१) | ३, २६ |
| दच्छ * | | |
| -दच्छसि | २ | ६ |
| दटुव्व | २ चू० | ४ |
| दट्टूणं | ५(१) | २१ |
| | ५(२) | ३१, ४६ |
| | ६ | २५ |
| | ८ | ५४ |
| दमअ (दि०) | ७ | १४ |
| दमइत्ता | ५(१) | १३ |
| दम्म | ७ | २४ |
| दया | ४ | १० |
| | ६(१) | १३ |
| दयाहिगारि | ८ | १३ |
| दरिसणिय | ७ | ३१ |
| दलय * | | |
| -दलाहि | ५(१) | ७८ |
| दवदव | ५(१) | १४ |
| दव्वी | ५(१) | ३२, ३५, ३६ |
| दस | ६ | ७ |
| दह * | | |
| -दहे | ६ | ३३ |
| दा * | | |
| -दाए | ५(१) | ६१, ६३ |
| | ५(२) | १४, १६ |

| | | | | | |
|-------------|-------|--------------|---------|-------|---------------------------|
| -दावए | ५(१) | ४६,८० | दिया | ६ | २४ |
| -देज्ज | ५(२) | २७ | दिच्च | ४ | सू० १४ |
| -देज्जा | ५(१) | ४६ | | ४ | १६, १७ |
| दाइय | ५(२) | ३१ | | ६(२) | ४ |
| दाढा | १ चू० | १२ | दिस्स | ७ | ५३ |
| दाण | १ | ३ | | १० | १२ |
| | ५(१) | ४७ | दीसय | ५(२) | २८ |
| दायग | ५(२) | १२ | दीह | ६ | ६४ |
| दायव्व | २ चू० | २ | | ७ | ३१ |
| दार (द्वार) | ५(१) | १५ | दु | ४ | १४ |
| | ५(२) | ६ | | ५(१) | ३७, ३८, १०० |
| दार (दार) | १ चू० | ८ | | ७ | १ |
| दारग | ५(१) | २२, ४२ | दुक्कर | ३ | १४ |
| दारुण | ८ | २६ | दुक्ख | २ | ५ |
| | ६(२) | १४ | | ३ | १३ |
| दावय | ५(१) | ४६, ६७ | | ८ | २७ |
| दाहिणओ | ६ | ३३ | | १० | ११ |
| दिज्जमाण | ५(१) | ३५ से ३८ | | १ चू० | सू० १ |
| दिट्ठ | ५(१) | ६६ | | १ चू० | ११, १६ |
| | ६ | ६, ५१ | दुक्खसह | ८ | ६३ |
| | ८ | २०, २१, ४८ | दुग्गअ | ६(२) | १६ |
| दिट्ठि | ८ | ५४ | दुग्गड | ५(१) | ११ |
| दिट्ठिवाय | ८ | ४९ | | ६ | २८, ३१, ३५, ३६, ४२, ४५ |
| दित्त | ५(१) | १२ | दुग्घ | ५(२) | १ |
| दिन्त | ५(२) | १३ | | | |
| दिया | ४ | सू० १८ से २३ | | | |

| | | |
|--------------|-------------|--------|
| दुच्चर | ६ | ५ |
| दुन्चिण्ण | १ चू० सू० १ | |
| दुज्फ | ७ | २४ |
| दुट्ट | ७ | ५५, ५६ |
| दुतोसअ | ५(२) | ३२ |
| दुन्नामधेज्ज | १ चू० | १३ |
| दुप्पउत्त | २ चू० | १४ |
| दुप्पजीवि | १ चू० सू० १ | |
| दुप्पडिक्कंत | १ चू० सू० १ | |
| दुप्पडिलेहग | ५(१) | २० |
| | ६ | ५५ |
| दुवुद्धि | ६(२) | १६ |
| दुम | १ | २ |
| | ६(२) | १ |
| दुमपुप्फिया | १ | |
| दुम्मइ | ५(२) | ३६ |
| दुम्मणिय | ६(३) | ८ |
| दुरहिट्ठिय | ६ | ४, १५ |
| दुरासय | २ | ६ |
| | ६ | ३२ |
| दुरुत्त | ६(३) | ७ |
| दुरुत्तर | ६ | ६५ |
| | ६(२) | २३ |
| दुरुद्धर | ६(३) | ७ |
| दुरुहमाण | ५(१) | ६८ |
| दुल्लह | ४ | २८ |

| | | |
|------------|-------------|--|
| दुल्लभ | १ चू० सू० १ | |
| दुल्लह | ४ | २६ |
| | ५(१) | १०० |
| दुव्वाई | ६(२) | ३ |
| दुव्विहिय | १ चू० | १२ |
| दुस्समा | १ चू० सू० १ | |
| दुस्सह | ३ | १४ |
| दुस्सेज्जा | ८ | २७ |
| दुह | ६(२) | ५, ७, १० |
| | १ चू० | १४, १५ |
| | २ चू० | १६ |
| दुहअ | ७ | १४ |
| दुहओ | ६(२) | २१ |
| दूरओ | ५(१) | १२, १६ |
| | ६ | ५८ |
| देंतिय | ५(१) | २८, ३१, ३२, ४१, ४३, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५६, ५७, ५९, ६०, ६२, ६४, ६४, ६६, ६८, ६९, ७०, ७२, ७४, ७६, ७८, ८० |
| | ५(२) | १५, १७, २० |
| देव | १ | १ |
| | ४ | सू० ६ |
| | ७ | ५०, ५२ |
| | ६(२) | १०, ११ |
| | ६(४) | ७ |

| | | | | | |
|--------------|-------|-------------|--------------|-------|------------|
| देवकिञ्चित्त | ५(२) | ४६, ४७ | धम्म | १ | १ |
| देवत्त | ५(२) | ४७ | | २ | १० |
| देवया | १ चू० | ३ | | ४ | १६, २० |
| देवलोय (ग) | ३ | १४ | | ८ | ३५ |
| | १ चू० | १० | | ६(२) | २ |
| देस | २ चू० | ८ | | ६(३) | ८ |
| देसिय | ५(१) | ६२ | | १० | २० |
| | ६ | ८ | | १ चू० | सू० १ |
| देह | ५(१) | ६२ | | १ चू० | १, २, १२, |
| | ६ | २१ | | | १३ |
| | ८ | २७ | | २ चू० | १ |
| | १ चू० | १७ | धम्मकामी | ६(१) | १६ |
| देहपलोयणा | ३ | ३ | धम्मजीवि | ६ | ४६ |
| देहवात्त | १० | २१ | धम्मज्जाण | १० | १६ |
| दोच्च | ४ सू० | १२ | धम्मट्टकहा | ६ | ३ |
| दोत्त | २ | ५ | धम्मत्यकाम | ६ | ३ |
| | ५(१) | ११, ६६, ६६ | धम्मपण्णत्ति | ४ | सू० १ ते ३ |
| | ५(२) | ३५, ३७ | | ४ | १२ |
| | ६ | १६, २५, २८, | धम्मपय | ६(१) | १७ |
| | | ३१, ३५, ३६, | धम्मसात्तण | १ चू० | १७ |
| | | ४२, ४५ | धर | ८ | ४६ |
| | ७ | ५६ | धाय (दे०) | ७ | ५१ |
| | ८ | ३५ | धार * | | |
| | ६(३) | ११ | -धारण | ५(१) | १६ |
| दीत्तन्न | ७ | १३ | -धारत्ति | ६ | १६ |

| | | |
|-----------|-------|--------|
| धारण | ३ | ४ |
| | ५(१) | ६२ |
| धिञ्मभ | २ चू० | १५ |
| धिरत्थु | २ | ७ |
| धीर | ३ | ११ |
| | ७ | ४,७,४७ |
| | २ चू० | १४ |
| धुण * | | |
| -धुणइ | ४ | २०, २१ |
| | ६ (४) | ४ |
| | १० | ७ |
| -धुणांति | ६ | ६७ |
| धुणिय | ६(३) | १५ |
| धुन्नमल | ७ | ५७ |
| धुयमोह | ३ | १३ |
| धुव | ८ | १७, ४२ |
| धुवजोग | १० | १० |
| धुवजोगि | १० | ६ |
| धुवसीलया | ८ | ४० |
| धूमकेउ | २ | ६ |
| धूया | ७ | १५ |
| धूवणेत्ति | ३ | ६ |
| धेणु | ७ | २५ |
| धोय | ५(१) | ७६ |
| धोयण | ६ | ५१ |

न

| | | |
|-----------|-------|-------------|
| न | १ | २ |
| नई | ७ | ३८ |
| नंगल | ७ | २८ |
| नक्खत्त | ८ | ५० |
| | ६(१) | १५ |
| नगर | ४ सू० | १३, १५ |
| | ५(१) | २ |
| | २ चू० | ८ |
| नगिण | ६ | ६४ |
| नच्चा | ५(१) | १६, २६, ७७ |
| | ७ | ३६, ४० |
| | ८ | ३४, ४६, ५६ |
| | ६(१) | २, ४ |
| | ६(३) | १ |
| नत्तुणिय | ७ | १८ |
| नत्तुणिया | ७ | १५ |
| नमस * | | |
| -नमसे | ६(१) | ११ |
| -नमंसंति | १ | १ |
| | ६(२) | १५ |
| नमोक्कार | ५(१) | ६३ |
| नर | ५(२) | ४६ |
| | ७ | ५, ५३ |
| | ८ | ५६ |
| | ६(२) | ४, ७, ६, २२ |

| | | | | | |
|----------|-------|------------|--------------|-------|--------------------------|
| नर | ६(३) | ६ | नायपुत्र | ५(२) | ४६ |
| | १ चू० | १८ | नारी | २ | ६ |
| नरय | ५(२) | ४८ | | ८ | ५२, ५४, ५५ |
| | १ चू० | ६ | | ६(२) | ७, ६ |
| नव | ६ | ६७ | नालिआ | ५(२) | १८ |
| नह | ७ | ५२ | नालीया | ३ | ४ |
| नहंसि | ६ | ६४ | नावा | ७ | २७, ३८ |
| ना * | | | नास * | | |
| -नाहिइ | ४ | १०, १२, १३ | -नासेइ | ८ | ३७ |
| नाग | २ | १० | नास | ६(१) | ५ |
| | ६(१) | ४ | नासण | ८ | ३७ |
| | १ चू० | ८, १२ | नासा | ८ | ५५ |
| नाण | ४ | १०, २१, २२ | निउण | ६ | ८ |
| | ६ | १ | | ६(३) | १५ |
| | ७ | ४६ | | २ चू० | १० |
| | ६(४) | ३ | निंद * | | |
| | १० | ७ | -निंदामि | ४ | सू० १० से १६ १८ से २२ |
| नाणा | ६(१) | ११ | निकाय | ४ | सू० ६, १० |
| नाणापिड | १ | ५ | निकखंत | ८ | ६० |
| नाभि | ७ | २८ | निकखम * | | |
| नाम | ४ | सू० १ से ३ | -निकखमे | ५(२) | ४ |
| नाम * | | | निकखम्म | १० | १, २० |
| -नामेइ | ७ | ४ | निक्खित्त | ५(१) | ५६, ६१ |
| नामधिज्ज | ७ | १७, २० | निक्खित्ताणं | ५(१) | ३० |
| नाय | ६(२) | २१ | निक्खित्तु | ५(१) | ४२ |

| | | | | | |
|---------------|-------|----------|--------------------|-------|-------|
| निक्खि | ५(१) | ८५ | निण्हव * | | |
| -निक्खि | | | -निण्हवे | ८ | ३२ |
| निगामसाइ | ४ | २६ | निहा | ८ | ४१ |
| निगंथ | ३ | १,१०,११ | निहिस* | | |
| | ६ | ४,१०,१६, | -निहिसे | ७ | १० |
| | | २५,४६, | | ८ | २२ |
| | | ५२,५४ | निहोसवत्ति | ६(२) | १५,२३ |
| निगंथत्त | ६ | ७ | निद्धणे | ७ | ५७ |
| निगहण | ३ | ११ | निप्पुलाअ | १० | १६ |
| निन्न | ५(२) | ३६ | निमत * | | |
| | ६ | २२ | -निमंतए | ५(१) | ३७,३८ |
| | ८ | ३,११,१६, | -निमतेज्ज | ५(१) | ६५ |
| | | ५३ | निमित्त | ८ | ५० |
| | ६(१) | १२ | नियच्छ * | | |
| | ६(३) | ४ | -नियच्छंति | ६(२) | १४ |
| | ६(४) | १,४ | नियट्ट * | | |
| | १० | १,१२,२१ | -नियट्टेज्ज | ५(१) | २३ |
| | २ चू० | १५ | नियडि (निकृति)५(२) | | ३७ |
| निच्छिय | १ चू० | १७ | नियडि | | |
| निज्जरट्टिय | ६(४) | ४ | (निकृति) (मत्)६(२) | | ३ |
| निज्जरा | ६(४) | सू० ६ | नियत्तण | ६(३) | ३ |
| निज्जायखुवरयअ | १० | ६ | नियत्तिय | ५(२) | १३ |
| निज्झा * | | | नियम | २ चू० | ४ |
| -निज्झाए | ८ | ५४,५७ | नियाग | ३ | २ |
| निट्ठाण | ८ | २२ | | ६ | ४८ |
| निट्ठिय | ७ | ४० | निरअ (य) | १ चू० | १०,११ |

| | | |
|---------------|-------|--------|
| निरासय | ६(४) | ४ |
| निरुभित्ता | ४ | २३, २४ |
| निख्वक्केस | १ चू० | सू० १ |
| निवार * | | |
| -निवारए | २ | १ |
| निवेस * | | |
| -निवेसयति | ६(३) | १३ |
| निव्वडिय | ६ | २४ |
| निव्वाण | ५(२) | ३२ |
| निव्वाव * | | |
| -निव्वावए | ८ | ८ |
| -निव्वावेज्जा | ४ | सू० २० |
| निव्वावत | ४ | सू० २० |
| निव्वाविया | ५(१) | ६३ |
| निव्विद * | | |
| -निव्विदए | ४ | १६, १७ |
| निव्विगइ | २ चू० | ७ |
| निसंत | ६(१) | १४ |
| निसन्न | ५(१) | ४० |
| निसिर * | | |
| -निसिर | ८ | ४८ |
| निसीअ * | | |
| -निसीए | ८ | ४४ |
| -निसीएज्ज | ५(२) | ८ |
| -निसीएज्जा | ४ | सू० २२ |
| | ५(१) | ४० |

| | | |
|---------------|------|------------|
| -निसीएज्जा | ८ | ५ |
| -निसीयावेज्जा | ४ | सू० २२ |
| निसीयत | ४ | सू० २२ |
| निसीहिया | ५(२) | २ |
| निसेज्जा | ३ | ५ |
| | ६ | ५४, ५६, ५९ |
| निस्सकिय | ५(१) | ५६, ७६ |
| | ७ | १० |
| निस्सर * | | |
| -निस्सरई | २ | ४ |
| निस्सिंचिया | ५(१) | ६३ |
| निस्सिय | १० | ४ |
| निस्सेणि | ५(१) | ६७ |
| निस्सेस | ६(२) | २ |
| निहा * | | |
| -निहावए | १० | ८ |
| -निहे | १० | ८ |
| निहुअ | २ | ८ |
| | ६ | ३ |
| निहुअप्प | ६ | २ |
| निहुईदिय | १० | १० |
| नीम | ५(२) | २१ |
| नीय | ५(२) | २५ |
| | ६(२) | १७ |
| नीयदुवार | ५(१) | २० |
| नीरय | ३ | १४ |
| | ४ | २४, २५ |

| | | |
|--------------|-------|-------|
| नीलिआ | ७ | ३४ |
| नीसा (दे०) | ५(१) | ४५ |
| नीसेस | ५(१) | ८८ |
| नु | २ | १ |
| | ६(१) | ५ |
| नेउणिय | ६(२) | १३ |
| नेरइय | ४ | सू० ६ |
| | १ चू० | १५ |
| नो | २ | ४ |

प

| | | |
|-----------|-------|--------|
| पइरिक्कया | २ चू० | ५ |
| पइट्टिय | ४ | सू० २२ |
| पईव | ६ | ३४ |
| पउज * | | |
| -पउजे | ८ | ४० |
| | ६(१) | १२ |
| | ६(३) | २, ३ |
| पउत्त | ५(१) | ६७ |
| पउम | ५(२) | १४, १६ |
| पउमग | ६ | ६३ |
| पओअ | ६(२) | १६ |
| पओय | ७ | ५२ |
| पक | १ चू० | ७ |
| पंच | ३ | ११ |

| | | |
|----------|-------|------------|
| पंच | ४ | सू० १७ |
| | ६(३) | १४ |
| | १० | ५ |
| पंचम | ४ | सू० १५ |
| पॉचिदिय | ४ | सू० ६ |
| | ७ | २१ |
| पंजलि | ६(१) | १२ |
| पंडग | ७ | १२ |
| पंडिय | २ | ११ |
| | ५(२) | २६, २७ |
| | ६(४) | १ |
| | १ चू० | ११ |
| पंत | ५(२) | ३४ |
| पंसुखार | ३ | ८ |
| पकुव्व * | | |
| -पकुव्वई | ५(२) | ३२ |
| | ६(२) | १६ |
| पक्क | ७ | ३२, ३४, ४२ |
| पक्कम * | | |
| पक्कमंति | ३ | १३ |
| पक्कओ | ८ | ४५ |
| पक्कंद * | | |
| -पक्कंदे | २ | ६ |
| पक्कलंत | ५(१) | ५ |
| पक्किल | ७ | २२ |

| | | | | | |
|----------------|-------|----------------|--------------|-------|-------------------------------|
| पकखोड़ * | | | पट्टिय | २ चू० | २ |
| -पकखोडावेज्जा | ४ | सू० १९ | पड * | | |
| -पकखोडेज्जा | ४ | सू० १९ | -पडइ | ६ | ६५ |
| पकखोडंत | ४ | सू० १९ | पडंत | ५(१) | ८ |
| पगइ | ९(१) | ३ | पडागा | १ चू० | सू० १ |
| पगड | ५(१) | ४७, ४९, ५१, ५३ | पडिआय * | | |
| | ८ | ५१ | -पडियायई | १० | १ |
| | १ चू० | सू० १ | पडिकुट्ट | ५(१) | १७ |
| पञ्चग | ८ | ५७ | पडिकोह | ६ | ५७ |
| पञ्चखलो | ९(३) | ९ | पडिककंत | ४ | सू० ९ |
| पञ्चखल | ५(२) | २८ | पडिककम * | | |
| पञ्चखल * | | | -पडिककमामि | ४ | सू० १० से १६, सू० १८ से २२ |
| -पञ्चखलामि | ४ | सू० ११ | -पडिककमे | ५(१) | ८१, ९१ |
| पञ्चुपन्न | ७ | ८ से १० | | ५(२) | ४ |
| पञ्छा | ५(१) | ९१ | पडिगाह * | | |
| | ९(२) | १ | -पडिगाहेज्ज | ५(१) | २७, ५६, ७९ |
| | १ चू० | २ से ८ | | ६ | ४७ |
| पञ्छाकम्म | ५(१) | ३५ | | ८ | ६ |
| | ६ | ५२ | पडिगाह- | ४ | सू० २३ |
| पज्जय | ७ | १८ | | ५(२) | १ |
| पज्जव | १ चू० | १६ | पडिग्घाअ | ६ | ५७ |
| पज्जालिया | ५(१) | ६३ | पडिच्छ * | | |
| पज्जिया | ७ | १५ | -पडिच्छेज्जा | ५(१) | ३६, ३८ |
| पज्जुवास * | | | पडिच्छन्न | ५(१) | ८३ |
| -पज्जुवासेज्जा | ८ | ४३ | पडिच्छिन्न | ८ | ५५ |
| पट्टवेत्ताणं | ५(१) | ९३ | | | |

| | | | | | |
|---------------|-------|---|-----------------|-------|------------|
| पडिच्छिद्य | ५(१) | ८० | पडियाइयण | १ चू० | सू० ? |
| पडिजागर * | | | पडिलेह * | | |
| -पडिजागरेज्जा | ६(३) | १ | -पडिलेहए | ५(१) | ३७ |
| पडिण | ६ | ३३ | -पडिलेहसि | ५(२) | ५ |
| पडिणीय | ६(३) | ६ | -पडिलेहेज्जा | ५(१) | २५ |
| पडिनिस्सिअ | ४ | सू० २२ | | ८ | १७ |
| पडिन्नद * | | | पडिलेहिस्ता | ८ | १८ |
| -पडिन्नवेज्जा | २ चू० | ८ | पडिलेहित्ताण | ५(१) | ८२ |
| पडिपुच्छिअण | ५(१) | ७६ | | ६(२) | २० |
| पडिपुण्ण | ६(४) | ५ | पडिलेहिय | ४ | सू० २३ |
| पडिपुन्न | ८ | ४८ | पडिलेहिया | ५(१) | ८१, ८६, ८७ |
| पडिवंध | २ चू० | १३ | पडिवज्ज * | | |
| पडिवुद्धजीवि | २ चू० | १५ | -पडिवज्जई | ४ | २३, २४ |
| पडिवोह * | | | पडिवज्जमाण | ६(१) | २ |
| -पडिवोहएज्जा | ६(१) | ८ | पडिवज्जिया | १० | ६२ |
| पडिमा | १० | १२ | पडिसंलीण | ३ | १२ |
| पडिय | १ चू० | २ | पडिसमाहर * | | |
| पडियरिय | ६(३) | १५ | -पडिसमाहरे | ८ | ५४ |
| पडियाइक्ख * | | | पडिसाहर * | | |
| -पडियाइक्खे | ५(१) | २८, ३१, ३२, ४१, ४३, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८, ६०, ६२, ६४, ७२, ७४, ७६ | -पडिसाहरेज्जा | २ चू० | १४ |
| | | | पडिसेह * | | |
| | | | -पडिसेहए | ६(२) | ४ |
| | | | पडिसेहिय | ५(२) | १३ |
| | | | पडिसोय | २ चू० | २, ३ |
| | | | पडिहयपच्चक्खाय- | | |
| | ५(२) | १५, १७, २० | पावकम्म | ४ | १८ से २३ |

| | | |
|------------------|-------|------------|
| पद्म | ४ | सू० ११ |
| | ४ | १० |
| | ६ | ८ |
| पणग | ५(१) | ५६ |
| | ८ | ११, १५ |
| पणास * | | |
| -पणासेइ | ८ | ३७ |
| पणिय | ७ | ४५ |
| पणियट्ट | ७ | ३७, ४६ |
| पणिहाय | ८ | ४४ |
| पणीय | ५(२) | ४२ |
| पणीयरस | ८ | ५६ |
| पणुल्ल * | | |
| -पणुल्लेज्जा | ५(१) | १८ |
| पत्त (पत्र) | ४ | सू० २१ |
| | ६ | ३७ |
| | ८ | ६ |
| | ६(२) | १ |
| पत्त (प्राप्त) | ६(२) | ६, ६, ११ |
| पत्तेय | १० | १८ |
| | १ चू० | सू० १ |
| पत्थ * | | |
| -पत्थए | ५(२) | २३ |
| | ६ | ६० |
| | ८ | १०, २८ |
| पन्नत्त | ६(४) | सू० १ से ३ |

| | | |
|-------------|-------|-------------|
| पन्नत्ति | ८ | ४६ |
| पन्नव | ७ | १ से ३, १३, |
| | | १४, २४, २६, |
| | | २६, ३०, ३६, |
| | | ४४, ४७ |
| पबन्ध * | | |
| -पबन्धेज्जा | ५(२) | ८ |
| पब्भट्ट | १ चू० | ४ |
| पभव | ६(२) | १ |
| पभास * | | |
| -पभासई | ६(१) | १४ |
| पमज्जित्तु | ८ | ५ |
| पमज्जिय | ४ | सू० २३ |
| पमाण | २ चू० | ११ |
| पमाय | ६ | १५ |
| | ६(१) | १ |
| पमेइल्ल | ७ | २२ |
| पय | ८ | ३१, ५० |
| | ६(१) | ११ |
| | ६(४) | सू० ४ से ७ |
| | ६(४) | ६ |
| | १ चू० | सू० १ |
| पय * | | |
| -पए | १० | ४ |
| -पयावए | १० | ४ |
| -पयावेज्जा | ४ | सू० १६ |

| | | |
|--------------|-------|-------------|
| पयञ | २ चू० | ७ |
| पयंग | ४ | सू० ६, २३ |
| पयत्तच्छिन्न | ७ | ४२ |
| पयत्तपक्क | ७ | ४२ |
| पयत्तलट्ट | ७ | ४२ |
| पयल * | | |
| -पयलेति | १ चू० | १७ |
| पयाय | ७ | ३१ |
| पयाव | ६ | ३४ |
| पयावंत | ४ | सू० १६ |
| पर | ५(१) | ४ |
| | ६ | ११, १४, ३७ |
| | ७ | १३, ४०, ५४, |
| | | ५७ |
| | ८ | ४७, ६१ |
| | ९(१) | ५ |
| | ९(२) | १३ |
| | ९(४) | सू० ५ |
| | १० | ८, १८, २० |
| | २ चू० | ११, १३ |
| परक्कम * | | |
| -परक्कमे | ५(१) | ६, २४ |
| | ५(२) | ७ |
| -परक्कमेज्जा | ८ | ४० |
| परक्कम | २ चू० | ४ |
| परक्कम्म | ८ | ३२ |

| | | |
|----------------|-------|----------|
| परग्व | ७ | ४३ |
| परघर | ५(२) | २७ |
| परम | ६ | ५ |
| | ९(२) | २ |
| परमग्गसुर | ९(३) | ८ |
| परम दुच्चर | ६ | ५ |
| परमाहम्मिय | ४ | सू० ६ |
| परम्मूह | ९(३) | ९ |
| परलोग | ९(४) | सू० ६, ७ |
| परागार | ८ | १९ |
| परिकिन्न | १ चू० | ७ |
| परिक्खभासि | ७ | ५७ |
| परिगय | ९(२) | ८ |
| परिगिज्झ | ८ | ३३ |
| | ९(३) | २ |
| परिगेण्ह * | | |
| -परिगेण्हेज्जा | ४ | सू० १५ |
| परिगेण्हंत | ४ | सू० १५ |
| परिग्गह | ४ | सू० १५ |
| | ६ | २० |
| परिग्गह * | | |
| -परिग्गहे | ६ | २१ |
| परिज्जुण्ण | ९(२) | ८ |
| परिट्ठप्प | ५(१) | ८१, ८६ |
| परिट्ठप्प * | | |
| -परिट्ठवेज्जा | ५(१) | ८१ |

| | | | | | |
|---------------|-------|---|---------------|-------|--------------|
| -परिट्टावेज्ज | ८ | १८ | -परिवज्जए | ५(२) | १६, २१, २२, |
| परिणय - | ५(१) | ७७ | | | २४ |
| परिणाम | ८ | ५८ | | ६ | ५८ |
| परिनिव्वुड | ३ | १५ | | ७ | ५५ |
| परित्तप्प * | | | | १० | ६ |
| -परित्तप्पइ | १ चू० | २ से ८ | परिवज्जंत | ५(१) | २६ |
| परिदेव * | | | परिवज्जय | ७ | ५६ |
| -परिदेवएज्जा | ६(३) | ४ | परिवुड | ६(१) | १५ |
| परिन्नाय | ३ | ११ | परिवुड्ढ | ७ | २३ |
| परिब्भट्ट | १ चू० | २ | परिव्वयंत | २ | ४ |
| परिभव * | | | परिसंखाय | ७ | १ |
| -परिभवे | ८ | ३० | परिस्सह | ३ | १३ |
| परिफासिय | ५(१) | ७२ | | ४ | २७ |
| परिभस्स * | | | परिस्सा | ४ | सू० १८ से २३ |
| -परिभस्सइ | ६ | ५० | परिस्साड * | | |
| परिभोत्तुयं | ५(१) | ८२ | -परिस्साडेज्ज | ५(१) | २८ |
| परिमिय | ८ | ३४ | परिहर * | | |
| परियाय | १ चू० | सू० १ | -परिहरंति | ६ | १६ |
| | १ चू० | ६ से ११ | परिहा * | | |
| परियायजेट्ट | ६(३) | ३ | -परिहरति | ६ | ३८ |
| परियायट्टाण | ८ | ६० | परीणाम | ८ | ५६ |
| परियाव | ६(२) | १४ | पलव | ५(१) | ७० |
| परिवज्ज * | | | पलाइय | ४ | सू० ६ |
| -परिवज्जए | ५(१) | ४, १२, १६, १७, २०, २१, २५, २६, ७० | पल्लोवम | १ चू० | १५ |
| | | | पल्लियंकय | ३ | ५ |
| | | | | ६ | ५३ से ५५ |

दसवेआन्विय शब्द-सूचो

| | | |
|-----------------|-------|--------|
| पलीण (प्रलीन) ं | ४० | |
| पलोअ * | | |
| -पलोएज्जा | ५(१) | २३ |
| पवक्त * | | |
| -पवक्त्वाभि | २ चू० | १ |
| पवड * | | |
| -पवडेज्जा | ५(१) | ६८ |
| पवडंत | ५(१) | ५, ८ |
| पवड्ढ * | | |
| -पवड्ढंति | ६(२) | १२ |
| पवड्ढ्माण | ८ | ३६ |
| पवयण | ५(२) | १२ |
| पवाल | ५(२) | १६ |
| पविट्ट | ५(१) | १६ |
| | ५(२) | ८ |
| | ६ | ५६ |
| पवियक्त्तण | २ | ११ |
| पविग * | | |
| -पविगे | ५(१) | १७, २२ |
| | ५(२) | ११ |
| पविस्तित्ता | ५(१) | ८८ |
| पविमित्तु | ८ | १६ |
| पवीण * | | |
| -पवीणावेज्जा | ४ | सू० १६ |
| -पवीलेज्जा | ८ | सू० १६ |
| पवीण | ८ | सू० १६ |

| | | |
|------------|-------|------------|
| पवुच्च * | | |
| -पवुच्चई - | ४ | सू० ६ |
| पवेइय | ४ | सू० १ से ३ |
| पवेव * | | |
| -पवेवए | १० | २० |
| पव्वइय | ४ | १८, १६ |
| | ६ | १८ |
| | ६(३) | ५२ |
| | १ चू० | सू० १ |
| पव्वय | ७ | २६, ३० |
| | ६(१) | ८ |
| पसत्त | १० | १० |
| पसंसण | ७ | ५५ |
| पसज्ज | १ चू० | १४ |
| पसद्ध | ५(१) | ७२ |
| पसत्तय | २ चू० | ५ |
| पसन्न | ६ | ६८ |
| पसव * | | |
| -पसवई | ५(२) | ३५ |
| पसाय | ६(१) | १० |
| पसारिय | ४ | सू० ६ |
| पसाहा | ६(२) | १ |
| पमु | ७ | २२ |
| | ८ | ५१ |
| पमूय | ७ | ३५ |

५४

| | | |
|---------------|------|-----------|
| पस्स * | | |
| -पस्सइ | ५(२) | ३७,४३ |
| पहाण | ४ | २७ |
| पहार | ६(१) | ८ |
| | १० | ११ |
| पहारगाढ | ७ | ४२ |
| पहीण | ३ | १३ |
| पहोइ | ४ | २६ |
| पाइम | ७ | २२ |
| पाईण | ६ | ३३ |
| पाण (प्राण) | ४ | सू० ६,११ |
| | ४ | १ से ६ |
| | ५(१) | ३,५,२०, |
| | | २६ |
| | ५(२) | ७ |
| | ६ | ८,१०,२३, |
| | | २४,२७,३०, |
| | | ४१,४४,५५, |
| | | ५७,६१ |
| | ७ | २१ |
| | ८ | २,१२,१५ |
| पाण (पान) | ४ | सू० १६ |
| | ५(१) | १,२७,३१, |
| | | ३६,४१ से |
| | | ४४,४८,५०, |
| | | ५२,५४,५८, |

परिशिष्ट-१

| | | |
|---------------|-------|-----------|
| पाण (पान) | | ६०,६२,६४, |
| | | ७५,८६ |
| | ५(२) | ३,१०,१३, |
| | | १५,१७,२८, |
| | | ३३ |
| | ६ | ४६,५० |
| | ८ | १६ |
| | ६(३) | ५ |
| | २ चू० | ६,८ |
| पाणक (ग) | ५(१) | ४७,४६,५१, |
| | | ५३,५७,५६, |
| | | ६१ |
| | १० | ८,६ |
| पाणहा | ३ | ४ |
| पाणाइवाय | ४ | सू० ११ |
| पाणिपेज्जा | ७ | ३८ |
| पामिच्च | ५(१) | ५५ |
| पाय (पाद) | ३ | ४ |
| | ४ | सू० १८,२३ |
| | ५(१) | ७,६८ |
| | ८ | ४४,५५ |
| | ६(१) | ५,१० |
| | ६(२) | १७ |
| | १० | १५ |
| पाय (पात्र) | ६ | १६,३८,४७ |
| | ८ | १७ |

| | | | | | |
|-------------|-----------|-------------------|-----------|-------|--------|
| पायखज्ज | ७ | ३२ | -पासे | २ चू० | १४ |
| पायव | ६(२) | १२ | -पासेज्ज | ८ | १२ |
| पारत्त | ८ | ४३ | -दीसति | ६(२) | ५ से ७ |
| पारेत्ता | ५(१) | ६३ - | पास | ४ | ६ |
| पाव | ४ | ७ से ६, १५, १६ | पासवण | ८ | १८ |
| | ५(२) | ३२, ३५ | पासाय | ५(१) | ६७ |
| | ६ | ६७ | | ७ | २७ |
| | ७ | ५, ११ | पाहन्न | ६(३) | ५ |
| | ८ | ३६ | पिअ * | | |
| | १० | १८ | -पिए | १० | २ |
| | १ चू० सू० | १ | -पियावए | १० | २ |
| | २ चू० | १० | पिउस्सिया | ७ | १५ |
| पाव * | | | पिड | ६ | ४७ |
| -पावई | ६(१) | १७ | पिण्डपाय | ५(१) | ८७ |
| पावग (य) | | | पिंडेसणा | ५ | |
| (पापक) | ४ | १ से ६, १०, ११ | पिज्जेमाण | ५(१) | ४२ |
| | ८ | २२ | पिट्ठ | ५(१) | ३४ |
| | ६(४) | ४ | | ५(२) | २२ |
| | १० | ७ | पिट्ठओ | ८ | ४५ |
| पावग (पावक) | ६ | ३२ | पिट्ठिमस | ८ | ४६ |
| | ६(१) | ६, ७ | पिण्णाग | ५(२) | २२ |
| पावार | ५(१) | १८ | पिय | २ | ३ |
| पास * | | | पियाल | ५(२) | २४ |
| -पासइ | २ चू० | १३ | पिव | ५(१) | ८ |
| | | | | ५(२) | ३६, ३७ |
| | | | पिव | ८ | ५४ |

| | | |
|-----------------|-------|----------|
| पिवासा | ८ | २७ |
| | ६(२) | ८ |
| | १ चू० | १६ |
| पिवीलिया | ४ | सू० ६,२३ |
| पिसुण | ६(२) | २२ |
| पिहिय | ४ | ६ |
| | ५(१) | १८,४५ |
| पिहुखज्ज | ७ | ३४ |
| पिहुज्जण | १ चू० | १३ |
| पिहुण (दे०) | ४ | सू० २१ |
| पिहुणहत्थ (दे०) | ४ | सू० २१ |
| पीइ | ८ | ३७ |
| पीढ | ५(१) | ६७ |
| पीढग (य) | ४ | सू० २३ |
| | ५(१) | ४५ |
| | ६ | ५४ |
| | ७ | २८ |
| पीण * | | |
| -पीणेइ | १ | २ |
| पीणिय | ७ | २३ |
| पील * | | |
| -पीलेइ | ८ | ३५ |
| पीला | ५(१) | १० |
| पुंछ * | | |
| -पुंछे | ८ | ७ |
| -पुंछेज्ज | ८ | १४ |

| | | |
|-----------------|-------|-------------------|
| पुगल | ४ | सू० २१ |
| | ५(१) | ७३ |
| पुच्छ * | | |
| -पुच्छेज्जा | ५(१) | ५६ |
| -पुच्छति | ६ | २ |
| पुज्ज | ६(३) | १ से ६ ८ से १४ |
| पुड | ८ | ६३ |
| पुदठ (पृष्ट) | ८ | २२ |
| पुट्ट (स्पृष्ट) | ७ | ५ |
| पुढविकाइय | ४ | सू० ३ |
| पुढविकाय | ६ | २६ से २८ |
| पुढविजीव | ५(१) | ६८ |
| पुढवी | ४ | सू० ४,१८ |
| | ८ | २,४ |
| | १० | २,४,१३ |
| पुढो | ४ | सू० ४ से ८ |
| पुण | ४ | सू० ६ |
| पुणब्भव | ८ | ३६ |
| पुण्ण (पुण्य) | ४ | १५,१६ |
| | ५(१) | ४६ |
| | १० | १८ |
| | १ चू० | सू० १ |
| पुण्ण (पूर्ण) | ७ | ३८ |
| पुन्न | २ चू० | १ |
| पुत्त | ७ | १८ |
| | १ चू० | ७ |

दसवेआलिय शब्द-सूची

| | | | | | |
|-------------|-----------|--------|-----------|-----------|--------|
| पुष्प | १ | २ से ४ | पुष्करत्त | २ चू० | १२ |
| | ५(१) | २१, ५७ | पूँर्वि | ५(१) | ६१ |
| | ५(२) | १४, १६ | | १ चू० सू० | १ |
| | ८ | १५ | पूअ * | | |
| | ९(२) | १ | -पूययामि | ९(१) | १३ |
| पुम | ७ | २१ | -पूयंति | ५(२) | ४५ |
| | ९(३) | १२ | | ९(२) | १५ |
| पुरओ | ५(१) | ३ | पूइअ | ५(२) | ४३ |
| | ८ | ४५ | पूइकम्म | ५(१) | ५५ |
| पुरक्कार | १ चू० सू० | १ | पूइम | १ चू० | ४ |
| पुरत्थ | ८ | २८ | पूई | ५(१) | ७८, ७९ |
| पुराण | ९(४) | ४ | | ५(२) | २२ |
| | १० | ७ | पूय | ५(१) | ७१ |
| पुरिस | ५(२) | २९ | पूयण | १० | १७ |
| | ७ | १६, २० | | २ चू० | ९ |
| पुरिसकारिया | ५(२) | ६ | पूयणट्टि | ५(२) | ३५ |
| पुरिसोत्तम | २ | ११ | पेच्छ * | | |
| पुरेकड | ६ | ६७ | -पेच्छइ | ८ | २० |
| | ७ | ५७ | पेम | ८ | २६, ५८ |
| | ८ | ६२ | पेह * | | |
| | ९(३) | १५ | -पेहेइ | ९(४) | २ |
| पुरेकम्म | ५(१) | ३२ | पेहमाण | ५(१) | ३ |
| | ६ | ५३ | पेहा | २ | ४ |
| पुल | १० | १६ | पेहाए | ७ | २६, ३० |
| पुव्व | ३ | १५ | | ८ | १३ |
| पुव्वउत्त | ५(२) | ३ | पेहिय | ८ | ५७ |

५८

परिशिष्ट-१

| | | |
|--------|-------|---------|
| पोगल | ८ | ६,५८,५६ |
| पोय | ८ | ५३ |
| | १ चू० | सू० १ |
| पोयय | ४ | सू० ६ |
| पोरबीय | ४ | सू० ८ |

| | | |
|-------------|------|----------|
| -फासे | ४ | १६,२० |
| | १० | ५ |
| फासुय | ५(१) | १६,८२,६६ |
| | ८ | १८ |
| फुम * (दि०) | | |
| -फुमावेज्जा | ४ | सू० २१ |
| -फुमेज्जा | ४ | सू० २१ |
| फुमंत | ४ | सू० २१ |

फ

| | | |
|-----|------|--------|
| फरस | ५(२) | २६ |
| | ७ | ११ |
| फल | ३ | ७ |
| | ४ | १ से ६ |
| | ५(२) | २४,४७ |
| | ७ | ३२,३३ |
| | ८ | १० |
| | ९(१) | १ |
| | ९(२) | १ |

व

| | | |
|---------|-------|--------|
| बंध | ४ | १५,१६ |
| | ९(२) | १४ |
| | १ चू० | सू० १ |
| बंध * | | |
| -बंधइ | ६ | ६५ |
| -वधई | ४ | १ से ६ |
| बंधण | १० | २१ |
| | १ चू० | ७ |
| बंधचेर | ५(१) | ६ |
| | ६ | ५७,५८ |
| | ९(१) | १३ |
| बंधयारि | ५(१) | ६ |
| | ८ | ५३,५५ |
| बद्ध | १ चू० | ७ |
| बप्प | ७ | १८ |

| | | |
|-------|------|--------|
| फलग | ४ | सू० २३ |
| | ५(१) | ६७ |
| फलिह | ५(२) | ६ |
| | ७ | २७ |
| फाणिय | ५(१) | ७१ |
| | ६ | १७ |
| फास | ८ | २६ |
| फास * | | |

दसवेआलिय गन्द-सूची

| | | |
|---------------|-------|-----------|
| बलाहय | ७ | ५२ |
| बहिद्धा | २ | ४ |
| बहु | ४ | सू० ६, १३ |
| बहुअट्टिय | ५(१) | ७३ |
| बहुउज्जिमय | | |
| धम्मिये | ५(१) | ७४ |
| बहुकंटय | ५(१) | ७३ |
| बहुनिव्वट्टिम | ७ | ३३ |
| बहुवाहड | ७ | ३६ |
| बहुल | ६ | ३६, ६६ |
| | १ चू० | सू० १ |
| | २ चू० | ४ |
| यहुवित्थडोदगा | ७ | ३६ |
| बहुविह | ४ | १४, १५ |
| बहुसभूय | ७ | ३३, ३५ |
| बहुसम | ७ | ३७ |
| बहुसलिला | ७ | ३६ |
| बहुस्सुय | ८ | ४३ |
| | १ चू० | ६ |
| बायर | ४ | सू० ११ |
| बाल | ६ | ७ |
| | १ चू० | १ |
| बाहिर | ४ | सू० २१ |
| | ४ | १७, १८ |
| | ८ | ६, ३० |

| | | |
|---------------|-------|-------------|
| बाहु | ४ | सू० २३ |
| | १ चू० | सू० १ |
| विट्टे | १ चू० | सू० १ |
| विड | ६ | १७ |
| विल्ल | ५(१) | ७३ |
| विहेलग | ५(२) | २४ |
| वीय (वीज) | ३ | ७ |
| | ४ | सू० २२ |
| | ५(१) | ३, १७, २१, |
| | | २६, २६, ५७ |
| | ५(२) | २४ |
| | ६ | २४ |
| | ८ | १०, ११, १५ |
| | १० | - ३ |
| वीय (द्वितीय) | ८ | ३१ |
| | २ चू० | ११ |
| वीयरुह | ४ | सू० ८ |
| बुद्ध | १ | ५ |
| | ५(२) | ५० |
| | ६ | २१, २२, ३६, |
| | | ५४, ६६ |
| | ७ | २, ५६ |
| बुद्धवयण | १० | १, ६ |
| बुद्धि | ८ | ३० |
| | ६(१) | ३, १४, १६ |
| बुद्धिम | १ चू० | १८ |

६०

परिशिष्ट-१

बू *

-बूया

६ ११
७ १७, २०, २३,
२५

वेईदिय

४ सू० ६

बोधव्व

५(१) ३४

बोहि

५(२) ४८

१ चू० १४

भ

भंग

४ सू० २१

भंत (भ्रान्त)

४ सू० ६

भत (भदन्त)

४ सू० १० से १६,
१८ से २३

भक्ख *

-भक्खे

६(१) ७, ६

भक्खर

८ ५४

भगव

४ सू० १ से ३

६(४) सू० १

भगवंत

६(४) सू० १ से ३

भज्जिप्त

७ ३४

भज्जिय

५(२) २०

भट्ट

७ १६

भट्टा

७ १६

भट्ट

१ चू० १२

भत्त

१

३

५(१)

१, ४१, ४३,

४४, ४८, ५०,

५२, ५४, ५८,

६०, ६२, ६४,

८६

५(२)

३, ७, १०,

१३, १५, १७,

२८

६(३)

५

२ चू०

६

भद्दग

५(२)

३३

८

२२

भमर

१

२, ४

भय *

-भएज्ज

८

५१

भय

४

सू० १२

६

११

७

५४

८

२७, ५३

१०

११, १२

भव *

-भवन्ति

१

५

भवन्त

६

२

८

१

भवित्ताणं

४

१८, १६

दसवेआलिय शब्द-सूची

६१

| | | | | | |
|-----------|-------|-------------------|-------------|-------|---------------------------|
| भस्स * | | | भासा | ७ | ११, २६, ५६ |
| -भस्सई | ६ | ७ | | ८ | ४७, ४८ |
| भाइणेज्ज | ७ | १८ | | ६(३) | ६ |
| भाइणेज्जा | ७ | १५ | भासिय | ५(२) | ४६ |
| भाअ * | | | | ६ | २५ |
| -भायए | १० | १२ | | २ चू० | १ |
| भायण | ५(१) | ३२, ३५, ३६, ६६ | भासुर | ६(३) | १५ |
| भारह | ६(१) | १४ | भिद * | | |
| भाव | २ | ६ | -भिदावेज्जा | ४ | सू० १८ |
| | ७ | १३ | -भिदे | ८ | ४ |
| | २ चू० | ८ | | ६(१) | ६ |
| भाव * | | | -भिदेज्ज | ६(१) | ६ |
| -भावए | ६(३) | १० | -भिदेज्जा | ४ | सू० १८ |
| भावतेण | ५(२) | ४६ | भिदंत | ४ | सू० १८ |
| भावसंघअ | ६(४) | ५ | भिक्खा | ५(१) | १, ६६ |
| भावियप्प | ६(३) | १० | | ५(२) | ५० |
| | १ चू० | ६ | भिक्खु | ४ | सू० १८ से २३ |
| भास | ६(१) | ३ | | ५(१) | ६६, ८७ |
| भास * | | | | ५(२) | ४ से ६, २५, ३६, ३८, ५० |
| -भासेज्ज | ७ | १, २ | | ६ | ६१, ६५ |
| भासत | ४ | ७ | | ८ | १, २० |
| भासमाण | ४ | ६ | | ६(१) | १५ |
| | ५(१) | १४ | | ६(२) | १६ |
| | ८ | ४६ | | १० | १ से २१ |
| भासा | ७ | १, ४, ७, | | २ चू० | ६, ११ |

| | | |
|--------------|------|--------------|
| भिक्षुवृणी | ४ | सू० १८ से २३ |
| भित्ति | ४ | सू० १८ |
| | ८ | ४ |
| भित्तिमूल | ५(१) | ८२ |
| भिलुगा (दि०) | ६ | ६१ |
| भीम | ६ | ४ |
| भुज # | | |
| -भुजंति | २ | २ |
| | ६ | २५, ५२ |
| -भुजावेज्जा | ४ | सू० १६ |
| -भुजे | ५(२) | १ |
| | १० | ४, ६ |
| -भुजेज्ज | ५(१) | ८३, ६६, ६७ |
| -भुजेज्जा | ४ | सू० १६ |
| | ५(१) | ६६ |
| | ८ | २३ |
| भुजत | ४ | सू० १६ |
| | ४ | ७, ८ |
| | ६ | ५० |
| भुजमाण | ४ | ५ |
| | ५(१) | ३७, ३८, ८४ |
| भुजित्तु | १ | चू० १४ |
| भुज्ज | १ | चू० सू० १ |
| भुज्जमाण | ५(१) | ३६ |
| भुत्त | ५(१) | ३६ |
| भूमि | ५(१) | २४ |
| | ८ | ५२ |

| | | |
|--------------|------|---------------|
| भूमिभाग | ५(१) | २५ |
| भूय | ४ | १ से ६, ६ |
| | ५(१) | ५ |
| | ६ | ३, ५, ३४, |
| | | ५१ |
| | ७ | ११, २६ |
| | ८ | १२, १३, ५० |
| | १ | चू० सू० १ |
| भूयरूव | ७ | ३३ |
| भेतु | ६(१) | ८ |
| भेयाययणवज्जि | ६ | १५ |
| भेरव | १० | ११, १२ |
| भेसज | ८ | ५० |
| भो | ६(१) | १२ |
| | १ | चू० सू० १ |
| भोग | २ | ११ |
| | ८ | ३४ |
| | १ | चू० सू० १ |
| | १ | चू० १, १४, १६ |
| भोच्चा | ५(२) | ३३ |
| | १० | ६ |
| भोच्चाण | ५(२) | २ |
| भोत्तु | २ | ६ |
| | ५(१) | ८७ |
| भोय | २ | ३ |
| | ४ | १६, १७ |

| | | | | | |
|----------------|-------|---------------------------|------------|-------|-------------------------------|
| भोयण | ५(१) | २७, २८, ३१, ३६, ४२, ६८ | मच्छ | १ चू० | ६ |
| | ५(२) | २६, ३३ | मज्ज | | |
| | ६ | २२ | -मज्जइ | ६ (४) | २ |
| | ८ | १६, २३, ५६ | -मज्जेज्जा | ८ | ३० |
| भोयणजाय | ५(१) | ७४ | मज्जग | ५(२) | ३६ |
| भोयराय | २ | ८ | मज्जप्पमाय | ५(२) | ४२ |
| | | | मज्झ | ७ | ५५ |
| | | | | ६(१) | १४, १५ |
| | | | | १ चू० | सू० १ |
| | | | | १ चू० | १५ |
| | | | मट्टिया | ५(१) | ३३ |
| | | | मड | ७ | ४१ |
| | | | मण | १ | १ |
| | | | | २ | ४ |
| | | | | ४ | सू० १० से १६, सू० १८ से २३ |
| | | | | ५(२) | २३ |
| | | | | ६ | २६, २६, ४०, ४३ |
| | | | | ८ | ३, १०, १६, |
| | | | | | २८ |
| | | | | ६(१) | १२ |
| | | | | १० | ७ |
| | | | | १ चू० | १५ |
| | | | मणुण | ८ | ५८ |
| मड | ५(१) | ७६ | | | |
| | ६(२) | २२ | | | |
| | २ चू० | १ | | | |
| मडळ (दि०) | ७ | २८ | | | |
| मंगल | १ | १ | | | |
| मच | ५(१) | ६७ | | | |
| | ६ | ५३ | | | |
| मंत | ८ | ५० | | | |
| | ६(१) | ११ | | | |
| मथु | ५(१) | ६८ | | | |
| | ५(२) | २४ | | | |
| मंद | ५(१) | २ | | | |
| | ६(१) | २ से ४ | | | |
| मगदंतिया (दि०) | ५(२) | १४, १६ | | | |
| मग | ५(१) | ६ | | | |
| | २ चू० | ११ | | | |

| | | | | | |
|--------------|-------|------------|------------|-------|---------------|
| मणुय | ४ | सू० ६ | मल्ल | ३ | २ |
| | ७ | ५० | मसाण | १० | १२ |
| | १ चू० | सू० १ | मह | ५(१) | ६६ |
| मणुत्स | ७ | २२ | | ६ | १६ |
| | १ चू० | सू० १ | | १० | २० |
| मणोसिला | ५(१) | ३३ | | १ चू० | १० |
| मत्त (मत्त) | १० | १६ | महग्घ | ७ | ४६ |
| मत्त (अमत्त) | ६ | ५१ | महप्प | ८ | ३३ |
| मत्थयत्थ | ४ | २५, २६ | महब्भय | ६(३) | ७ |
| मह्व | ८ | ३८ | | १० | १४ |
| मन्न * | | | महल्ल | ७ | २६, ३० |
| -मन्नांति | ६ | ३६, ६६ | महल्ला (य) | ५(२) | २६ |
| -मन्नेज्ज | १० | ५ | | ७ | २५ |
| ममत्त | २ चू० | ८ | | ६(३) | १२ |
| ममाइय | ६ | २१ | महव्वय | ४ | सू० ११ से १५, |
| ममाय * | | | | | १७ |
| -ममायंति | ६ | ४८ | | १० | ५ |
| मय | ६(४) | २ | महाकाय | ७ | २३ |
| | १० | १६ | महागर | ६(१) | १६ |
| मया | ६(१) | १ | महाफल | ८ | २७ |
| मरण | २ | ७ | महायत्त | ६(२) | ६, ६, ११ |
| | ६(४) | ७ | महायारकहा | ६ | |
| | १० | १४, २१ | महालय | ७ | ३१ |
| मरणंत | ५(२) | ३६, ४१, ४४ | महावाय | ५(१) | ८ |
| मरिज्जिउं | ६ | १० | महावीर | ४ | सू० १ से ३ |
| मल | ८ | ६२ | | ६ | ८ |
| | ६(३) | १५ | | | |

| | | |
|-----------|-------|-----------|
| महि | ५(१) | ३ |
| | ६ | २४ |
| महिङ्गिय | ६(४) | ७ |
| महिया | ४ | सू० १६ |
| | ५(१) | ८ |
| महु | ५(१) | ६७ |
| महुकार | १ | ५ |
| महुर | ५(१) | ६७ |
| महेसि | ३ | १, १०, १३ |
| | ५(१) | ६६ |
| | ६ | २०, ४८ |
| | ८ | २ |
| | ६(१) | १६ |
| | १ चू० | १० |
| मा | २ | ८ |
| | ५(२) | ३१ |
| | ७ | ५०, ५१ |
| माउल | ७ | १८ |
| माउल्लिग | ५(२) | २३ |
| माउत्सिया | ७ | १५ |
| माण | ५(२) | ३५ |
| | ८ | ३६ से ३९ |
| | ६(४) | २ |
| माण | ६(३) | १३ |
| माणरिह | ६(३) | १३ |
| माणव | ७ | ५२, ५४ |

| | | |
|-----------------|-------|----------|
| माणस | १ चू० | १८ |
| | २ चू० | १४ |
| माणिम | १ चू० | ५ |
| माणिय | ६(३) | १३ |
| माणुस | ४ | सू० १४ |
| | ४ | १६, १७ |
| मामग | ५(१) | १७ |
| माया (मात्रा) | ५(२) | १ |
| माया (माया) | ८ | ३६ से ३९ |
| मायण्ण | ५(२) | २६ |
| मायामोसा | ५(२) | ३८, ४९ |
| | ८ | ४६ |
| मायासल्ल | ५(२) | ३५ |
| माख्य | ८ | २ |
| मारः* | | |
| -मारि | ६(१) | ७ |
| मालोहड | ५(१) | ६६ |
| माहण | ५(२) | १० |
| | ६ | २ |
| मिअ | ६(२) | ३ |
| मिच्छा | ६(१) | २ |
| मित्त | ८ | ३७ |
| मिय | ५(१) | २४ |
| | ७ | ५५ |
| | ८ | १६, ४८ |
| मियासण | ८ | २६ |

| | | |
|-----------------|-------|--------------------------|
| मिहोकहा | ८ | ४१ |
| मीसजाय | ५(१) | ५५ |
| मुअ * | | |
| -मुच्चइ | २ वू० | १६ |
| *मुच्चई | ६(४) | ७ |
| मुंच * | | |
| -मुंच | ७ | ४५ |
| | ६(३) | ११ |
| मुंड | ४ | १८, १६ |
| | ६ | ६४ |
| मुक्क | ६(१) | १५ |
| मुच्छा | ६ | २० |
| मुच्छिय | १ वू० | १ |
| मुणालिया | ५(२) | १८ |
| मुणि | ५(१) | २, ११, १३, २४, ८८, ६३ |
| | ५(२) | ६, ३४ |
| | ६ | १५ |
| | ७ | ४०, ४१, ५५ |
| | ८ | ७, ८, ४४, ४६ |
| | ६(३) | १४, १५ |
| | १० | १३, २० |
| | २ वू० | ६ |
| मुत्त (मुक्त) | १ | ३ |
| मुत्त (मूत्र) | ५(१) | १६ |

| | | |
|--------------|------|---------|
| मुम्मुर | ४ | सू० २० |
| मुसा | ४ | सू० १२ |
| | ६ | ११ |
| | ७ | २, ५ |
| मुसावाय | ४ | सू० १२ |
| | ६ | १२ |
| मुह | ४ | सू० २१ |
| मुहाजीवि | ५(१) | ६६, १०० |
| | ८ | २४ |
| मुहादाइ | ५(१) | १०० |
| मुहालद्ध | ५(१) | ६६ |
| मुहुत्तदुक्ख | ६(३) | ७ |
| मूल | ३ | ७ |
| | ५(१) | ७० |
| | ६ | १६ |
| | ८ | १०, ३६ |
| | ६(२) | १, २ |
| मूलगतिया | ५(२) | २३ |
| मूलय (ग) | ३ | ७ |
| | ५(२) | २३ |
| मूलबीय | ४ | सू० ८ |
| मेत्त | ६ | १३ |
| मेरग | ५(२) | ३६ |
| मेह | ७ | ५२ |
| मेहावि | ५(१) | ८३ |
| | ५(२) | ४२, ४६ |

| | | |
|-----------|-------|-------------|
| मेहावि | ८ | १४ |
| | ६(१) | १७ |
| | ६(३) | १४ |
| मेहुण | ४ | सू० १४ |
| | ६ | १६, ६४ |
| मोकख | ४ | १५, १६ |
| | ५(१) | ६२ |
| | ६(१) | ५, ७, ६, १० |
| | ६(२) | २, २२ |
| | १ चू० | सू० १ |
| मोसा | ६ | १२ |
| मोह | १ चू० | ८ |
| य | | |
| य | १ | २ |
| याण * | | |
| -याणई | ४ | १२ |
| -याणाड | ४ | १२ |
| | ५(२) | ४७ |
| र | | |
| रइवका | १ चू० | |
| रक्खियव्व | २ चू० | १६ |
| रज्ज | १ चू० | ४ |

| | | |
|-------------|-------|------------|
| रण | ४ | सू० १३, १५ |
| रम * | | |
| -रमंतो | १ चू० | ६ |
| -रमे | ८ | ४१ |
| -रमेज्ज | १ चू० | ११ |
| -रमेज्जा | ६(१) | १० |
| रय (रत्त) | १ | ३, ५ |
| | ४ | २७ |
| | ५(२) | २६ |
| | ६ | १, १७, ६७ |
| | ७ | ४६ |
| | ८ | ४१, ६२ |
| | ६(३) | ५, १४ |
| | ६(४) | ३ से ५ |
| | १० | ६, १२, १४, |
| | | १६ |
| | १ चू० | १०, ११ |
| रय (रजस्) | ४ | २०, २१ |
| | ५(१) | ७२ |
| | ६(३) | १५ |
| रयहरण | ४ | सू० २३ |
| रस | १ | २ |
| | ५(२) | ३६, ४२ |
| | ६(२) | १ |
| | १० | १७ |

| | | |
|------------------|-------|--------------|
| रसदया | ७ | २५ |
| रसनिकजूढ | ८ | २२ |
| रसय | ४ | सू० ६ |
| रस्ति | १ चू० | सू० १ |
| रह | ६(२) | १६ |
| रहजोग | ७ | २४ |
| रहस्स (रहस्य) | ५(१) | १६ |
| रहस्स (ह्रस्व) | ७ | २५ |
| राइ | ४ | सू० १६ |
| राइणिय | ८ | ४० |
| | ६(३) | ३ |
| राइभत्त | ३ | २ |
| राइभोयण | ४ | सू० १६, १७ |
| | ६ | २५ |
| राओ | ४ | सू० १८ से २३ |
| | ६ | २३, २४ |
| राय | २ | ४, ५ |
| | ८ | ५७ |
| | ६(३) | ११ |
| राय | ५(१) | १६ |
| | ६ | २ |
| | १ चू० | ४ |
| रायपिंड | ३ | ३ |
| रायमच्च | ६ | २ |
| रासि | ५(१) | ७ |
| रिक्क | ३ | १३ |

| | | |
|-----------|-------|------------|
| रिद्धिमंत | ७ | ५३ |
| रोअ * | | |
| -रोयंति | १ | ४ |
| रुक्ख | ५(२) | १६ |
| | ७ | २६, ३०, ३१ |
| | ८ | २, १० |
| रुय | ४ | सू० ६ |
| रुप्य | ८ | ६२ |
| रुढ | ४ | सू० २२ |
| | ७ | ३५ |
| रुव | ८ | १६ |
| | १० | १६ |
| रुवतेण | ५(२) | ४६ |
| रोअ * | | |
| -रोयए | ५(१) | ७७ |
| रोइय | १० | ५ |
| रोगि | ७ | १२ |
| रोम | ६ | ६४ |
| रोमालोण | ३ | ८ |
| रोयंत | ५(१) | ४२ |
| | | |
| ळ | | |
| लक्ख | २ चू० | २ |
| लज्जा | ५(२) | ५० |
| | ६ | १६ |

| | | |
|----------|-------|--------|
| लज्जा | ६(१) | १३ |
| लज्जासम | ६ | २२ |
| लट्ट | २ | ३ |
| | ५(१) | ६७ |
| | २ चू० | २ |
| लट्टु | ५(२) | ३१, ३३ |
| | ८ | १, २६ |
| | ६(३) | ४ |
| लट्टूण | ५(२) | ४७ |
| लम * | | |
| -लभामो | १ | ४ |
| -लन्निही | ५(२) | ४८ |
| -लभेज्जा | २ चू० | १० |
| लभित्ता | १० | ८, ६ |
| लभित्तु | ४ | २८ |
| लयण | ८ | ५१ |
| लया | ४ | सू० ८ |
| ललिइदिय | ६(२) | १४ |
| लव * | | |
| -लवे | ७ | ४०, ४८ |
| | ८ | ५२ |
| -लवेज्ज | ७ | १७ |
| | ८ | २१ |
| लवण | ५(१) | ६७ |
| लविय | ८ | ५७ |

| | | |
|--------------|-------|--------------|
| लह * | | |
| -लहइ | ८ | ४२ |
| -लहई | ७ | ५५ |
| लहुत्त | ५(२) | १२ |
| लहुभूयविहारी | ३ | १० |
| लहुस्सग | १ चू० | सू० १ |
| लाइम | ७ | ३४ |
| लाभ | ८ | २२, ३० |
| | १० | १६ |
| लाभमट्टिअ | ५(१) | ६४ |
| लुद्ध | ५(२) | ३२ |
| लूस * | | |
| -लूसए | ५(१) | ६८ |
| लूसिए | १० | १३ |
| लूहवित्ती | ५(२) | ३४ |
| | ८ | २५ |
| लेलु | ४ | सू० १८ |
| | ८ | ४ |
| लेव | ५(१) | ४५ |
| | ५(२) | १ |
| लोम (ग) | १ | ३ |
| | ४ | २२, २३, २५ |
| | ६ | ५, ८, १२, १५ |
| | ७ | ४८, ५७ |
| | ६(२) | ७ |
| | २ चू० | ३, १५ |

| | | | | | |
|-----------|-------|--------------|------------|-------|-------------|
| लोढ (दि०) | ५(१) | ४५ | वंद * | | |
| लोण | ३ | ८ | -वंदे | ५(२) | ३० |
| | ५(१) | ३३ | -वंदेज्जा | ६(२) | १७ |
| | ६ | १७ | वंदण | २ चू० | ६ |
| लोढ् | ६ | ६३ | वंदमाण | ५(२) | २६ |
| लोभ | ५(२) | ३१ | वंदिअ | ५(२) | ३० |
| | ६ | १८ | वंदिम | १ चू० | ३ |
| | ८ | ३६ से ३६ | वक्क | ८ | ३ |
| लोह | ४ | सू० १२ | | ६(३) | २ |
| | ७ | ५४ | वक्ककर | ६(३) | ३ |
| | | | वक्कसुद्धि | ७ | |
| | | | वच्च | ५(१) | १६, २५ |
| | | | वच्छग्ग | ५(१) | २२ |
| | | | वज्ज* | | |
| व (इव) | १ | ३ | -वज्जए | ५(१) | ११, ५५ |
| | ८ | ६१ से ६३ | | ५(२) | ४२ |
| | ६(३) | १३ | | ६ | २८, ३१, ३५, |
| | १ चू० | ३, ४, ७, १२, | | ७ | ३६, ४२, ४५ |
| | | १७ | | | ४१ |
| व (वा) | ५(१) | ५ | -वज्जयंति | ६ | १०, १६, ४६ |
| वइ | ८ | ४६ | -वज्जेज्ज | १० | २० |
| वइमय | ६(३) | ६ | वज्जंत | ५(१) | ३ |
| वत | २ | ७ | वज्जिय | ५(१) | ६६ |
| | १० | १ | वज्झ | ७ | २२, ३६ |
| | १ चू० | सू० १ | वट्ट | ७ | ३१ |
| वतय | २ | ६ | | | |

| | | | | | |
|--------------|-------|----------------|--------------|------|-------------|
| वट्ट * | | | वत्थिकम्म | ३ | ६ |
| -वट्टड | ६(३) | ३ | वमण | ३ | ६ |
| वड्ड * | | | वम * | | |
| -वड्डई | ५(२) | ३८ | -वमे | ८ | ३६ |
| | ८ | ३५ | | १० | ६ |
| वड्डण | ५(१) | ११ | वय (वच्) * | | |
| | ६ | २८, ३१, ३५, | -वएज्जा | ४ | सू० १२ |
| | | ३६, ४२, ४५, | -वक्खामो | ७ | ६ |
| | | ५८ | -वायावेज्जा | ४ | सू० १२ |
| | ८ | ३६ | वय (वत्त) | ४ | सू० १६ |
| वण | ७ | २६, ३० | | ५(१) | १० |
| वणस्सड | ४ | सू० ८ | | ६ | ७, ६२ |
| | ६ | ४० से ४२ | वय (वड्) * | | |
| वणस्सडकाइय | ४ | सू० ३ | -वए | ५(२) | २६ |
| वणिमय (दि०) | ५(१) | ५१ | | ७ | ६, १२, २२, |
| वणीमगं (दि०) | ५(२) | १०, १२ | | | २५, ३१, ३२, |
| | ६ | ५७ | | | ३४, ३६, ३८, |
| वण्ण | ६(४) | सू० ६, ७ | | | ४३, ४४, ५०, |
| वण्णिय | ६ | २२ | | | ५१ |
| वण्णिया | ५(१) | ३४ | | ६(२) | १६ |
| वत्तव्व | ७ | ११ | -वएज्ज | ७ | ३३, ५६ |
| वत्ति | १ सू० | १५ | | ६(२) | १८ |
| वत्थ | २ | २ | -वएज्जा | ७ | ५२, ५४ |
| | ४ | सू० १८, १९, २३ | | १० | १८ |
| | ५(२) | २८ | -वयावए | ६ | ११ |
| | ६ | १६, ३८, ४७ | वय (वचस्) | ५(२) | ४६ |

| | | | | | |
|--------------|-----------|--------------------|------------|-----------|-------------------------------|
| वय(वचस्) | ६ | १७,२६,२९, ४०,४३ | वह * | | |
| | १० | ७ | -वहई | ६(२) | १९ |
| वय * (व्रज्) | | | वहण | १० | ४ |
| -वयाहि | ७ | ४७ | वा | ४ | ११ |
| वयंत | ४ | सू० १२ | वा | १ चू० | २ |
| वयण | २ | १० | वाउ | ४ | सू० ७ |
| | ८ | ३३ | वाउकाइय | ४ | सू० ३ |
| | ६(२) | १२ | वाउकाय | ६ | ३६ |
| | ६(३) | ८ | वाय | २ | ६ |
| | १० | ५ | | ६ | ३८ |
| वयणंकर | ६(२) | १२ | | ७ | ५१ |
| वयतेण | ५(२) | ४६ | | १ चू० | १७ |
| ववेय | १ चू० | १२ | वाय | १० | १५ |
| वस | २ | १ | वायंत | ५(१) | ८ |
| | १० | १ | वाया | ४ | सू० १० से १६, सू० १८ से २३ |
| वस * | | | | ८ | १२,३३ |
| -वसेज्जा | २ चू० | ६,११ | | ६(३) | ७ |
| वसंत | १ चू० सू० | १ | | १ चू० | १८ |
| वसाणुअ | ५(१) | ६ | | २ चू० | १४ |
| वसुल (दि०) | ७ | १४,१६ | वारधोयण | ५(१) | ७५ |
| वसुला (दि०) | ७ | १६ | वारय | ५(१) | ४५ |
| वह | ६ | १०,४८,५७ | वास (वर्ष) | ५(१) | ८ |
| | ६(१) | १ | | २ चू० | ११ |
| | ६(२) | १४ | वास (वास) | १ चू० सू० | १ |
| | १ चू० सू० | १ | वासंत | ५(१) | ८ |

कनवेआन्वित्त शब्द-सूची

| | | |
|---------------|-------|-----------|
| वासमड | ८ | ५५ |
| वाना | ३ | १२ |
| वाहि | ८ | ३५ |
| वाहिम | ७ | २४ |
| वाहिय | ६ | ६, ५६, ६० |
| | ७ | १२ |
| विडत्ता | ६(१) | २ |
| विडत्तु | १० | १४ |
| विडल | ५(२) | ४२ |
| | ६(४) | ६ |
| विडलद्वाराभाइ | ६ | ५ |
| विडहित्ताण | ५(१) | २२ |
| विडत्य * | | |
| -विडत्यवई | ६(३) | ४ |
| विडक्य | ७ | ४६ |
| | १० | १५ |
| विडकायमाण | ५(१) | ७२ |
| विडकान्दिय | ८ | ६६ |
| विडणिय | ८ | ५५ |
| विडणियेदिय | ६(२) | ७ |
| विडगहो | ८ | ५३ |
| विडगान * | | |
| -विडगोञ्ज | ७ | २१ |
| विडगमाण | ५(१) | १ |
| विडगज | ५(१) | १ |
| विडग्याय | १ नं० | १० |

| | | |
|---------------|------|--------------|
| विडिम | ७ | ३१ |
| विडिय | ५(१) | ८८ |
| | ७ | १ |
| | ८ | ३७, ४० |
| | ६(१) | १ |
| | ६(२) | २, ४, २२, २३ |
| | ६(३) | २, ३ - |
| | ६(४) | १ |
| विडयसमाहि | ६ | |
| | ६(४) | सू० १ से ४ |
| विड्यासण | ८ | ३७ |
| विडिगूह * | | |
| -विडिगूहई | ५(२) | ३१ |
| विडिचड्य | ८ | ४२ |
| विडिगुम्हा * | | |
| -विडिगुम्हाए | ५(१) | १५, २३ |
| विडित्तए | ५(१) | ७८, ७९ |
| विडिय | ६(२) | २१ |
| विडियट्ट * | | |
| -विडियट्टत्ति | २ | ११ |
| -विडियट्टेज्ज | ८ | ३८ |
| विडिगी * | | |
| -विडिगुञ्ज | ८ | ४, ५ |
| विडिगीपतन्हु | ८ | ५६ |
| विडिह | ७ | ४ |
| विडिन्नि | १ | ४ |

| | | |
|-----------------|------|--------|
| वित्ति | ५(१) | ६२ |
| | ५(२) | २६ |
| | ६ | २२ |
| विन्नाय | ४ | सू० ६ |
| (विज्ञात) | | |
| विन्नाय | ८ | ५८ |
| (विज्ञाय) | | |
| विप्पइण्ण | ५(१) | २१ |
| विप्पमुक्क | ३ | १ |
| विपिट्ठिकुब्ब | | |
| -विपिट्ठिकुब्बइ | २ | ३ |
| विभूसण | ३ | ६ |
| विभूसा | ६ | ६४ |
| | ८ | ५६ |
| विभूसावत्तिय | ६ | ६५, ६६ |
| विमण | ५(१) | ८० |
| विमल | ६ | ६८ |
| | ६(१) | १५ |
| विमाण | ६ | ६८ |
| विद्य | ८ | ४८ |
| विद्यनत्तण | ५(१) | २५ |
| | ६ | ३ |
| | ८ | १४ |
| विद्यड | ५(२) | २२ |
| | ६ | ६१ |
| विद्यडभाव | ८ | ३२ |

| | | |
|---------------|-------|--------------|
| वियत्त | ६ | ६ |
| वियागर * | | |
| -वियागरे | ७ | ३७, ४५, ४६ |
| वियाण * | | |
| -वियाणई | ४ | १३, १४ |
| | ५(२) | ३७ |
| | १० | १५ |
| वियाणत | ४ | १३ |
| वियाणित्ता | ५(१) | ११ |
| | ६ | २८, ३१, ३५, |
| | | ३६, ४२, ४५ |
| वियाणिया | ८ | ३४ |
| | ६(३) | ११ |
| | १ चू० | १८ |
| विरय | ४ | सू० १८ से २३ |
| विरस | ५(१) | ६८ |
| | ५(२) | ३३, ४२ |
| | १० | १६ |
| विराय * | | |
| -विरायई | ८ | ६३ |
| | ६(१) | १४ |
| विरालिया | ५(२) | १८ |
| विराह * | | |
| -विराहेज्जासि | ४ | २८ |
| विस्स * | | |
| -विस्संति | ६(२) | १ |

| | | |
|---------------|-------|------------|
| विरेयण | ३ | ६ |
| विलिह * | | |
| -विलिहावेज्जा | ४ | सू० १८ |
| -विलिहेज्जा | ४ | सू० १८ |
| विलिहत | ४ | सू० १८ |
| विवज्ज* | | |
| -विवज्जाए | ५(१) | १५, ७५ |
| | ५(२) | ४६ |
| | ७ | ४, ७ |
| | ८ | ४१, ४६, ५५ |
| -विवज्जयामि | २ चू० | १३ |
| -विवज्जेज्जा | ५(१) | ३६ |
| | ६ | २४ |
| विवज्जभ | ५(२) | ४१, ४३ |
| विवज्जइत्ता | १० | १६ |
| विवज्जंत | ६ | ४६ |
| विवज्जण | २ चू० | ५, ६ |
| विवज्जयंत | १० | ३ |
| | २ चू० | १० |
| विवज्जिय | ६ | ५५ |
| | ८ | ५१ |
| विवज्जेत्ता | ५(२) | ४ |
| विवहुण | ८ | ५७ |
| विवण्ण | ५(२) | ३३ |
| विवण्णच्छंद | ६(२) | ८ |
| विवत्ति | ६ | ५७ |
| | ६(२) | २१ |

| | | |
|--------------|-------|-------------|
| विवित्त | ८ | ५२ |
| विवित्तवरिया | २ चू० | |
| विविह | ५(१) | ३६ |
| | ५(२) | २७, ३३ |
| | ६ | २७, ३०, ४१, |
| | | ४४ |
| | ८ | १०, १२ |
| | ६(४) | ४ |
| | १० | ८, ६, १२ |
| | १ चू० | १८ |
| विस | ८ | ५६ |
| | ६(१) | ६ |
| | १ चू० | १२ |
| विसम | ५(१) | ४ |
| विसय | ८ | ५८ |
| विसीअ * | | |
| -विसीएज्ज | ५(२) | २६ |
| विसीदंत | २ | १ |
| विसुज्झ * | | |
| -विसुज्झई | ८ | ६२ |
| विसुद्ध | ६(३) | ४ |
| विसोत्तिया | ५(१) | ६ |
| विसोहिठाण | ६(१) | १३ |
| विह | ६(४) | सू० ४ |
| विहगम | १ | ३ |

| | | | | | |
|--------------|-------|-------------|----------|-------|------------|
| विहम्म * | | | वुगह | ७ | ५० |
| -विहम्मइ | १ चू० | ७ | वुगहिय | १० | १० |
| विहर * | | | वुच्च * | | |
| -विहरामि | ४ सू० | १७ | -वुच्चति | १ | ५ |
| -विहरे | ८ | ५६ | | ७ | ४८ |
| -विहरेज्ज | २ चू० | १० | वुज्झ * | | |
| -विहरेज्जासि | ५(२) | ५० | -वुज्झइ | ६(२) | ३ |
| विहारचरिया | २ चू० | ५ | वुट्ठ | ७ | ५१, ५२ |
| विहि | ५(२) | ३ | | ८ | ६ |
| विहिसंत | ६ | २७, ३०, ४१, | वुत्त | ६ | ५, २०, ४८, |
| | | ४४ | | | ५४- |
| विट्ठयण | ८ सू० | २१ | | ८ | २ |
| | ६ | ३७ | | ६(२) | १६ |
| | ८ | ६ | वेणइय | ६(१) | १२ |
| वीअ * | | | वेय | ६(४) | सू० ४ |
| -वीए | १० | ३ | वेयइत्ता | १ चू० | सू० १ |
| -वीएज्ज | ८ | ६ | वेयावडिय | ३ | ६ |
| -वीएज्जा | ४ सू० | २१ | | २ चू० | ६ |
| -वीयावए | १० | ३ | वेर | ६(३) | ७ |
| -वीयावेज्जा | ४ सू० | २१ | वेरमण | ४ सू० | ११ से १७ |
| वीयत | ४ सू० | २१ | वेलुय | ५(२) | २१ |
| वीयण | ३ | २ | वेलोइय | ७ | ३२ |
| वीयावेज्ज | ६ | ३७ | वेस | ५(१) | ६, ११ |
| वीसम * | | | वेहिम | ७ | ३२ |
| -वीसमेज्ज | ५(१) | ६३ | वोक्कत | ६ | ६० |
| वीसमंत | ५(१) | ६४ | वोसट्ठ | ५(१) | ६१ |

| | | |
|---------------|-------|-------------------------------|
| वोसद्वृत्तदेह | १० | १३ |
| वोसिर * | | |
| -वोसिरामि | ४ | सू० १० से १६, सू० १८ से २२ |
| -वोसिरे | ५(१) | १६ |
| व्व | २ | ६ |
| | ८ | ४० |
| | १ चू० | ५,६ |
| स | | |
| स | ४ | सू० ८ |
| | ४ | १७, १८ |
| | ५(१) | ८७ |
| | ६ | ६ |
| | ८ | २ |
| | २ चू० | १ |
| सअ | ५(१) | ६ |
| सआ | ६ | ६८ |
| सइ | ५(२) | २० |
| सइकाल | ५(२) | ६ |
| सइत्तु | ६ | ५३ |
| संकट्टाण | ५(१) | १५ |
| सकण | ६ | ५८ |
| संकप्य | २ | १ |
| | १ चू० | सू० १ |

| | | |
|---------------|-------|------------|
| संकम | ५(१) | ४, ६५ |
| संका | ७ | ६ |
| संकिय | ५(१) | ४४, ७७ |
| | ७ | ७ |
| सकिल्लस | ५(१) | १६ |
| सकुचिय | ४ | सू० ६ |
| संखडि | ७ | ३६, ३७ |
| संग | १० | १६ |
| संघट्ट | | |
| -सघण्टु | ८ | ७ |
| संघट्टइत्ता | ६(२) | १८ |
| सघट्टिया | ५(१) | ६१ |
| सघाय | ४ | सू० २३ |
| सजइदिय | १० | १५ |
| संजम | १ | १ |
| | २ | ८ |
| | ३ | १, १० |
| | ४ | १२, १३, २७ |
| | ६ | १, ८, १६, |
| | | ४६, ६०, ६७ |
| | ७ | ४६ |
| | ८ | ४०, ६१ |
| | ९(१) | १३ |
| | १० | ७, १० |
| | १ चू० | सू० १ |

| | | | | | |
|----------------|-------|--|---------------|-----------|-------|
| संजमजीविय | २ चू० | १५ | संत | ५(२) | ११ |
| संजय | २ | १० | | ६(३) | १३ |
| | ३ | ११, १२ | | ६(१) | ५ |
| | ४ | सू० १८ से २३ | संजत | १ चू० | ८ |
| | ४ | १० | संताण | १ चू० | ८ |
| | ५(१) | ५ से ७, २२, ४१, ४३, ४८, ५०, ५२, ५४, ५६, ५८, ६०, ६२, ६४, ६६, ७७, ८३, ८६, ९७ | संतुष्ट | ५(२) | ३४ |
| | ५(२) | १, ८ से ११, १३, १५, १७, २८, ५० | संतोस | ६(३) | ५ |
| | ६ | १४, २६, २९, ३४, ४०, ४३ | संतोसओ | ८ | ३८ |
| | ७ | ४६, ५६ | संथर * | | |
| | ८ | ३, ४, ६, १३, १४, १६, १८, २४ | -संथरे | ५(२) | २ |
| | १० | १५ | सथार | ८ | १७ |
| संजाय | ७ | २३ | | ६(३) | ५ |
| संजोग | ४ | १७, १८ | संथारग | ४ सू० | २३ |
| संठाण | ८ | ५७ | सधि | ५(१) | १५ |
| संङ्ग्रह (दि०) | ५(१) | १२ | संपडिलेहियब्ब | १ चू० सू० | १ |
| | | | संपविडज्ज * | | |
| | | | -संपडिवज्जइ | ६(४) | सू० ४ |
| | | | संपडिवाइय | २ | १० |
| | | | सपडिवाय * | | |
| | | | -सपडिवायए | ६(२) | २० |
| | | | सपणोल्लिया | ५(१) | ३० |
| | | | सपत्त | ५(१) | १ |
| | | | सपत्ति | ६(२) | २१ |
| | | | सपन्न | ६ | १ |
| | | | | ७ | ४६ |
| | | | | ८ | ५१ |

दसवेआलिय शब्द-सूची

७६

| | | |
|--------------|-------|--------|
| संपमज्जिता | ५(१) | ८३ |
| सपय | ७ | ७ |
| सपराय | २ | ५ |
| सपस्सिय | १ चू० | १८ |
| सपहास | ८ | ४१ |
| | १० | ११ |
| संपाविउकाम | ६(१) | १६ |
| सपिक्ख * | | |
| -सपिक्खई | २ चू० | १२ |
| सपुच्छण | ३ | ३ |
| सफुस * | | |
| -सफुसावेज्जा | ४ सू० | १६ |
| -सफुसेज्जा | ४ सू० | १६ |
| सफुसत | ४ सू० | १६ |
| सवाहण | ३ | ३ |
| संबुद्ध | २ | ११ |
| सभिन्नवित्त | १ चू० | १३ |
| समुच्छिय | ७ | ५२ |
| सरक्खण | ६ | २१ |
| सल्लिह * | | |
| -सल्लिहे | ८(४) | ७ |
| सल्लिहत्ताण | ५(२) | १ |
| सलुच्चिया | ५(२) | १४ |
| सलोग | ५(१) | २५ |
| सवच्छर | २ चू० | ११ |
| सवर | ४ | १६, २० |

| | | |
|------------|-------|------------|
| सवर | ५(२) | ३६, ४१, ४४ |
| | १० | ५ |
| | २ चू० | ४ |
| संवर * | | |
| -सवरे | ८ | ३१ |
| सवहण | ७ | २५ |
| सवुड | ५(१) | ८३ |
| | ६(४) | ५ |
| ससअ | ५(१) | १० |
| | ६ | ३४ |
| ससग्गि | ५(१) | १० |
| | ६ | १६ |
| | ८ | ५६ |
| ससट्ट | ५(१) | ३४, ३६ |
| संसट्टकप्प | २ चू० | ६ |
| ससक्त | ६ | २४ |
| ससार | २ चू० | ३ |
| संसारसायर | ६ | ६५ |
| ससेइम | | |
| (सस्वेदज) | ४ सू० | ६ |
| ससेइम | | |
| (ससेक्किम) | ५(१) | ७५ |
| सक्क | ६(३) | ६ |
| सक्कणिज्ज | २ चू० | १२ |
| सक्करा | ५(१) | ८४ |

| | | | | | |
|-----------|-------|------------|--------------|-------|------------|
| सककार * | | | सत्ति | ६(१) | ८,६ |
| -सककारण | ६(१) | १२ | सत्तुचुण | ५(१) | ७१ |
| -सककारेति | ६(२) | १५ | सत्थ | ६ | ३२ |
| सककारण | १० | १७ | | ६(२) | ८ |
| सककुलि | ५(१) | ७१ | | १० | २ |
| सगास | ५(१) | ८८, ६० | सत्थपरिणय | ४ | सू० ४ से ८ |
| | ५(२) | ५० | सद् | ८ | २६ |
| | ८ | ४४ | | ६(४) | सू० ६, ७ |
| | ६(१) | १ | | १० | ११ |
| सन्नमोसा | ७ | ४ | सद्धा | ८ | ६० |
| सच्चरय | ६(३) | १३ | सद्धि | ५(१) | ६५ |
| सच्चवाइ | ६(३) | ३ | सन्निर (दि०) | ५(१) | ७० |
| सच्चा | ७ | २, ३, ११ | सन्निवेस | ५(२) | ५ |
| सच्चामोसा | ७ | २ | सन्निहि | ३ | ३ |
| सच्चित्त | ३ | ७ | | ६ | १७, १८ |
| | ४ | सू० २२ | | ८ | २४ |
| | ५(१) | ३० | सन्निहिओ | १० | १६ |
| | ५(२) | १४, १६ | सप्पि | ६ | १७ |
| | १० | ३ | सप्पुरिस | २ चू० | १५ |
| सजोइय | ८ | ८ | सबीय | ४ | सू० ८ |
| सज्भाण | ८ | ६२ | सबीयग | ८ | २ |
| सज्भाय | ५(१) | ६३ | सभिकखु | १० | |
| | ८ | ४१, ६१, ६२ | सम | १ | ५ |
| | १० | ६ | | २ | ४ |
| | २ चू० | ७ | | ६(३) | ११ |
| सठ | ६(२) | ३ | | १० | ५, ११, १३ |
| सत्त | ४ | सू० ४ से ८ | | २ चू० | १० |

| | | |
|---------------|-------|-------------------------------|
| समइककंत | १ चू० | ६ |
| समं | २ चू० | ६ |
| समण | १ | ३ |
| | ४ सू० | १ से ३ |
| | ४ | २६ |
| | ५(१) | ३०, ४०, ४६, ५३, ६७ |
| | ५(२) | १०, ३४, ४०, ४५ |
| समणधम्मं | ८ | ४२ |
| समणुजाण * | | |
| -समणुजाणति | ६ | ४८ |
| -समणुजाणामि | ४ | सू० १० से १६, सू० १८ से २२ |
| -समणुजाणेज्जा | ४ | सू० १० से १६, सू० १८ से २२ |
| समत्त | ८ | ६१ |
| समाजत्त | ७ | ४६ |
| समागय | ५(२) | ७ |
| समाण | १ चू० | १० |
| समायर * | | |
| -समायरामि | २ चू० | १२ |
| -समायरे | ४ | ११ |
| | ५(२) | ४ |
| | ८ | २१, ३१, ३५ |
| समारंभे | ३ | ४ |

| | | |
|----------------|-------|---------------------------------------|
| समारंभ | ६ | २८, ३१, ३५, ३६, ३६, ४२, ४५, ५१- |
| समारंभ * | | |
| -समारंभावेज्जा | ४ सू० | १० |
| -समारंभेज्जा | ४ सू० | १० |
| समारंभंत | ४ सू० | १० |
| समावन्न | ५(२) | २ |
| | १ चू० | सू० १ |
| समावयत | ६(३) | ८ |
| समासेज्ज | ८ | ४५ |
| समाहि (ही) | ६(१) | १६ |
| | ६(४) | सू० १ से ७ |
| | ६(४) | २ से ६ |
| | २ चू० | ४ |
| समाहिय | ५(१) | २६, ६६ |
| | ८ | १६ |
| | १० | १ |
| समीरिय | ८ | ६२ |
| समुक्कस * | | |
| -समुक्कसे | ५(२) | ३० |
| | ८ | ३० |
| | १० | १८ |
| समुद्धर * | | |
| -समुद्धरे | १० | १४ |

| | | |
|--------------|-------|----------|
| समुपेहिया | ७ | ५५ |
| समुप्यन्न | ७ | ४६ |
| समुप्येह | ७ | ३ |
| | ८ | ७ |
| समुयाण | ५(२) | २५ |
| | ६(३) | ४ |
| | २ चू० | ५ |
| समुवे * | | |
| -समुवेति | ६(२) | १ |
| समुस्सय | ६ | १६ |
| समोसढ | ६ | १ |
| सम्म | ४ | ६ |
| | ५(१) | ६१ |
| | ६(४) | सू० ४ |
| | १ चू० | सू० १ |
| | २ चू० | १३ |
| सम्महमाण | ५(१) | २६ |
| सम्मद्विट्ठि | ४ | २८ |
| | १० | ७ |
| सम्मद्विया | ५(२) | १६ |
| सम्मय | ८ | ६० |
| सम्माण | ५(२) | ३५ |
| सम्मुच्छिम | ४ | सू० ८, ६ |
| सय | ५(१) | ६ |
| | ७ | ५५ |

| | | |
|-------|-------|--------------|
| सय * | | |
| -सय | ७ | ४७ |
| | ८ | १३ |
| -सये | ४ | ७, ८ |
| सयं | ४ | सू० १० से १६ |
| | ५(२) | ३३ |
| सयण | २ | २ |
| | ५(२) | २८ |
| | ७ | २६ |
| | ८ | ५१ |
| | २ चू० | ८ |
| सयमाण | ४ | ४ |
| सयय | ५(२) | ३८ |
| | ८ | ४० |
| | ६(१) | १३ |
| | ६(३) | १३, १५ |
| | २ चू० | १६ |
| सयल | ६ | ४ |
| सया | १ | १ |
| | ४ | २८ |
| | ५(१) | १४ |
| | ५(२) | २५ |
| | ७ | ५५, ५६ |
| | ८ | ३२, ४१, ६ |
| | ६(३) | ६, १० |
| | ६(४) | ४ |
| | १० | ३, ६, ७, ८ |

दसवेआलिय शब्द-सूची

| | | |
|--------------|-------|--------|
| सरीर | १० | १२ |
| | १ चू० | १६ |
| सरीसिव | ७ | २२ |
| सलागा | ४ | सू० १८ |
| सवक्कसुद्धि | ७ | ५५ |
| सविज्जविज्जा | ६ | ६६ |
| सव्वओ | ६ | ३२ |
| | ७ | १ |
| सव्व | ३ | १० |
| सव्वत्तग | ४ | २१, २२ |
| सव्वत्थ | ६ | २१ |
| | ७ | ४४ |
| सव्वभाव | ८ | १६ |
| सव्वसो | ७ | १ |
| | ८ | ४७ |
| | ९(४) | ७ |
| सव्वुक्कस | ७ | ४३ |
| ससक्क | ५(२) | ३६ |
| ससरक्क | ४ | सू० १८ |
| | ५(१) | ७, ३३ |
| | ८ | ५ |
| ससार | ७ | ३५ |
| ससि | ९(१) | १५ |
| ससिणिद्ध | ४ | सू० १९ |
| | ५(१) | ३३ |
| सह | १० | ११ |

| | | |
|---------|-------|----------------------------|
| सह * | | |
| -सहई | ९(३) | ८ |
| -सहे | १० | ११ |
| -सहेज्ज | ९(३) | ६ |
| सहाय | २ चू० | १० |
| सहेउ | ९(३) | ६ |
| सहेत्तु | ३ | १४ |
| साइ | १ चू० | सू० १ |
| साइम | ४ | सू० १६ |
| | ५(१) | ४७, ४९, ५१, ५३, ५७, ५९, ६१ |
| | ५(२) | २७ |
| | १० | ८, ९ |
| सागर | ९(३) | १४ |
| सागरोवम | १ चू० | १५ |
| साण | ५(१) | १२, २२ |
| | ७ | १६ |
| साणी | ५(१) | १८ |
| सामंत | ५(१) | ९, ११ |
| सामणिय | ७ | ५९ |
| | १० | १४ |
| सामण्ण | २ | १ |
| | ४ | २८ |
| | ५(१) | १० |
| | ५(२) | ३० |
| | १ चू० | ९ |

| | | | | | |
|----------------|-------|------------|----------|-------|----------|
| सामण्णपुब्बय | २ | | साहीण | २ | ३ |
| सामिणी | ७ | १६ | साहु | १ | ३,५ |
| सामिय | ७ | १६ | | ५(१) | ५,६,७,८ |
| सामुद्द | ३ | ८ | | | ६४ से ६६ |
| साय | ४ | २६ | | ५(२) | ४३ |
| सायग | ४ | २६ | | ६ | १२ |
| सारक्ख | ५(२) | ३६ | | ७ | ४८,४९ |
| सारिस | १ चू० | १० | | ८ | ५२ |
| साला | ७ | ३१ | | ९(३) | ११ |
| सालुय | ५(२) | १८ | | २ चू० | ४ |
| सावज्ज | ६ | ३६, ६६ | सिअ | ४ | सू० २१ |
| | ७ | ४०, ४१, ५४ | सिगबेर | ३ | ७ |
| | १ चू० | सू० १ | | ५(१) | ७० |
| सासय (शाश्वत्) | ४ | २५ | सिंघाण | ८ | १८ |
| | ६(४) | ७ | सिंच | | |
| सासय (स्वाशय) | ७ | ४ | -सिंचति | ८ | ३६ |
| सासवनालिआ | ५(२) | १८ | सिघव | ३ | ८ |
| साहदुद्द | ५(१) | ३० | सिंबलि | ५(१) | ७३ |
| साहण | ५(१) | ६२ | सिक्ख | | |
| साहम्मिय | १० | ६ | -सिक्खे | ७ | १ |
| साहस | ६(२) | २२ | | ६(१) | १, १२ |
| साहा | ४ | सू० २१ | सिक्खमाण | ६(२) | १४ |
| | ६ | ३७ | सिक्खा | ६ | ३ |
| | ८ | ६ | | ६(२) | १२, २१ |
| | ६(२) | १ | सिक्खऊण | ५(२) | ५० |
| साहारण | १ चू० | सू० १ | सिग्घ | ६(२) | २ |

| | | | | | |
|-----------|------|-------------|---------|-------|------------|
| सिञ्ज # | | | सिर | ६(१) | ८, १२ |
| -सिञ्जंति | ३ | १४ | सिरी | ६(२) | ४ |
| सिणाण | ३ | २ | | १ चू० | १२ |
| | ५(१) | २५ | सिला | ४ | १८ |
| | ६ | ६०, ६३ | | ५(१) | ६५ |
| सिगाय * | | | | ८ | ४, ६ |
| -सिगायति | ६ | ६२ | सिलेस | ५(१) | ४५ |
| सिगायत | ६ | ६१ | सिलोग | ६(४) | सू० ४ से ७ |
| सिणेह | ८ | १५ | | १ चू० | सू० १ |
| सित्त | ६(२) | १२ | सिव | ७ | ५१ |
| सिद्ध | ४ | २५ | सिहि | ६(१) | ३ |
| | ६(४) | ७ | सीईभूय | ८ | ५६ |
| सिद्धि | ४ | २४, २५ | सीओदय | ६ | ५१ |
| | ६ | ६८ | | ८ | ६ |
| | ६(१) | १७ | | १० | २ |
| सिद्धिमग | ३ | १५ | सीय | ६ | ६२ |
| | ८ | ३४ | | ७ | ५१ |
| सिप्य | ६(२) | १३, १५ | | ८ | २७ |
| सिया | २ | ४ | सील | ६(१) | १४, १६ |
| | ५(१) | २८, ४०, ७४, | सीस | ४ | सू० २३ |
| | | ८२, ८४ | | ६(१) | ६ |
| | ५(२) | १२, ३१, ३३ | सीह | ६(१) | ८, ६ |
| | ६ | १८, ५२ | सुअलकिय | ८ | ५४ |
| | ७ | २८ | सुइ | ८ | ३२ |
| | ८ | ३, २५, ४७ | सुउद्धर | ६(३) | ७ |
| | ६(१) | ७, ६ | सुण | १० | ८ |

| | | |
|-----------------|-------|--------------|
| मुकड | ७ | ४१ |
| मुक्क | ५(१) | ६८ |
| मुक्कोय | ७ | ४५ |
| सुगंध | ५(२) | १ |
| सुगड | ४ | २६, २७ |
| मुद्धिन्न | ७ | ४१ |
| सुद्धिअप्य | ३ | १ |
| | ६(१) | ३ |
| सुण * | | |
| -सुणेड | ८ | २० |
| -सुणेज्जा | ५(१) | ४७ |
| -सुणेह | ५(२) | ३७, ४३ |
| | ६ | ४, ६ |
| | ८ | १ |
| मुणित्तु | २ चू० | १ |
| मुत्तित्था | ७ | ३६ |
| मुतोसअ | ५(२) | ३४ |
| मुत्त (मुत्त) | ४ | सू० १८ से २३ |
| | ६(१) | ८ |
| मुत्त (मूत्र) | १० | १५ |
| | २ चू० | ११ |
| मुदसण | १ चू० | १७ |
| सुदुल्लह | ५(२) | ४८ |
| सुद्ध | ५(१) | ५६ |
| सुद्धपुदवी | ८ | ५ |
| सुद्धागणि | ४ | सू० २० |

| | | |
|--------------|-------|-------------------|
| सुद्धोदग | ४ | सू० १६ |
| सुनिद्धिय | ७ | ४१ |
| सुनिसिय | १० | २ |
| सुपक्क | ७ | ४१ |
| सुपन्नत्त | ४ | सू० १ से ३ |
| सुप्यणिहिदिअ | ५(२) | ५० |
| सुभासिय | २ | १० |
| | ६(१) | १७ |
| | ६(३) | १४ |
| सुमिण | ८ | ५० |
| सुय | ४ | सू० १ |
| | ८ | २०, २१, ३०, ६३ |
| | ६(१) | ३, १४, १६ |
| | ६(२) | २ |
| | ६(४) | सू० १, १, ३ |
| | १० | १६ |
| | २ चू० | १ |
| सुयवखाय | ४ | सू० १ से ३ |
| सुयग्गाहि | ६(२) | १६ |
| सुयत्थवम्म | ६(२) | २३ |
| सुयसमाहि | ६(४) | सू० ३, ५ |
| | ६(४) | ३ |
| सुर | ६(१) | १४ |
| सुरक्खिय | २ चू० | १६ |
| सुरा | ५(२) | ३६ |

| | | |
|--------------|-------|-------------|
| सुष्ट | ६(१) | ५ |
| सुल्लु | ७ | ४१ |
| सुलभ | १ चू० | १४ |
| सुलह | ४ | २७ |
| सुविक्रीय | ७ | ४५ |
| सुविणीय | ६(२) | ६, ६, ११ |
| सुविसुद्ध | ६(४) | ६ |
| सुविहिय | २ चू० | ३ |
| सुसंतुद्ध | ८ | २५ |
| सुसंबुद्ध | १० | ७ |
| सुसमाउत्त | ६ | ३ |
| सुसमाहिइंदिय | ७ | ५७ |
| सुसमाहिय | ३ | १२ |
| | ५(१) | ६ |
| | ६ | २६, २६, ४०, |
| | | ४३ |
| | ८ | ४ |
| | ६(४) | ६ |
| | १० | १५ |
| | २ चू० | १६ |
| सुस्सुस † | | |
| -सुस्सुसइ | ६(४) | २ |
| -सुस्सुसए | ६(१) | १७ |
| सुस्सुसमाण | ६(३) | १, २ |
| सुस्सुसा | ६(२) | १२ |
| सुह | ४ | २६ |

| | | |
|-------------|-------|----------------------------------|
| सुह | ६(१) | १० |
| | ६(२) | ६, ६, ११ |
| | १० | ११ |
| | २ चू० | ३ |
| सुहड | ७ | ४१ |
| सुहर | ८ | २५ |
| सुहावह | ६ | ३ |
| | ६(४) | ६ |
| सुहि | २ | ५ |
| सुहुम | ४ | सू० ११ |
| | ६ | २३, ६१ |
| | ८ | १३ से १५ |
| सूइय | ५(१) | ६८ |
| सूइया | ५(१) | १२ |
| सूर | ८ | ६१ |
| से (दि०) | ४ | सू० ६, ११ से १६, सू० १८ से २३ |
| सेज्जा | ४ | सू० २३ |
| | ५(१) | ८७ |
| | ५(२) | २ |
| | ६ | ४७ |
| | ८ | १७, ५२ |
| | ६(२) | १७ |
| | ६(३) | ५ |
| | २ चू० | ८ |
| सेज्जायरपिड | ३ | ५ |

कम

| | | |
|---------|-------|------------|
| सेट्टि | १ चू० | ५ |
| सेडिया | ५(१) | ३४ |
| सेणा | ८ | ६१ |
| सेय | २ | ७ |
| | ४ | सू० १ से ३ |
| सेव | ४ | सू० १४ |
| | ५(२) | ३४ |
| | ८ | ६ |
| सेवंत | ४ | सू० १४ |
| सेनिय | ६ | ३७, ६६ |
| सेलेसी | ४ | २३, २४ |
| सेस | ५(१) | ३६ |
| | २ चू० | १२ |
| सोउमल्ल | २ | ५ |
| सोम * | | |
| सोएज्जा | ५(२) | ६ |
| सोडिया | ५(२) | ३८ |
| सोक्ख | ८ | २६ |
| | १ चू० | ११ |
| सोग्गइ | ५(१) | १०० |
| | ८ | ४३ |
| सोच्चा | २ | १० |
| | ४ | ११ |
| | ५(१) | ५६, ७६ |
| सोच्चाण | ६(१) | १७ |
| | ६(३) | १४ |

परिशिष्ट-

| | | |
|------------|-------|---------------------|
| सोच्चाणं | ८ | २५ |
| सोय | ६(२) | ३ |
| सोरट्टिया | ५(१) | ३४ |
| सोवक्केस | १ चू० | सू० १ |
| सोवच्चल | ३ | ८ |
| सोह * | | |
| -सोहई | ६(१) | १५ |
| सोहि | ५(२) | ५० |
| ह | | |
| हं | १ चू० | सू० १ |
| हंदि (दि०) | ६ | ४ |
| हळ | २ | ६ |
| हण * | | |
| -घायए | ६ | ६ |
| -हणे | ६ | ६ |
| | ८ | ३८ |
| हत्य | ४ | सू० १८, २१, २३ |
| | ५(१) | ३२, ३५, ३६, ६८, ८५- |
| | ८ | ४४, ५५ |
| | १० | १५ |
| हत्यग | ५(१) | ७८, ८३ |
| हत्यि | १ चू० | ७ |

| | | |
|--------------|-----------|------------|
| हय (हय) | ५(१) | १२ |
| | ६(२) | ५, ६ |
| | १ चू० सू० | १ |
| हय (हत) | १० | १३ |
| हरतणुग (दि०) | ४ | सू० १६ |
| हरिय | ४ | सू० २२ |
| | ५(१) | ३, २६, २६, |
| | | ५७ |
| | ५(२) | १६ |
| | ८ | ११, १५ |
| | १० | ३ |
| हरियाल | ५(१) | ३३ |
| हल | ७ | १६ |
| हला | ७ | १६ |
| हव * | | |
| -हवति | ६(३) | ७ |
| -हवेज्ज | ८ | २४, २६ |
| | १० | ६ |
| | १ च० | १७ |
| -हवेज्जा | १० | १, १३ |
| | २ चू० | ७ |
| हव्ववाह | ६ | ३४ |
| हसंत | ५(१) | १४ |
| हस्सकुह्व | १० | २० |
| हाव * | | |
| -हार्यति | ८ | ३५ |

| | | |
|-----------|-------|-------------|
| हाणि | २ चू० | ६ |
| हालहल | ६(१) | ७ |
| हाव * | | |
| -हावएज्जा | ८ | ४० |
| हास | ४ | सू० १२ |
| हासमाण | ७ | ५४ |
| हिगुलअ | ५(१) | ३३ |
| हिस * | | |
| -हिसई | ४ | १ |
| | ६ | २७, ३०, ४१, |
| | | ४४ |
| -हिसंति | ६ | २६, २६, ४०, |
| | | ४३ |
| -हितेज्ज | ५(१) | ५ |
| -हितेज्जा | ८ | १२ |
| हिसग | ६ | ११ |
| हिम | ४ | सू० १६ |
| | ८ | ६ |
| हिय | ४ | सू० १७ |
| | ५(१) | ६४ |
| | ७ | ५६ |
| | ८ | ३६, ४३ |
| | ६(४) | २, ६ |
| | १० | २१ |
| हीणपेसण | ६(२) | २२ |

| | | | | | |
|---------|-------|--------|------------|-----------|----------|
| हील * | | | -होइ | ६ | ६० |
| -हीलए | ६(३) | १२ | | ६(१) | १,४ |
| -हीलंति | ६(१) | २ | | १० | ४ |
| | १ चू० | १२ | | १ चू० सू० | १ |
| हीलणा | ६(१) | ७,६ | | १ चू० | २ से ६ |
| हीलयत | ६(१) | ४ | -होउ | ७ | ५०,५१ |
| हीलिय | ६(१) | ३ | -होज्ज | ५(१) | ५७,५६,८० |
| ह् | २ | ३ | | ७ | ५१ |
| ह् | ७ | १६ | -होज्जा | ५(१) | ६,६१ |
| हैउ | ५(१) | ६२ | | ५(२) | १२ |
| | ६(२) | २० | | ७ | २६ |
| | ६(४) | सू० ७ | -होज्जामि | ५(१) | ६४ |
| हैइ | १ चू० | १३ | -होति | २ चू० | ४ |
| हेमत | ३ | १२ | -होमो | २ | ८ |
| हो * | | | -होहिसि | २ | ५ |
| -हवइ | ४ | २५ | हो | ७ | १६ |
| | ६ | ६० | होउकाम | २ चू० | २ |
| | ४ | १ से ६ | होयव्वय | ८ | ३ |
| | ५(२) | ३२ | होल (दे०) | ७ | १४,१६ |
| | | | होला (दि०) | ७ | १६ |

*

परिशिष्ट-२

उत्तरज्झयण शब्द-सूची

उत्तररङ्गभयण शब्द-सूची

[१—अव्यय और सर्वनाम के साक्ष्य-स्थल का निर्देश प्रायः एक बार किया गया है ।

२—रूपान्तरो को एक साथ लिया है । जैसे—लोअ(ग, य), चंद(न्द) ।

३—ताराकित शब्द धातुएँ हैं । उनके रूप उनके नीचे निर्देशाचिह्न (उँ) के बाद हैं ।

४—संस्कृत छाया केवल समान शब्दों की ही दी गई है ।]

| अ | अइदूर | १ | ३३ |
|----------|------------|----|--------|
| अ | | २० | ७ |
| अइ | अइदूरओ | १ | ३४ |
| अइउच्च | अइमत | १६ | ८ |
| अइक्कम * | अइमाय | १६ | सू० १० |
| -अइक्कमे | | १६ | १२ |
| -अइक्कमइ | अइयाअ | २० | ५६ |
| अइगय | अइरित्त | २६ | २८ |
| | अइलोलुअ | ११ | ५ |
| अइच्छत | अइवत्त * | | |
| अइच्छिय | -अइवत्तई | २७ | २ |
| अइच्छिया | अइवाय † | | |
| अइतिक्ख | -अइवाएज्जा | ८ | ६ |
| अइदुस्सह | अइविगिट्ट | ३६ | २५३ |

१—इस कोष्ठक की सख्याएँ अध्ययन की सूचक हैं ।

२—इस कोष्ठक का सख्याएँ श्लोक अथवा 'सू०' सूत्र की सूचक हैं ।

| | | | | | |
|---------|----|--------|-----------|----|-----------|
| अइवेला | २ | ६,२२ | अंगण | ७ | १ |
| अइसय | २६ | सू० ३८ | अंगविज्जा | ८ | १३ |
| अईय | २३ | ८५ | अंगवियार | १५ | ७ |
| | २५ | २१ | अगुल | २६ | १४,१६ |
| | ३३ | १७ | अंगुलि | २६ | २३ |
| अईयार | २६ | ३६,४०, | अजण | ३४ | ४ - |
| | | ४७,४८ | | ३६ | ७४ - |
| अजणतीस | ३६ | २४० | अजलिकरण | ३० | ३२ |
| अजणतीसड | ३६ | २४१ | अड | ३२ | ६ |
| अजणवीस | ३६ | २३० | अत | १४ | ५१ |
| अजणवीसड | ३६ | २३१ | | २२ | १५ |
| अउत्त | १६ | २६ | | २८ | ४१,५८,६१, |
| अउल | २ | ३५ | | | ७३ |
| | २० | ५,१६ | | २६ | सू० १ |
| | ३६ | ६६ | | ३६ | ५६,६१ |
| अक | ३४ | ६ | अंतकर | २३ | ८४ |
| | ३६ | ६१,७५ | | ३५ | १ |
| अंकुस | ६ | ६० | अंतकाल | १३ | २२ |
| | २२ | ४६ | अंतकिरिया | २६ | सू० १४ |
| अग | २ | ३ | अतग | ३२ | १६ |
| | ३ | १ | अतगवेसि | १४ | ५१ |
| | १२ | ४३,४४ | अतमुहुत्त | ३४ | ६० |
| | १६ | ४ | अतर | १६ | सू० ७ - |
| अंग | २० | १६ | | १६ | ७४ |
| | २८ | २१,२३ | | २० | २० |
| अंगअ | २२ | ३६ | | ३६ | ८२,६०, |

| | | | | |
|-------------|--|-------------|----|---|
| अंतर | १०४, ११५, १२४, १३४, १६८, १७७, १८६, १९३, २०२, २४६ | अंतोमुहुत्त | ३६ | ८० से ८२, ८८ से ९०, १०२ से १०४, ११३ से ११५, १२२ से १२४, १३२ से १३४, १४१ से १४३, १५१ से १५३, १६८, १७५ से १७७, १८४ से १८६, १९१ से १९३, २०० से २०२, २४६ |
| अंतरद्वीवय | ३६ १९६ | | | |
| अतरमासिल्ल | २७ ११ | | | |
| अंतरा | २२ ३३ | | | |
| अंतराय | १४ ७ | | | |
| | २६ सू० ७१ | | | |
| | ३२ १०८ | | | |
| | ३३ ३, १५, २० | | | |
| अतरिच्छा | २० २१ | | | |
| अंतरेण | १ २५ | | | |
| | २६ सू० ३४, ३५ | अंघगवण्हि | २२ | ४३ |
| अतरेय | ३६ १४, १३४, १४३, १५३ | अंघयार | २२ | ३३ |
| | | | २३ | ७५ |
| अतल्लिक्ख | १२ २५ | | २८ | १२ |
| | १५ ७ | अंचिय | ३६ | १४६ |
| | २१ २३ | अंसहर | १३ | २२ |
| अतो | २२ ३३ | अंसु | २० | २८ |
| | २३ ४५ | अकंपमाण | २१ | १६ |
| | ३३ १७ | अकड | १ | ११ |
| अंतोमुहुत्त | २६ सू० ७२ | अकम्म | २६ | सू० ७१ |
| | ३३ १६, २१, २२ | अकम्मचेट्टु | १२ | २६ |
| | ३४ ४५ | अकम्म (भूम) | ३६ | १६६ |

| | | | | | |
|-------------|----|---------------------------|-------------|----|-----------|
| अकम्मया | २६ | सू० १ | अकित्तण | ३२ | १५ |
| अकरणया | २६ | सू० ३२ | अकिरिया | १८ | २३, ३३ |
| अकरेत | ६ | ६ | | २६ | सू० २८ |
| अकलेवरसेणि | १० | ३५ | अकिरियाअ | २६ | सू० २८ |
| अकमाय | २८ | ३३ | अकुञ्जहल | ११ | १० |
| | | ३० | | ३४ | २७ |
| अकालं | १३ | ३४ | अकुवकुअ | २ | २० |
| अकाल्म | १३ | २१ | | २१ | १८ |
| अकाल्मं | १६ | १६ | अकुय | १ | ३० |
| अकान | ५ | ३ | अकुव्वमाण | १३ | २१ |
| | ६ | ५३ | अकोहण | ११ | ५ |
| अकामकाम | १५ | १ | अक्कोस | १ | ३८ |
| अकाममरण | ५ | २, १६, १७ | | २ | सू० ३ |
| | ३६ | २६१ | | १५ | ३ |
| अकाममरणिज्ज | ५ | | | १६ | ३१ |
| अकारि | ६ | ३० | अक्कोस * | | |
| अकाल | १ | ३१ | -अक्कोसेज्ज | २ | २४ |
| अकालिय | ३२ | २४, ३७, ५०, ६३, ७६, ८६ | अक्क | ५ | १४, १५ |
| अकिचण | २ | १४ | अक्क * | | |
| | १४ | ४१ | -अक्खाहि | १२ | ४० |
| | २१ | २१ | अक्कय | ११ | ३० |
| | २५ | २७ | अक्कल | २६ | सू० ७२ |
| अकिचण | २६ | सू० ४७ | अक्कलय | २ | सू० १ |
| | ३५ | १६ | | ५ | २ |
| | १४ | १५ | | ८ | ८, १३, २० |
| | | | | १६ | सू० १ |

| | | |
|------------|----|--------|
| अक्लाय | १८ | ४३ |
| | २३ | ६३ |
| | २४ | ३ |
| | २६ | सू० १ |
| अक्खेव | २५ | १३ |
| अगणि | १२ | २७ |
| | १६ | ४७ |
| | ३६ | १०६ |
| अगार | १ | २६ |
| अगारत्य | ५ | १६ |
| अगारघम्म | २६ | सू० ३ |
| अगारव | ३० | ३ |
| अगारवास | २ | २६ |
| अगारि | ५ | १६, २३ |
| | २७ | २२ |
| अगिलायअ | २६ | १० |
| अगिह | १५ | १६ |
| अगुणि | २८ | ३० |
| अगुत्त | ३४ | २१ |
| अग (अग्र) | ७ | २३, २४ |
| | ६ | ४४ |
| | १० | २ |
| | २० | १५ |
| अग (अग्रय) | १४ | ३१ |
| अगमाहिती | १६ | १ |
| अगला | ६ | २० |

| | | |
|---------------|----|------------|
| अग्नि | २ | ७ |
| | ६ | १२ |
| | १२ | ३६ |
| | १४ | १०, १८, ४३ |
| | १६ | ३६, ६६ |
| | २० | ४७ |
| | २३ | ५०, ५२, ५३ |
| | २५ | १८, १६ |
| | ३२ | ११ |
| | ३६ | २०६ |
| अग्निहोत्त | २५ | १६ |
| अग * | | |
| -अग्घइ | ६ | ४४ |
| अचक्किय | ११ | ३१ |
| अचक्कु | ३३ | ६ |
| अचयंत | २५ | १३ |
| अचवल | ११ | १० |
| | ३४ | २७ |
| अचिन्तण | ३२ | १५ |
| अचित्त | २५ | २४ |
| अचियत्त (दि०) | ११ | ६ |
| | १७ | ११ |
| अचिर | १४ | ५२ |
| | २४ | १७ |
| अचेल | २ | सू० ३ |
| अचेल्ला (अ) | २ | १२, १३, ३४ |
| | २३ | ६३, २६ |

| | | |
|--------------|----|----------|
| अचोड्य | १ | ४४ |
| अच्च * | | |
| -अच्चिमो, | | |
| अच्चेषु | १२ | ३४ |
| अच्चत | १८ | ५२ |
| | २० | ५ |
| | ३२ | १.११०, |
| | | १११ |
| अच्चणा | ३५ | १८ |
| अच्चय | १० | १ |
| अच्चि | ३६ | १०६ |
| अच्चिमालि | ५ | २७ |
| अच्चुय | ३६ | २११, २३३ |
| अच्चे * | | |
| -अच्चेड | १३ | ३१ |
| अच्छ | १२ | २६ |
| अच्छ * | | |
| -अच्छड | ३१ | ३ से २० |
| -अच्छहि | २२ | १६ |
| अच्छन | १६ | ७८ |
| अच्छण | २६ | ७ |
| अच्छि | २० | १६, २० |
| अच्छिरोडअ | ३६ | १४८ |
| (दि०) | | |
| अच्छिल (दि०) | ३६ | १४८ |
| अच्छिवेहअ | ३६ | १४७ |
| (दि०) | | |

| | | |
|-------------|----|----------|
| अच्छेरग | ६ | ५१ |
| अजय | ४ | १ |
| अजहन्न | ३६ | २४४ |
| अजाइय | २ | २८ |
| अजाणग | २५ | १८ |
| अजाणमाग | १४ | २० |
| अजिइंदिय | १२ | ५ |
| | ३४ | २२ |
| अजिण | ५ | २१ |
| अजिय | २३ | ३८ |
| अजीव | २८ | १४, १७ |
| | ३६ | २ से ४, |
| | | १३, १४, |
| | | २४८, २४९ |
| अजीवविमत्ति | ३६ | ४७ |
| अजोगत्त | २६ | सू० ३७ |
| अजोगि | २६ | सू० ३७ |
| अज्ज (अद्य) | २ | ३१ |
| | ६ | ७ |
| | १० | ३१ |
| | १२ | १७ |
| | १३ | ६ |
| | १४ | २८ |
| अज्ज * | | |
| -अज्जयन्ते | १३ | १२ |

| | | | | | |
|--------------|----|------------|-------------|----|-------------|
| अज्ज (अर्थ) | १३ | २७, ३२ | अट्ट (अर्थ) | ४ | ४ |
| | १४ | ४५ | | ५ | ८ |
| | २० | ६, ८ | | ६ | ४, १३ |
| अज्जव | ६ | ५७ | | ७ | २५, २६ |
| | २६ | सू० १ | | ८ | ३, १२ |
| अज्जवयण | २५ | २० | | ९ | ८, ११, १३, |
| अज्जवया | २६ | सू० ४८ | | | १७, १६, २३, |
| अज्जिय | १ | ४२ | | | २५, २७, २६, |
| | १८ | १६ | | | ३१, ३३, ३७, |
| अज्जुण | २६ | ६० | | | ३६, ४१, ४३, |
| अज्जन्थ | ६ | ६ | | | ४५, ४७, ५० |
| | १४ | १६ | | ११ | ३२ |
| अज्जप्पजोग | २६ | सू० ५४ | | १२ | ३, ६ ३५ |
| अज्जप्पजभाण- | | | | १४ | ४, ३० |
| जोग | १६ | ६३ | | १५ | १० |
| अज्जप्पण | २६ | सू० १, ७३ | | १६ | १ |
| अज्जवमाण | १२ | ७ | | १८ | २१ |
| अज्जमावय | १२ | १६, १८, १६ | | १९ | ८० |
| अज्जुमिर | २४ | १७ | | २० | ८ |
| अट्ट | ३० | ३५ | | २२ | १५, १६ |
| | ३४ | ३१ | | २५ | ५, ७, ९, १० |
| अट्टालग | ६ | १८ | | २६ | ३३, ३४ |
| अट्टिय | २ | ३२ | | २८ | ३६ |
| | २० | २५ | | २९ | सू० १, ७३ |
| अट्ट (अर्थ) | १ | ८, २५, ३३ | | ३० | १०५ |
| | ३ | ५ | | ३५ | १०, १७ |

| | | | | | |
|--------------|----|----------------------|-------------|----|---|
| अट्ट (अष्टन) | १० | १३ | अट्टिठ्य | १ | ४६ |
| | ११ | ४ | अड्ड | १६ | ५ |
| | २२ | ५ | अण्डकमण | २६ | ३३ |
| | २४ | १, १० | अणंत | ४ | ५ |
| | २६ | १६ | | १० | ६ |
| | २८ | ३१ | | १६ | ४७, ४८, ७३ |
| | २९ | सू० ११, ४६ | | २८ | ८ |
| | ३३ | १, ३, २३ | | २९ | सू० ५, ७१ |
| | ३६ | ५२ से ५४, ५६, २२१ | | ३४ | १० से १३, १५ से १६ |
| अट्टपञ्च | १० | ३७ | | ३६ | १८६, १९३ |
| अट्टभाग | ३६ | २२१ | अणंतअ (ग) | ६ | १, १२ |
| अट्टम | २४ | २ | | २० | ३१ |
| | २६ | ३ | | ३३ | १७ |
| | ३६ | २४१ | अणंतकाल | ३६ | १४, ८२, ६०, १०३, ११५ |
| अट्टया | १२ | २४ | | | १२४, १३४, १४३, १५३, १६८, १७७, २०२, २४६ |
| अट्टविह | २६ | सू० ३१, ७१ | | | |
| | ३० | २५ | | | |
| | ३३ | १४ | | | |
| | ३६ | २०७ | | | |
| अट्टवीस | ३६ | २३६ | अणंतघाड | २६ | सू० ७ |
| अट्टवीसह | २६ | सू० ७१ | अणंतभाग | ३३ | २४ |
| | ३६ | १६७, २४० | अणंतसो | १६ | ४५, ४६ से ५१, ५३, ५८, ६१, ६४ से ६७ |
| अट्टहा | ३६ | १६, २०५ | | | |
| अट्टारस | ३६ | २२६ | | | |
| अट्टिअप्प | २२ | ४४ | | | |

| | | | | | | | |
|---------------|----|--------------|---|-----------|----|-------------|---|
| अगंताणुबंधि | २६ | सू० १ | - | अणभिद्दुण | ३५ | ७ | - |
| अणगार | १ | १ | | अणभिलसमाण | २६ | सू० ३३ | - |
| | २ | १४, २८ | | अणलकिय | ३० | २२ | |
| | ८ | १६ | | अणवकंलमाण | १२ | ४२ | |
| | ६ | १६ | | अणवज्ज | १६ | २७ | |
| | ११ | १ | | अणवदग्ग | २६ | सू० २२ | |
| | १८ | ४, ६ से १०, | | अणसण | १६ | ६२ | |
| | | १८, १६ | | | ३० | ८, ९, १२ | |
| | २५ | ५, २७, ४२ | | अणाड | ३२ | १११ | |
| | २६ | सू० ३, ६, ७, | | | ३६ | १२ | |
| | | ४१, ६१, ७२ | | अणाडण्ण | १६ | १ | |
| | ३१ | १८ | | अणाड्य | २६ | सू० २२ | |
| अणगारमग्गड्ढे | | | | | ३६ | ८ | |
| अणगारसीह | २० | ५८ | | अणाईय | ३६ | ६५, ७६, ८७, | |
| अणगारिया | १० | २६ | | | | १०१, ११२, | |
| | २० | ३२, ३४ | | | | १२१, १३१, | |
| | २१ | १० | | | | १४०, १५०, | |
| अणच्चाविय | २६ | २५ | | | | १५६, १७४, | |
| अणच्चासायण | २६ | सू० ४ | | | | १८३, १६०, | |
| अणट्ट (अनर्थ) | ५ | ८ | | | | १६६, २१८ | |
| | १८ | ३० | | अणाउत्त | १७ | ६, १३, १४ | |
| अणट्ट (अनष्ट) | १८ | ४६ | | अणागय | ५ | ६ | |
| अणाह्यत्त | २६ | सू० २६ | | | १२ | ३२ | |
| अणत्य | १४ | १३ | | | १४ | २८ | |
| अणन्तिय | ६ | ४८ | | | १८ | ५२ | |
| अणभिग्गहिय | २८ | २६ | | अणाघाय | ५ | १८ | |

१०२

परिशिष्ट-२

| | | | | | |
|------------|----|-----------|------------|----|-------------|
| अणाढ्य | ११ | २७ | अणाह्या | २० | २३ से २७, |
| अणाण | २ | ४०, ४१ | | | ३०, ३८ |
| अणाणत्त | ३६ | ७७, ८६, | अणिएय | २ | १६ |
| | | १००, ११०, | अणिएय | ३५ | १६ |
| | | ११६ | अणिगाम | १४ | १३ |
| अणाणुबंधि | २६ | २५ | अणिग्ग | ११ | २, ६ |
| अणावाह | २३ | ८०, ८३ | | १७ | ११ |
| | ३५ | ७ | अणिच्च | १८ | ११, १२ |
| अणाय | २० | २६ | | १६ | १२ |
| अणायार | ३६ | २६७ | अणिन्दियगी | १२ | २० |
| अणारिय (अ) | १२ | ४ | अणिमिस | १६ | ६ |
| | १८ | २७ | अणियअ | ६ | १६ |
| | ३४ | २५ | अणियट्ट | ७ | २५, २६ |
| अणावाय (अ) | २४ | १६, १७ | अणियत्त | १४ | १४ |
| | ३० | २८ | अणियमेत्ता | ८ | १४ |
| अणाविल | १२ | ४६ | अणियाण | ३५ | १६ |
| अणासन्न | १ | ३३ | अणिल | १४ | १० |
| | २० | ७ | अणिस्स | ३२ | ३१, ४४, ५७, |
| अणासव | १ | १३ | | | ७०, ८३, ८६ |
| | ३० | २, ३, १०६ | अणिस्सर | २२ | ४५ |
| | ३५ | २१ | अणिस्सिअ | १६ | ६२ |
| अणासायणा | २६ | सू० १६ | अणीहारि | ३० | १३ |
| अणासायमाण | २६ | सू० ३३ | अणुकंप | | |
| अणाह | २० | ६, १२, १५ | -अणुकम्पे | १५ | १२ |
| | | से १७, ५६ | अणुकपअ (ग) | १२ | ८ |
| अणाहत्त | २० | ५४ | | २० | ६ |

| | | | | | |
|----------------|----|-----------------------|-------------|----|-----------------------|
| अणुकंपव | २६ | सू० २६ | अणुच्च | १ | ३० |
| अणुकपि | १३ | ३२ | अणुजा * | | |
| | २१ | १३ | -अणुजाड | १३ | २३ |
| अणुकसाइ | २ | ३६ | | २० | ४० |
| | १५ | १६ | अणुजाण * | | |
| अणुककोस | | | -अणुजाणह | १६ | १० |
| (अनुक्रोश) | २२ | १८ | अणुजाण | ८ | ८ |
| अणुककोस | | | अणुजीव * | | |
| (अनुत्कर्ष) | ३६ | २४४ | -अणुजीवन्ति | १८ | १४ |
| अणुग | ३२ | २७,४०,५३, ६६,७६,६२ | अणुज्जुअ | ३४ | २५ |
| | | | अणुणंत | १४ | ११ |
| अणुगम * | | | अणुतप्प * | | |
| -अणुगमिस्सम | १४ | ३४,३६ | -अणुतपेज्ज | २ | ३०,३६ |
| अणुगय (अ) | ४ | १३ | अणुतावअ | १० | ३३ |
| | १५ | १५ | अणुत्तर | २ | ३७ |
| | ३२ | २७,४०,५३, ६६,७६,६२ | | ६ | १७ |
| | | | | ७ | २७ |
| अणुगिज्झ * | | | | ६ | २ |
| -अणुगिज्झेज्जा | २ | ३६ | | १० | ३५ |
| अणुगिद्ध | २० | ५० | | १३ | ३४,३५ |
| अणुगिद्धि | ३२ | १६ | | १८ | ३८ से ४०, ४२,४३,४७ |
| अणुगीय | १३ | १२ | | १६ | ६५,६८ |
| अणुगगह | १२ | ३५ | | २० | ५२ |
| | २५ | ३७ | | २१ | २३ |
| अणुचित्त * | | | | २२ | ८८ |
| -अणुचिन्ते | १६ | ६ | | | |

उत्तरजभयण शब्द-सूची

१०५

| | | | | | |
|--------------|----|-------------|--------------|----|-------------|
| अणुवायकारअ | ३ | अणुसासिय | १ | ६ | |
| अणुवसंत | १६ | ४२ | अणुस्सियत्त | २६ | सू० ४६ |
| अणुवाअ | ३२ | २८, ४१, ५४, | अणुस्सुय | ५ | १३, १८ |
| | | ६७, ८०, ९३ | अणुस्सुयत्त | २६ | सू० २६ |
| अणुवाइ | १६ | सू० १२ | अणुस्मुया | २६ | सू० २६ |
| अणुव्वय * | | | अणुरत्त | १३ | ५ |
| -अणुव्वयाम | १३ | ३० | अणूण | २६ | २८ |
| -अणुव्वयन्ति | १८ | १४ | अणोग | ४ | ११ |
| अणुव्वय | २० | २८ | | ७ | १३ |
| अणुसकम * | | | | ८ | १८ |
| -अणुसकमन्ति | १३ | २५ | | १६ | ८३ |
| अणुसचर * | | | | २१ | १६, १७ |
| -अणुसंचरे | १८ | ३० | | २३ | १६, ३५ |
| अणुसठि | २० | १ | | २८ | २२ |
| अणुसर * | | | | २६ | सू० ४० |
| -अणुसरेज्जा | १६ | सू० ८ | | ३२ | २७, ४०, ५३, |
| अणुसरमाण | १६ | सू० ८ | | | ६६, ७६, ९२, |
| अणुसरित्ता | १६ | सू० ८ | | | १०३ |
| अणुसास * | | | अणोगअ | १६ | ८२ |
| -अणुसासन्ति | १ | २७ | अणोगरुव्वुगा | २६ | २७ |
| -अणुसासम्मो | २७ | १० | अणोगविह | ३६ | ४८ |
| अणुसासत | १ | ३८ | अणोगसो | १६ | ५४, ६०, ६२, |
| अणुसासण | १ | २८, २९ | | | ६६ |
| | ६ | १० | अणोगहा | ३६ | ६४, ६६, ६६, |
| | २० | ५१ | | | १०६, ११०, |
| अणुसासिडं | २० | ५६ | | | ११६, १३०, |

उत्तरजभ्यण शब्द-सूची

| | | | | | |
|--------------|----|-------------|----------------|----|------------|
| अत्यो | २८ | २३ | अदुव | १ | १७ |
| अत्यत | १७ | १६ | अदुवा | २ | १२ |
| अत्थिकायधम्म | २८ | २७ | | ४ | ५ |
| अथिर | १७ | १३ | | २१ | १६ |
| अथिरव्वय | २० | ४१ | अहाय | १८ | ५० |
| अदसण | ३२ | १५ | अहीण | ७ | २१ |
| अदसणि | २८ | ३० | अहीणव | ७ | २२ |
| अदंसणिज्ज | १२ | ७ | अद्ध (अच्चत्त) | ६ | १२ |
| अदट्ठ | ४ | ५ | | ७ | ५, १८ |
| अदत्त | १२ | १४, ४१ | अद्ध (अर्घ) | २६ | ३५ |
| | १६ | २७ | | ३४ | ३४ से ३६, |
| | २५ | २५ | | | ४५ |
| | ३० | २ | | ३६ | २५३ से २५५ |
| | ३२ | २६, ३१, ४२ | अद्धपेडा | ३० | १६ |
| | | से ४४, ५५, | अद्धा | ७ | १८ |
| | | ५७, ६८, ७०, | | २६ | सू० २२, ७२ |
| | | ८१, ८३, ६४, | | ३४ | ४६ |
| | | ६६ | | ३६ | ८ |
| अदत्तहारि | ३२ | ३०, ४३, ५६, | अद्धाण | ६ | १२ |
| | | ६६, ८२, ६५ | | ७ | ५ |
| अदय | १५ | ११ | | १६ | १८, २० |
| अदित | ६ | ४० | | २३ | ६० |
| अदिस्स | २३ | २० | अद्धासमय | ३६ | ६ |
| अदीण | २ | ५, ३२ | अधम्म | ७ | २६ |
| अदीणमण | २ | ३ | | ३६ | ७, ८ |
| अदु | २ | २३ | अधीर | ८ | ६ |
| | ८ | १२ | | | |
| | ३३ | १६ | | | |

| | | | | | |
|---------------|----|-------------|--------------|----|----------|
| अमुक् | = | १ | अन् (अन्त्य) | २७ | १२ |
| अनिग्गह | ३० | ३२ | | २६ | सू० ४ |
| अनिद्देसे | १ | ३ | | ३० | २३ |
| अचियट्टि | २६ | सू० ४१, ७२ | | ३२ | १०३ |
| अनियान | १६ | ६१ | | ३५ | = |
| | ३६ | २५८ | अन्न (अन्न) | १२ | ६ से ११, |
| अन्तिय | १ | ८, १६ | | | १६, ३५ |
| | ५ | ३१ | | २० | ०६ |
| | ७ | १२, २३ | | ०५ | ८, १० |
| | १८ | १८, १९ | अन्नओ | ०५ | ६ |
| | २५ | ४२ | अन्नमन्न | १३ | ५, ७ |
| अन्नेर | ६ | ३, १२ | अन्नयर | ५ | २५, ३२ |
| | २० | १४ | | ३० | २० |
| अन्न (अन्त्य) | १ | ३३ | अन्नयराम | २६ | ३१ |
| | २ | २१ | अन्नया | २१ | = |
| | ७ | ५ | अन्नल्लि | ३६ | ४६, ५० |
| | ६ | ४२ | अन्नहा | २८ | १८ |
| | १३ | २५ | अन्नाएत्ति | ० | ३६ |
| | १४ | १४, ४०, ४२ | अन्नाण | २ | सू० ३ |
| | १८ | १६ | | १८ | २३ |
| | २० | ३३ | | २८ | २० |
| | २३ | २८ | | २६ | सू० २४ |
| | ३४ | ३६, ४४, ४६ | | ३२ | ० |
| | | ५४, ५६, ६४, | अन्नायएत्ति | १५ | १ |
| | | ६६, ७४, ७६ | अन्निअ | १८ | ४३ |
| | २४ | १५ | | २० | १३, ५२ |

| | | | | | |
|---------------|----|-------------|---------------|----|------------|
| अपज्जत्त | १४ | ३६ | अपि | १ | १३, २६, ४० |
| | ३६ | ७०, ८४, ६२, | अपीहेमाण | २६ | सू० ३३ |
| | | १०८, ११७, | अपुट्ट | १ | १४ |
| | | १२७, १३६, | अपुणच्चव | ३ | १४ |
| | | १४५ | अपुणरावत्ति | २६ | सू० ४४ |
| अपज्जवसिय | ३६ | ८, १२, ६५, | अपुणागम | २१ | २४ |
| | | ७६, ८७, | अपुरक्कार | २६ | सू० ७ |
| | | १०१, ११२, | अपुहत्त | २६ | सू० ११ |
| | | १२१, १३१, | अप्य (आत्मन्) | १ | ६, १५, १६, |
| | | १४०, १५०, | | | २१, ३६, ४० |
| | | १५६, १७४, | | २ | ४१ |
| | | १८३, १६०, | | ४ | १० |
| | | १६६, २१८ | | ५ | ११, ३० |
| अपडिक्कत्त | १३ | २६ | | ६ | २, ७ |
| अपडिक्कमित्ता | २६ | २२ | | ८ | ११, १६ |
| अपत्थ. | ७ | ११ | | ९ | ३६ |
| अपत्थण. | ३२ | १५ | | १० | २८ |
| अपत्थणिज्ज | २६ | सू० ४७ | | ११ | ३२ |
| अपत्थेमाण | २६ | सू० ३३ | | १४ | ४६ |
| अपर | १६ | १७ | | १५ | १५ |
| अपराजिय | ३६ | २१५ | | १८ | २६ |
| अपरिकम्म | ३० | १३ | | १९ | २३ |
| अपरिग्गह | २१ | १२ | | २० | १२, ३५ से |
| अपरिसाडिय | १ | ३५ | | | ३७, ३६, ४१ |
| अपलिमंथ | २६ | सू० ३४ | | २१ | १५ |
| अपाहेअ | १६ | १८ | | २२ | ३६ |

| | | | | |
|------------------|------------|-----------|-----------------|------------|
| अप्य (आत्मन्) २३ | ३८ | अप्यमत्त | १६ | २६ |
| २७ | १५, १७ | | २६ | सू० ४२ |
| ३४ | २६, ३१ | अप्यमाय | १३ | २६ |
| अप्य (अल्प) १ | ३५ | अप्यय | २ | ६ |
| ११ | ११ | | ६ | ६ |
| १३ | १२ | | १६ | ६४ |
| २५ | २४ | अप्यरय | १ | ४८ |
| २६ | सू० २२, ३६ | अप्यवश्य | १५ | १० |
| अप्यकाम्म | १६ | २६ | १६ | ६३ |
| अप्यकुक्कुय | १ | ३० | २६ | २८ |
| अप्यग | १८ | २७ | २६ | सू० ७ |
| अप्यचक्रखाय | ६ | ८ | ३४ | १६, १८, ६१ |
| अप्यडिपूयय | १७ | ५ | अप्याण | १ |
| अप्यडिवद्ध | २६ | सू० ३० | | ६ |
| अप्यडिवद्धया | २६ | सू० १, ३० | | ६ से ३६, |
| अप्यडिरूव | ३ | १६ | | ६१ |
| अप्यडिलेह | २६ | सू० ४३ | | २५ |
| अप्यडिवाह | २६ | सू० ७२ | | ८, १२, १५ |
| अप्यडिहय | ११ | १८, २१ | | ३३, ३७ |
| | २६ | सू० १० | | २६ |
| अप्यण | १ | २५ | | सू० ६० |
| अप्यणिय | २० | ८८ | | ३६ |
| अप्यभक्खि | १५ | १६ | अप्याणरक्खि | ४ |
| अप्यमज्जिअ | १७ | ७ | | १० |
| अप्यमत्त | ४ | ६, ८, १० | अप्यायंक | ३ |
| | ६ | १२, १६ | | १८ |
| १६ | सू० १ से ३ | | अप्यिच्छ | २ |
| | | | | ३६ |
| | | | अप्यिय (अप्रिय) | १ |
| | | | | ६ |
| | | | | १५ |
| | | | | ११ |
| | | | | १२ |
| | | | | १५ |

उत्तरज्जमयण शब्द-सूची

| | | |
|------------------|--------|-------|
| अप्यय (अर्पित) ३ | १५ | |
| अप्युडाड १ | ३० | |
| अप्योव (दि०) १८ | ५ | |
| अफल १४ | २४ | |
| अफुसमाण २६ | सू० ७३ | |
| अवघण १६ | ६१ | |
| अवघव १६ | ६१ | |
| अवंभ ३५ | ३ | |
| अवंभचरि १२ | ५ | |
| अवभचेर १६ | २८ | |
| अबल ४ | ६ | |
| | १० | ३३ |
| | १४ | ३५ |
| | २१ | १४ |
| अवहुस्सुय ११ | २ | |
| अवाल ७ | ३० | |
| अवाह २३ | ८३ | |
| अव्रीय २० | २२ | |
| अवोहेत २६ | ४४ | |
| अठमंतर २८ | ३४ | |
| | ३० | ७ |
| अठमपडल ३६ | ७४ | |
| अठमवालुया ३६ | ७४ | |
| अठिमन्तर १६ | ८८ | |
| | ३० | २६ ३० |

| | | |
|---------------|---------------|-----------|
| अठमट्ट * | | |
| -अठमट्टेड २६ | सू० ३२.५०, ७१ | |
| अठमदिय ३४ | ३५ से ३७ | |
| | ४६, ५०, ५४, | |
| | ५५ | |
| अठमादय १४ | २१ से २३ | |
| अठमुट्टाण २ | ३८ | |
| | २६ | ४, ७ |
| | ३० | ३२ |
| अठमुट्टिवा २६ | सू० ५० | |
| अठमुट्टिय ६ | ६ | |
| अठमुदय ६ | ५१ | |
| अठमुवगज १८ | ३६ | |
| अभय १८ | ११ | |
| अभयदाय १८ | ११ | |
| अभाव १ | ६ | |
| अभिओग १२ | २१ | |
| | ३६ | २६४ |
| अभिकंखि १८ | ६ | |
| | ३२ | १७ |
| अभिकल १४ | ३७ | |
| अभिकलण ११ | २, ७ | |
| | १६ | ३ |
| | १७ | ८, १५, १६ |
| | २७ | ४, ११ |

| | | |
|---------------|----|--------|
| अभिगच्छ ' | | |
| -अभिगच्छइ | १ | ४२ |
| अभिगम | २८ | १६ |
| अभिगमरूइ | २८ | २३ |
| अभिगम्म | १४ | १७ |
| अभिग्गह | ३० | २५ |
| अभिजा " | | |
| -अभिजायइ | ३ | १६ |
| अभिजाइय | ११ | १३ |
| अभिजाण * | | |
| -अभिजाणामि | २ | ४०, ४२ |
| अभिजाय | ३ | १८ |
| | १४ | ६ |
| अभिणिकखम * | | |
| -अभिणिकखमई | ६ | २ |
| -अभिणिक्खि- | | |
| माहि | १३ | २० |
| अभिणिकखमत | ६ | ५ |
| अभितत्त | १६ | ६० |
| अभितुर * | | |
| -अभितुर | १० | ३४ |
| अमित्थुणंत | ६ | ५५, ५६ |
| अभिघार * | | |
| -अभिघारए | २ | २१ |
| अभिनन्द * | | |
| -अभिनन्देज्जा | २ | ३३ |
| अभिनिक्खंत | ६ | ४ |

| | | |
|--------------|----|-------------|
| अभिनिक्खम्म | १४ | ३७ |
| अभिनिविट्ठ | १४ | ४ |
| अभिप्पेअ | ५ | ३१ |
| अभिभूय | | |
| (अभिभूय) | २ | सू० १ से ३ |
| | २ | १८ |
| | १५ | ३ |
| | ३२ | ३०, ४३, ५६, |
| | | ६६, ८२, ९५ |
| अभिभूय | | |
| (अभिभूत) | १४ | ४ |
| | १५ | १५ |
| अभिराम | १३ | १७ |
| अभिरोग * | | |
| -अभिरोग्ज्जा | २१ | ११, १५ |
| -अभिरोगए | ३५ | ६ |
| अभिलस * | | |
| -अभिलसइ | २६ | सू० ३३ |
| अभिलसणिज्ज | १६ | सू० ११ |
| अभिलसिज्ज- | | |
| माण | १६ | सू० ११ |
| अभिवन्दिऊण | २० | ५६ |
| अभिवन्दिता | २३ | ८६ |
| अभिवन्दिय | १२ | २१ |
| अभिवायण | २ | ३८ |

| | | | | | |
|-----------|----|--|------------|----|---|
| अभिसमे * | | | अमित्त | १५ | १६ |
| -अभिसमेइ | १३ | ३० | | २० | ३७ |
| -अभिसमेम | २० | ६ | अमिय | ३२ | १०४ |
| अभिहण * | | | अमुंच | ३६ | ८१, ८६, १०३, ११४, १२३, १३३, १४२, १५२ |
| -अभिहणे | २ | १० | | | |
| अभिहय | २३ | ५३ | अमुच्छिय | ३५ | १७ |
| अभिहिय | २८ | २७ | अमुत्त | १४ | १६ |
| अभोगि | २५ | ३६ | अमुहरि | १ | ८ |
| अभइ | ४ | २ | अमूढदिट्ठि | २८ | ३१ |
| अमणुत्त | २६ | सू० ६३ से ६७ | अमोक्ख | २८ | ३० |
| | ३२ | २१ से २३, ३५, ३६, ४८, ४९, ६१, ६२, ७४, ७५, ८७, ८८ | अमोसली | २६ | २५ |
| | | | अमोह | १४ | २१ से २३ |
| | | | अमोहण | ३२ | १०६ |
| | | | अम्बग | ७ | ११ |
| अमणुत्तया | ३२ | १०६ | | ३४ | १२, १३ |
| अमम | २१ | २१ | अम्बिल | ३६ | १८, ३२ |
| अमय | १७ | २१ | अम्मा | १६ | २, ६, १०, ११, २४, ४४, ७५, ७६, ८४ से ८६ |
| अमरिस | ३४ | २३ | | २१ | १० |
| अमल | ३६ | २६० | अम्ह | १ | १ |
| असहगघय | २० | ४२ | अम्हारिस | १३ | २७ |
| अमाइ | ११ | १० | अय (अज) | ७ | ७, ६ |
| | २६ | सू० ५ | | | |
| | ३४ | २७ | | | |
| अमाणुस | ३ | ६ | | | |

| अवउज्झ * | | अवलम्ब * | |
|------------|----|------------------------|---------------------|
| -अवउज्झइ | १७ | ६ | -अवलम्बइ २६ सू० २० |
| | १६ | २२ | अवलम्बमाण २६ सू० २० |
| अवउज्झऊग | ६ | ५५ | अवलिय २६ २५ |
| अवउज्झय | १० | ३० | अवस ७ १० |
| अवकंख * | | | १३ २४ |
| -अवकखे | ६ | १३ | १८ १२ |
| अवगाय | २८ | २० | १६ १६,५६,५७, ६३, ६४ |
| अवगाहिया | १० | ३३ | अवसन्न १३ ३ |
| अवचिट्ट * | | | ३२ ७६ |
| -अवचिट्टे | १४ | १८ | अवसीय * |
| अवणअ | २१ | २० | -अवसीयई २७ १५ |
| अवणवाड | ३६ | २६५ | अवसेस १२ १० |
| अवत्तासिय | १६ | ६ | २६ २०, ३५ |
| अववसि | ४ | ७ | २६ सू० ७३ |
| अवपेक्ख * | | | अवसोहिय १० ३२ |
| -अवपेक्खसि | ६ | १२ | अवहिय ३२ ८६ |
| अववुज्झ * | | | अवहेडिय १२ २६ |
| -अववुज्झसे | १८ | १३ | अवि १ ११, १७ |
| अवमन्न * | | | अविग्गह २६ सू० ७४ |
| -अवमन्नह | १२ | २६ | अविज्जा ६ १ |
| अवमाण | १६ | ६० | ३४ २३ |
| अवरज्झ * | | | अविणीय १ ३ |
| अवरज्झइ | ७ | २५, २६ | ११ २, ६, ६ |
| | ३२ | २५, ३८, ५१, ६४, ७७, ६० | अवियार ३० १२ |

११६

परिशिष्ट-२

| | | | | | |
|------------|----|------------|--------|----|------------|
| अविरअ | ३४ | २१, २४ | -अत्थि | ३२ | १७ |
| अविवच्चास | २६ | २८ | | ३६ | ६६ |
| अविवन्न | २० | ४४ | -अमि | १२ | ६ |
| अविसंवायण | २६ | सू० ४६ | | १४ | ३० |
| अविसारय | २८ | २६ | | १६ | १०, ६६, ७० |
| अविस्साम | १६ | ३५ | | २० | ६, ३३ |
| अविहेड्य | १५ | १५ | -अमु | ८ | ७ |
| अवेकखंत | २३ | १५ | -असि | ६ | ५८ |
| अवेयण | १६ | २१ | | १० | ३२, ३४ |
| अव्वक्खत्त | १८ | ५० | | १२ | ७, ११ |
| | २० | १७ | | १३ | ३२, ३३ |
| अव्वग्गमण | १५ | ३, ४ | | १८ | १० |
| अव्वावाह | २६ | सू० ४ | | १६ | ३४ |
| अस * | | | | २० | ८, १२, ४०, |
| -अत्थि | २ | ७, २७, २८, | | | ५६ |
| | | ४४, ४५ | | २२ | ४१, ४३ |
| | ४ | १, ३ | -आसिमो | १३ | ५ |
| | ५ | ६ | -आसी | ६ | ५ |
| | ६ | १४ | | १२ | १ |
| | १२ | ३२, ३५ | | १३ | ६७ |
| | १३ | १० | | १८ | २८ |
| | १४ | १५, २७ से | | २० | ५, १८ |
| | | २६ | | २१ | १ |
| | १७ | २ | | २२ | १ से ३ |
| | १६ | ४४, ७४ | | २३ | ८८ |
| | २० | ४६ | | २५ | १ |
| | २३ | ६६, ८१ | | | |

| | | | | | |
|------------|----|------------------------------|------------|----|--------|
| -सिया | १ | ८,४० | असजम | ३१ | २ |
| | २ | ३१ | असंजय (अ) | १७ | ६ |
| -सन्ति | ५ | २,२० | | २० | ४३ |
| | ८ | ६ | | २६ | ४४ |
| असई | ५ | ३ | असथड | २१ | २२ |
| | ६ | ३० | असपहिट्ट | १५ | ३,४ |
| | १६ | ४५ | असबुद्ध | १ | ३ |
| असंकिलिट्ट | ३६ | २६० | असम्भन्त | २२ | ३६ |
| असंख | ३४ | ४६,५० | असंलोअ | २४ | १६,१७ |
| असखकाल | ३६ | १३,८१,८६, १०४,११४, १२३ | असविभागि | ११ | ६ |
| | | | | १७ | ११ |
| असखभाग | ३४ | ३५ से ३७, ४१ से ४३, ५३ | अससत्त | २ | १६ |
| | ३६ | १६२ | | २५ | २७ |
| असखय | | | असच्च | १ | १४ |
| (असस्कृत) | ४ | | असच्चमोसा | २४ | २०,२२ |
| | ४ | १ | असज्जमाण | १४ | ६ |
| असखय | | | | २६ | सू० ३१ |
| (असख्यक) | ६ | ४८ | | ३२ | ५ |
| असंखिज्ज | ३४ | ३३ | असण (अराण) | २ | ३० |
| असंखिज्जइम | ३४ | ४८ | | १६ | ६२ |
| असखेज्ज | ३४ | ५२ | असण (असन) | ३४ | ८ |
| असंखेज्जइम | ३६ | .१६१ | असणि | २० | २१ |
| असंगया | २० | ६ | असत्त | १३ | ३२ |
| | | | असन्त | ६ | ५१ |
| | | | | १४ | १८ |
| | | | असवल्ल | २६ | सू० १२ |

| | | | | | |
|------------|----|--------|-------------|----|------------|
| असन्भ | २१ | १४ | असुड | १६ | १२ |
| असमंजस | ४ | ११ | असुभ | २१ | ६ |
| असमाण | २ | १६ | | २४ | २६ |
| असमारभन्त | १२ | ४१ | असुय | १४ | ८ |
| असमाहि | २७ | ३ | असुर | १२ | २५ |
| | ३१ | १४ | | ३६ | २०६ |
| असरण | ६ | १० | अमुह | १० | १५ |
| असाय | ३३ | ७ | | १३ | २८ |
| असायावेय- | | | | ३३ | १३ |
| गिज्ज | २० | ४२ | असेवमाण | १२ | ४१ |
| | २६ | सू० २३ | अस्स | १ | १२, ३७ |
| असावज्ज | २४ | १० | | २० | १४ |
| असासय | ८ | १ | | २३ | ५५, ५७, ५८ |
| | १३ | २०, २१ | अम्संजम | ३१ | १३ |
| | १४ | ७ | अस्सकणी | ३६ | ६६ |
| | १६ | १२, १३ | अम्सस * | | |
| असाह | १ | २८ | -अस्सासि | २ | ४१ |
| असाहुत्त्व | २० | ४६ | अस्साय | १६ | ४७, ४८, ७४ |
| असि | १६ | ३७, ५५ | अस्सविलो | २३ | ७१ |
| असिगेह | ८ | २ | अस्सिय (अ) | १३ | १५ |
| असिपत्त | १६ | ६० | | १८ | ६ |
| असिप्पजीवि | १५ | १६ | | २८ | ६ |
| असिय | १६ | १२ | | ३५ | २ |
| असील | ५ | १२ | अस्सुयपुब्ब | २० | १३ |
| | ११ | ५ | अह (अय) | २ | ४१ |
| | २० | ४६ | अह (अहन) | १४ | १४ |

| | | |
|-------------|----|--------|
| अहकवाय | १४ | ५० |
| | २८ | ३३ |
| अहकवायचरित | २६ | सू० ५६ |
| अहम | ६ | ५४ |
| | १३ | १८ |
| अहम्म | ४ | १३ |
| | ५ | १५ |
| | ७ | २८ |
| | १४ | २४ |
| | १७ | १२ |
| | २८ | ७ से ६ |
| | ३६ | ५ |
| अहम्मलेसा | ३४ | ५६ |
| अहम्मिदु | ७ | ४, २८ |
| अहवा | ३० | १३ |
| अहस्सिर | ११ | ४ |
| अहाउय | ३ | १६ |
| | २६ | सू० ७३ |
| अहाच्छद | २० | ५० |
| अहाणुपुब्बी | ३२ | ६ |
| अहि | १६ | ३८ |
| | ३४ | १६ |
| | ३६ | १८१ |
| अहिसया | ३ | ८ |
| अहिंसा | २१ | १२ |
| अहिक्षिब * | | |
| -अहिक्षिबई | ११ | ११ |

| | | |
|----------------|----|-------------|
| अहिगच्छ * | | |
| -अहिगच्छति | २३ | ३५ |
| अहिगम | २६ | सू० ६० |
| अहिगय | २८ | १७ |
| अहिगार | १४ | १७ |
| अहिज्ज | १२ | १५ |
| | १४ | ६ |
| अहिज्जत | २८ | २१ |
| अहिज्जिता | १ | १० |
| अहिट्टा * | | |
| -अहिट्टेज्जा | ११ | ३२ |
| -अहिट्टेज्जासि | ३४ | ६१ |
| अहिट्टिय | ६ | ४ |
| अहितत्त | २ | ६ |
| अहिय | १४ | १० |
| | २२ | १० |
| | ३१ | १६ |
| | ३२ | ५ |
| | ३४ | ३४, ३८, ३९, |
| | | ५२, ५४ |
| | ३६ | १८५, १६२, |
| | | २१६, २२१, |
| | | २२३, २२५ |
| अहियास * | | |
| -अहियासए | २ | २३, ३२ |
| | १५ | ३, ४ |

| | | | | | |
|---------------|----|-------------|----------|----|-------------|
| -अहियासएज्जा | २१ | १८ | आड (दि०) | २३ | ४३ |
| अहिवई | ११ | १६, २२, २३ | | २४ | १८ |
| अहीण | १० | १७, १८ | | २६ | सू० ३ |
| अहीय | १४ | १२ | | ३० | १५, १८, २६, |
| अहीरिया | ३४ | २३ | | | ३१ |
| अहीलणिज्ज | १२ | २३ | | ३१ | १७ |
| अहुणेववन्न | ५ | २७ | | ३२ | १०६ |
| अहे | ६ | ५४ | | ३६ | ६६, ११०, |
| | ३६ | ५०, ५४ | | | ११६, १३०, |
| अहेउ | १८ | ५१, ५३ | | | १३६, १४६, |
| अहो (अहो) | ६ | ५६, ५७ | | | १८०, १८१, |
| | १२ | ३६ | | | २१६ |
| | १८ | ३१ | आइअ (य) | २५ | १७ |
| | १६ | १५ | | ३० | २७, ३३ |
| | २० | ६ | | ३२ | १०६ |
| | २१ | ६ | | ३६ | १३८ |
| अहो (अहन) | १४ | १४ | आइक्ख * | | |
| अहो (अघस्) | १६ | ४६ | -आइक्ख | १२ | ४५ |
| अहोरत्त | ३६ | ११३, १४१ | आइत्त | २६ | ८ |
| अहोराय | १८ | ३१ | | ३४ | ७ |
| आइ (आ + पा) * | | | आइण्ण | १ | १२ |
| -आइए | १० | २६ | | ११ | १६, १७ |
| आइ (आ + दा) * | | | | १६ | ११ |
| -आइए | २४ | १४ | | १६ | ५२ |
| आड (दि०) | १६ | २७, ५१, ६६, | | २० | ३ |
| | ६७ | | | २७ | १ |

| | | | | |
|----------------|---|---------|---------------|-------------------------------------|
| आज (अप्) ३६ | ६६, ८४, ८८, ८६, ६० | आज्जया | २० | ४० |
| आज (आयुष्) ७ | १०, १२, १३, २४, २७ | आजर | २ १५ ३२ | ५ ८ २४, ३७, ५०, ६३, ७६, ८६ |
| १० | ३ | | | |
| १४ | ७ | आज्ज | २ | सू० १ |
| १८ | २६ | | १६ | सू० १ |
| ३३ | १२ | | १७ | २ |
| ३४ | २ | | २६ | सू० १ |
| ३६ | १०२ | आएत्त | ७ | १ से ४, ६ |
| आज्ज (य) ४ | ६ | | ३६ | ६ |
| ७ | ४, ७, २४ | आगज (य) | ५ | ६ |
| २६ | सू० २३, ४२, ७३ | | ७ | ६, १४, १५ |
| आज्जम्म | ३२ | | १० | ३४ |
| आज्जकाय (अ) १० | ६ | | १२ | ७, ६ |
| २६ | ३० | | १४ | ४५ |
| आज्जकत्तय | ३ | | १८ | ५, २६ |
| ३२ | १०६ | | २१ | २, ५, १० |
| आज्जट्टिह | ३६ | | २३ | ३, १५, १६ |
| | ८०, ८८, ११३, १२२, १३२ से १४१, १५१, १६७, १७५, १८४, १९१, २००, २४५ | आगन्तु | २६ | ४६ |
| | | आगच्छ* | २६ | सू० ४३ |
| | | -आगच्छइ | २५ | २० |
| आज्ज | १६ | | १२ | ६ |
| | २६ | | २० | ४३ |
| | | | २६ | सू० २, ३ |

१२२

परिशिष्ट-

| | | | | | |
|-----------|----|----------|------------|----|----------|
| -आगच्छक | २२ | ८ | आणुपुञ्जी | २ | १ |
| आगम | ३६ | २६२ | | ३ | ७ |
| आगमिस | २६ | सू० २४ | | ११ | १ |
| आगम्म | १ | २२ | | ३३ | १ |
| | १४ | ३ | | ३४ | १ |
| | १८ | ६ | आतव | २८ | १२ |
| आगर | १६ | ५,४६ | आदाळं | १४ | ३८ |
| | ३० | १६ | आदाण | २४ | २ |
| आगार | १ | २ | आदाय | २ | १७,४३ |
| आगास | ६ | ४८,६० | | ५ | ३० |
| | १२ | ३६ | | ६ | १३ |
| | १६ | ३६ | | १८ | ५१ |
| | २८ | ७,८ | आदेसओ | ३६ | ८३,६१, |
| | ३६ | २,६ से ८ | | | १०५,११६, |
| आघविअ | २६ | सू० ७४ | | | १२५,१३५, |
| आघायाय | ५ | ३२ | | | १४४,१५४, |
| आणय | ३६ | २११,२३० | | | १६६,१७८, |
| आणा | १ | २,३ | | | १८७,१६४, |
| | २० | १४ | | | २०३,२४७ |
| | २८ | २० | आनम * | | |
| | २६ | सू० १,११ | -आनमति | ६ | ३२ |
| आणापाणु | २६ | सू० ७३ | आपुच्छ | २१ | १० |
| आणारुइ | २८ | १६,२० | आपुच्छणा | २६ | २,५ |
| आणी * | | | आपुच्छिताण | २० | ३४ |
| -आणेइ | २१ | ७ | आभरण | १३ | १६ |
| आणुपुञ्जी | १ | १ | | २२ | ६,२० |

| | | | | | | |
|------------|----|-------------|----|---------------|----|-------------|
| आभिजोग | ३६ | २५६ | -- | आयय * | | |
| आभिनि (ण) | | | -- | -आययई | ३२ | २६ |
| -बोहिय | २८ | ४ | - | आयय | ३६ | २१,४६,५८ |
| | ३३ | ४ | | आययगतु- | | |
| आमत * | | | | पञ्चागया | ३० | १६ |
| -आमन्नयामो | १४ | ७ | | आययद्विय | २६ | सू० ३४ |
| आमतिअ | १३ | ३३ | | आययण | ३२ | ६ |
| आमय | ३२ | ११० | | आयर * | | |
| आमिस | ८ | ५ | | -आयरे | २४ | ७ |
| | १४ | ४६ | | | ३० | ३७ |
| | ३२ | ६३ | | आयरत | १ | ४२ |
| आमोयमाण | १४ | ४४ | | | ३५ | १ |
| आमीस | ६ | १२८ | | आयरिय(आचार्य) | १ | २०,४०,४१, |
| आय | २ | १५ | | | | ४३ |
| | ८ | १६ | | | ८ | १३ |
| | १३ | १० | | | १६ | सू० ३ से १२ |
| | १४ | १० | | | १७ | ४,५,१७ |
| | १५ | २ | | | १८ | २२ |
| आयक | ५ | ११ | | | २० | २२ |
| | १० | २७ | | | २७ | ११ |
| | १६ | सू० ३ से १२ | | | ३० | ३३ |
| | १६ | ७८ | | आयरिय | | |
| | २१ | १८ | | (आचरित) | १ | ४२ |
| | २६ | ३४ | | | ६ | ८ |
| आयगवेसअ | १५ | ५ | | आयव | २ | ३५ |
| आयगुत्त | १५ | ३ | | आयहिअ | २१ | १२ |
| | २१ | १६ | | | | |

| | | | | | |
|------------|----|------------|-----------|----|----------------|
| आया * | | | आराम | १६ | १५ |
| -आयएज्ज | ६ | ७ | आराह * | | |
| -आययन्ति | ३ | ७ | -आराहए | १२ | १२ |
| आयाण | ६ | ७ | | १७ | २१ |
| | १३ | १६ | -आराहेइ | २६ | सू० १५, १७ |
| आयाणनिकखेव | १२ | २ | आराहअ | २६ | सू० १, ४६, ५१, |
| | २० | ४० | | | ५४ |
| आयाम | ३६ | २५३ से २५५ | आराहइत्ता | २६ | सू० १ |
| आयामग | १५ | १३ | आराहणया | २६ | सू० १ |
| आयाय | ३ | ११ | | | २५, ४६, ७२ |
| आयार | ११ | १ | भाराहणा | २६ | सू० १५ |
| | २० | ५२ | आराहिय | ८ | २० |
| | २३ | ११ | आरिअत्त | १० | १६ |
| | २६ | सू० १७ | आरिय | २ | ३७ |
| आरंभ | १३ | ३३ | | ८ | ८ |
| | १४ | ४१ | | १८ | २५ |
| | १६ | २६ | आरियभाण | ३२ | १५ |
| | २४ | २१, २३, २५ | आरियत्तण | १० | १७ |
| | २६ | सू० ३ | आरूह * | | |
| | ३४ | २१, २४ | -आरूहइ | १७ | ७ |
| आरभ * | | | आरूढ | २२ | १० |
| -आरभे | ८ | १० | | २३ | ५५, ७० |
| आरण | ३६ | २११, २३२ | आलम्बण | २४ | ४, ५ |
| आरण्णग | १४ | ६ | | २६ | सू० ३४ |
| आरभढा | २६ | २६ | आलय | १६ | १, ११ |
| आरसंत | १६ | ५३, ६८ | | १६ | १४ |

| | | | | | |
|-----------------|----|---------|----------|----|-----------------------|
| आलय | ३६ | २०८ | आवडिय | २५ | ४० |
| आलव * | | | आवन्न | ४ | ४ |
| -आलवे | १ | १० | | ६ | १२ |
| आलवंत | १ | २१ | आवर * | | |
| आलसिअ | २७ | १० | -आवरेइ | ३२ | १०८ |
| आलस्स | ११ | ३ | आवरण | ३३ | ६ |
| आलुय | ३६ | ६६ | आवरणिज्ज | ३३ | २० |
| आलोडत्ता | १६ | सू० ६ | आवसह | १३ | १३ |
| आलोएमाण | १६ | सू० ६ | | ३२ | १३ |
| आलोय (आ+लोक) * | | | आवस्सिया | २६ | २,५ |
| -आलोएइ | १६ | ४ | आवाय | २४ | १६ |
| -आलोएज्जा | १६ | सू० ६ | आवास | ५ | २६ |
| आलोय (आ+लोच्) * | | | | १६ | १२ |
| -आलोएज्ज | २६ | ४०,४८ | आवि | १ | १७ |
| आलोय | ३२ | २४ | आविद्ध | २२ | ४४ |
| आलोयण | १६ | ४ | आविल | ३२ | २६,४२,५५, ६८,८१,६४ |
| | २१ | ८ | | | |
| आलोयणया | २६ | सू० १ | आवेउं | २२ | ४२ |
| आलोयणा | २६ | सू० ६ | आस | ४ | ८ |
| | ३६ | २६२ | | ६ | ५ |
| आलोयणारिह | ३० | ३१ | | ११ | १६ |
| आवई | ७ | १७ | | १८ | ६,८ |
| आवज्ज * | | | आसअ | २८ | ६ |
| -आवज्जई | ३२ | १०३,१०४ | आसंसा | २६ | सू० ३६ |
| आवट्ट | ३ | ५ | आसण | १ | २१,२२,३०, २१ |
| | २५ | ३८ | | २ | |

| | | | | | |
|------------|----|----------------|----------|----|---------------|
| आसण | ७ | ८ | आसाढ | २६ | १३, १५, १६ |
| | १५ | ४, ११ | आसायणा | ३१ | २० |
| | १६ | सू० ३ | आसिय | १६ | १२ |
| | १७ | १३ | आसीविस | ६ | ५३ |
| | २६ | सू० १, ३२ | | १२ | २७ |
| | ३० | २८, ३२, ३६ | आसुपन्न | ४ | ६ |
| | ३२ | १२ | आसुर | ३ | ३ |
| आसणया | २६ | सू० ३२ | | ८ | १४ |
| आसन्न | १ | ३४ | आसुरत्त | ३६ | २५६ |
| | २४ | १८ | आसुरिया | ७ | १० |
| आसम | ६ | ४२ | | ३६ | २६६ |
| आसमपय | ३० | १७ | आसेवण | ३० | ३३ |
| आसव(आश्रव) | १८ | ५ | आसोअ | २६ | १३ |
| | १६ | ६३ | आह | | |
| | २० | ४५ | -आहिज्जइ | २६ | सू० १ |
| | २८ | १४, १७ | आहअ | १८ | ७ |
| | २६ | सू० १२, १४, ५६ | आहअच्च | १ | ११ |
| | ३४ | २१ | | ३ | ६ |
| आसव | | | आहरित्तु | १६ | ७६ |
| (आसव) | ३४ | १४ | आहाकम्म | ३ | ३ |
| आससा | १२ | १२ | | ५ | १३ |
| आसा | १२ | ७ | आहार | १५ | १२ |
| | ३२ | २७, ४०, ५३, | | १६ | सू० ६ |
| | | ६६, ७६, ६२ | | १६ | ३० |
| आसाअ * | | | | २४ | ११, १५ |
| -आसाएइ | २६ | सू० ३४ | | २६ | सू० १, ३२, ३६ |

| | | | | | |
|------------|----|-------------|------------|----|---------------|
| आहार | ३० | १३, १५ | -एन्ति | ७ | १६ |
| | ३१ | ८ | इ | २ | ४० |
| | ३२ | ४ | इइ (ति) | २ | ७ |
| | ३५ | २० | इओ | १३ | ३२ |
| | ३६ | २५५ | | २० | ३२, ४७ |
| आहार * | | | इंगाल | ३६ | १०६ |
| -आहारेइ | १७ | १५, १६ | इगिय | १ | २ |
| -अहारेज्जा | १६ | सू० ६ | | ३२ | १४ |
| आहारित्ता | १६ | सू० ६ | इंद | २० | २१ |
| आहारेत्ता | १६ | सू० १० | इदक | ३६ | १३८ |
| आहारेमाण | १६ | सू० ६, १० | इंदगोक्क | ३६ | १३६ |
| आहिय | २४ | १ | इदत्त | ६ | ५५ |
| | २८ | ८, ३३ | इंदनील | ३६ | ७५ |
| | ३० | १३, २४, २५, | इदिय | १६ | सू० १ से ३, ५ |
| | | २७, ३१, ३३ | | १६ | ११ |
| | ३३ | ७, १३, १४, | | २३ | ३८ |
| | | १६, १७ | | २४ | ८, २४ |
| | ३६ | ५, ६, २०, | | ३२ | ११, १२, २१ |
| | | ७७, ६५, | | | १०४ |
| | | १५५, १५६, | | ३५ | ५ |
| | | १७२, २०६ | इंदियगाम | २५ | २ |
| | | | इंदियोज्ज् | १४ | १६ |
| | | | इंदियत्थ | ३१ | ७ |
| | | | | ३२ | १००, १०६ |
| इ * | | | इंघण | १४ | १० |
| -एइ | ७ | ३ | | ३२ | ११ |
| | २० | ४६, ५० | | | |

१२८

परिशिष्ट-२

| | | |
|------------------|----|-----|
| इक्क | ८ | १६ |
| | १० | १४ |
| | २८ | ८ |
| इक्कग | १३ | २५ |
| इक्कतीस | ३६ | २४२ |
| इक्कतीसइ | ३६ | २४३ |
| इक्कवीस | ३६ | २३२ |
| इक्कवीसइ | ३६ | २३३ |
| इक्कवाग | १६ | ३६ |
| इक्क * -इक्कइ | १२ | २२ |
| | १५ | ५ |
| | १७ | १६ |
| -इक्कसि | १४ | ३८ |
| | २७ | ४२ |
| -इक्कह | १२ | २८ |
| -इक्कामि | २० | ५६ |
| | २२ | ४१ |
| -इक्कामो | १२ | ४५ |
| -इक्क्ये | १ | १२ |
| | ३२ | ४ |
| -इक्क्येज्जा | ६ | २६ |
| | ३२ | ४ |
| -इक्कं | २६ | ६ |
| -इक्क्येज्ज | ३२ | १०४ |
| इक्कंत | १ | ६ |

| | | |
|--------------|----|---------|
| इक्क्या | ६ | ४८ |
| इक्क्याकाम | ३५ | ३ |
| इक्क्याकार | २६ | ३,६ |
| इक्क्याअ | २२ | २५ |
| | २३ | ३१ |
| | ३० | ११ |
| इक्क | १६ | १३ |
| | २२ | २ |
| इक्कडि | २ | ४४ |
| | ७ | २७ |
| | १२ | ३७ |
| | १३ | ११ |
| | १६ | ८७ |
| | २२ | १३,२१ |
| | २७ | ६ |
| | ३५ | १८ |
| | ३६ | २६४ |
| इक्कडिमंत | ५ | २७ |
| | २० | १० |
| इक्कहिं | १२ | ३२ |
| इक्कतरिय (अ) | १० | ३ |
| | ३० | ६ से ११ |
| इक्कतिय | ३० | १८ |
| इक्कतो | ५ | १७ |
| | ३६ | ७८ |
| इक्कथ | १६ | सू० १२ |

| | | |
|----------|----|-----------------|
| इत्थिया | १४ | ६, १६ |
| इत्थी | १ | २६ |
| | २ | सू० ३ |
| | २ | १६, १७ |
| | ५ | १० |
| | ७ | ६ |
| | ८ | १६ |
| | १२ | ४१ |
| | १६ | सू० ३ से १२ |
| | १६ | ३ |
| | ३० | २२ |
| | ३२ | १३ से १५, १७ |
| | ३५ | ७ |
| | ३६ | ४६, ५१ |
| इत्थीवेय | २६ | सू० ६ |
| इम | १ | १५ |
| इय | २४ | २ |
| इयर | २० | ६० |
| इर * | | |
| -इरियामि | १८ | २६ |
| इरिया | ६ | २१ |
| | १२ | २ |
| | २० | ४० |
| | २४ | २, ४, ८ |
| | २६ | ३२ |

| | | |
|-----------|----|----------------------------------|
| इरियावहिय | २६ | सू० ७२ |
| इव | ११ | २४ |
| इसि | १२ | १६, २१, २४, ३०, ३१, ४४, ४७ |
| | २१ | २२ |
| इसिज्भय | २० | ४३ |
| इस्सरिय | १८ | ३५ |
| | २० | १४ |
| इस्सा | ३४ | २३ |
| इह | २ | सू० १ |
| इहं | १२ | ७, ११ |
| | १३ | १४ |
| | १७ | २० |
| | १६ | ४७, ४८, ६२ |
| | ३६ | ५६ |
| इहलोइथ | १५ | १० |
| ईसाण | ३६ | २२३ |
| ईसाणग | ३६ | २१ |
| ईसि | २६ | सू० ७३ |
| ईसीपन्भार | ३६ | ५७ |
| ईह * | | |
| -ईहइ | ७ | ४ |

| उ | | | उक्कोस | ३६ | १२३, १२४, |
|------------|----|-------------|----------|----|-------------|
| उ | १ | ८ | | | १३२ से १३४ |
| उइ * | | | | | १४१ से १४३, |
| -उइन्ति | २१ | १६ | | | १५१ से १५३, |
| उइज्ज * | | | | | १६० से १६६, |
| -उइज्जन्ति | २ | ४१ | | | १६८, १७५ से |
| उंछ | ३५ | १६ | | | १७७, १८४ से |
| उक्कुडुअ | १ | २२ | | | १८६, १९२, |
| उक्कत्त | १९ | ६२ | | | १९३, २०१, |
| उक्कल | ३६ | १३७ | | | २०२, २१९ से |
| उक्कलिया | ३६ | ११८ | | | २४३, २४६ |
| उक्का | ३६ | ११० | उक्कोसिय | ३३ | १९ |
| उक्कुद्द * | | | | ३६ | ८०, ८८, |
| -उक्कुद्दइ | २७ | ५ | | | १०२, १२२, |
| उक्कोस | ५ | ३ | | | १६७, २४५, |
| | १० | ५ से १४ | | | २५१ |
| | ३३ | २१ से २३ | उग्ग | १८ | ५० |
| | ३४ | ३४ से ३९, | | १९ | २८ |
| | | ४१ से ४३, | | २० | ५३ |
| | | ४६ से ५० | | २२ | ४८ |
| | | ५२ से ५५ | | ३० | २७ |
| | ३६ | १३, १४, ५०, | उग्गअ | २३ | ७६, ७८ |
| | | ५३, ८१, ८२, | उग्गतव | १२ | २२, २७ |
| | | ८९, ९०, | उग्गम | २४ | १२ |
| | | १०३, १०४, | उग्गाअ | | |
| | | ११३ से ११५, | -उग्गाएइ | २९ | सू० ७, ७२ |

| | | |
|--------------|----|-----------|
| उच्च | ३३ | १४ |
| उच्चागोय | ३ | १८ |
| | २६ | सू० ११ |
| उच्चार | २४ | २, १५, १८ |
| | २६ | ३८ |
| | २६ | सू० ७३ |
| उच्चारसमिद्ध | १२ | २ |
| उच्चावय | २ | २२ |
| | १२ | १५ |
| उच्चोयअ | १३ | १३ |
| उच्छु | १६ | ५३ |
| उज्जम * | | |
| उज्जमए | ३२ | १०५ |
| उज्जहिता | २७ | ७ |
| उज्जाण | १८ | ३४ |
| | १६ | १ |
| | २० | ३ |
| | २२ | २३ |
| | २३ | ४, ८ |
| | २५ | ३ |
| उज्जुअ | १६ | ८८ |
| उज्जुकड | १४ | ४१ |
| | १५ | १ |
| उज्जुजड | २३ | २६ |

| | | |
|-----------------|----|----------------|
| उज्जुभाव | २१ | २० |
| | २६ | सू० ६, ७० |
| उज्जुसेढिं | २६ | सू० ७४ |
| उज्जुयभूय | ३ | १२ |
| उज्जेय (उद्योत) | २३ | ७५, ७६, ७८ |
| | २८ | १२ |
| उज्जेय (उद्योग) | २२ | ३६ |
| उज्जिक्ता | १४ | ४६ |
| उट्टिअ | १८ | ३१ |
| उट्टिता | २ | २१ |
| उडुवड | ११ | २५ |
| उड्डंस | ३६ | १३७ |
| उड्ड | ३ | १३, १५ |
| | ६ | १३ |
| | १२ | २६ |
| | १६ | ४६, ५१, ८२ |
| | २६ | २४ |
| | २६ | सू० ७४ |
| | ३६ | ५० |
| उड्डलोअ | ३६ | ५४ |
| उण्ह | २ | ६ |
| | १५ | ४ |
| | १६ | ३१, ४७, ६०, ६१ |
| | ३६ | २० |
| उण्हअ | ३६ | ३६ |

१३२

| | | | परिशिष्ट- | | |
|-------------|----|----------|---------------|----|-----------|
| उत्तम | ६ | ६,५७ से | उत्तम | २२ | १३,२३ |
| | | ५६ | उदग (क,अ) | ७ | २३ |
| | १० | १८,१६ | | ८ | ८ |
| | ११ | ३१,३२ | | ११ | ३० |
| | १२ | ४७ | | १२ | ३६,३८,३९ |
| | १३ | १० | | २३ | ६५,६६ |
| | १४ | ३७ | | २८ | १२ |
| | १८ | ४१ | उदग्ग | ११ | २० |
| | १९ | ६७ | | १३ | ३५ |
| | २० | ५०,५२,५५ | | १४ | २ |
| | २३ | ५१,६३,६८ | उदय | २३ | ४८ |
| | २५ | ६,१७,३३, | उदहि | ११ | ३० |
| | | ३७ | | ३३ | १६,२१,२३ |
| उत्तमद्व | २० | ४६ | | ३४ | ३५ से ३७, |
| उत्तमंग | १२ | २६ | | | ४१ से ४३, |
| | २० | २१ | | | ५३ |
| उत्तर | ३ | १४ | उदार | १४ | ३५ |
| | ५ | २०,२६ | उदाहर * | | |
| | १२ | १ | -उदाहरिस्तामि | २ | १ |
| | ३३ | १६ | -उदाहरे | ५ | १ |
| | ३६ | ५३,५४ | | ११ | ४ |
| उत्तरगुण | २६ | ११,१७ | | २२ | ३६ |
| उत्तरजभाय | ३६ | २६८ | -उदाहरित्था | १२ | ८ |
| उत्तरिस्ता | ३२ | १८ | | १३ | १५ |
| उत्ताणग | ३६ | ६० | उदाहु * | | |
| उत्तिद्वन्त | ११ | २४ | -उदाहरित्था | १२ | ८ |
| | | | | १३ | १५ |

उत्तरज्मयण शब्द-सूची

१३३

| | | |
|-------------|----|------------|
| उदाहृ | ६ | १७ |
| | १४ | ६ |
| | २० | ५४ |
| उदिण्ण | १८ | १ |
| उदीर * | | |
| -उदीरेड | १७ | १२ |
| उदीरिय | २६ | सू० ७२ |
| उद्दायण | १८ | ४७ |
| उद्देसे | ३१ | १७ |
| उद्देसिय | २० | ४७ |
| उद्देहिया | ३६ | १३७ |
| उद्धत्तुं | २५ | ३३, ३७ |
| उद्धत्तुकाम | ३२ | ६ |
| उद्धरण | २६ | सू० ६ |
| उद्धरिअ | २३ | ४५ |
| उद्धरित्ता | २३ | ४६ |
| उद्धरित्तु | २३ | ४८ |
| उद्धाड्य | १२ | १६ |
| उप्पइय | २ | ३२ |
| | ६ | ६० |
| उप्पज्ज * | | |
| -उप्पज्जइ | १७ | २ |
| उप्पह | २४ | ५ |
| | २७ | ४ |
| उप्पाअ * | | |
| -उप्पाएइ | २६ | सू० १८, २२ |

| | | |
|-----------|----|---------------------------|
| उप्पायग | ३६ | २६२ |
| उप्पायण | २४ | १२ |
| | ३२ | २८, ४१, ५४, ६७, ८०, ६३ |
| उप्फालग | ३४ | २६ |
| उप्फिड * | | |
| -उप्फिडई | २७ | ५ |
| उभ | २३ | ६, १० |
| उभओ | ११ | १७ |
| | २८ | ६ |
| उभय | १ | २५ |
| उम्मग | २३ | ५६, ६१, ६३ |
| उम्मज्ज | ७ | १८ |
| उम्मत्त | १८ | ५१ |
| उम्माय | १६ | सू० ३ से १२ |
| उम्मक्क | ३६ | ६३ |
| उयहि | १६ | ३६ |
| उर | २० | २८ |
| उरग | १४ | ४७, ३६, १८१ |
| उरब्भ | ७ | ४ |
| उरन्निज्ज | ७ | |
| उराल | १५ | १४ |
| | ३६ | १०७ |
| उल्ल | २२ | ३३ |
| | २५ | ४० |

१३४

परिशिष्ट-२

| | | |
|---------------|----|----------------|
| उल्लंघन | १७ | ८ |
| | २४ | २४ |
| उल्लव | ११ | २ |
| उल्लविय | १६ | ४ |
| उल्लिअ | १६ | ६४ |
| उल्लोय | ३५ | ४ |
| उवइट्टु | १ | ४४ |
| | २८ | १६ |
| उवउत्त | २४ | ७,८ |
| | २६ | सू० १२ |
| उवउत्तया | २४ | ६ |
| उवएसण | २८ | १५ |
| उवएसरुइ | २८ | १६, १६ |
| उवओग | २८ | १०, ११ |
| उववखड | १२ | ११ |
| उवग | २६ | २७ |
| उवगअ | २१ | २३ |
| | २६ | सू० १३, १८, ३६ |
| उवगरण | १२ | ४ |
| उवघाइ | १ | ४० |
| उवचि | | |
| -उवचिणाइ | २६ | सू० २३ |
| उवचिट्टु * | | |
| -उवचिट्टे | १ | २० |
| -उवचिट्टेज्जा | १ | ३० |
| उवजोइय | १२ | १८ |

| | | |
|-------------|----|-------------|
| उवज्जाय | १७ | ४, ५ |
| उवट्टिता | ८ | १५ |
| उवट्टिअ (य) | १२ | ३ |
| | २० | २२ |
| | २५ | ५ |
| | ३२ | १०७ |
| | ३५ | २० |
| उवणिणगअ | १८ | १ |
| उवणी * | | |
| -उवणिज्जइ | १३ | २६ |
| उवणीअ (य) | ४ | १, ६ |
| | १३ | २१ |
| उवदसिअ | २० | ५४ |
| | २५ | ३५ |
| | २६ | सू० ७४ |
| उवभुज * | | |
| -उवभुजइ | २० | २६ |
| उवभोग | ३२ | ३२, ४५, ५८, |
| | | ७१, ८४, ६७ |
| | ३३ | १५ |
| उवमा | ४ | ६ |
| | ७ | १५ |
| | ६ | ५३ |
| | १४ | ४७ |
| | १८ | २८ |
| | १६ | ११ |

उनाजभयग शब्द-सूची

| | | | | | |
|--------------------|----|----------|-------------------------|----|------------|
| उवमा | ०० | ३ | उववाडय | ५ | १३ |
| | ३२ | २० | उववाय ^१ | | |
| | ३६ | ६६ | -उववाय ^२ | १ | ४३ |
| उवग्य (य) | ६ | ६ | उववायकाग्य | १ | २ |
| | १५ | २ | उववृह | २८ | ३१ |
| उवगि | ३६ | ५७ | उववैय | १ | १३ |
| उवगिम | ३६ | ६२, ०१३, | | १० | १३ |
| | | ०१४, ०१५ | | १३ | १० मे १३ |
| उवग | ३६ | ७३ | | २० | ५१ |
| उवगह | ०८ | ०८ | उवगंत | २ | १५ |
| उवगम * | | | | ६ | १ |
| -उवगमामि | १६ | १३ | | १५ | १५ |
| उवलिय ^१ | | | | ३८ | ३०, ३२ |
| -उवलियडि | ०५ | ३६ | उवगंजिनारा ^१ | ०६ | सू० ३८ |
| उवले | २५ | ३६ | उवगंदा | ०६ | ४७ |
| उववज ^१ | | | उवगगा | २ | २१ |
| -उववजड | ३ | १७ | | २६ | ३४ |
| | ७ | २७ मे ०६ | | ३१ | ५ |
| | ३८ | ५६, ५७ | उवगल | ३२ | २६, ४०, ५५ |
| -उववजनि | ८ | १४ | | | ६८, ८१, ६४ |
| उववनिग | २६ | सू० १५ | उवगम | ३० | ११ |
| उववन्म | ६ | १ | उवगोदिय | १० | ३७ |
| | १३ | १ | | १८ | ३४ |
| | १७ | १ | | | |
| | २० | ४४ | उवगस्य | २ | २३ |
| उववाअ | ३४ | ५८, ५९ | | ३५ | ५ |

१३६

परिशिष्ट-२

| | | | | | |
|-----------|----|----------|------------|----|-----------|
| उवहस * | | | -उवेइ | २० | ४६,५२ |
| -उवहसन्ति | १२ | ४ | | २१ | २० |
| उवहाण | २ | ४३ | | ३२ | ११,२४ से |
| उवहाणव | ११ | १४ | | | २६,२९,३३, |
| | ३४ | २७,२९ | | | ३७ से ३९, |
| उवहि | १२ | ४ | | | ४२,४६,५० |
| | १९ | ८४ | | | से ५२,५५, |
| | २४ | ११,१५ | | | ५९,६३, से |
| | २९ | सू० १,३५ | | | ६५,६८,७२, |
| उवागअ (य) | १३ | ८ | | | ७६ से ७८, |
| | १४ | ५२ | | | ८१,८५,८९ |
| | २३ | ४ | | | से ९१,९४, |
| | २५ | ३ | | | ९८,१०१, |
| उवागम्म | १४ | ६ | | | १०९ |
| | १९ | ९ | -उवेह | १२ | २८ |
| उवाय | ३२ | ९ | -उवेमो | १२ | ३३ |
| उवायओ | २३ | ४१ | उवेय | ९ | ९ |
| उवासग | ३१ | ११ | उवेह * | | |
| उविच्च | १३ | ३१ | -उवेहे | २ | ११ |
| उवे * | | | -उवेहेज्जा | २ | २५ |
| -उवेति | ३ | १६ | उवेहमाण | २१ | १५ |
| | ४ | २,४ | उव्विगग | १४ | ५१ |
| | ७ | २० | उसिण | २ | सू० ३ |
| | ३२ | १०१ | | २ | ८ |
| -उवेइ | ४ | ८ | | २१ | १८ |
| | १५ | ६ | उसुयार | १४ | १ |

| | | |
|-----------------|----|----|
| उसुयारिज्ज | १४ | |
| उम्स | ३६ | ८५ |
| उस्सप्पिणो | ३४ | ३३ |
| उत्तिचणा | ३० | ५ |
| उत्तिसय | १० | ३५ |
| उम्सुल्लग (दि०) | ६ | १८ |
| उम्मेह | ३६ | ६४ |

ऊ

| | | |
|----------|----|----|
| ऊ | १२ | ११ |
| ऊण | ७ | १३ |
| | ३० | २१ |
| | ३४ | ४६ |
| ऊगोयगिया | ३० | ८ |
| ऊरु | १ | १८ |
| ऊत्त | ३६ | ७३ |
| ऊत्तिसिय | २० | ५६ |
| ऊत्तिसय | २२ | ११ |

ए

| | | |
|-------|----|----|
| ए | | |
| एइ | २० | ५० |
| एन्ति | ७ | १६ |
| एहि | २२ | ३८ |

| | | |
|-------------|----|----------------|
| एउं | ४ | १० |
| एक्क | १३ | ३ |
| | १४ | ३४, ३६, ४० |
| | ३६ | १८१ |
| एक्कअ | ३५ | ६ |
| एक्कसीड | ३४ | २० |
| एक्कारस | २८ | २३ |
| एग | १ | २६, ३३ |
| एगअ | २ | २० |
| एगइअ | २६ | सू० २ |
| एगओ | १४ | २६ |
| | ३१ | २ |
| एगंत | ६ | ४, १६ |
| | १६ | ३८ |
| | २२ | ३५ |
| | २६ | सू० ३२ |
| | ३० | २८ |
| | ३२ | २, ३, १६, |
| | | २६, ३६, ५२, |
| | | ६५, ७८, ६१ |
| एगंतदिट्ठीअ | १६ | ३८ |
| एगंतर | ३६ | २५३ |
| एगखुर | ३६ | १८० |
| एगग | १ | १० |
| एगग्ग | २६ | सू० १, २६, ३१, |
| | | सू० ४०, ५४, ५७ |

| | | |
|-------------|----|------------|
| एगग्ग | ३२ | १ |
| | ३५ | १ |
| एगग्गचित्त | २६ | सू० ३१, ५४ |
| एगग्गमण | २६ | सू० १, २६ |
| | ३० | १ |
| | ३५ | १ |
| एगच्चर | १५ | १६ |
| एगच्चित्त | २० | ३८ |
| एगच्चञ्चत्त | १८ | ४२ |
| एगत्त | २८ | १३ |
| | ३६ | ११, ६५ |
| एगपक्ख | १२ | ११ |
| एगामूय | १६ | ७७ |
| एगमण | ३० | ४ |
| | ३६ | १ |
| एगया | २ | ६, १३ |
| | ३ | ३, ४ |
| एगराय | २ | २३ |
| | ५ | २३ |
| एगविह | ३६ | ७७ |
| एगवीस | ३१ | १५ |
| एगामोसा | २६ | २७ |
| एगीभाव | २६ | सू० ४० |
| एगुणपण्ण | ३६ | १४१ |
| एज्जंत | १२ | ४ |
| एत्तिअ | १३ | ३३ |

| | | |
|------------|----|------------|
| एत्तो | १६ | ४७, ४८, ७३ |
| | ३० | २६ |
| एत्थ | १२ | १५, १८ |
| | १८ | ८ |
| एमेव | १४ | १८ |
| | २० | ५० |
| एय (एत्तइ) | २ | १३ |
| एय (एव) | २४ | १६ |
| एयारिस | १३ | २६ |
| | १७ | २० |
| | २२ | १३ |
| | ३२ | १७ |
| एरिस | १२ | ११, ३७ |
| | १६ | ६ |
| | २० | १५ |
| एल्य | ७ | १, ७ |
| एल्लिक्ख | ७ | २२ |
| एव | १ | १५ |
| एवं | १ | ४, ५ |
| एवविह | ३२ | १०२ |
| एवमेव | १४ | १५, ४३ |
| | १६ | ८२ |
| एस * | | |
| -एसिज्जा | ३५ | १६ |
| -एसेज्जा | १ | ७ |
| | २ | ३० |

| | | |
|----------|----|--------|
| -एसेञ्जा | ६ | २ |
| | ८ | ११ |
| एसणा | १ | ३२ |
| | २ | ४ |
| | ६ | १६ |
| | ८ | ११ |
| | १२ | २ |
| | २० | ४० |
| | २४ | २, १२ |
| | ३० | २५ |
| एसन्त | ३० | २१ |
| एसणिञ्ज | १२ | ७ |
| | १६ | २७ |
| | ३२ | ४ |
| एसमाण | १४ | १४ |
| एसित्ता | १ | ३२ |
| एह * | | |
| -एहए | ६ | ३५ |
| एह | १२ | ४३, ४४ |
| ओ | | |
| ओङ्गण | ५ | १४ |
| | १० | ३२ |
| | १६ | ५५ |
| | २२ | २३ |

| | | |
|-----------|----|-----------------------|
| ओंकार | २५ | २६ |
| ओगाह | २४ | १८ |
| | ३६ | २५८, २५९ |
| ओगाह | २८ | ६ |
| ओगाह * | | |
| -ओगाहइ | २८ | २१ |
| ओगाहणा | ३६ | ५०, ५३, ६०, ६२, ६४ |
| ओघ | २१ | २४ |
| ओभास * | | |
| -ओभासइ | २१ | २३ |
| ओम | ३० | १५ |
| ओमचरञ्ज | ३० | २४ |
| ओमचेलञ्ज | १२ | ६, ७ |
| ओमरत्त | २६ | १५ |
| ओमाण | २७ | १० |
| ओमासण | ३२ | १२ |
| ओमोयरिय | ३० | १४ |
| ओयण | ७ | १ |
| ओरस | ६ | ३ |
| ओराल | ३६ | १२६ |
| ओरालिय | २६ | सू० ७४ |
| ओरुज्जमाण | १४ | २० |
| ओरोह | ६ | ४ |
| | २० | ५८ |
| ओवग्गहिय | २४ | १३ |

| | | | | | |
|----------|----|--|-------------|----|----------------|
| ओवहिय | ३४ | २५ | क | २ | २३ |
| ओवाय | १ | २८ | कइय | ३५ | १४ |
| ओस (दि०) | १० | २ | कओ | ६ | १० |
| ओसप्पिणी | ३४ | ३३ | कंख * | | |
| ओसह | १६ | ७६ | -कखए | ५ | ३१ |
| | ३२ | १२ | -कंखे | ४ | १३ |
| ओसहि | ११ | २६ | | ६ | ४ |
| | २२ | ६ | | ७ | ७ |
| | ३२ | ५० | | १४ | २७ |
| | ३६ | ६५ | कखा | १६ | सू० ३ से १२ |
| ओह | १० | ३० | कखामोहणिज्ज | २६ | सू० २१ |
| | १४ | १७ | कंचण | ३५ | १३ |
| | २३ | ८४ | कचि | २० | ६ |
| | ३२ | ३३, ३४, ४६, ४७, ५६, ६०, ७२, ७३, ८५, ८६, ९८, ९९, | कचुय | ६ | २२ |
| | | | कटग | १६ | ८६ |
| | | | | १० | ३२ |
| | ३४ | ४० | | १६ | ५२ |
| ओहरिय | २६ | सू० १३ | कठ | १२ | ६, १८ |
| ओहारिणी | १ | २४ | | २० | ४८ |
| ओहि | ३३ | ६ | कतार | १६ | ४६ |
| ओहिजलिय | ३६ | १४८ | | २७ | २ |
| ओहिनाण | २३ | ३ | | २६ | सू० २३, ३३, ६० |
| | २८ | ४ | कयअ (ग) | ११ | १६ |
| | ३३ | ४ | | २३ | ५८ |
| ओहोवहि | २४ | १३ | कद | ३६ | ६७, ६८ |

| | | | | | |
|----------|----|----------|-----------|----|-------------|
| कद # | | | कट्टहार | ३६ | १३७ |
| कन्दन्ति | ६ | १० | कड | १ | ११ |
| कदत | १६ | ४२ | | २ | ४०, ४१ |
| कदप्य | ३६ | २५६, २६३ | | ४ | ३ |
| कदली | ३६ | ६७ | | ६ | १४ |
| कदिय | १६ | सू० ७ | | १३ | ६, १०, २८ |
| | १६ | ५ | कडुय (अ) | १६ | ११ |
| कदु | १६ | ४६, ५१ | | ३४ | १० |
| कदोय | ११ | १६ | | ३६ | ६८, ३० |
| कंस | ६ | ४६ | कड्डोकड्ड | १६ | ५२ |
| कक्क | १३ | १३ | कणकुडंग | १ | ५ |
| कक्कर | ७ | ७ | कणिट्टग | २० | २६, २७ |
| कक्खड | ३६ | १६, ३४ | कण्ह | ३६ | ६८ |
| कच्छम | ३६ | १७२ | कण्हलेसा | ३६ | २५६ |
| कज्ज | ८ | १७ | कण्हुई | १ | ७ |
| | २२ | १७ | | २ | ४०, ४६ |
| | २३ | १३ | कण्हुटर | ७ | ५ |
| | २४ | ३० | कत्तु | १३ | २३ |
| | २५ | ३८ | | २० | ३७ |
| | २६ | सू० ५ | कत्तिय | २६ | १५ |
| कट्टु | १ | ११ | कत्तो | ३२ | ३२, ४५, ५८, |
| | ३ | २ | | | ७१, ८४, ६७ |
| | २० | ४७ | कत्थ | ३६ | ५५ |
| | ३६ | २५३, २५५ | कत्थई | २ | २७ |
| कट्ट | १२ | ३०, ३६ | कन्ना | २२ | ६ से ८, २८, |
| | ३५ | ११ | | | ३१, ४० |

१४२

| | | |
|----------------|----|------------|
| कप्प | ३ | १५ |
| | १६ | ६२ |
| | २३ | २७ |
| | ३२ | १०४ |
| कप्प * | | |
| -कप्पह | ३० | १८ |
| -कप्पए | ६ | २ |
| कप्पणी | १६ | ६२ |
| कप्पविमाण | २६ | सू० १५ |
| कप्पाईय | ३६ | २०६, २१२ |
| कप्पासऽट्टिमिज | ३६ | १३८ |
| (द्वे०) | | |
| कप्पिय | १६ | ६२ |
| कप्पोवग | ३६ | २०६ से २११ |
| कब्बड | ३० | १६ |
| कम* | | |
| -कम्मड | ५ | २२ |
| कम | ३० | ५ |
| | ३२ | १११ |
| | ३६ | २५० |
| कमलावई | १४ | ३ |
| कमसो | १४ | ११, ५१ |
| | ३६ | १६७ |
| कम्पिल्ल | १३ | २, ३ |
| | १८ | १, ३ |
| कम्म | १ | १७, ४३ |

परिशिष्ट-२

| | | |
|------|----|-----------------|
| कम्म | २ | ४०, ४१ |
| | ३ | २, ६, ७, १३ |
| | ४ | २ से ४ |
| | ५ | ११, १२ |
| | ६ | ३, १०, १३, |
| | | १४ |
| | ७ | ६, २० |
| | ८ | ६, १५ |
| | ९ | २२ |
| | १० | ४, १५ |
| | ११ | ३१ |
| | १२ | ४०, ४४ |
| | १३ | ८ से १०, |
| | | १६, २३, २६, |
| | | ३२ |
| | १४ | २, ५, २० |
| | १८ | १७, ४८ |
| | १९ | ५३, ५५, ५७ |
| | २० | ५२ |
| | २१ | ६ |
| | २२ | ४८ |
| | २५ | २८, ३१, ३२, |
| | | ४३ |
| | २८ | ३६ |
| | २९ | सू० २, ७, ११, |
| | | सू० १६, १७, १९, |

| | | | | | |
|-----------------|----|---|-----------|----------------------|-----------------------------------|
| कम्म | २६ | सू० २१, २३, २४, सू० ३०, ३३, ३८, सू० ४४, ६३ से सू० ७२, ७४ | कय (कृत) | १८ २० २२ २४ | १७ ५७ ६, २१ १७ |
| | ३० | १, ६ | | ३२ | ३२, ४५, ५८, ७१, ८४, ९७, १०८ |
| | ३१ | ३ | | | |
| | ३२ | ७, ३३, ४६, ५६, ७२, ८५, ९८, १०८ | कय (क्रय) | ३५ | १३, १४, १५ |
| | ३३ | १, १०, ११, १३, १४, १७, १८, २०, २५ | कयंजलि | २० २५ | ५४ ३५ |
| कम्मस (सत्कर्म) | ३ | २० | कयत्य | ३२ | ११० |
| | २६ | सू० ४२, ५६, ६२, सू० ७२, ७३ | कयमड | २३ | १४ |
| | | | कयर | २ | सू० २ |
| कम्मकिब्बिस | ३ | ५ | | १२ | ६, ७, ४३ |
| कम्मपयडि | २६ | सू० २३ | | १६ | सू० २ |
| कम्मप्यवीअ | १३ | २४ | कया | १ | २२ |
| कम्मभूप | ३६ | १६६ | कयाइ | १ | ११ |
| कम्मय | ८ | १ | कर | १ | २, ३, २६ |
| कम्मलेसा | ३४ | १ | | ८ | २ |
| कम्मसपया | १ | ४७ | | १३ | २७ |
| कम्हिचि | १५ | २ | कर | | |
| कय (कृत) | ८ | १७ | -अकासी | १ | १० |
| | १३ | १५, ३३ | | १३ | १, २६ |
| | १४ | १६ | -करति | १४ | २० |
| | | | | १६ | १६ |
| | | | | १६ | ६६ |

| | | | | | |
|----------|----|-----------------|------------|----|-------------|
| -करिस्सइ | २ | २३ | कुञ्जा | ४ | २ |
| | २३ | ७५, ७६, ७८ | | २६ | ५, ११, १७, |
| -करे | ३० | १५ | | | २०, २१, २७, |
| | ३६ | २५२, २५४ | | | ३६, ३८, ४१, |
| -करेइ | ४ | ४ | | | ४६, ४६ |
| | १५ | १० | | ३१ | २ |
| | २० | ४८ | | ३२ | २१ |
| | २६ | सू० ३, ४, ६, | | ३५ | ८ |
| | | सू० २६, २६, ४२, | करकंडू | १८ | ४५ |
| | | सू० ५६, ५६, ६१, | करकय | १६ | ५१ |
| | | सू० ६२, ७३, ७४ | करगय | ३४ | १८ |
| -करेज्ज | २६ | ३३, ५० | करण | २६ | ५ |
| -करेति | ६ | ६२ | | २६ | सू० १७ |
| | १२ | ३२ | करणगुणसेढि | २६ | सू० ७ |
| | २२ | ४६ | करणसच्च | २६ | सू० १, ५२ |
| | २७ | १३ | करणसन्ति | २६ | सू० ५२ |
| | २६ | सू० १ | कवत्त | १६ | ५१ |
| | ३२ | १०० | करेइं | १६ | ३६, ४० |
| | ३६ | २६० | करेत | ६ | ५६ |
| -करेह | २५ | ३७ | करेणु | ११ | ८ |
| -करेहि | १३ | ३२ | | ३२ | ८६ |
| -कारए | ३५ | ८ | करेता | २६ | सू० ७३ |
| -काहामि | १७ | २ | करेमाण | २६ | सू० ३, ७३ |
| -काहिनति | ८ | २० | कलंब | १६ | ५० |
| -काहिसि | २२ | ४४ | कलकलंत | १६ | ६८ |
| -कुञ्जा | १ | १७, १६ | कलत्त | ६ | १५ |
| | २ | १६, ३३, ३८ | | | |

| | | |
|----------|----|---------------|
| कलह | ८ | ४ |
| | ११ | १३ |
| | १७ | १२ |
| | २६ | सू० ४० |
| कला | ६ | ४४ |
| | २१ | ६ |
| कलि | ५ | १६ |
| कलिग | १८ | ४५ |
| कल्ल | २० | ३४ |
| कल्लाण | १ | ३८, ३९ |
| | २ | २३, ४२ |
| | ११ | १२ |
| कवल | १६ | ३७ |
| कवाड | ३५ | ४ |
| कविट्टु | ३४ | १२, १३ |
| कविल | ८ | २० |
| कस | १ | १२ |
| | १२ | १६ |
| कसाय (अ) | १६ | ६१ |
| | २३ | ३८, ५३ |
| | २६ | सू० १, ३७, ४० |
| | ३१ | ६ |
| | ३६ | १८ ३१ |
| कसायज | ३३ | ११ |
| कसाय- | | |
| मोहणिज्ज | ३३ | १० |

| | | |
|----------------|----|---|
| कसिण | ८ | १६ |
| | १५ | ३, ४, ६ |
| | २१ | ११ |
| | २६ | सू० ७२ |
| कह | २३ | ६० |
| कह * | | |
| -कहसु | २३ | २८, ३४, ३६, ४४, ४६, ५४, ५६, ६४, ६६, ७४, ७६ |
| -कहय | २५ | १५ |
| -कहेज्जा | १६ | सू० ४ |
| -कहेति | १३ | ३ |
| -काहए | २० | ५३ |
| कहं | ७ | २२ |
| कहा | १६ | सू० ४ |
| | २६ | २६ |
| कहावण | २० | ४२ |
| कहिं | १६ | ६ |
| कहिचि | ८ | २ |
| कहिता | १६ | सू० ४ |
| कहेमाण | १६ | सू० ४ |
| काइय | ३२ | १६ |
| काउ | ३४ | ३, १२, ४१, ५०, ५६ |
| काउं (कर्तुम्) | २२ | २१ |

उत्तरज्जभयण गब्द-सूची

| | | | | | |
|----------|----|-----------------------|-------------|----|-----------|
| काय | २ | ३७ | कायगुत्तया | २६ | सू० १,५६ |
| | ३ | ३ | कायगुत्ति | २४ | २ |
| | ५ | १०,२३ | कायचिट्ठा | ३० | १२ |
| | ६ | ११ | कायठिड | ३६ | ८१,८६, |
| | ८ | १०,१४ | | | १०३,११४ |
| | १० | २० | | | १२३,१३३, |
| | १२ | ७ | | | १४२,१५२, |
| | १५ | १२ | | | १६७,१७६, |
| | २१ | २२ | | | १८६,१९३, |
| | २४ | २५ | | | २०२,२४५ |
| | २५ | २५ | काय | २० | ३८ |
| | ३० | ३६ | | २१ | १७ |
| | ३१ | ८ | कायवोस्सग्ग | २६ | ४६ |
| | ३२ | ६३,७४,७५, ८१,८२,८६ | कायव्व | २६ | ६,१० |
| | ३६ | ६०,१०३ | काय- | | |
| | | १०४,११४, | समाधारणया | २६ | सू० १,५६ |
| | | ११५,१२३, | कारअ | ६ | ३० |
| | | १२४,१३३, | कारइत्ताण | ६ | १८,२४ |
| | | १४२,१५२, | कारण | ६ | ८,११,१३, |
| | | १५३,१६८, | | | १७,१६,२३, |
| | | १७७,२४६ | | | २५,२७,२६, |
| कायकिलेस | ३० | ८,२७ | | | से ३३,३७, |
| कायगुत्त | १२ | ३ | | | ३६,४१,४३, |
| | २२ | ४७ | | | ४४,४७,५० |
| | २६ | सू० ५६ | | | २४ |
| | | | | २२ | १६,४२ |
| | | | | २३ | १३,२४,३० |

१४८

परिशिष्ट-२

| | | |
|--------|----|-----------------|
| कारण | २४ | ४ |
| | २६ | ३१ |
| | २७ | १० |
| | २८ | १ |
| | ३१ | ८ |
| | ३६ | २६२, २६६ |
| कारव * | | |
| -कारवे | २ | ३३ |
| कारिस | १२ | ४३, ४४ |
| कारुण | ३२ | १०३ |
| काल | १ | १०, ३१, ३२ |
| | ४ | ६ |
| | ५ | ३१, ३२ |
| | १० | ५ से १२ |
| | १२ | ६, ६, २७ |
| | १३ | २२, ३१ |
| | १४ | १३, २६, ५२ |
| | १६ | ८ |
| | १८ | ३२ |
| | १९ | २६ |
| | २० | ८, ४५ |
| | २१ | १४ |
| | २३ | ५ |
| | २४ | ४, ५, १०, १७ |
| | २५ | ४ |

| | | |
|----------|----|--|
| काल | २६ | २०, २२, ३७, ४४, ४५ |
| | २८ | ७, ८, १० |
| | २९ | सू० १, १६, २३ |
| | ३० | १४, २०, २१, २४ |
| | ३२ | १, २८, ३१, ४१, ४४, ५४, |
| | | ५७, ६७, ७०, ८०, ८३, ९३, ९६, १११ |
| | ३५ | १९ |
| | ३६ | ११, १३, ७८, १११, १२०, १५८, १७३, १८२, १८६, १८९, १९३, २१७ |
| कालओ | २४ | ६, ७ |
| | ३६ | ३ |
| कालकांखि | ६ | १४ |
| कालकूड | २० | ४४ |
| काला | २२ | ५ |
| कालघम्म | ३५ | २० |
| कालिजर | १३ | ६ |
| कालिय | ५ | ६ |

| | | |
|---------|----|------------|
| काली | २ | ३ |
| कालोमाण | ३० | २० |
| काविलीय | ८ | |
| कावोया | १६ | ३३ |
| कासग | १२ | १२ |
| कासव | २ | सू० १ मे ३ |
| | २ | १, ६६ |
| | २५ | १६ |
| | २६ | सू० १ |
| कासी | १३ | ६ |
| | १८ | ४८ |
| कि | ६ | ७ |
| किचण | ६ | १४, ६० |
| | ३२ | ८ |
| किचि | १ | १४ |
| किपाग | १६ | १७ |
| | ३२ | २० |
| किपुरिस | ३६ | २०७ |
| किचव | १ | १८, ४४, ४५ |
| | १४ | १५ |
| | ३२ | १०८ |
| किचव * | | |
| -किचवइ | ४ | ३ |
| किच्चा | २ | १५ |
| | ६ | २०, २१ |

| | | |
|---------------|----|-----------------------|
| किच्चा | १८ | ५० |
| | २० | १ |
| किट्टुडत्ता | २६ | सू० १ |
| किट्टु | १६ | ६ |
| किणत | ३५ | १४ |
| किणह | ३६ | १६, २२, ७२ |
| किणह्लेसा | ३४ | ४, २२, ३४ |
| किणहा | ३४ | ३, १०, ४३, ४८, ४९, ५६ |
| कित्त * | | |
| -कित्तडस्सामि | ३२ | ६ |
| कित्तयअ | २४ | ६ |
| | ३६ | ४८, १७६, १६५, २०४ |
| कित्ति | १ | ४५ |
| | ११ | १५ |
| | १४ | ३ |
| | १८ | ३६, ४६ |
| किन्नर | १६ | ६ |
| | २३ | २० |
| | ३६ | २०७ |
| किन्त्रिसिय | ३६ | २५६, २६५ |
| किमि | ३६ | १२७ |
| किरिया | १८ | २३, ३३ |
| | २८ | १६, २५ |
| | ३१ | ७, १२ |

| | | | | | |
|------------|----|---------------------------|-------------|----|--------|
| किरियाखइ | २८ | २५ | कुओ | ६ | १० |
| किलन्त | १६ | ५६ | | १५ | ५ |
| किलिट्ट | ३२ | २७, ४०, ५३, ६६, ७६, ९२ | कुकुण (वे०) | ३६ | १४६ |
| किलिन्न | २ | ३६ | कुच | १४ | ३६ |
| किलिस | | | कुचिअ | २२ | २४ |
| -किलिस्सई | २७ | ३ | कुजर | ११ | १८ |
| किलेस | २१ | ११ | कुडल | ६ | ५ |
| | ३२ | ३२, ४५, ५८, ७१, ८४, ९७ | | ६ | ६० |
| किलेसडत्ता | २० | ४१ | | २२ | २० |
| किस | २ | ३ | कुथु | ३ | ४ |
| कीड | ३ | ४ | | १८ | ३६ |
| | ३६ | १४६ | | ३६ | १३७ |
| कीडा | १ | ६ | कुंद | ३४ | ६ |
| कीयगड | २० | ४७ | | ३६ | ६१ |
| कील | | | कुभी | १६ | ४६, ५१ |
| -कीलंति | १८ | १६ | कुक्कुइय | १७ | १३ |
| -कीलए | १६ | ३ | कुक्कुड | ३६ | १४७ |
| | २१ | ७ | कुग्गहीय | २० | ४४ |
| कीलिय | १६ | सू० ८ | कुच्च | २२ | ३० |
| कीव | १६ | ४० | कुट्टिम | १६ | ४ |
| कीस | | | कुट्टिय | १६ | ६६, ६७ |
| -कीसंति | १६ | १५ | कुडुंअ | ३६ | ६७ |
| कुइय | १६ | सू० ७ | कुडुंअ | १४ | ३७ |
| | १६ | ५, १२ | कुडु | १६ | सू० ७ |
| | | | | २५ | ४० |

| | | | | | |
|------------|----|-------------|------------|----|-----------|
| कुण * | | | कुमारसमण | २३ | २, ६, १६, |
| -कुणई | १६ | ७६ | | | १८ |
| | २६ | २७, २६ | कुमुय | १० | २८ |
| | ३६ | २६३ से २६६ | कुम्मास | ८ | १२ |
| कुणंत | २६ | २६ | कुररी | २० | ५० |
| कुणमाण | १४ | २४, २५ | कुल | १३ | २ |
| कुतित्थि | १० | १८ | | १४ | २, २६ |
| कुदसण | २८ | १८ | | २० | ४०, ४२ |
| कुदिट्ठि | २८ | ३६ | | २३ | १५ |
| कुढ | १२ | २० | | २५ | १ |
| | १८ | १० | कुल्ल | १४ | ४६ |
| | २० | २० | कुविय | १ | ४१ |
| | २७ | ६ | | १२ | २८ |
| कुप्प † | | | कुव्व † | | |
| -कुप्पइ | ११ | ८, १२ | -कुव्वइ | १ | ४४ |
| -कुप्पह | १२ | ३३ | | ५ | ४ |
| -कुप्पेज्ज | १ | ६ | कुव्वन्ति | २० | २३ |
| कुप्पवयण | २३ | ६३ | -कुव्वेज्ज | ६ | २६ |
| कुप्पह | २३ | ६० | कुव्वेज्जा | १ | १४ |
| कुमार | १२ | १६, २०, २४, | | ६ | १५ |
| | | ३२ | | ८ | २ |
| | १४ | ३ | कुस | ७ | २३, २४ |
| | १६ | ६७ | | ६ | ४४ |
| | २२ | ८ | | १० | २ |
| कुमारग | १४ | ११ | | १२ | ३६ |
| | | | | २३ | १७ |

१५२

परिशिष्ट-२

| | | |
|----------------|----|------------|
| कुसचीर | २५ | २६ |
| कुसल | १२ | ३८, ४०, ४४ |
| | २५ | १६ |
| कुसील | १ | १३ |
| | १७ | २० |
| | २० | ५१ |
| कुसीलरुव | २० | ५० |
| कुसीलर्लिंग | २० | ४३ |
| कुसुम | २० | ३ |
| | ३४ | ८, १७, १६ |
| कुहग | ३६ | ६८ |
| कुहाड | १६ | ६६ |
| कुहुण | ३६ | ६५ |
| कुहेडविज्जा | २० | ४५ |
| कूड | ५ | ५ |
| | २० | ४२ |
| कूडजाल | १६ | ६३ |
| कूडसामली | २० | ३६ |
| कूर (क्रूर) | ५ | ४, १२ |
| कूर (कूर) | १२ | ३४ |
| कूवंत | १६ | ५४ |
| केदकंदली (दि०) | ३६ | ६७ |
| केयण | ६ | २१ |
| केयव्व | ३५ | १५ |
| केरिस | २३ | ११ |
| केलास | ६ | ४८ |

| | | |
|-------------|----|----------------|
| केवल | ३ | १६ |
| | १८ | ३५ |
| | २८ | ४ |
| | ३३ | ४, ६ |
| | ३४ | ४५ |
| | ३५ | २१ |
| केवलवरनाण- | | |
| दंसण | २६ | सू० ७२ |
| केवल | १६ | सू० ३ से १२ |
| | २२ | ४८ |
| | २६ | सू० ४२, ५६, ६२ |
| | ३६ | २६५ |
| केस (क्लेण) | ५ | ७ |
| | १६ | १२ |
| केस (केण) | १० | २१ से २६ |
| | २२ | २४, २५, ३०, |
| | | ३१ |
| केसर | १८ | ३, ४ |
| केसलोय | १६ | ३३ |
| केसव | २२ | २, ६, २७ |
| केसि | २३ | २, ६, १४ |
| | | १६, १८, २१, |
| | | २२, २५, ३१, |
| | | ३७, ४२, ४७, |
| | | ५२, ५७, ६२, |
| | | ६७, ७२, ७७, |

| | | | | | |
|--------------|----|-------------|-------------|----|------------|
| केसि | २३ | ८२, ८६, ८८, | कोविय | १५ | १५ |
| | | ८९ | कोस (कोप) | ६ | ४६ |
| केसिगोयमिज्ज | २३ | | कोस (क्रोग) | ३६ | ६२ |
| कोडलच्छद | ३४ | ६ | कोसम्बी | २० | १८ |
| (दि०) | | | कोसलिय | १२ | २०, २२ |
| कोउग (य) | २२ | ६ | कोह | १ | १४ |
| | २३ | १९ | | ४ | १२ |
| कोउहल | १५ | ६ | | ६ | ३६, ५४, ५६ |
| | २० | ४५ | | ११ | ३ |
| कोक्कुय | ३६ | २६३ | | १२ | १४ |
| कोट्ट | ३० | १७ | | २४ | ६ |
| कोट्टा | २३ | ८ | | २५ | २३ |
| कोट्टागार | ११ | २६ | | २६ | सू० १, ६८ |
| कोडि | ८ | १७ | | ३२ | १०२ |
| | १८ | १० | | ३४ | २६ |
| | ३० | ६ | कोहण | २७ | ६ |
| | ३४ | ४६ | कोहवेयणिज्ज | २६ | सू० ६८ |
| | ३६ | १७५, १८५, | कोहि | ११ | ७ |
| | | १९२, २०१ | | | |
| कोडिकोडि | ३३ | १६, २१, २३ | | | |
| कोडीसहिअ | ३६ | २५५ | | | |
| कोत्थल (दि०) | १६ | ४० | ख | | |
| कोल | १६ | ५४ | खअ * | | |
| कोलाहला | ६ | ५, ७ | खज्जड | १२ | १० |
| कोव | १२ | ३१ | खज | ३४ | ४ |
| कोवय * | | | खड | १६ | ६६ |
| -कोवए | १ | ४० | | ३४ | १५ |

| | | | | | |
|-------------|----|-------------------------------|-------------|----|---|
| खंत | २० | ३२,३४ | खत्तिय | १५ | ६ |
| खंति (न्ति) | १ | ६,२६ | | १८ | २० |
| | ३ | ८,१३ | | २५ | ३१ |
| | ५ | ३० | खम * | | |
| | ६ | २०,५७ | -खमाह | १२ | ३०,३१ |
| | २० | ६ | -खमे | १८ | ८ |
| | २२ | २६ | खम | १४ | २८ |
| | २६ | सू० १,४७,६८ | | १८ | ५२ |
| खतिवखम | २१ | १३ | | ३२ | १३ |
| खघ | ३६ | १०,११ | खमानण्या | २६ | सू० १,१८ |
| खग | ६ | १० | खय | ६ | १३ |
| खज्जूर | ३४ | १५ | | २० | ३३ |
| खड्डुया | १ | ३८ | खर | ३६ | ७१,७२ |
| खण | १४ | १३ | खरपुढवी | ३६ | ७७ |
| | १६ | १४ | खल (अप+सु)* | | |
| | २० | ३० | -खलाहि | १२ | ७ |
| | ३२ | २५,३८,५१, ६४,७७,६०, १०८ | खल (स्वल) * | | |
| | | | -खलेज्ज | १२ | १८ |
| खण * | | | खलु | १ | १५ |
| -खणह | १२ | २६ | खलुंक् | २७ | ३,८,१५ |
| खण्डिय | १२ | १८,३० | खलुंकिज्ज | २७ | |
| खत्त | १२ | १८ | खव * | | |
| खत्तिय | ३ | ४,५ | -खवेइ | २६ | सू० २,८,११, सू० १६,२५,३०, सू० ३४,४२,५६, सू० ६२,७२,७३ |
| | ६ | १८,२४,२८, ३२,३८,४६ | | | |

| | | |
|-----------|----|------------------|
| -खवेइ | ३० | १ |
| | ३२ | १०८ |
| खवण | ३३ | २५ |
| खवित्ता | २५ | ४३ |
| खवित्ताण | २२ | ४८ |
| खवित्तु | ११ | ३१ |
| खवेऊग | २१ | २४ |
| खवेत्ता | २८ | ३६ |
| खहयर | ३६ | १७१, १६१, १६३ |
| खाइत्ता | १६ | ८१ |
| खाइम | १५ | ११, १२ |
| खाणि | १४ | १३ |
| खाणु | १४ | २६ |
| खाम * | | |
| -खामेमि | २० | ५६ |
| खाय * | | |
| -खायह | १२ | २६ |
| खाय | १४ | १ |
| खाविय | १६ | ६६ |
| खिस * | | |
| -खिसई | १७ | ४ |
| -खिसएज्जा | १६ | ८३ |
| खिप्पं | १ | ४४ |
| खिप्पामेव | २६ | सू० २३ |

| | | |
|---------------|----|------------|
| खीण | १३ | ३१ |
| | २३ | ७८ |
| खीर | १४ | १८ |
| | ३० | २६ |
| | ३४ | ६, १५ |
| खु | २ | ३३ |
| खुर | १६ | ५६, ६२ |
| खुहु | १ | ६ |
| खुहुअ | ३२ | २० |
| खुहुगनियठिञ्ज | ६ | |
| खुद्द | ३४ | २१, २४ |
| खेड | ३० | १६ |
| खेत्त | ३ | १७ |
| | १२ | १२ से १५ |
| | १३ | २४ |
| | १६ | १६ |
| | ३० | १४, १८, २४ |
| | ३३ | १६ |
| खेत्तओ | २४ | ६, ७ |
| | ३६ | ३, ११ |
| खेम | ७ | २४ |
| | ६ | २८ |
| | १० | ३५ |
| | २१ | ५ |
| | २३ | ८०, ८३ |

१५६

| | | |
|------------|----|------------------------|
| खेय | १५ | १५ |
| खेल | ८ | ५ |
| | २४ | १५ |
| खेल्ल # | | |
| -खेल्लन्ति | ८ | १८ |
| खेव # | | |
| -खेवेज्ज | २१ | १८ |
| खेविय | १६ | ५२ |
| खोडा | २६ | २५ |
| खोभड्डं | ३२ | १६ |
| वा | | |
| गय | १ | २२, ४३ |
| | ७ | १८ |
| | ६ | ३, १०, ३६, ३७ |
| | ११ | ३१ |
| | १३ | १८, २५, ३५ |
| | १४ | ४२ |
| | १६ | सू० ५ |
| | १८ | ६, ३६ |
| | १९ | ७ |
| | २० | ३३ |
| | २१ | २४ |
| | २६ | सू० ८ |
| | ३२ | ३३, ४६, ५६, ७२, ८५, ९८ |
| | ३३ | १८ |
| | ३६ | ६३ |

परिशिष्ट-२

| | | |
|----------|----|------------------------|
| गई | ५ | १२ |
| | ७ | १६, १७ |
| | ६ | ५४ |
| | १० | ३७ |
| | ११ | ३१ |
| | १३ | ३५ |
| | १८ | २५, ३८, ४०, ४२, ४३, ४७ |
| | १९ | ६७ |
| | २० | १ |
| | २३ | ६५, ६६, ६८ |
| | २८ | १, ६ |
| | २९ | सू० ७४ |
| | ३४ | २, ४० |
| गंगा | १६ | ३६ |
| | ३२ | १८ |
| गठिभेय | ६ | २८ |
| गठियसत्त | ३३ | १७ |
| गंड | ८ | १८ |
| | १० | २७ |
| गंडीपय | ३६ | १८० |
| गंतव्व | १८ | १२ |
| | १९ | १६ |
| गंता | २६ | सू० ७४ |
| गंतुं | ६ | २६ |
| गंतूण | ३६ | ५५, ५६ |

| | | | | | |
|----------|----|------------|-----------|----|-------------|
| गंध | ८ | ४ | गंधिज | २२ | २४ |
| गंध | १२ | ३६ | गंधीर | ११ | ३१ |
| | १६ | सू० १२ | | २७ | १७ |
| | १६ | १० | गगण | २२ | १२ |
| | २० | २६ | गग्ग | २७ | १ |
| | २८ | १२ | गच्छ * | | |
| | २६ | सू० ४६, ६५ | -गच्छ | १२ | ७ |
| | ३२ | ४८ से ६० | | १६ | ८५ |
| | ३४ | २, १६, १७ | -गच्छई | ३ | ३ |
| गघञो | ३६ | १५, १७ २२ | | ५ | ५ |
| | | से ४६, ८३, | | ११ | ६ |
| | | ६१, १०५, | | १८ | १७ |
| | | ११६, १२५, | | १६ | १६, २१, ८०, |
| | | १३५, १४४, | | | ८१ |
| | | १५४, १६६, | | २० | ४५, ४७ |
| | | १७८, १८७, | | २३ | ५६ |
| | | १६४, २०३, | | २७ | ६ |
| | | २४७ | | ३२ | १६ |
| गंधण | २२ | ४३ | -गच्छन्ति | ५ | २८ |
| गंधवास | ३४ | १७ | | ७ | १० |
| गघव्व | १ | ४८ | | ८ | ७ |
| | १६ | ६६ | | १४ | ४४ |
| | २३ | २० | | १८ | २५ |
| | ३६ | २०७ | | २३ | ६१ |
| गंधहत्थि | २२ | १० | | २८ | ३ |
| गघार | १८ | ४५ | | ३४ | ६० |

१५८

परिशिष्ट

| | | | | | |
|-------------|----|----------------------------------|------------|----|----------|
| -गच्छसि | ६ | १८, २४, २८, ३२, ३८, ४६, ५८ | -गमिस्सामो | १४ | २६ |
| | १० | ३२, ३५ | -गमिस्ससि | २३ | ७० |
| -गच्छामि | १३ | ३३ | गमण | १६ | ३७ |
| -गच्छे | २ | ६ | | २६ | ५ |
| | ५ | २४ | गमित्तए | १० | ३४ |
| -गच्छेज्जा | २ | २१ | गय | १८ | ३ |
| | ८ | १ | | ३६ | १८० |
| गच्छत्त | ५ | १३ | गयण | २६ | २० |
| | १६ | १८ से २१ | गया | ११ | २१ |
| गण | १० | १ | गयाणीय | १८ | २ |
| | १५ | ६ | गयास | १६ | ६१ |
| | ३४ | ५१ | गरहणया | २६ | सू० १, ८ |
| | ३६ | २०८ | गरहा | १ | ४२ |
| गणण | २६ | २७ | | २१ | १५, २० |
| गणहर | २७ | १ | गरहिय | १७ | २० |
| गणिभाव | २७ | १ | गरुय | ३६ | १६ |
| गत्त | १६ | १३ | गल | १६ | ६४ |
| | १६ | ६१ | गलि | १ | १२, ३७ |
| गद्भालि | १८ | १६, २२ | | २७ | १६ |
| गद्दह | २७ | १६ | गव | ६ | ५ |
| गब्भवक्कतिय | ३६ | १७०, १६५, १६६ | गवल | ३४ | ४ |
| | | | गवेस * | | |
| गम * | | | -गवेसए | ६ | १६ |
| -गमिस्सामु | १४ | ३१ | | १० | ३० |
| | | | | २६ | ३१ |

| | | |
|----------|----|-------------|
| गवैसअ | २ | १७ |
| | ११ | ३२ |
| | २५ | ६ |
| | ३४ | २३ |
| गवैसणा | २४ | ११ |
| गह * | | |
| -गहिनति | ४ | १ |
| गह | २५ | १७ |
| | ३६ | २०८ |
| गहण | २३ | ३२ |
| | २४ | ११ |
| | २६ | सू० २ |
| | ३२ | २३, २३, ३५, |
| | | ३६, ४८, ४९, |
| | | ६१, ६२, ७४, |
| | | ७५, ८७, ८८ |
| | ३६ | २६७ |
| गहाय | ४ | २ |
| | १३ | २२ |
| गहिय | १६ | ६४, ६५ |
| गहीअ | ४ | ३ |
| | ३२ | ७६ |
| गाढ | १० | ४ |
| गाणगाणिय | १७ | १७ |
| गाम | २ | १८ |
| | ६ | १६ |

| | | |
|-------------|----|-----------|
| गाम | १० | ३६ |
| | ३० | १६ |
| गामकंटंग | २ | २५ |
| गामाणुगाम | २ | १३ |
| | २३ | ३, ७ |
| | २५ | २ |
| गामि | १४ | ३३ |
| | २३ | ७१ |
| गाय | २ | ६, ३४, ३६ |
| गारत्थ | ५ | २० |
| गारव | १६ | ८६, ६१ |
| | २७ | ६ |
| | ३१ | ४ |
| गारविअ | २७ | ६ |
| गाह | ३२ | ७६ |
| | ३६ | १७२ |
| गाहा | १३ | १२ |
| गाहासोलसअ | ३१ | १३ |
| गाहिय | १७ | ४ |
| गिज्ज * | | |
| -गिज्जोज्जा | ८ | १८ |
| गिज्ज | १६ | ४, ५ |
| | २३ | ५१ |
| गिज्ज्जा | २६ | ३५ |
| गिज्जंत | २४ | १३ |

| | | | | | |
|---------------|----|-------------|-----------|----|------------|
| गिद्ध (गुद्ध) | ५ | ४,५,१० | गिहृत्य | २ | १६ |
| | ७ | ६ | | ५ | २२, २८ |
| | ८ | ११, १४ | | २३ | १६ |
| | १३ | १५, २८, ३०, | | २५ | २७ |
| | | ३३ | गिहवास | ५ | २४ |
| | १८ | ७ | | ३५ | २ |
| | २० | ३६ | गिहि | ७ | २० |
| | ३२ | ५०, ६३, ८६ | | १५ | १० |
| | ३५ | १७ | | १७ | १६ |
| गिद्ध (गृध्र) | १४ | ४७ | गिहिल्लिग | ३६ | ४६, ५२ |
| | १६ | ५८ | गीय | १३ | १४, १६ |
| गिद्धि | ३२ | २४, ३७, ५०, | | १६ | सू० ७ |
| | | ६३, ७६, ८६ | | १६ | ५, १२ |
| | ३४ | २३ | गीवा | ३४ | ६ |
| गिरा | १२ | १५ | गुंजा | ३६ | ११८ |
| गिरि | ११ | २६ | गुच्छ | ३६ | ६४ |
| | १२ | २६ | गुण | ४ | ११, १३ |
| | १६ | ४१ | | ६ | ६ |
| | २२ | ३३ | | १२ | १ |
| गिलाण | ५ | ११ | | १३ | १२, १३, १७ |
| गिह | ६ | ७, २४ | | १४ | १०, १७ |
| | १३ | १३, २४ | | १८ | ४६ |
| | १४ | ७, ६, २१ | | १६ | ५, २४, ३५, |
| | १५ | १६ | | | ३६, ४७, ४८ |
| | ३५ | ८, ६ | | २० | ५१, ५२, ६० |
| गिहकम्म | ३५ | ८ | | | |

| | | | | | |
|---------|----|-----------------------|-----------|----|-------------------------|
| गुण | २५ | ३३ | गुम्मी | ३६ | १३८ |
| | २८ | ५, ६, ३० | गुरु | १ | २, ३, १६, |
| | २९ | सू० १, ३६, ४५ | | | २० |
| | ३१ | १८ | | ७ | ६ |
| | ३२ | ५ | | १७ | १० |
| | ३४ | १० से १३, १५ से १९ | | २६ | ७, ८, २१, २२, ३७, ४० |
| | ३६ | ५८ | | | से ४२, ४५, ४८ से ५१ |
| गुणओ | ३२ | ५ | | २६ | सू० १, ५ |
| गुणगाहि | ३६ | २६२ | | ३२ | ३ |
| गुणत्तण | २९ | सू० ३६ | गुरुअ | १९ | ३५ |
| गुणवंत | २३ | १० | | ३६ | ३६ |
| गुणावह | १९ | ६८ | गुरुकुल | ११ | १४ |
| गुणिय | ७ | १२ | गुरुभक्ति | ३० | ३२ |
| | १९ | ७३ | गूढ | २५ | १८ |
| गुत्त | १२ | १७ | गेण्ह * | | |
| | १६ | सू० १ से ३ | -गेण्हइ | २५ | २४ |
| | १९ | ८८ | गेण्हण | १९ | २७ |
| | २० | ६० | गेद्धि | ३४ | २३ |
| | ३४ | ३१ | गेहय | ३६ | ७६ |
| गुत्ति | १२ | १७ | गेविज्ज | ३६ | २१२ |
| | २४ | १, १९, २६ | गेविज्जग | ३६ | २१५ |
| | २६ | ३४ | गेह | ९ | ६१ |
| | २८ | २५ | | १७ | १८ |
| | ३४ | ३१ | | १९ | २२ |
| गुम्म | ३६ | ६४ | | | |

१६२

परिशिष्ट-२

| | | |
|----------|----|-------------|
| गेहि | ६ | ४ |
| गो | ६ | ४० |
| | ३४ | १६, १८ |
| गोच्छ्रा | २६ | २३ |
| गोण | ३६ | १८० |
| गोत्त | ३ | २ |
| | १८ | २१, २२ |
| | २६ | सू० ४४, ७३ |
| | ३३ | २३ |
| गोपुर | ६ | १८ |
| गोमुक्ति | ३० | १६ |
| गोमेज्जअ | ३६ | ७५ |
| गोय | २६ | सू० ४२ |
| | ३३ | ३, १४ |
| बोयम | १० | १ से ३७ |
| | १८ | २२ |
| | २२ | ५ |
| | २३ | ६, ६, १४ |
| | | से १८, २१, |
| | | २२, २५, २८, |
| | | ३१, ३४, ३५, |
| | | ३७, ३९, ४२, |
| | | ४४, ४५, ४७, |
| | | ४९, ५०, ५२, |
| | | ५४, ५५, ५७, |
| | | ५९, ६०, ६२ |

| | | |
|-----------|----|-------------|
| गोयम | २३ | ६४, ६७, ६९, |
| | | ७०, ७२, ७४, |
| | | ७७, ७९, ८२, |
| | | ८५, ८६, ८८, |
| | | ८९ |
| गोयर | १६ | ८० |
| गोयरग्ग | २ | २६ |
| | ३० | २५ |
| गोयरिया | १६ | ८३ |
| गोल्थ (अ) | २५ | ४०, ४१ |
| गोवाल | २२ | ४५ |
| गोहा | ३६ | १८१ |

घ

| | | |
|-------|----|--------|
| घण | ३० | १० |
| | ३६ | ११८ |
| घत्तु | १८ | ७ |
| घत्थ | १६ | १४ |
| घय | ३ | १२ |
| | १४ | १८ |
| घर | ६ | २६ |
| | २१ | ५ |
| | ३० | १८ |
| घरणी | २१ | ४ |
| घाण | १० | २३ |
| | ३२ | ४८, ४९ |

| उत्तरजभयण शब्द-सूची | | | च | | |
|---------------------|----|------------|------------------|----|------------|
| घाणिदिय | २६ | सू० १,६५ - | च | १ | ६ |
| घास | २ | ३० | चइउ(त्यक्त्वा) | १८ | १६ |
| | ८ | ११ | चइउं (त्यक्त्वा) | १३ | ३२ |
| | ३० | २१ | चइऊण | ७ | ३० |
| घिसु | २ | ८,३६ - | | ६ | १,६१ |
| घुट्ट | १२ | ३६ | | १३ | ३३ |
| घेतूण | ७ | १४ | चइऊण | १ | २१ |
| | १२ | १८ | चइस्ता | १४ | ४६ |
| घोर | ४ | ६ | | १८ | ३६, ३८, ४१ |
| | १४ | ५० | चइस्ताणं | १ | ५ |
| | १८ | २५ | | ६ | ५ |
| | १६ | ३३, ७२ | | ६ | ४२ |
| | २० | २१ | | १८ | ४४ |
| | २२ | ३१ | | १६ | १६ |
| | २३ | ५०, ७५ | | २७ | १६ |
| | २५ | ३८ | | ३६ | ५५, ५६ |
| घोरपरकाम | १२ | २३, २७ | चइस्तु | १ | ४८ |
| | १४ | ५० | | १३ | २० |
| | २३ | ८६ | चइयव्व | १६ | १३ |
| घोररूव | १२ | २५ | चउ | ३ | १, १७ |
| घोरव्वय | १२ | २३, २७ | | १८ | २३ |
| घोरासम | ६ | ४२ | | २४ | ४ |
| घोस | ११ | १७ | | २६ | ११, १४, १७ |
| | ३० | १७ | | २८ | १ |
| | | | | ३० | २० |

| | | | | | |
|-------------|----|-------------------------------------|-------------|----|---|
| चउ | ३४ | ४० | चउरिदिय | ३६ | १४५, १४६, १५१, १५२ |
| | ३६ | ५२ से ५४, २४३ | चउरिदियकाय | १० | १२ |
| चउक्क | १६ | ४ | चउविह | ३६ | १७६ |
| | २४ | १२ | चउवीस | ३६ | २३५, २३६ |
| | ३६ | २५२ | चउव्विह | १६ | ३० |
| चउत्थ | २४ | २० | | २४ | २० |
| | २६ | २, १२, १६, १८, २६, ३६, ४३, ४४ | | २८ | १८ |
| | ३३ | १२ | | ३३ | १२ |
| | ३६ | १६३, २३७ | | ३६ | ४, १०, ११, ७८, १११, १२०, १५५, १५८, १७३, १८२, १८८, १८९, २०४, २१७ |
| चउद्दस | ११ | ६, २२ | चउव्वीसत्थअ | २६ | सू० १, १० |
| | ३६ | २२७, २२८ | चउहा | ३६ | १२६ |
| चउप्पय | १३ | २४ | चंचल | १८ | १३ |
| | २६ | १३ | चंड | १ | १३ |
| | ३६ | १७६ | | १७ | ८ |
| चउन्नाअ (ग) | २६ | ८, १६ से २२, ३७, ४५ | | १६ | ७२ |
| चउभाग | ३० | २१ | चंडाल | ३ | ४ |
| चउर (ईदिय) | ३६ | १२६ | चंडालिय | १ | १०, ११ |
| चउरंग | ३ | २० | चंद | ११ | २५ |
| चउरंगिणी | २२ | १२ | | २३ | १८ |
| चउरंस | ३६ | २१, ४५ | | | |

| | | | | | |
|-----------|----|-----------------|------------|----|---------------------|
| चंद | २५ | १६, १७ | चम्म | ३६ | १८८ |
| | ३६ | २०८ | चय - | | |
| चंदण | १६ | ६२ | -चयड | २६ | सू० ४ |
| | ३६ | ७६, १२६ | | ३१ | ४ |
| चदप्पह | ३६ | ७६ | -चयति | १३ | ३१ |
| चपा | २१ | १, ५ | -चयसि | ६ | ५१ |
| चक्क | ६ | ६० | चयरित्तकर | २८ | ३३ |
| | ११ | २१ | चर * | | |
| | १४ | ४ | -चर | ४ | ६, ८, १० |
| | २२ | ११ | | १८ | ३३ |
| चक्कवट्टि | ११ | २२ | | २२ | ४३ |
| | १३ | ४ | -चरई | १७ | ८ |
| | १८ | ३६ से ३८, ४१ | | १६ | ७७ |
| चक्खिदिय | २६ | सू० १, ६४ | -चरन्ति | १२ | १५, ४१ |
| चक्खु | ५ | ५ | | १४ | ३५ |
| | १० | २२ | -चरिज्ज | २१ | ८३ |
| | १६ | ४ | -चरिस्ससि | १६ | १२, १३ |
| | २४ | ७, १४ | -चरिस्सामि | १४ | ४३ |
| | २६ | ३५ | | १४ | ३२, ४१ |
| | ३२ | २२, २३ | | १५ | १ |
| | ३३ | ६ | | १६ | ८४, ८५ |
| चक्खुफास | १ | ३३ | -चरिस्सामु | १४ | ७ |
| चच्चर | १६ | ४ | -चरिस्सिमो | २३ | ३८ |
| चत्त | ६ | १५ | -चरे | १ | ३२ |
| | १२ | ४२ | | २ | ३, ४, १५, १८, १९ |
| | १६ | ८६ | | | |

| | | | | | |
|---------|-------|----------------------------------|--------------|---|---------------------------|
| -चरे | ४ | ७ | चरम | ३४ | ५६ |
| | ६ | १६ | चरमाण | ३० | २०, २३ |
| | ८ | ४६ | चराचर | ३२ | २७, ४७, ५३, ६६, ७६, ६२ |
| | १० | ३६ | | | |
| | १२ | ४० | चरिं | | |
| | १४ | ४७ | (चरितुम्) १६ | | ३७ |
| | १५ | ३ | चरिं | | |
| | १६ | १५ | (चरित्वा) २१ | | २३ |
| | १८ | १५, ३१, ३७, ४१, ४३, ४७, ५१ | चरित्त | १६ | ३८ |
| | | | | २० | ५२ |
| | | | | २२ | २६ |
| | | | | २३ | ३३ |
| २६ | | | | ३६, ४७ | |
| २८ | | | | २, ३, ११, २५, २६, ३५ | |
| २६ | | | | सू० १, १२, १५, ३२, ५६, ६०, ६२, ७२ | |
| २६ | | | | सू० ३२ | |
| २६ | | | | सू० ३२ | |
| २८ | | | | २७ | |
| २४ | ५, २६ | चरित्तमोहण | ३३ | १० | |
| २८ | ३० | चरित्तमोहणिज्ज | २६ | सू० ३० | |
| ३३ | ८ | चरित्ता | १८ | २५ | |
| चरणविहि | ३१ | | २६ | ५२ | |
| | ३१ | १ | ३१ | १ | |
| -चरेज्ज | २ | १७ | | | |
| | १५ | २ | | | |
| चरंत | २ | ६ | | | |
| | ४ | ११ | | | |
| चरण | १८ | २२, २४ | चरित्तगुत्त | २६ | सू० ३२ |
| | १६ | ६४ | चरित्तगुत्ति | २६ | सू० ३२ |
| | २३ | २, ६ | चरित्तधम्म | २८ | २७ |
| | २४ | ५, २६ | | | |
| | २८ | ३० | | | |
| | ३३ | ८ | | | |
| | | | | | |

उत्तरज्जमयण शब्द-सूची

| | | | | | |
|------------|----|----------------|-----------|----|------------|
| चरिताण | २६ | १ | चिइ | १३ | २५ |
| चरिताणं | १६ | ८१, ८२ | चित * | | ७, १२, २६, |
| | २२ | ४८ | -चितए | २ | ४४, ४५ |
| चरिम | २३ | २७ | -चितिज्ज | २६ | ३६, ४७ |
| | ३६ | ५६, ६४ | -चितेइ | २२ | १८ |
| चरिय | १६ | ६७ | चितइत्ताण | २० | ३३ |
| चरिया | २ | सू० ३ | चितंत | १६ | ५६ |
| चवल | ६ | ६० | चिता | १४ | २२ |
| चवेड | १६ | ६७ | | २३ | १० |
| चवेडा | १ | ३८ | चिच्चा | ७ | २८ |
| चाइय | ३२ | १६ | | ६ | ४ |
| चाउज्जाम | २३ | १२, २३ | | १८ | २० |
| चाउप्याय | २० | २३ | चिच्चाण | १० | २६ |
| चाउरंत | ११ | २२ | चिट्ट * | | |
| | १६ | ४६ | -चिट्टुड | १ | ४७ |
| | २६ | सू० २३, ३३, ६० | | ३ | १२ |
| चाउरंगिज्ज | ३ | | | १० | २ |
| चामर | २२ | ११ | | २१ | २१ |
| चारि | १६ | ८३ | | २३ | ४५, ५० |
| चारित्त | १३ | ३५ | -चिट्टई | २७ | ६ |
| | २८ | ३३ | -चिट्टिसि | १० | ३४ |
| चारु | १६ | ४ | | २३ | ३५ |
| चारुपेहिणी | २२ | ७ | -चिट्ठंति | ३ | १५ |
| चारुभासिणी | २२ | ३७ | | २३ | ७५ |
| चावेयज्ज | १६ | ३८ | -चिट्ठे | १ | १६, २६ |
| चास | ३४ | ५ | | | |

| | | | | | |
|---------------|----|---|---------------|----|-------------|
| -चिट्ठेज्ज | १ | ३३ | चित्तमम्भुज्ज | १३ | |
| -चिट्ठेज्जा | १ | ३२ | चित्तह | ३५ | ४ |
| -विट्ठन्ती | २५ | १७ | वित्ता | २२ | २३ |
| चिट्ठमाण | २ | २१ | चित्तिय | ७ | ७ |
| चिण * | | | चित्था | १६ | ५७ |
| -चिणाड | ३० | ३३, ४६, ५६, ७२, ८५, ९८ | चित्ति | २० | ४१, ४३ |
| चिण्ण | २१ | २२ | चिरकाल | १० | ४ |
| चित्त (चित्त) | १ | १३ | चीर | ५ | २१ |
| | ८ | १८ | चीवर | २२ | ३४ |
| | १४ | ४ | चुण्णिय | १६ | ६७ |
| | २२ | ३४ | चुय (अ) | ३ | १६ |
| | २६ | मू० २६ | | ७ | १० |
| | ३२ | १, १२, १४, ३३, ४६, ५६, ७२, ८५, ९८ | | १४ | १ |
| | | | | १८ | २६ |
| | | | | २० | ४७ |
| चित्त (चित्त) | ६ | १० | चुलगी | १३ | १ |
| | १३ | २, ३, ६, ११, १३, १५, २८, ३५ | चुडामणी | २० | १० |
| | ३० | ११ | चे | १६ | मू० ३ मे १० |
| | ३२ | २७, ४०, ५३, ६६, ७६, ९२ | चेडय | ६ | ६, १० |
| | | | | २० | ८ |
| | | | चेल्वा | १३ | २५ |
| चित्त (चित्र) | २६ | १३ | | १८ | ५० |
| चित्तपत्तय | ३६ | १४८ | चेट्टा | १५ | १६ |
| चित्तमंत | २५ | २४ | | १८ | ३४, ४३ |
| | | | चेय | १० | २६ |
| | | | | २० | ३०, ५० |
| | | | | | १७, ५८ |

| | | | | | |
|--------|----|---|------------|----|----------|
| चोडय | ६ | ८, ११, १२, १७, १६, २३, २५, २७, २६, ३१, ३३, ३७, ३६, ४१, ४३, ४५, ४७, ५०, ६१ | छद् | १६ | ७५ |
| | १७ | १६ | | २१ | १६ |
| | १८ | ४४ | छद्गणा | २६ | ३, ६ |
| | १९ | ५६ | छक्क | ३१ | ८ |
| चौज्ज | ३५ | ३ | छज्जीवकाय | १२ | ४१ |
| चोयण | १ | २८ | छट्ट | २६ | २६, ३२ |
| चोर | ३२ | १०४ | | ३० | १९, ३६ |
| | | | | ३४ | ३ |
| | | | छट्टय | २६ | १६५, २३६ |
| | | | | ३० | ३ |
| | | | छट्टिया | १३ | ११ |
| | | | छत्त | १८ | ७ |
| | | | | २२ | ४२ |
| | | | | ३६ | ११ |
| | | | छत्तग | ३६ | ५७ |
| छ | २६ | १६, २५, ३०, ३१, ३३ | छत्तीस | ३६ | ६० |
| | ३१ | ८ | छत्तीसडविह | ३६ | ७७, २६८ |
| | ३३ | १८ | छन्न | २५ | ७२ |
| | ३४ | १, २१ | छन्नाअ | ३६ | १८ |
| | ३६ | १५१, २५१ | छवि | २२ | ६२ |
| छउम | २ | ४३ | छवित्ताण | २ | ५ |
| छउमत्थ | २८ | १९, ३३ | छविपण्व | ५ | ७ |
| छद् | ४ | ८ | छवीसड | ३६ | २४ |
| | १८ | ३० | छव्विह | २८ | २३८ |
| | | | | ३० | ३४ |
| | | | | | ७, १० |

| | | | | | |
|----------|----|-------------|------------|----|------------|
| छव्वीस | ३६ | २३७ | छिन्नसोय | २१ | २१ |
| छाया | २८ | १२ | छिन्नाल | २७ | ७ |
| छिद * | | | छिन्नावाय | २ | ५ |
| -छिद | ६ | ४ | छुभित्ता | १८ | ३ |
| -छिदड | २० | ३६ | छुरिया | १६ | ६२ |
| | २७ | ७ | छुहा | १६ | १८, २०, ३१ |
| -छिदई | १६ | ८६ | छूढ | २५ | ४० |
| -छिदे | २ | २ | छेअ | ७ | १६ |
| छिदाव * | | | | ३० | १३ |
| -छिदावए | २ | २ | छेतु | २० | ४८ |
| छिदित्तु | १४ | ३५ | छेतूण | ७ | ३ |
| | २३ | ४३ | छेओवट्टावण | २८ | ३२ |
| छिदिया | १० | ३७ | छेयण | २६ | सू० ४, ६१ |
| छित्ता | १४ | ४८ | | | |
| | २३ | ४१, ४६ | | | |
| छिद | २६ | सू० १२ | ज | | |
| छिन्न | १४ | २६, ४१ | ज | १ | २१ |
| | १५ | १, ७ | जअ | ६ | ३४ |
| | १६ | ५१, ५४, ५५, | जइ (यदि) | १ | १७ |
| | | ६०, ६२, ६६ | | १२ | १७, २८ |
| | २३ | २८, ३४, ३६, | | १३ | ३२ |
| | | ४४, ४६, ५४, | | १४ | ३६ |
| | | ५६, ६४, ६६, | | १८ | १७ |
| | | ७४, ७६, ८५, | | २० | ३२ |
| | | ८६ | | २२ | १६, ४१, ४४ |
| | २५ | ३४ | | २५ | २३, २४ |

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

१७१

| | | | | | |
|-----------------|----|-----------------------------|---------|----|-------------|
| जड (यति) | २४ | १२, १४, २१, २३, २४ | जक्ख | २३ | २० |
| | २६ | ३८ | | ३६ | २०७ |
| जइत्ता (जित्वा) | ६ | ३५ | जग | ८ | १० |
| जइत्ता | | | | १४ | ३६, ४३ |
| (याजयित्वा) | ६ | ३८ | जगई | १ | ४५ |
| जइय | २५ | ३६ | जट्ट | २५ | २८ |
| जओ | १ | ७, २१ | जट्टा | ६ | ३८ |
| | १२ | २ | जडि | ५ | २१ |
| जत | २२ | ३३ | जण * | | |
| जतिय | ३२ | १२ | -जणयइ | २६ | सू० २ से ७३ |
| जतु | ३ | १ | जण | ४ | १ |
| | ७ | ६ | | ५ | ७ |
| | १४ | ४२ | | ६ | ३० |
| | १६ | १५ | | १० | १८, १६ |
| | २३ | ६० | | १२ | २५, २८, ३३ |
| | २८ | ७, ८ | | १३ | १४, १८ |
| | ३२ | २५, ३८, ५१, ६४, ७७, ६०, ११० | | १६ | सू० १२ |
| | | | | १६ | १ |
| जपिय | ३२ | १४ | | २२ | १७, २७ |
| जक्ख | ३ | १४, १६ | जणअ | २२ | ८ |
| | ५ | २४, २६ | जणइत्ता | २६ | सू० ५७ |
| | १२ | ७, २४, ३२, ४०, ४५ | जणणी | १६ | २ |
| | १६ | १६ | जणवय | ६ | ४ |
| | | | जणवयकहा | २६ | २६ |

| | | | | | |
|----------|----|------------------------|-------------|----|------------------|
| जत्ता | १६ | ८ | जय (यत्) | १ | ३५ |
| | २३ | ३२ | | १२ | २ |
| जत्तिअ | ३० | २० | | २४ | १२, १४, २१, |
| जत्थ | ५ | १२ | | | २३, २५ |
| | ७ | २७ | | २६ | ३८ |
| | ६ | २६ | जय (यत्) * | | |
| | १७ | १३ | -जए | ३३ | २५ |
| | १८ | १३ | जय (यज्) * | | |
| | १९ | १५ | -जयई | १२ | ४२ |
| | २३ | ८१ | | २५ | ४ |
| | २४ | ३ | -जयामो | १२ | ४० |
| जन्न | ६ | ३८ | जयंत (जयत्) | ४ | ११ |
| | १२ | १७, ४२ | जयत (जयंत) | ३६ | २१५ |
| | २५ | ४, ५, ७, ११, १४, ३६ | जयघोस | २५ | १, ३४, ४२, ४३ |
| जन्नइज्ज | २५ | | जयणा | २४ | ४, ६ |
| जन्नट्टि | २५ | १६ | जया | १४ | ४० |
| जन्नवाई | २५ | १८ | | १८ | १२ |
| जन्नवाड | १२ | ३ | | १९ | ७८, ८० |
| जमजन्न | २५ | १ | | २६ | १९ |
| जम्बु | ११ | २७ | जरा | ४ | १ |
| जम्म | १४ | ५१ | | १३ | २६ |
| | १९ | १५, ४६ | | १४ | ४, १४, २३ |
| | २० | ५५ | | १९ | १४, १५, २३, |
| जम्मण | ३६ | २६७ | | | ४६ |
| जय (जय) | १८ | ४३ | | २३ | ६८, ८१ |

उत्तरजर्भयण शब्द-सूची

१७३

| | | | | | |
|--------------|----|----------------------------------|-----------|----|--------|
| जल | १६ | ५६ | जवण | ८ | १२ |
| | २३ | ५१, ५३ | | ३५ | १७ |
| | २५ | २६ | जवमज्भ | ३६ | ५३ |
| | ३२ | ३४, ४७, ६०, ७३, ७६, ८६, ९९ | जवस | ७ | १ |
| | ३५ | ११ | जवोदग | १५ | १३ |
| | ३६ | ५०, ५४, २६७ | जवोदण | १५ | १३ |
| जलत | ११ | २३ | जस (यजस्) | ३ | १३, १८ |
| | १६ | ४६, ५६, ५७, ७० | | ७ | २७ |
| जलकत | ३६ | ७६ | जससि | ५ | २६ |
| जलकारि | ३६ | १४८ | | २१ | २३ |
| जलण | ३६ | २६७ | जसा | १४ | ३ |
| जलयर | ३६ | १७१, १७२, १७५ से १७७ | जसोकामी | २२ | ४२ |
| जलघह | ३६ | ६५ | जह | १० | २, ३३ |
| जलागम | ३० | ५ | | १६ | ५६ |
| जलूग | ३६ | १२६ | | २० | ४२, ४४ |
| जल्ल (दि०) | २ | सू० ३ | जह * | | |
| | २ | ३७ | -जहाइ | १४ | ३२ |
| | १६ | ३१ | | १५ | ६ |
| जल्लिय (दि०) | २४ | १५ | | १६ | ८४ |
| जव (यव) | ६ | ४६ | -जहासि | १२ | ४५ |
| | १६ | ३८ | -जहिज्ज | १५ | १ |
| जव (जव) | ११ | १६ | जहवकम | १४ | ११ |
| | | | | २२ | १२ |
| | | | | २३ | ४३ |
| | | | | २६ | ४०, ४८ |
| | | | | ३३ | १ |
| | | | | ३४ | १, ३ |

१७४

परिशिष्ट-२

| | | | | | |
|----------------|----|-------------|-------------|----|-------------|
| जहन्न | ३० | १५ | जहन्निय | ३६ | १२२, १३२, |
| | ३४ | ३४ से ३६, | | | १४१, १५१, |
| | | ४२, ४६, ४६, | | | १७५, १७६, |
| | | ५०, ५२, ५४, | | | १८४, १८५, |
| | | ५५ | | | १९१, १९२, |
| | ३६ | ५०, ५३, | | | २००, २०१, |
| | | १६० से १६७, | | | २२१, २५१ |
| | | २१६, २२०, | जहा | १ | ४ |
| | | २२२ से २४३, | जहाजाय | २२ | ३४ |
| | | २४५ | जहाठाण | ३ | १६ |
| जहन्निय (ग) ३६ | | १४, ८१, ८२, | जहाणुपुन्वी | २६ | सू० ७२ |
| | | ९०, १०२ | जहाथाम | ३० | ३३ |
| | | से १०४, | जहानाय | २३ | ३८, ४३, ४६, |
| | | ११४, ११५, | | | ४८ |
| | | १२३, १२४, | जहाफुड | १९ | ७६ |
| | | १३३, १३४, | जहाभूय | २० | ५४ |
| | | १४२, १४३, | | २५ | ३५ |
| | | १५२, १५३, | जहामदु | २५ | २१ |
| | | १६८, १७७, | जहाय | १४ | २ |
| | | १८६, १९३, | | २० | ५१ |
| | | २०२, २४६ | जहावाइ | २६ | सू० ५२ |
| जहन्निय | ३३ | १६, २१ से | जहासुत्त | ३५ | १६ |
| | | २३ | जहासुय | १ | २३ |
| | ३४ | ४१, ४३, ४८, | जहासुह | १७ | १ |
| | | ५३ | | १६ | ८४, ८५ |
| | ३६ | १३, ८०, ८८, | जहाहिय | २० | २३ |
| | | ८९, ११३, | | | |

| | | | | | |
|------------|----|----------|-------------|----|-------|
| जहिऊग | ३५ | २० | जाइ | २२ | ४० |
| जहिं | १२ | १३ | | ३२ | ७ |
| जहिच्छ | २३ | २२ | जाइपह | ६ | २ |
| जहिस्ताग | १८ | ४० | जाइय | २ | २८ |
| जहित्तु | २१ | ११ | जाईसरण | १६ | ७,८ |
| जहोइय | २२ | २१ | जाण * | | |
| जा * (जन्) | | | -जाणड | ५ | ६ |
| -जायइ | १६ | ७८ | | २८ | ३५ |
| -जायए | १ | ४५ | | ३२ | १०६ |
| -जायति | ३२ | १०५ | -जाणामि | १३ | २७ |
| जा * (या) | | | | १७ | २ |
| -जाइ | ३ | १२ | | १८ | २७ |
| -जांति | ७ | २१ | -जाणासि | २५ | ११,१२ |
| | ६ | ५३ | -जाणाह | १२ | १५ |
| | १४ | २४,२५ | -जाणाहि | १२ | १० |
| | २२ | ३२ | | १३ | ११ |
| जाअ | १३ | २,१२ | -जाणे | १४ | २७ |
| | २० | ३५ | | १८ | २६ |
| जाइ | ३ | २ | | २० | १६ |
| | १ | १,२ | -जाणंति | ३६ | २६१ |
| | १२ | ५,१३,१४, | जाण (जाणत्) | ५ | १४ |
| | | ३७ | जाण (यान) | ७ | ८ |
| | १३ | १,७,१८, | जाणमाण | १३ | २६ |
| | | १६ | जाणय | २० | ४२ |
| | १४ | ४,५ | जाणिऊण | ३६ | १ |
| | १६ | ८ | जाणिस्ता | १ | ३४ |

१७६

परिशिष्ट-

| | | | | | |
|----------|----|------------|-----------|----|------------|
| जाणिय | २१ | १४ | जाल | १४ | ३५, ३६ |
| जाय * | | | | १६ | ६५ |
| -जायइ | २२ | ६ | | ३२ | ६ |
| -जायाहि | २५ | ६ | जालग | ३६ | १२६ |
| जाय | ७ | २ | जाला | ३६ | १०६ |
| | ८ | ४ | जाव | २ | ३७ |
| | १४ | ६, १२, १८, | | ४ | १३ |
| | | २२, २६, ३४ | | ७ | ३ |
| | १६ | ४३ | | २६ | सू० ७२ |
| | २१ | ४ | जावइ | ३६ | ६७ |
| | २२ | ४८ | जावत | ६ | १ |
| | २५ | २६ | जावज्जीव | १६ | २५, ३५ |
| | २७ | १४ | | २२ | ४७ |
| जायखन्ध | ११ | १६ | जि * | | |
| जायग | २५ | ६, ६ | -जयइ | ३१ | ७ से २१ |
| जायणजीवि | १२ | १० | | ३६ | १ |
| जायणा | २ | सू० ३ | -जिणेंज | ६ | ३४ |
| | १६ | ३२ | -जीयन्ति | ७ | १३ |
| जायतेय | १२ | २६ | जिडंदिय | १२ | १, ३, १७, |
| जायरूव | २५ | २१ | | | २२ |
| | ३५ | १३ | | १५ | १६ |
| जाया | ८ | ११ | | २२ | २५, ३१, ४७ |
| जायाइ | २५ | १ | | २६ | सू० ४३ |
| जारिस | १६ | ७३ | | ३० | ३ |
| | २७ | ८, १६ | जिच्च | ७ | ३०, ३२ |
| जारिसय | ३४ | १२ से १४ | जिच्चामाण | ७ | २२ |

उत्तरप्रकरण शब्द-सूची

१५७

| | | |
|-----------|----|-------------|
| जिम्वा | २ | सू० १ से ३ |
| जिण * | | |
| -जिए. | २३ | ३६ |
| -जिणह | २६ | सू० ४७ |
| जिण | २ | ४५ |
| | १० | ३१ |
| | १६ | १७ |
| | १८ | ४३ |
| | २० | ५०, ५५ |
| | २१ | १२ |
| | २२ | २८ |
| | २३ | १, ५, ६३, |
| | | ७८ |
| | २४ | ३ |
| | २८ | १, २, ७, |
| | | १८, १९, २७, |
| | | ३३ |
| जिणमग्ग | २२ | ३८ |
| जिणवयण | ३६ | २६०, २६१ |
| जिणवर | ३६ | ६० |
| जिणसासण | २ | ६, १८, १९, |
| | | ३२, ४६ |
| जिणिद | १४ | २ |
| जिणित्ताण | २३ | ३६ |
| जिणित्तु | २३ | ३८ |
| जिन्ना | १० | २४ |

| | | |
|------------|----|-------------|
| जिन्ना | ३२ | ६२ |
| | ३४ | १८ |
| | ३५ | १७ |
| जिन्निमदिम | २६ | सू० १, ६६ |
| जिय (जित) | ५ | १६ |
| | ७ | १७ से १९ |
| | ९ | ३६ |
| | २३ | ३६ |
| जिय (जीव) | २२ | १८, १९ |
| जीमूय | ३४ | ४ |
| जीव | २ | २७ |
| | ३ | ७ |
| | ७ | १६ |
| | ८ | ३ |
| | १० | ५ से १४ |
| | १२ | ४४ |
| | २३ | ७३ |
| | २६ | ५२ |
| | २८ | ३, १०, ११, |
| | | १४, १७ |
| | २९ | सू० १ से ७२ |
| | ३० | २, ३, ३७ |
| | ३१ | १ |
| | ३२ | २७, ४०, ५३, |
| | | ६६, ७६, ९२ |
| | ३३ | १, १८, २४ |

| | | |
|----------------|----|-------------|
| जीव | ३४ | ५६ से ६७ |
| | ३५ | ११ |
| | ३६ | २,३,४,५, |
| | | ६ से ७०, |
| | | करी, ४, ६०, |
| | | ६२, १०४, |
| | | १०५, ११५, |
| | | ११७, १२४, |
| | | १२७, १३४, |
| | | १३६, १४३, |
| | | १४५, १५५, |
| | | २४५, २४६, |
| | | २५७ से २५९ |
| जीव | | |
| -जीवइ | ७ | ३ |
| | १५ | ७ |
| -जीवामो | ६ | १४ |
| जीवत | १५ | १४ |
| जीवघण | ३६ | ६६ |
| जीवलोग | १५ | ११, १२ |
| जीवविभक्ति | ३६ | ४७ |
| जीवो | ६ | २१ |
| जीवाजीवविभक्ति | ३६ | |
| जीवि | २० | ४५ |
| जीविय | ४ | १, ७ |
| | ५ | १४ |

| | | |
|--------|----|------------|
| जीविय | १० | १, २ |
| | १२ | २५, ४२ |
| | १३ | २१, २६ |
| | १४ | ३२ |
| | १५ | ६ |
| | १५ | १३ |
| | १६ | ६० |
| | २० | ४३ |
| | २२ | १५, २६, ४२ |
| | २६ | सू० ३६ |
| | ३२ | २० |
| जीवियय | १० | ३ |
| जीहा | १२ | २६ |
| | ३२ | ६१ |
| जुअ | १६ | ५६ |
| जुइ | ७ | २७ |
| | १३ | ११ |
| | २२ | १३ |
| जुइम | १५ | २५ |
| जुइमत | ५ | २६ |
| जुंज | | |
| -जुंजे | १ | १५ |
| जुंजण | २४ | २४ |
| जुग | २७ | ७ |
| जुगमित | २४ | ७ |

उत्तराखण्ड शब्द-सूची

| | | | | | |
|-----------------|----|------------|-------------|----|------------------------|
| जुगव | २८ | २६ | जोव * | २७ | ३ |
| | २६ | सू० ७२, ७३ | जोइ | १२ | ३८, ४३, ४४ |
| | ३६ | ५३ | | ३५ | १२ |
| जुज्म * | | | जोइय | २७ | ५ |
| जुज्माहि | ६ | ३५ | जोइस | ३४ | ५१ |
| जुज्म | ६ | ३५ | | ३६ | २०४, २०८, २२१ |
| जुण्ण | १४ | ३३ | जोइसंगविठ | २५ | ७, ३६ |
| जुत्त (योक्त्र) | १६ | ५६ | जोइसिय | ३६ | २०५ |
| जुत्त (युक्त) | १ | ८, २३ | जोग | ७ | २४ |
| | ६ | २२ | | १२ | ४४ |
| | १८ | ४ | | २१ | १३ |
| | १६ | ५६, ८८ | | २६ | सू० १, ५, ३४ |
| | ३२ | १०६ | | | ३८, ६७, ७३ |
| जुम्ह | १२ | ७ | | ३१ | २० |
| जुयल | २२ | ६, २० | | ३४ | २२, २४, २६, २८, ३०, ३२ |
| जुवराय | १६ | २ | | ३६ | २५०, २६४ |
| जूव | १२ | ३६ | जोगव | ११ | १४ |
| जूह | ११ | १६ | | ३४ | २७, २६ |
| जे | २२ | २१ | जोगसच्च | २६ | सू० १, ५, ३ |
| जेदु | २० | २६, २७ | जोग्ग | ३२ | ४, १५ |
| | २३ | १५ | जोज्ज (दि०) | २७ | |
| जेदुग | २२ | १० | जोणि | ३ | ५, ६, १६ |
| जेदुमूल | २६ | १६ | | ७ | १६, ३० |
| जेम * | | | | | |
| जेमेइ | १७ | १६ | | | |
| जोव | २७ | २ | | | |

१३४

परिशिष्ट-२

| | | |
|------|----|-----------|
| जोयण | २६ | ३५ |
| | ३६ | ५७ से ५६, |
| | | ६१, ६२ |

| | | |
|--------|----|----|
| जोव्वण | २१ | ६ |
| जोह | ११ | २१ |

| | | |
|--------------|----|------------|
| क्रिज्जक * | | |
| -क्रिज्जइ | २० | ४६ |
| क्रिया * | | |
| -क्रियाएज्जा | ३५ | १६ |
| -क्रियायइ | १८ | ४ |
| | २६ | १२, १८, ४३ |
| क्रियायमाण | २६ | सू० ७३ |

३६

| | | |
|-------|----|--------|
| भंभ | २६ | सू० ४० |
| भविय | १८ | ५ |
| भसोयर | २२ | ६ |

ठ

| | | |
|----------|----|------------|
| भा * | | |
| -भाएज्ज | १ | १० |
| -भाएज्जी | ३० | ३५ |
| -भायइ | १८ | ५ |
| -भायए | ३४ | ३१ |
| भाण | १८ | ४, ६ |
| | २० | ५७ |
| | २६ | १२, १८, ४३ |
| | २६ | सू० १३ |
| | ३० | ३०, ३५ |
| | ३१ | ६ |
| | ३२ | १०६ |

| | | |
|---------|----|----------------|
| ठव * | | |
| *ठवेज्ज | १ | ६ |
| | ८ | ११, १६- |
| ठविलाण | १८ | ३७, ४६- |
| ठवेत्तु | ६ | २ |
| ठाण | ५ | २, ४, १२, |
| | | १३, २८ |
| | | ६, ५८ |
| | ११ | ३, ४, ६, |
| | | १० |
| | १२ | ४३, ४४, ४७ |
| | १६ | सू० १ से ३, १२ |
| | १६ | १४ |
| | १८ | २३ |
| | २० | ५२ |

| | | |
|----------|----|--------|
| भाणगुत्त | २६ | सू० ५५ |
| भायि | १२ | २१ |
| भायमाण | २६ | सू० ७३ |

| | | | | | |
|-----------|-------------|-------------|-----------------|----|------------|
| ठाण | २३ | ८० से ८२, | ठिच्चा | ३ | १६ |
| | | ८४ | ठिय | १२ | ७, ११, २५ |
| | २४ | १०, २४ | | १३ | ३२ |
| | २६ | ५, ३३ | | १६ | ४ |
| | २८ | ६ | | २० | ५५ |
| | २९ | सू० ५० | | २१ | ८ |
| | ३० | २७, ३६ | | २२ | २२, ३३ |
| | ३१ | १४, २१ | | ३२ | १७ |
| | ३४ | २, ३३ | | | |
| ठावइत्ताण | ९ | ३२ | ढ | | |
| ठिह | ७ | १३ | डज्ज | ६ | १२, १४ |
| | ३३ | १६, २०, २२ | डज्जमाण | ६ | १४ |
| | ३४ | २, ३४ से | | १४ | ४२, ४३ |
| | | ४२, ४४, ४५, | डमर | ११ | १३ |
| | | ४७ से ५०, | डस ^f | | |
| | | ५३ से ५५ | -डसई | २७ | ८ |
| ३६ | १२, १३, ७६, | | डह ^g | | |
| | ८७, १०१, | | -डहन्ति | २३ | ५०, ५१, ५३ |
| | ११०, १२१, | | -डहेज्ज | १८ | १० |
| | १३१, १४०, | | -डहेज्जा | १२ | २८ |
| | १५०, १५६, | | डहिय | १३ | २५ |
| | १७४, १८३, | | डोल | २६ | १४७ |
| | १९०, १९६, | | | | |
| | २१८ से २२०, | | ढ | | |
| | २२४ से २४४ | | ढंक (दि०) | १६ | ५८ |
| ठिय | २९ | सू० २३ | ढिकुण (दि०) | ३६ | १४६ |

१८२

परिशिष्ट-२

| पा | त | त | त | त |
|----------|----|------------|---------------|-------------|
| पां | ६ | १२ | ३ | ४ |
| गाम | १४ | १२ | ५ | ५, १६, ३१ |
| णीहु | ३६ | ६८ | ७ | २, ६, १०, |
| णु | ४ | १ | | १८ |
| णहविअ | २२ | ६ | ८ | ६, १८ |
| णहार्ण | २० | २६ | ९ | २४, २८, ३२, |
| हाय | १२ | ४५ से ४७ | | ३८, ४६ |
| णहुसा | ६ | ३ | १६ | सू० ११ |
| | | | १८ | ६, १६ |
| | | | १९ | ४३, ८४ |
| | | | २० | १०, ३१, ३४, |
| | | | | ३५, ५२ |
| त | १ | २ | | |
| तअ | ३६ | ५४ | २१ | १२ |
| तइअ | २६ | २, १२, १८, | २२ | १७, २२, ३८ |
| | | ३१, ४३ | २३ | १ |
| | २८ | ४ | तंजहा | २ सू० ३ |
| | २६ | सू० ७२ | | १६ सू० ३ |
| | ३३ | ४ | तंतवग | ३६ १४८ |
| | ३६ | १६२, १८८, | ततुजं | २ ३५ |
| | | २३६ | तस | ३६ २१, ४४ |
| तइया | ६ | ५ | तक्क * | |
| तउय | १६ | ६८ | तक्केइ | २६ सू० ३४ |
| | ३६ | ७३ | तक्कर | ६ २८ |
| तउसमिजमं | ३६ | १३८ | तच्च (तंध्यं) | २० १ |
| तओ | १ | १० | | २८ १ |

| | | |
|---------------|----|------------------------------------|
| तच्च (तृतीय) | २६ | सू० २ |
| तच्छिञ्ज | १६ | ६६ |
| तज्ज | | |
| तज्जए | २ | ३१ |
| तज्जणा | १६ | ३२ |
| तज्जिञ्ज | २ | ८, ३५ |
| तण | २ | ३४, ३५ |
| | ६ | ७ |
| | १२ | ३६ |
| | २३ | १७ |
| | ३६ | ६४ |
| तणफास | २ | सू० ३ |
| | १६ | ३१ |
| तणहार | ३६ | १३७ |
| तणु | १४ | ४७ |
| तणुय | १४ | ३४ |
| तणुयर् | ३६ | ५६ |
| तण्हा | १६ | १८, २०, ३१, ५६, ८२ |
| | २६ | सू० ४६ |
| | ३२ | ६, ८, ३०, ४३, ५६, ६६, ८२, ९५ |
| | | १०७ |
| तत्त (तस) | १६ | ६८ |
| तत्त (तत्त्व) | २३ | २५ |

| | | |
|---------------|----|--------------------|
| तत्तो | २१ | ११ |
| | ३० | ११, १५ |
| तत्थ (तत्र) | २ | २१ |
| तत्थ (त्रस्त) | १६ | ७१ |
| तद्दुभय | १ | २३ |
| | २६ | सू० २१ |
| तप्प | | |
| तप्पड | १४ | १६ |
| तप्पवोसि | ३२ | १०१ |
| तप्पच्चइय | २६ | सू० २, ६३ से ६७ |
| तप्पच्चय | ३२ | १०५ |
| तप्पद्धमया | २६ | सू० ७२, ७३ |
| तप्पुरक्काग | २४ | ८ |
| तम | ७ | १० |
| | १४ | १२ |
| | २३ | ७५ |
| तमंतम | २० | ४६ |
| तमतमा | ३६ | १५७ |
| तमा | ३६ | १५७ |
| तम्ब | १६ | ६८ |
| | ३६ | ७३ |
| तम्मुत्ति | २४ | ८ |
| तय (तक) | २२ | ३५, ४० |
| तय (तत्) | १४ | ३६ |
| तय | १२ | २२ |

१८४

परिशिष्ट-३

| | | | | | |
|-------------|----|-------------|-----------|----|----------------|
| तथा | १४ | ४० | तव | २० | ४१ |
| | १६ | ८० | | २२ | ४८ |
| तर * | | | | २३ | ५३ |
| -तर | २२ | ३१ | | २५ | १८, ३०, ४३, |
| -तरन्ति | ८ | ६ | | २६ | ३४, ४७, ५० |
| | २३ | ७३ | | | ५१ |
| -तरिस्सन्ति | १८ | ५२ | | २७ | १६ |
| -तरिहन्ति | ८ | २० | | २८ | २, ३, ११, |
| तरिडं | १६ | ४२ | | | २५, ३४ से |
| तरित्ता | २१ | २४ | | | ३६ |
| तरियव्व | १६ | ३६ | | २९ | सू० १, २८, ४३, |
| तरुण | २० | ८ | | | ६० |
| | ३४ | ७, १० | | ३० | १, ६ से ८, |
| तल | १६ | ४ | | | १०, ११, २६, |
| तव | १ | १६, ४७ | | | ३०, ३७, |
| | २ | ४३ | | | १०४ |
| | ३ | ८, २० | | ३६ | २५२ से २५५ |
| | ५ | २८ | तवण | ३० | ५ |
| | ६ | २०, ३३, ४६ | तवमग्गण्ड | ३० | |
| | १२ | ४, ३७, ४४ | तवस्सि | २ | २, २०, ३४, |
| | १३ | ३५ | | | ४४ |
| | १४ | ५, ८, १६, | | ३ | ११ |
| | | ३५, ५० | | १२ | १० |
| | १८ | १५, ३१, ३७, | | १५ | ५, ६ |
| | | ४१, ५० | | २३ | १० |
| | १६ | ५, ३७, ७७, | | ३२ | ४, १४, २१ |
| | | ६४, ६७ | | | |

| | | | | | |
|----------|----|----------|-------------|----|------------|
| तबोकम्म | १७ | १५ | तहेव | ६ | ३६ |
| | १६ | ८८ | ता | १३ | ३२ |
| तबोधण | १३ | १७ | ताड | ८ | ४, ६ |
| | १८ | ४ | | ११ | ३१ |
| | २० | ५३ | | २१ | २२ |
| तस | ५ | ८ | | २३ | १० |
| | ८ | १० | ताडिअ | १६ | ६७ |
| | १६ | ८६ | ताण | ४ | १, ५ |
| | २० | ३५ | | ६ | ३ |
| | २४ | १८ | | १४ | १२, ३६, ४० |
| | २५ | २२ | ताय | १४ | ६, २३ |
| | २६ | ३० | | १६ | ११, ७३ |
| | ३५ | ६ | ताय * | | |
| | ३६ | ६८, १०६, | -तायए | ६ | १० |
| | | १०७, १२६ | -तायन्ति | ५ | २१ |
| तह | १८ | १४ | | २५ | २८ |
| तहक्कार | २६ | ३, ६ | तायण | १४ | ८ |
| तहप्यगार | ४ | १२ | तार * | | |
| तहा | ५ | २ | -तारइस्सामि | १६ | २३ |
| तहाकारि | २६ | सू० ५२ | तारा | ३६ | २०८ |
| तहाभूय | ५ | ३० | तारिस | २७ | ८, १६ |
| तहाविह | ८ | ४ | | ३५ | ५, १४ |
| | २४ | १५ | तारुण | १६ | ३६ |
| तहि | १२ | ८ | ताल * | | |
| तहिय | २८ | १४, १५ | -तालयंति | १२ | १६, २५ |
| तहिय | १२ | ३६ | तालउड | १६ | १३ |

| | | | | | |
|-----------|----|-------------|--------------|----|--------|
| तालणा | १६ | ३२ | तिगडुय | ३४ | ११ |
| तालिस | ५ | ३१ | तिगिच्छ * | | |
| ताव | ७ | ३ | -तिगिच्छइ | १६ | ७८ |
| तावड्य | ३२ | १०६ | तिगिच्छग | २० | २२ |
| | ३६ | ५८ | तिगिच्छा | २० | २३ |
| तावस | २५ | २६, ३० | तिगिच्छिय | १५ | ८ |
| ताहे | १६ | ७८ | तिगुत्त | ६ | २० |
| ति | ५ | ३२ | | ३० | ३ |
| | ७ | १४ | | ३२ | १६ |
| | २० | ६० | तिगुत्ति | १६ | ८८ |
| | ३३ | ६ | | २० | ६० |
| | ३४ | १७, १६, २१, | तिण | ३६ | ६५ |
| | | ४१, ४२, ५६, | तिण्ण | ५ | १ |
| | | ५७ | | १० | ३४ |
| | ३६ | ५८, ११३, | | २६ | १, ५२ |
| | | १२२, १६१, | | ३१ | १ |
| | | १६२, १८४, | तितिकख = | | |
| | | १८५, २००, | -तितिकखएज्जा | २१ | १५ |
| | | २०१ | -तितिकखे | २ | ५, १४ |
| तिदुय (ग) | १२ | ८ | तितिकखा | २ | २६ |
| | २३ | ४, १५ | | २६ | ३४ |
| | ३६ | १३८ | तित्त | ३६ | १८ |
| तित्ख | ११ | १६, २० | तित्तअ | ३६ | २६ |
| | १६ | ६२ | तित्त्य | १२ | ४५, ४६ |
| | २० | २० | तित्त्यवम्म | २६ | सु० २० |
| | ३४ | ११ | तित्त्ययर | २६ | सु० ४४ |

उत्तरजभोगेण गब्द-सूची

१८७

| | | |
|-------------|----|------------|
| तिपया | २६ | १३ |
| तिभागे | ३६ | ६४ |
| तिमिर | ११ | २४ |
| तिय | १६ | ४ |
| | २० | २१ |
| | २६ | १६ |
| | ३१ | ४ |
| तिरिक्ख | ३३ | १२ |
| | ३६ | १५५, १७० |
| तिरिक्खजोगि | १६ | १० |
| | २० | ४६ |
| तिरिक्ख- | | |
| जोगिय | २६ | सू० ५ |
| तिरिक्खत्तण | ७ | १६ |
| तिरिच्छ | १५ | १४ |
| | २१ | १६ |
| तिरिय | ३४ | ४४, ४५, ४७ |
| | ३६ | ५० |
| तिरियलोय | ३६ | ५४ |
| तिरोड | ६ | ६० |
| तिल | १४ | १८ |
| तिलोय | १६ | ६७ |
| तिविह | १५ | १२ |
| | २५ | २२ |
| | ३३ | ८ |
| | ३४ | २० |

| | | |
|----------|----|-------------|
| तिविह | ३६ | ६८, ६९ |
| | | १०६, १०७, |
| | | १७१, १६६ |
| तिव्व | १६ | ७२ |
| | २३ | ४३ |
| | २६ | सू० २३ |
| | ३२ | २४, २५, ३७, |
| | | ३८, ५०, ५१, |
| | | ६३, ६४, ७६, |
| | | ७७, ८६, ९०, |
| | ३८ | २१ |
| तीय | २६ | सू० १३ |
| तीग | १० | ३८ |
| | १३ | ६, ३० |
| तीरडत्ता | २६ | सू० १ |
| तीस | ३६ | २४१ |
| तीसड | ३३ | १६ |
| | ३६ | २४२ |
| तीसडविह | ३६ | १६७ |
| तु | २ | ७ |
| तुंग | १६ | ५२ |
| तुंड | ३४ | ७ |
| तुंदिल्ल | ७ | ७ |
| तुंवग | ३४ | १० |
| तुच्छ | ४ | १३ |
| | १३ | २५ |

| | | | | | |
|----------------|----|---------------------------|-----------|----|--------------------|
| तुङ्ग | १८ | १६ | तेउक्काय | १० | ७ |
| | २० | ५४ | तेउलेसा | ३४ | ७, २८, ३७, |
| | २५ | ६, ३५ | | | ५१ |
| तुङ्गि | ३२ | २६, ४२, ५५, ६८, ८१, ९४ | तेऊ | ३४ | ३, १३, ५२ से ५४ |
| तुमतुम | २६ | सू० ४० | तेगिच्छा | २ | ३३ |
| तुयट्टण | २४ | २४ | | २० | २३ |
| तुरिय (तूर्य) | २२ | १२ | तेण | १४ | ३ |
| तुरिय (त्वरित) | २२ | २४, २५ | | ७ | ५ |
| तुला | १६ | ४१ | | ३४ | २६ |
| तुलिया | ५ | ३० | तेत्तीस | ३१ | २० |
| | ७ | १६ | | ३३ | २२ |
| तुलियाण | ७ | ३० | | ३४ | ३४, ३६, ४३, ५५ |
| तुवर | ३४ | १२ | | ३६ | १६६, २४३, २४४ |
| तुसिणीय | १ | २० | तेयाल | ३४ | २० |
| | २ | २५ | तेरिच्छ | २५ | २५ |
| तूर * | | | | ३१ | ५ |
| -तूरन्ति | १३ | ३१ | तेरिच्छिअ | २६ | सू० ३ |
| तेअ | ११ | २४ | तेल्ल | १४ | १८ |
| | १२ | २३ | | २८ | २२ |
| | १८ | १० | | | |
| तेइंदिय | ३६ | १२६, १३६, १४१ से १४३ | तेवीस | ३१ | १६ |
| | | ११ | | ३६ | २३४, २३५ |
| तेइंदियकाय | १० | ११ | तो | ६ | ६० |
| तेउ | २६ | ३० | | २३ | ६१ |
| | ३६ | १०७, १०८, ११३ से ११५ | | २६ | २४ |

| | | |
|------------|----|---------------------|
| तोत्त | १६ | ५६ |
| तोत्तअ | २७ | ३ |
| तोत्तगवेसअ | १ | ४० |
| तोलेट | १६ | ४१ |
| तोसिय | २३ | ८६ |
| थ | | |
| थभ | ११ | ३ |
| थणिय | १६ | सू० ७ |
| | १६ | ५ |
| | ३६ | २,६ |
| थद्ध | ११ | २,६ |
| | १७ | ५,११ |
| | २७ | १० |
| थल | ८ | ६ |
| | १२ | १२ |
| | १३ | ३० |
| थलय | ३६ | १७१,१७६, १८४,१८६ |
| थलि | ३० | १७ |
| थव | २६ | सू० १,१५ |
| थामव | २ | २,२२ |
| थाव * | | |
| -थावए | २ | ३२ |
| थावर | ५ | ८ |
| | ८ | १० |
| | १६ | ८६ |
| | २० | ३५ |

| | | |
|-----------|----|-----------------|
| थावर | २५ | २२ |
| | ३५ | ६ |
| | ३६ | ६८,६९, १०६ |
| थिर | १ | ३० |
| | २६ | २४ |
| थिरीकरण | २८ | ३१ |
| थी | १६ | १,३ से ६, ११ |
| थीकहा | १६ | २,११ |
| थीणगिट्टि | ३३ | ५ |
| थीहु | ३६ | ६८ |
| थुड | २६ | ४२ |
| | २६ | सू० १,१५ |
| थुणित्ताण | २० | ५८ |
| थूलवय | १ | १३ |
| थेर | १६ | सू० १ से ३ |
| | २७ | १ |
| थोव | १० | २ |
| | ३२ | १०० |
| दइय | १६ | २ |
| दंड | ५ | ८ |
| | ८ | १० |
| | १२ | १८,१९ |
| | १५ | ७ |
| | १६ | ६१ |

| | | | | | |
|------------|----|------------|-----------------|----|------------------------------|
| दड | २० | ६० | दसण | २८ | १ से ३, १०, ११, २५, |
| | ३१ | ४ | | | २६, ३५ |
| दन (दान्त) | १ | १५, १६ | | २६ | सू० १, २, १०, १५, ५८, ६१, |
| | २ | २७ | | | ७२ |
| | ११ | ४ | | ३२ | १०८ |
| | १२ | ४१ | | ३३ | ६, ८, ९ |
| | १६ | १५ | | ३६ | ६६, ६७ |
| | २० | ३२, ३४, ५३ | दसणावरण | ३३ | २, ६ |
| | ३४ | २७, २९, ३१ | दसणावरणिज्ज | २६ | सू० ७२ |
| | ३५ | १७ | दसि | ६ | १७ |
| दन (दान्त) | १२ | २६ | दसिअ | २६ | सू० ७४ |
| | १६ | २७ | दक्ख | १ | १३ |
| दंस | २ | सू० ३ | दच्चा | ६ | ३८ |
| | २ | १० | दट्ठु | १४ | ७ |
| | १५ | ४ | दट्ठु (दण्डुवा) | १ | १२ |
| | १६ | ३१ | | ४ | ५ |
| | २१ | १८ | | १३ | ३० |
| दंसण | २ | सू० ३ | | २२ | ३५, ३६ |
| | ६ | १७ | दट्ठु (दण्डुम्) | ३२ | १४ |
| | ८ | ३ | दट्ठूण | १४ | ४ |
| | १६ | ६४ | | २२ | ३६ |
| | २२ | २६ | दट्ठूणं | १३ | २८ |
| | २३ | ३३ | दड्डु | १६ | ५०, ५७ |
| | २४ | ५ | | | |
| | २६ | ३६, ४७ | | | |

| | | | | | |
|---------|----|--------|---------|----|-------------|
| दढ | ११ | १७ | दल # | | |
| | १७ | २ | -दलामि | २२ | ८ |
| | १८ | ५१ | -दलाह | १२ | १२ |
| | २७ | १६ | -दलेज्ज | ८ | १६ |
| | २६ | सू० ३२ | दलित्तु | १४ | ३६ |
| दढवम्म | ३४ | २८ | दव | १७ | ८ |
| दढव्वअ | २२ | ४७ | दवग्गि | १४ | ४२ |
| दत्त | १ | ३२ | | १६ | ५० |
| | ७ | ५ | | ३२ | ११ |
| दप्प | १६ | ६ | दव्व | १८ | १६ |
| दम | १८ | ४३ | | २२ | ४५ |
| | १६ | ४२, ६३ | | २८ | ५, ६, ८, ९, |
| दमिय | ३२ | १२ | | | २४ |
| दमीसर | १६ | २ | | ३० | १५, २४ |
| | २२ | ४, २५ | दव्वओ | २४ | ६, ७ |
| दमेयव्व | १ | १५ | | ३० | १४ |
| दम्मत्त | १ | १६ | | ३६ | ३ |
| दया | ५ | ३० | दव्वजाय | २६ | ६ |
| | १८ | ३५ | दस | १६ | सू० १ से ३ |
| | २० | ४८ | | २३ | ३६ |
| | २१ | १३ | | ३४ | ३५, ३८, ४१, |
| | २६ | ३४ | | | ४२, ४८, ५३, |
| | ३५ | १० | | | ५४ |
| दरिसण | १६ | ११ | | ३६ | ५१, ५२, |
| | १६ | ७ | | | १०२, १६०, |
| | | | | | १६३, १६४, |

| | | | | | |
|-----------|----|-----------------------|-------------|----|--------|
| दस | ३६ | २१६, २२०, २२६, २२७ | -देड | १६ | ७६ |
| दसंग | ३ | १६ | | २१ | ३ |
| | २६ | ४ | | २६ | २६ |
| दसण्ण | १३ | ६ | -देज्जा | ७ | १ |
| | १८ | ४४ | दाढा | ११ | २० |
| दसण्णभद्द | १८ | ४४ | दाण | १२ | ३६ |
| दसम | १६ | सू० १२ | | ३३ | १५ |
| | २६ | ४ | दाणव | १६ | १६ |
| दसविह | ३० | ३१, ३३ | | २३ | २० |
| | ३१ | १० | दाणि | १३ | २० |
| दसहा | २३ | ३६ | दायण | ३० | ३२ |
| | ३६ | ४, ६, १८, २०५ | दायार | १३ | २५ |
| | | १७ | दार (दार) | १४ | ३७ |
| दसा | ३१ | १७ | | १८ | १४, १६ |
| दसार | २२ | ११, २७ | | १६ | १६, ८७ |
| दसुय | १० | १६ | दार (द्वार) | १६ | ६३ |
| दहि | १७ | १५ | | २० | ४५ |
| | ३० | २५ | | २६ | सू० १४ |
| दा * | | | दारग (अ) | १४ | ५३ |
| -दए | ६ | ४० | | २१ | ५ |
| -दाहामि | २५ | ६ | दारुण | २ | २५ |
| -दाहामु | १२ | ११, १६ | | ६ | ७ |
| -दाहिई | २७ | १२ | | १६ | ३३ |
| -दाहित्थ | १२ | १७ | | २० | २१ |
| -दिज्जाहि | २० | २४ | दास | १ | ३६ |
| | | | | ३ | १७ |

| | | |
|---------------|----|--------|
| दास | ६ | ५ |
| | ८ | १८ |
| | १३ | ६ |
| दाह | २० | १६ |
| दाहिणभाव | २६ | सू० ११ |
| दिर्गिच्छा | २ | सू० ३ |
| | २ | २ |
| दिच्छ * | | |
| -दिच्छसि | २२ | ४४ |
| दिज्जमाण | १२ | २२ |
| दिट्ठ | ५ | ५ |
| | १२ | ४७ |
| | १५ | १० |
| | १६ | ६ |
| | २२ | ३४ |
| | २८ | १८, २३ |
| दिट्ठि | ८ | ७ |
| | १८ | ३३ |
| | १६ | ६ |
| दिट्ठिवाय | २८ | २३ |
| दिट्ठिसंपन्न | १८ | ३३ |
| दिण | २६ | ११ |
| दित्त (दीप्त) | १२ | ६ |
| | १६ | ३६ |
| दित्त (दत्त) | ३२ | १० |
| दित्तिकर | ३२ | १० |

६८

| | | |
|---------|----|------------|
| दिन्न | ६ | ७ |
| | १२ | २१ |
| दिप्पत | ३ | १४ |
| दिय | १४ | १२, ४४ |
| | २५ | ७, १३, ३३, |
| | | ३८ |
| दिया | २६ | सू० ३१ |
| दिव | ५ | २२ |
| दिवस | २४ | ५ |
| | २६ | ११ |
| | ३० | २० |
| दिवायर | ११ | २४ |
| दिव्व | १२ | ३६ |
| | १४ | ६ |
| | १५ | १४ |
| | १८ | २५, २८ |
| | २१ | १६ |
| | २२ | ६, १२ |
| | २५ | २५ |
| | २६ | सू० ३ |
| | ३१ | ५ |
| दिव्विय | ७ | १२ |
| दिस | ३६ | २०६ |
| दिसा | ३ | १३ |
| | ६ | १२ |
| | ७ | १० |

१६४

परिशिष्ट-१

| | | | | | |
|-------------|----|------------|----------|----|-------------|
| दिसा | १६ | ८२ | दीहकालिय | १६ | सू० ३ से १२ |
| | २७ | १४ | दीहाजय | ५ | २७ |
| | ३३ | १८ | दु | ५ | २ |
| दिसाविचारि | ३६ | २०८ | | ८ | २० |
| द्विसी | २७ | १४ | | २२ | २ |
| द्विस्स | ६ | ६, ७ | | २६ | १४ |
| | १४ | ४६ | | ३३ | २० |
| | २२ | १४ | | ३४ | ५२, ५३ |
| | २३ | १६ | | ३६ | २२४, २२५ |
| दीण | ३२ | १०३ | दुअ | १८ | ६ |
| दीव (दीप) | ४ | ५ | | २२ | १४ |
| दीव (द्वीप) | २३ | ६५, ६७, ६८ | दुंदुहि | १२ | ३६ |
| | ३६ | २०६ | दुक्कळ | १ | २८ |
| दीव * | | | दुक्कर | २ | २८ |
| -दीवए | ३५ | १२ | | १६ | १६ |
| दीस * | | | | १६ | २५ से २७, |
| -द्विस्सई | १० | ३१ | | | ३७, ३६, ४१, |
| -दीसइ | १० | १७ | | | ४२, ५२ |
| | १२ | ३७ | | ३५ | ५ |
| | १८ | २० | दुक्ख | २ | ३२ |
| | ३५ | ८ | | ५ | २५ |
| -दीसन्ति | १६ | ७३ | | ६ | १, ८, ११ |
| | २३ | ४० | | ८ | १, ८ |
| दीह | ६ | १२ | | १३ | ३, १४, २३ |
| | १४ | ७ | | १४ | १३, ३२, ३३, |
| | २६ | सू० २३ | | | ५१, ५२ |
| | ३२ | ११० | | | |

| | | | | | |
|-------|----|--|-------------|----|--|
| दुक्ख | १६ | १०, १२, १५, ३२, ३३, ४०, ४५, ६१, ७३, ७१, ८५, ६०, ६८ | दुक्ख | ३२ | ८६, ६०, ६१, ६५, ६७ से १००, १०५, १११ |
| | २० | २३ से २७, ३० | दुक्खम | २० | ३१ |
| | २३ | ८० | दुक्खनेज्जा | १६ | ३१ |
| | २६ | १, १०, २१, ३८, ४१, ४३, ४६ | दुक्खिय | ३ | ६ |
| | २८ | ३६ | | १८ | १५ |
| | २९ | सू० २, ४, २६, ३७, ४२, ४५, ५६, ६२, ७४ | दुग्धुर | ३६ | १८० |
| | ३२ | १, ७, ८, १६, २५, २६, ३०, ३२ से ३४, ३८, ३९, ४३, ४५ से ४७, ५१, ५२, ५६, ५८ से ६०, ६४, ६५, ६६, ७१ से ७३, ७७, ७८, ८२, ८४, ८५, | दुगुंछणिज्ज | १३ | १६ |
| | | | दुगुंछणा | २० | ४० |
| | | | दुगुंछमाण | ४ | १३ |
| | | | दुगुंच्छा | ३२ | १०२ |
| | | | दुग्गइ | ३४ | ५६ |
| | | | | ३६ | २५६ |
| | | | दुच्च | २६ | सू० ३४ |
| | | | दुच्चय | १४ | ४६ |
| | | | दुच्चर | १६ | २४, ३८ |
| | | | दुज्जय | ६ | ३४, ३६ |
| | | | | १३ | २७ |
| | | | | १६ | १३, १४ |
| | | | दुट्ठ | २३ | ५५, ५८ |
| | | | | २७ | १५ |
| | | | दुट्ठवाइ | ३४ | २६ |
| | | | दुत्तर | १६ | ३६ |
| | | | | ३२ | १७ |

१६६

परिशिष्ट-२

| | | | | | |
|--------------|----|---------------------------|----------------|----|---------------------------|
| दुहते | २७ | ७ | दुय (द्रुत) | २२ | १४ |
| | ३२ | २५, ३८, ५१, ६४, ७७, ९० | दुय (द्विक) | ३१ | ६ |
| दुहम | १ | १५ | दुरंत | १० | ६ |
| दुह | १७ | १५ | | ३२ | ३१, ४४, ५७, ७०, ८३, ९६ |
| दुपंच | २६ | ७ | दुरणुपालअ | २३ | २७ |
| दुपय | १३ | २४ | दुरप्प | २० | ४८ |
| दुपया | २६ | १३ | दुराख्ह | २३ | ८१, ८४ |
| दुप्पट्टिय | २० | ३७ | दुरासय | | |
| दुप्पघंसय | ६ | २० | (दुराशय) | १ | १३ |
| दुप्परिचत्रय | ८ | ६ | दुरासय | | |
| दुप्पहसय | ११ | २०, ३१ | (दुरासद) | ११ | ३१ |
| दुप्पूरअ | ८ | १६ | दुस्तर | ५ | १ |
| दुब्बल | २७ | ८ | दुलह | १० | ४ |
| दुब्बिम | ३६ | २८ | दुल्लह | ३ | १, ८ से |
| दुब्बिमगंध | ३६ | १७ | | | १०, २० |
| दुब्बूय | १७ | १७ | | ७ | १८ |
| दुम | १० | १ | | १० | १६ से १६ |
| | ११ | २७ | | ३६ | २५७, २५६ |
| | १३ | ३१ | दुल्लहबोहियत्त | २६ | सू० ५८ |
| | १६ | ६६ | दुल्लहय | १० | २० |
| | २० | ३ | दुव | ८ | २० |
| | ३२ | १० | | २२ | २ |
| दुमपत्तय | १० | | | ३६ | ५३, ५४, |
| दुम्मुह | १८ | ४५ | | | २५३ |
| दुम्मेह | ७ | १३ | दुवालसंग | २४ | ३ |
| | २५ | ४१ | | | |

| | | | | | |
|-------------|----|-------------|---------|----|-------------|
| दुविह | ७ | १८ | दुस्सील | ५ | २१, २२ |
| | २१ | २४ | | २५ | २८ |
| | २३ | २४, ३० | दुस्सीस | २७ | ८ |
| | २४ | १३ | दुह | २ | ३२ |
| | २८ | ३४ | | १८ | १७ |
| | ३० | ७, ६, १२, | | १६ | ७१ |
| | | ३७ | | २० | २५, ३७ |
| | ३३ | ७, ८, १०, | | २८ | १० |
| | | १३, १४ | | ३२ | ३३, ४६, ५६, |
| | ३६ | ४, १७, ४८, | | | ७२, ८५, ६८, |
| | | ६८, ७०, ७१, | | | ११० |
| | | ८४, ६२, ६३, | दुहमी | ५ | १०, २३ |
| | | १०८, ११७, | | ७ | १७ |
| | | १२७, १३६, | | ६ | ५४ |
| | | १४५, १७०, | | ११ | १५ |
| | | १७१, १७६, | | १३ | १८ |
| | | १८१, १६५, | | १४ | २६ |
| | | २०५, २०६, | | १७ | २१ |
| | | २१२, २४८ | | २० | ४६ |
| दुव्वह | १६ | ३५ | | २४ | १४ |
| दुव्विसह | २१ | १७ | दुहा | ३६ | ७०, ८४, ६२, |
| दुव्विसोज्ज | २३ | २७ | | | १०८, ११७ |
| दुसमयद्विइय | २६ | सू० ७२ | दुहाकअ | २३ | २६ |
| दुसय | २४ | ११ | दुहावह | १३ | १६, १७ |
| दुस्ताहड | ७ | ८ | | १६ | ११ |
| दुस्सील | १ | ४, ५ | दुहि | ७ | ३ |

१६८

परिशिष्ट-२

| | | | | | |
|-------|----|---|------------|----|---|
| दुहि | १६ | १८, १९ | देव | १४ | १ |
| | २० | ४६ | | १६ | १६ |
| | ३२ | २९, ३१, ४२, ४४, ५५, ५७, ६८, ७०, ८१, ८३, ९४, ९६ | | १९ | ३ |
| | | | | २१ | ७ |
| | | | | २२ | २१, २२ |
| | | | | २३ | २० |
| दुहिअ | ९ | १० | | २९ | सू० ५ |
| | १९ | ७१ | | ३३ | १२ |
| | ३२ | ३१, ४४, ५७, ७०, ८३, ९६ | | ३४ | ४४, ४७ |
| | | | | ३६ | १५५, २०४, २०९, २१२, २४५, २४६ |
| दुहिल | ११ | ९ | | | |
| दुर | २४ | १८ | | | |
| | ३२ | ३ | देवई | २२ | २ |
| दुस | ९ | ४६ | देवग | ३२ | १९ |
| | १२ | ६ | देवत्त | ७ | १७ |
| | १६ | सू० ७ | देवय | ७ | २१ |
| देय | २५ | ८ | देवलोग (य) | ३ | ३ |
| देव | १ | ४८ | | ९ | १, ३ |
| | ३ | १५ | | १३ | ७ |
| | ५ | २५ | देविंद | ९ | ११, १३, १७, १९, २३, २७, २९, ३१, ३३, ३७, ३९, ४१, ४३, ४५, ४७, ५० |
| | ७ | १२, १६, २३, २६, २९ | | | २१ |
| | १० | १४, २३ | | | |
| | ११ | २७ | | | |
| | १२ | २१ | | | |
| | १३ | ७, ३२ | | १२ | २१ |

| | | | | | |
|---------------|----|-------------|-------------|----|-----------|
| देवी | १४ | ३, ३७, ५३ | देह | ७ | २, १०, २६ |
| | ३२ | १६ | | १२ | २५, ४२ |
| देस | २१ | ३ | | १६ | १६ |
| | ३६ | २, ५, ६, | | २१ | १८ |
| | | १०, ११, ६७, | | २३ | ५१ |
| | | ७८, ८६, | | २४ | १५ |
| | | १००, १११, | देह * | | |
| | | १२०, १३०, | -देहइ | १६ | ६ |
| | | १३६, १४६, | दो | ५ | २५ |
| | | १५८, १७३, | | ८ | १७ |
| | | १८२, १८६, | | १३ | ३, ५ |
| | | १६८, २१७ | | १४ | ३, ५ |
| देसिअ (य) | | | | २२ | २, ४८ |
| (दिगित) | ५ | ४ | | ३४ | ३७ |
| | १६ | १७ | | ३६ | २२२ |
| | २१ | १२ | दोगुंछि | २ | ४ |
| | २३ | १२ | | ६ | ७ |
| | २८ | ५ | दोगुंदग (अ) | १६ | ३ |
| | ३५ | १ | | २१ | ७ |
| देसिय (दिगिक) | १० | ३१ | दोगाइ | ७ | १८ |
| देसिय | | | | ८ | १ |
| (दिवसिक) | २६ | ३६, ४० | | ९ | ५३ |
| देह | १ | ४८ | | २६ | सू० ५ |
| | २ | २ | दोच्च | ३६ | १६१ |
| | ५ | ३१ | दोणमुह | ३० | १६ |
| | ६ | १३ | दोस (दोप) | १ | २४ |

| दोस (दोष) | ४ | १३ | घ | ४ | २ |
|-----------|----|-------------|-------------|----|-----------|
| | ८ | २,५ | घण | ७ | ८ |
| | १० | ३७ | | १० | २६,३० |
| | १२ | ४६ | | १२ | ६,२८ |
| | १४ | ४१ से ४३ | | १३ | १३,२४ |
| | १७ | २१ | | १४ | ११,१४,१६, |
| | २१ | १६ | | | १७,३८,३९ |
| | २३ | ४३ | | १६ | २६,६८ |
| | २५ | २१ | | २० | १८ |
| | २७ | २१ | घणिय (दि०) | १३ | २१ |
| | २८ | २० | | २६ | सू० २३ |
| | २९ | सू० १,६३ से | घणु | ६ | २१ |
| | | ६७,७२ | घन्न | ११ | २६ |
| | ३० | १,४ | | १३ | २४ |
| | ३१ | ३ | | १६ | २६ |
| | ३२ | २,७,६, | | ३५ | १० |
| | | २२,२३,२५, | घमणि | २ | ३ |
| | | २६,३०,३६, | घम्म (घर्म) | १ | ४२ |
| | | ३८,४२,४३, | | २ | १३,३७,४२ |
| | | ४६,५१,५५, | | ३ | ८,११,१२ |
| | | ५६,६१,६२, | | ५ | १५,३० |
| | | ६४,६८,६९, | | ७ | १५,२८,२९ |
| | | ७५,७७,८१, | | ८ | १६,२० |
| | | ८२,८८,९०, | | ९ | २,४४ |
| | | ९४,९५ | | १० | १८,२० |

| | | | | | |
|-------------|----|---|----------------|----|-------------|
| धम्म (धर्म) | ११ | १५ | धम्म (धर्म) | ३२ | १७ |
| | १२ | ३३, ४६ | | ३६ | ७, ८ |
| | १३ | २, १५, २१, २६, ३२ | धम्म (धर्म्या) | १६ | ८ |
| | १४ | १७, २०, २५, २८, ४०, ५०, ५१ | | ३० | ३५ |
| | १५ | १ | | ३४ | ३१ |
| | १६ | सू० ३ से १२, १५, १७ | धम्मचिन्ता | २६ | ३३ |
| | १७ | १ | धम्मजाण | २७ | ८ |
| | १८ | १८, २५, ३३, ३४ | धम्मज्झाण | १८ | ४ |
| | १९ | १९, २१, ४३, ७७, ९८ | धम्मतित्थयोर | २३ | १, ५ |
| | २० | १, ४४, ५८ | धम्मत्थिकाय | ३६ | ५ |
| | २१ | १२, २३ | धम्मरुद्ध | २८ | १६, २७ |
| | २२ | ४६ | धम्मलेसा | ३४ | ५७ |
| | २३ | ११ से १३, २४ से २६, २६, ३१, ५८, ६८, ८७ | धम्मसद्धा | २९ | सू० १, २, ४ |
| | २५ | ७, ११, १४, १६, ३६, ४२ | धम्मायरिय | ३६ | २६५ |
| | २८ | ७ से ९ | धम्माराण | २ | १५ |
| | २९ | सू० ४९, ५१ | धम्मिट्ठ | ७ | २९ |
| | | | धर | ६ | १७ |
| | | | | ११ | २१ |
| | | | | १२ | १, १५ |
| | | | | १९ | ५ |
| | | | | २२ | ५ |
| | | | धर * | | |
| | | | -धरिज्जति | ३० | २७ |

२०२

परिशिष्ट-२

| | | | | | |
|-------------------|----|------------|---------|----|------------|
| घरिस * -घरिसेइ | ३२ | १२ | वीर | १४ | ३५ |
| घाउ | ३४ | ७ | | १५ | ३ |
| घार * | | | | १८ | ३३, ५१, ५३ |
| -घारण | २ | ३७ | धीरत्त | ७ | २६ |
| | १६ | ६ | धुत्त | ५ | १६ |
| -घारेज्जा | १ | १४ | धुय | ३ | २० |
| घारेह | १६ | ६८ | धुरा | १४ | १७ |
| घार | ३५ | १२ | | १६ | ६८ |
| घारइत्ता | २० | ४३ | धुव | ७ | १६ |
| घारा | १६ | ३७, ५६, ६२ | | १६ | १७ |
| | २३ | ५३ | | २० | ५२ |
| घारि | १४ | १७ | धुवगोयर | २३ | ८१ |
| घारेउं | १६ | ३३ | | १६ | ८३ |
| घारेयन्व | १६ | २४, २८ | धूमणेत | १५ | ८ |
| घावत | १६ | ५६ | धूमाभा | ३६ | १५७ |
| घिइ | ६ | २१ | धूयरा | २१ | ३ |
| | २७ | ८ | धूया | १२ | २० |
| | ३२ | ३ | धूव | ३५ | ४ |
| घिइम | १६ | १५ | धेणु | २० | ३६ |
| | १८ | ३६ | घोरेय | १४ | ३५ |
| घिइमंत | २२ | ३० | | | |
| | २६ | ३३ | न | | |
| घिरत्थु | २२ | २६, ४२ | न | १ | ७ |
| घीर | १ | २१ | नई(दी) | ११ | २८ |
| | ७ | २६ | | १६ | ५६ |

उत्तररज्जमयण शब्द-सूची

| | | | | | |
|-------------|----|------------|----------|----|-------------|
| नई(दी) | २० | ३६ | नखा | २ | १३, २६, ३१, |
| | ३२ | १८ | | | ३५, ४१ |
| नडय | ७ | १३ | | ८ | १८ |
| नंदण | १६ | ३ | | ३२ | १६ |
| | २० | ३, ३६ | नचव्राण | ८ | ११ |
| नदावत्त | ३६ | १४७ | | १८ | १७ |
| नदि | ११ | १७ | नट्ट | १३ | १४, १६ |
| नक्खत्त | ११ | २५ | नत्थि | १४ | १५ |
| | २५ | ११, १४, १६ | नपुस | ३६ | ५१ |
| | २६ | १६, २० | नपुंसग | ३६ | ४६ |
| | ३६ | २०८ | नपुसगवेय | २६ | सू० ६ |
| नग | ११ | २६ | नपुसवेय | ३० | १०२ |
| | १३ | ६ | नम * | | |
| नगर | २ | १८ | -नमड | १ | ४५ |
| | ६ | २०, २८ | -नममनि | ५६ | १६ |
| | १० | ३६ | -नमेड | ६ | ६१ |
| | १६ | ४ | नमसन्त | २५ | १७ |
| | २१ | २ | नमि | ६ | २, ३, ५, ८, |
| | ३० | १६ | | | ११, १३, १७, |
| नग (य) रमडल | २३ | ४, ८ | | | १८, २३, २५, |
| नगरी | २३ | ३ | | | २७, २६, ३१, |
| नगिणिण | ५ | २१ | | | ३३, ३७, ३६, |
| नग्ग | १८ | ४५ | | | ४१, ४३, ४५, |
| नग्गल्ल | २० | ४६ | | | ४७, ५०, ६१, |
| नच्चा | १ | ४१, ४५ | | | ६० |
| | ३ | सू० १ सं ३ | | १८ | ४५ |

२०४-

परिशिष्ट-२

| | | | | | |
|-----------|----|-------------|-----------|----|-------------|
| नमिमवज्जा | ६ | | नर | ३४ | २१, २४, ४५, |
| नमो | २० | १ | | | ४७ |
| | २३ | ८५ | नरग(य) | ३ | ३ |
| नय | २८ | २४ | | ४ | २ |
| | ३६ | २४६ | | ५ | १२, २२ |
| नयण | २० | २८ | | ६ | ७ |
| | ३४ | ४ | | ७ | ४, ७, १६, |
| नयर | १३ | ३ | | | २८ |
| | १८ | १ | | १३ | ३४ |
| | १६ | १ | | १८ | २५ |
| | २२ | १, ३ | | १६ | १०, ४८, ७२, |
| नयरी | २० | १८ | | | ७३ |
| नर | १ | ६ | | २० | ४६ |
| | ४ | २ | नरदेव | १४ | ४० |
| | ७ | ११, २० | नरवह | १३ | २८ |
| | ६ | ४८ | नराहिव(अ) | ६ | ३२ |
| | १३ | १०, १२, १८, | | १३ | १५ |
| | | २२, २६ | | १८ | ५, १८, ३५, |
| | १५ | ६ | | | ३६, ४१ |
| | १६ | १३ | | २० | १६, ३३, ५६ |
| | १८ | १०, १६, २५ | नरिद | १२ | २१ |
| | २० | ३८ | | १३ | १८ |
| | २१ | १७ | | १४ | ३० |
| | २५ | ४१ | | १८ | ४६ |
| | ३२ | १०, ३२, ४५, | | २० | १३ |
| | | ५८, ७१, ८४, | | १८ | ४० |
| | | ६७ | नरीसर | १८ | |

उत्तरजभयण शब्द-सूची

| | | |
|-----------|----|--------|
| नलकूबर | २२ | ४१ |
| नव (नवन्) | २६ | २५ |
| | २८ | १४ |
| | २९ | सू० ३८ |
| | ३३ | ६ |
| | ३४ | ४६ |
| नव (नव) | २९ | सू० ३८ |
| नवणीय | ३४ | १९ |
| नवम | २६ | ४ |
| | ३६ | २४२ |
| नवरं | १९ | ७५ |
| नवविह | २९ | सू० ७२ |
| | ३३ | ११ |
| | ३४ | २० |
| नवहा | ३६ | २१२ |
| नह (नख) | १२ | २६ |
| नह (नमस्) | १४ | ३६ |
| | २६ | १९ |
| | २८ | ९ |
| ना * | | |
| -नाहिई | २० | ४८ |
| नाह | १ | ३९ |
| | १३ | २३ |
| | १९ | ८७ |
| | २० | ११ |
| नाजं | १२ | ४५ |

| | | |
|--------|----|----------------|
| नाग | २ | १० |
| | १३ | ३० |
| | १४ | ४८ |
| | २२ | ४६ |
| | ३२ | ८९ |
| | ३६ | २०६ |
| नागराय | २१ | १७ |
| नाण | ६ | १७ |
| | ८ | ३ |
| | १८ | ३२ |
| | १९ | ९४ |
| | २० | ५१ |
| | २१ | २३ |
| | २२ | २६ |
| | २३ | ३३ |
| | २४ | ५ |
| | २५ | ३० |
| | २६ | ३६, ४७ |
| | २८ | १ से ५, |
| | | १०, ११, २५, |
| | | ३० |
| | २९ | सू० १, १५, ५७, |
| | | ६०, ६१, ७२ |
| | ३२ | २ |
| | ३५ | २१ |
| | ३६ | ६६, ६७, |
| | | २६५ |

२०६

परिशिष्ट-२

| | | |
|-------------|----|--------------------------|
| नाणधर | २१ | २३ |
| नाणस्सावर- | | |
| गिज्ज | ३३ | २ |
| नाणा | ३ | २ |
| | ५ | १६ |
| | ११ | २६, २६, ३० |
| | १२ | ३४ |
| | १८ | ३० |
| | २० | ३ |
| नाणावरण | ३२ | १०८ |
| | ३३ | ४ |
| नाणावरणिज्ज | २६ | सू० १६, १६, ७२ |
| नाणाविह | ३ | २ |
| | २३ | ३२ |
| नाणि | २ | १३ |
| | ६ | १७ |
| | २८ | ५ |
| नाम | ८ | १, १० |
| | ११ | २७ |
| | १२ | १, २० |
| | १४ | १ |
| | १७ | २ |
| | १८ | १, २१, २२, ३६, ३६, ४३ |
| | २० | १८ |
| | २१ | १ |

| | | |
|-------------|----|----------------------------------|
| नाम | २२ | १, ३ से ५ |
| | २३ | १, ४ |
| | २५ | ४ |
| | २६ | २, ३ |
| | २८ | २०, २५ |
| | २९ | सू० ४२, ४४, ७३ |
| | ३३ | १३, १६, २१, २३ |
| | ३४ | ३ |
| | ३६ | ५७ |
| नामअ | २१ | ४ |
| नामओ | २५ | १ |
| नामकम्म | ३३ | ३ |
| नाय | २० | २६ |
| नायज्झयण | ३१ | १४ |
| नायपुत्त | ६ | १७ |
| नायय (नायक) | १३ | २५ |
| नायय (अ) | | |
| (ज्ञातक) | १८ | २४ |
| | ३६ | २६८ |
| नायव | ३ | १८ |
| नायव्व | २६ | १५ |
| | २८ | १८, १९, २१, २२, २४, २६, २७ |
| | ३० | ११ |

| | | |
|---------|----|----------------------------------|
| नायव्व | ३३ | ५, ६ |
| | ३४ | १० से १३, १५, ३४ से ३६, ४६ |
| नाराय | ६ | २२ |
| नारी | ८ | १६ |
| | १३ | १४ |
| | १५ | ६ |
| | १६ | ११ |
| | २२ | ४४ |
| नावा | २३ | ७० से ७३ |
| नावि | २३ | ७३ |
| नास | २ | २७ |
| नास * | | |
| -नासइ | १४ | १८ |
| -नाससि | २३ | ६० |
| -नासामि | २३ | ६१ |
| नाह | २० | ६ से १२, १६, ३५, ५५, ५६ |
| निअय | १६ | १७ |
| निउण | ६ | २० |
| | ३२ | ४, ५ |
| निउत्त | २६ | १० |
| निओड्ड | २६ | ६ |
| निओइय | १२ | २१ |

| | | |
|--------------|----|------------|
| निदणया | २६ | सू० १, ७ |
| निदा | १२ | ३० |
| | १६ | ६० |
| | २६ | ६ |
| निव | ३४ | १० |
| निकेय | ३२ | ४ |
| निककख | २६ | सू० ३५ |
| निककखिय | २८ | ३१ |
| निककस * | | |
| -निककसिज्जइ | १ | ४, ७ |
| निकखंत | १८ | १६, ४४, ४६ |
| | २५ | ४२ |
| निकखम | | |
| -निकखमई | २२ | २३ |
| -निकखमसु | २५ | ३८ |
| निकखमे | १ | ३१ |
| निकखमंत | ३२ | ५० |
| निकखमण | २२ | २१ |
| निकखमिअ | २२ | २२ |
| निकिखव † | | |
| -निकिखवेज्जा | २४ | १४ |
| निकिखवंत | २४ | १३ |
| निकिखवित्ताण | २६ | ३६ |
| निगम | २ | १८ |
| | ३० | १६ |

| | | | | | |
|-------------|----|--------------------|----------------|----|-----------------------------|
| निगिण्ह * | | | निच्छअ | २३ | ३३ |
| -निगिण्होड | २८ | ३५ | निच्छिन्न | ३६ | ६७ |
| -निगिण्होमि | २३ | ५६, ५८ | निज्जंत | २२ | १४ |
| निगगन्ध | १६ | सू० ३ से १२ | निज्जर * | | |
| | २१ | २ | -निज्जरिज्जड | ३० | ६ |
| | २६ | १, ३३ | -निज्जरेइ | २६ | सू० ६, ३२, ३७, ५८, ६३ से |
| निगगन्धी | २६ | ३३ | | | |
| निगगय | ७ | १४ | निज्जरण्या | २६ | सू० ३३ |
| | १२ | २६ | निज्जरा | २८ | १४ |
| | १६ | ८७ | | २६ | सू० १६, २४ |
| | २७ | १२ | निज्जरापेहि | २ | ३७ |
| निगगह | २६ | सू० १, ६३ से ६७ | निज्जा * | | |
| | | | -निज्जाइ | ८ | ६ |
| निगगाहि | २५ | २ | निज्जाअ | २० | २ |
| निग्न | १ | ४४ | | २२ | १३ |
| | २ | २८ | निज्जाण | २१ | ६ |
| | ११ | १४ | निज्जिअ | ६ | ५६ |
| | १३ | ३१ | | २३ | ३५ |
| | १४ | १६ | निज्जिण्ण | २६ | सू० ७२ |
| | १५ | ३ | निज्जूहण | ३६ | २५२ |
| | १७ | १० | निज्जूहिअण | ३५ | २० |
| | १६ | ३, २६, ७१ | निज्ज्जाडत्ता | १६ | सू० ६ |
| | २३ | ८८ | निज्ज्जा * | | |
| | ३१ | ३ से २० | -निज्ज्जाएज्जा | १६ | सू० ६ |
| निच्चल | २२ | ४७ | निज्ज्जायमाण | १६ | सू० ६ |
| निच्चसो | १६ | ४, ७, १०, १४ | | | |

उत्तरज्जभयण शब्द-सूची

| | | |
|-----------------|----|--------|
| निद्रुव * | | |
| -निद्रुवेइ | २६ | सू० ५० |
| निद्रिय | ८ | १७ |
| निण्हव * | | |
| -निण्हविज्ज | १ | ११ |
| निहमोक्ख | २६ | १८, ४३ |
| निहहे * | | |
| -निहहेज्जा | १२ | २३ |
| निहा | १७ | ३ |
| | ३३ | ५ |
| निहानिहा | ३३ | ५ |
| निहिस | १ | २ |
| निद्ध | ३४ | ४, ५ |
| | ३६ | २० |
| निद्धअ | ३६ | ४० |
| निद्धंत | २५ | २१ |
| निद्धघस (दे०) | ३४ | २२ |
| निद्धण * | | |
| -निद्धणे | ३ | ११ |
| निद्धूणित्ताण | १६ | ८७ |
| निनाअ | २२ | १२ |
| निन्न | १२ | १२ |
| निन्नेह | १४ | ४६ |
| निप्पडिक्कम्मया | १६ | ७५ |
| निप्परिगह | १४ | ४६ |
| निप्पिवास | १६ | ४४ |

| | | |
|----------------|----|-------------------|
| निबंध * | | |
| -निबन्धइ | २६ | सू० ५, ११, २४, ४४ |
| निब्भअ | २६ | सू० १८ |
| निब्भेरिय(दि०) | १२ | २६ |
| निभ | ३४ | ४, ६ से ८ |
| निमंतण | २ | ३८ |
| निमंतयंत | १४ | ११ |
| निमंतिय | २० | ५७ |
| निमज्जिउं | ३२ | १०५ |
| निमित्त | १७ | १८ |
| | २० | ४५ |
| | ३६ | २६६ |
| निमेस | १६ | ७४ |
| निम्मम | १६ | ८६ |
| | ३५ | २१ |
| निम्ममत्त | १६ | २६ |
| निम्मल | ३६ | ६०, ६१ |
| निम्मोयणी | १४ | ३४ |
| नियच्छ * | | |
| -नियच्छइ | १५ | ६ |
| नियंठघम्म | २० | ३८ |
| नियग | १ | ७ |
| | १२ | ८ |
| | २२ | १३ |

| | | | | | |
|-------------|----|------------|-------------|----|----------------|
| नियट्ट * | | | निरंगण | २१ | २४ |
| -नियट्टई | २ | ४३ | निरंतराय | ३२ | १०६ |
| नियडिल्ल | ३४ | २५ | निरक्किय | ६ | ५६ |
| नियण्ठ | १२ | १६ | निरट्ट | १ | ६, २५ |
| | १५ | ११ | | २० | ५० |
| | १७ | १ | निरट्टया | २ | ४२ |
| | २० | ५१ | निरट्टिय | २० | ४६ |
| नियत्त | | | निरत्थिय | १८ | २७ |
| -नियत्तेड | २६ | सू० ८, ३३ | निरय | ८ | ७ |
| -नियत्तेज्ज | २४ | २१, २३, २५ | निरवक्कंता | ३० | ६ |
| नियत्त | १४ | ४१ | निरवेक्ख | ६ | १५ |
| | १६ | ६१ | निरस्सायं | १६ | ३७ |
| नियत्तण | २४ | २६ | निरस्साविणी | २३ | ७१ |
| नियन्ति | ३१ | २ | निरहकार | १६ | ८६ |
| नियम | १६ | ५ | | ३५ | २१ |
| | २० | ४१ | निराणंद | २२ | २८ |
| | २२ | ४० | निरामिस | १४ | ४१, ४६, ४६ |
| नियम | १४ | १६ | निरारंभ | २ | १५ |
| नियाग | २० | ४७ | | २० | ३२, ३४ |
| नियागट्टि | १ | ७, २० | निरालक्षण | २६ | सू० ३४ |
| नियाण | १३ | १, ८, २८ | निरावरण | २६ | सू० ७२ |
| | १५ | १ | निरासव | २० | ५२ |
| | १८ | ५२ | | ३० | ६ |
| | २६ | सू० ६ | निरुभ | | |
| | ३६ | २५७, २५६ | -निरुम्मड | २६ | सू० ५, १४, ४१, |
| निरइयार | २६ | सू० १७ | | | ७३ |

| | | | | | |
|----------------|----|----------------|---------------|----|---------------|
| निष्ठाइ | १ | ३० | निव्वत्त * | | |
| निख्ख | २६ | सू० १२ | -निव्वत्तइ | ३२ | ३२, ४५, ५८, |
| निरुम्मिता | २६ | सू० ७३ | | | ७१, ८४, ९७ |
| निख्खहिय | २६ | सू० ३५ | -निव्वत्तेइ | २६ | सू० ४, ११, ३६ |
| निरोवलेव | २१ | २२ | निव्वत्तयंत | ३२ | १०६ |
| निरोह | ४ | ८ | निव्वण | ३ | १२ |
| | ७ | २६ | | ११ | ६ |
| | २६ | सू० २६, ५६, ७३ | | १६ | ६८ |
| निलय | ३२ | १३ | | २१ | २० |
| निव | १८ | ८ | | २३ | ८३ |
| | २० | ३८ | | २८ | ३० |
| निव्वज्ज * | | | निव्वावार | ६ | १५ |
| -निव्वज्जइ | २७ | ५ | निव्वाहण | २५ | १०, ३८ |
| निवड * | | | निव्विण | १४ | २, ३ |
| -निवडइ | १० | १ | | १६ | १०, ५० |
| निवाय | २ | ३५ | निव्वितिगिच्छ | २८ | ३१ |
| निवारण | २ | ७ | निव्वियार | २६ | सू० ५५ |
| निवारेड | ३५ | ५ | निव्विसय | १४ | ४६ |
| निवास | ३२ | १३ | निव्वुय | २६ | सू० १३ |
| निव्विज्ज * | | | निव्वेय | १८ | १८ |
| -निव्विज्जन्ति | ३ | ५ | | २६ | सू० १, ३ |
| निव्विज्ज | ११ | २ | निसत | १ | ८ |
| निव्वेस * | | | निसग्ग | २८ | १६, १७ |
| -निव्वेसइ | २७ | ५ | निसग्गरुइ | २८ | १८ |
| निव्वेसइत्ता | ३२ | १४ | निसण | २३ | १८ |
| निव्वेसण | १३ | १८, १९ | निसन्न | २० | ४ |

२१२

परिशिष्ट-२

| | | | | | |
|-------------|----|--|-------------|----|--------|
| निसम्म | १० | ३७ | निसेव्य | १० | १८, १६ |
| | १६ | सू० १ से ३ | निसेविय | २० | ३ |
| | १६ | ६७ | निसेवियञ्च | ३२ | १० |
| निसामित्ता | ६ | ७, ११, १३, १७, १६, २३, २५, २७, २६, ३१, ३३, ३७, ३६, ४१, ४३, ४५, ४७, ५० | निस्संक्रिय | २८ | ३१ |
| | | | निस्संग | १६ | ८६ |
| निसामिया | १७ | १० | निस्संगत्त | २६ | सू० ३१ |
| निसिर * | | | निस्संस | ३४ | २२ |
| -निसिरे | ३२ | २१ | निस्सल्ल | २६ | ४१, ४६ |
| निसीअ (य) * | | | | ३० | ३ |
| -निसीएज्ज | १ | २१, ३० | निस्सिय | ८ | १० |
| -निसीएज्जा | २ | २० | | ३५ | ११ |
| -निसीयई | १७ | १३ | निस्सेयस | ८ | ५ |
| | २२ | ३५ | निस्सेस | ८ | ३ |
| निसीयण | २४ | २४ | | २२ | १६ |
| निसीहिया | २ | सू० ३ | निहंतूण | २३ | ४१ |
| | २६ | २, ५ | निहय | १२ | ३२ |
| निसूरण | १८ | ४२ | निहिय | ११ | १५ |
| निसेज्जा | १७ | ७, १६ | निहिय (अ) | १६ | ४१ |
| | २३ | १७ | | २० | ३८ |
| निसेवण | ३२ | ३ | | २२ | ४३ |
| निसेव * | | | नी * | | |
| -निसेवए | ८ | १२ | -निन्ति | १४ | १२ |
| | १६ | १ | -नेइ | १३ | २२ |
| | | | नीइकोविअ | २१ | ६ |

नीण *

| | | |
|------------|----|----------------------|
| -नीणेइ | १६ | २२ |
| नीय | १ | ३४ |
| | ३३ | १४ |
| | ३६ | १४८ |
| नीयागोय | २६ | सू० ११ |
| नीयावत्ती | ११ | १० |
| नीयावित्ति | ३४ | २७ |
| नीरञ | ६ | ५८ |
| | १८ | ५३ |
| नीरस | १५ | १३ |
| नील | ३४ | ४२ |
| | ३६ | १६, २३, ७२ |
| नील्लेसा | ३४ | ५, २४, ३५ |
| नील्लवंत | ११ | २८ |
| नीला | ३४ | ३, ११, ४६, ५०, ५६ |
| नीलासोग | ३४ | ५ |
| नीसक | १६ | ४१ |
| नीहर * | | |
| -नीहरन्ति | १८ | १५ |
| नीहारि | ३० | १३ |
| नीहास | २२ | २८ |
| नु | ४ | १ |
| नूणं | २ | ४० |

नेञ *

| | | |
|------------|----|-------------------------|
| -नेइ | २६ | १६ |
| नेआउय | ३ | ६ |
| | ४ | ५ |
| | ७ | २५ |
| | १० | ३१ |
| नेत्त | १२ | २६ |
| नेरइअ (य) | १० | १४ |
| | २६ | सू० ५ |
| | ३३ | १२ |
| | ३४ | ४४ |
| | ३६ | १५५ से १५७, १६७, १६८ |
| नेह | १३ | १५ |
| | २६ | सू० ४६ |
| नेहपास | २३ | ४३ |
| नो | १ | ११ |
| नोकसाय | ३३ | १० |
| नोकसायज | ३३ | ११ |
| | | |
| | | |
| पइ (पति) | १४ | ३६ |
| पइ (प्रति) | ३० | १२ |
| पइगिज्ज | २१ | ३ |

२१४,

परिशिष्ट-३

| | | |
|-----------|----|------------|
| पइट्टा | २३ | ६५, ६८ |
| पइट्टिय | ३६ | ५५, ५६, ६३ |
| पइण्णग | २८ | २३ |
| पइण्ण | ३० | ११ |
| पइण्णवाइ | ११ | ६ |
| पइण्णि | ६ | ६ |
| पइन्न | २० | ५३ |
| पइन्ना | २३ | ३३ |
| पइरिक्क | २ | २३ |
| | ३५ | ६ |
| पईत्र | २३ | २, ६ |
| | ३४ | ७ |
| पउंज * | | |
| -पउंजन्ति | ८ | १३ |
| | ३६ | २६४ |
| -पउजेज्ज | २४ | १३ |
| पउंजमाण | २० | ४५ |
| पउमगुम्म | १३ | १ |
| पउर | ८ | १ |
| | ३२ | ११ |
| पउस्स * | | |
| -पउस्सइ | १५ | ११ |
| -पउस्से | ४ | ११ |
| पएस | ३३ | १६ |
| | ३६ | ५, ६, १० |

| | | |
|--------|----|--|
| पएसग | २६ | सू० २३ |
| | ३३ | १६, १७, २४ |
| पओग | २६ | सू० ३६ |
| | ३२ | ३१, ४४, ५७, ७०, ८३, ९६ |
| पओयण | २३ | ३२ |
| | ३२ | १०५ |
| पओस | ८ | २ |
| | ३२ | २६, ३३, ३९, ४६, ५२, ५९, ६५, ७२, ७८, ८५, ९१, ९८ |
| | ३४ | २३ |
| पओस * | | |
| -पओसए | २ | ११, २६ |
| पओसकाल | २६ | १६ |
| पंक | १ | ४८ |
| | २ | १७, ३६ |
| पंकजल | १३ | ३० |
| पकाभा | ३६ | १५७ |
| पंत्त | १४ | ३० |
| पंच | १ | ४७ |
| | ११ | ३ |
| | १२ | ४२ |
| | १७ | २० |
| | १९ | १०, ४३, ८८ |

| | | | | | |
|------------|----|-------------|--------------|----|--------|
| पंच | २१ | १३ | पंचिदियकाय | १० | १३ |
| | २२ | २४ | पंचिन्दियत्त | १० | १८ |
| | २३ | ३६, ८७ | पंचिन्दियया | १० | १७ |
| | २६ | सू० ७३ | पजर | १४ | ४१ |
| पंचम | २३ | १७ | | २२ | १४, १६ |
| | २६ | ३ | पंजलि | २० | ७ |
| | ३० | ११ | | २५ | १३ |
| | ३३ | ५ | पंजलिउड | १ | ४१ |
| | ३६ | १६४ | | २६ | ६ |
| पंचविह | १६ | १० | पंजलीउड | १ | २२ |
| | २८ | ४, ५ | | २५ | १७ |
| | २९ | सू० ७२ | पंडग | १६ | सू० ३ |
| | ३३ | ४, १५ | पंडिय | १ | ९, ३७ |
| | ३६ | २०५ | | ४ | ६ |
| पंचसिक्खिय | २३ | १२, २३ | | ५ | ३, १७ |
| पंचहा | २४ | ८ | | ६ | २ |
| | ३० | १४, ३४ | | ७ | १९, ३० |
| | ३६ | १५, १६, २१, | | ९ | ६२ |
| | | ८५, ११७, | | १९ | ९६ |
| | | १७२, २०८, | | २२ | ४९ |
| | | २१६ | | २४ | २७ |
| पंचाल | १३ | १३, २६, ३४ | | ३० | ३७ |
| | १८ | ४५ | | ३१ | २१ |
| पंचिदिय | ९ | ३६ | पंडियमाणि | ६ | १० |
| | ३६ | १२६, १५५, | पंडु | ३६ | ७२ |
| | | १७० | पंडुय | १० | १ |

२१६

परिशिष्ट-२

| | | | | | |
|----------|----|---|-----------|----|--------|
| पंडुर | ३५ | ४ | पक्कम * | | |
| | ३६ | ६१ | -पक्कमई | ३ | १३ |
| पंडुरय | १० | २१ से २६ | | १६ | ८२ |
| पंत | ८ | १२ | -पक्कमंति | २७ | १४ |
| | १२ | ४ | | २८ | ३६ |
| | १५ | ४ | पक्ख | ५ | २३ |
| पंतकुल | १५ | १३ | | २६ | १४, १५ |
| पंथ | २ | ५ | | २७ | १४ |
| पंसु | १२ | ६, ७ | पक्खओ | १ | १८ |
| पकप्प | ३१ | १८ | पक्खन्द * | | |
| पकर * | | | -पक्खन्द | १२ | २७ |
| -पकरेंति | १ | १३ | पक्खपिंड | १ | १६ |
| -पकरेइ | २६ | सू० २३ | पक्खि | ४ | ६ |
| | ३२ | १०८ | | ६ | १५ |
| -पगरेह | १२ | ३६ | | १३ | ३१ |
| पकिण्ण | १२ | १३ | | १४ | ३० |
| पकित्तिय | ३६ | १६, १८, १९, २१, ८५, ६४, ६६, ११७, १२६, १२७, १३६, १४५ | | १६ | ५८, ७६ |
| | | | | २० | ३ |
| | | | | ३२ | १० |
| | | | | ३६ | १८८ |
| | | | पक्खिणी | १४ | ४१ |
| पकुब्ब * | | | पगड | १३ | ८, ६ |
| -पकुब्बइ | ११ | ७ | पगळभ * | | |
| | २७ | ११ | -पगळभई | ५ | ७ |
| पक्क | १६ | ४६, ५७ | पगर* | | |
| | ३४ | १३ | -पगरेह | १२ | ३६ |

| | | |
|--------------|----|------------------------|
| पगाढ | ५ | १२ |
| | १६ | ७२ |
| पगाम | १४ | १३, १६, ३१ |
| | ३२ | १० |
| पगामभोइ | ३२ | ११ |
| पगामसो | १७ | ३ |
| पगार | ३२ | १०६ |
| पगास | २० | ४२ |
| पगासण | ३२ | २ |
| पगिज्म * | | |
| -पगिज्मेज्जा | ८ | १६ |
| पगिज्म | १४ | ५० |
| पचवंग | १६ | ४ |
| पचवक्खाण | २६ | २६ |
| | २६ | सू० १, १४, ३४ से ४२ |
| पचवणुहव * | | |
| -पचवणुहोइ | १३ | २३ |
| पचवमाण | ३२ | २० |
| पचवय | २३ | ३२ |
| पचववाय | १० | ३ |
| पचचुप्पन्न | ७ | ६ |
| पच्छा | २ | ४१ |
| | ४ | ७, ६ |
| | ५ | १३ |
| | १० | ३३ |

| | | |
|-------------|----|--|
| पच्छा | १४ | २६, ३१ |
| | १७ | १ - |
| | १६ | ११, १३, ४३ |
| | २२ | ३४, ३८ |
| | २६ | सू० २६, ३३, ४२, ५६, ६२, ७२ |
| | ३२ | ३१, ४४, ५७, ७०, ८३, ६६ |
| पच्छाणुताव | २० | ४८ |
| | २६ | सू० ७ |
| | ३२ | १०४ |
| पच्छाणुतावए | १० | ३३ |
| पच्छायइत्ता | १२ | ८ |
| पच्छिम | २३ | २६, ८७ |
| पजह * | | |
| -पजहामि | १२ | ४६ |
| | १४ | ३२ |
| -पजहे | १५ | ६ |
| पजुंज * | | |
| -पजुंजई | ६ | ३० |
| पज्जअ | ३५ | १६ |
| पज्जत्त | ३६ | ७०, ७१, ८४, ८५, ६२, ६३, १०८, १०९, ११७, ११८, १२७, १३६, १४५ |

२१८

परिशिष्ट-२

| | | |
|-------------|----|--------------|
| पज्जलण | १४ | १० |
| पज्जलिअ | ११ | २६ |
| पज्जव | २८ | ५, ६, १३ |
| | २६ | सू० ८, ५७ से |
| | | ५६ |
| | ३० | १४ |
| पज्जवचरअ | ३० | २४ |
| पज्जुवट्ठिअ | ६ | ६१ |
| | १८ | ४६ |
| पट्टण- | ३० | १६ |
| पट्टिस | १६ | ५५ |
| पट्ट | ५ | १ |
| पट्टिय | २३ | ६१, ६३ |
| | २७ | ४ |
| पड † | | |
| -पडइ | २७ | ५, ६ |
| -पडति | १८ | २५ |
| पड | १६ | ८७ |
| पडत | १४ | २१ |
| | १६ | ६० |
| पडिकूल | १२ | १६ |
| पडिकूल * | | |
| -पडिकूलेड | २७ | ११ |
| पडिकम्म * | | |
| -पडिकम्मामि | १८ | ३१ |
| -पडिकम्मै | १ | ३१ |

| | | |
|--------------|----|------------|
| पडिक्कम | १६ | ७६ |
| पडिक्कमण | २६ | सू० १, १२ |
| पडिक्कमिता | २६ | ३७ |
| पडिक्कमित्तु | २६ | ४१, ४५, ४६ |
| पडिगाह † | | |
| -पडिगाहेज्ज | १ | ३४ |
| पडिग्घाअ | ६ | ५४ |
| पडिचोय † | | |
| -पडिचोएइ | १७ | १६ |
| पडिच्छ † | | |
| -पडिच्छई | १२ | ३५ |
| | २६ | २६ |
| पडिच्छन्न | १ | ३५ |
| पडिठप्प | १४ | ६ |
| पडिणीय | १ | ३, ४, १७ |
| पडितप्प † | | |
| -पडितप्पड | १७ | ५ |
| पडिथद्ध | १२ | ५ |
| पडिनियत्त † | | |
| -पडिनियत्तड | १४ | २४, २५ |
| पडिपुच्छ † | | |
| -पडिपुच्छई | २० | ७ |
| पडिपुच्छणया | २६ | सू० १, २१ |
| पडिपुच्छणा | २६ | २, ५ |
| पडिपुण | ८ | १६ |
| | ६ | ४६ |

| | | | | | |
|--------------|----|-------------|--------------|----|-----------|
| पडिपुण्ण | ११ | २५, २६, ३० | पडिलेहणा | १७ | ६ |
| | २६ | सू० ७२ | | २६ | २६, ३० |
| | ३२ | १ | पडिलेहा | २६ | १६, २८ |
| पडिप्पह | २७ | ६ | पडिलेहिता | २४ | १४ |
| पडिदुद्धजीवि | ४ | ६ | | २६ | ८, २०, २३ |
| पडिमंत † | | | पडिलेहिताण | २६ | २१ |
| -पडिमतेइ | १८ | ६ | पडिलेहिया | २६ | ४४ |
| पडिमा | २ | ४३ | पडिवज्ज † | | |
| | ३१ | ६, ११ | -पडिवज्जइ | २३ | ८७ |
| पडियर * - | | | | २६ | सू० ७ |
| -पडियरसी | १८ | २१ | -पडिवज्जई | २३ | ५६ |
| पडिय | २६ | सू० ६० | -पडिवज्जए | ३ | १० |
| पडिरूव | १ | ३२ | -पडिवज्जति | ३ | ८ |
| | २३ | १६ | -पडिवज्जामि | २६ | ५० |
| पडिरुवंत्तु | २३ | १५ | -पडिवज्जयामो | १४ | २८ |
| पडिरूवया | २६ | सू० १, ४३ | पडिवज्ज | २१ | २० |
| पडिलभ † | | | पडिवज्जअ | २ | ४३ |
| -पडिलभे | १ | ७ | पडिवज्जमाण | २६ | सू० १७ |
| पडिलेह | | | पडिवज्जियन्व | ३२ | ६ |
| -पडिलेहइ | १७ | १४ | पडिवज्जिया | ३ | २० |
| -पडिलेहए | २६ | २२, २३, ३५, | | ५ | १५ |
| | | ३७, ४५ | | ७ | २८ |
| -पडिलेहे | २६ | २४ | | २१ | १२ |
| -पडिलेहेइ | १७ | ६, १० | पडिवत्ति | २३ | १६ |
| -पडिलेहिज्ज | २६ | ३८ | | २६ | सू० ५ |
| पडिलेहणया | २६ | सू० १, १६ | | | |

२२०

परिशिष्ट-२

| | | | | | |
|-------------|----|--|------------|----|---|
| पडिक्क | २६ | सू० ३,५ से ८, सू० ३२, ३७, ४२, सू० ६२ | पडुक्क | ३६ | १४०, १५०, १५६, १७४, १८३, १६०, १६६, २१८ |
| पडिसंजल * | | | पडुप्पन्न | २६ | सू० १३ |
| -पडिसंजले | २ | २४ | पढम | ५ | ४ |
| पडिसविकल * | | | | २० | १६ |
| पडिसविकले | २ | ३१ | | २४ | १२ |
| पडिसंघ * | | | | २६ | २, १२, १८, २८ |
| -पडिसंघए | २७ | १ | | २८ | ३२ |
| पडिसंलीण | ११ | १३ | | ३४ | ५८ |
| पडिसिद्ध | २५ | ६ | | ३६ | १६०, २३४, २५२ |
| पडिसेव * | | | पणग | ३६ | १०३, १०४ |
| -पडिसेवन्ति | २ | ३८ | पणगमट्टिया | ३६ | ७२ |
| पडिेवि | ३६ | २६६ | पणट्ट | ४ | ५ |
| पडिेह * | | | पणयाल | ३६ | ५८ |
| -पडिेहए | २५ | ६ | पणवीस | ३१ | १७ |
| पडिेहिय | १५ | ११ | | ३६ | २३६ |
| पडिसोअ | १६ | ३६ | पणाम * | | |
| पडिसोत्त | १४ | ३३ | -पणामए | १६ | ७६ |
| पडिस्सुअ | २६ | ६ | | २२ | २० |
| पडिस्सुण * | | | पणिहाणव | १६ | ८, १४ |
| -पडिस्सुणे | १ | १८, २१, २७ | पणिहि | २३ | ११ |
| पडिहय | ३६ | ५५, ५६ | पणीय | १६ | सू० ६ |
| पडुक्क | ३६ | १२, ७६, ८७, १०१, ११२, १२१, १३१, | | | |

| | | | | | |
|------------------|----|-------------|------------|----|-------------|
| पणीय | १६ | ७, १२ | पत्तेग | ३६ | ६३, ६५ |
| | ३० | २६ | पत्तेगसरीर | ३६ | ६४ |
| पणुवीसइ | ३६ | २३७ | पत्थ * | | |
| पणोल्ल # | | | -पत्थए | २ | ६ |
| -पणोल्लयामो | १२ | ४० | | ३५ | ४, १३, १८ |
| पणण | १ | २८ | -पत्थेइ | २६ | सू० ३४ |
| पत्त | ५ | १५ | -पत्थेसि | ६ | ४२, ५१ |
| | ७ | ३ | पत्थ | १४ | ४८ |
| | १२ | ४७ | पत्थिअ | २१ | ३ |
| | १८ | ३८, ४०, ४२, | पत्थिव | ६ | ३२, ५१ |
| | | ४३, ४७ | | १८ | ११ |
| | १६ | ५६, ६१, ६५ | | २० | १६, १६ |
| | २० | ४८ | पत्थेमाण | ६ | ५३ |
| | २१ | १७ | पट्टु | ३२ | ३३, ४६, ५६, |
| | २२ | ४८ | | | ७२, ८५, ६८ |
| | २५ | २, ४३ | पट्टोस | १२ | ३२ |
| | २६ | सू० ७४ | पट्टावत | २३ | ५६ |
| पत्त (पात्र) | ६ | १५ | पन्न | १५ | २, १५ |
| पत्त (पत्र) | ६ | ६ | पन्नत्त | ८ | ८ |
| | ३६ | ५६ | | १६ | सू० १ से १२ |
| पत्तअ (प्राप्तक) | २६ | सू० ४५ | | २८ | २, ७ |
| पत्तअ (पत्रक) | १० | १ | | २६ | सू० ११ |
| पत्तहारग | ३६ | १३७ | पन्नरम | ११ | १० |
| पत्तिअ | १ | ४१ | | ३६ | १६७ |
| पत्तियाइत्ता | २६ | सू० १ | पन्नव | २ | ३६ |
| पत्तो | १२ | २४ | | २४ | १० |
| | १४ | ३ | | | |

२१२

परिशिष्ट-२

| | | | | | |
|----------|----|-------------|-------------|----|---------|
| पन्मवय | ७ | १३ | पभा | ५ | २७ |
| पन्नविभ | २६ | सू० ७४ | | २२ | ७ |
| पन्ना | २ | सू० ३ | | २३ | १८ |
| | २ | ३२ | | ३४ | ५,६ |
| | २३ | २५, २८, ३४, | पभाय | २० | ३४ |
| | | ३६, ४४, ४६, | पभाव | १६ | ६७ |
| | | ५४, ५६, ६४, | | २६ | सू० २४ |
| | | ६६, ७४, ७६, | | ३२ | १०४ |
| | | ८५ | पभाव * | | |
| पप्य | ३६ | ६, ७६, ८७, | -पभावेड | २६ | सू० २४ |
| | | ११२, १२१, | पभावग | २६ | सू० ७२ |
| | | १३१, १४०, | पभावणा | २८ | ३१ |
| | | १५०, १५६, | पभास * | | |
| | | १७४, १८३, | -पभासई | १८ | २३ |
| | | १६०, १६६, | -पभाससे | १२ | १६ |
| | | २१८ | पभीय | ५ | ११ |
| पप्य * | | | पभु | १६ | ३४ |
| पप्पोति | १४ | १४ | पभूय | १२ | १०, ३५ |
| पप्फोड | | | | १३ | ११, १३ |
| -पप्फोडे | २६ | २४ | | १४ | १६, ३१ |
| पप्फोडणा | २६ | २६ | | २० | २, १८ |
| पवन्ध | ११ | ७, ११ | पमज्ज * | | |
| पवभट्ट | ८ | १४ | -पमज्जेज्ज | २४ | १४ |
| पभंकर | २३ | ७६ | -पमज्जेज्जा | २६ | २४ |
| पभव | ३२ | ६, ७, १६, | पमत्त | ४ | १, ५, ६ |
| | | १०३, १११ | | ६ | १६ |

| | | | | | |
|-------------------|----|----------------------|------------------|----|-----|
| पमत्त | १४ | १४ | पय ^१ | | |
| | १७ | ८ से १० | -पए | २ | २ |
| | २६ | ३० | -पये | ३५ | १० |
| | ३४ | २३ | पय (पयस्) | ११ | १५ |
| पमाण | २६ | २७ | पयञ | १ | २७ |
| | २८ | २४ | पयंग | ३ | ४ |
| पमाय ^१ | | | | १२ | २७ |
| -पमायए | ४ | १ | | ३२ | २४ |
| | १० | १ से ३६ | | ३६ | १४६ |
| पमाय | १० | १५ | पयंगवीहिया | ३० | १६ |
| | ११ | ३ | पयट्टिय | ४ | २ |
| | १४ | १५ | पयडि | ३३ | ६ |
| | २० | ३६ | पयण | १२ | ६ |
| | २६ | २७ | | ३५ | १० |
| पमाट्टाण | ३२ | | पयणु | ३४ | २६ |
| पमुहर | १७ | ११ | पयणुय | ३४ | २६ |
| पमोक्ख | २५ | १३ | पयणुवाड | ३४ | ३० |
| | ३२ | १, १११ | पयर | ३० | १० |
| पमोय ^१ | | | पयलपयला | ३३ | ५ |
| -पमोयति | १४ | ४२ | पयला | ३३ | ५ |
| पम्ह्लेसा | ३४ | ८, ३०, ३८ | पयह ^१ | | |
| पम्हा | ३४ | ३, १४, ५४, ५५, ५७ | -पयहति | १४ | ३४ |
| | | | -पयहेज्ज | ४ | १२ |
| पय (पद्) | १ | २६ | पयहित्तु | १८ | ४६ |
| | ४ | ७ | पया | ३ | २ |
| | २६ | २८ | | ४ | ३ |
| | २८ | २२ | | १३ | ३२ |

२२४

परिगिह-२

पया *

पर

२६

३५

-पयाड

१३

२४

२८

१६

पयार

३२

१०४

२६

मू० ३४,६१

पयाव *

३२

३२

२६,४२,५५,

-पयावए

२

२

६८,८१,६४

३५

१०

३४

४७,५१,५८,

-पायए

३५

११

५६

पयावण

३५

१०

३६

२६३

पयाहिणा

६

५६

परळ

३४

१४

२०

७,५६

परंदम

७

६

पर

१

१६,२५

परंपर

३२

३४,४७,६०,

२

१०,२०,२४,

७३,८६,६६

४

४,१३

परंपग

३२

३३,४६,५६,

५

५,६

परक्कड

१

३४

११

३२

३५

६

१२

६,३१

परक्कम

६

२१

१३

२१,२४

११

१७

१५

११,१२

१८

५१

१८

१७,२७,२६

परगेह

१७

१८

१६

१६,२१

परज्जक

४

१३

२०

३५,४६

परत्थ

१

१५

२१

१०

४

५

२४

१७

१७

२०

२५

८,१२,१५,

परपासंड

१७

१७

३३,३७

पग्म

२

२६

| | | | | | |
|------------|----|------------|------------|----|-----------|
| परम | ३ | १, ६, १२ | परिकंख * | | |
| | ६ | ३४ | -परिकंखए | ७ | २ |
| | १८ | १५ | परिकिण्ण | ११ | १८ |
| | १६ | ७१ | परिकित्तिय | ३० | ३६ |
| | २० | ५, २०, २१, | | ३६ | १४६, २१७ |
| | | ५८ | | | |
| | २६ | सू० ३६ | परिक्लीण | ७ | १० |
| | ३५ | ७ | परिगय | २ | २ |
| परमंत | १८ | ३१ | परिगिञ्ज | १ | ४३ |
| परमट्टपअ | २१ | २१ | परिक्खेवि | ११ | ८, १२ |
| परमत्य | २८ | २८ | परिगिण्ह | | |
| परमाणु | ३६ | १०, ११ | -परिगिण्हइ | २७ | १६ |
| परमाहम्मिअ | ३१ | १२ | परिग्गह | २ | १६ |
| परलोग(य) | ५ | ११ | | ७ | ६ |
| | १६ | ६२ | | १२ | ६, १४, ४१ |
| | २२ | १६ | | १३ | ३३ |
| | २६ | सू० ५१ | | १४ | ४१ |
| | ३४ | ६० | | १६ | २६ |
| परसमय | २६ | सू० ६० | | ३० | २ |
| पराइय | २२ | ३६ | | ३२ | २८ से ३०, |
| | ३२ | १२ | | | ४१ से ४३, |
| पराजिअ | ६ | ५६ | | | ५४ से ५६, |
| | १३ | १ | | | ६७ से ६९, |
| परायण | ७ | ६ | | | ८० से ८२, |
| | १४ | ५१ | | | ८३ से ८५ |
| परिड * | | | परिग्गहि | ३२ | १०१ |
| -परियति | २७ | १३ | परिचज्ज | १७ | १८ |

२२६-

परिशिष्ट-२

| | | | | | |
|--------------|----|-----------------------|----------------|----|-------------------------------|
| परिचवज्ज | १८ | १२, ४८ | परितप्य * | | |
| | ३५ | २ | -परितप्यई | ५ | ११, १३ |
| परिचवत | १४ | ३८ | परितप्यमाण | १४ | १०, १४ |
| | २२ | २६ | परित्तसंसारि | ३६ | २६० |
| परिचवय * | | | परिताव | २ | ३६ |
| -परिचवयई | ६ | ३ | परिताव * | | |
| परिच्चाअ (य) | १६ | २६ | -परितावेइ | ३२ | २७, ५३, ६६, ७६, ६२ |
| | २६ | सू० ३ | -परियावेइ | ३२ | ४० |
| परिच्चाइ | १७ | १७ | परिदाह | २ | ८ |
| परिजुण्ण | २ | १२ | परिदेव * | | |
| परिजूर * | | | -परिदेवए | २ | ८, १३, ३६ |
| -परिजूरइ | १० | २१ से २६ | परिघाव * | | |
| परिणम * | | | -परिघावई | २३ | ५५, ५८ |
| -परिणमे | ३४ | २२, २४, २६, २८, ३० | परिनिव्वव * | | |
| | | | -परिनिव्ववेइ | १२ | २० |
| परिणय (अ) | ३४ | १३, २१, ५८ से ६० | परिनिव्वा * | | |
| | ३६ | १६ से २१ | -परिनिव्वाएइ | २६ | सू० २६, ४२, ५६, सू० ६२, ७४ |
| परिणाम | १६ | १७ | -परिनिव्वायंति | २६ | सू० १ |
| | २२ | २१ | परिनिव्वुअ | ३६ | २६८ |
| | ३४ | २, २०, २२ | परिनिव्वुड | ५ | २८ |
| | ३६ | १५, १७ | | १० | ३६ |
| परिणिट्ठिय | २ | ३० | | १४ | ५३ |
| | | | | १८ | २४, ३५ |
| परिणिव्वुअ * | | | परिन्नाय | | |
| -परिणिव्वुए | ३५ | २१ | (परिजांति) | २ | १६ |

| | | | | | |
|-------------|-----|--------|---------------|----|-----------|
| परिन्नाय | | | परियागय | ५ | २१ |
| (परिज्ञाये) | ४ | ७ | परियायर्धम्म | २१ | ११ |
| | १२ | ४१ | परियाव | २ | ८ |
| | १५ | ८, ९ | | २० | ५० |
| परिभस्स * | | | परियावस " | | |
| -परिभस्सई | ३ | ९ | -परियावसे | १८ | ५३ |
| | ७ | २५ | परिरअ | ३६ | ५८ |
| परिभावय | १७ | १० | परिरक्खय | १८ | १६ |
| परिभास * | | | परिरक्खयंत | १४ | २० |
| -परिभासई | १८ | २० | परिवंज्ज * | | |
| परिभुंज * | | | -परिवज्जए | १ | १२ |
| -परिभुंजामो | १३ | ९ | | १६ | ३, ७, १०, |
| परिभोगेसणा | २४ | ११ | | | १४ |
| परिभोय | २४ | १२ | | १८ | ३३ |
| परिमंडण | १६ | ९ | | ३५ | ३, ९ |
| परिमडल | ३६ | २१, ४२ | -परिवज्जेज्ज | १८ | ३० |
| परिमिय | ३६ | २५४ | -परिवज्जेज्जा | १६ | ९ |
| परिमुअ * | | | परिवज्जण | ३० | २६ |
| -परिमुअए | ९ | २२ | परिवज्जयत | २१ | १३ |
| परियट्टणया | २९ | सू० १ | परिवज्जित्तु | २४ | १० |
| परियट्टणा | २९ | सू० २२ | परिवत्त * | | |
| | ३० | ३४ | -परिवत्तए | ३३ | १ |
| परियट्टंत | १२० | ३३ | परिवाडी | १ | ३२ |
| परियण | ९ | ४ | परिवारयंत | १३ | १४ |
| | २० | ५८ | परिवारिय | ११ | २५ |
| | २२ | ३२ | | १४ | २१ से २३ |

३२८

परिमिट-२

| | | | | | |
|--------------|----|-------------|------------------|----|-------------|
| परिवारिय | १८ | २ | परिहर * | | |
| | २२ | ११ | -परिहरे | १ | २४ |
| परिविस्त | १४ | ६ | परिहरिय | १२ | ६ |
| परिवुड | २० | ११ | परिहायंत | ३६ | ५६ |
| | २२ | २२, २३ | परिहार- | | |
| परिवूढ | ७ | २, ६ | विमुद्धीय | २८ | ३२ |
| परिव्वध * | | | परिहिय | २२ | ६ |
| -परिव्व्याग | २ | १६ | परी * | | |
| | ६ | १२, १४, १५ | -परियंति | २७ | १३ |
| | १५ | १, ८, ९, १३ | परीसह | २ | मू० १ से ३ |
| -परिव्वएज्जा | २१ | १५ | | २ | १, ५, १४, |
| परिव्वयंत | २ | मू० १ से ३ | | | १८, ४६ |
| | १४ | १४ | | १६ | ३२ |
| परिसंकमाग | ४ | ७ | | २१ | ११, १७, १६, |
| परिसप्य | ३६ | १७६, १८१ | | | २२ |
| परिसा | २२ | २१ | | २६ | मू० ४७ |
| | २३ | ८६ | | ३१ | १५ |
| | २५ | १३ | परीसहपविभक्ति :- | | |
| परिसिच * | | | पटवणा | ३६ | ३ |
| -परिसिचई | २० | २८ | पटविज | २६ | मू० ७४ |
| -परिसिचेज्जा | २ | ६ | पट्टु | ३६ | ६७ |
| परिसुक्का | २ | ५ | पट्टव | २६ | २७ |
| परिसुज्जक * | | | पलाय * | | |
| -परिसुज्जई | २८ | ३५ | -पलायए | २७ | ७ |
| परिसुद्ध | २४ | ४ | पलायण | १४ | २७ |
| परिसोसिय | १२ | ४ | पलाल | २३ | १७ |

| | | | | | | |
|-------------|----|--|-----------|----|---------------------|--|
| पलास | ३२ | ३४, ४७, ६०, ७३, ८६, ९९ | पल्हायण | २६ | सू० १८ | |
| पलिउंच * | | | पवंच | ३६ | ६३ | |
| -पलिउंचन्ति | २७ | १३ | पवन्व * | | | |
| पलिउचग | ३४ | २५ | -पवक्खामि | २६ | १ | |
| पलिओवम | ३४ | ४२, ५२, ५३ | | ३१ | १ | |
| | ३६ | १८४, १८५, १९१, २००, २०१, २२० से २२३ | पवज्ज * | ३४ | १ | |
| पलित्त | १९ | २२, २३ | -पवज्जई | १९ | १८, २० | |
| पलिमंथ * | | | पवज्जा | ३५ | २ | |
| -पलिमंथए | ९ | २१ | पवड्ड * | | | |
| पलिय | ३० | ३५ से ३७, ४३, ४८ से ५०, ५२ | -पवड्डई | ८ | १७ | |
| | ३६ | १९२ | पवत्त | ३४ | २१ | |
| पली * | | | पवत्तण | २४ | २६ | |
| -पलेइ | १४ | ३४ | | ३१ | २, ३ | |
| -पलेति | १४ | ३६ | पवत्तमाण | २४ | २१, २३, २५ | |
| पलोभित्ता | ८ | १८ | पवत्तिय | २० | १७ | |
| पल्लघण | २४ | २४ | पवन्ना | १४ | २, २८ | |
| पल्ली | ३० | १६ | | २३ | १३, २४, ३० | |
| पल्लोय | ३६ | १२९ | पवयण | २४ | ३ | |
| पल्हत्थिया | १ | १९ | | २८ | २६ | |
| पल्हाय | १६ | २ | | २९ | सू० २४ | |
| | | | पवयणमाया | २४ | | |
| | | | | २४ | १, २७ | |
| | | | | २९ | सू० १२ | |
| | | | पवर | ११ | १६, २०, २७ से २९ | |
| | | | | १७ | २० | |

२३०

| | | |
|------------|----|------------|
| पवह | ११ | २८ |
| पवाइ | ४ | १३ |
| पवाल | ३६ | ७४ |
| पविट्ट | २ | २६ |
| | १३ | ३४ |
| | १६ | ८३ |
| पवितक्किय | २३ | १४ |
| पवित्त | १२ | ६ |
| पविभत्ति | २ | १ |
| पवियक्खण | ६ | ६२ |
| | १६ | ६६ |
| | २२ | ४६ |
| पवेइय(अ) | २ | सू० १ से ३ |
| | २ | १,४६ |
| | ५ | १७ |
| | १३ | १३ |
| | २६ | ४,७ |
| | २६ | सू० १ |
| पवेविय | २२ | ३६ |
| पवेस * | | |
| -पवेसंति | ७ | १६ |
| -पवेसे | २० | २० |
| पवेस | ३६ | २६७ |
| पव्व | २ | ३ |
| पव्वइउं | २२ | २६ |
| पव्वइत्ताण | २० | ३६ |

| | | |
|--------------|----|-------|
| परिशिष्ट-२ | १० | २६ |
| पव्वेइय | १३ | २ |
| | १५ | १० |
| | १७ | १,३ |
| | १८ | २०,४७ |
| | २० | ८,३४ |
| | २२ | ३२ |
| पव्वग | ३६ | ६५ |
| पव्वज्जा | ६ | ६ |
| | १३ | १४ |
| | १८ | ३६ |
| | २२ | २८ |
| | ६ | ४८ |
| पव्वय | | |
| पव्वय * | | |
| -पव्वइस्सामि | १६ | १० |
| -पव्वए | १८ | ३४,४६ |
| | २० | ३२ |
| | २१ | १० |
| -पव्वया | १६ | ७५ |
| पव्वयंत | ६ | ५ |
| | २५ | २० |
| पव्वाय * | | |
| -पव्ववेसी | २२ | ३२ |
| पसंतचित्त | ३४ | २६,३१ |
| पसंसा | १५ | ५ |
| | १६ | ६० |

| | | |
|----------|----|-------------------------|
| पसंसिञ्ज | १४ | ३८ |
| पसज्ज * | | |
| -पसज्जसि | १८ | ११, १२ |
| पसत्य | १२ | ४४, ४७ |
| | १४ | ६ |
| | १६ | ६३ |
| | २६ | २८ |
| | २६ | सू० ५, ८, १३, सू० ४३ |
| | ३२ | १३, १६, ११० |
| | ३४ | १७, १९, ६१ |
| पसन्न | १ | ४६ |
| | १२ | ४६ |
| | १८ | २० |
| पसमिक्ख | १४ | ११ |
| पसर | ३६ | २६६ |
| पसर * | | |
| -पसरई | २८ | २२ |
| पसव * | | |
| -पसवई | २१ | ४ |
| पसाय * | | |
| -पसायए- | १ | १३, ४१ |
| पसायपेहि | १ | २० |
| पसारिय | १ | १६ |
| | १२ | २६ |

| | | |
|-----------------|----|--------|
| पसाह * | | |
| -पसाहि | १३ | १३ |
| पसाहिता | १८ | ४२ |
| पसाहिय | २२ | ३० |
| पसिद्धि | २६ | २६ |
| पसिण | १८ | ३१ |
| पसीञ्ज * | | |
| -पसीयति | १ | ४६ |
| -पसीयंतु | २३ | ८६ |
| पसु | ३ | १७ |
| | ६ | ५ |
| | ६ | ४६ |
| | १६ | सू० ३ |
| | २५ | २८ |
| | ३० | २८ |
| पसुत्त | २० | ३३ |
| पसुय | १४ | २ |
| | २३ | ५१ |
| पस्त (दृष्ट्वा) | ६ | १२ |
| पस्त (पठ्य) | ७ | २८, २९ |
| पह | १० | ३१, ३२ |
| | २० | ५१ |
| पहण * | | |
| -पहणे | १८ | ४८ |
| पहय | १२ | ३६ |
| पहसिय | २० | १० |

२३२

| | | |
|---------------|----|----------|
| पहा | २८ | १२ |
| पहा * | | |
| -पहीयए | ३२ | १०७ |
| पहाण | १६ | ६७ |
| पहाणमग्ग | १४ | ३१ |
| पहाणि | ३ | ७ |
| पहाणव | २१ | २१ |
| पहाय | ४ | २,१० |
| | १४ | ३५,३७,४० |
| | २१ | १६ |
| पहाव * | | |
| -पहावई | २७ | ६ |
| पहीण | ५ | २५ |
| | १४ | २६,३० |
| | २१ | २१ |
| | २८ | ३६ |
| पहू | १६ | २२ |
| | ३५ | २० |
| पा * | | |
| -पाहि | १६ | ५६ |
| पाअ | १८ | ८ |
| | १६ | ४६ |
| | २० | ७ |
| पाइय | १६ | ६८,७० |
| पाळं (पातुम्) | १७ | २ |
| | १६ | ३६ |

परिशिष्ट-२

| | | |
|-----------------|----|-------------|
| पाळं (पीत्वा) | १६ | ८१ |
| पाउकर * | | |
| -पाउकरिस्सामि १ | ११ | १ |
| | १८ | ३२ |
| | ३६ | २६८ |
| पाउण * | | |
| -पाउणिज्जा | १६ | सू० ३ से १२ |
| पाउरण | १७ | २ |
| पागड | २६ | सू० ४३ |
| पागार | ६ | १८,२० |
| पाडिअ | १६ | ५४,५६ |
| पाढव | ३ | १३ |
| पाण (प्राण) | १ | ३५ |
| | २ | ११ |
| | ६ | ६ |
| | ८ | ७ से ६ |
| | १२ | ३६ |
| | १७ | ६ |
| | २२ | १४,१६ |
| | २४ | १८ |
| | २५ | २२ |
| | २६ | २५ |
| | २६ | सू० १८,४३ |
| | ३५ | १२ |

| | | |
|-----------------|----|-------------|
| पाण (पान) | २ | ३ |
| | ६ | १४ |
| | १२ | ११, १६, ३५ |
| | १५ | ११, १२ |
| | १६ | सू० ६, १० |
| | १६ | ७, १२ |
| | १६ | ७६, ८० |
| | २० | २६ |
| | २५ | १० |
| | २६ | ३१ |
| | २७ | १४ |
| | ३० | २६ |
| | ३५ | १०, ११ |
| पाण्य | ३६ | २११, २३१ |
| पाणवत्तिया | २६ | ३२ |
| पाणवह | ३० | २ |
| पाणाइत्राय | १६ | २५ |
| पाणि (पाणि) | २ | २६ |
| | २६ | २५ |
| पाणि (प्राणिन्) | ३ | ५, ६ |
| | ६ | ६ |
| | ७ | २० |
| | १० | ४ |
| | २२ | १७, १८ |
| | २३ | ६५, ६८, ७५, |
| | | ७६, ७८, ८० |
| | २६ | ३४ |

| | | |
|---------------|----|---------------|
| पाणिय | १० | २८ |
| | १६ | ८१ |
| पाय (पाद) | १ | १६ |
| | ६ | ६० |
| | १२ | २६, ३३ |
| | १७ | १४ |
| | १६ | ४६ |
| पाय (पात्र) | ६ | ७ |
| पाय (प्रायस्) | ३२ | १० |
| पायं | १२ | ३६ |
| पायकंबल | १७ | ७, ६ |
| पायच्छित्त | २६ | सू० १, १३, १७ |
| | ३० | ३०, ३१ |
| पायत्ताणिय | १८ | २ |
| पायव | १६ | ५२ |
| पार | १० | ३४ |
| | २३ | ७०, ७१ |
| | ३६ | ६७ |
| पारव | २० | ४१ |
| पारण | १८ | २२ |
| | २३ | २, ६ |
| | २५ | ७, ३६ |
| पारण | २५ | ५ |
| पारणअ | १२ | ३५ |
| पारित्ता | २६ | ५० |
| पारिय | २६ | ४०, ४२, ४८, |
| | | ५१ |

| | | | | | |
|------------|----|-----------------------|-------------|----|---------|
| पारेवय | ३४ | ६ | पावकारि | ४ | ३ |
| पालइत्ता | १३ | ३५ | | १८ | २५ |
| | २६ | सू० १,७३ | पावग (पापक) | १ | १२ |
| पालिअ | २१ | १,४ | | २ | २३,४२ |
| पाल्त्रिया | १ | ४७ | | ६ | ८ |
| पालियाणं | २० | ५२ | | ११ | ८ |
| पालो (दि०) | १८ | २८ | | १३ | २४ |
| पाव | ४ | २ | | २१ | ६ |
| | ६ | १० | | २५ | २१ |
| | ११ | ८,१२ | पावग (य) | ३० | १ |
| | १२ | ३६,४० | | ८ | ६ |
| | १४ | २० | | १३ | २५ |
| | १६ | ५३,५५,५७ | पावदिट्टि | १ | ३८,३६ |
| | २० | ४७ | | २ | २२ |
| | २१ | २४ | पावयण | २१ | २ |
| | २५ | २८ | पावसमण | १७ | ३ से १६ |
| | २८ | १४,१७ | पावसमणिज्ज | १७ | |
| | २६ | सू० १७,३३,५६ | पावसुयपसंग | ३१ | १६ |
| | ३० | ६ | पाविय | ८ | ७ |
| | ३१ | ३ | | १३ | १६ |
| | ३२ | ५ | | १६ | ५७ |
| पाव * | | | पास * | | |
| -पावइ | ३२ | २४,३७,५०, ६३,७६,८६ | -पास | ४ | २ |
| | | | -पासई | १८ | ६ |
| | | | | १६ | ५ |
| -पावैसु | २२ | २५ | | २० | ४ |
| पावअ | ३ | १२ | | २१ | ८ |

| | | | | | |
|---------------|----|------------|--------------|----|--------|
| -पासए | ३२ | १०६ | पासिया | १२ | २६, ३० |
| -पासे | ६ | ४ | | २२ | ३४ |
| पास (पात्र) | ४ | ७ | पासेत्ता | २२ | १५ |
| | ६ | २ | पाहेअ | १६ | २० |
| | १६ | ५२, ६३ | पिड | १२ | २२ |
| | २३ | ४० से ४२ | | १६ | २, ८४ |
| पास(पार्श्व) | १४ | ४७ | पिड | १ | ३४ |
| | २० | ३० | | २ | ३० |
| | २३ | १, १२, २३, | | ६ | १४ |
| | | २६ | | १५ | १३ |
| | २७ | ५ | पिडवाय | ६ | १६ |
| पास (पत्रयत्) | १८ | ५ | | ३५ | १६ |
| पासण्ड | २३ | १६ | पिडोगह | ३१ | ६ |
| पासण्डि | २३ | ६३ | पिडोलय (दि०) | ५ | २२ |
| पासमाण | ८ | ४ | पिच्य | ३४ | ५ |
| पासवण | २४ | १५ | पिज्ज | ४ | १३ |
| | २६ | ३८ | पिट्टो | १ | १८ |
| पासाअ(य) | ६ | ७, २४ | | २ | १५ |
| | १६ | ४ | पिट्टि | १२ | २६ |
| | २१ | ७, ८ | पिय (त्रिय) | १ | १४ |
| पासिऊण | १२ | ४ | | ६ | १५ |
| | २१ | ६ | | १४ | ५ |
| पासित्ता | १८ | ६ | | १६ | ६६, ७० |
| | २० | ५ | | २१ | १५ |
| पासित्तु | १२ | २५ | | ३४ | २८ |

२३६

परिशिष्ट-२

| | | | | | |
|------------|----|--------------------------|----------|----|---------------------------|
| पिय (पितृ) | ६ | ३ | पिहे * | | |
| | १३ | २२ | -पिहेइ | २६ | सू० १२ |
| | २० | १८, २४ | पीड * | | |
| | २१ | ७ | -पीडई | २० | २१ |
| स्रंकर | ११ | १४ | पीडिअ | १६ | १८, १६ |
| पियवाइ | ११ | १४ | पीड | १७ | ७ |
| पियदंसण | २१ | ६ | पीणिअ | ७ | २ |
| पियघम्म | ३४ | २८ | पीय | २० | ४४ |
| पियर | १८ | १५ | पीयअ | ३६ | २५ |
| | १६ | ६, २४, ४४, ७५, ७६, ८६ | पील * | | |
| | २१ | १० | -पीलेइ | ३२ | २७, ४०, ५३, ६६, ७६, ६२ |
| पियायए | ६ | ६ | पीला | २२ | ३७ |
| पिव | १६ | ६७ | पोलिग्र | १६ | ५३ |
| पिवासा | २ | सू० ३ | पोह * | | |
| | २ | ४ | -पोहए | २ | ३८ |
| | | | -पीहेइ | २६ | सू० ३४ |
| पिवीलि | ३६ | १३७ | पुंगव | २२ | १३ |
| पिवीलिया | ३ | ४ | पुगल | २८ | ७, ८, १२ |
| पिसाय | १२ | ६, ७ | | ३६ | २० |
| | ३६ | २०७ | पुच्छ | २७ | ४ |
| पिसुण | ५ | ६ | पुच्छ * | | |
| पिस्समाण | ३४ | १७ | -पुच्छ | २३ | २२ |
| पिहिय | १६ | ६३ | -पुच्छई | १६ | ७६ |
| | २६ | सू० १२ | | २५ | १३ |
| पिह्ण्ड | २१ | २, ३ | -पुच्छसी | १८ | ३२ |

| | | | | | |
|-----------------|----|-------------|---------------|----|-------------|
| पुच्छामि | २३ | २१ | पुण | १ | १२, ४१ |
| पुच्छेज्जा | १ | २२ | | ३ | ६ |
| | २६ | ६ | | ५ | ६ |
| पुच्छणा | ३० | ३४ | | १० | १६, १६, २६, |
| पुच्छमाण | १ | २३ | | | ३४ |
| पुच्छिञ्च | २५ | १५ | | १३ | २ |
| पुच्छिञ्जग | २० | ५७ | | १४ | २८ |
| पुञ्ज | १ | ४६ | | १५ | ६ |
| | ५ | २६ | | १८ | ३१ |
| पुञ्जसत्य | १ | ४७ | | १६ | ७५ |
| पुट्ट (पृष्ट) | १ | १४, २५ | | २० | ३१ |
| | २ | ४० | | २६ | १२, २४, ३२ |
| पुट्ट (स्पृष्ट) | २ | सू० १ से ३ | | २६ | सू० १२ |
| | २ | ४, १०, ३२, | | ३६ | ११७, २५७, |
| | | ४६ | | | २५६ |
| | ५ | ११ | पुणो | ६ | ५६ |
| | २६ | सू० ७२ | | २६ | सू० २, ५६ |
| पुट्ट (पृष्ट) | ७ | २ | | ३२ | ३३, ४६, ५६, |
| पुढविककाय | १० | ५ | | ३६ | ७२, ८५, ६८ |
| पुढवी | ६ | ४६ | | | ७०, ८४, ६२, |
| | २६ | ३० | | | १०८ |
| | ३५ | ११ | पुण्ण (पूर्ण) | ११ | ३१ |
| | ३६ | ५७, ६०, ६६, | | १२ | १३ |
| | | ७०, ७३, ७७, | | २० | २८ |
| | | ८० से ८२ | पुण्ण (पुण्य) | १२ | १२ |
| पुढो | ३ | २ | | १३ | १०, ११, २०, |
| | | | | | २१ |

| | | | | | |
|---------------|----|-------------|------------|----|-------------|
| पुण्य (पुण्य) | १८ | ७ | पुरओ | १ | १८ |
| | २१ | २४ | पुरंदर | ११ | २३ |
| | २८ | १४, १७ | | २२ | ४१ |
| पुण्यपय | १८ | ३४ | पुरत्यओ | ३२ | ३१, ४४, ५७, |
| पुण्यमासी | ११ | २५ | | | ७०, ८३, ९६ |
| पुत्त | १ | ३६ | पुरा | १३ | ६ |
| | ६ | ३ | | १४ | २० |
| | ८ | २, १५ | | १६ | ६, १३ |
| | १३ | २५ | पुराकअ(य) | १४ | २ |
| | १४ | ५, ९, १२, | | १६ | ८ |
| | | २६, ३०, ३६ | पुराकाउं | ७ | २४ |
| | १८ | १५, ३७, ४६ | पुराण | ८ | १२ |
| | १९ | २, १६, २४, | | १४ | १ |
| | | ३४, ३५, ३८, | | २० | १८ |
| | | ७५, ८४, ८५, | पुरिम | २३ | २६, २७, ८७ |
| | | ८७, ९७ | | २६ | २५ |
| | २० | २५ | पुरिमताल | १३ | २ |
| | २२ | २, ४ | पुरिस | ६ | १ |
| पुत्तय | १४ | ५ | | ८ | ६, १८ |
| पुष्क | ६ | ६ | | १३ | ३१ |
| | १२ | ३६ | | १४ | १४, ३८ |
| | ३४ | ६ | | ३० | २२ |
| भुमत्त | १४ | ३ | | ३६ | ५१ |
| भुमित्तियवेय | ३२ | १०२ | पुरिससिद्ध | ३६ | ४६ |
| पुर | ६ | ४ | पुरिसोत्तम | २२ | ४६ |
| | १४ | १ | पुरी | २२ | २७ |
| | २० | १४, १८ | | २५ | २, ४ |

| | | | | | |
|--------------|----|-----------------------------|-----------|----|---------------------|
| पुरे | १४ | १ | पुञ्जय | १ | ४८ |
| पुरैकड | १० | ३ | पुञ्जसथव | ६ | ४ |
| | १३ | १६ | पुञ्जि | १२ | ३२ |
| | २१ | १८ | | १४ | ५२ |
| पुरोहित्य(अ) | १४ | ३,५,११, ३७,५३ | पुञ्जिल्ल | २६ | ८,२१ |
| पुल्य | ३६ | ७६ | पुञ्जित्त | २८ | ११,१७६, १८५,१६२, |
| पुलाग | ८ | १२ | | ३६ | २०१ |
| पुञ्ज | १ | ४६ | पुञ्जित्त | ३६ | ६५ |
| | २ | ४० | पुञ्ज | ७ | २६ |
| | ३ | १५,१६ | पुञ्ज | १ | ४८ |
| | ४ | ८,६ | | १२ | ४०,४५ |
| | ६ | १३ | | १७ | २१ |
| | ८ | २ | | २३ | १ |
| | १३ | १५ | पुञ्जकणी | १ | ४ |
| | १६ | सू० ८ | पुञ्जण | ३५ | १८ |
| | १८ | ६,४८ से ५१,६० | पुञ्जा | १५ | ५,६ |
| | २५ | ४३ | | २१ | १५,२० |
| | २६ | २४ | | २६ | ७ |
| | २८ | १८,३६ | पुञ्ज | ३५ | ६ |
| | ३८ | सू० ६,३३,३८, ६३ से ७१ | पुञ्ज | ४ | ३ |
| | ३९ | ४६ | | ६ | ५८ |
| | ३६ | १७५,१७६, १८५,१८०, २०१ | पुञ्ज | १७ | ३ |
| | | | पुञ्ज | २६ | सू० १,७२ |

२४०

परिशिष्ट-२

| | | |
|-----------|----|---|
| पेडा | ३० | १६ |
| पेस | १६ | २६ |
| पेसल | ८ | १६ |
| पेसिय | २७ | १३ |
| पेह * | | |
| -पेहे | २४ | ७ |
| -पेहेज्ज | २ | २७ |
| पेहा | ६ | ४ |
| पेहाए | १ | २७ |
| पेहिय | १६ | ४ |
| | ३२ | १४ |
| पोक्खरिणि | ३२ | ३४, ४७, ६०, ७३, ८६, ९९ |
| पोत्तिया | ३६ | १४६ |
| पोत्था | २० | १६ |
| पोम | २५ | २६ |
| पोय | १४ | ३० |
| | २१ | २ |
| पोराणिया | ६ | १ |
| | १६ | ८ |
| पोरिसी | २६ | १२, १३, १८, २२, ३१, ३६, ३७, ४३ से ४५ |
| | ३० | २१ |
| पोखस | ३ | १७ |
| | ६ | ५ |

| | | |
|-------------|----|--------|
| पोखसी | ३० | २० |
| पोल्ल (दे०) | २० | ४२ |
| पोस * | | |
| -पोसेज्ज | ७ | १ |
| पोम | २६ | १३, १५ |
| पोसह | ५ | २३ |
| | ६ | ४२ |
| पोसिय | २७ | १४ |

फ

| | | |
|-----------|----|--------------------------------|
| फंद * | | |
| -फन्दन्ति | १४ | ४५ |
| फग्गुण | २६ | १५ |
| फग्ग | २२ | ३० |
| फरसु | १६ | ६६ |
| फरिस | २६ | सू० ४६ |
| फरस | १ | २७, २६ |
| | २ | २५ |
| फल | २ | ४०, ४१ |
| | ६ | ६ |
| | १२ | १८ |
| | १३ | ३, ८, १०, ११, २०, २६, ३१ |
| | १५ | १० |
| | १६ | ११, १७ |

उत्तरजमयण शब्द-सूची

२४१

| | | | | | |
|----------|----|-------------|----------|----|-----------|
| फल | २३ | ४८ | फासओ | ३६ | ६१, १०५, |
| | २६ | सू० ११, १७ | | | ११६, १२५, |
| | ३२ | १०, २० | | | १३५, १४४, |
| फल * | | | | | १४५, १६६, |
| -फलेइ | २३ | ४५ | | | १७८, १८७, |
| फलग | १७ | ७ | | | १९४, २०३, |
| फलिह | ३६ | ७५ | | | २४७ |
| फालिअ | १६ | ५४, ६२, ६४, | फासिदिय | २६ | सू० १, ६७ |
| | | ६६ | फासय | १० | २० |
| फास | ४ | ११, १२ | फासुय | १ | ३४ |
| | १० | २५ | | २३ | ४, ८, १७ |
| | १६ | सू० १२ | | २५ | ३ |
| | १६ | १० | | ३५ | ७ |
| | २१ | १८ | फिट्ट* | | |
| | २८ | १२ | -फिट्टई | २० | ३० |
| | २६ | सू० ६७ | फुड | १६ | ४४ |
| | ३२ | ७४ से ८६ | फुस * | | |
| | ३४ | २, १८, १६ | -फुसई | २ | ६ |
| | ३६ | २० | -फुसति | ४ | ११ |
| फास * | | | | १० | २७ |
| -फासए | ५ | २३ | | २१ | १८ |
| -फासयई | २० | ३६ | फुस | २२ | १२ |
| -फागे | ६२ | ४७ | फुसंत | १२ | ३६ |
| -फागेज्ज | २१ | २२ | फेगे | १६ | १३ |
| फासइत्ता | २६ | सू० १ | फोक्कनास | | |
| फासओ | ३६ | १५, १६, २२ | (दि०) | १२ | ६ |
| | | से ४६, ८३, | | | |

| व | | | | | | |
|----------|----|----------------|--|--------------|----|---------------|
| वज्रम् * | | | | -बन्धव | २६ | सू० ३८, ६३ सं |
| -वज्रम् | ८ | ५ | | | | ७१ |
| -वज्रमति | ६ | ३० | | -बन्धन्ति | ३६ | २६७ |
| वज्रम् | ३० | ८ | | बन्धण | १ | १६ |
| वज्रमो | ६ | ३५ | | | १४ | ४८ |
| वज्रमाण | १४ | ४६ | | | २० | ३६ |
| | २३ | ८० | | | २६ | सू० २३ |
| वडिस | ३२ | ६३ | | बन्धव | ४ | ४ |
| वद्ध | १४ | ४५ | | | १० | ३० |
| | १६ | ५१, ५२, ६३, | | | १३ | २३ |
| | | ६५ | | | १८ | १४ |
| | २३ | ४० | | | १६ | १८ |
| | २६ | सू० ६, २३, ३३, | | बन्धवया | २० | ३४, ५५ |
| | | ३८, ६३ से | | | ४ | ४ |
| | | ७२ | | बन्धु | १८ | १५ |
| | ३३ | १ | | बन्ध | १२ | ४६ |
| वद्धग | ३३ | १८ | | | १३ | १३ |
| बन्ध | ६ | ६ | | | १६ | २८ |
| | १४ | १६ | | | २१ | १२ |
| | १६ | ३२, ६८ | | | ३१ | १४ |
| | २५ | २८ | | बन्धव्य | १२ | ३ |
| | २८ | १४ | | बन्धव्युत्ति | ३१ | १० |
| | २६ | सू० १, ५, २३ | | बन्धव्ये | १६ | सू० १ से १२ |
| बन्ध * | | | | | १६ | १ से ६, १५ |
| -बन्धव | २६ | सू० २, ६, २३, | | | २५ | ३० |
| | | | | | २६ | ३४ |

उत्तरजर्म्यण शब्द-सूची

२४३

| | | | | | |
|----------------|----|-------------|-------|----|------------|
| वम्भचेर- | | | वहिं | १४ | ४,१७ |
| समाहिद्विगण १६ | | | वहिया | ६ | १३ |
| वम्भण | २५ | १६,२६ से | | १२ | ३८ |
| | | ३१ | | २५ | ३ |
| वम्भदत्त | १३ | १,४,३४ | वहु | ३ | ६,६,१०, |
| वम्भयारि | १२ | ६,२२ | | | १५ |
| | १६ | सू० १ से १३ | | ४ | १२ |
| | १६ | १६ | | ६ | २ |
| | २१ | १३ | | ७ | ८ |
| | ३२ | ११,१३ | | ८ | १५ |
| वम्भलोग(अ) | १८ | २६ | | ९ | ६,१६ |
| | ३६ | २१०,२२६ | | १० | ३,१६ |
| वम्भवय(अ) | १६ | ३३ | | १२ | १६ |
| | ३२ | १५ | | १४ | ७,१०,१३ |
| वल | ३ | १८ | | १७ | ११ |
| | ६ | ४ | | २० | ३८ |
| | १० | २१ से २६ | | २१ | १७ |
| | ११ | २१ | | २२ | १७ से १६, |
| | १८ | १ | | | २७,३२ |
| | २१ | १४ | | २८ | १६,४०,६०, |
| वलभद् | १६ | १ | | | ७५ |
| वलव | ११ | १८ | | २५ | २४ |
| | २५ | २८ | | २६ | ५२ |
| वलसिरी | १६ | २ | | २६ | सू० १,५,२३ |
| वला | १६ | ५८ | | ३१ | १ |
| वलागा | ३२ | ६ | | ३३ | ७,१३ |

| | | | | | |
|-------------|----|-------------|-----------|----|-------------|
| बहु | ३५ | १२ | वायर | ३६ | १००, १०८, |
| | ३६ | २५०, २६१ | | | १०९, १११, |
| बहुमअ | १० | ३१ | | | ११७, ११८, |
| बहुमाण | १३ | ४ | | | १२० |
| | २९ | सू० ५ | वायरकाय | ३६ | ७४ |
| बहुय | १ | १० | वारगा | २२ | २२, २७ |
| | १९ | ९५ | वारस | ३६ | ५७, १३२, |
| बहुल | १० | १५ | | | २५१ |
| | १६ | सू० १ से ३ | वारसंगविज | २३ | ७ |
| | २६ | १५ | वारसहा | ३६ | २१० |
| | २९ | सू० ४० | वाल | १ | ३७ |
| बहुविह | १९ | ८६ | | २ | २४ |
| बहुसो | ६ | १ | | ५ | ३, ४, ७, ९, |
| | १९ | ६३ | | | १२, १५ से |
| | ३४ | ५६, ५७ | | | १७ |
| | ३६ | २६१ | | ६ | १० |
| बहुस्सुअ(य) | ५ | २९ | | ७ | ४, ५, १०, |
| | ११ | १५ से ३० | | | १७, १९, २८ |
| | २२ | ३२ | | ८ | ५, ७ |
| बहुस्सुअपुज | ११ | | | ९ | ४४ |
| बहुहा | १४ | १० | | १२ | ५, ३१ |
| बाढ | १२ | ३५ | | १३ | १७ |
| बायर | ३५ | ९ | | १७ | ४ |
| | ३६ | ७०, ७१, ७२, | | ३२ | ३, १७, २६, |
| | | ८४ से ८६, | | | २७, ३९, ४०, |
| | | ९२, ९३, | | | ५२, ५३, ६५, |
| | | | | | ६६, ७२, ७९, |
| | | | | | ९१, ९२ |

उत्तरजर्मण शब्द-सूची

| | | | | | |
|-----------|----|------------|------------|----|-----------------|
| बालगवी | २७ | ५ | विद्य | २६ | सू० ७२ |
| बालगपोइया | ६ | २४ | | ३६ | २३५ |
| बालत्त | ७ | २८ | विन्दु | १० | २ |
| बालभाव | ७ | ३० | | २८ | २२ |
| बालमरण | ३६ | २६१ | विराल | ३२ | १३ |
| बाला | २० | २६ | विल | २४ | १८ |
| बावत्तरि | २१ | ६ | | ३२ | ५० |
| बावोस | २ | सू० १ से ३ | बोअ | २४ | १२ |
| | ३१ | १५ | | २६ | १२, १६, १८, |
| | ३६ | ८०, १६५, | | | ४३ |
| | | १६६, २३३, | | २८ | ३२ |
| | | २३४ | वीय | १ | ३५ |
| बाह * | | | | १२ | १२ |
| -बाहइ | ३२ | ११० | | १७ | ६ |
| बाहल्ल | ३६ | ५६ | | २४ | १८ |
| बाहा | १६ | ३६ | | ३२ | ७ |
| | २२ | ३५ | वीयरुइ | २८ | १६, २२ |
| बाहिर | २८ | २१, ३४ | बुज्ज * | | |
| | ३० | ७ | -बुज्जइ | २६ | सू० २६, ४२, ५६, |
| बाहिरअ | १६ | ८८ | | | सू० ६२, ७४ |
| बाहिरग | ३० | २६ | -बुज्जन्ति | २६ | सू० १ |
| बाहिरिय | १२ | ३८ | -बुज्जामो | १४ | ४३ |
| बाहु | १२ | २६ | बुज्जिया | ३ | १६ |
| विइज्जिय | ३० | ६ | बुद्ध | १ | ८, १७, २७, |
| विइय | १० | ३० | | | २६, ४०, ४२ |
| | २६ | २, २४ | | ६ | ३ |

| बुद्ध | १० | ३६, ३७ | अब्बवी | ६ | ३७, ३९, ४१, ४३, ४५, ४७, ५० |
|------------|----|--|--------|----|--|
| | ११ | १३ | | १२ | ५ |
| | १४ | ५१ | | १३ | ४ |
| | १८ | २१, २४, ३२ | | १६ | ६ |
| | २३ | ३, ७ | | २० | ३१ |
| | २५ | ३२ | | २१ | ६ |
| | ३५ | १ | | २२ | १५ |
| | ३६ | २६८ | | २३ | २१, २२, २५, ३१, ३७, ४२, ४७, ५२, ५७, ६२, ६७, ७२, ७७, ८२ |
| बुद्धपुत्र | १ | ७ | | २५ | १० |
| बुद्धि | ८ | ५ | -आह | १६ | सू० ३ से १२ |
| | १३ | ३३ | | २२ | ८ |
| | ३२ | ४ | | २ | ४५ |
| बुद्धव्य | १६ | १३ | | २० | ३१ |
| बुवन्त | २३ | २१, २२, २५, ३१, ३६, ४२, ४७, ५१, ५७, ६२, ६७, ७२, ७७, ८२ | -आहंसु | १२ | २५ |
| | | | | २१ | १४ |
| बुवाण | २३ | ३१ | | १६ | २४, ४४, ७५ |
| बुह | ३० | ३५ | -आह | २५ | १६ से २७, ३२ |
| | ३३ | २५ | | २५ | १४ |
| बू # | | | -वित | १६ | |
| -अब्बवी | ६ | ६, ८, ११, १३, २७, १६, २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, | -बूम | २५ | |
| | | | -बूहि | २५ | |
| | | | बूर | ३४ | १६ |

| | | | | | |
|----------------|----|-------------|-----------|----|-------------|
| वेद्वन्दिय | ३६ | १२६, १२७, | भड | १६ | २२ |
| | | १३०, १३२ से | | ३६ | २६७ |
| | | १३४ | भंडग(य) | २४ | १३ |
| वेद्वन्दियककाय | १० | १० | | २६ | ८, २१, ५३ |
| बोन्दि (दि०) | ३५ | २० | भंडवाल | २२ | ४५ |
| | ३६ | ५५, ५६ | भंत | ६ | ५८ |
| बोद्धव्व | ३६ | १०, ७१, ७६, | | १२ | ३० |
| | | ६५, ६६, | | १७ | २ |
| | | १०६, ११०, | | २० | १५ |
| | | १३८, १७१, | | २३ | २२ |
| | | १८८, २०६ | | २६ | ६ |
| बोहि | ३ | १६ | | २६ | सू० १ से ७२ |
| | ८ | १५ | | २६ | |
| | ३६ | २५७ से २५६ | भंस * | | |
| बोहिलाभ | १७ | १ | -भसेज्जा | १६ | सू० ३ से १२ |
| | २६ | सू० १५ | भक्ख | १ | ३२ |
| | | | | ६ | १४ |
| | | | भक्खण | २३ | ४६ |
| | | | | ३६ | २६७ |
| न्न | | | भक्खर | २३ | ७८ |
| भइय | ३६ | २२ से ४६ | भक्खियव्व | २२ | १५ |
| भइणो | २० | २७ | भक्खी | २३ | ४५ |
| भइत्ता | १५ | ४ | भगव | २ | सू० १ से ३ |
| भइयव्व | २८ | २६ | | ६ | १७ |
| | ३६ | ११ | | १६ | सू० १ |
| भंज * | | | | १८ | ८ से १०, |
| -भंजई | २७ | ४ | | | १६ |
| -भंजए | २७ | ७ | | | |

| | | |
|----------|----|------------|
| भगव | २१ | १,१० |
| | २२ | ४,२२ |
| | २३ | ५,६ |
| | २६ | सू० १,७४ |
| भगवंत | १६ | सू० १ से ३ |
| भग | ५ | १४,१५ |
| | १६ | ६१ |
| | २२ | ३४,३६ |
| भज्ज * | | |
| -भज्जई | २७ | ३ |
| -भज्जंति | २७ | ८ |
| भज्जा | ६ | ३ |
| | १३ | २५ |
| | २१ | ७ |
| | २२ | २,४,६ |
| भट्ट | २० | ४१ |
| भण * | | |
| -भण | २५ | १२ |
| -भणइ | २२ | १७,२५,३१ |
| भणंत | ६ | ६ |
| भणिय | ३० | २६ |
| | ३६ | ६० |
| भत्त | १ | ३३ |
| | १२ | २७,३५ |
| | १६ | ७,१२ |
| | १६ | ७६,८०,६५ |

| | | |
|----------|----|----------|
| भत्त | २६ | ३१ |
| | २७ | १४ |
| | २६ | सू० १,४१ |
| | ३५ | १०,११ |
| भत्ति | २० | ५८ |
| | २६ | सू० ५ |
| भद्द | १ | ३७ |
| | ६ | १६ |
| | २२ | १७,३७ |
| भद्दता | २६ | सू० २४ |
| भद्दवअ | २६ | १५ |
| भद्दा | १२ | २०,२४,२५ |
| भम * | | |
| -भमइ | २५ | ३६ |
| -भमिहिसि | २५ | ३८ |
| भमर | २२ | ३० |
| | ३६ | १४६ |
| भय | १ | २६ |
| | ५ | १६ |
| | ६ | ६ |
| | ६ | ५४ |
| | १४ | २,४,५१ |
| | १५ | १४ |
| | १८ | ६ |
| | १६ | ४५,४६,६१ |
| | २१ | १६ |

| | | |
|-----------|----|---------------------------------|
| भय | २२ | १४ |
| | २४ | ६ |
| | २५ | २१, २३, ३८ |
| | ३२ | १०२ |
| भय * | | |
| -भाएज्ज | २१ | २२ |
| -भयइ | ११ | ११ |
| -भयाहि | २२ | ३७ |
| भयंकर | २३ | ४३ |
| भयंत | २० | ११ |
| भयट्टाण | ३१ | ६ |
| भयव | ६ | २, ४, १२ |
| | २३ | ८६ |
| भयाईय | २५ | २१ |
| भयावह | १६ | ६८ |
| | २१ | ११ |
| भरह | १८ | ३४, ४० |
| भरहवास | १८ | ३५ |
| भरेडं | १६ | ४० |
| भल्ली | १६ | ५५ |
| भव (भवत्) | २ | १ |
| | १२ | १०, ४५ |
| भव * | | |
| -भवड | २० | १५ से १७ |
| | २६ | सू० २, ३, ५, सू० १७, १८, २०, |

| | | |
|------------|----|---|
| -भवइ | २६ | सू० ३७, ३९, ४३; सू० ४५, ४८, ४९, सू० ५४, ५५, ६०, सू० ७२ |
| | ३० | २ |
| | ३५ | १४ |
| -भवति | १३ | २२ |
| | १४ | १२ |
| | १५ | १४ |
| | २६ | सू० ३४ |
| | ३२ | १११ |
| -भवामो | १४ | २८ |
| -भवाहि | ६ | ४२ |
| | १८ | ११ |
| | २२ | २६ |
| -भविस्सई | २ | ४५ |
| | २२ | १६, ३७ |
| -भविस्ससि | ६ | ५ |
| | २० | १२ |
| | २२ | ४४, ४५ |
| -भविस्सामु | १४ | १७ |
| -भविस्सामो | १४ | ४५ |
| -भवे | ५ | ३ |
| | ७ | १६, २६ |
| | ६ | ४८ |
| | १४ | ३६ |
| | २२ | ४२ |

| | | | | | |
|---------|----|-------------|-----------|----|-------------|
| भवे | २८ | ३२ | भव (भव) | २१ | २४ |
| | ३० | ५, ६, १२, | | २३ | ८४ |
| | | १५, १८, २०, | | २६ | सू० ४१, ६१ |
| | | २१, २४, ३४ | | ३० | ६ |
| | ३३ | ८ | | ३२ | ३४, ४७, ६०, |
| | ३५ | १ | | | ७३, ८६, ९९ |
| | ३६ | ३, ४, ६, | | ३४ | ५८, ५९ |
| | | २२, २३, २७, | | ३६ | ६३, ६४ |
| | | २८, ४३, ४५, | भवग्गहण | १० | १३, १४ |
| | | ५७, ६२, ६४, | | २६ | सू० २ |
| | | ८०, ८८, | भवण | २२ | १३ |
| | | १०२, १२२, | भवणवद् | ३४ | ५१ |
| | | १५६, १६७, | भवणवासि | ३६ | २०५, २०६ |
| | | १७१, १७६, | भवतण्हा | २३ | ४८ |
| | | १८१, १८६, | भवसिद्धिय | ३६ | २६८ |
| | | १९१, १९३, | भवित्ता | २० | ४१, ४७ |
| | | २०२, २१६, | | २६ | सू० २६ |
| | | २२०, २२४ से | भवित्ताण | १४ | १ |
| | | २४३, २४५, | भाग(अ) | २६ | ११, १७ |
| | | २५१, २५८ | | ३४ | ५२ |
| भव (भव) | ६ | २२ | | ३६ | १९१ |
| | १० | ४, १५ | भागि | २६ | सू० ४५ |
| | १३ | २४ | भागु | २३ | ७६, ७७ |
| | १४ | १ | भाय | १ | ३६ |
| | १८ | १७, २६ | | ६ | ३ |
| | १९ | १९, २१, ७४ | | १३ | २२ |

उत्तरज्मयण शब्द-सूची

| | | | | | |
|---------|----|--|-------------|----|----------------------|
| भायण | १६ | १२ | भाव | ३२ | २१, ८७ से ६६, १०२ |
| | २६ | २२, ३६ | | ३३ | १६ |
| | २८ | ६ | | ३६ | २६० |
| भायर | १३ | ४, ५ | भावलो | २१ | १६ |
| | २० | २६ | | २३ | ८७ |
| भार | १० | ३३ | | २४ | ६, ७ |
| | १२ | १५ | | ३६ | ३ |
| | १३ | १६ | भावणा | १४ | ५२ |
| | २६ | सू० १३ | | १६ | ६३ |
| भारवह | २६ | सू० १३ | | ३१ | १७ |
| भारह | १८ | ३४, ३६, ३८, ४१ | | ३६ | २६३ से २६६ |
| भारिया | १० | २६ | भावसुस्तूसा | ३० | ३२ |
| | २० | २८ | भाविय | १४ | ५२ |
| | | | भावुज्जुयया | २६ | सू० ४६ |
| भारुण्ड | ४ | ६ | भावेत्तु | १६ | ६४ |
| भाव | १४ | १०, १६ | भावेमाण | २६ | सू० ४०, ६१ |
| | २० | १ | भावोमाण | ३० | २३ |
| | २२ | ४४ | भास * | | |
| | २६ | ३६ | -भासइ | ११ | ८ |
| | २८ | १५, १८, १६, २४, २५, ३५ | -भासई | ८ | ३ |
| | २६ | सू० १, १८, २३, सू० ३२, ३७, ४६, सू० ५१, ६०, ६२ ३० १४, २३, २४ | -भासेज्ज | ११ | १२ |
| | | | -भासेज्जा | २४ | १० |
| | | | भास | १ | ११ |
| | | | भास | २५ | १८ |
| | | | भासअ | ३२ | १ |

२५२

परिशिष्ट-२

| | | |
|--------------|----|--------|
| भासा | १ | २४ |
| | २ | २५ |
| | ६ | १० |
| | १२ | २ |
| | १८ | २६ |
| | २० | ४० |
| | २४ | २, १० |
| भासि | १२ | १६ |
| भासिय | १० | ३७ |
| | १८ | ५२ |
| | १६ | ६७ |
| | २८ | १ |
| भासियन्व | १६ | २६ |
| भासुञ्जुयया | २६ | सू० ४६ |
| भिउडि | २७ | १३ |
| भिगारी (दि०) | ३६ | १४७ |
| भिक्ख | २५ | ३७, ३८ |
| भिक्खमाण | १४ | २६ |
| भिक्खवत्ति | ३५ | १५ |
| भिक्खा | ८ | ११ |
| | १२ | ३, ६ |
| | १४ | १७ |
| | २५ | ४, ६ |
| | २७ | १० |
| भिक्खाअ | ५ | २२, २८ |

| | | |
|-------------|----|-------------|
| भिक्खायरिया | २ | सू० १ से ३ |
| | १४ | २६, ३३, ३५ |
| | १६ | ३२ |
| | २६ | १२ |
| | ३० | ८, २५ |
| भिक्खियन्व | ३५ | १५ |
| भिक्खु | १ | १, २४, ३१, |
| | | ३२ |
| | २ | सू० १ से ३ |
| | २ | २, ७, १२, |
| | | १६, २२, २४, |
| | | २६, २८, २९, |
| | | ४४ से ४६ |
| | ४ | ११ |
| | ५ | १६, २०, २५ |
| | ७ | २२ |
| | ८ | २, ४, ११, |
| | | १६ |
| | ९ | १५, १६ |
| | ११ | १, १५ |
| | १२ | १, २६, ४०, |
| | | ४३ |
| | १३ | १२, १४, १७, |
| | | ३० |
| | १५ | १ से १६ |
| | १६ | सू० १ से ३ |

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

| | | | | | |
|------------|----|--------------------|------------|----|--------|
| मिक्खु | १६ | २,३,७,९, १५ | भीय | २ | २१ |
| | | | | १८ | ३ |
| | १९ | २४,८२ | | १९ | ७१ |
| | २१ | १३,१६,१७, १९ | भीरु | २२ | ३५,३६ |
| | | | | २७ | १० |
| | २५ | ६,८,३७ | | ३२ | १७ |
| | २६ | ११,१७ | | ३४ | २८ |
| | ३० | १,४,२४, ३१,३६ | भुज(ग) | ३६ | १८१ |
| | | | भुज * | | |
| | ३१ | ३ से २१ | -भुंजइ | १ | ५ |
| | ३५ | १,५,७, ११,१३ से | -भुज्जई | ७ | ३ |
| | | | | १२ | १० |
| | | १५ | -भुंजए | ९ | ४४ |
| मिक्खुय | १२ | २७ | -भुंजसू | १२ | ३५ |
| मिक्खुवम्म | २ | २६ | -भुंजामि | २० | १४ |
| | ३१ | १० | -भुंजामु | १४ | ३१ |
| मिच्च | १४ | ३० | -भुंजाहि | १२ | ३४ |
| मित्ति | १६ | सू० ७ | | १३ | १४ |
| मिन्न | १२ | २५ | | १४ | ३३ |
| | १९ | ५५,६७ | | २० | ११ |
| | २३ | ५३ | -भुंजिज्जा | १६ | सू० १० |
| मिसं | ५ | ४ | | ३५ | १५ |
| मीम | १५ | १४ | -भुंजिमो | २२ | ३८ |
| | १९ | ४५,७२ | -भुंजे | १ | ३५ |
| | २१ | १६ | -भुंजेज्ज | ६ | ७ |
| | २३ | ४८,५५,५८ | -भुंजेज्जा | १६ | ८ |

| | | | | | |
|-----------|----|------------|----------|----|------------|
| भुंजंत | २ | ११ | भूय | १ | ४५ |
| भुंजमाण | ५ | ६ | | २ | १७ |
| | ७ | ६ | | ६ | २ |
| भुंजित्तु | ६ | ३ | | ८ | १० |
| भुंजिय | १३ | ३४ | | ६ | ५ |
| जभुंयिा | ७ | ८ | | १२ | ६,७,२६, |
| भुज्जमाण | ३२ | २० | | | ३० |
| भुज्जो | ५ | २७ | | १३ | १२ |
| | ७ | १२, २५, २७ | | १४ | १३ |
| | १२ | २५, ३६ | | १६ | २५, ८६ |
| | १४ | २० | | २० | ३५, ५६ |
| | २६ | १८ | | २१ | १३ |
| | २६ | सू० २३ | | २३ | २० |
| भुत्त | १४ | १२, ३२ | | २७ | १७ |
| | १६ | १२ | | २६ | सू० १८, ४३ |
| | १६ | ११, १७ | | ३५ | ८, १० |
| भुत्तभोगि | १६ | ४३ | | ३६ | २०८ |
| | २२ | ३८ | भूयगाम | ३१ | १२ |
| भुयंग | १४ | ३४ | भूयगाम | ५ | ८ |
| भुयमोयग | ३६ | ७५ | भूयत्थ | २८ | १७ |
| भुया | १६ | ४२ | भूसण | १६ | १३ |
| भूज | २६ | सू० ४० | भे | १२ | २३ |
| भूइकम्म | ३६ | २६४ | | २० | ५५ |
| भूइपन्न | १२ | ३३ | भेत्तूणं | ६ | २२ |
| भूमि | १३ | ६ | भेय | २ | १३ |
| | २६ | ३८ | | ४ | ६, १३ |

उत्तरज्जमयण शब्द-सूची

२५५

| भेय | ५ | ३१ | भोग(य) | १४ | ६,३२ से |
|---------|----|-------------|---------|----|-----------|
| | १६ | सू० ३ से १२ | | | ३४,३७,४४ |
| | ३३ | ७,११,१३ | | १८ | ४१ |
| | ३४ | ८ | | १९ | ११,१७,४३, |
| | ३६ | ६६,७७, | | | ६६ |
| | | १०७,१२७, | | २० | ६,८,११, |
| | | १३६,१४५, | | | १४,५०,५७ |
| | | १७१,१९५, | | २२ | ३८,४६ |
| | | १९७,१९८ | | २५ | ३६ |
| भेयण | २६ | सू० ४ | | ३२ | ६३,१०१ |
| भेयणी | २० | १८ | | ३३ | १५ |
| भेरव | १५ | १४ | भोगि | २५ | ३६ |
| | २१ | १६ | भोच्चा | ३ | १९ |
| भो | २ | २८ | | ७ | ११ |
| | ६ | ७,१० | | ६ | ३८ |
| | १२ | १५ | | १४ | ४४ |
| | २५ | ८ | | १७ | ३ |
| भोइ | ७ | ७ | भोच्चाण | १४ | ६ |
| भोइत्ता | ६ | ३८ | भोत्तुं | १७ | २ |
| भोइय | १५ | ६ | भोम | १५ | ७ |
| भोई | १४ | ३२,३४ | भोमिज्ज | ३६ | २०४ |
| भोग(य) | ३ | १९ | भोमेज्ज | ३६ | २१६ |
| | ८ | ५,१४ | भोयण | २ | ३० |
| | ९ | ३,५१,६२ | | ६ | ७ |
| | १३ | १४,२०,२७, | | १२ | ११ |
| | | ३२,३३ | | १५ | ११ |

२५६

परिशिष्ट-२

| | | |
|----------|----|----------|
| भोयण | १६ | सू० ६,१० |
| | १६ | १२ |
| | ३० | २६ |
| भोयराय | २२ | ४३ |
| भोयावेडं | २२ | १७ |

च

| | | |
|--------|----|----------|
| मअ | १२ | ५ |
| | १६ | ७ |
| मजय(अ) | २२ | २४ |
| | ३६ | १६,३५ |
| मंगल | २२ | ६ |
| | २६ | ४२ |
| | २६ | सू० १,१५ |
| मंत | १५ | ८ |
| | २० | २२ |
| | ३६ | २६४ |
| मंधु | ८ | १२ |
| मंस | २ | ११ |
| | ५ | ६ |
| | ७ | ६ |
| | १६ | ६६ |
| | २२ | १५ |
| मगर | ३६ | १७२ |

| | | |
|---------|----|------------|
| मगरजाल | १६ | ६४ |
| मगहाहिव | २० | २,१०,१२ |
| मग | ३ | ६ |
| | ५ | १४ |
| | ७ | २५ |
| | ६ | २६ |
| | १० | ३१ से ३३ |
| | १३ | ३० |
| | १४ | २ |
| | २० | ४०,५०,५१, |
| | | ५५ |
| | २१ | २० |
| | २३ | ५६,६१ से |
| | | ६३,८७ |
| | २४ | ४,५ |
| | २८ | १ से ३ |
| | २६ | सू० ३,६,१७ |
| | ३२ | ३,८६, |
| | | १११ |
| | ३५ | १ |
| मग * | | |
| -मगहा | १२ | ३८ |
| मगगामि | २५ | २ |
| मघव | १८ | ३६ |
| मच्छु | ५ | १५ |
| | १३ | २१,२२ |

| | | | | | |
|---------|----|----------------------------------|-----------|----|--------------------|
| मच्चु | १४ | ४, १४, २३, २७, ५१ | मज्झिमगी | २३ | २७ |
| | २० | ४८ | मज्झिमय | ३६ | २५१ |
| | २३ | ८१ | मट्टिया | ५ | १० |
| | ३२ | २४, ३७ | मट्टियामय | २५ | ४० |
| मच्छ | १४ | ३५ | मड | १ | ३६ |
| | १६ | ६४ | | ३४ | १६ |
| | ३२ | ६३ | मडग | ३४ | १६ |
| | ३६ | १७२ | मडम्ब | ३० | १६ |
| मच्छरि | ३४ | २६ | मण | १ | ४३, ४७ |
| मच्छिय | ३६ | ५६ | | २ | ११, २५, २६ |
| मच्छिया | ८ | ५ | | ४ | ११, १२ |
| | ३६ | १४६ | | ६ | ११ |
| | | | | ८ | १० |
| मज्ज | | | | १२ | २१, ३२ |
| -मज्जई | ११ | ७, ११ | | १५ | १२ |
| मज्झ | १२ | १२ | | १६ | २ |
| | १३ | १२ | | १८ | २० |
| | १७ | २१ | | २२ | २१ |
| | २३ | ६६ | | २३ | ५८ |
| | ३२ | १३, ३४, ४७, ६०, ७३, ८६, ९९ | | २४ | २१ |
| | ३६ | ५६ | | २५ | २५ |
| मज्झिम | २३ | २६ | | ३० | ११ |
| | ३६ | ५०, २१३, २१४ | | ३२ | २१, ८७, ८८, १०० |
| | | | | ३५ | ४, १३, १८ |

२५८

| | | |
|-----------|----|-----------|
| मणगुत्त | १२ | ३ |
| | २२ | ४७ |
| | २६ | सू० ५४ |
| मणगुत्तया | २६ | सू० १,५४ |
| मणगुत्ति | २४ | २,२० |
| मणजोग | २६ | सू० ७३ |
| मणनाण | २८ | ४ |
| | ३३ | ४ |
| मणसमाघार- | | |
| णया | २६ | सू० १,५७ |
| मणसीकर + | | |
| -मणसीकरे | २ | २५ |
| मणहारि | २५ | १७ |
| मणा | १८ | ७ |
| मणि | ६ | ५ |
| | ६ | ४६ |
| | १६ | ४ |
| | ३६ | ७४ |
| मणुअ | १० | १,२ |
| | ३२ | ३४,४७,६०, |
| | | ७३,८६,९९, |
| | | १०० |
| | ३६ | १५५,१६५, |
| | | २००,२०२ |
| मणुन्त | २६ | सू० ४६,६३ |
| | | से ६७ |

मणुन्न

३२

मणुन्नया
मणुयाहिव
मणुस्स

मणुस्सया
मणुस्सिद
मणूस
मणोरम

परिशिष्ट-२

२१ से २३.

३५,३६,४८,

४९,६१,६२,

७४,७५,८७,

८८

१०६

४२

४८

१६

२

७

६

२०

२१

२२

२६

३३

३४

३

१८

४

६

१४

१६

१६

२५

३२

२१ से २३.

३५,३६,४८,

४९,६१,६२,

७४,७५,८७,

८८

१०६

४२

४८

१६

२

७

६

२०

२१

२२

२६

३३

३४

३

१८

४

६

१४

१६

१६

२५

३२

२०

उत्तरज्भयण शब्द-सूची

| | | | | | |
|------------|----|---------------|------------|----|----------|
| मणोरह | २२ | २५ | मन्ल * | | |
| मणोसिला | ३६ | ७४ | -मन्नई | १ | ३८, ३९ |
| मणोहर | १६ | सू० ६ | | ५ | ९ |
| | ३२ | १७ | -मन्नाए | १ | २८ |
| | ३५ | ४ | -मन्नति | ६ | ८ |
| मण्डल | ३१ | ३ से २० | -मन्नसी | २३ | ६५, ८० |
| मण्डलिया | ३६ | ११८ | -मन्ने | १९ | ६ |
| मण्डव | १८ | ५ | | २७ | १२ |
| मण्डकुच्छि | २० | २ | मन्नांत | ३ | १४ |
| मण्णमाण | ४ | ७ | | २७ | १३ |
| मत्त | ५ | १० | मन्नमाण | १७ | ६ |
| | २२ | १० | ममत्त | १९ | ८६, ९८ |
| मत्ता | ३ | २० | मम्म | ११ | ४ |
| मद्द | ९ | ५७ | मम्मय | १ | २५ |
| | २७ | १७ | मय (मद) | १२ | ५ |
| | २९ | सू० १, ५०, ६९ | | १६ | ७ |
| मद्दया | २९ | सू० ५० | | २९ | सू० ५० |
| मन्द | ४ | १२ | | ३१ | १० |
| | ८ | ७ | मय (मृत) | १८ | १४, १५ |
| | १२ | ३९ | | २७ | ६ |
| | १८ | ७ | मय (मयट्) | ३६ | ९० |
| | २९ | सू० २३ | मयंगा | १३ | ६ |
| मन्दर | ११ | २९ | मर * | | |
| | १९ | ४१ | -मरई | ५ | १६, ३२ |
| मन्दिय | ८ | ५ | -मरति | ३६ | २५७, २५९ |
| मन्दिर | ९ | १२ | -मरिस्तामि | १४ | २७ |

२६०

| | | |
|----------|----|-------------|
| -मरिहिति | ३६ | २६१ |
| -मरिहिसि | १४ | ४० |
| मरगय | ३६ | ७५ |
| मरण | ५ | ३, १८ |
| | १६ | १४, १५, २३, |
| | | ४६, ६० |
| | २२ | ४२ |
| | ३० | १२ |
| | ३२ | ७ |
| | ३६ | २५६, २६७ |
| मरणंत | ५ | १६, २६ |
| | ७ | ६ |
| मरणकाल | ३० | ६ |
| मरिस * | | |
| -मरिसेहि | २० | ५७ |
| मरु | १६ | ५० |
| मल | १ | ४८ |
| | ४ | ७ |
| | ५ | १० |
| | २५ | ११ |
| मल्ल | २० | २६ |
| | ३५ | ४ |
| मस | २१ | १८ |
| मसय(ग) | २ | सू० ३ |
| | २ | १० |
| | १५ | ४ |

| | | |
|----------|----|------------|
| मसय(ग) | १६ | ३१ |
| | ३६ | १४६ |
| मसारगल्ल | ३६ | ७५ |
| मह | १३ | १२ |
| | १४ | १८ |
| | १८ | २, १८ |
| | १६ | ५०, ६७, ६८ |
| | २० | ५१, ५३ |
| | २१ | ११, २४ |
| | २३ | ६५, ६६ |
| महज्जुइ | १ | ४७ |
| महड्डिय | ५ | २५ |
| महणव | १६ | १० |
| | ३२ | १०५ |
| महत्य | २३ | ८८ |
| महन्त | १६ | १८, २० |
| | २१ | ११ |
| महप्प | १२ | २२, ३५ |
| | १६ | ३२ |
| | २१ | १ |
| | २७ | १७ |
| महप्पसाय | १२ | ३१ |
| महब्भय | १६ | ७२ |
| महब्बय | १६ | १०, २८ |
| | २० | ३६ |
| | २१ | १२ |
| | २३ | ८७ |

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

| | | | | | |
|---------------|----|--------|---------|----|------------|
| महाजंत | १६ | ५३ | महाभाग | १२ | ३४ |
| महाजय | १२ | ४२ | | २० | ५६ |
| महाजस | १२ | २३ | | २३ | २१ |
| | १८ | ३६, ४६ | | ३६ | ६३ |
| | १६ | ६७ | महामुणी | २ | १० |
| | २३ | २६ | | १२ | ८ |
| महाणुभाग | १२ | २३, ३७ | | १८ | २३ |
| | १३ | ११, २० | | २० | ५२ |
| महातलाय | ३० | ५ | | २३ | १२, २३, ४८ |
| महादीव | २३ | ६६ | | २५ | २, ६, १३, |
| महादोस | ३५ | १५ | | | ३४ |
| महानाग | १६ | ८६ | | ३५ | १७ |
| महानिज्जर | २६ | सू० २० | महामेह | २३ | ५१ |
| महानियट्टिज्ज | २० | | महायस | १३ | ४ |
| | २० | ५३ | | १८ | ३६ |
| महापउम | १८ | ४१ | | २० | ५३ |
| महापज्जवसाण | २६ | सू० २० | | २१ | २२ |
| महापन्न | ३ | १८ | | २२ | ४, २० |
| | ५ | १ | | २३ | २, ६, ६, |
| | २२ | १५, १८ | | | १८, ८६ |
| महापह | १ | २६ | महारभ | ७ | ६ |
| | ५ | १४ | महारण | १६ | ७८ |
| महापाण | १८ | २८ | महाराय | १४ | ४८ |
| महापाली | १८ | २८ | | २० | ६, १७, १६, |
| महावल | १८ | ५० | | | २५ से २८, |
| महाभर | १६ | ३५ | | | ३० |

| | | | | | |
|------------|----|------------|--------|----|-------|
| महारिनि | १० | ४७ | मही | १८ | ४२,५१ |
| महालय | १० | ३० | | २७ | १७ |
| | १३ | २६ | महु | १३ | १३ |
| | २३ | ६६ | | १६ | ७० |
| महावण | १८ | ४८ | | ३४ | १४ |
| | १६ | ६० | | | |
| महाविभाष | ३६ | २४४ | महुर | ६ | ५५ |
| महावीर | ० | सू० १ मे ३ | | ३६ | १८ |
| | ५ | ४ | महुरज | ३६ | ३३ |
| | २१ | १ | महेमि | ४ | १० |
| | २६ | सू० १,७४ | | १२ | २७ |
| महामाग | ३० | १८ | | १३ | ३५ |
| महामिणाग | १२ | ४७ | | २० | ५५ |
| महामुक्क | | | | २१ | २०,२३ |
| (महामुक्क) | ३ | १४ | | २३ | ७३,८३ |
| महामुक्क | | | | २८ | ३६ |
| (महामुक्क) | ३६ | २११,२२८ | महोडर | ७ | २ |
| महामुय | २० | ५३ | महोयहि | २३ | ८५ |
| महिज | ०५ | १६ | महोग | ३६ | २०७ |
| महिद्विय | १ | ४८ | महांह | ५ | १ |
| | ११ | ०२ | | २३ | ७० |
| | १३ | ४,७,११, | | १ | १० |
| | | २०,०८ | मा | | |
| | १८ | ३६ मे ३८ | माइ | ७ | ५ |
| | १६ | = | | १७ | ११ |
| | ०२ | १,३,८ | | २७ | ६ |
| महिया | ३६ | ८५ | | ३६ | २६५ |
| महिम | १६ | ५७ | | | |
| | ३२ | ७६ | माडक | ५ | ६ |

उत्तरजभयण शब्द-सूची

२६३

| | | | | | |
|-------------|----|--------------|-------------|----|-----------------|
| माइवाहय | ३६ | १२८ | माणुस | ३१ | ५ |
| माण | ४ | १२ | | ३५ | २० |
| | ६ | ३६, ५४, ५६ | माणुसत्त | ३ | १, ११ |
| | १२ | १४, ४१ | | ७ | १६, १७ |
| | १८ | ४२ | | १० | १६ |
| | १६ | ६० | | १६ | १४ |
| | २४ | ६ | माणुस्त | ३ | ८ |
| | २६ | सू० १, २, ६६ | | १८ | २६ |
| | ३२ | १०२ | | २० | ११ |
| | ३४ | २६ | | २२ | ३८ |
| माणव | २१ | १६ | माणुस्तअ(ग) | ३ | १६ |
| | ३२ | १७ | | ७ | १२, २३ |
| | ३५ | २ | | १४ | ६ |
| माणवेयणिज्ज | २६ | सू० ६६ | | १५ | १४ |
| माणस | १६ | ३, ४५ | | १६ | ४३ |
| | २३ | ८० | मायल्ल | २ | ३ |
| | २६ | सू० ४, ४५ | माया (माया) | १ | २४ |
| माणसिय | ३२ | १६ | | ४ | १२ |
| माणुस | ३ | १६ | | ६ | ३६, ५४, ५६ |
| | ७ | १६, २० | | १२ | ४१ |
| | ६ | १ | | १८ | २६ |
| | १० | ४ | | २४ | ६ |
| | १६ | ७३ | | २६ | सू० १, २, ६, ७० |
| | २० | १४ | | ३२ | १०२ |
| | २५ | २५ | | ३४ | २६ |
| | २६ | सू० ३ | | | |

| | | | | | |
|-----------------|----|---------------------------|-------------|----|---------------|
| माया (मातृ) | ६ | ३ | माहण(न) | १४ | ५, ३८, ५३ |
| | १३ | २२ | | १५ | ६ |
| | २० | २५ | | १८ | २१ |
| | २४ | ३ | माहणत्त | २५ | ३५ |
| माया (मात्रा) | ६ | १४, १५ | माहणी | १४ | ५३ |
| मायामुसा | ३२ | ३०, ४३, ५६, ६६, ८२, ९५ | माहिद | ३६ | २१०, २२५ |
| मायावेयणिज्ज | २६ | सू० ७० | मिअ (मृग) | १ | ५ |
| मारणंतिय | ५ | २ | | ८ | ७ |
| मारिय | १६ | ६४, ६५ | | ११ | २० |
| मालुग (दि०) | ३६ | १३७ | | १३ | ६, २२ |
| मास(माष) | ८ | १७ | | १८ | ३, ५, ६ |
| मास(मास) | ६ | ४०, ४४ | | १६ | ६३, ७६ से |
| | १२ | ३५ | | | ७८, ८३ |
| | २६ | १३, १४ | | २३ | १६ |
| | ३६ | १५१, २५१, २५५ | मिउ | ३२ | ३७ |
| मासक्खमण | २५ | ५ | | १ | १३ |
| मासिय | १६ | ६५ | | २७ | १७ |
| | ३६ | २५५ | | २६ | सू० ५० |
| माहअ (दि०) | ३६ | १४८ | मिगचारिया | १६ | ८१, ८२, ८४ |
| माहण (ब्राह्मण) | ६ | ६, ३८, ५५ | मिगव्वा | १८ | १ |
| | २५ | १, ४, १८ से | मिच्छकार | २६ | ३ |
| | | २७, ३२, ३४ | मिच्छत्त | १० | १६ |
| माहण (माहन) | १२ | ११, १३, १४, ३०, ३८ | | २६ | सू० २, ५७, ६१ |
| | | | मिच्छदिट्ठि | ३४ | २५ |
| | | | मिच्छाकार | २६ | ६ |
| | | | मिच्छादंड | ६ | ३० |

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

२६५

| | | |
|---------------|----|----------|
| मिच्छादसण | २६ | सू० १,७२ |
| | ३६ | २५७,२५६ |
| मिच्छादसणः- | | |
| सल्ल | २६ | सू० ६ |
| मिच्छादिट्ठि | १८ | २७ |
| मिण * | | |
| -मिणे | ७ | २३ |
| मित्त(मित्र) | १० | ३० |
| | ११ | ८,१२ |
| | १३ | २३ |
| | १८ | १४ |
| | १६ | २५,८७ |
| | २० | ११,३७ |
| मित्त(मात्र) | १६ | ७४ |
| | ३६ | ७ |
| मित्तव | ३ | १८ |
| मित्ति | २६ | सू० १८ |
| मिय | १ | ३२ |
| | १६ | ८ |
| | २४ | १० |
| | ३२ | ४ |
| मियचारिया | १६ | ८५ |
| मिया | १६ | १,६७ |
| मियापुत्त | १६ | २,६,८,९६ |
| मियापुत्तिज्ज | १६ | |
| मिलेक्खु | १० | १६ |

| | | |
|-------------|----|---------------|
| मिहिला | ६ | ४,५,७,९ |
| | | १४ |
| मिहोकहा | २६ | २६ |
| मुडुय | १८ | ४४ |
| | १६ | ३ |
| मुंच * | | |
| -मुंचई | २० | ४७ |
| -मुच्चइ | २६ | सू० २६,४२,५६, |
| | | सू० ६२,७४ |
| -मुच्चई | ५ | २२,२४ |
| | ६ | ३० |
| -मुच्चए | ८ | २ |
| -मुच्चेज्ज | ८ | ८ |
| -मुच्चेज्जा | २० | ३२ |
| -मुच्चंति | २६ | सू० १ |
| मुक्क | २३ | ४०,४१,४६ |
| | ३२ | ११० |
| मुग्गर | १६ | ६१ |
| मुच्छियं | १० | २० |
| | १३ | २६ |
| | १४ | ४३ |
| | १५ | २ |
| | १८ | ३ |
| मुज्झ * | | |
| -मुज्झसी | १८ | १३ |
| मुट्ठि | १६ | ६७ |

| | | | | | |
|--------|----|-----------|----------------|----|----------|
| मुट्टि | २० | ४२ | मुणि | ३५ | २,१६ |
| | २२ | २४ | | ३६ | २४६,२५०, |
| मुणि | १ | ३६ | | | २५५ |
| | २ | ६,१५,३८ | मुणिवर | ६ | ६० |
| | ४ | ८ | मुण्येव्व | ३० | २०,२३ |
| | ५ | ३२ | मुण्डहइ | २० | ४१ |
| | ७ | ३० | मुण्डि | ५ | २१ |
| | ८ | ३ | मुण्डिय | २५ | २६ |
| | ९ | १६,२२ | मुत्त | १४ | ३४ |
| | १२ | १,१५,३१ | मुत्ता | ९ | ४६ |
| | १४ | ८,९ | मुत्ति | ९ | ५७ |
| | १५ | ३ | | २० | ६ |
| | १७ | २०,२१ | | २२ | २६ |
| | १८ | ४४,४७ | | २६ | सू० १,४८ |
| | १९ | ८३ | मुद्दिय | ३४ | १५ |
| | २० | ५३ | मुद्ध (मूर्धन) | २७ | ६ |
| | २३ | ३८,४०,४१, | मुद्ध (मुग्घ) | ३२ | ३७ |
| | | ६१,६५,८०, | मुम्मुर | ३६ | १०९ |
| | | ८४ | मुसल | १९ | ६१ |
| | २४ | १३,२७ | मुसा | १ | २४ |
| | २५ | २९,३० | | २ | ४५ |
| | २६ | २०,३५ | | १८ | २६ |
| | २७ | १ | | २० | १५ |
| | ३० | ३७ | | २५ | २३ |
| | ३२ | १६,२६,३९, | मुसावाइ | ५ | ९ |
| | | ५२,६५,७८, | | ७ | ५ |
| | | ९१ | | | |

उत्तरजमग्रण शब्द-सूची

| | | | | | |
|-------------|----|-----------------------|--------------|----|---------|
| मुसावाय | १६ | २६ | मूल | २० | २२ |
| | ३० | २ | | २६ | सू० ५ |
| मुसंडी | १६ | ६१ | | ३२ | ७,६,१३ |
| मुसुण्डी | ३६ | ६६ | मूलअ(ग) | ३२ | १ |
| मुह | २ | ५ | | ३६ | ६६ |
| | ५ | १५ | मूलओ | २० | ३६ |
| | १२ | २६ | मूलपयडि | ३३ | १६ |
| | १३ | २१ | मूलिय(मूलिक) | ७ | १७ |
| | २० | ४८ | मूलिय(मौलिक) | ७ | १६,२१ |
| | २५ | ११,१४,१६ | मूसग | ३२ | १३ |
| | २७ | १३ | मेअ | ७ | २ |
| मुहपोत्तिया | २६ | २३ | मेत्त | ६ | ६ |
| मुहरी | १ | ४ | | ७ | २४ |
| मुहाजीवि | २५ | २७ | | १४ | १३ |
| मुहं | ४ | ११ | मेत्ति | ६ | २ |
| मुहुत्त | ४ | ६ | मेत्तिज्जमाण | ११ | ७,११ |
| | ३३ | २३ | मेयन्त | १८ | २३ |
| | ३४ | ३४ से ३६, ४६,५४,५५ | मेरअ(ग) | १६ | ७० |
| मूढ | १ | २६ | | ३४ | १४ |
| | ६ | १ | मेरु | २१ | १६ |
| | ८ | ५ | मेहावि | १ | ४५ |
| | १२ | ३१ | | २ | ६,१७,३६ |
| | १४ | ४३ | | ५ | ३० |
| मूल | ७ | १४ से १६ | | २० | ५१ |
| | १५ | ८ | | २३ | २४,३० |

२६८

| | | |
|----------|----|----------|
| मोहण | २ | ४२ |
| | २५ | ५५ |
| | ३० | २ |
| मोवल | ४ | ५५ |
| | ६ | ८ |
| | १३ | १० |
| | १४ | ५५ |
| | १५ | ३८ |
| | २३ | ३३ |
| | २५ | १,१४,३० |
| | २८ | ५० |
| | ३२ | ६३२ |
| | ३२ | २,१७,१०८ |
| मोवलमगगइ | २५ | |
| मोण | १४ | ७,२२,४१ |
| | १५ | १ |
| | १८ | ८ |
| | २० | ४६ |
| मोसली | २६ | २६ |
| मोसा | १२ | १४,४१ |
| | २४ | २०,२२ |
| | ३२ | ३१,४४,५७ |
| | | ७०,२३,८६ |
| मोह | ४ | ५,११ |
| | ५ | ३ |
| | १३ | ३३ |
| | १४ | १०,२०,५२ |

परिसिद्ध-२

| | | |
|--------|----|---------|
| मोह | १५ | ६ |
| | १८ | ७ |
| | २० | ६० |
| | २१ | ११,१८ |
| | २५ | २० |
| | २२ | २,६५,८८ |
| | | १०१,१०५ |
| | ३३ | २ |
| | ३६ | २५६ |
| मोहहाण | ३१ | १८ |
| मोहगिज | ८ | १ |
| | २८ | ५० |
| | ३३ | ७,७२ |
| | ३४ | ५,६,६१ |
| | २४ | ८ |
| य | | |
| य | १ | ६ |
| र | | |
| ख(य) | ८ | ४२ |
| | ११ | ५ |
| | १३ | १७ |
| | १६ | ५० |
| | | ५ |

| | | | | | |
|----------|----|----------------------------------|--------------|----|-------------|
| रख(य) | १६ | २ से ६, १५ | रज्जंत | १६ | ६ |
| | २६ | सू० ३२ | रज्जमाण | २६ | सू० ४ |
| | ३२ | १५ | रच्छा | ३० | १८ |
| रइ | ५ | ५ | रट्ट | १८ | २० |
| | १४ | ७, २१ | रण | १४ | ३० |
| | १६ | ६ | रणण | १४ | ४२ |
| | १६ | १३ | रणवास | २५ | २६ |
| | २१ | २१ | रत्त (रक्तं) | १७ | १२ |
| | ३२ | १०२ | | ३२ | २६, ३६, ५२, |
| रइय | २२ | १२ | | ३६ | ६५, ७६, ६१ |
| रकल * | | | | | २५७ से २५९ |
| -रकलेज्ज | ४ | १२ | रत्त (रात्र) | २६ | १४ |
| रकखण | ३२ | २८, ४१, ५४, ६७, ८०, ६३ | रत्ति | २६ | १७, १६ |
| रकखमाण | २२ | ४० | रम * | | |
| रकखस | १६ | १६ | -रमई | १ | ५ |
| | २३ | २० | -रमए | १ | ३७ |
| | ३६ | २०७ | | २५ | २० |
| रकखसी | ८ | १७ | -रमाम | १६ | १४ |
| रकखा | १६ | १ | -रमे | १४ | ४१ |
| रकखय | १५ | २ | -रमेज्जा | ३६ | २४६ |
| रज्ज | ७ | ११ | रम्म | १३ | १३ |
| | ६ | २ | | १४ | १ |
| | १४ | ४६ | | १६ | १ |
| | १८ | १२, १६, ३७, ४४, ४६, ४७, ४९ | | २१ | ७ |

| | | |
|--------|----|------------|
| रय | २ | ३६ |
| | ३ | ११ |
| | ७ | ८ |
| | १० | ३ |
| | १२ | ४५ |
| | २१ | १८ |
| रयण | ११ | २२, ३० |
| | १६ | ४ |
| | २० | २ |
| | २२ | २२ |
| रयणा | ३५ | १८ |
| रयणाभा | ३६ | १५६ |
| रयणागर | १६ | ४२ |
| रयणी | १४ | २३ से २५ |
| रयय | ३४ | ६ |
| रस | २ | ३६ |
| | ८ | ११, १४ |
| | १४ | ३१, ३२ |
| | १६ | सू० १२ |
| | १६ | १० |
| | १८ | ३, ७ |
| | २० | ३६, ५० |
| | २७ | ६ |
| | २८ | १२ |
| | २९ | सू० ४६, ६६ |
| | ३० | २६ |

| | | |
|---------------|----|------------|
| रस | ३२ | १०, २०, ६१ |
| | | से ७३ |
| | ३४ | २, १० से |
| | | १५, २३ |
| | ३५ | १७ |
| | ३६ | ८३, ६१, |
| | | १०५, ११६, |
| | | १२५, १३५, |
| | | १४४, १५४, |
| | | १६६, १७८, |
| | | १८७, १९४, |
| | | २०३, २४७, |
| | | २६४ |
| रसओ | ३६ | १५, १८, २२ |
| | | से ४६ |
| रसंत | १६ | ५१ |
| रसन्नु | १६ | २८ |
| रसपरिष्वाळ | ३० | ८ |
| रस्सि | २३ | ५६ |
| रह | ११ | ८, १२ |
| रहनेमि | २२ | ३४, ३७, ३९ |
| रहनेमिज्ज | २२ | |
| रहस्स(रहस्य) | १ | १७ |
| रहस्स(ह्रस्व) | २६ | सू० ७३ |
| रहाणीय | १८ | २ |
| रहिय | १६ | १ |
| | २४ | १८ |

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

२७१

| | | | | | |
|--------------|----|--------------|---------|----|-------------|
| रात्र | १४ | १४ | राग | ३२ | ४८ से ५०, |
| | २६ | सू० ३१ | | | ६१ से ६३, |
| राइ (रात्रि) | १० | १ | | | ७४ से ७६, |
| | १३ | ३१ | | | ८७ से ८९, |
| | १४ | २४, २५ | | | ५ |
| | २० | ३३ | | ३५ | |
| | २६ | १७ | रागि | ३२ | १००, १०५, |
| राइ (राजन्) | २० | ५ | राढामणि | २० | ४२ |
| राइय | २६ | ४७, ४८ | राम | २२ | २, २७ |
| राईभोयण | १६ | ३० | राय | ७ | ११ |
| | ३० | २ | | ६ | २, ३ |
| राईमई | २२ | ६, २६, ३६ | | १२ | २० से २२ |
| राओ | १५ | २ | | १३ | ८, ११, १७, |
| राग | १० | ३७ | | | २०, २१, २६, |
| | १४ | २८, ४२, ४३ | | | ३२ से ३४ |
| | १६ | २ | | १४ | ३, ३७, ३८, |
| | २१ | १६ | | | ४०, ५३ |
| | २३ | ४३ | | १८ | १, ६, ७, ९, |
| | २५ | २१ | | | १३, १५, १६, |
| | २८ | २० | | | ३७, ३९, ४३, |
| | २९ | सू० ६३ से ६७ | | | ४५, ४७ से |
| | ३० | १, ४ | | | ४९ |
| | ३१ | ३ | | १९ | १ |
| | ३२ | २, ७, ९, १२, | | २० | २, १०, ५४ |
| | | २२ से २४, | | २२ | १, ३, ७, |
| | | ३५ से ३७, | | | २८, ४० |

२७२

परिशिष्ट-२

| | | | | | |
|-----------|----|--|-------|----|-------------|
| सयपुत्त | १५ | ६ | खर | ३२ | २६, ३६, ५२, |
| | २२ | ३६ | | | ६५, ७८, ९१ |
| रायरिसि | ६ | ५, ६, ८, ११, १३, १७, १९, २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३७, ३९, ४१, ४३, ४५, ४७, ५०, ५२, ५६, ६२ | खख | १२ | ८ |
| | १८ | ५० | | १४ | २९ |
| रायवेद्वि | २७ | १३ | खखमूल | ३६ | ९४ |
| रायसीह | २० | ५८ | | २ | २० |
| रायहाणी | २ | १८ | | १६ | ७८ |
| | ३० | १६ | | २० | ४ |
| रिसि | १९ | ६६ | | ३५ | ६ |
| री * | | | खु | २५ | ६ |
| -रिए | २४ | ४, ८ | ख | ३० | ३५ |
| -रीएज्जा | २४ | ७ | | ३४ | ३१ |
| रीयंत | २ | १४ | ख | १९ | ६३ |
| | २३ | ३, ७ | ख्य | ९ | ४८ |
| | २५ | २ | | ३६ | ७३ |
| ख | १ | ४७ | खभ * | | |
| | १८ | ३० | -खभई | ३१ | ३ |
| | २८ | २५ | खग | ३६ | ७५ |
| खथ | १६ | सू० ७ | खहिर | १२ | २५, २९ |
| | १६ | ५, १२ | | १९ | ७० |
| | | | | ३६ | ७२ |
| | | | ख | ३ | १५ |
| | | | | ४ | ११ |
| | | | | ६ | ११ |
| | | | | ९ | ६, ५५ |
| | | | | १२ | ६ |

| | | | | | |
|-----------------|----|------------|----------|----|-------------|
| लकखण | २८ | १,६,६ से | -लभेज्ज | ४ | ६ |
| | | १३ | -लभेज्जा | १६ | सू० ३ से १२ |
| | ३४ | २ | | ३२ | ५ |
| लकखणअ | १९ | ४३ | लयण | २१ | २२ |
| लग | १९ | ६५, ८७ | | २२ | ३३ |
| लग * | | | लया | २० | ३ |
| -लगई | २५ | ४० | | २३ | ४५ से ४८ |
| -लगन्ति | २५ | ४१ | | ३६ | ६४, ६५ |
| लज्जा | २ | ४ | ललिय | ६ | ६० |
| लज्जु | ६ | १६ | | २२ | ४१ |
| लद्ध | २ | ३० | लव | १ | २५ |
| | १६ | ८ | लवंत | १ | २१ |
| लद्धं (लब्ध्वा) | २ | २३ | लविय | १६ | ४ |
| | ३ | ८ से ११ | लसण | ३६ | ६७ |
| | ११ | ११ | लह * | | |
| | १५ | १२ | -लहइ | ७ | १४ |
| लद्धं (लब्धुम्) | ११ | १४ | -लहए | १४ | २६ |
| लद्धूण | ६ | १४ | -लहामो | १४ | ७ |
| | १० | १६, १७, १९ | -लहित्थ | १२ | १७ |
| | ११ | ७ | -लहे | १० | १८ |
| लप्यमाण | २० | ४३ | लहिं | १७ | १ |
| लभ * | | | लहियाण | २० | ३८ |
| -लभइ | ११ | ३ | लहु | १ | १३ |
| -लभामि | २ | ३१ | | १५ | १६ |
| लभऊ | १२ | १० | | २२ | ३१ |
| लभे | ४ | ५ | लहुभूय | २३ | ४०, ४१ |
| | १४ | २१ | | | |

उत्तरज्जमयण शब्द-सूची

| | | | | | |
|--------------|----|---------------------------|------------|----|---|
| लहुभूय(अ) | १४ | ४४ | लिंग | २३ | ३०, ३२ - |
| | २६ | सू० ४३ | | २६ | सू० ४३ |
| लहुय(अ) | ३६ | १६, ३७ | लिंग * | | |
| लाघविया | २६ | सू० ४३ | -लिप्पई | ८ | ४ |
| लाढ | २ | १८ | | ३२ | २६, ३६, ५२, ६०, ६५, ७३, ७८, ८६, ९१, ९९ |
| | १५ | २, ३ | | | |
| लाभ | १ | २७ | | | |
| | २ | ३१ | -लिप्पए | ३२ | ३४, ४७ |
| | ७ | १६ | लिच्छु | ३२ | १०४ |
| | १४ | ३२ | लित्त | ८ | १५ |
| | १६ | ६० | लुच * | | |
| | २० | ५५ | -लुचई | २२ | २४, ३० |
| | २६ | सू० ३४ | लुंप * | | |
| | ३२ | २८, ४१, ५४, ६७, ८०, ९३ | -लुप्पन्ति | ६ | १ |
| | ३३ | १५ | लुक्ख | ३६ | २० |
| | ३५ | १६ | लुक्खय | ३८ | ४१ |
| लाभतर | ४ | ७ | लुत्त | २२ | २५, ३१ |
| लाभय * | | | लुद्ध | ६ | ४८ |
| -लामइस्सन्ति | १ | ४६ | | ११ | २, ६ |
| लालप्पमाण | १४ | १५ | | १७ | ११ |
| लालसा | २५ | ४१ | लुपत्त | ६ | ३ |
| लावण्ण | ३२ | १४ | लूह | २ | ६, ३४ |
| लाह | ७ | १४ | लेट्ठु | ३५ | १३ |
| | ८ | १७ | लेप्प | १६ | ६५ |
| | १२ | १७ | लेव | ६ | १५ |
| | | | | ८ | १५ |

२७६

लेसजभयण

३४

३४

१

लेसा

१२

४६

३१

८

३४

२,१६ से
२०,३३,४०,
४४,४५,४७,
५८ से ६१

लोअ (ग,य)

१

१५,४५

२

१६,४४

४

३,५,१०

५

५,६

८

१६,२०

९

१,५८

१०

३५

१२

१३,२८

१३

१९,२१

१४

८,१६,२१

से २३

१५

१४,१५

१७

२०,२१

१८

२७,३८

१९

२३,४४,७३,

९२

२०

४९

२३

१,२,५,६

लोअ(ग,य)

२३

३२,४०,६०,

७५,७६,७८,

२५

१९

२८

७

२९

सू० ७२

३४

३३

३६

२,७,११,

६१,६७,६९,

७८,८६,

१००,१११,

१२०,१३०,

१३९,१४९,

१५८,१७३,

१८२,१८९,

१९८,२१७

लोगग

२३

८१,८३,८४

२९

सू० ३९

लोगनाह

२२

४

लोण

३६

७३

लोभ

९

५४,५६

२४

९

२९

सू० २,७१

३२

२९,३०,४२,

४३,५५,५६,

६८,६९,८१,

८२,९४,९५

| | | | | | |
|-------------|----|-----------|-----------|----|-------------|
| लोभ | ३४ | २६ | लोहिय(अं) | ७ | ७ |
| | ३५ | ३ | | ३६ | १६, २४ |
| लोभवेयगिज्ज | २६ | सू० ७१ | लोहियक्ख | ३६ | ७५ |
| लोभपक्खि | ३६ | १८८ | | | |
| लोभहरिस | ५ | ३१ | | | |
| लोभहार | ६ | २८ | व | | |
| लोगग | ३६ | ५६, ६३ | व(वा) | १ | १६, ३४ |
| लोल | २६ | सू० ४८ | | २ | २०, ३६ |
| | ३२ | २४ | | ५ | २२ |
| लोलया | ७ | १७ | | १० | ३६ |
| लोला | २६ | २७ | | १२ | ७, ४३, ४५ |
| लोलुप्पमाण | १४ | १० | | १३ | २२ |
| लोलुअ | ३४ | २३ | | १४ | २७, ३० |
| लोह (लोह) | १६ | ६८ | | १६ | १३ |
| लोह (लोभ) | ४ | १२ | | २० | १६ |
| | ८ | १७ | | २८ | १६ |
| | ६ | ३६ | व(इव) | १ | १२, ३७, ३६ |
| | २५ | २३ | | ३ | ५, १४ |
| | २६ | सू० १, ७१ | | ४ | ५, ६ |
| | ३२ | ८, १०२ | | ५ | १५, १६ |
| लोहगिज्ज | ४ | १२ | | ७ | ७ |
| लोहतुंड | १६ | ५८ | | ८ | ५, ६, ६, १८ |
| लोहमार | १६ | ३५ | | १० | २८ |
| लोहमय | १६ | ३८ | | १२ | २७ |
| लोहरह | १६ | ५६ | | १३ | ३१ |
| लोहि (दि०) | ३६ | ६८ | | १४ | ३३, ३५, ४७ |

| | | |
|-----------------|----|------------|
| व(इव) | १५ | १० |
| | १७ | २१ |
| | १६ | ८७ |
| | २१ | १४, २३, २४ |
| | ३४ | १४ |
| वअ * | | |
| -वए | २७ | ५ |
| वइ | १८ | ५२ |
| वइगुत्त | २६ | सू० ५५ |
| वइगुत्ति | २४ | २३ |
| वइजोग | २६ | सू० ७३ |
| वइदेहि | ६ | ६१ |
| वइर | १६ | ५० |
| | ३६ | ७३ |
| वइसाह | २६ | १५ |
| वइस्स (वैद्य) | २५ | ३१ |
| वइस्स (द्वेष्य) | ३२ | १०३ |
| वक | ३४ | २५ |
| वंकजड | २३ | २६ |
| वचिअ | २ | ४४ |
| वजण | १२ | ३४ |
| | २६ | सू० २२ |
| वंजणलद्धि | २६ | सू० २२ |
| वक्क | १ | ४३ |
| | ६ | ११ |
| | १३ | २७ |

| | | |
|------------|----|-----------|
| वक्क | १४ | ११ |
| | २२ | ३६ |
| | २५ | २५ |
| वग्ग | १३ | २३ |
| | ६६ | २६ |
| | ३० | १० |
| वग्गवग्ग | ३० | ११ |
| वग्गू | ६ | ५५ |
| वच्च * | | |
| -वच्चइ | १४ | २४, २५ |
| -वच्चउ | २७ | १२ |
| वच्छ | ८ | १८ |
| | ६ | ६ |
| वच्छळ | २८ | ३१ |
| वज्ज | | |
| -वज्जई | ३१ | ६ |
| -वज्जए | १ | ८, ९, २४, |
| | | ३६ |
| | १७ | २१ |
| -वज्जेज्जा | १६ | १४ |
| वज्ज | ३४ | २८ |
| वज्जअ | ११ | १३ |
| वज्जकंद | ३६ | ६८ |
| वज्जण | १६ | ३० |
| | २८ | २८ |
| वज्जपाणि | ११ | २३ |

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

२७६

| | | |
|---------------|----|----------------|
| वज्जरिसह | २२ | ६ |
| वज्जिता | ३० | ३५ |
| | ३४ | ३१, ४५, ६१ |
| वज्जिय | १० | २८ |
| | २४ | ५, १८ |
| वज्जेयव्व | १६ | ३० |
| | २६ | २६ |
| वज्ज | २१ | ८ |
| वज्जग | २१ | ८ |
| वज्जमंडण | २१ | ८ |
| वट्ट * | | |
| -वट्टइ | १७ | २ |
| -वट्टए | २६ | सू० २० |
| वट्ट | ३६ | २१, ४३ |
| वट्टन्त | २३ | ६० |
| | ३५ | १४ |
| वट्टमाण | ११ | ६ |
| | २६ | सू० २०, ५१, ५२ |
| वड्डइ | १६ | ६६ |
| वड्ड * | | |
| -वड्डइ | ३२ | ३०, ४३ |
| वड्डण | १४ | ४७ |
| वड्डमाण | २२ | २६ |
| वड्डावइत्ताणं | ६ | ४६ |
| वण | २० | ३६ |
| | २३ | १५ |
| | ३२ | ११ |

| | | |
|-----------|----|------------|
| वणचारि | ३६ | २०५ |
| वणप्फइ | ३६ | १०२ |
| वणस्सइ | २६ | ३० |
| | ३६ | ६६, ६२ |
| वणस्सइकाय | १० | ६ |
| वणिय | ७ | १४ |
| | ८ | ६ |
| | १४ | ३० |
| वण्ण | ६ | ११ |
| | ७ | २७ |
| | १३ | २६ |
| | १६ | ५५, ६६ |
| | २० | ६ |
| | २८ | १२ |
| | २६ | सू० ५ |
| | ३० | २३ |
| | ३२ | २० |
| | ३४ | २ |
| वण्णो | ३४ | ४ से ६ |
| | ३६ | १५, १६, २२ |
| | | से ४६, ८३, |
| | | ६१, १०५, |
| | | ११६, १२५, |
| | | १३५, १४४, |
| | | १५४, १६६, |
| | | १७८, १८७, |
| | | १९४, २०३, |
| | | २४७ |

| | | | | | |
|-------------|----|------------|------------|----|------------|
| वणव | ३ | १८ | वन्दमाण | २५ | १७ |
| वणिय | ३४ | ४०, ४४, ४७ | वन्दिकण | ६ | ६० |
| वण्हि | २२ | १३ | | २६ | ४५ |
| वत्तणा | २८ | १० | वन्दित्ता | २० | ७ |
| वत्थ | २ | १२ | | २२ | २७ |
| | २६ | २३, २४ | | २६ | ८ |
| | ३० | २२ | वन्दित्ताण | २६ | २२, ३७, ४० |
| वत्थु | ३ | १७ | | | से ४२, ४८, |
| | १६ | १६ | | | ४६, ५१ |
| वत्थुविज्जा | १५ | ७ | वन्दित्तु | २६ | २१ |
| वद्धण | २६ | सू० ६ | वम* | | |
| वद्धमाण | ६ | २४ | -वमइ | ११ | ७ |
| | २३ | ५, १२, २३, | वमंत | १२ | २५, २६ |
| | | २६ | वमण | १५ | ८ |
| वन्त | १० | २६ | वमित्ता | १४ | ४४ |
| | १२ | २१ | वम्मधारि | ४ | ८ |
| | २२ | ४२ | वय (वह) * | | |
| वन्तर | ३६ | २२० | -वयंइ | १५ | ६ |
| वन्तासि | १४ | ३८ | | २५ | २३ |
| वन्द * | | | -वए | १ | १४, २४ |
| -वन्दइ | ६ | ५५, ५६ | | २० | १५ |
| | २६ | ५० | | २२ | ४० |
| -वन्दए | १८ | ८ | | ३० | ३५ |
| वन्दण | ३५ | १८ | -वएज्ज | १ | ४१ |
| वन्देणा(अ) | १५ | ५ | -वयंति | १२ | ३८, ४० |
| | २६ | सू० १, ११ | | ३२ | ६, ७ |

उत्तरज्भयण शब्द-सूची

२८१

| | | | | | |
|--------------|----|-------------|-------------|-----------|------------|
| -वयासी | १४ | ८, १६ | -वुच्छं | ३६ | १८२, १८६, |
| वय (व्रत) | १ | ४७ | | | २१७ |
| | २० | ४१ | -वुच्छामि | ३६ | ४७, १०६ |
| | २१ | ११ | वयगुत्त | १२ | ३ |
| | २२ | ४० | | २२ | ४७ |
| | २६ | सू० १२ | वयगुत्तया | २६ | सू० १, ५५ |
| | ३१ | ७ | वयगुत्ति | २४ | २ |
| वय (वचस्) | ५ | १० | वयलीग | २१ | १४ |
| | ८ | १० | वयण | १ | १२ |
| | १४ | ८ | | ६ | ६ |
| | १५ | १२ | | १२ | ५, ८, १६, |
| | २४ | २३ | | | २४ |
| | २६ | सू० ५८ | | १३ | ४, १२, १५, |
| वय (व्रज्) * | | | | | २६, ३४ |
| -वयइ | ६ | ५४ | | १६ | ६ |
| -वए | १४ | ४८ | | २० | १३ |
| | २० | ५१ | | २२ | १८, ४६ |
| | २७ | ५ | | २५ | १० |
| वय (वयस्) | १४ | ३२ | वयत्य | २७ | ११ |
| | २० | १६ | वयमाण | ३० | २२ |
| वय (व्यय) | ३२ | २८, ४१, ५४, | वयसमाधारणया | ८ | ७ |
| | | ६७, ८०, ६३ | २६ | सू० १, ५८ | |
| वय † | | | वर (वर) | १ | १६ |
| -वुच्छ | ३६ | ११, ७८, | | ८ | ३ |
| | | १११, १२०, | | ६ | ३ |
| | | १५८, १७३, | | १४ | ५० |
| | | | | २२ | ७, ४० |
| | | | | ३४ | १४ |

२८२

परिशिष्ट-२

| | | |
|-----------|----|--------|
| वर (पर) | १४ | २२ |
| वरगङ्ग | ३६ | ६३, ६७ |
| वरदंसि | २८ | २, ७ |
| वराडग | ३६ | १२६ |
| वराय | ३६ | २६१ |
| वरिस | १८ | २८ |
| | ३४ | ४६ |
| वलय | ३६ | ६५ |
| वल्लर | १६ | ८०, ८१ |
| वल्ली | ३६ | ६४ |
| वव * | | |
| -ववन्ति | १२ | १२ |
| ववहर * | | |
| -ववहरई | १७ | १८ |
| ववहरंत | २१ | २, ३ |
| ववहार | १ | ४२ |
| | ७ | १५ |
| ववस्स * | | |
| -ववस्से | ३२ | १४ |
| ववस्सिअ | २२ | ३० |
| वस * | | |
| -वसामि | १८ | २६ |
| -वसामो | ६ | १४ |
| -वसे | ११ | १४ |
| -वुच्छामु | १३ | १६, |
| वस | ६ | ३२ |
| | १४ | ४२ |

| | | |
|--------------|----|------------|
| वसभ | १८ | ३६, ४६, ४७ |
| वसह | ११ | १६ |
| वसहि | १४ | ४८ |
| | ३२ | १३ |
| वसा | १६ | ७० |
| वसाणुग | १३ | ५ |
| वसीकअ | ६ | ५६ |
| वसुदेव | २२ | १ |
| वसुहा | २० | ६० |
| वसुहारा | १२ | ३६ |
| वस्स | ३२ | १०४ |
| वह | १ | १६, ३८ |
| | ७ | १७ |
| | ८ | ७, ८ |
| | १२ | १४ |
| | १५ | ३, १४ |
| | १६ | ३२ |
| | ३५ | ८ |
| वह * (वह्) | | |
| -वहेइ | १८ | ३ |
| -वहेई | १८ | ५ |
| -वहेह | १२ | २७ |
| | २६ | सू० ३२ |
| वह * (व्यथ्) | | |
| -वहिज्ज | २१ | १७ |
| वहण | २७ | २ |

उत्तरज्जमयण शब्द-सूची

२८३

| | | | | | |
|---------------|----|-------------|-------------------|----|-----------|
| वह्याण | २७ | २ | वाड | ३६ | १०७, ११७, |
| वहिय | १६ | ७१ | | | १२२ से |
| वा(वा) | १ | १४, १७, १६, | | | १२४ |
| | | २१, २५, २७, | वाडक्काय | १० | ८ |
| | | ३४, ४८ | वागर ^१ | | |
| | २ | ८, १८, २०, | -वागरे | १ | १४ |
| | | ३०, ३६, ४४ | -वागरेज्ज | १ | २३ |
| | ५ | १६, २२, २५, | वाघाय | १४ | ८ |
| | | २८ | वाड | २२ | १४, १६ |
| | ८ | १२ | | ३० | १८ |
| | १२ | १८, २८ | वाणमंतर | ३४ | ५१ |
| | १४ | १७, २२, ३६, | | ३६ | २०४, २०७ |
| | | ४० | वाणारसी | २५ | २, ३ |
| | १५ | ६ | वाणिअ | ७ | १५ |
| | १६ | सू० ३ से १२ | | २१ | १, ३, ५ |
| | १६ | २५, ५६, ७७, | | ३५ | १४ |
| | | ७९ | वाद | १५ | १५ |
| | २० | ९, १६, २९ | वाय (वाच) | १ | १७, ४३ |
| वा(डव) | २ | १० | | ६ | ९ |
| | १४ | ४१ | वाय (वात) | १६ | ४० |
| | १६ | ५३, ६३, ६४ | | २१ | १६ |
| वाअ | ६ | १० | | २२ | ४४ |
| वाइय(वादित्र) | १३ | १४ | | ३६ | २०६ |
| वाइय(वाचित्त) | २७ | १४ | वाय ^२ | | |
| वाड | ६ | १२ | -वाएइ | २६ | २६ |
| | २६ | ३० | वायणया | २६ | सू० १ |

२८४

| | | |
|-------------|----|-------------|
| वायणा | २६ | सू० २० |
| | ३० | ३४ |
| वार * | | |
| -वारेज्ज | २ | ११ |
| वारि | २३ | ५१, ६६ |
| | २५ | २६ |
| वास्वणी | ३४ | १४ |
| वालम्गपोइया | ६ | २४ |
| वालुया | १६ | ३७, ५० |
| | ३६ | ७३ |
| वालुयाभा | ३६ | १५६ |
| वावड * | | |
| -वावडे | १७ | १८ |
| वावन्न | २८ | २८ |
| वाव्दर * | | |
| -वावरे | ३० | ३६ |
| वास(वर्ष) | ३ | १५ |
| | ४ | ८ |
| | ७ | १३ |
| | १२ | ३६ |
| | १८ | ३४, ३६, ३८, |
| | | ४०, ४१ |
| | १६ | ६५ |
| | २२ | ३३ |
| | ३४ | ४१, ४८, ५३ |
| | ३६ | ८०, ८८, |

परिशिष्ट-२

| | | |
|---------------|----|-------------|
| वास(वर्ष) | ३६ | १०२, १२२, |
| | | १३२, १६०, |
| | | २१६ से २२१, |
| | | २५० से २५२ |
| वास(वास) | १४ | २६ |
| | १६ | ८३ |
| | २३ | ४, ८ |
| | २५ | ३ |
| | ३५ | ६, ७ |
| वासंत | २२ | ३३ |
| वासि | १२ | ८ |
| | १४ | १ |
| वासिट्टी | १४ | २६ |
| वासिय | ३५ | ४ |
| वासी | १६ | ६२ |
| वासीमुह (दि०) | ३६ | १२८ |
| वासुदेव | ११ | २१ |
| | २२ | ८, १०, २५, |
| | | ३१ |
| वाह * | | |
| -वाहेइ | १७ | १६ |
| वाहअ(य) | १ | ३७ |
| | १० | ३३ |
| वाहण | ६ | ४६ |
| | १८ | १ |

| | | | | | |
|-----------|----|------------|------------|----|-------------|
| वाहर * | | | विओग | ३२ | २८, ४१, ५४, |
| -वाहराहि | १८ | १० | | | ६७, ८०, ९३ |
| वाहि | १६ | १४, १६ | विंछिय | ३६ | १४७ |
| | २३ | ८१ | विकत्तु | २० | ३७ |
| | ३२ | १२ | विकप्पण | ३२ | १०७ |
| वाहिय | १६ | ६३ | विकोविय | २१ | २ |
| वाहित | १ | २० | विककअ | ३५ | १३ से १५ |
| विइत्तु | १५ | ३ | विकिकणंत | ३५ | १४ |
| विइय | १२ | १३ | विकखाय | १८ | ३६ |
| | १८ | २७ | विकिखत्ता | २६ | २६ |
| | २३ | ६१ | विगइ | १७ | १५ |
| विउ | २१ | १२ | | ३२ | १०१ |
| | २५ | ३६ | | ३६ | २५२ |
| विउकम्म | ५ | १५ | विगप्प | ३३ | ६ |
| विउल | १ | ४६ | विगप्पण | २३ | ३२ |
| | ७ | २, २१ | विगय | १ | २६ |
| | ६ | ३८ | | ८ | ३ |
| | १० | ३० | | ६ | २२ |
| | ११ | ३१ | | १४ | ५२ |
| | १४ | ३७, ३६ | | २० | ६० |
| | २० | १६, ३२, ५२ | | २६ | सू० ३० |
| | २६ | सू० ४३ | विगराल | १२ | ६ |
| विउन्वि | ३ | १५ | विगलिवियया | १० | १७ |
| | १३ | ३२ | विगहा | २४ | ६ |
| विउन्विउग | ६ | ५५ | | ३१ | ६ |
| विउस्सग्ग | ३० | ३०, ३६ | | ३६ | २६३ |

| | | |
|------------|----|---|
| २८६ | | |
| विगिच * | | |
| -विगिच | ३ | १३ |
| विगिट्ट | ३६ | २५४ |
| विग्गह | ३ | ८ |
| विग्घ | २० | ५७ |
| | २९ | सू० ६ |
| विचित * | | |
| -विचित्तए | २ | २६ |
| | २६ | ५० |
| -विचिन्तेइ | २२ | २९ |
| | २७ | १५ |
| विचित्तिय | १३ | ८ |
| विचित्त | ३६ | १४८, २५२ |
| विजढ | ३६ | ८२, ९०, १०४, ११५, १२४, १५३, १६८, १७७, २४६ |
| विजय | १५ | ७ |
| | १८ | ४९ |
| | २९ | सू० १, ६८ से ७२ |
| | ३६ | २१५, २४३ |
| विजयघोस | २५ | ४, ५, ३४, ३५, ४२, ४३ |
| विजहिन्तु | ८ | २ |

परिशिष्ट-२

| | | |
|----------------------|----|-------------------|
| विज्ज * | | |
| -विज्जई | २ | ७ |
| | १४ | ४० |
| | २० | ९, १० |
| | २३ | ६६ |
| -विज्जए | ९ | १५ |
| विज्जमाण | १८ | २७ |
| विज्जा (विद्या) | ६ | १० |
| | १२ | १३, १४ |
| | १५ | ७ |
| | १८ | २२, २४, ३०, ३१ |
| | २० | २२ |
| | २३ | २, ६ |
| | २५ | १८ |
| विज्जा (विदित्वा) | ९ | ४९ |
| विज्जु | १८ | १३ |
| | २२ | ७ |
| | ३६ | ११०, २०६ |
| विज्जमन्न * | | |
| -विज्जमविज्ज | १ | ४१ |
| विज्जमाय * | | |
| -विज्जमायइ | २९ | सू० ६१ |
| विज्जमाविय | २३ | ५० |
| विट्ठा | १ | ५ |

| | | | | | |
|---------------|----|-----------|----------------|----|----------|
| विडविय | १३ | १६ | विणियट्टणया | २६ | सू० १,३३ |
| विणइत्ता | २६ | सू० ५ | विणिवाड | | |
| विणइत्तु | १४ | २८ | -विणिवाडयन्ति | १२ | २४ |
| विणय(अ) | १ | १,६,७, | विणिहण | | |
| | | २३ | -विणिहन्नेज्जा | २ | १७ |
| | १७ | १,४ | -विणिहम्मन्ति | ३ | ६ |
| | १८ | ८,२३ | विणी | | |
| | २८ | २५ | -विणएज्ज | ४ | १२ |
| | २६ | सू० ५,६० | | ५ | ३१ |
| | ३० | ३०,३२ | विणीय | १ | २ |
| | ३४ | २७ | | १८ | २१ |
| विणयसुय | १ | | | ३४ | २७ |
| विणस्स * | | | विणोयण | ३२ | १०५ |
| -विणस्सइ | २६ | सू० ६० | वित्तिगिच्छा | १६ | ३ से १२ |
| -विणस्सउ | १२ | १६ | वित्तिमिर | २६ | सू० ७२ |
| विणा | १३ | ७ | वित्त(वित्त) | १ | ४४ |
| | २८ | ३० | | ४ | ५ |
| विणास | ३२ | २४,३७,५०, | | ५ | १० |
| | | ६३,७६,८६ | | ७ | ८ |
| विणासण | २२ | १८ | वित्त(वेत्त) | १२ | १६ |
| | ३५ | १२ | वित्तास | | |
| विणिघाय | २० | ४३ | -वित्तासए | २ | २० |
| विणिच्छय(अ) | २३ | २५,८८ | वित्ति | १६ | ३३ |
| विणियट्ट | | | वित्थर | २० | ५३ |
| -विणियट्टन्ति | ६ | ६२ | वित्थारइ | २८ | १६,२४ |
| | १६ | ६६ | | | |
| | २२ | ४६ | | | |

२८८

परिशिष्ट-२

| | | |
|-------------|----|--------|
| वित्थिष्ण | २४ | १८ |
| | ३६ | ५८ |
| विदित्ताण | ६ | ८ |
| विदेह | १८ | ४५ |
| विद्ध | ३२ | ३ |
| विद्धंस * | | |
| -विद्धंसइ | १० | २७ |
| विद्धंस * | | |
| -विद्धंसे | ११ | २४ |
| विनिम्मुक्क | १८ | ५३ |
| | २५ | ३२ |
| विन्ध * | | |
| -विन्धइ | २७ | ४ |
| विज्ञाण | २३ | ३१ |
| | ३६ | २६२ |
| विन्नाय | २३ | १४ |
| विन्नेअ | ३६ | १५ |
| विपक्ख | १४ | १३ |
| विपरिधाव * | | |
| -विपरिधावइ | २३ | ७० |
| विप्प | १४ | ६ |
| | २५ | १,७ |
| विप्पओग | १३ | ८ |
| विप्पच्चअ | २३ | २४,३० |
| विप्पजहणा | २६ | सू० ७४ |
| विप्पजहा * | | |
| -विप्पजहे | ८ | ४,१६ |

| | | |
|--------------|----|----------|
| विप्पजहिता | २६ | सू० ७४ |
| विप्पमुच्च * | | |
| -विप्पमुच्चइ | २४ | २७ |
| | २५ | ३६ |
| | ३० | ३७ |
| | ३१ | २१ |
| विप्पमुक्क | १ | १ |
| | ६ | १६ |
| | ११ | १ |
| | १५ | १६ |
| | २० | ६० |
| | २१ | २४ |
| | ३२ | ११० |
| विप्परियास | २० | ४६ |
| विप्पलाव | १३ | ३३ |
| विप्पसन्न | ५ | १८ |
| विप्पसीअ * | | |
| -विप्पसीएज्ज | ५ | ३० |
| विप्पुरंत | १६ | ५४ |
| विभन्ति | ३६ | ४७ |
| विभय * | | |
| -विभयन्ति | १३ | २३ |
| विभाग | २८ | १३ |
| | ३६ | ११,७८, |
| | | १११,१२०, |
| | | १५८,१७३, |
| | | १८२,१८६, |
| | | २१७ |

उत्तरजभयण शब्द-सूची

२८६

| | | |
|--------------|----|---------------------------------|
| विभावण | २६ | ३६ |
| विभिन्न | १६ | ५५ |
| | ३२ | ६३ |
| विभूसा | १६ | ६ |
| विभूसाणुवाइ | १६ | सू० ११ |
| विभूसावत्तिय | १६ | सू० ११ |
| विभूसिअ | १६ | सू० ११ |
| | २२ | ६ |
| | ३२ | १६ |
| विमग्ग * | | |
| -विमग्गहा | १२ | ३८ |
| विमण | १२ | ३० |
| विमल | १२ | ४६, ४७ |
| | २० | ५८ |
| | २३ | ७६ |
| विमाण | १४ | १ |
| विमुच्च * | | |
| -विमुच्चई | ३२ | ३०, ४३, ५६, ६६, ८२, ६५ |
| | ३५ | २० |
| विमोक्खण | ८ | ३ |
| | १४ | ४ |
| | १६ | ८५ |
| | २५ | १० |
| | २६ | १, १०, २१, ३८, ४१, ४६, ४६ |

| | | |
|-------------|----|-----------------|
| विमोय * | | |
| -विमोयन्ति | २० | २३ से २७, ३० |
| विमोयणया | २६ | सू० ७१ |
| विमोह | ५ | २६ |
| विम्हअ | २० | ५, १३ |
| विम्हावेत | ३६ | २६३ |
| वियक्खण | २१ | १६ |
| | २६ | ११, १७ |
| वियड | २ | ४ |
| विययपक्खि | ३६ | १८८ |
| वियर * | | |
| -वियरिज्जइ | १२ | १० |
| वियाण * | | |
| -वियाणह | ७ | १५ |
| | १४ | २३ |
| -वियाणाइ | २७ | १२ |
| -वियाणासि | २५ | १२ |
| -वियाणाहि | ४ | १ |
| -वियाणिज्जा | ३५ | २ |
| वियाणमाण | १२ | ३३ |
| वियाणित्ता | १४ | ५० |
| वियाणिया | ७ | २२ |
| | १६ | ६८ |
| | ३३ | २५ |
| | ३४ | ६१ |

| | | | | | |
|------------|-----------|-------------|------------|----|--------------|
| वियाणेत्ता | २५ | २२ | वियाहिय | ३६ | १७६, १८२, |
| वियार | ३२ | १०४ | | | १८४, १८६, |
| वियाहिय | ६ | १७ | | | १६६ से |
| | २४ | ३, १६ | | | १६८, २०१, |
| | २६ | ५२ | | | २०६, २१२, |
| | २८ | १५ | | | २२२, २२३, |
| | ३० | १२, १४, २६, | | | २४४, २४५, |
| | | ३२ | | | २४८ |
| | ३२ | १११ | विरथ | ३ | १५ |
| | ३३ | १०, १५, २०, | | ३० | २ |
| | | २५ | | ३५ | १३ |
| | ३६ | २, ८, ६, | विरइ | १६ | २५, २८ |
| | | १३, १४, १७, | | २६ | सू० ६ |
| | | ४७, ५६, ६१, | | ३१ | २ |
| | | ६८, ७२, ७७, | | | |
| | | ८६, ९३, | विरज्ज * | | |
| | | १००, १०६, | -विरज्जइ | २६ | सू० ३, ४, ४६ |
| | | १०६, ११०, | विरज्जमाण | २६ | सू० ३, ७ |
| | | ११३, ११६, | | ३२ | १०६ |
| | | १३०, १३२, | विरत्त | १३ | १७, ३५ |
| | | १३४, १३६, | | १४ | ४ |
| | | १४१, १४३, | | २५ | ४१ |
| | | १५१, १५३, | | ३२ | ३४, ४७, ६०, |
| | | १५५, १५८, | | | ७३, ८६, ९६ |
| | १६० | १६७ | विरम * | | |
| | १७३, १७५, | | -विरमेज्जा | २६ | १६ |

| | | | | | |
|------------|----|-----------------------|-------------|----|----------|
| विरय | २ | ६,४२ | विव | २० | ४७,५० |
| | १२ | ६ | | ३२ | ५० |
| | १५ | ३ | विवच्छास | २० | ३ |
| | २० | ६० | विवज्ज * | | |
| | २१ | २०,२१ | -विवज्जए | १६ | २,४,५ |
| विरली(दि०) | ३६ | १४७ | विवज्जण | १६ | २६,२७,२८ |
| विराग | ३२ | २६,३६,५२, ६५,७८,६१ | | ३० | २६ |
| | | | | ३२ | २,३ |
| विराय | | | विवज्जयंत | ३२ | ५ |
| -विरायद्ध | ११ | १५,१६ | विवज्जास | २० | ४६ |
| विराहअ | २६ | ३० | विवज्जिअ | १६ | २० |
| विराहणा | २ | ३४ | | ३० | २८ |
| विराहिय | ३६ | २५६ | विवज्जित्ता | १ | ३१ |
| विराहेत्तु | २० | ४६,५० | | २४ | = |
| विरिय | ६ | ६ | विवड | | |
| विल्ह * | | | -विवडड | १० | २७ |
| -विल्हन्ति | १२ | १३ | विवट्टण | १६ | २,७ |
| विरियण | १५ | = | | ३५ | ५ |
| विल्यंत | १६ | ५८ | विवट्ठण | १६ | ६८ |
| वित्रविय | १३ | १६ | विवन्न | १४ | ३० |
| | १६ | सू० ७ | विवर | २० | २० |
| विल्लग | ३२ | १४ | विवाड्य | १६ | ५६,६३ |
| विल्लत्त | १६ | ५८ | विवाग | १० | ४ |
| विन्द्वग | २० | २६ | | १३ | ३,८ |
| विओवअ | ७ | ५ | | १८ | ११ |
| विग | १६ | ५७,६५,६६ | | ३० | २०,३३,४६ |

२६२

पारशिष्ट-२

| | | | | | |
|------------|----|---------------------------|---------------|----|-------|
| विवाग | ३२ | ५६,७२,८५, ६८ | विस | २० | ४४ |
| | | | | २३ | ४५,४६ |
| विवागय | २ | ४१ | | ३६ | २६७ |
| विवाद | १७ | १२ | विसअ(य) | ७ | ६ |
| विवाह | २२ | १७ | | १६ | ६ |
| विविच्च | ६ | १४ | | २० | ४४ |
| विवित्त | १६ | सू० ३ | | २६ | सू० ३ |
| | १६ | १ | | ३२ | २१ |
| | २१ | २२ | विसज्जइत्ताणं | १८ | ८ |
| | २६ | सू० १,३२ | विसन्न(ण) | ६ | १० |
| | ३० | २८ | | ८ | ५ |
| | ३२ | १२ | | १२ | ३० |
| विवित्तवास | ३२ | १६ | विसप्प | ३५ | १२ |
| विविह | १० | २७ | विसम | ५ | १४,१६ |
| | १५ | ४,८,६, ११,१२,१४, १५ | | १० | ३३ |
| | २१ | १८ | विसारंत | २२ | ३४ |
| | ३२ | १०२ | विसारय(अ) | २० | २२ |
| | ३४ | १४ | | २७ | १ |
| विवेग | ४ | १० | विसाल | १३ | २ |
| | ३२ | ४ | | १४ | ३ |
| विस | ६ | ५३ | विसालिस | ३ | १४ |
| | १६ | १३ | विसीय * | | |
| | १७ | २० | -विसीयई | ४ | ६ |
| | १६ | ११ | विसील | ११ | ५ |
| | | | विसुद्ध | ३ | १६ |
| | | | | १२ | ४६,४७ |

| | | | | | |
|-------------|----|---------------------------------------|--------------|----|----------------------------|
| विसुद्ध | २६ | सू० २,१३,४३, सू० ७२ | विहग | २० | ६० |
| विसुद्धपन्न | ८ | २० | विहन्न * | | |
| विसुद्धआ | १० | २७ | -विहन्नइ | २ | २२ |
| विसेसं | ५ | ३० | -विहन्नसि | ६ | ५१ |
| | १२ | ३७ | -विहन्नेज्जा | २ | सू० १ से ३ |
| | १८ | ५१ | | २ | २२,४६ |
| | २३ | १३,२४,३० | विहम्माण | २७ | ३ |
| | ३० | २३ | विहर * | | |
| | ३२ | १०३ | -विहरइ | २० | ६० |
| विसोग | ३२ | ३४,४७,६०, ७३,८६,९९ | | २७ | १७ |
| विसोह * | | | | २९ | सू० १२,१३,३१, सू० ३४,६१ |
| -विसोहए | २४ | ११,१२ | -विहरए | २६ | ३५ |
| -विसोहेइ | २९ | सू० ५,१३,१७, सू० २१,५३,५७ से ५९ | -विहरसी | २३ | ४० |
| | | | -विहरामि | २३ | ३८,४१,४३ |
| | | | -विहरिसु | २३ | ९ |
| विसोहण | २६ | २५ | -विहरिस्सामि | १४ | ४८ |
| विसोहि | १२ | ३८ | -विहरेज्ज | १७ | १ |
| | २९ | सू० २,१०,१७, सू० १८,५१ | | २१ | १४ |
| | | | | ३२ | ५ |
| विसोहिया | १० | ३२ | -विहरेज्जा | १६ | सू० १ से ३, ५,७ |
| विसोहेत्ता | २९ | सू० ५८,५९ | | ३५ | १९ |
| विस्समिय | ३ | २ | विहरळ | २ | ४३ |
| विस्सुळ | १९ | २,९७ | विहरित्ता | १६ | सू० ५ |
| | २३ | ५ | विहाण | ३६ | ७४,८३,९१, १०५,११६, |

| | | | | | |
|------------|----|--|----------------------|----|---|
| विहाण | ३६ | १२५, १३५, १४४, १५४, १६६, १७८, १८७, १९४, २०३, २४७ | वीङ्खय + -वीङ्खयइ | २६ | सू० २३, ३३ |
| विहार | १४ | ४, ७, १७, ३३ | वीदसय | १६ | ६५ |
| | २६ | ३५ | वीयराग | २६ | सू० ३७ |
| | ३० | १७ | | ३२ | १६, २२, ३५, ४८, ६१, ७४, ८७, १००, १०८ |
| विहारजत्ता | २० | २ | | ३४ | ३२ |
| विहारि | १४ | ४४ | वीयरागया | २६ | सू० १, ४६ |
| विहि | २४ | १३ | वीरजाय | २० | ४० |
| | २८ | २४ | वीरासण | ३० | २७ |
| विहिंस | ४ | १ | वीरिय | ३ | १, ६, ११ |
| विहिंस * | | | | २८ | ११ |
| -विहिंसइ | ५ | ८ | | ३३ | १५ |
| विहिंसग | ७ | १० | वीस | ३६ | ५१, ५४, २३१ |
| विहण | | | | | |
| -विहणाहि | १० | ३ | वीसइ | ३३ | २३ |
| विहण | १२ | १४ | | ३६ | २३२ |
| | १४ | ३० | वीसस * | | |
| | २० | ४८ | -वीससे | ४ | ६ |
| | २८ | २६ | वीससणिज्ज | २६ | सू० ४३ |
| विहेड्यंत | १२ | ३६ | वुइय | १८ | २६ |
| वीअ * | | | वुककस | ८ | १२ |
| -वीएज्जा | २ | ६ | वुग्गह | १७ | १२ |

| वृच्च * | | | वृहइत्ता | ४ | ७ |
|-----------|----|-------------|-------------|----|-------------|
| वृच्चइ | १ | २, ३ | | २० | ४३ |
| | ८ | ६ | वेअ | २ | ३७ |
| | ११ | ४ से ६, ६, | | २७ | ३ |
| | | १०, १३ | वेइय | १६ | ४७, ४८, ७१, |
| | १७ | ३ से १६ | | | ७२, ७४ |
| | २३ | ७३ | | २६ | सू० ७२ |
| वृच्चन्ति | ८ | १३ | वेइया | २६ | २६ |
| वृच्चसि | १८ | २१ | वेग | २३ | ६५, ६६, ६८ |
| वृज्जमाण | २३ | ६५, ६८ | | २७ | ६ |
| वृह | १२ | ३६ | वेजयंत | ३६ | २१५ |
| वृत्त | १४ | २२, २३ | वेज्जचित्ता | १५ | ८ |
| | २० | १३ | वेमाणिय | ३४ | ५१ |
| | २३ | ३७, ४७, ४८, | | ३६ | २०४, २०५, |
| | | ५२, ५३, ६२, | | | २०६, २१६ |
| | | ६७, ७२, ७३, | वेमाया | ७ | २० |
| | | ७७, ८२ | वेय | १२ | १५ |
| | २४ | ५, ६, २६ | | १४ | ६, १२ |
| | २५ | १६ | | २५ | ११, १४, १६, |
| | २८ | ३४ | | | २८ |
| | २९ | सू० ८ | वेयकाल | ४ | ४ |
| | ३३ | ८ | वेयणा | २ | ३२, ३५ |
| | ३६ | ४, २०४ | | ३ | ६ |
| वृसीमय | ५ | १८, २९ | | ५ | १२ |
| वृह * | | | | १६ | ३१, ४५, ४७, |
| वृहए | १० | ३६ | | | ४८, ७१, ७३, |
| | | | | | ७४ |

२६६

| वैयणा | २० | १६ से २१, २१ से ३३ | वेत्त | १ | परिगिहः |
|----------|----|--------------------|------------|----|----------------|
| | २३ | ८१ | वेत्तमण | २२ | २८, २६ |
| | २६ | ३२ | वेत्तालिज | ६ | ४१ |
| वैयणिज्ज | २६ | सू० ४२, ७३ | वेत्त | १३ | १७ |
| | ३३ | २, २० | वोक्कत्त | ३ | १८ |
| वैयणीय | ३३ | ७ | वोच्चत्त | ८ | ४ |
| वैयरणी | १६ | ५६ | वोच्चिद | ८ | ५ |
| | २० | ३६ | -वोच्चिदं | १० | २८ |
| वैयविअ | १४ | ८ | -वोच्चिदद | २६ | सू० ३, २१, ३६, |
| | १५ | २ | | | सू० ४६ |
| वैयविउ | २५ | ७, ३६ | वोच्चिदिता | २६ | सू० ३६ |
| वैयवी | २५ | ४ | वोच्च | ८ | |
| वैयस | २५ | १६ | -वुच्चामि | ३० | २६ |
| वैयाल | २० | ४४ | -वोच्चामि | २४ | १६ |
| वैयावच्च | २६ | ६, १०, ३२ | | ३३ | १ |
| | २६ | सू० १, ४४ | | ३४ | ४०, ४४, ४७, |
| | ३० | ३०, ३३ | वोच्च्ये | २६ | ५१ |
| वैयावडिय | १२ | २४, ३२ | वोच्च्येण | २६ | सू० ४ |
| वेर | ४ | २ | वोदाण | २६ | ३४ |
| | ६ | ६ | वोसट्टकाय | १२ | सू० १, २८, २६ |
| वेरत्तिय | २६ | २० | | ३५ | ४२ |
| वल्लिय | २० | ४२ | वोत्तिर * | ३५ | १६ |
| | ३४ | ५ | -वोत्तिरे | २४ | १८ |
| | ३६ | ७६ | व्व | ३ | १२ |
| माण | २२ | ३५ | | ५ | १० |

उत्तरज्जमयण शब्द-सूची

२६७

| व्य | ७ | ६ | स(स्व) | १६ | ५३,६६ |
|--------|----|-------------|-----------|----|-------------|
| | १४ | ४८ | | २१ | ३ |
| | १८ | ५१ | | ३२ | १०७ |
| | १९ | ३५, ३६, ८६ | स (सत) | ५ | २६ |
| | २१ | १६ | | १२ | २६ |
| | २२ | ४४ | | २१ | २३ |
| | २६ | सू० १३ | | २२ | १२ |
| स(स) | ६ | ४ | सअ | ७ | १ |
| | १४ | ३७, ४६ | | १७ | १८ |
| | १९ | २०, ८८ | | २६ | सू० ३४ |
| | २० | १६, ५५, ५८ | | ३२ | २५, ३८, ५१, |
| | २२ | १८, २१ | | | ६४, ७७, ९० |
| | २५ | १३ | | ३६ | ८२, ९०, |
| | २६ | २० | | | १०४, ११५, |
| | २६ | सू० ६० | | | १२४, १५३, |
| | ३२ | १, ६, १६, | | | १६८, १७७, |
| | | २३, ३६, ४६, | | | २४६ |
| | | ६२, ७५, ८८ | सइं | ५ | ३ |
| | ३५ | ४ | | ७ | १८ |
| | ३६ | १८५, १९२, | | २० | ३२ |
| | | २१६, २२१, | सउण | १६ | ६५ |
| | | २२३, २२५, | संकटाण | १६ | १४ |
| | | २५७, २५९ | सकप्प | ६ | ५१ |
| स(स्व) | ४ | ३ | | ३२ | १०७ |
| | ६ | ३, ४ | संकप्प * | | |
| | १४ | २, ५ | -संकप्पाए | ३५ | ७ |

२६८

| | | |
|------------|----|----------------|
| संकल्पञ्ज | ३२ | १०७ |
| संकमाण | १४ | ४७ |
| संकर | १२ | ६ |
| संकहा | १६ | ३ |
| संका | २ | २१ |
| | १६ | सू० ३ से १२ |
| | १६ | १४ |
| संकास | २ | ३ |
| | ५ | २७ |
| | १६ | ५० |
| | ३४ | ४ से ६ |
| | ३६ | ६१ |
| संक्रिय | २६ | २७ |
| संकलिस्स * | | |
| -संकलिस्सइ | २६ | सू० २५, ३५, ३६ |
| संकुल | ६ | ७ |
| संख | ११ | १५, २१ |
| | ३४ | ६ |
| | ३६ | ६१, १२८ |
| संखञ्ज | ३२ | २ |
| संखण्ण | ३६ | १२८ |
| संखय | ४ | १३ |
| संखवियाण | २० | ५२ |
| संखा | २८ | १३ |
| | ३६ | १६७ |
| संखाईय | १० | ५ से ८ |
| | ३४ | ३३ |

| | | |
|------------|----|-----------|
| संखिज्ज | १० | १० से १२ |
| संखिज्जकाल | ३६ | १३३, १४२, |
| | | १५२ |
| सखेव | २८ | १६ |
| संखेवई | २८ | २६ |
| सग | २ | १६ |
| | ३ | ६ |
| | १३ | २७ |
| | १८ | ५३ |
| | २१ | ११ |
| | ३२ | १८ |
| | ३५ | २ |
| संगह | २५ | २२ |
| | ३३ | १८ |
| संगहिय | २७ | १४ |
| संगाम | २ | १० |
| | ६ | २२, ३४ |
| | २१ | १७ |
| संगोफ | २२ | ३५ |
| संघ | १३ | १२ |
| | २३ | ३, ७, १०, |
| | | १५ |
| | ३६ | २६५ |
| संघयण | २२ | ६ |
| संघाडि | ५ | २१ |
| संघायणिज्ज | २६ | सू० ६० |

उत्तरज्जमयण शब्द-सूची

२६६

| | | | | |
|------------------|----|----------|-------------------|------------|
| संचय | १० | ३० | संजअ(य)(संयत्त)१७ | ६ |
| | १६ | ३० | | ३० |
| | २० | १८ | | ५ |
| | २१ | २३ | | १,४,५,८, |
| सचिक्ख * | | | | ११,४३,५६ |
| -सचिक्खे | २ | ३३ | २१ | १३,१५,२० |
| संचिक्खमाण | १४ | ३२ | २२ | ३५,४६ |
| सचिण * | | | २३ | १० |
| सचिणइ | ५ | १० | २४ | ४,१० |
| -सचिणु | ३ | १३ | ३० | ६ |
| संचिणिया | ७ | ८ | ३५ | ३,७,९ |
| सचिन्तण | ३२ | ३ | सजइज्ज | १८ |
| सचिय | ३० | ६ | सजम | १ |
| सच्छन्न | २० | ३ | | ३ |
| सजअ(सजय) | १८ | १,१०,१६, | | ५ |
| | | २२ | | ६ |
| संजअ(य)(सयत्त) १ | | १६,३४,३५ | | १२ |
| २ | | ४,२७,३०, | | १३ |
| | | ३४ | | १४ |
| | | १८,२९ | | १६ |
| | | १५ | | १९ |
| | | ३६ | | सू० १ से ३ |
| | | ६ | | ५,९,३७, |
| | | ३६ | | ७७ |
| | | ६ | | ५२ |
| | | २,९,२०, | | ४३ |
| | | २२,४०,४५ | | ४३ |
| | | ५ | | ३२ |

| | | | | | |
|---------|----|-------------|--------------|----|-----------|
| संक्रम | २८ | ३६ | संठाणओ | ३६ | १५,२२ से |
| | २६ | सू० १,२७,४० | | | ४१,४३ मं |
| | | सू० ५४ | | | ४५,६१, |
| | ३१ | २ | | | १०५,११६, |
| | ३६ | १,२४६ | | | १२५,१३५. |
| संजगमाण | १८ | २६ | | | १४४,१५४, |
| मंजल * | | | | | १६६,१७८, |
| -मंजले | २ | २४,२६ | | | १८७,१९४, |
| संजगण | २६ | सू० ५ | | | २०३,२४७ |
| संजा * | | | सटिय | ३६ | ५७,६० |
| -मजायई | ३२ | १०७ | संडासतुण्ड | १६ | ५८ |
| संजुस्त | १८ | १७ | संत(सत्) | १ | २२ |
| | २६ | ७ | | १६ | ७ |
| | २८ | १ | | २० | १२ |
| संजुय | १२ | ३४ | | २२ | ३२ |
| | १४ | २६ | | २३ | ५३ |
| | २२ | १,३,५ | | २५ | ६ |
| सजोएमाण | २६ | सू० ६१ | | ३२ | ३४,४७,६०, |
| संजाग | १ | १ | | | ७३,८६,६६ |
| | ८ | २ | | | |
| | ११ | १ | संत(श्रान्त) | १८ | ३ |
| | २८ | १३ | संतअ | २ | ३ |
| | २६ | सू० ४ | संतइ | ३६ | ६,१२,७६, |
| संठाण | १६ | ४ | | | ८७,१०१, |
| | २८ | २३ | | | ११२,१२१, |
| | ३६ | २१,४२,४६, | | | १३१,१४०, |
| | | ८३ | | | १५०,१५६, |

उत्तरजम्भ्यण शब्द-सूची

| | | | | | |
|------------|----|-------------------------------|--------------|----|-----------|
| सतइ | ३६ | १७४, १८३, १६०, १६६, २१८ | संधार | १७ | ७ |
| संतत्त | १४ | १० | संधारअ | २३ | ४, ८ |
| संतत्तत्तर | २३ | १३, २६ | संधुय | २५ | ३ |
| सतस * | | | संधुय | १७ | १४ |
| -सतसन्ति | ५ | २६ | संधुय | १ | ४६ |
| -सतसे | २ | ११ | संधुय | १५ | १० |
| -सतसेज्जा | २१ | १४ | संधुय | २३ | ८६ |
| -सतस्सइ | ५ | १६ | सद्धि | २५ | १६ |
| सताण | १४ | ४१ | सघाव * | | |
| सति | ५ | २८ | -सघावड | २० | ४६ |
| | १२ | ४३ से ४६ | सधि | १ | २६ |
| | १८ | ३८ | सधिमुह | ४ | ३ |
| सतिकर | १८ | ३८ | सनिनाय | २२ | १२ |
| सत्तिमग्ग | १० | ३६ | सनिभ | १६ | १३ |
| सत्तुट्ठ | ३५ | १६ | सनिभ | २२ | ३० |
| सत्तुस्स * | | | सनिभ | ३४ | ४, ६, ८ |
| -सत्तुस्सइ | २६ | सू० ३४ | सनिरुद्ध | ७ | २४ |
| -सत्तुस्से | ८ | १६ | संनिवेशणया | २६ | सू० १, २६ |
| संतोसीभाव | २६ | सू० ७१ | संपइ | १० | ३१ |
| सथव | १५ | १, १० | संपगर * | | |
| | १६ | ३, ११ | -संगरेइ | २१ | १६ |
| | २१ | २१ | संपगाढ | २० | ४५ |
| | २६ | ५१ | संपज्जलिय | २३ | ५० |
| | २८ | २८ | संपडिल्लेह * | | |
| | | | -संपडिल्लेहए | २६ | ४२ |

३०२

परिशिष्ट-२

| | | |
|----------------|----|----------------|
| संपडिवज्ज * | | |
| -संपडिवज्जइ | ५ | ७ |
| | २३ | १६ |
| संपडिवज्जेत्ता | २६ | ५१ |
| संपडिवाइय | २२ | ४६ |
| संपणाम * | | |
| -संपणामए | २३ | १७ |
| संपत्त | ५ | ३२ |
| | १६ | ६० |
| | २२ | १५, २३ |
| | २३ | ८४ |
| | २६ | १६ |
| | ३५ | २१ |
| | ३६ | ६६ |
| संपन्न | १ | २ |
| | २१ | ६ |
| | २७ | १७ |
| | २६ | सू० १५ |
| संपन्नया | २६ | सू० १, ४५, ४६, |
| | | सू० ६० से ६२ |
| संपया | २० | १५ |
| | २५ | १८ |
| संपराज | २० | ४१ |
| | २८ | ३२ |
| संपाउण * | | |
| -संपाउणइ | २६ | सू० ६० |

| | | |
|---------------|----|---------------------------|
| -संपाउणेज्जसि | ११ | ३२ |
| संपाय | १८ | १३ |
| सर्पिण्डिय | १४ | ३१ |
| संपीला | ३२ | २६, ३६, ५२, ६५, ७८, ९१ |
| संपुन्न | २२ | ७ |
| संबद्ध | १६ | ७१ |
| सवाह | ३० | १६ |
| संबुद्ध | १ | ४६ |
| | ६ | ६२ |
| | १६ | ६६ |
| | २१ | १० |
| | २२ | ४६ |
| संबुद्धप्प | २३ | १ |
| संभंत | १८ | ७ |
| संभर * | | |
| -संभरे | १४ | ३३ |
| संभव | ६ | १, ११ |
| | १६ | १२ |
| संभूय(अ) | १२ | १ |
| | १३ | ३, ११ |
| | २३ | ४५ |
| | २५ | १ |
| संभोग | २६ | सू० १, ३४ |
| | ३२ | २८, ४१, ५४, ६७, ८०, ९३ |

| | | | | | |
|------------|----|--------------------|-------------|----|--|
| समञ्ज | ३६ | २६८ | संवर | २६ | सू० ४०, ५६ |
| समद्भाग | १७ | ६ | | ३३ | २५ |
| समुच्छ्र * | | | संवस * | | |
| -समुच्छ्रइ | १४ | ८ | -संवसे | १० | ५ से १४ |
| संमुच्छ्रम | ३६ | १६५, १६८ | संवसित्ताणं | १४ | २६ |
| सरम्भ | २४ | २१, २३, २५ | सविग्ग | २१ | ६ |
| सलव * | | | संविद * | | |
| -सलवे | १ | २६ | -संविदे | ७ | २२, २४ |
| सलिह * | | | संवुड | १ | ३५, ४७ |
| -सलिहे | ३६ | २५० | | ३ | ११ |
| सलीणया | ३० | ८ | | ५ | २५ |
| सलेहा | ३६ | २५१ | | १७ | २० |
| संलोअ | २४ | १६, १७ | सवेग | १८ | १८ |
| संवच्छर | ३६ | २५१, २५३ से २५५ | | २१ | १० |
| सवट्ट | ३० | १७ | | २६ | सू० १, २ |
| संवट्टगवात | ३६ | ११६ | संसग्गी | १ | ६ |
| संवट्ट * | | | संसत्त . | १६ | सू० ३ |
| -संवट्टइ | २१ | ५ | संसय | १ | ४७ |
| सवय * | | | | ६ | २६ |
| -समुवाय | १४ | ३७ | | २३ | २८, ३४, ३६, ४४, ४६, ५४, ५६, ६४, ६६, ७४, ७६, ८५, ८६ |
| संवर | ६ | २० | | २५ | १५, ३४ |
| | १२ | ४२ | | | |
| | १६ | सू० १ से ३ | | | |
| | २२ | ३६ | | | |
| | २८ | १४, १७ | | | |

संसार *

-ससरइ

संसार

संसारत्थ

| | |
|----|--------------------------|
| १० | १५ |
| ३ | २,५ |
| ४ | ४ |
| ६ | १,१२ |
| ८ | १,१५ |
| १० | १५ |
| १४ | २,४,१३, १६,४७ |
| १६ | १५ |
| २० | ३१ |
| २२ | ३१ |
| २३ | ७३,७८ |
| २४ | २७ |
| २५ | ३८,३९ |
| २६ | १,५२ |
| २७ | २ |
| २९ | सू० ३,६,२३, सू० ३३,६० |
| ३० | ३७ |
| ३१ | १,२१ |
| ३२ | १७ |
| ३३ | १ |
| ३६ | ६७ |
| ३६ | ४८,६८, २४८ |

| | | |
|----------------|----|---------|
| सकाम | ५ | ३ |
| सकाममरण | ५ | २,१७,३२ |
| सक्क | ६ | ६,५६,६१ |
| | ११ | २३ |
| | १८ | ४४ |
| सक्क * | | |
| -सक्केइ | ४ | १० |
| सक्कर | ३४ | १५ |
| सक्करा | ३६ | ७३ |
| सक्कराभा | ३६ | १५६ |
| सक्कार | ३५ | १८ |
| सक्कार-पुक्कार | २ | सू० ३ |
| सक्किय | १५ | ५ |
| सक्ख | १४ | २७ |
| सक्खं | २ | ४२ |
| | ६ | ६१ |
| | १२ | ३७ |
| | १८ | ४४ |
| | २२ | ४१ |
| सग | २० | २६,२७ |
| सगर | १८ | ३५ |
| सगास | १२ | १६,४५ |
| सचेल | २ | १३ |
| सचेलअ | २ | १२ |
| सच्च | ६ | २ |
| | ७ | २० |

उत्तरिज्जमयण-शब्द-सूची

| | | | | | |
|------------|----|-------------|---------------|----|-------------|
| सत्र | ६ | २१ | सङ्घा | १४ | ६ |
| | ११ | ५ | सङ्घि | ५ | २३, ३१ |
| | १३ | ६ | सढ | ५ | ६ |
| | १८ | २४, ५२ | | ७ | ५, १७ |
| | १६ | २६ | | २७ | ५ |
| | २१ | १२ | | ३४ | २३ |
| | २८ | २५ | सण | ३४ | ८ |
| | २६ | सू० १, ५१ | सणकुमार | १८ | ३७ |
| सत्रपरक्कम | १८ | २४, ४८ | | ३६ | २१०, २२४ |
| सच्चा | २४ | २०, २२ | सणप्यय | ३६ | १८० |
| सच्चा मोसा | २४ | २०, २२ | सणाह | २० | १६, ५५ |
| सजोगि | २६ | सू० ७२ | सणह | ३६ | ७१ |
| सज्ज * | | | सत्त(शक्त) | ६ | ११ |
| -सज्जइ | २५ | २० | सत्त (सत्तन्) | १० | १३ |
| -सज्जंति | ३५ | २ | | २६ | सू० २३ |
| सज्जाव | २६ | ६, १० | | ३० | २५ |
| | २६ | सू० १, १६ | | ३१ | ६ |
| | ३० | ३०, ३४ | | ३६ | ८८, १५६, |
| सज्जाय | १८ | ४ | | | २२४ से २२६ |
| | २४ | ८ | सत्त(सत्त्व) | १४ | १८, ४३ |
| | २५ | १८ | | २६ | सू० १८, ४३ |
| | २६ | १२, १८, १६, | | ३२ | १११ |
| | | २१, ३६, ४३, | सत्त(सक्त) | १४ | ४५ |
| | | ४४ | | ३२ | २६, ४२, ५५, |
| | ३२ | ३ | | | ६८, ८१, ६४, |
| सङ्घिहायण | ११ | १८ | | | १०३ |

३०६

| | | | परिशिष्ट |
|---------------|----|-----------------------|-----------------------|
| सत्तम | २६ | ३ | सह २१ १४ |
| | ३६ | १६६, २४० | २८ १२ |
| सत्तरत्त | २६ | १४ | २९ सू० ४०, ४६, ६ |
| सत्तरस | ३६ | १६४, १६५, २२८, २२९ | ३२ ३५ से ४७ |
| सत्तरि | ३३ | २१ | १०६ |
| सत्तविह | ३३ | ११ | सद्वह * २८ १८, १९, २७ |
| | ३६ | ७१, १५६ | -सद्वहाह ३ ११ |
| सत्तवीस | ३६ | २३८ | -सद्वहे २८ ३५ |
| सत्तवीसह | ३६ | २३९ | सद्वहंत २८ १५ |
| सत्तहा | ३६ | १५७ | सद्वहंतया १० २० |
| सत्तावीसह | ३४ | २० | सद्वहणा १० १९ |
| सत्तु | १९ | २५ | २८ २८ |
| | २३ | ३६ से ३८ | सद्वहिऊण ३६ २४९ |
| | ३२ | १२ | सद्वहिता २९ सू० १ |
| सत्थ(शास्त्र) | २० | २०, ४४ | सद्धम ३ १९ |
| | ३५ | १२ | सद्धा ३ १, ९, १० |
| | ३६ | २६७ | ९ २०, ५९ |
| सत्थ(शास्त्र) | २८ | २०, ४४ | १२ १२ |
| सत्थ(सार्थ) | ३० | १७ | १४ २८ |
| सत्थकुसल | २० | २२ | सद्धि १ २६ |
| सदावरी | ३६ | १३८ | ५ ७ |
| सद् | ९ | ७ | १६ सू० ५ |
| | १५ | १४ | ३१ ६ |
| | १६ | सू० ५, १२ | सन्नाइपिंड १७ १९ |
| | १६ | १० | सन्निअ(य) १० १० से १२ |
| | | | ३६ ६६, ६७ |

| | | | | | |
|-----------|----|--|------------|----|-----------|
| मन्निओग | ३२ | २८,४१,५४, ६७,८०,९३ | मन्भाव | २८ | १५ |
| | | | | २९ | सू० १.४२ |
| मन्निनाअ | २२ | १२ | सन्निभन्तर | १९ | ८८ |
| सन्निगद्ध | ७ | २४ | सन्निभूय | २३ | ३३ |
| | २२ | १४,१९ | मभाग्याअ | १२ | ३० |
| | ३० | ५ | मभिवसुय | १५ | |
| मन्निवंस | ३० | १७ | मम | २ | १० |
| सन्निमेजा | १९ | सू० ५ | | ५ | १४ |
| मन्निहि | ६ | १५ | | ७ | २३ |
| | १९ | ३० | | ९ | ४८ |
| मपज्जवसिअ | ३९ | ९,१२,७९, ८७,१०१, ११२,१२१, १३१,१४०, १५०,१५९, १७४,१८३, १९०,१९९, २१८ | | ११ | ३१ |
| | | | | १९ | ३ |
| | | | | १९ | ८८,९० |
| | | | | २० | २१ |
| | | | | २३ | १८ |
| | | | | २४ | १७ |
| | | | | २९ | सू० ३७ |
| मपग्गिरम | ३० | १३ | | ३२ | ५,२२,३५. |
| मपुण्ण | ५ | १८ | | | ४८,९१,७९ |
| मपेहाण | ७ | १९ | | | ८७ |
| मम | ३२ | ५० | | ३४ | ५.९ |
| मण्णि | ३० | २९ | | ३५ | १२,१३ |
| ममन्त | १३ | १० | ममअ | २९ | सू० ७२,८९ |
| | १४ | २५ | | ३९ | ७,९ ५१. |
| मदन्त | १९ | ५४ | | | ५४ |
| | ३१ | १५ | ममन्तमन्त | १९ | ३९ |

| | | | | | |
|-------------|----|------------|------------|----|-------------|
| समझकमिता | ३२ | १८ | समय(समक) | १ | ३५ |
| समन्तओ | २७ | १३ | समय(समय) | १० | १ से ३६ |
| समग | ८ | ३ | | ३४ | ३३, ४६, ५०, |
| समचउरंस | २२ | ६ | | | ५४, ५५, ५८, |
| समजिय | ३० | १, ४ | | | ५६ |
| समण | २ | सू० १ से ३ | | ३६ | १३, १४ |
| | २ | २७ | समयवेत्तिय | ३६ | ७ |
| | ४ | ११ | समया | ४ | १० |
| | ८ | ७, १३ | | १६ | २५ |
| | ६ | ३८ | | २५ | ३० |
| | १२ | ६ | | ३२ | १०१, १०७ |
| | १३ | १२ | समर | १ | २६ |
| | १४ | १७ | समाङ्गण | ५ | २६ |
| | १६ | ५ | समाउत्त | २५ | ३३ |
| | २५ | २६, ३० | | ३४ | २२, २४, २६, |
| | २६ | सू० १, ७४ | | | २८, ३०, ३२ |
| | ३२ | ४, १४, २१ | समाउल | २२ | ३, ७, १५ |
| | ३६ | १ | समागव | २७ | १५ |
| समणत्तण | १६ | ३६ से ४१ | समागम | २३ | १४, २०, ८८ |
| समत्त | २६ | सू० ४३ | समागम्म | २३ | ३१ |
| समत्थ | २५ | ८, १२, १५, | समागय | १२ | १६, २८, ३३ |
| | | ३३, ३७ | | १३ | ३ |
| समन्नागय | २६ | सू० ४३ | | २३ | १६ |
| समपिय | २० | १५ | समाण(समान) | ३२ | १८ |
| समभिद्व * | | | समाणं(सह) | १४ | ३३ |
| -समभिद्ववति | ३२ | १० | समादाय | ६ | १५ |

| | | | | | |
|------------|----|--------|--------------|----|------------|
| संज्ञिका * | | | संज्ञिका | ६ | २३ |
| संज्ञिकत्व | २३ | २५ | संज्ञिक | ११ | ३१ |
| संज्ञिका | १ | १० | संज्ञिकत्व | २१ | १,२४ |
| | १५ | १,१५ | संज्ञिकत्व | ३६ | ५०,५६ |
| संज्ञिक | ५ | २७ | संज्ञिकत्व | ४१ | १,२,२४ |
| | १४ | १ | संज्ञिकत्व | ४१ | |
| | १८ | ४६ | संज्ञिकत्व | २० | ३,३६ |
| | २० | ६० | संज्ञिकत्व | ७ | १ |
| संज्ञिका | ६ | १६ | संज्ञिकत्व | २५ | ८,१२,१५ |
| | ८ | ६ | संज्ञिकत्व * | | |
| | १६ | ८८ | संज्ञिकत्व | ६ | १३ |
| संज्ञिकत्व | ६ | ४ | संज्ञिकत्व | | |
| संज्ञिका | १६ | ५६ | संज्ञिकत्व | १६ | सू० ३ सं १ |
| | २७ | ४ | संज्ञिकत्व | १६ | ७,८ |
| | | | संज्ञिकत्व | २३ | १० |
| संज्ञिकत्व | ७ | ४ | संज्ञिकत्व * | | |
| संज्ञिकत्व | २३ | ८८ | संज्ञिकत्व | २६ | सू० ७२ |
| संज्ञिकत्व | ३० | १८८ | संज्ञिकत्व | ३५ | १६ |
| संज्ञिकत्व | | | संज्ञिकत्व | २३ | ८६ |
| संज्ञिकत्व | २६ | सू० ७३ | संज्ञिकत्व | २५ | ६ |
| संज्ञिकत्व | १ | १० | संज्ञिकत्व | ३० | १११ |
| संज्ञिकत्व | १६ | ८० | संज्ञिकत्व * | | |
| | २६ | ८,३१ | संज्ञिकत्व | ३२ | २,२४,२४ |
| संज्ञिकत्व | २२ | २८ | संज्ञिकत्व | ५ | ३२ |
| संज्ञिकत्व | २५ | ३४ | संज्ञिकत्व | २३ | ४६ |
| संज्ञिकत्व | ३६ | ६० | संज्ञिकत्व | २२ | २१ |

| | | | | | |
|---------------|----|-----------|------------|----|-----------|
| सम्बुक्कावट्ट | ३० | १६ | सम्मुट्ट | २८ | १७ |
| सम्म * | | | सम्मुच्छिम | ३६ | १७० |
| -सम्मउ | १ | ३७ | सम्मूढ | ३ | ६ |
| सम्म | १४ | ५० | सय (शत) | ३ | १५ |
| | १७ | ५ | | ७ | १३ |
| | १८ | २७,३२ | | १८ | २८ |
| | १९ | ६४ | | २९ | सू० ८१ |
| | २० | ३६ | | ३६ | ५१,५३,५४, |
| | २३ | १६,५८ | | | ५८ |
| | २४ | २७ | सय(स्वरु) | ७ | १ |
| | २६ | सू० १,१७ | | ३६ | =२,६०, |
| | ३० | ३१,३७ | | | १०४,११५, |
| | ३६ | १ | | | १२४,१५३, |
| सम्मग | २३ | ६३,८६ | | | १६८,१७६, |
| सम्मत्त | १४ | २६ | | | २४६ |
| | २८ | १५,२१,२२, | सय | १६ | २२ |
| | | २८,२६ | | १३ | २३ |
| | २६ | सू० ५७ | | २२ | २५,३० |
| | ३३ | ६ | | २६ | ५,२६ |
| सम्मत्तपरक्कम | २६ | | | २८ | १८ |
| | २६ | सू० १,७४ | | ३५ | = |
| सम्महत्तण | ३६ | २५८ | सयंभू-ग्गण | ११ | ३० |
| सम्महमाण | १७ | ६ | सगण्णी | ६ | १८ |
| सम्महा | २६ | २६ | सयण(शयन) | १ | १८ |
| सम्माण | ३५ | १८ | | ७ | = |
| सम्मादिच्छत्त | ३३ | ६ | | १५ | ५,११ |

| वर्ग | संख्या | मूल्य | वर्ग | संख्या | मूल्य |
|------------|--------|-------------------|-----------|--------|-------------|
| माला (माल) | १६ | मूल्य ३ | मरु (मरु) | १६ | ५०, ५१ |
| | २६ | मूल्य १, ३२ | मरु | १ | ४५ |
| | ३० | २८, ३६ | | १२ | २८, ३३ |
| माला (माल) | ११ | १६, १० | | १४ | ३ |
| | २० | ३२ | | १५ | = |
| माला (माल) | २ | ३४ | | २० | ४५ |
| माला | २१ | १६ | मरु | २३ | ६५, ६८ |
| | २३ | ५१ | मरु | ३४ | ३२ |
| | ३२ | ११० | मरु | ६ | २ |
| माला | १ | =, २०, २४, ४२, ४४ | मरु | १४ | ५ |
| | ६ | ६, २१ | मरु | २३ | १६, २१, २३ |
| | ११ | ५ | मरु | २ | २४ |
| | १५ | ६ | मरु | ६ | ३ |
| | १६ | मूल्य १ मे २ | मरु | २ | २७ |
| | १६ | = | मरु | ३ | १३ |
| | १७ | २१ | मरु | ४ | ६, ६, १३ |
| | २० | ४६ | मरु | ६ | ११ |
| | २४ | १४ | मरु | १२ | ८, ४४ |
| | २५ | १६ | मरु | १४ | १८ |
| | ३१ | २१ | मरु | १६ | मूल्य ११ |
| | ३२ | १५ | मरु | १६ | ६ |
| | | | मरु | १६ | १२, १३ |
| | ६ | १ | मरु | २० | २० |
| | १६ | = | मरु | २३ | ७३ |
| माला | १५ | ७ | मरु | २६ | ३४ |
| | २२ | ५ | मरु | २६ | मूल्य १, ३६ |
| | | | मरु | २३ | ५० |

मरीचक

| | | | | | |
|---------------|----|----------|--------------------|----|-----------|
| सरीरय(ग) | १० | २१ से २७ | सञ्चत्य(सर्वार्थे) | १८ | ३० |
| | १३ | २५ | सञ्चत्य(सर्वत्र) | २१ | १५ |
| | २३ | ४० | | ३६ | १३०, १३६, |
| सलिंग | ३६ | ४६, ५२ | | | १७३, १८२ |
| सलिल | ११ | २८ | सञ्चदंसि | १५ | २, १५ |
| सलोगया | ५ | २४ | सञ्चन्तू | २३ | १, ७८ |
| सल्ल | ६ | ५३ | सञ्चभक्ति | २० | ४७ |
| | १६ | ६१ | सञ्चसो | १ | ४ |
| | २६ | सू० ६ | | ६ | ११ |
| | ३१ | ४ | | २३ | ४१, ४६, |
| सवण | ३ | ६ | | २४ | २६ |
| सवियार | ३० | १२ | ससत्ता | २१ | ३ |
| सवीसेस | ७ | २१ | ससमय | २६ | सू० ६० |
| सञ्च | २ | २८ | ससरक्ख | १७ | १४ |
| सञ्चओ | ६ | ६ | सह(सह) | १ | ६ |
| | ६ | १६ | | ६ | ४६ |
| | १४ | २१ | | १२ | १८ = |
| | १५ | १६ | | १४ | ६, १६, ५३ |
| | १८ | २ | | १६ | ३ |
| | १९ | ६३ | | २१ | २१ |
| | २१ | २४ | सह * | | |
| | २२ | ११ | -सहई | ३१ | ५ |
| | ३५ | १२ | -सहेज्जा | २१ | १६ |
| सञ्चकांमिय | २५ | ८ | सह(स्व) | २८ | १७ |
| सञ्चट्ट | ३६ | ५७, २४४ | सहसंबुद्ध | ६ | २ |
| सञ्चट्टसिद्धग | ३६ | २१६ | सहसा | १६ | ६ |

३१४

परिशिष्ट-१

| | | | | | |
|-----------|----|-----------|---------|----|-------------|
| सहस्र | ७ | ११,१२ | साईय | ३६ | १०१,११२, |
| | ६ | ३४,४० | | | १२१,१३१, |
| | १८ | ४३ | | | १४०,१५०, |
| | १६ | २४ | | | १५६,१७४, |
| | २२ | ५ | | | १८३,१९०, |
| | २३ | ३५ | | | १९६,२१८ |
| | ३४ | ४१,४८,५३ | साउ | ३२ | १० |
| | ३६ | ५८,८०,८८, | सागडिय | ५ | १४ |
| | | १०२,१२२ | सागपत्त | ३४ | १८ |
| सहस्रसक्ख | ११ | २३ | सागर | १६ | ३६,४२ |
| सहस्रससो | ३६ | ८३,९१, | | २२ | ३१ |
| | | १०५,११६, | | २५ | ३८ |
| | | १२५,१३५, | | २६ | १,५२ |
| | | १४४,१५४, | | ३१ | १ |
| | | १६६,१७८, | | ३४ | ३४,३८,३९, |
| | | १८७,१९४, | | | ४३,५२ |
| | | २०३,२४७ | | ३६ | १६१,१६२, |
| सहस्रसार | ३६ | २११,२२६ | | | १६४ से १६६, |
| सहस्रिसय | ३६ | १६०,२१६, | | | २१६,२२२ से |
| | | २२० | | | २४३ |
| सहाय | २६ | सू० १,४० | सागरंगम | ११ | २८ |
| | ३२ | ४,५,१०४ | सागरंत | १८ | ३५,४० |
| सहाव | ३६ | ६०,२६३ | सागरोवम | ३३ | २२ |
| सहिय | १५ | १,५,१५ | | ३६ | १६० से १६६, |
| साइम | १५ | ११,१२ | | | २२४,२२६ से |
| साईय | ३६ | ६,१२,६५, | | | २३०,२३२, |
| | | ७६,८७, | | | |

| | | | | | |
|------------|----|----------------------------|-----------|----|------------|
| सागरोवम | ३६ | २३४ से २३६, २४२, २४४ | साय | २७ | ६ |
| सागरोवउत्त | २६ | सू० ७४ | | २६ | सू० ४ |
| साण | १ | ६ | | ३३ | ७ |
| साम | १६ | ५४ | सायं | ३४ | २३ |
| सामण्ण | २ | १६, ३३ | सार | ३६ | २६४ |
| | ६ | ६१ | | १२ | ३६ |
| | १८ | ४६ | सार | १४ | ३०, ३७ |
| | १६ | ८, २४, ३४, ७५, ६५ | सारइय | १६ | २२ |
| | २० | ८ | सारण | २० | २४ |
| | २२ | ४५, ४७ | सारहि | १० | २८ |
| | ३६ | २५० | | २६ | ६ |
| सामाइय | | | सारहि | १६ | १५ |
| (सामाजिक) | ११ | २६ | | २२ | १५, १७, २० |
| सामाइय(अ) | | | | २७ | १५ |
| (सामायिक) | २८ | ३२ | सारीर | १६ | ४५ |
| | २६ | सू० १, ६ | | २३ | ८० |
| सामाइयंग | ५ | २३ | | २६ | सू० ४, ४५ |
| सामायारी | २६ | | सालि | ६ | ४६ |
| | २६ | १, ४, ७, ५२ | सालिम | १२ | ३४ |
| सामि | २ | ३८ | सावअ | २१ | १, २, ५ |
| सामुदाणिय | १७ | १६ | सावकंखा | ३० | ६ |
| साय | २ | ८, ३६ | सावज्ज | १ | २५, ३६ |
| | १६ | ७४ | | २१ | १३ |
| | | | सावज्जजोग | २६ | सू० ६ |
| | | | सावण | २६ | १६ |
| | | | सावत्थि | २३ | ३, ७ |

| | | |
|--------------|----|----------|
| सास | | |
| (शिष्यमाण) १ | | ३७ |
| सास | | |
| (शास्यमाण) १ | | ३६ |
| सासंत | १ | ३७ |
| सासग | ३६ | ७४ |
| सासण | १४ | ५२ |
| | १६ | ६३ |
| सासय | १ | ४८ |
| | ३ | २० |
| | ६ | २६ |
| | १६ | १७ |
| | २३ | ८४ |
| | ३५ | २१ |
| सासयवाइय | ४ | ६ |
| साह * | | |
| -साहसि | १३ | २७ |
| -साहेइ | २६ | सू० ५ |
| साहण | २३ | ३१, ३३ |
| साहम्मिय | २६ | सू० १, ५ |
| साहसिअ | २३ | ५५, ५८ |
| | ३४ | २१ |
| साहस्सिअ | ३४ | २४ |
| साहस्सी | २२ | २३ |
| | २३ | १६ |
| साहा | १४ | २६ |

| | | |
|-----------------|----|-------------|
| साहारण | ४ | ४ |
| | २६ | सू० ५८ |
| साहारणसरीर | ३६ | ६३, ६६ |
| साहासिय | २३ | ५५, ५८ |
| साहीण | १४ | १६ |
| साहु | १ | ३६ |
| | ५ | २० |
| | ८ | ६ |
| | ६ | ५७ |
| | १२ | ३७ |
| | १३ | २७, ३४ |
| | १६ | ७ |
| | २० | ४, १३ |
| | २३ | २८, ३४, ३६, |
| | | ४४, ४६, ५४, |
| | | ५६, ६४, ६६, |
| | | ७४, ७६, ८५ |
| | २५ | १५ |
| | २६ | ४ |
| | २७ | १२ |
| | ३६ | २६५ |
| साहुवम्म | ८ | ८ |
| सिंग | ११ | १६ |
| सिंगवेर | ३६ | ६६ |
| सिंगार | १६ | ६ |
| सिंगिरीडी (दि०) | ३६ | १४७ |

उत्तररज्यगण शब्द-सूची

| | | |
|-----------------|----|--|
| संघाण | २४ | १५ |
| सिंच * | | |
| -सिंचामि | २३ | ५१ |
| सिंचलि | १६ | ५२ |
| सिक्ख * | | |
| -सिक्खए | २१ | ६ |
| -सिक्खा | ५ | २४ |
| | ७ | २०, २१ |
| | ११ | ३, १४ |
| | २३ | ५८ |
| -सिक्खेज्जा | १ | ८ |
| सिक्खासील | ११ | ४, ५ |
| सिक्खित्ता | ५ | २८ |
| सिक्खिय | ४ | ८ |
| सिज्जा | २३ | ४, ८ |
| सिज्ज * | | |
| -सिज्जई | २६ | सू० २, २६, ४२, सू० ५६, ६२, ७४, ५१, ५२, ५४ से ५६ |
| -सिज्जन्ति | १६ | १७ |
| | २६ | सू० १ |
| -सिज्जन्ती | ३६ | ५३ |
| -सिज्जन्त्सन्ति | १६ | १७ |
| सिट्ठ | १२ | ४२ |
| सिदिल | ४ | ६ |
| | २६ | सू० २३ |

| | | |
|-------------|----|-------------------------------------|
| सिणाण | २ | ६ |
| | १२ | ४७ |
| | १५ | ८ |
| सिणायथ | २५ | ३२ |
| सिणेह | ६ | ४ |
| | ८ | २ |
| | १० | २८ |
| सित्त | ३ | १२ |
| | २३ | ५१ |
| सित्थ | ३० | १५ |
| सिद्ध | १ | ४८ |
| | ३ | २० |
| | १२ | ११ |
| | १६ | १७ |
| | १८ | ५३ |
| | २० | १ |
| | २६ | ५१ |
| | २६ | सू० ३६ |
| | ३३ | १७, २४ |
| | ३६ | ४८, ४९, ५५, ५६, ६२ से ६४, २४८ |
| सिद्धाद्गुण | ३१ | २० |
| सिद्धि | ६ | ५८ |
| | १० | ३५, ३७ |
| | ११ | ३२ |

३१८

परिशिष्ट-२

| | | | | | |
|--------------|----|---------|------------|----|--------|
| सिद्धि | १३ | ३५ | सिद्धा | १६ | ३६ |
| | १६ | ६५ | सीओदग | २ | ४ |
| | २२ | ४८ | सीय * | | |
| | २३ | ८३ | -सीयन्ति | २० | ३८ |
| | २५ | ४३ | | २१ | १७ |
| | २६ | सू० ३,५ | सीय (अ) | १ | २७ |
| | ३६ | ६३, ६७ | | २ | ६ |
| सिप्यि | १५ | ६ | | १५ | ४, १३ |
| सिप्यीय | ३६ | १२८ | | १६ | ३१, ४८ |
| सिया | ६ | ४८ | | २१ | १८ |
| सिर | १८ | ५० | | ३२ | ७६ |
| | १६ | ४६ | | ३६ | २० |
| | २० | ५६ | सीयअ | ३६ | ३८ |
| | २२ | १० | सीयच्छाय | ६ | ६ |
| | २३ | ८६ | सीयपिंड | ८ | १२ |
| सिरिली (दे०) | ३६ | ६७ | सीया(सीता) | ११ | २८ |
| सिरी | १८ | ५० | | ३६ | ६१ |
| सिरीज | ३४ | १६ | सीया | | |
| सिला | ३६ | ७३ | (शिबिका) | २२ | २२, २३ |
| सिलोग | १५ | ६ | सील | १ | ५, ७ |
| | १६ | सू० १२ | | ३ | १४ |
| सिव | १० | ३५ | | ५ | १६ |
| | २३ | ८०, ८३ | | १३ | १२, १७ |
| सिवा | २२ | ४ | | १४ | ५, ३५ |
| सिसुणाग | ५ | १० | | १७ | ३ |
| सिस्त्रिली | ३६ | ६७ | | १६ | ५ |
| (दे०) | | | | | |

| | | | | | |
|------------|----|---------------------------|--------------|----|---------------------|
| सील | २१ | ११ | सुअ | २८ | २१ |
| | २२ | ४० | सुइ(श्रुति) | ३ | १,८,१० |
| | २३ | ५३,८८ | | १० | १८,१६ |
| | २७ | १७ | सुइ(शुचि) | १२ | ४२ |
| | २६ | सू० ५ | सुइर | ७ | १८ |
| | ३६ | २६३ | सुए | २ | ३१ |
| सीलवंत | ५ | २६ | | १४ | २७ |
| | ७ | २१ | सुंदर | १३ | २४ |
| | २२ | ३२ | | १६ | १७ |
| सीस(शिष्य) | १ | १३, २३ | सुंसमार | ३६ | १७२ |
| | २१ | १ | सुकड | १ | ३६ |
| | २३ | २, ३, ६, ७, १०, १४, १५ | | २ | १६ |
| | २७ | १५, १६ | सुकत्र | १ | ४४ |
| सीस(शीर्ष) | २ | १० | सुकहिय | १० | ३७ |
| | ७ | ३ | सुकुमाल | १६ | ३४ |
| | १२ | २८ | | २० | ४ |
| | २१ | १७ | सुक्क(शुष्क) | २५ | ४०, ४१ |
| सीसग | ३६ | ७३ | सुक्क(शुक्ल) | ३० | ३५ |
| सीसय | १६ | ६८ | | ३४ | ३१ |
| सीह | ११ | २० | सुकज्ज्मण | २६ | सू० ७३ |
| | १३ | २२ | | ३५ | १६ |
| | २१ | १४ | सुकलेसा | ३४ | ३, ६, ३२, ३६, ४६ |
| | ३६ | १८० | | ३६ | २५८ |
| सीहकणी | ३६ | ६६ | सुक्का | ३४ | १५, ५५, ५७ |
| सीह | १६ | ७० | सुक्किल | ३६ | १६, २६, ७२ |

| | | |
|------------|----|---------|
| सुगंधांधिय | २२ | २४ |
| सुग्गइ | ३४ | ५७ |
| सुग्गीव | १६ | १ |
| सुचिण | १३ | १० |
| | १४ | ५ |
| सुचिर | २७ | ६ |
| सुचोइय | १ | ४४ |
| सुच्चा | २१ | १४ |
| सुच्छिन्न | १ | ३६ |
| सुजट्ट | १२ | ४० |
| सुजह | ८ | ६ |
| सुट्टिय | २२ | ४० |
| सुट्टु | २० | ५४ |
| | २५ | ३५ |
| सुण * | | |
| सुण | २४ | ६ |
| | ३० | १,४ |
| | ३३ | १६ |
| | ३६ | ४८, १७६ |
| सुणाहि | १३ | २६ |
| सुणेमि | २० | ८ |
| सुणेह | १ | १ |
| | २ | १ |
| | ५ | १७ |
| | ११ | १ |
| | २० | १, १७ |

| | | |
|--------------------|----|------------|
| सुणेह | २८ | १ |
| | ३४ | १, २ |
| | ३५ | १ |
| | ३६ | १, ६६, |
| | | १०७, १२७, |
| | | १३६, १४५, |
| | | १७१, १६५, |
| | | २०४ |
| सुणेहि | २० | ३८ |
| सुव्वन्ति | ६ | ७ |
| सुणग | १६ | ५४ |
| | ३४ | १६ |
| सुणिट्टिय | १ | ३६ |
| सुणित्ता | १७ | १ |
| सुणिया | १ | ६ |
| सुणी | १ | ४ |
| सुणेत्ता(श्रुत्वा) | १२ | १६ |
| सुणेत्ता(श्रोतृ) | १६ | सू० ५ |
| सुणेमाण | १६ | सू० ७ |
| सुत्त(सूत्र) | १ | २३ |
| | २३ | ८५ |
| | २८ | १६ |
| | २६ | सू० २१, ६० |
| | ३२ | ३ |
| सुत्त(सुप्त) | ४ | ६ |
| सुत्तग | २२ | २० |

| | | | | | |
|------------|----|---------------------|-------------|----|----------------------|
| सुत्तश्द | २८ | २१ | सुपावय | १२ | १४ |
| सुदसण | ११ | २७ | सुपिवासिय | २ | ५ |
| सुदिट्ठ | १२ | ३८ | सुपुण्ण | ५ | १८ |
| | २८ | २८ | सुपेसल | १२ | १३, १५ |
| सुदुक्कर | १६ | २८ से ३०, ३८, ३९ | सुप्पणिहिय | २६ | सू० १२ |
| सुदुक्खिअ | २२ | १४ | सुप्पसारअ | २ | २६ |
| सुदुक्खर | १८ | ३३ | सुप्पिय | ११ | ८ |
| सुदुल्लह | ८ | १५ | सुब्भि(दे०) | २६ | २७ |
| | १७ | १ | सुब्भिगंध | ३६ | १७ |
| | २० | ११ | सुभासिय | २० | ५१ |
| | २२ | ३८ | | २२ | ४६ |
| सुद | २५ | ३१ | सुभेरव | १६ | ५३, ६८ |
| सुद्ध | ३ | १२ | सुमज्जिय | १६ | ३४ |
| | ८ | ११ | सुमह | ११ | २६ |
| | १८ | ३२ | सुमिण | १५ | ७ |
| | १६ | ६४ | सुय(सुत) | १३ | २३ |
| | ३२ | १०६ | | १४ | ११, ३७ |
| सुद्धवाय | ३६ | ११८ | सुय(श्रुत) | १ | ४६ |
| सुद्धोदअ | ३६ | ८५ | | २ | सू० १ |
| सुन्नगार | २ | २० | | ५ | १२ |
| | ३५ | ६ | | ७ | २६ |
| सुपक्क | १ | ३६ | | ११ | ७, ११, १५, ३१, ३२ |
| सुपट्ठिअ | २० | ३७ | | १४ | ४८ |
| सुपरिच्चाइ | १८ | ४३ | | १६ | सू० १ |
| सुपालय | २३ | २७ | | १७ | २, ४ |

| | | | | | |
|------------|----|-------------|------------------|----|--------|
| सुय(श्रुत) | १६ | १० | सुलद्ध | २० | ५५ |
| | २३ | ३,५३,५६, | सुलह | ३६ | २५८ |
| | | ८८ | सुलहबोहियत्त | २६ | सू० ५८ |
| | २६ | सू० १,२०,२५ | सुव ^२ | | |
| | ३३ | ४ | -सुवई | १७ | ३,१४ |
| सुय(शुक) | ३४ | ७ | सुवण्ण(सुवर्ण) | ६ | ४६,४८ |
| सुयक्खाय | ६ | ४४ | | ३६ | ७३ |
| सुयणु | २२ | ३७ | सुवण्ण(सुपर्ण) | १४ | ४७ |
| सुयघम्म | २८ | २७ | | ३६ | २०६ |
| सुयनाण | २८ | ४,२३ | सुवण्णग | ३६ | ६० |
| सुया(सुता) | १८ | १४ | सुविण | ८ | १३ |
| सुया(आ) | १२ | ४३,४४ | | २० | ४५ |
| (श्रवा) | | | सुविणीय | १ | ४७ |
| सुर | १२ | ३६ | | ११ | १०,१३ |
| | ३१ | १६ | सुविम्हिय | २० | १३ |
| | ३४ | ५१ | सुविसोज्झ | २३ | २७ |
| | ३६ | २११,२१५, | सुव्वअ | ५ | २२,२४ |
| | | २१६ | | ७ | २० |
| सुरक्खिय | ११ | २६ | | ८ | ६ |
| सुरलोग | १४ | १ | | १५ | ५ |
| सुरहि | ३४ | १७ | | १७ | २१ |
| सुरा | ५ | ६ | सुसंभंत | २० | १३ |
| | ७ | ६ | सुसंभिय | १४ | ३१ |
| | १६ | ७० | सुसवुड | २ | ४२ |
| सुरूव | २१ | ६ | | १२ | ४२ |
| | २२ | ३७ | | १५ | १२ |
| सुलद्ध | १ | ३: | | | |

| | | | | | |
|---------------|----|---------------|-------------|----|-------------|
| सुसमाहिद्विय | २१ | १३ | सुह (शुभ) | १० | १५ |
| सुसमाहिय(अ) | १२ | २, १७ | | ३३ | १३ |
| | २० | ४ | | ३६ | ६१ |
| | २३ | ६ | सुहड | १ | ३६ |
| | २७ | १७ | सुहफरिस | २६ | सू० ७२ |
| | ३० | ३५ | सुहसाय | २६ | सू० १, ३० |
| सुसाण | २ | २० | सुहसेज्जा | २६ | सू० ३४ |
| | ३५ | ६ | सुहावह | १६ | ६८ |
| सुसीइभूय | १२ | ४६ | | २३ | ८७ |
| सुसील | २२ | ७ | | ३० | २७ |
| सुस्सुयाइत्ता | २७ | ७ | | ३१ | १ |
| सुस्सुणया | २६ | सू० १, ५ | | ३५ | १५ |
| सुह (मुख) | ७ | २७ | सुहासिय | १२ | २४ |
| | ६ | १४, ३५ | सुहि (सखिन) | १ | १५ |
| | १३ | ३, १७ | | १६ | २०, २१, ८० |
| | १४ | ३२ | | २६ | सू० ३६ |
| | १७ | ३ | | ३२ | ११०, १११, |
| | १८ | १७ | सुहि (सुहद) | २० | ६ |
| | १९ | ७६, ६० | सुहुत्तर | ३२ | १८ |
| | २० | ३७ | सुहुम | २८ | ३२ |
| | २८ | १० | | ३५ | ६ |
| | २६ | सू० ४, १३, ३७ | | ३६ | ७०, ७७, ७८, |
| | ३२ | २८, ३२, ४१, | | | ८४, ८६, ९२, |
| | | ४५, ५४, ५८, | | | १००, १०८, |
| | | ६७, ७१, ८०, | | | ११०, १११, |
| | | ८४, ९३, ९७ | | | ११७, ११६, |
| | ३६ | ६६ | | | १२० |

३२४

परिशिष्ट-२

| | | |
|------------|----|--------|
| सुहुमकिरिय | २६ | सू० ७३ |
| सुहेसिण | २२ | १६ |
| | ३२ | १०५ |
| सुहोइय | १६ | ३४ |
| | २० | ४ |
| | २१ | ५ |
| सुई | २६ | सू० ६० |
| सूयगड | ३१ | १६ |
| सूयर | १ | ५, ६ |
| सूर(शूर) | २ | १० |
| | ११ | १७ |
| | १८ | ५१ |
| सूर(सूर) | १७ | १६ |
| | २३ | १८ |
| | ३६ | २०८ |
| सूरकत | ३६ | ७६ |
| सूरणय | ३६ | ६८ |
| सूरिअ | २१ | २३ |
| सूल | १६ | ६१ |
| से | २ | ४० |
| | ७ | ४ |
| | ८ | ६ |
| सेज्जा | १ | २२ |
| | २ | सू० ३ |
| | २ | २२ |
| | १७ | २, १४ |

| | | |
|------------------|----|------------|
| सेज्जा | २४ | ११ |
| | २५ | ३ |
| | २६ | ३७ |
| | ३२ | १२ |
| सेट्टि | १३ | २ |
| सेढि | ३० | १० |
| सेणा | १२ | २७ |
| सेणाखन्धार | ३० | १७ |
| सेणिअ | २० | २, १०, १२, |
| | | ५४ |
| सेना | २२ | १२ |
| सेय(अ) | २ | २६ |
| | ५ | ६ |
| | ६ | ४० |
| | १८ | ४८ |
| | २२ | २६, ४२ |
| सेयाल(दि०) | २६ | सू० ७२ |
| सेलेसी | २६ | सू० १, ६२ |
| सेल्लि(दि०) | २७ | ७ |
| सेव ^१ | | |
| -सेवइ | २५ | २५ |
| -सेवए | ७ | ३० |
| | १७ | १७ |
| -सेवन्ति | २ | ३५ |
| -सेवामि | २ | ७ |
| -सेविज्ज | १ | ६ |

उत्तररजभयण शब्द-सूची

| | | | | | |
|----------|----|-----------|---------|----|------------|
| सेविज्जा | २ | ४ | सोग | १६ | ६१ |
| | १६ | सू० ३ | | २० | २५ |
| सेवे | ४ | ११ | | २२ | २८ |
| सेवेज्जा | १८ | १२ | | २६ | सू० ३० |
| सेवण | २८ | २८ | | ३२ | १०२ |
| | ३५ | ३ | सोगघिय | ३६ | ७६ |
| सेवणया | २६ | सू० १ | सोगइ | २८ | ३ |
| | ३० | २८ | | २६ | सू० ५ |
| सेवमाण | १६ | सू० ३ | सोच्च | ३ | ११ |
| सेवा | ३२ | ३ | सोच्चा | २ | सू० १ ते ३ |
| | ३६ | २६७ | | ३ | ८, ९ |
| सेवित्ता | १६ | सू० ३ | | ५ | २६ |
| सेस | १२ | १० | | ७ | २५ |
| | १४ | २ | | १२ | २४ |
| | २६ | २८ | | १४ | ३७ |
| | २८ | २६ | | १५ | १४ |
| | ३२ | १८ | | १६ | सू० १ से ३ |
| सेसञ्ज | ३४ | ६० | | १८ | ३४ |
| सोईदिय | २६ | सू० १, ६३ | | २२ | ४६ |
| सोई | ३६ | २६२ | | २५ | ४२ |
| सोऊण | १३ | २ | | ३६ | २४६ |
| | १८ | १८ | सोच्चाण | २० | ५१ |
| | २२ | १८, २८ | सोच्चाण | २ | ६, २५ |
| सोक्ख | १४ | १३ | सोढ | १६ | ४५, ४६ |
| | २६ | सू० ४ | सोणिय | २ | ११ |
| | ३२ | २ | सोभाग | २१ | ८ |

| | | | | | |
|--------------|----|-----------|---------------|-----|----------|
| सोमंगल (दि०) | ३६ | १२८ | सोसण | ३० | ५ |
| सोमया | २० | ६ | सोह * (बुभ्) | | |
| सोय * | | | -सोहए | २२ | १० |
| -सोयड | ५ | १४, १५ | -सोहन्ति | २३ | १८ |
| | ७ | ६ | सोह * (शोषय्) | | |
| | १३ | २१ | -सोहेज्ज | २४ | १२ |
| | २५ | २० | सोहइत्ता | २६ | सू० १ |
| -सोयंति | २३ | ८४ | सोहग | २६ | सू० ११ |
| सोय(श्रोत्र) | १० | २१ | सोहण | | |
| | १६ | ५ | (गोभन) | १६ | ७ |
| | ३२ | ३५, ३६ | सोहण | | |
| सोय(गौच) | १३ | ६ | (शोषन) | १६ | २७ |
| सोय(गोक) | १४ | १० | सोहम्म | ३६ | २१०, २२२ |
| | २० | ५० | सोहि | १ | २६ |
| सोय(श्रोतस्) | १६ | ३६ | | ३ | ७, १२ |
| सोयरिय | १४ | ३३ | | १२ | ३८ |
| सोयामणी | २२ | ७ | | २६ | सू० १ |
| सोरियपुर | २२ | १, ३ | सोहिल | १६ | १ |
| सोलस | ६ | ४४ | | २२ | ११ |
| सोलसविह | ३३ | ११ | हय(य) | - २ | २६ |
| सोल्लाग | १६ | ६६ | | १८ | ६ |
| सोवाग | १३ | ६, १८, १६ | हं | ३२ | ८ |
| सोवागकुल | १२ | १ | हंता | १६ | ५८ |
| सोवागपुत्त | १२ | ३७ | हंस | १२ | १८ |
| सोवीर | १५ | १३ | | १३ | ६ |
| | १८ | ४७ | | १४ | ३३, ३६ |
| | | | | २७ | १४ |

| | | | | | |
|--------------|----|-------|-----------|----|------------|
| हसगव्भ | ३६ | ७६ | -हरंति | १४ | १५ |
| हृक् | १८ | १६ | हरञ | १२ | ४५, ४६ |
| हृत् | २२ | ४४ | हरतणु | ३६ | ८५ |
| हण * | | | हरिएस | १२ | २७ |
| -हणह | १२ | २६ | हरिएसवल | १२ | १ |
| •हणाड | २० | ४४ | हरिएसिज्ज | १२ | |
| -हणे | २ | ११ | हरिण | ३२ | ३७ |
| | ६ | ६ | हरिय | १७ | ६ |
| -हणेज्जा | २ | २७ | हरियकाय | ३६ | ६५ |
| हत्य | ५ | ६ | हरियाल | ३४ | ८ |
| | १४ | ४५ | | ३६ | ७४ |
| हतिय | २० | १४ | हरिसेण | १८ | ४२ |
| हत्थिणपुर | १३ | १, २८ | हलिद्दा | ३४ | ८ |
| हत्थिपिप्पली | ३४ | ११ | | ३६ | ६६ |
| हम्म * | | | हव * | | |
| -हम्मिर्हिति | २२ | १६ | -हवइ | १ | ४४, ४५, ४८ |
| -हम्मति | ३५ | ११ | | २ | ३५ |
| हम्ममाण | १२ | २० | | ३ | २० |
| हय | १ | ३७ | | ११ | ७, १६ से |
| | १८ | ३ | | | ३० |
| | ३६ | १८० | | १८ | ५३ |
| हयाणीञ | १८ | २ | | २५ | ३१ |
| हर | ७ | ५ | | २६ | १३ |
| | १४ | १५ | | २६ | ५१ |
| हर * | | | -हवति | १० | २१ |
| -हरइ | १३ | २६ | | १२ | ३१ |

| | | |
|------------|----|-------------|
| -हवंति | १३ | २७ |
| | १४ | १२ |
| | ३३ | २४ |
| -हविज्जा | १५ | १० |
| -हवेज्जा | १६ | सू० ३ से १२ |
| हव्व (दि०) | २६ | सू० २, ३ |
| हसिअ (य) | १६ | सू० ७ |
| | १६ | ५, १२ |
| हस्स | २६ | सू० २३ |
| हा * | | |
| -हायइ | १० | २१ से २६ |
| -हायए | ३६ | १४ |
| हार * | | |
| -हारए | ७ | ११ |
| हार | ३४ | ६ |
| हारित्ता | ७ | १५ |
| हालिद्दा | ३६ | १६, ७२ |
| हाव * | | |
| -हावए | ५ | २३ |
| हास | १ | ६ |
| | १६ | ६ |
| | १६ | ६१ |
| | २४ | ६ |
| | २५ | २३ |
| | ३२ | १४, १०२ |
| | ३६ | २६३ |

| | | |
|---------|----|-------------|
| हिएसअ | ३४ | २८ |
| -हिएसि | १३ | ५ |
| हिगुलुय | ३४ | ७ |
| | ३६ | ७४ |
| हिंस | ५ | ६ |
| | ७ | ५ |
| हिंस * | | |
| -हिंसइ | २५ | २२ |
| | ३२ | २७, ४०, ५३, |
| | | ६६, ७६, ६२ |
| हिंसग | १२ | ५ |
| | ३६ | २५७ |
| हिंसा | १८ | ११ |
| | ३५ | ३ |
| हिच्च | १४ | ३४ |
| हिच्चा | ३ | १३ |
| | ५ | १४ |
| | ७ | ८ |
| | १८ | ३५ |
| हिम | ३६ | ८५ |
| हिय | १ | ६, २८, २६ |
| | २ | १३ |
| | ८ | ३, ५ |
| | १३ | १५ |
| | १६ | २६ |
| | ३२ | १, ११, १५, |
| | | १६ |

| | | |
|--------------|----|--------|
| हियय (अ) | २३ | ४५ |
| | २६ | सू० १३ |
| हिरण्य | ३ | १७ |
| | ६ | ४६, ४६ |
| | १६ | १६ |
| | ३५ | १३ |
| हिरिम | ११ | १३ |
| | ३२ | १०३ |
| हिरिली (दे०) | ३६ | ६७ |
| हीण | ३६ | ६४ |
| हीर * | | |
| हीरसि | २३ | ५५ |
| हीरमाण | ६ | १० |
| हील * | | |
| हील्ण | १५ | १३ |
| | १६ | ८३ |
| हील्ह | १२ | २३ |
| हीला | १२ | ३० |
| हीलिय | १२ | ३१ |
| हृ | १ | १३ |
| हृ * | | |
| हृति | २८ | ३० |
| | ३४ | ३३ |
| हृज्ज | ३६ | २४६ |
| हृज्जा | २ | ३४ |
| हृमि | १४ | २२ |

| | | |
|---------|----|-------------|
| हुण * | | |
| हुणामि | १२ | ४४ |
| हुणासि | १२ | ४३ |
| हुयासण | १६ | ४६, ५७ |
| हुड | ३ | १३ |
| | ६ | १४ |
| | ७ | ११, २४ |
| | ८ | ८, १६, १३, |
| | | १७, १६, २३, |
| | | २५, २७, २६, |
| | | ३१, ३३, ३७, |
| | | ३६, ४१, ४३, |
| | | ४५, ४७, ५० |
| | १३ | २० |
| | १४ | १६ |
| | २५ | १० |
| | २६ | ३४ |
| | २७ | १० |
| | ३२ | २२, २३, ३५, |
| | | ३६, ४८, ४६, |
| | | ६१, ६२, ७४, |
| | | ७५, ८७, ८८, |
| | | १०० |
| | ३६ | २६४ |
| हुट्टिम | १७ | २० |
| | ३६ | २१३, २१४ |

हो ■■

-अहोत्थ्या

-हुँति

-होड

| | |
|----|--|
| २० | १६ |
| २८ | ३० |
| १ | १५, २८, २९ |
| २ | १३, २४, २८ |
| ३ | ४, १८ |
| ७ | १८ |
| ८ | १५ |
| ११ | २ |
| १४ | ८, १६ |
| १७ | २१ |
| १९ | १८, २१, ३५, ३६, ४०, ८० |
| २० | ४१, ४२ |
| २५ | ३० से ३२, ३६ |
| २६ | ३०, ३३ |
| २८ | २०, २३, २६, ३३ |
| ३० | ३, ८, १०, ११ |
| ३२ | ८, ३३, ४६, ५६, ७२, ८५, ९८, १०९, ११० |

-होइ

३३

३४

३५

३६

-होक्खामि

२

५

-होज्ज

८

३२

-होति

३४

३६

-होमि

२०

-होमो

२२

-होह

१४

-होहिइ

२७

-होहिसि

९

१३

होचं

२५

होम

१२

५, १४, १६,

२०, ३४ से

४१, ४३, ४४,

४८, ५२, ५३

१४

६४, १६८,

२६६

५

७

१

३२, ४५, ५८,

७१, ८४, ९७

३८

२५६, २७०

११

४३

९

१२

५८

३२

१३

४३, ४४

परिशिष्ट-३

नामानुक्रम

| व्यक्तियों के नाम | | | गोपम | २२ | ५ |
|-------------------|----|---------------|-------|----|-------------|
| अर | १८ | २४० | | २३ | ६, ६, १४ से |
| अरिदुनेमि | २२ | ४, ५, २७ | | | १८, २१, २२, |
| उद्गायण | १८ | ४७ | | | २५, २८, ३१, |
| उसुयार | १४ | ३ ४८ | | | ३४, ३५, ३७, |
| कमलावई | १४ | ३ | | | ३६, ४२, ४४, |
| करकंडु | १८ | ४५ | | | ४५, ४७, ४६, |
| कविल | ८ | २० | | | ५०, ५२, ५४, |
| कासीराय | १८ | ४८ | | | ५५, ५७, ५६, |
| कुथु | १८ | ३६ | | | ६०, ६२, ६४, |
| केसव | २२ | २, ६, २७ | | | ६७, ६६, ७०, |
| केसि | २३ | २, ६, १४, १६, | | | ७२, ७४, ७७, |
| | | १८, २१, २२, | | | ७६, ८२, ८५, |
| | | २५, ३१, ३७, | चित्त | १३ | २, ३, ६, |
| | | ४२, ४७, ५२, | | | ११, १५, २८, |
| | | ५७, ६२, ६७, | | | ३५ |
| | | ७२, ७७, ८२, | | | |
| | | ८६, ८८, ८६ | चुलणी | १३ | १ |
| गम | २७ | १ | जय | १८ | ४३ |
| गद्भालि | १८ | १६, २२ | जयघोस | २५ | १, ३४, ४२, |
| गोपम | १० | १ से ३७ | | | ४३ |

१-इस कोष्क की संख्याएँ अध्ययन की सूचक है ।

२-इस कोष्क की संख्याएँ श्लोक अथवा सूत्र (सू०) की सूचक है ।

| | | | | | |
|----------|----|-------------|-----------|----|-------------|
| जसा | १४ | ३ | महापउम | १८ | ४१ |
| दसण्णभद् | १८ | ४४ | महाबल | १८ | ५० |
| दसार | ११ | २७ | महावीर | २ | सू० १ से ३ |
| | ६२ | ११ | | ५ | ४ |
| टुम्मुह | १८ | ४५ | | २१ | १ |
| देवई | २२ | २ | | २६ | सू० १, ७३ |
| नगगइ | १८ | ४५ | मिया | १६ | १, ६७ |
| नमि | ६ | २, ३, ५, ८, | मियापुत्त | १६ | २, ६, ८, ६६ |
| | | ११, १३, १७, | रहनेमि | २२ | ३४, ३७, ३६ |
| | | १६, २३, २५, | राईमई | २२ | ६, २६, ३६ |
| | | २७, २६, ३१, | राम | २२ | २, २७ |
| | | ३३, ३७, ३६, | रोहिणी | २२ | २ |
| | | ४१-४३, ४५, | | ३४ | १० |
| | | ४७, ५०, ६१, | वद्धमाण | ६ | २४ |
| | | ६२ | | २३ | ५, १२, २३, |
| | १८ | ४५ | | | २६ |
| नायपुत्त | ६ | १७ | वसुदेव | २२ | १ |
| पालिय | २१ | १, ४ | वासुदेव | ११ | २१ |
| पास | २३ | १, १२, २३, | | २२ | ८, १०, २५, |
| | | २६ | | | ३१ |
| बंभदत्त | १३ | १, ४, ३४ | विजय | १८ | ४६ |
| वलभद् | १६ | १ | विजयघोस | २५ | ४, ५, ३४, |
| वलसिरि | १६ | २ | | | ३५, ४२, ४३ |
| भरह | १८ | ३४, ४० | सजय | १८ | १, १०, १६, |
| भोयराय | २२ | ४३ | | | २२ |
| मघव | १८ | ३६ | संति | १८ | ३८ |

| | | |
|------------|----|------------------|
| सभूय | १३ | ३, ११ |
| सगर | १८ | ३५ |
| सणकुमार | १८ | ३७ |
| समुद्रपाल | २१ | ४, ६, २४ |
| समुद्रविजय | २२ | ३, ३६ |
| सिवा | २२ | ४ |
| सेणिय | २० | २, १०, १२, ५४ |
| हरिएसवल | १२ | १ |
| हरिसेण | १८ | ४२ |

देशों व नगरों के नाम

| | | |
|----------|----|------------|
| उमुयार | १४ | १ |
| कम्पिल्ल | १३ | २, ३ |
| | १८ | १, ३ |
| कम्बोय | ११ | १६ |
| कालिा | १८ | ४५ |
| कासी | १३ | ६ |
| | १८ | ४८ |
| कोसवो | २० | १८ |
| गघार | १८ | ४५ |
| चम्पा | २१ | १, ५ |
| दसण्ण | १३ | ६ |
| | १८ | ४४ |
| पचाल | १३ | १३, २६, ३४ |
| | १८ | ४५ |

| | | |
|------------|----|-------------------|
| पिहुण्ड | २१ | २, ३ |
| पुरिमताल | १३ | २ |
| वारगा | १२ | २२, २७ |
| भरह | १८ | ४० |
| भारह | १८ | ४१ |
| मगघ | २० | २, १०, १२ |
| मिहिला | ६ | ४, ५, ७, ६, १४ |
| वाणारसी | २५ | २, ३ |
| बिदेह | १८ | ४५ |
| साव्त्थी | २३ | ३, ७ |
| सुगीव | १६ | १ |
| सोरियपुर | २२ | १, ३ |
| सोवीर | १८ | ४७ |
| हत्तियणपुर | १३ | १, २८ |

पर्वतों के नाम

| | | |
|---------|----|--------|
| कालिंजर | १३ | ६ |
| केलास | ६ | ४८ |
| नीलवंत | ११ | २८ |
| मंदर | ११ | २६ |
| | १६ | ४१ |
| रेवयय | २२ | २२, ३३ |

संस्तुत्रों के नाम

| | | |
|---------|----|----|
| रयणागर | १६ | ४२ |
| सयभूरमण | ११ | ३० |

नदियों के नाम

| | | |
|--------|----|----|
| गंगा | १६ | ३६ |
| | ३२ | १८ |
| मयंगा | १३ | ६ |
| वेयरणी | १६ | ५६ |
| | २० | ३६ |
| सीया | ११ | २८ |

उद्यानों के नाम

| | | |
|------------|----|-------|
| केसर | १८ | ३४ |
| कोट्टग | २३ | ८ |
| तिडुय | २३ | ४, १५ |
| मंडिकुच्छि | २० | २ |

सिद्धों के नाम

| | | |
|--------|----|----|
| कहावण | २० | ४२ |
| कागिणी | ७ | ११ |

आवास

| | | |
|-------------|----|----|
| उच्चोयअ | १३ | १३ |
| कक्क | १३ | १३ |
| गेह | १६ | २२ |
| गोपुरट्टालग | ६ | १८ |
| पागार | ६ | १८ |
| पासायालोयण | १६ | ४ |
| बंभ | १३ | १३ |
| बालगपोइया | ६ | २४ |
| महु | १३ | १३ |

| | | |
|------------|----|----|
| लयण | २२ | ३३ |
| वद्धमाणगिह | ६ | २४ |
| सुन्नागार | २ | २० |

शास्त्र

| | | |
|--------|----|----|
| अंकुस | २२ | ४६ |
| असि | १६ | ३७ |
| इदासणि | २० | २१ |
| कप्पणी | १६ | ६२ |
| करकय | १६ | ५१ |
| करवत्त | १६ | ५१ |
| कस | १२ | १६ |
| कुहाड | १६ | ६६ |
| खुर | १६ | ५६ |
| गदा | ११ | २१ |
| चक्क | ११ | २१ |
| छुरिया | १६ | ६२ |
| दड | १२ | १६ |
| घणु | ६ | २१ |
| पट्टिस | १६ | ५५ |
| फरसु | १६ | ६६ |
| भल्ली | १६ | ५५ |
| मुगर | १६ | ६१ |
| मुसढी | १६ | ६१ |
| मुसल | १६ | ६१ |
| वज्ज | ११ | २३ |

इत्तरजभयण-नामानुक्रम

| | | |
|-------|----|----|
| वित्त | १२ | १६ |
| सडास | १६ | ५८ |
| सयगधी | ६ | १८ |
| सूल | १६ | ५१ |

धातु और रत्न

| | | |
|------------|----|----|
| अंक | ३४ | ६ |
| अजण | ३६ | ७४ |
| अन्मपडल | ३६ | ७४ |
| अन्मवालुया | ३६ | ७४ |
| अय | ३६ | ७३ |
| इन्दनील | ३६ | ७५ |
| उवल | ३६ | ७३ |
| उत्स | ३६ | ७३ |
| कस | ६ | ४६ |
| गेल्य | ३६ | ७६ |
| गोमेञ्जअ | ३६ | ७५ |
| चन्दण | ३६ | ७६ |
| चन्दप्यह | ३६ | ७६ |
| तउय | ३६ | ७३ |
| तम्ब | ३६ | ७३ |
| पवाल | ३६ | ७४ |
| पुढवि | ३६ | ७३ |
| पुलअ | ३६ | ७६ |
| फलिह | ३६ | ७५ |
| भुयमोयण | ३६ | ७५ |

| | | |
|----------|----|----|
| मणोसिला | ३६ | ७४ |
| मरगय | ३६ | ७५ |
| मसारगल्ल | ३६ | ७५ |
| मुत्ता | ६ | ४६ |
| रुप्य | ३६ | ७३ |
| रुयग | ३६ | ७५ |
| लोण | ३६ | ७३ |
| लोह | १६ | ६८ |
| लोहियक्ख | ३६ | ७५ |
| वडर | ३६ | ७३ |
| वालुया | ३६ | ७३ |
| वेहल्लिअ | ३६ | ७६ |
| सक्करा | ३६ | ७३ |
| सासग | ३६ | ७४ |
| सिला | ३६ | ७३ |
| सीसग | ३६ | ७३ |
| सुवण्ण | ३६ | ७३ |
| सुरकत | ३६ | ७६ |
| सोगघिअ | ३६ | ७६ |
| हसगन्म | ३६ | ७६ |
| हरियाल | ३६ | ७४ |
| हिगुलअ | ३६ | ७४ |
| हिरण्ण | ६ | ४६ |

वनस्पति

| | | |
|------|----|----|
| अवग | १६ | ५५ |
| अयसि | ७ | ११ |

| | | |
|------------|----|----|
| असण | ३४ | ८ |
| अस्सकण्णी | ३६ | ६६ |
| आलुअ | ३६ | ६६ |
| उच्छ्र | १६ | ५३ |
| कद | ३६ | ६८ |
| कदली | ३६ | ६७ |
| कण्ह | ३६ | ६८ |
| कविट्ट | ३४ | १२ |
| कालीपव्वंग | २ | ३ |
| किम्पाग | १६ | १७ |
| कुद | ३४ | ६ |
| कुडुबअ | ३६ | ६७ |
| कुहग | ३६ | ६८ |
| कूडसामली | २० | ३६ |
| केदकंदली | ३६ | ६७ |
| खज्जूर | ३४ | १५ |
| जव | ६ | ४६ |
| जावइ | ३६ | ६७ |
| णिहु | ३६ | ६८ |
| तिंदुय | १२ | ८ |
| तिगडु | ३४ | ११ |
| थीहु | ३६ | ६८ |
| निम्ब | ३४ | १० |
| नीलासोग | ३४ | ५ |
| पलंदु | ३६ | ६७ |
| पोम | २५ | २६ |

| | | |
|--------------|----|----|
| मुद्धिया | ३४ | १५ |
| मुसुण्डी | ३६ | ६६ |
| मूलअ | ३६ | ६६ |
| रोहिणी | ३४ | १० |
| लसण | ३६ | ६७ |
| लोहि | ३६ | ६८ |
| वज्जकद | ३६ | ६८ |
| सण | ३४ | ८ |
| सालि | ६ | ४६ |
| सिगबेर | ३६ | ६६ |
| सिम्बलि | १६ | ५२ |
| सिरिली | ३६ | ६७ |
| सिरीस | ३४ | १६ |
| सिस्सिरिली | ३६ | ६७ |
| सीहकण्णी | ३६ | ६६ |
| सूरणअ | ३६ | ६८ |
| हढ | २२ | ४४ |
| हत्थिपिप्पली | ३४ | ११ |
| हलिद्दा | ३६ | ६६ |
| हिरिली | ३६ | ६७ |

प्राणि

| | | |
|-----------|----|-----|
| अच्छिरोडअ | ३६ | १४८ |
| अच्छिल | ३६ | १४८ |
| अच्छिवेहअ | ३६ | १४७ |
| अणुल्लअ | ३६ | १२६ |

उत्तरज्मयण-नामानुक्रम

| | | | | | |
|----------------|----|-----|------------|----|-----|
| अन्विय | ३६ | १४६ | कुलल | १४ | ४६ |
| अरिट्टग | ३४ | ४ | कोइल | ३४ | ६ |
| अलस | ३६ | १२८ | कोल | १६ | ५४ |
| अस्स | २० | १४ | खलुक | २७ | ३ |
| अहि | ३६ | १८१ | गंधहृत्थि | २२ | १० |
| आइण्ण | ११ | १६ | गवल | ३४ | ४ |
| इदकाइय | ३६ | १३८ | गाहा | ३६ | १७२ |
| इदगोवग | ३६ | १३६ | गिद्ध | १६ | ५८ |
| उक्कल | ३६ | १३७ | गुम्मी | ३६ | १३८ |
| उड्डस | ३६ | १३७ | गो | ३४ | १६ |
| उहेहिय | ३६ | १३७ | गोण | ३६ | १८० |
| उरग | १४ | ४७ | गोह | ३६ | १८१ |
| ओहजलिय | ३६ | १४८ | चन्दण | ३६ | १२६ |
| कथग | ११ | १६ | चम्म | ३६ | १८८ |
| कच्छभ | ३६ | १७२ | चास | ३४ | ५ |
| कट्टहार | ३६ | १३७ | चित्तपत्तभ | ३६ | १४८ |
| कप्पासट्टि मिज | ३६ | १३८ | जलकारी | ३६ | १४८ |
| कामदुहा घेणु | २० | ३६ | जलूग | ३६ | १२६ |
| कावोय | १६ | ३३ | जालग | ३६ | १२६ |
| किमि | ३६ | १२८ | डोल | ३६ | १४७ |
| कीड | ३६ | १४६ | ढंका | १६ | ५८ |
| कुक्कुण | ३६ | १४६ | ढिगुण | ३६ | १४६ |
| कुंच | १४ | ३६ | तउसमिज | ३६ | १३८ |
| कुक्कुड | ३६ | १४७ | तंतवग | ३६ | १४८ |
| कुन्थु | ३६ | १३७ | तणहार | ३६ | १३७ |
| कुररी | २० | ५० | तिट्टुग | ३६ | १३८ |

| | | | | | |
|----------|----|-----|-------------|----|-----|
| दंस | १६ | ३१ | मूसग | ३२ | १३ |
| नंदावत | ३६ | १४७ | रोहियमच्छ | १४ | ३५ |
| नाग | १४ | ४८ | रोज्झ | १६ | ५६ |
| नीय | ३६ | १४८ | लोमपक्खि | ३६ | १८८ |
| पत्तहारण | ३६ | १३७ | वराडग | ३६ | १२६ |
| पयंग | ३२ | २४ | वसह | ११ | १६ |
| पल्लोय | ३६ | १२६ | वासीमुह | ३६ | १२८ |
| पारेवय | ३४ | ६ | विच्चित्त | ३६ | १४८ |
| पिवील | ३६ | १३७ | विच्छिअ | ३६ | १४७ |
| पोत्तिय | ३६ | १४६ | विययपक्खि | ३६ | १८८ |
| बलागा | ३२ | ६ | विग्ली | ३६ | १४७ |
| विराल | ३२ | १३ | वीदसअ | १६ | ६५ |
| ममर | ३६ | ४६ | सख | ३६ | १२८ |
| भारुंड | ४ | ६ | सखणग | ३६ | १२८ |
| भिगारी | ३६ | १४७ | सदावरी | ३६ | १३८ |
| भुजंग | १४ | ३४ | समुग्गपक्खि | ३६ | १८८ |
| मगर | ३६ | १७२ | सिगिरिडी | ३६ | १४७ |
| मच्छ | ३६ | १७२ | सिप्पी | ३६ | १२८ |
| मर्च्छय | ३६ | १४६ | सीह | ३६ | १८० |
| मसग | ३६ | १४६ | सुंमुमार | ३६ | १७२ |
| महिस | ३२ | ७६ | सुणग | ३४ | १६ |
| माइवाहय | ३६ | १२८ | सुय | ३४ | ७ |
| मालुग | ३६ | १३७ | सुवण्ण | १४ | ४७ |
| माहअ | ३६ | १४८ | सोमगल | ३६ | १२८ |
| मिग | ३२ | १३७ | हस | १४ | ३३ |

शुद्धि और आपूरक पत्र-१

मूल पाठ

दशवैकालिक
६

| पृष्ठ | श्लोक | अशुद्ध | शुद्ध |
|-------|-------|-----------------|------------|
| १४ | ५।३ | कर्म | कर्म |
| १५ | ११।२ | पावगं ? | पावगं |
| २१ | ३१ | (एवं ... ३४॥) | (एवं) |
| २४ | ६३ | (एवं ... ६३॥) | (एवं) |
| २७ | ८६।४ | पडिक्कमे | पडिक्कमे |
| ३३ | ४७।४ | ईमं | इमं |
| ३८ | ३८।२ | कंवल | कंवलं |
| ४६ | २८।३ | नाभो | नाभी |
| ४७ | ४३।३ | अवक्किय ° | अविक्किय ° |
| ५० | १।१ | अयार ° | आयार ° |
| ५० | ४।१ | भित्ति | भित्ति |
| ५० | ८।२ | व | वा |
| ५७ | १।१ | सिक्ख | सिक्खे |
| ६१ | ४।३ | ° मेज्जंति | ° मेज्जंति |
| ७५ | २०।३ | निकलम्मं | निकलम्म |
| ८२ | ७।२ | गया | गवो |
| ८३ | १२।३ | कि | कि |

उत्तराध्ययन

| | | | |
|-----|------|------------|-----------|
| ८८ | ६।३ | मंसग्गि | संसग्गि |
| १०२ | १६।४ | वोहिं | वोहि |
| १२२ | ३।१ | से | सो |
| १२३ | १७।३ | रायरिसि | रायरिसि |
| १२६ | ४८।१ | ° रूपस्स | ° रूपस्स |
| १२७ | ५८।१ | उत्तमो | उत्तमो |
| १३४ | ३०।१ | अवउज्जिभयं | अवउज्जिभय |

| पृष्ठ | श्लोक | अशुद्ध | शुद्ध |
|-------|-------|-------------------|------------------|
| १४२ | १५।१ | भावधरा | भारधरा |
| १४२ | १६।४ | वहामु | वाहामु |
| १५२ | २३।४ | ० भेव | ० भेवं |
| १५८ | १८।२ | तैल्लामहा तिल्लमु | तेल्ल महातिल्लमु |
| १७० | पं ८ | कुडुत्तंसि | कुडुत्तरंसि |
| १७३ | १३।१ | गत ० | गतं ० |
| १७५ | १।२ | सुणिता | सुणित्ता |
| १७९ | १०।१ | अहम्मोत्ति | अहमस्सीत्ति |
| १८२ | ४०।२ | भरह | भरहं |
| १८३ | ४७।१ | सवीर ० | सोवीर ० |
| १८९ | ४१।३ | निह्वय | निह्वयं |
| १९० | ५०।२ | ० वालुए | ० वालुए |
| १९३ | ७७।२ | मिगे | मिगो |
| २०६ | ४।१ | घरणी | घरणी |
| २३२ | १३।४ | महानुणि | महामुणिं |
| २३४ | ३४।३ | लयं | तयं |
| २३८ | १०।३ | निउत्तेण | निउत्तेणं |
| २३९ | २४।२ | वा | ता |
| २४३ | ४७।३ | य | × |
| २४४ | ७।४ | उज्जाहित्ता | उज्जहित्ता |
| २४७ | ४।३ | तु | × |
| २४९ | २०।३ | रीर्यतो | रोयन्तो |
| २५५ | पं ६ | अणगारेए | अणगारे |
| २५९ | सू०२४ | पभावेणं | पभावे णं |
| २५९ | सू०२५ | खवेड | अन्नाणं खवेड |
| २६६ | सू०६० | विणुस्सड | विणस्सड |
| २६९ | सू०७४ | कम्माड | कम्माइं |
| २७५ | ३७।१ | एवं | एयं |
| २७७ | १७।१ | ० णावणाहिं | ० भावणाहिं |
| ३०५ | ४।३ | खंजणं ० | खंजणंजण ० |

शुद्धि और आपूरक पत्र

३४३

| पृष्ठ | श्लोक | अशुद्ध | शुद्ध |
|-------|-------|-------------|---------|
| ३०६ | १०।१ | कडुय | कडुय |
| ३१७ | १ | 'मे एगममणा' | मेगममणा |
| ३३० | ६५।१ | लयावलया | लयावलय |
| ३४६ | २६६।३ | कारणेहि | कारणेहि |

शुद्धि और आपूरक पत्र-२

पाठान्तर

दशवैकालिक

| पृष्ठ | श्लोक | अशुद्ध | शुद्ध |
|-------|--------|---|--|
| २ | पा० १ | कइर्हं | कइर्हं |
| ३ | पा० ६ | संपन्ना (अ,ज) | संपन्ना (अ,ज), संबुद्धा (आ) |
| ४ | पा० १ | (अ) | (आ) |
| ५ | पा० ८ | (क,ख, ...) | (क,ग ...) |
| ७ | पा० ४ | (जिचू पा०, जिचू पा०) | (अचू पा० जिचू पा०) |
| ७ | सू० ६ | एसो ^१ खलु | एसो खलु ^२ |
| ८ | पा० १ | (अचू) | (अचू सू० १०-२२) |
| १० | सू० १५ | 'गामे वा' ^१ नगरे वा एणो ^२ वा | 'गामे वा नगरे वा रणो ^१ वा ^२ |
| १० | पा० १ | ×(क,ख,ग,घ, हाटी०) | अरण्ये (अचू) |
| १० | पा० २ | अरण्ये (अचू) | ×(क,ख,ग,घ, हाटी०) |
| ११ | सू० १८ | सलागाए वा ^३ | सलागाए वा सलागहल्येण वा ^३ |
| १२ | पा० ३ | उज्जवावेज्जा | उज्जालावेज्जा |
| १४ | पा० १ | इंडगंसि वा | इंडगंसि वा |
| १८ | पा० ६ | कट्टं | कट्ठं |
| २१ | पा० ४ | ६—हारताल ° | ६—हरिताल ° |
| | | ७—हिगोलए ° | ७—हिगोल्लुय ° |
| | | १४—सोरट्टिय ° | १४—सोरट्टिय ° |
| २३ | पा०२ | (अ,ज) | (अ) |
| २७ | ८४३ | वा वि | 'वा वि' ^१ |
| २७ | ८४४ | वा वि ^१ | वा वि |
| ३१ | पा०२ | (आ,जा,ह) | (आ,जा,हा) |
| ३६ | पा०२ | (आ,ज) | (अ,ज) |

गृद्धि और आपूर्क पत्र-२

| | | | |
|-------|----------------|---------------------------|--|
| पृष्ठ | स्थल | अशुद्ध | शुद्ध |
| ३७ | १८१ | लोभस्सेसो अणुफासो | 'लोभस्सेसो अणुफासो' ^२ |
| ३७ | १८३ | सन्निहीकामे | सन्निहीकामे ^६ |
| ३७ | २२३ | य ^२ | य ^४ |
| ३७ | पा० २ | २—व (अ) | २—लोभस्सेसणुफासे (क, घ) ; लोभस्से सणुफासे (ख) ; लोभस्सेसणुफासो (ग) |
| | | | ३—सन्निहि कामे (हाटी०) |
| | | | ४—व (अ) |
| ३८ | पा० ३ | ना | नो |
| ४० | पा० ३ | जिनदास' 'व्याख्यात नही है | × |
| ४४ | पा० २ पा० ८, ९ | तहेवऽ० | तहेवाऽ० |
| | | व धारिय...अइयंमि | वधारियं...अइयंमि |
| ४८ | ५४३ | भयसा ^७ | 'भयसा व' ^२ |
| ४९ | पा० १ | सुव्वक्क० (ख, ग) | सुव्वक्क (ख, ग) |
| ५१ | १९४ | ण ^५ | 'ण य' ^५ |
| ५२ | पा० ३ | (क, ख, घ) | (क, ग, घ) |
| ५५ | पा० २ | पणीयं रसं | पणीयं |
| ५६ | ६३३ | कम्मघणम्मि ^४ | 'कम्मघणम्मि अवगाए' ^४ |
| ५६ | पा० | २— | १— |
| | | ३— | २— |
| | | १— | ३— |
| | | २— | ४— |
| ५६ | पा० २ | पुव्व० | ४—पुव्व० |
| ५७ | ५१२ | ० नामाओ ^३ | ० नामाओ ^३ |
| ६२ | पा० ८ | नमणंति | समाणंति |
| | ४४४ | 'नो वणं' | 'नो वि पा' ^८ |
| ७६ | सू० १ प० २० | वल्ह | 'वल्ह भौ' ^८ |
| ३६ | पा० ४ | (आ, वा) | (अ, ज) |
| ८४ | पा० ८ | 'वल्ह (आ, वा)' | 'वल्ह (आ, ज), ० वल्ह (जा) |

उत्तराध्ययन

| पृष्ठ | स्थल | अगुद्ध | शुद्ध |
|-------|-----------|----------------------------|--|
| ८७ | पा०२ | जाहिताणं (वृ०, चू०) | जाहिताणं (वृ०, चू०); चइत्ताणं (वृ०पा०) |
| ८८ | पा०७ | (वृ०, चू०) । | (वृ०, चू०) ; अप्पाचेव दमेयन्वो (वृ०पा०) । |
| ८९ | पा०१ | (अ, उ, म,) | (अ, उ, ऋ) |
| ९२ | पा०१, २ | (चू०पा०) | (चू०) |
| ९२ | पा०३ | (अ, उ, ऋ), किक्ती ति(ऋ) । | (अ, उ); किक्ती य(वृ०) । |
| १०३ | पा०२ | (वृ०पा०, चू०पा०) । | (ऋ, वृ०पा०, चू०पा०) |
| १०३ | पा०७ | पीहाति | पीहति |
| १०९ | पा०२ | आघा ° | आघा ° |
| ११० | पा०२ | (चू०, वृ०पा०) | (चू०पा०, वृ०) |
| १११ | पा०१ | (' सु) | (' ...स(|
| ११९ | पा०१ पं०४ | (चू०) | (चू०पा०) |
| ११९ | पा०२ | ...सेवए...णिसेवए | ...सेवए...णिसेवए |
| १३२ | पा०३ | (उ, म, वृ०); | (उ, ऋ, वृ०), |
| १३६ | अ०११ | बहुस्सुयपुज्जा | बहुस्सुयपुज्जं |
| १३७ | १५।२ | 'निहियं दुहओ' ^२ | 'निहियं दुहओ वि' ^२ |
| १४७ | पा०२ | सुसंबुडा | सुसंबुडा |
| १४७ | पा०४ | वोसट्ठ ° | वोसट्ठ ° |
| १५० | पा०५ | वित्तघण ° | चित्तघण ° |
| १८२ | पा०८ | | × (आ, इ, उ) |
| १८३ | ४७।२ | वेच्चा ^३ | 'वेच्चा रज्ज' ^३ |
| १८५ | पा०३ | | × (आ, इ, सु, चू०) |
| १८८ | ३४।४ | ° पालिउं | ° पालिउं ^३ |
| १८८ | ३७।१ | वाल्लुयाकवले ^३ | वाल्लुयाकवले ^४ |
| १८८ | ३७।२ | उ ^४ | उ ^५ |
| | | | ३—पालिया (अ, आ, इ, उ, सु) |
| १८८ | पा० | ३— | ४— |
| १८८ | पा० | ४— | ५— |
| १९९ | पा०१२ | पा० टि० ७ | पा० टि० ८ |

| पृष्ठ | स्थल | अशुद्ध | शुद्ध |
|-------|------------|--|---|
| २०० | पा०४ | अणुत्तरमणुव्वया (उ, ऋ, वृ० पा०) | अणुरत्तमणुव्वया (उ, ऋ), अणुत्तरमणुव्वया (वृ० पा०) |
| २०७ | पा०४ | जहिज्ज संगंथ (वृ०), जहित्तु षसंगंथ (चू०); जहित्तु संगंथ ° (सु) | जहित्तु संगंथ (वृ०), जहित्तु षसंगंथ (चू०); जहित्तु संगंथ (सु) |
| २१४ | पा०८ | से ओ | सेओ |
| २१६ | पा०१, ३ | | × (अ, इ, ऋ, स, सु) |
| २४२ | पा०५ | से से...गुरू | सेसे गुरू |
| २४८ | पा०२ | ° तवेइ या | तवे इ या |
| २५५ | सू०६ पं०४ | उज्जुभावपडिवन्ने ^६ | 'उज्जुभाव पडिवन्ने य ण' ^६ |
| २५६ | सू०७ पं०३ | 'पडिवन्ने य' ^६ | 'पडिवन्ने य ण' ^६ |
| २६१ | सू०३४ पं०५ | अणासायमाणे ^३ | अणासायमाणे |
| २६१ | सू०३५ पं०३ | निक्कखे ^४ | निक्कखे ^३ |
| २६१ | सू०३६ पं०२ | जीवियासंसप्पओग ^५ | जीवियासंसप्पओगं ^५ |
| २६१ | सू०३६ पं०२ | वोच्छिन्दइ ^६ | वोच्छिन्दइ |
| २६१ | सू०३६ पं०३ | वोच्छिन्दिता | वोच्छिन्दिता ^५ |
| २६१ | पा० | २—'नो आभाएइ'... (वृ०) | २—× (उ, ऋ, वृ०) |
| | | ३— | × |
| | | ४— | ३— |
| | | ५— | ४— |
| | | ६— | ५— |
| २६३ | पा०६ | दन्धाणि | दन्धणाणि |
| २६५ | सू०५१ पं०५ | परलोगधम्मस्स ^२ | 'परलोगधम्मस्स आराहए' ^६ |
| २६५ | सू०५५ पं०२ | 'निव्वियारेणं जीवे' ^४ | 'निव्वियारे... ^५ ज्जाणगुत्ते' ^५ |
| | पा० | ४— | ५— |
| | पा० | ५— | ४— |
| २६६ | पा०६ | (वृ० पा०) | (वृ०) |
| २७२ | १४।३ | 'दव्वओ खेत्तकालेणं' ^८ | खेत्तकालेणं ^८ |
| २७२ | पा०१ | ° कालाय | ° काला य |
| २७२ | पा०४ | चउत्थोउ | चउत्थो उ |

| पृष्ठ | स्थल | अशुद्ध | शुद्ध |
|-------|-----------|--|--|
| २८४ | २५।२ | 'उ उवेइ दुक्खं' ^२ | 'उवेइ दुक्खं' ^२ |
| ३०२ | १०।३ | 'कसायमोहणिज्जं' ^३ | 'कसायमोहणिज्जं तु' ^३ |
| ३०३ | २४।४ | जीवेसु ऽइच्छियं ^३ | जीवेसुऽइच्छियं ^३ |
| ३०३ | पा० | ३-स इच्छियं (उ,सु); ३-जीवे स इच्छियं (अ,सु); अहिच्छिय (स) | जीवे अहिच्छियं (स) |
| ३०५ | ६।२ | कोइलच्छदसन्निभा | कोइलच्छदसन्निभा ^२ |
| ३०५ | ७।२ | तरुणाइच्चसन्निभा ^२ | तरुणाइच्चसन्निभा |
| ३०५ | पा०२ | ० च्छावि ० | ० च्छावि ० |
| ३०६ | ९।४ | उ ^२ | उ |
| ३०६ | १०।४ | उ ^३ | उ ^२ |
| ३०६ | १२।२ | तुवरकविट्ठस्स ^४ | तुवरकविट्ठस्स ^४ |
| ३०६ | पा०२ | | X |
| ३०६ | पा० | २, ३— | २— |
| ३०६ | पा० | ४— | ३— |
| ३०६ | पा० | ५— | ४— |
| ३०९ | २६।१ | उप्फालगदुट्टुवाई ^४ | 'उप्फालगदुट्टुवाई यं ^४ |
| ३१२ | पा०३ | पलियमसंख | पलियअसंख |
| ३१५ | पा०४ | | न हु कस्सवि उववत्ति (वृ०) । न वि०... (वृ० पा०) , न हु ० ... (उ, ऋ, सु) । |
| ३४५ | पा०५ पं०४ | वियाहियं | वियाहिया |
| ३४६ | पा०२ | २४८, २४९ | २४८ से २६८ |
| ३४८ | २६१।२ | बहुणि ^१ | 'य बहुणि' ^१ |

शुद्धि और आपूरक पत्र-३

उत्तराध्ययन शब्द-सूची

| पृष्ठ | स्थल | अशुद्ध | शुद्ध |
|-------|-----------------|-------------------------------|--------------------------------|
| ६३ | | अइमत्त | अइमन्त |
| ६४ | अंत | २८।४१, ५८, ६१, ७३, २६।सू०१ | २६।सू०१, २८, ४१, ५८, ६१, ७३ |
| ६५ | | अंतरमासिल्ल | अंतरभासिल्ल |
| ६६ | अकिंचण | १४।१५ | X |
| ६६ | | | अकिञ्च १४।१५ |
| ६७ | अगारि | २७।२२ | ७।२२ |
| ६७ | | अग्य * | अग्य * |
| ६८ | | अजाणमाग | अजाणमाण |
| १०४ | अणुभाग | ३४।१ | ३४।६१ |
| १०४ | | अणुरत्त | अणूरत्त |
| १०६ | | अतित्ति | अतित्ति |
| १०६ | अत्य (अर्थ) | २६।सू०२, ४८ | २६।सू०२१, ४८ |
| १०७ | अदत्त | ३२।४२ से ४४, | ३२।४२, ४४ |
| १०९ | अप्प(आत्मन्) | १४।४६ | १४।४८ |
| १११ | | अवंभचारि | अवंभचारि |
| १११ | | अवभाइय | अवभाहय |
| १११ | | -अवभट्टेइ | -अवभट्टेइ |
| १११ | | अवभुट्टिच्चा | अवभुट्टित्ता |
| ११२ | | अभिगमरुइ | अभिगमरुइ |
| ११२ | अभिभूय (अभिभूय) | १५।३ | १५।२ |
| ११४ | | अलित्त | अलित्त |
| ११७ | असण (अशन) | २।३० | २।३ |
| ११८ | असायावेयणिज्ज | २०।४२ | X |
| ११८ | | | असार १६।१४, २२, २०।४२ |
| ११८ | | अस्सविली | - अस्साविणी |
| ११९ | | अहिसया | अहिसया |

| पृष्ठ | स्थल | अशुद्ध | शुद्ध |
|-------|-------------|-----------------|-----------------|
| १२० | | अहुणोवन्न | अहुणोवन्न |
| १२० | आइ | (दि०) | (दि) |
| | | २१।सू०३ | २१।सू०४ |
| १२१ | आउकम्म | ३२।२, | ३३।२ |
| १२१ | आउट्टिइ | ३६।१३२ से १४१ | ३६।१३२, १४१ |
| १२१ | | आगन्तु | आगन्तु |
| १२३ | | -आमन्तयामो | -आमन्तयामो |
| १२३ | | आमीस | आमोस |
| १२३ | आयय * | | -आययन्ति ३।७ |
| १२३ | -आयरे | २४।७ | २४।२७ |
| १२३ | आयहिअ | २१।१२ | २१।२१ |
| १२४ | आराहणया | २१।सू०४६ | २१।सू०५१ |
| १२४ | | आरूह * | आरूह * |
| १२४ | | -आरूहइ | -आरूहइ |
| १२७ | | -आहारेज्जा | -आहारेज्जा |
| १२८ | | इक्कतीसइ | इक्कतीसइ |
| १२९ | ईसाणग | ३६।२१ | ३६।२१० |
| १३० | उक्कोस | ३४।४६ से ५० | ३४।४६, ४८ से ५० |
| १३० | उग्ग | १८।५० | १५।९, १८।५० |
| १३१ | उज्जाण | १८।३४ | १८।३, ४ |
| १३१ | | | उज्जुपन्न २३।५६ |
| १३१ | उज्जुभाव | २१।सू०६, | २१।सू०१, |
| १३१ | | उज्जेय (उद्योत) | उज्जेय (उद्योत) |
| १३२ | उत्तम | १८।४१ | १८।४० |
| १३२ | उदग(क,अ) | ८।८ | ८।९ |
| १३२ | उदहि | | ३६।२०६ |
| १३३ | | उद्धत्तुकाम | उद्धत्तुकाम |
| १३३ | उरग | १४।४७, ३६, १८१ | १४।४७; ३६।१८१ |
| १३४ | | उल्लंघन | उल्लंघन |
| १३४ | उवट्टिअ(य) | २०।२२ | २०।८, २२ |
| १३५ | -उवल्लिप्पई | २५।३९ | २५।२६, ३९ |

| पृष्ठ | स्थल | अशुद्ध | शुद्ध |
|-------|-----------|-----------------------------|---|
| १३७ | एक | १३३ | १३३, २३ |
| १३७ | एग | १२६, ३३ | १२६, ३३; २१२; ५११, ५, २०, ६१; ७१४, १५, ८७, ६३४, ४६, १४११, १६१८३ |
| १३७ | एगत | १६३८ | X |
| १३७ | एगना | २६१ सू० ३१, | २६१ सू० ३६, |
| १४३ | कम्म | ३३११, | ३३११, ३, |
| १४३ | कम्मपयडि | २६१ सू० ३३ | कम्मगणि २६१ सू० ३२, ७२ २६१ सू० ३३ ३३ |
| १४३ | कर | १३१२७ | १३१२७, १४१८ |
| १४७ | काय | ३२१८१, ८२, ८६ ३६१६०, १०३ | ३६१८१, ८२, ८६, ६०, १०३ |
| १४७ | कारण | ६१२६, से ३३ ४४, | ६१२६, ३१, ३३ ४५, |
| १४८ | काल | २६१३७, | २६१३७, ४२, ३३११६ |
| १४६ | कासी | १८१४८ | X |
| १४६ | | | कासीराय १८१४८ |
| १४६ | किन्नर | १६१६ | १६११६ |
| १५१ | कुदंसण | २८११८ | २८१२८ |
| १५१ | कुविद्धि | २८१३६ | २८१३६ |
| १५१ | कुल | २०१४०, ४२ | २०१४०, ४३ |
| १५६ | गव | ६१३, १०, ३६, ३७ | ६१३, १०, ३६, ३७ |
| १६८ | | चिट्टमाण | चिट्टमाण |
| १६६ | छत्ता | १८१४२ | X |
| १७५ | जाणिता | ११३४ | ११४३ |
| १७८ | | जीवाजीवविभक्ति | जीवाजीवविभक्ति |
| १६८ | देविद | ६१२३, २७, | ६१२३, २५, २७, |
| २०२ | | घारेह | -घारेह |
| २०७ | | -नासइ | -नासेइ |
| २०७ | | निक्खमे | -निक्खमे |
| २०८ | -निज्जरेइ | २६१ सू० ३७, | २६१ सू० ३८, |

३५२

दसवेआलियं-उत्तरज्भयणं

| पृष्ठ | स्थल | अबुद्धि | शुद्ध |
|-------|-------------|-------------|-------------|
| २०६ | | निद्वहे # | निद्वह # |
| २१६ | -पगरेह | १२।३६ | × |
| २२० | | पडिसविक्ल # | पडिसंविक्ल |
| २२२ | | पन्मवय | पन्मवय |
| २४१ | | -फ से | -फासे |
| २४६ | | -अब्बवी | -अब्बवि |
| २५३ | | भुज | भुज # |
| २५३ | -भुजिज्जा | ३५।१५ | ३५।१७ |
| २५४ | | जभुयिा | भुजिया |
| २६० | मल | २५।११ | २५।२१ |
| २६८ | मोह | २० | २०।६० |
| २७३ | रेवयय | २२।२२,२३ | २२।३३ |
| २८६ | विमोयणया | २६।सू०७१ | २६।सू०७२ |
| २९१ | | विवज्ज त | विवज्जयंत |
| २९२ | | विस | विसम |
| २९४ | | वुककस | वुककस |
| २९६ | | सजअ (संजय)- | संजअ (संजय) |
| ३०१ | | -सतसन्ति | -संतसन्ति |
| ३०५ | सत्त (सत्व) | १४।१८,४३ | १४।१८,४२ |
| ३१७ | -सिज्फन्ति | २६।सू०१ | × |
| ३२७ | हरिएस | १-।२७ | १२।३७ |

